प्रकाशक
पुस्तक-भंडार,
पटना : गोविन्दमित्र रोड
लहेरियासराय : दरभंगा (बिहार)

प्रथम संस्करण
२०२५ वि०

मुद्रक
श्री हिमालय प्रेस
पटना-४

श्रीरामलोचनशरण-कृत
समस्त तुलसी-साहित्य
यथासम्भव पूर्णभावरक्षित समश्लोकी मैथिली रूप

१. मैथिली श्रीरामचरितमानस
२. मैथिली श्री विनयपत्रिका
३. मैथिली श्री दोहावली
४. मैथिली श्री हनुमानबाहुक
५. मैथिली श्री कृष्ण गीतावली
६. मैथिली श्री रामाज्ञाप्रश्न
७. मैथिली श्री रामलला नहछू
८. मैथिली श्री वैराग्य संदीपिनी
९. मैथिली श्री बरवै रामायण
१०. मैथिली श्री पार्वतीमंगल
११. मैथिली श्री जानकीमंगल
१२. मैथिली श्री कवितावली
१३. मैथिली श्री गीतावली

प्राप्ति स्थान
१. पुस्तक-भण्डार, लहेरियासराय
२. पुस्तक-भण्डार, पटना-४

किञ्चित् पूर्ववृत्तम्

घटनेयं २०१४तमविक्रमाब्दस्य। ब्राह्मे मुहूर्ते श्रीअयोध्यानगर्यां पावनसरयूतटिन्याः कोमल-सैकतपुलिने स्थित आसम्। शरदि राकारजन्यां चन्द्रकलाभवनस्य कक्षे महारासदर्शनेनात्मानं पुनीय परावर्त्तितः। श्रीसरय्वाः कलकलनादेन ब्रह्मानन्दमिवानुभवन् विमुग्धो भूत्वाऽतिष्ठम्, सहसैव मानसममृतसरसि निमज्जयन्ती काचिन्मधुरा कोमला दिव्या च वाणी हृदयाकाशे प्रादुरभवत्—"स्वकीयमातृभाषायां निखिलं रामचरितं विदेहनन्दिनीं श्रावय पावय चात्मानमपि।"

किंकर्त्तव्यविमूढोऽहं जड इवातिष्ठम्। तस्मिन्नेव काले विनयपत्रिकायास्तिलकमपि परिपूर्ण-तामगात्। तयैव लेखन्या 'श्रीसीताराम'पद-पुरस्सरं मैथिलि-भाषायां 'श्रीरामचरितमानसस्य' प्रारम्भमकरवम्। अवरुद्धा च लेखनी।

तृतीयेऽहनि वेदान्तीजीवोपाह्वानां श्रीरामपदार्थदासमहोदयानां दर्शनार्थमगच्छम्। सप्रश्रयं प्रणम्य प्रकोष्ठैकदेशे उपाविशम्। समागच्छन् नैके महात्मानः। परस्परं जातो वार्तालापः। प्रारब्धा रामायणस्यापि चर्चा। विश्वस्य विविधासु भाषासु अनेकेषु देशेषु रामायणस्य पद्यमयाः अनुवादाः जाताः इति ते उक्तवन्तः। श्रीवेदान्तीजीमहोदयैरपि दर्शिता प्रसन्नता—विश्वकल्याणाय शुभ-लक्षणमेतदिति चोक्तवन्तः। प्रतिनिवृत्ताः सर्वे महात्मानः। अहमपि निभृतं चन्द्रकलाभवन-मागच्छम्। मार्गे जाता सैषाऽनुभूतिर्यत्तद्दिवसीय-शुभारम्भस्य पुष्टिरियमिति।

अपरस्मिन् दिवसे पुनः श्रीवेदान्तीजीमहोदयानां दर्शनार्थमगच्छम्। एकाकिनः ते तत्राऽऽसन्। मया शुभारम्भस्य कृता चर्चा। परमप्रसन्नास्ते जाताः। दत्तः शुभाशीर्वादः। शीघ्रमेव समापयितुं च प्रेरितवन्तः।

प्रतिनिवृत्तोऽहमयोध्यायाः। पाटलिपुत्रपत्तने शुभकार्येऽस्मिन्संलग्नः। मिथिलाभाषायाः मूर्द्धन्या लेखकाः श्रीहरिमोहनझामहोदया निशम्यैतद्वृत्तं परमाह्लादं गता भूयो भूयश्च मामुत्साहितवन्तः। विदेहनन्दिन्याः कृपाकटाक्षस्याप्यनुभूतिः प्रतिक्षणं जाता हृदये। २०१५तम-विक्रमाब्दस्य चैत्रे मासे समाप्तप्राये ग्रन्थे हृदयशूलस्य प्रकोपे न्यपतम्। व्यतीताः त्रयो मासाः। प्रथमे ग्रासे एवैतादृशं मक्षिकापातमवलोक्य विह्वलोऽहमभवम्। श्रीकिशोर्याः प्रसादाल्लेखनीं गृहीत्वोत्तरकाण्डस्यान्तिमो भागः परिसमापितः।

समुद्र इव दुस्तरो ग्रन्थो रामचरितमानसाख्यः! प्रायेण पञ्चदशसहस्रपङ्क्तीनां यथासम्भवं पूर्णभावरक्षितं मैथिलीरूपान्तरम्! केन प्रकारेणेदं दुरूहं कार्यं परिपूर्णतां गतामित्यवगन्तुम-समर्थोऽस्मि। अवश्यमेव तस्या विदेहनन्दिन्याः श्रीकिशोर्याः वरदहस्तो मयि विद्यते, इत्येव जाने।

कारिता पाण्डुलिपेः प्रतिलिपिः। मिथिलाभाषाया अनेके विद्वांसः पाण्डुलिपिं पठित्वा प्रसन्ना अभवन्। स्वकीयानि परामर्शाण्यपि कृपया प्रायच्छन्। नैके महात्मानोऽपि आध्यात्मिकैः परामर्शैः सह स्वाशीर्वचनैर्मां प्रेरितवन्तः।

एतेषु जनकपुरवास्तव्या मौनव्रतावलम्बिनः 'श्रीकरपात्री'महोदयाः, चित्रकूटनिवासिनः श्रीरामचन्द्रदासमहानुभावाः, अवधविहारिणः पण्डितप्रवराः श्रीश्रीकान्तशरणाः, श्रीरामविलास-शरणाः, मिथिलायाः श्रीमोदलताजीवाः, तथा पाटलिपुत्रस्थाः श्रीरमाकान्तदासमहोदयाः प्रधानाः सन्ति।

आवृत्ति पुनरावृत्तिञ्च कुर्वतो मम व्यतीतः बहुतिथः कालः। श्रीकिशोर्याः कृपया ग्रन्थस्य पाण्डुलिपिर्मुद्रणालयस्य योग्या जाता। श्री'हिमालयप्रेस'स्य मुख्यः प्रबन्धकः रामायणस्यात्यन्तानुरागी नियमितः पाठकश्च श्रीजानकीवल्लभशरणः दीर्घस्वराणां लघूच्चारणार्थं टङ्कानि (टाइप) निर्मापितवान्। परमावधानतया च मुद्रणस्य समस्तं प्रबन्धं कृतवान्।

प्राध्यापकस्य श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन'महोदयस्य तथा श्री'हिमालय'प्रेसस्य सम्पादनविभागस्य-पण्डितश्रीशिवशंकरझा-महोदयस्य हृदयेनाहं कृतज्ञोऽस्मि। उभावपि-इमौ महानुभावौ मुद्रणसमये मनोयोगपूर्वकं ग्रन्थमिमं दृष्टवन्तौ। सम्प्रत्ययं ग्रन्थः श्रीकिशोर्या मैथिलिभाषायाः सेवायां प्रस्तुतः अस्ति।

अस्मिन् विशाले ग्रन्थे यदि यत्र कुत्रचित् त्रुटयः परिलक्षिता भवेयुस्ताः स्वकीयां महत्तां परिपश्यन्तो विचक्षणाः क्षन्तुमर्हन्ति।

विनीतः
श्रीरामलोचनशरणः

श्रीजानकीनवमी, २०२५तमो विक्रमाब्दः।

किञ्चित् पूर्ववृत्त

संवत् २०१४ वि० क बात थिक। श्रीअवधमे, श्रीसरयूजीक पुलिनमे, श्रीचन्द्रकलाभवनक एक कोठलीमे, शरत्पूर्णिमाक रातिमे उषाकालक आरम्भमे महारास दर्शन कए आयल छी। बैसल छी। श्रीसरयूजीक 'कल-कल' शब्द सुनैत छी। हठात् एहन बूझि पड़ल जे, क्यो ललना हमरा कहि रहलि छथि, श्री मैथिलीजीकें अपना वाणीमे रामायण सुनबिऔन्हि।

हम स्तब्ध छी, की करू की नहि! ओही समयमे हमरा विनयपत्रिकाक 'तिलक' पूर्ण करबाक छल। ओ पूर्ण कएल आ' ओही कलमसँ हम 'श्रीसीताराम' लीखि 'मैथिली श्रीरामचरितमानस'क श्रीगणेश कए देल।

कलम थम्हल रहए। तेसर दिन श्रीवेदान्तीजी (साकेतवासी महात्मा श्रीरामपदार्थ दासजी, जानकीघाट) क दर्शनार्थ गेलहुँ। दण्डवत् कए एक दिस बैसि गेलहुँ। अनेको सन्त अएलाह। अपनामे बातचीत होबए लागल। श्रीरामायणक चर्चा चलल। बजलाह, विश्वक बहुतो देशमे रामायणजीक पद्यबद्ध रूप विकसित भऽ रहल अछि। सुनिकए श्रीवेदान्तीजी प्रसन्नता प्रकट कएलन्हि ओ विश्वक कल्याणक हेतु शुभ-लक्षण कहलन्हि। सन्तमहात्मालोकनि अपना-अपना स्थानपर गेलाह। हमहूँ चुपचाप श्रीचन्द्रकलाभवन आपस अएलहुँ। बाटमे विचार उठल जे, ओहि दिनुक शुभारम्भक ई पुष्टि थिक।

दोसर दिन पुनः श्रीवेदान्तीजीक दर्शनार्थ गेलहुँ। ओ एकसरे छलाह। हम शुभारम्भक बात कहलिऐनि। ओ परम प्रसन्न भेलाह आ' हमरा आशीर्वाद दैत शीघ्र समाप्त करबाक हेतु उत्साहित कएलन्हि।

हम श्रीअवधसँ लौटि अएलहुँ। पटनामे एहि शुभ-कार्यमे लागि पड़लहुँ। मिथिला-भाषाक मूर्द्धन्य लेखक श्रीहरिमोहनझाकें सुनितहिँ अत्यन्त आनन्द भेलन्हि। ओ बारम्बार खोज-खबरि लैत उत्साहित करए लगलाह। श्रीकिशोरी जानकीजीक कृपा क्षण-क्षण अनुभवमे आबए लागल। चैत (संवत् २०१५ वि०) मे ई ग्रन्थ प्रायः समाप्ति पर रहए कि हृदय-शूलक प्रकोपमे पड़ि गेलहुँ। प्रायः तीन मास पड़ल छलहुँ। रुग्णावस्थामे एहि विघ्नक बाधा देखि विह्वल भए गेलहुँ। कलम उठौलहुँ आ' उत्तरकाण्डक अन्तिम अंश श्रीकिशोरीजीक कृपें पूर्ण भेल।

आध्यात्मिक ग्रन्थ श्रीरामचरितमानसक, अनुमान १४-१५ हजार पाँतीक, यथासम्भव पूर्णभाव रक्षित मैथिली रूप! कोना ई दुरूह कार्य सम्पन्न भेल——हमरा बुझबामे नहि अबैछ। निःसन्देह श्रीकिशोरीजीक वरद हस्त हमरा पर छैन्हि।

कापीक प्रतिलिपि कराओल। मिथिला-भाषाक कतेको पण्डितलोकनि कापीक कोनो-ने-कोनो अंश पढ़िकए आनन्दित भेलाह ओ सुझाव सेहो देलन्हि। सन्त-महात्मालोकनि कोनो-ने-कोनो

रूपमे आध्यात्मिक सुझावक संग आशीर्वाद देलन्हि। एहिमे जनकपुरक करपात्री श्री श्री बड़े मौनीबाबा, चित्रकूटक श्रीरामचन्द्रदास (पंजाबी भगवान), अवधकेर पण्डित श्री श्रीकान्तशरण तथा श्रीरामविलासशरण, मिथिलाक श्री मोदलताजी एवं पाटलिपुत्रकेर पण्डित श्री रमाकान्तदास मुख्य छथि।

आवृत्ति-पर-आवृत्ति दैत हमरा बहुत दिन लागि गेल। श्रीकिशोरीजीक कृपासँ ग्रन्थक पाण्डुलिपि प्रेसक योग्य भेल। श्रीहिमालय प्रेसक मुख्य प्रबन्धक श्री रामायणजीक अत्यन्त अनुरागी ओ नियमित पाठक श्रीजानकीवल्लभशरण दीर्घ-स्वरक लघु उच्चारणक हेतु कौमा (टाइप) बनबओलन्हि एवं बड़ तत्परतासँ छपबाक प्रबन्ध कए देलन्हि।

हम प्रोफेसर श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन' एवं श्रीहिमालय प्रेसक सम्पादन विभागक पण्डित श्रीशिवशंकरझाक हृदयसँ कृतज्ञ छी। ईलोकनि छपबाक समय ग्रन्थकेँ मनोयोगपूर्वक देखलन्हि अछि। आब ई श्रीकिशोरीजीक वाणी मैथिलीक सेवामे लागि रहल अछि।

एहि महान् ग्रन्थमे जे किछु त्रुटि रहि गेल हो, तकरा अपना महत्ताक दिसि ध्यान दए क्षमा करब।

विनीत

श्रीजानकीनवमी, २०२५ वि०

श्रीरामलोचनशरण

किञ्चित् पूर्ववृत्त

वि० संवत् २०१४ की बात है। श्री अवध में—श्री सरयू जी के पुलिन में—श्री चन्द्रकला-भवन के एक कक्ष में—शरत् पूनों की रात्रि में—उषा काल के आरम्भ में—मैं महारास दर्शनकर लौट आया हूँ। बैठा हूँ, श्री सरयू जी के कल-कल-शब्द सुन रहा हूँ। एक-ब-एक ऐसा लगा कि कोई ललना मुझे कह रही है—श्री मैथिलीजी को अपनी वाणी में रामायण सुनाइये।

मैं स्तब्ध हूँ, क्या करूँ, क्या नहीं! उसी समय मुझे विनयपत्रिका का तिलक पूर्ण करना था। पूर्ण किया और उसी लेखनी से मैंने 'श्रीसीताराम' लिखकर 'मैथिली श्रीरामचरितमानस' का श्रीगणेश कर दिया।

कलम रुकी रही। तीसरे दिन मैं श्री वेदान्तीजी (साकेतवासी महात्मा श्री रामपदार्थ दास जी, जानकीघाट) के दर्शनों को गया। दण्डवत् कर एक ओर बैठ गया। कई सन्त आये। आपस में वार्त्तालाप होने लगा। श्री रामायण जी की चर्चा चली। बोले, विश्व के कई देशों में रामायण जी के पद्यबद्ध रूप खिल रहे हैं। सुनकर श्री वेदान्तीजी ने प्रसन्नता प्रकट की और विश्वकल्याण के लिये शुभ लक्षण कहा। सन्त-महात्मा अपने स्थानों पर गये। मैं भी चुपचाप श्री चन्द्रकलाभवन लौट आया। रास्ते में विचार बँधा कि उस दिवस के शुभारम्भ की यह पुष्टि है।

कल होकर फिर श्री वेदान्तीजी के दर्शनों को गया। वे अकेले थे। मैंने शुभारम्भ की बात कही। वे परम प्रसन्न हुए और आशीर्वाद देते हुए शीघ्र समाप्त करने के लिये उत्साहित किया।

मैं श्री अवध से लौट आया। पटने में इस शुभ कार्य में लग पड़ा। मिथिला-भाषा के मूर्द्धन्य लेखक श्री हरिमोहन झा को सुनते ही अतीव आनन्द आया और बार-बार खोज-खबर लेते हुए उत्साहित करते रहे। श्री किशोरी जानकीजी की कृपा क्षण-क्षण अनुभव में आने लगी। यह ग्रन्थ चैत (वि० संवत् २०१५) में प्रायः समाप्ति पर था कि हृदय-शूल के प्रकोप में पड़ गया। प्रायः तीन महीने पड़ा रहा। रुग्णावस्था में इस विघ्न-बाधा को देख विह्वल हो उठा। कलम उठाई और उत्तरकाण्ड का अन्तिम अंश श्री किशोरीजी की कृपा से पूर्ण हुआ।

आध्यात्मिक ग्रन्थ श्री रामचरितमानस का, अनुमान १४-१५ सहस्र पंक्तियों का, यथासंभव पूर्णभाव-रक्षित मैथिली रूप! कैसे यह दुरूह कार्य सम्पन्न हुआ—मेरी समझ में नहीं आता। अवश्य ही श्री किशोरी जी का वरद हस्त मुझपर है।

कापी की प्रतिलिपि कराई। मिथिला-भाषा के कई पंडित कापी का कोई-न-कोई अंश पढ़कर आनन्दित हुए और सुझाव दिये। सन्त-महात्माओं ने भी किसी-न-किसी रूप में आध्यात्मिक

सुझावों के साथ आशीर्वाद दिये। इनमें जनकपुर के करपात्रीजी श्री बड़े मौनीबाबा, चित्रकूट के श्री रामचन्द्रदास (पंजाबी भगवान), अवध के पण्डित श्री श्रीकान्तशरण तथा श्री रामविलासशरण, मिथिला के श्री मोदलता जी एवं पाटलिपुत्र के पंडित श्री रमाकान्त दास मुख्य हैं।

आवृत्ति-पर-आवृत्ति देते मुझे बहुत दिन लग गये। श्री किशोरी जी की कृपा से ग्रन्थ की पांडुलिपि प्रेस के लायक हुई। श्री हिमालय प्रेस के मुख्य प्रबन्धक श्री रामायण जी के अत्यन्त अनुरागी और नियमित पाठक श्री जानकीवल्लभशरण ने दीर्घ-स्वरों के लघु उच्चारण के लिये कांटे बनवाये और बड़ी तत्परता से छापने का सारा प्रबन्ध कर दिया।

मैं प्रोफेसर श्री सुरेन्द्र झा जी 'सुमन' और श्री हिमालय प्रेस के सम्पादन विभाग के पण्डित श्री शिवशंकर झा का हृदय से कृतज्ञ हूँ। इन्होंने छपते समय ग्रन्थ को मनोयोगपूर्वक देखा है। अब, यह श्री किशोरी जी की वाणी मैथिली की सेवा में लग रही है।

इस महान् ग्रन्थ में जो कुछ त्रुटियाँ रह गई हों, उन्हें अपनी महत्ता की ओर ध्यान देकर आप मुझे क्षमा कर देंगे।

श्रीजानकीनवमी, २०२५ वि० सं०

विनीत
श्रीरामलोचनशरण

बानगी

बालकाण्ड

१. सोरठा मूल	सोरठा मैथिली
जो सुमिरति सिधि होइ, गननायक करिवर बदन।	सिधि हो सुमरति जैह, गननायक करिबरबदन।
करउ अनुग्रह सोइ, बुद्धि रासि सुभ गुन सदन ।।१।।	करथु अनुग्रह सैह, बुद्धिरासि सुभगुन सदन।।

२. दोहा मूल	दोहा मैथिली
बंदउ संत समान चित, हित अनहित नहि कोउ।	बंदी संत समान चित, क्यो हित अहित न ह्वैछ।
अंजलिगत सुभ सुमन जिमि, सम सुगंध कर दोउ ।।३।।	अंजलिगत सुभ सुमन सम, दुहु कर सुरभि करैछ।।
भलौ भलाइहि पै लहइ, लहइ निचाइहि नीच।	भलक मान हो भलहिं सौं, नीच मान नीचत्व।
सुधा सराहिय अमरता, गरल सराहिय मीच ।।५।।	सुधा प्रसंसिय अमरतें, मरन बिषक पैघत्व।।
करत बतकही अनुज सन, मन सियरूप लुभान।	करथि बतकही अनुज सौं, मन लुबधल सियरूप।
मुख सरोज मकरंद छवि, करइ मधुप इव पान ।।२३।।	मुख सरोज मकरंद छबि, पीबथि बनल मधूप।।

३. चौपाई मूल	चौपाई मैथिली
श्री गुरु पद नख मनि गन जोती।	श्री गुरु पद नख मनि द्युति रासी।
सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती।।	सुमिरति दिव्य दृष्टि परकासी।।
साधुचरित सुभ चरित कपासू।	साधु चरित सुभ तूर समाने।
निरस बिसद गुनमय फल जासू।।	जसु फल निरस बिसद गुनमाने।।
सुनि आचरज करै जनि कोई।	सुनि कय क्यो नहि अजगुत मानू।
सतसंगत महिमा नहिं गोई।।	सतसंग महिमा गुप्त न जानू।।
बिनु सतसंग बिबेक न होई।	नहि बिबेक सतसंग बिहीने।
राम कृपा बिनु सुलभ न सोई।।	सुलभो राम कृपाक अधीने।।
संभु प्रसाद सुमति हिय हुलसी।	संभु प्रसादें सुमति गेल फबि।
राम चरित मानस कवि तुलसी।।	रामचरित मानस तुलसी कबि।।
नदी उमगि अंबुधि कहँ धाईं।	नदी उमकि अंबुधि दिसि धायल।
संगम करहिं तलाव तलाईं।।	पोखर पोखरिक कोर समायल।।* †

* मूल ग्रन्थ—पुंल्लिग एवं स्त्रीलिंग।
मैथिली—पुंल्लिग, स्त्रीलिंग एवं उभयलिंग।

† राजासिबै सिंघ आर सब छोकरा।
पोखरि रजोखरि आर सब पोखरा।। —(मिथिला-लोकोक्ति)।

४. छन्द — मूल

भागेउ विवेकु सहाय सहित
सो सुभट संयुग महि मुरे।
सदग्रंथ पर्वत कंदरन्हि महँ
जाइ तहि अवसर दुरे।।
होनिहार का करतार को
रखवार जग खरभरु परा।
दुइ माथ केहि रतिनाथ जेहि
कहुँ कोपि कर धनुसरधरा।।

पहिचान को केहि जान सबहि
अपान सुधि भोरी मई।
आनंद कंदु बिलोकि दूलह
उभय दिसि आनँद मई।।
सुर लखे राम सुजान पूजे
मानसिक आसन दए।
अवलोकि सील सुभाउ प्रभु को
बिबुध मन प्रमुदित भए।।

छन्द [illegible]

घसकल बिबेक [illegible]
समु [illegible]
सदग्रंथ परक [illegible]
नुकाय [illegible]
को हैत हा विधि के [illegible]
मचल [illegible]
दुइ माथ ककरा [illegible]
पर [illegible]

जानल चिन्हल ककरो [illegible]
अपन सुधि [illegible]
आनंद कंद बिलोकि [illegible]
दुहु पच्छ [illegible]
लखि सुरहिं राम [illegible]
पूजल मानसिक [illegible]
पुनि प्रभुक सील सोभाव [illegible]
अति मुदित [illegible]

५. संस्कृत श्लोक
अपरिवर्तित

सूची

उच्चारण-संकेत

एकारान्त, लघु उच्चारण	ॆ
ऐकारान्त, लघु उच्चारण	ै
ओकारान्त, लघु उच्चारण	ॊ
औकारान्त, लघु उच्चारण	ौ

[illegible], शरत्पूर्णिमा, २०१४

श्रीसीतारामजी

मैथिली

श्रीरामचरितमानस

प्रथम सोपान (बालकाण्ड)

वर्णानामर्थसङ्घानां रसानां छन्दसामपि ।
मङ्गलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणी-विनायकौ ॥१॥

भवानी-शङ्करौ वन्दे श्रद्धा-विश्वासरूपिणौ ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तःस्थमीश्वरम् ॥२॥

वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शङ्कररूपिणम् ।
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते ॥३॥

सीताराम - गुणग्राम - पुण्यारण्य - विहारिणौ ।
वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वर - कपीश्वरौ ॥४॥

उद्भव-स्थिति-संहारकारिणीं क्लेशहारिणीम् ।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम् ॥५॥

यन्मायावशवर्त्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा
यत्सत्त्वादमृषेव भाति सकलं रज्जौ यथाऽहेर्भ्रमः।
यत्पादप्लव एक एव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां
वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम् ॥६॥

नानापुराण-निगमागम-सम्मतं यद्-
रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि।
स्वान्तःसुखाय तुलसी रघुनाथगाथा-
भाषानिबन्धमतिमञ्जुलमातनोति ॥७॥

सोरठा—सिधि हो सुमिरति जैह, गननायक करिवरबदन।
करथु अनुग्रह सैह, बुद्धिरासि सुभ गुन सदन ॥१॥

मूक होअय वाचाल, पंगु चढ़य गिरिवर गहन।
जनिक कृपें से दयाल, द्रवथु सकल कलिमल दहन ॥२॥

नील सरोरुह स्याम, तरुन अरुन बारिज नयन।
करथु से मम उर धाम, सदा छीर सागर सयन ॥३॥

कुंद इंदु सम देह, उमारमन करुना अयन।
जनिक दीन पर नेह, करथु कृपा मरदन मयन ॥४॥

बंदी गुरुपद कंज, कृपासिंधु नररूप हरि।
महामोह तम पुंज, जनिक वचन रविकर निकर ॥५॥

बंदी गुरुपद पदुम परागे। सुरुचि सुबास सरस अनुरागे ॥१॥
अमिय मूलमय चूरन चारू। समन सकल भव रुज परिवारू ॥२॥

सुकृत संभुतन बिमल बिभूती । मंजुल मंगल मोद प्रसूती ॥३॥
जन मन मंजु मुकुर मलहारी । केने तिलक गुन गन बसकारी ॥४॥
श्रीगुरु पद नख मनि दुति रासी । सुमिरति दिव्य दृष्टि परकासी ॥५॥
से सुप्रकास मोहतम हारी । जनि उर आब भाग तनि भारी ॥६॥
उघरय बिमल बिलोचन हिय केर । मिटय दोष दुख भव रजनी केर ॥७॥
सूझय रामचरित मनि मानिक । गुपुत प्रगट जहँ जे जहि खानिक ॥८॥

दोहा—जथा सुअंजन आँजि दृग, साधक सिद्ध सुजान ।
कौतुक देखथि सैल बन, भूतल भूरि निधान ॥१॥

गुरु पद रज मृदु मंजुल अंजन । नयन अमिय दृग दोष बिभंजन ॥ १॥
से कय बिमल बिबेक बिलोचन । बरनी रामचरित भवमोचन ॥ २॥
बंदी प्रथम महीसुर चरने । मोह जनित संसय सब हरने ॥ ३॥
सुजन समाज सकल गुनखानी । करी प्रनाम सप्रेम सुवानी ॥ ४॥
साधु चरित सुभ तूर समाने । जसु फल निरस बिसद गुनमाने ॥ ५॥
जे सहि दुख पर छिद्र छिपाबथि । तैँ जग बंदनीय जस पाबथि ॥ ६॥
मुद मंगलमय संत समाजे । जे जग जंगम तीरथराजे ॥ ७॥
राम भगति जहँ सुरसरि धारे । सरसति ब्रह्म बिचार प्रचारे ॥ ८॥
बिधि निषेधमय कलिमल कंदिनि । करम कथा बरनन रविनंदिनि ॥ ९॥
हरिहर कथा त्रिवेनी भाबय । सुनितहिँ सब मुद मंगल आबय ॥१०॥
बट बिस्वास अचल निज धरमे । तीरथराज समाज सुकरमे ॥११॥
सतत सुलभ सब केँ सब देसे । सेबइत सादर समन कलेसे ॥१२॥
अकथ अलौकिक तीरथराबे । देथि सद्य फल प्रगट प्रभाबे ॥१३॥

दोहा—सुनि बूझथि जन मुदित मन, मज्जथि अति अनुराग ।
लहथि चारि फल अछति तन, साधु समाज प्रयाग ॥२॥

मज्जन फल देखी ततकाले । काक होअय पिक बको मराले ॥ १॥
सुनि कय क्यो नहि अजगुत मानू । सतसँग महिमा गुपुत न जानू ॥ २॥

बालमीकि नारद घटजोनी। निज निज मुखेँ कहल निज होनी ॥ ३॥
जलचर थलचर नभचर नाना। जे जड़ चेतन जीव जहाना ॥ ४॥
मति गति कीर्ति भलाइ बिभूती। जहँ जे जखन लह जाहि जुगूती ॥ ५॥
से सतसंग प्रभाव महाने। लोक वेद साधन नहि आने ॥ ६॥
नहि बिवेक सतसंग बिहीने। सुलभो राम कृपाक अधीने ॥ ७॥
सतसंगति मुद मंगल मूले। सेहे सिधि फल सब साधन फूले ॥ ८॥
सठ सुधरय सतसंगति आबी। लोह सोन बन पारस पाबी ॥ ९॥
विधि बस सुजन कुसंगति पड़थी। फनि मनि सम निज गुन अनुसरथी ॥१०॥
विधि हरि हर कवि कोविद वानी। साधुक महिमा सक न बखानी ॥११॥
बरनि सकी नहि से हम तहिना। साक बनिक मनिगुन गन जहिना ॥१२॥

दोहा—बंदी संत समान चित, क्यो हित अहित न हैछ।
अंजलि गत सुभ सुमन सम, दुहु कर सुरभि करैछ ॥
संत सरल चित जगत हित, नेह सोभावहिँ गूनि।
रामचरन मे रति दियऽ, बाल बिनय मम सूनि ॥३॥

सहज भाव बंदी खल सेहे। दहिनहुँ बाम अकारन जेहे ॥ १॥
जकर लाभ अछि परहित हानी। हरप उजड़ने बसने ग्लानी ॥ २॥
हरि हर जस राकेस राहु सन। पर अकाज भट सहसबाहु सन ॥ ३॥
जे परदोष लखथि सहसाछी। परहित घृत जनिकर मन माछी ॥ ४॥
तेज कृसानु रोष महिषेसे। अघ अवगुन धन धनी धनेसे ॥ ५॥
उदय केतु सम सकल जहाने। सुतले भल घटकरन समाने ॥ ६॥
पर अकाज तन तेजय तेना। गल हिम उपल गला कृपि जेना ॥ ७॥
बंदी खल बुझि सेष सरोषे। सहस बदन बरनय परदोषे ॥ ८॥
पुनि प्रनमी पृथुराज समाने। पर अघ सुनय सहस दस काने ॥ ९॥
बहुरि सक्र सम बिनमी ताही। संतत सुरानीक हित जाही ॥१०॥
बचन बज्र जनिका प्रिय मन सौँ। लख परदोप सहस्र नयन सौँ ॥११॥

दोहा—उदासीन अरि मीत हित, सुनति जरय खल रीति ।
जानि पानि जुग जोड़ि हम, बिनति करी सप्रीति ॥४॥

हम निज दिसि सौँ कयल निहोरे । ओ कि अपन दिसि चुकता थोरे ॥१॥
बायस पोसी अति अनुरागे । कहियो हो कि निरामिष कागे ॥२॥
बंदी सुजन कुजन पद दूनू । दुखप्रद उभय बीच किछु सूनू ॥३॥
बिछुरति एक प्रान हरि लेथी । मिलति एक दारुन दुख देथी ॥४॥
उपजथि सँग जग एक समाने । जलज जोँक गुन आने आने ॥५॥
सुधा सुरा सम साधु असाधू । जनक एक जग जलधि अगाधू ॥६॥
भल अनभल निज निज करतूती । लहथि सुजस अपजसक बिभूती ॥७॥
सुधा सुधाकर सुरसरि साधू । गरल अनल कलिमल सरि ब्याधू ॥८॥
गुन ओ अवगुन सब क्यो जानय । जे जहि भावय भल तहि मानय ॥९॥

दोहा—भलक मान हो भलहिँ सौँ, नीच मान नीचत्व ।
सुधा प्रसंसिय अमरतेँ, मरन बिषक पैघत्व ॥५॥

खल अघ अगुन साधु गुन गाने । उभय अपार समुद्र समाने ॥१॥
तेँ किछु किछु गुन दोष बखानल । संग्रह त्याग न हो बिनु जानल ॥२॥
भल अनभल सब विधि उपजाओल । गनि गुन दोष वेद बिलगाओल ॥३॥
श्रुति पुरान इतिहास बखानल । विधि प्रपंच गुन अवगुन सानल ॥४॥
दुख सुख पाप पुन्य दिन राती । साधु असाधु सुजाति कुजाती ॥५॥
दनुज देव ओ ऊँच नीच जन । माहुर मरन अमृत संजीवन ॥६॥
माया ब्रह्म जीव जगदीसे । लच्छि अलच्छि रंक अवनीसे ॥७॥
कर्मनास सुरसरि मग कासी । मरु मालब महिदेव गवासी ॥८॥
स्वर्ग नरक अनुराग विरागे । निगम अगम गुन दोप विभागे ॥९॥

दोहा—जड़ चेतन गुन दोषमय, बिस्व कयल करतार ।
संत हंस गुन गहथि पय, परिहरि वारि बिकार ॥६॥

येहन विवेक देथि विधि जखने। दोष त्यागि मन गुन रत तखने ॥ १॥
प्रबल सोभाव काल ओ कर्मे। भलो प्रकृति बस चुकथि स्वधर्मे ॥ २॥
हरिजन जनि सुधारि से लेथी। दलि दुख दोष बिमल जस देथी ॥ ३॥
खलो करय भल पावि सुसंगे। छुटय न मलिन सोभाव अभंगे ॥ ४॥
लखि सुवेष जग वंचक जेहो। वेष प्रतापेँ पूजित सेहो ॥ ५॥
उघरय अंत न निबहय तहिना। राहु कालनिमि रावन जहिना ॥ ६॥
साधु कुवेषहुँ जग सम्माने। जहिना जामवंत हनुमाने ॥ ७॥
लाभ सुसंग कुसंगति हानी। सब केँ बिदित लोक श्रुति वानी ॥ ८॥
गगन चढ़य रज पवन प्रसंगे। थालहिँ मिलय नीच जल संगे ॥ ९॥
साधु असाधु सदन सुक सारी। सुमिरय राम दिअय गनि गारी ॥१०॥
धूम कुसंगति बनय सियाही। लिखी पुरान बना मसि ताही ॥११॥
अनल अनिल जल संगे सेहे। हो जग जीवनदायक मेहे ॥१२॥

दोहा—ग्रह भेषज जल पवन पट, पावि कुजोग सुजोग।
होअय कुवस्तु सुवस्तु जग, लखय सुलच्छन लोग ॥

सम प्रकास तम पाख दुहु, नाम भिन्न विधि कैल।
ससि सोषक पोषक समुझि, जग जस अपजस धैल ॥

जड़ चेतन जग जीव जत, सकल राममय जानि।
बंदी सबहुक पद कमल, सदा जोरि जुग पानि ॥

देव दनुज नर नाग खग, प्रेत पितर गंधर्व।
बंदी किन्नर रजनिचर, आब कृपा करु सर्व ॥७॥

आकर चारि लाख चौरासी। जाति जीव जल थल नभ वासी ॥१॥
सीय राममय सब जग जानी। करी प्रनाम जोरि जुग पानी ॥२॥
मोहि कृपालु किंकर अवधारी। छोह करू सब मिलि छल छारी ॥३॥
निज बुधि बलक न हमरा आसे। विनय करी तेँ सबहुक पासे ॥४॥

चाही करय राम गुन गाने। लघु मति मम प्रभु चरित महाने ॥ ५॥
तुलय न एको अंग उपाये। मम मति रंक मनोरथ राये ॥ ६॥
मति अति नीच ऊँच रुचि मोरे। चाही अमिय जुड़य नहि घोरे ॥ ७॥
सज्जन हमर ढिठाइ न गुनता। मनसौँ बाल बचन से सुनता ॥ ८॥
जौँ सिसु कह अधबोलिया बाता। मुद मन सुनथि पिता ओ माता ॥ ९॥
ममता क्रूर कुटिल कुविचारी। जे पर दूषन भूषन धारी ॥१०॥
अपन कबित नहि ककरा नीके। सरस होय अथवा अति फीके ॥११॥
जे कबित्त सुनि हरषथि जेटा। छथि न बहुत जग नरबर सेटा ॥१२॥
जग बहु नर सर सरि सम देखी। उमड़य निज जल बाढ़ि बिसेखी ॥१३॥
सुजन सकृत क्यो सिंधु समाने। बढ़य देखि जे पूरन चाने ॥१४॥

दोहा—भाग छोट अभिलाख बड़, करी एक बिस्वास।
पौता सुख सुनि सुजन सब, खल करता उपहास ॥८॥

खल परिहास हैत हित मोरे। काक कहय कलकंठ कठोरे ॥ १॥
बक हँस हंसहिँ दादुर चातक। खल उपहास करय भल बातक ॥ २॥
कवित रसिक न राम पद नेहे। तनिका सुखद हास्य रस एहे ॥ ३॥
भाषा भनित न मति मम चोखे। हँसहिक जोग हँसओ नहि दोखे ॥ ४॥
प्रभु पद प्रीति सुबुद्धि न जनिका। कथा नीक लगतनि नहि तनिका ॥ ५॥
हरि हर पद रति कुतरक दूरे। तनिका रघुवर कथा मधूरे ॥ ६॥
राम भगति भूषित जिय जानी। सुनता सुजन सराहि सुबानी ॥ ७॥
कवि नहि छी नहि बचन प्रवीने। सकल कला सब विद्या हीने ॥ ८॥
आखर अरथ अलंकृति नाना। छंद प्रबंध अनेक बिधाना ॥ ९॥
भाव भेद रस भेद अपारे। कवित दोष गुन विविध प्रकारे ॥१०॥
कवित विबेक एक नहि मोरे। सत्य कही लिखि कागत कोरे ॥११॥

दोहा—भनिति हमर सब गुन रहित, विस्व बिदित गुन एक।
से विचारि सुनता सुमति, जनिका विमल विबेक ॥९॥

जेहि मे रघुपति नाम उदारे। अति पावन पुरान श्रुति सारे ॥१॥
मंगल भवन अमंगल हारी। उमा सहित जे जपथि पुरारी ॥२॥

भनिति विचित्र सुकवि कृत जेहे । राम नाम बिनु सोभ न सेहो ॥ ३॥
सब विधि सज्जित ससिमुखि नारी । की सोभा पावथि बिनु सारी ॥ ४॥
सब गुन रहित कुकवि कृत बानी । राम नाम जस अंकित जानी ॥ ५॥
सादर कहथि सुनथि बुध ताही । मधुकर सरिस संत गुन ग्राही ॥ ६॥
येतय न जदपि कवित रस लेसे । परगट राम प्रताप विसेसे ॥ ७॥
सैह भरोस मोर मन आबय । के न सुसंग बड़प्पन पावय ॥ ८॥
धुआँ सहज कटुता निज त्यागी । बनय सुगंध अगर सँग लागी ॥ ९॥
भनिति भदेस भनल भल बाता । रामकथा जग मंगलदाता ॥१०॥

छंद—मंगल करनि कलिमल हरनि ई तुलसि रघुनायक कथा ।
गति बाँक येहि कविता सरस पावन सरित पाथक जथा ॥
प्रभु सुजस संगति भनिति भल भाओत सुजन मन मे येना ।
भव अंग भूति मसान केर सुमिरति सुभग पावन जेना ॥

दोहा—प्रिय लागत अति सबहिँ मम, भनिति राम जस संग ।
दारु बिचार कि करय क्यो, बंदिय मलय प्रसंग ॥

स्याम सुरभि पय बिसद अति, गुनद करथि सब पान ।
गिरा ग्राम्य सियराम जस, गावथि सुनथि सुजान ॥१०॥

मनि मानिक मुकता छबि जेहन । अहि गिरि गज सिर सोह न तेहन ॥१॥
नृप किरीट तरुनी तनु पावय । तौँ अधिकाधिक सोभा आवय ॥२॥
तहिना सुकवि कवित बुध गावय । उपजय अनत अनत छबि पावय ॥३॥
सुमिरति गिरा विधिक गृह त्यागी । दौड़लि आवथि भगतिक लागी ॥४॥
रामचरित सर बिना नहैने । से श्रम जाय न कतबहु कैने ॥५॥
कवि कोविद हिय येहन विचारी । गावथि हरिजस कलिमलहारी ॥६॥
प्राकृत जन गुन बरनन कयने । बानी पछतावथि सिर धयने ॥७॥
हृदय सिंधु मति सीप समाने । स्वाति सारदा कहथि सुजाने ॥८॥
जौँ बरपय विचार जल सुंदर । होअय कवित मुकुता मनि मनहर ॥९॥

दोहा—जुगुति बेधि पुनि गाँथि कय, रामचरित बर ताग।
पहिरथि सज्जन बिमल उर, सोभा अति अनुराग ॥११॥

जे जनमल कलिकाल कराले। करतब बायस बेष मराले ॥ १॥
चलय कुपंथ वेदपथ छाड़ी। कपट कलेवर कलिमल हाँड़ी ॥ २॥
बंचक भगत कहाकय रामक। किंकर कंचन क्रोधक कामक ॥ ३॥
तहि मे प्रथम रेख गनु मोरे। धिक धर्मध्वज धंधक धोरे ॥ ४॥
सकल अपन अवगुन जौँ गायब। बाढ़त कथा पार नहि पायब ॥ ५॥
तैँ हम ई अति अलप बखानी। थोड़बहि मे बुध लेता जानी ॥ ६॥
हमर बिबिध बिनती ई गुनइत। दोष न देता कथा क्यो सुनइत ॥ ७॥
येतबहु पर करता जे संके। मोहि सौँ अधिक से जड़मति रंके ॥ ८॥
कवि नहि छी नहि चतुर कहाबी। मति अनुरूप राम गुन गाबी ॥ ९॥
कहाँ चरित रघुपतिक अपारे। कहाँ हमर मति रत संसारे ॥१०॥
जे मारुत गिरि मेरु उड़ाबय। कहू तूर की लेखा पाबय ॥११॥
रामक प्रभुता अमित विचारी। रचति कथा मन कादर भारी ॥१२॥

दोहा—सारद सेष महेस विधि, आगम निगम पुरान।
नेति नेति कहि जनिक गुन, करथि निरंतर गान ॥१२॥

प्रभु प्रभुता सब जानय जइयो। बिनु कहने क्यो रहल न तइयो ॥ १॥
तहाँ येहन श्रुति कारन राखल। भजन प्रभाव भाँति बहु भाखल ॥ २॥
एक अनीह अरूप अनामे। अज सच्चिदानंद परधामे ॥ ३॥
ब्यापक बिस्वरूप भगवाना। तन धय चरित कयल जे नाना ॥ ४॥
से केवल भगतक हित लागी। परम कृपालु प्रनत अनुरागी ॥ ५॥
जन पर ममत दया जे धरथी। करुना कय पुनि क्रोध न करथी ॥ ६॥
गेलो घुरबथि गरिबनिवाजे। सरल सबल साहेब रघुराजे ॥ ७॥
बुध बरनथि हरि जस ई जानी। करथि पुनीत सुफल निज बानी ॥ ८॥
तहि बल हम रघुपति गुन गाथा। बरनब झुका रामपद माथा ॥ ९॥
मुनि गन हरि जस प्रथमहि गाओल। तहि पथ चलति सुगम मोहि भाओल ॥१०॥

दोहा—नृप बनाय जौँ देथि पुल, सरिता धार अपार।
चढ़ि पिपीलिको परम लघु, होअय विना श्रम पार ॥१३॥

येहि विधि देखा मनहिँ बल पावन। गायब रघुपति कथा सोहावन ॥ १॥
ब्यास आदि कविवर जे नाना। सादर हरि जस कयल बखाना ॥ २॥
चरन कमल बंदी तनिकर हम। पुरवथु सकल मनोरथ से मम ॥ ३॥
कलि केर कवि केँ करी प्रनामे। जे वरनल रघुपति गुनग्रामे ॥ ४॥
जे प्राकृत कविगन जग जानल। जे भाषा हरि चरित बखानल ॥ ५॥
भेला छथि हैता जे आवहुँ। प्रनमी तनिका निसछल भावहुँ ॥ ६॥
होथु प्रसन्न देथु बरदाने। साधु समाज भनिति लह माने ॥ ७॥
जे प्रबंध बुध नहि आदरथी। से श्रम बृथा बाल कवि करथी ॥ ८॥
कीरति भनिति भूति भल सेहे। सुरसरि सम सबहुक हित जेहे ॥ ९॥
राम सुकीरति भनिति भदेसा। असमंजस ई मोहि अंदेसा ॥१०॥
होयत सुलभ कृपा सौँ तोरे। सपटा सोभित सियनि पटोरे ॥११॥
करू अनुग्रह ई जिय जानी। बिमल जसक अनुगत हो बानी ॥१२॥

दोहा—सरल कवित कीरति विमल, से आदरथि सुजान।
सहज वैर केँ विसरि रिपु, जे सुनि करथि वखान॥
से न होअय विनु विमल मति, मोहि मतिबल अति थोर।
करू कृपा हरि जस कही, पुनि पुनि करी निहोर॥
कवि कोविद रघुवर चरित, मानस मंजु मराल।
बाल विनय सुनि सुरुचि लखि, मोहि पर होथु दयाल॥

सोरठा—वंदी मुनि पदकंज, रामायन जनिकर रचित।
सखर सुकोमल मंजु, दोष रहित दूषन सहित॥
वंदी चारू वेद, भव वारिधि बोहित सरिस।
जनि सपनहुँ नहि खेद, कहइत रघुवर विसद जस॥

बंदी विधि पद रेनु, भवसागर जे रचल जहँ।
संत सुधा ससि धेनु, प्रगटल खल बिष बारुनी ॥

दोहा—बिबुध बिप्र बुध ग्रह चरन, कर जोरि करी प्रणाम।
सबहु पुराउ प्रसन्न भय, मम इच्छा अभिराम ॥१४॥

पुनि बंदी सारद सुरसरिता। जुगल पुनीत मनोहर चरिता ॥ १॥
मज्जन पान पाप हर एके। कहति सुनति येक हर अबिबेके ॥ २॥
गुरु पितु मातु महेस भवानी। प्रनमी दीनबंधु नित दानी ॥ ३॥
सेबक स्वामि सखा सिय पी केर। हित निरुपधि सब बिधि तुलसी केर ॥ ४॥
हर गिरिजा जग लखि कलि काले। सिरजल साबर मंत्रक जाले ॥ ५॥
अनमिल आखर अरथ न जापे। प्रगट प्रभाव महेस प्रतापे ॥ ६॥
से महेस मोहि पर अनुकूले। करथु कथा मुद मंगल मूले ॥ ७॥
सुमिरि सिवासिव पाबि प्रसादे। बरनी रामचरित अहलादे ॥ ८॥
छजत भनिति सिव कृपया तहिना। ससि समाज मिलि रजनी जहिना ॥ ९॥
जे ई कथा सनेह समेते। कहता सुनता समुझि सचेते ॥१०॥
होयता राम चरन अनुरागी। कलिमल रहित सुमंगल भागी ॥११॥

दोहा—सपनहुँ सत हर गौरि जौं, कृपा मोहि पर लाब।
जे कहलहुँ से साँच हो, भाषा भनिति प्रभाव ॥१५॥

बंदी अवधपुरी अति पावन। सरजू सरि कलि कलुप नसावन ॥१॥
पुनि प्रनमी हम पुर नर नारी। प्रभुक ममत जनिका पर भारी ॥२॥
सिय निंदक अब ओघ नसाओल। लोक बिसोक बनाय बसाओल ॥३॥
पूब दिसा कौसल्या धन्या। जनिक कीर्ति भरि जगत अनन्या ॥४॥
उदित चारु जहँ रघुपति चंदा। खल पंकज हिम जग सुखकंदा ॥५॥
दसरथ भूप सहित सब रानी। सुकृत सुमंगल मूरति मानी ॥६॥
करी प्रनाम करम मन बानी। करथु कृपा सुत सेवक जानी ॥७॥
जनिका रचि बड़ भेला विधाता। महिमा अवधि राम पितु माता ॥८॥

दोहा—बंदी अवध भुआल, जनिक प्रेम सत राम पद ।
बिछुरति दीन दयाल, प्रिय तन तृन इव देल तजि ।।१६।।

प्रनमी परिजन सहित बिदेहे । जनिक राम पद गूढ़ सिनेहे ।। १।।
जोग भोग गोपित छल जेहे । रामहिँ लखति प्रगट भेल सेहे ।। २।।
प्रथम भरत केर लागी गोड़े । बरनति जसु ब्रत नेम न ओरे ।। ३।।
जसु मन राम चरन अरबिंदा । पास न तज जनि लुबुध मिलिंदा ।। ४।।
बंदी लछुमन पद जलजाता । सीतल सुभग भगत सुखदाता ।। ५।।
रघुपति कीरति ध्वजा महाने । भेल जनिक जस दंड समाने ।। ६।।
सेष सहससिर जे जग कारन । भू भय हरय कयल तन धारन ।। ७।।
रहु अनुकूल सदा हमरा पर । कृपासिंधु सौमित्र गुनाकर ।। ८।।
रिपुसूदन पद कमल नमामी । सूर सुसील भरत अनुगामी ।। ९।।
बिनमी महावीर हनुमाने । रामो कयल जनिक जस गाने ।।१०।।

सोरठा—प्रनमी पवनकुमार, खल बन पावक ज्ञान घन । -
जनिक हृदय आगार, बसथि राम सर चाप धर ।।१७।।

कपि पति रीछ निसाचर राजा । अंगदादि जे कीस समाजा ।। १।।
सभक चरन सुभ करी प्रनामे । अधम देह पाओल जे रामे ।। २।।
सेवक रघुपति पदक जतेके । खग मृग नर सुर असुर अनेके ।। ३।।
बंदी पद सरोज हम तनिकर । जे बिनु काजहिँ रामक किंकर ।। ४।।
सुक सनकादि भगत मुनि नारद । जे मुनिबर बिज्ञान बिसारद ।। ५।।
प्रनमी सबहिँ धरनि धय सीसे । करथु कृपा जन जानि मुनीसे ।। ६।।
जग जननी श्री जनक कुमारी । जानकि कृपानिधिक अति प्यारी ।। ७।।
तनिकर जुग पद कमल मनावी । जनिक कृपेँ निरमल मति पावी ।। ८।।
पुनि मन बचन करम रघुनायक । चरन कमल बंदी सब लायक ।। ९।।
राजिव नयन धेने धनु सायक । भगत बिपति भंजन सुखदायक ।।१०।।

दोहा—गिरा अरथ जल वीचि सम, कहितहुँ भिन्न न भिन्न ।
बंदी सीताराम पद, जाहि परम प्रिय खिन्न ।।१८।।

बंदी नाम राम रघुवर केर । हेतु कृसानु भानु हिमकर केर ॥१॥
विधि हरि हरमय वेदक प्राने । अगुन अनूपम गुनक निधाने ॥२॥
महामंत्र जे जपथि महेसे । कासी मुकुति हेतु उपदेसे ॥३॥
जान गनेस नाम परभावे । जहि बल प्रथमहि पूजा पावे ॥४॥
जान आदिकवि नाम प्रतापे । भेला सुद्ध कय उनटा जापे ॥५॥
सहस नाम सम सुनि सिव वानी । जपथि सदा पिय संग भवानी ॥६॥
हर हिय हेतु हेरि हरषैले । तिय भूषन निज भूषन कैले ॥७॥
सिव जानथि निक नाम प्रभावे । कालकूट फल सुधा स्वभावे ॥८॥

दोहा—बरषा रितु रघुपति भगति, तुलसी सालि सुदास ।
राम नाम बर बरन जुग, साओन भादव मास ॥१९॥

आखर मधुर मनोहर दूनू । बरन बिलोचन जन मन गूनू ॥१॥
सुमिरति सुलभ सबहुँ अति भावय । लोक लाभ परलोक बनावय ॥२॥
कहति सुनति सुमिरैत मनोरम । प्रिय तुलसी केँ राम लखन सम ॥३॥
बरनति बरन प्रीति भिन भाती । ब्रह्म जीव सम सहज सँघाती ॥४॥
नर नारायन सरिस सुभ्राता । जग पालक बिसेषि जन त्राता ॥५॥
भगति सुतिय कल करन बिभूषन । जग हित हेतु बिमल बिधु पूषन ॥६॥
स्वाद तोष सम सुगति सुधा केर । कमठ सेष सम धर बसुधा केर ॥७॥
जन मन मंजु कंज मधुकर सम । जीभ जसोमति हरि हलधर सम ॥८॥

दोहा—एक छत्र येक मुकुट मनि, सकल बरन पर छाज ।
तुलसी रघुवर नाम केर, दूनू बरन बिराज ॥२०॥

बुझइत सरिस नाम ओ नामी । प्रीति परसपर प्रभु अनुगामी ॥१॥
नाम रूप दुहु ईस उपाधी । अकथ अनादि सुबुधियेँ साधी ॥२॥
के बड़ छोट कहब अपराधू । सुनि गुनि अंतर बुझता साधू ॥३॥
रूप पड़य लखि नाम अधीने । रूप ज्ञान नहि नाम विहीने ॥४॥
रूप विसेष नाम विनु जनने । चिन्हि न होअय बरु करतल अनने ॥५॥
सुमिरू नाम रूप विनु देखी । आओत हृदय सिनेह विसेखी ॥६॥

नाम रूप गति अकथ कहानी। बुझइत सुखद न होअय बखानी ॥७॥
अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी। उभय प्रबोधक चतुर दुभाखी ॥८॥

दोहा—राम नाम मनि दीप धरु, जीभ देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहरहु, जौँ चाही उजियार ॥२१॥

नाम जीभ जपि जागथि जोगी। बिरति बिरंचि प्रपंच बियोगी ॥१॥
ब्रह्म सुखहिँ अनुभवथि अनूपे। अकथ अनामय नाम न रूपे ॥२॥
जानय चाह गूढ़ गति जेहे। नाम जीभ जपि जानथि सेहे ॥३॥
साधक नाम जपथि चित लावी। होथि सिद्ध अनिमादिक पावी ॥४॥
जपथि नाम जन आरत भारी। नसय कुसंकट होथि सुखारी ॥५॥
राम भगत जग चारि प्रकारे। सुकृती चारू अनघ उदारे ॥६॥
चारू चतुरहिँ नाम अधारे। ज्ञानी प्रभुहिँ बिसेष पियारे ॥७॥
चहु जुग चहु श्रुति नाम महाने। कलिहिँ बिसेष उपाय न आने ॥८॥

दोहा—सकल कामना हीन जे, राम भगति रस लीन।
नाम सुप्रेम पियूष हृद, सेहो कयल मन मीन ॥२२॥

अगुन सगुन दुहु ब्रह्म सरूपे। अकथ अगाध अनादि अनूपे ॥१॥
हमर मतेँ बड़ नाम जुगल सौँ। दुहु केँ जे वस कयल स्वबल सौँ ॥२॥
सुजन बुझथु नहि बात बनौलहुँ। मनक प्रतीति प्रीति रुचि गौलहुँ ॥३॥
एक दारुगत देखी एके। पावक सम जुग ब्रह्म बिबेके ॥४॥
उभय अगम जुग सुगम नाम सौँ। कही नाम बड़ ब्रह्म राम सौँ ॥५॥
व्यापक एक ब्रह्म अबिनासी। सत चेतन घन आनँदरासी ॥६॥
रहति येहन प्रभु हिय अबिकारी। सकल जीव जग दीन दुखारी ॥७॥
नाम निरूपन नाम जतन सौँ। सेहो प्रगटय जनि मोल रतन सौँ ॥८॥

दोहा—निरगुन सौँ येहि भाँति बड़, नाम प्रभाव अपार।
कही नाम बड़ राम सौँ, निज विचार अनुसार ॥२३॥

[illegible] भगत हित नर तन धेलनि । सुखी साधु सहि संकट केलनि ॥१॥
[illegible] सप्रेम जपति अनयासे । भगत होथि मुद मंगल वासे ॥२॥
[illegible] एक तापस तिय तारल । नाम कोटि खल कुमति सुधारल ॥३॥
[illegible] सुकेतुसुता रिपि हेते । संहारल सुत सैन समेते ॥४॥
[illegible] दुख दोष दुरासा दासक । दलय नाम जनि रवि निसि नासक ॥५॥
[illegible] राम तोरल भव चापे । भवभय भंजन नाम प्रतापे ॥६॥
दंडक वन प्रभु कयल सोहावन । नाम कयल बहु जन मन पावन ॥७॥
निसिचर निकर दलल रघुनंदन । नाम सकल कलि कलुष निकंदन ॥८॥

दोहा—सबरी गीध सुसेवकहिँ, सुगति देल रघुनाथ ।
नाम उधारल अमित खल, वेद विदित गुन गाथ ॥२४॥

नाम उभय सुग्रीव बिभीषन । राखल सरन जान के नहि जन ॥१॥
नाम अनेक गरीब बचाओल । लोक वेद बिरुदावलि गाओल ॥२॥
राम भालु कपि कटक जुटाओल । सेतु हेतु श्रम कम न लगाओल ॥३॥
नाम लैत भवसिंधु महाने । सुखय मन मे बुझू सुजाने ॥४॥
राम सकुल रन रावन मारल । सीय सहित निज पुर पद धारल ॥५॥
राजा राम अवध रजधानी । गाबथि गुन सुर मुनि बर वानी ॥६॥
सेवक सुमिरति नाम सप्रीती । बिनु श्रम प्रबल मोह दल जीती ॥७॥
फिरथि सिनेह मगन सुख अपने । नाम प्रसाद सोच नहि सपने ॥८॥

दोहा—ब्रह्म राम सौँ नाम बड़, बरदायक बरदानि ।
रामचरित सत कोटि मे, लेल महेस जिय जानि ॥२५॥

मास पारायण, विश्राम—१

नाम प्रसाद संभु अविनासी । साज अमंगल मंगल रासी ॥१॥
सुक सनकादि सिद्ध मुनि जोगी । नाम प्रसाद ब्रह्म सुख भोगी ॥२॥
नाम प्रताप बुझल नारद मुनि । जगप्रिय हरि हरि हर प्रिय छथि पुनि ॥३॥
नाम जपति प्रभु कयल प्रसादे । भगत सिरोमनि भेल प्रहलादे ॥४॥
ध्रुव सगलानि जपल हरिनामे । पौलनि अचल अनूपम ठामे ॥५॥
सुमिरि पवनसुत पावन नामे । अपना वस कय राखल रामे ॥६॥

पतित अजामिल गज ओ गनिका । नाम प्रभाव मुकुति भेल तनिका ॥७॥
नाम बड़ाई कतेक सुनावी । राम न सकथि नाम गुन गावी ॥८॥

दोहा—नाम राम केर कलप तरु, कलि कल्यान निवास ।
सुमिरि भेल जे भाँग सौँ, तुलसी तुलसी दास ॥२६॥

चहु जुग तीनि काल तिहु लोके । भेल नाम जपि जीव बिसोके ॥१॥
वेद पुरान संत मत एहे । सकल सुकृत फल राम सिनेहे ॥२॥
ध्यान प्रथम जुग मख बिधि दोसर । पूजा प्रभु परितोपन तेसर ॥३॥
कलि केवल मल मूल मलीने । पाप पयोनिधि जन मन मीने ॥४॥
नाम काम तरु काल कराले । सुमिरति समन सकल जग जाले ॥५॥
राम नाम कलि अभिमत दाता । हित परलोक लोक पितु माता ॥६॥
नहि कलि करम न भगति बिबेके । राम नाम अवलंबन एके ॥७॥
कालनेमि कलि कपट निधाने । नाम सुमति समरथ हनुमाने ॥८॥

दोहा—राम नाम नर केसरी, कनककसिपु कलि काल ।
जापक जन प्रहलाद इव, पालथि दलि सुरसाल ॥२७॥

भाव कुभाव अनख ओ आलस । नाम जपैत सुमंगल दिसि दस ॥ १॥
सुमिरि से नाम राम गुन गाथे । रची नमा रघुनाथहिँ माथे ॥ २॥
से सुधारि करता मोहि नीके । कृपो अघाय न कृपेँ जनीके ॥ ३॥
राम सुप्रभु मम सम बद चाकर । पोसल निज दिसि हेरि दयाकर ॥ ४॥
लोको वेद सुस्वामिक रीती । सुनितहिँ बिनय जाथि बुझि प्रीती ॥ ५॥
धनी गरीब ग्राम नर नागर । पंडित मूढ़ मलीन उजागर ॥ ६॥
सुकवि कुकवि निज मति अनुरूपे । सब नर नारि सराहथि भूपे ॥ ७॥
साधु सुजान सुसील नृपाले । ईस अंस भव परम कृपाले ॥ ८॥
सुनि सनमानथि सबहिँ सुबानी । भनिति भगति नति गति पहिचानी ॥ ९॥
ई सोभाव प्राकृत भूपक छनि । कोसलपति तौँ ज्ञानि सिरोमनि ॥१०॥
रीझथि राम सुद्ध अनुरागे । मम सम मंद मलिन के जागे ॥११॥

दोहा—सठ सेबक कैर प्रीति रुचि, रखता राम कृपालु।
उपल कयल जलजान जे, सचिव सुमति कपि भालु॥
हमहु कहैछी सब कहय, राम सहथि उपहास।
साहैब सीतानाथ सन, सेबक तुलसीदास॥२८॥

दोष ढिठाइ अपन बड़ गूनी। नरको नाक सुनय अघ खूनी॥१॥
बुझि स्वदोष सहमी डर अपने। राम न से सुधि आनल सपने॥२॥
सुनि अबलोकि सुचित दृग थाहल। हमर भगति मति स्वामि सराहल॥३॥
हृदय नीक बरु बिगड़य बानी। रिझथि राम जन कैर जिय जानी॥४॥
कयल चूक प्रभु हिय नहि धारथि। हियक भाव पुनि पुनि मन पारथि॥५॥
जहि अघ बधल ब्याध जनु बाली। पुनि सुकंठ कैल सैह कुचाली॥६॥
करनी सैह बिभीषन कैलनि। सपनहुँ से न राम हिय धैलनि॥७॥
करइत भेँट भरत सनमानल। राज सभा रघुबीर बखानल॥८॥

दोहा—प्रभु तरु तर कपि डारि पर, कैलनि अपन समान।
तुलसी कतहु न राम सन, साहैब सील निधान॥
राम नीकपन अहँक अछि, नीके सब जन लेल।
जौँ ई साँचे सतत अछि, तुलसीहुक निक भेल॥
येहिबिधि निज गुन दोष कहि, पुनि सिर सबहिँ नमाय।
बरनी रघुबर बिसद जस, सुनि कलि कलुष नसाय॥२९॥

जाज्ञबल्क जे कथा सोहाबन। कहलनि भरद्वाज केँ पाबन॥१॥
कहब सैह संबाद बखानी। सुनू सकल सज्जन सुख मानी॥२॥
रचि ई चरित संभु हिय राखल। पुनि कय कृपा उमा सौँ भाखल॥३॥
से सिव कागभुसुंडि बखानल। राम भगत अधिकारी जानल॥४॥
तनि सौँ जाज्ञबल्क पुनि पाओल। से पुनि भरद्वाज प्रति गाओल॥५॥
से श्रोता बकता सम सीला। सबदरसी जानथि हरि लीला॥६॥
जानथि तीन काल निज ज्ञानेँ। करतल गत आमलक समाने॥७॥
औरो जे हरि भगत सुजाना। कहथि सुनथि समुझथि बिधि नाना॥८॥

दोहा—हम पुनि निज गुरु सौँ सुनल, कथा से सूकर खेत।
बुझलहुँ नहिँ नेना छलहुँ, रहलहुँ बहुत अचेत॥
श्रोता वकता ज्ञान निधि, कथा राम केर गूढ़।
बुझब कोना हम जीव जड़, कलिमल ग्रसित विमूढ़॥३०॥

तदपि कहल गुरु बारंबारे। किछु बुझि पड़ल स्वमति अनुसारे॥ १॥
भाषाबद्ध करब तहि तेना। हो प्रबोध हमरा मन जेना॥ २॥
हमरा बुधि विबेक बल जेहने। कहब हृदय हरि प्रेरित तेहने॥ ३॥
निज संदेह मोह भ्रम हरनी। रची कथा भव सरिता तरनी॥ ४॥
बुध बिश्राम सकल जन रंजन। राम कथा कलि कलुप विभंजन॥ ५॥
राम कथा कलि पन्नग भरनी। पुनि बिबेक पावक हित अरनी॥ ६॥
राम कथा कलि सुरभि अनूपे। सुजनक हित संजीवन रूपे॥ ७॥
से वसुधातल सुधा तरंगिनि। भय भंजनि भ्रम भेक भुजंगिनि॥ ८॥
असुर सेन सम नरक निकंदिनि। साधु विबुध कुल हित गिरिनंदिनि॥ ९॥
संत समाज पयोधि रमा सन। विस्व भार भर अचल छमा सन॥१०॥
जमुना सन जम मुँह मसि रासी। जीवन मुकुति हेतु जनि कासी॥११॥
रामहिँ प्रिय तुलसी सन पावन। तुलसिदास हित हिय हुलसावन॥१२॥
अछि सिवप्रिय ई मेकलकन्या। सब सिधि सुख संपति युत धन्या॥१३॥
सदगुन सुरगन अंब अदिति सन। रघुवर भगति प्रेम परमिति सन॥१४॥

दोहा—राम कथा मंदाकिनी, चित्रकूट चित चारु।
तुलसी सुभग सिनेह वन, सिय रघुवीर विहारु॥३१॥

राम चरित चिंतामनि नीके। संत सुमति ललना मँगटीके॥ १॥
जग मंगल गुन ग्राम राम केर। दानि मुकुति धन धरम धाम केर॥ २॥
सदगुरु ज्ञान विराग जोग केर। विबुध बैद्य भव भीम रोग केर॥ ३॥
जननि जनक सियराम प्रेम केर। बीज सकल व्रत धरम नेम केर॥ ४॥
समन पाप संताप सोक केर। प्रिय पालक परलोक लोक केर॥ ५॥
सचिव सुभट भूपति विचार केर। कुंभज लोभ उदधि अपार केर॥ ६॥

काम क्रोध कलिमल करिगन केर । केहरि साबक जन मन बन केर ॥ ७॥
अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि केर । कामद धन दारिद दवारि केर ॥ ८॥
मंत्र महामनि विषय ब्याल केर । मेटवय कठिन कुअंक भाल केर ॥ ९॥
हरन मोहतम दिनकर कर सन । सेवक सालिपाल जलधर सन ॥१०॥
अभिमत दानि देव तरुवर सन । सेवइति सुलभ सुखद हरिहर सन ॥११॥
सुकवि सरद नभ मन उडुगन सन । राम भगत जन जीवन धन सन ॥१२॥
सकल सुकृत फल भूरि भोग सन । जग हित निरुपधि साधु लोक सन ॥१३॥
सेवक मन मानस मराल सन । पावन गंग तरंग माल सन ॥१४॥

दोहा—कुपथ कुतर्क कुचालि कलि, कपट दंभ पाखंड ।
दहन राम गुन ग्राम बुझु, इंधन अनल प्रचंड ॥
रामचरित ससि किरन सम, दैछ सबहिँ सुख बेस ।
सज्जन कुमुद चकोर चित, हित पुनि लाभ बिसेस ॥३२॥

जहि बिधि कयलनि प्रस्न भवानी । जहि बिधि संकर कहल बखानी ॥१॥
से सब हेतु कहब हम गाने । कथा प्रबंध विचित्र बिधाने ॥२॥
सुनने हो न कथा ई जे जन । सुनि करथु नहि अचरज से मन ॥३॥
कथा अलौकिक सुनथि जे ज्ञानी । करथि न किछु अचरज ई जानी ॥४॥
राम कथाक न अंत भुवन मे । ई प्रतीति छनि तनिका मन मे ॥५॥
नाना भाँति राम अवतारे । रामायन सत कोटि अपारे ॥६॥
कल्प भेद हरि चरित सुहावन । बहु बिधि बहु मुनि गाओल पावन ॥७॥
करी न संसय ई उर आनी । सुनी कथा सादर रति मानी ॥८॥

दोहा—राम अनंत अनंत गुन, अमित कथा बिस्तार ।
सुनि अचरज नहि मानता, जनिका बिमल बिचार ॥३३॥

येहि विधि सब संसय कय दूरी । सिर धय गुरु पद पंकज धूरी ॥१॥
विनय करी कर जोरि सबहिँ सौँ । रचइत दोष न पावी जहि सौँ ॥२॥

सादर सिवहिँ नमाकय माथा । बरनी बिसद राम गुन गाथा ॥३॥
संवत सोलह सय येकतीसे । करी कथा हरिपद धय सीसे ॥४॥
नौमी भौम दिवस मधु मासे । अवधपुरी ई चरित प्रकासे ॥५॥
जहि दिन राम जनम श्रुति गावय । तीरथ सकल तहाँ चलि आवय ॥६॥
असुर नाग खग नर मुनि देवा । आबि करथि रघुनायक सेवा ॥७॥
जनम महोत्सव रचथि सुजाने । करथि राम कल कीरति गाने ॥८॥

दोहा—मज्जथि सज्जन बृंद बहु, पावन सरजू नीर।
जपथि राम धय ध्यान उर, सुंदर स्याम सरीर ॥३४॥

दरस परस मज्जन ओ पाने । हरय पाप कह वेद पुराने ॥ १॥
नदी पुनीत अमित महिमा अति । कहि न सकथि सारदा बिमल मति ॥ २॥
राम धामदा पुरी सोहावन । लोक समस्त बिदित अति पावन ॥ ३॥
चारि खानि जग जीव अपारे । मुइने अवध न पुनि संसारे ॥ ४॥
सब बिधि पुरी मनोहर जानी । सकल सिद्धिप्रद मंगल खानी ॥ ५॥
बिमल कथा कयलहुँ आरंभे । सुनितहि मेंटय काम मद दंभे ॥ ६॥
रामचरितमानस ई नामे । सुनति श्रवन पावी बिश्रामे ॥ ७॥
मनकरि विषय अगिन बन जरइछ । येहि सर जे नहाथि सुख लहइछ ॥ ८॥
रामचरितमानस मुनि भावन । बिरचल संभु सोहावन पावन ॥ ९॥
त्रिबिध दोष दुख दारिद दावन । कलि कुचालि कुल कलुष नसावन ॥१०॥
रचि महेस निज मानस राखल । अवसर पाबि सिवा सौँ भाखल ॥११॥
तहि सौँ रामचरितमानस वर । धयल नाम हिय हेरि हरषि हर ॥१२॥
कथा से सुभग सुखद हम भाखी । सादर सुजन सुनिय मन राखी ॥१३॥

दोहा—भेल जेहन मानस जेना, जग प्रचार जहि हेतु।
से प्रसंग सब कहब हम, सुमिरि उमा बृषकेतु ॥३५॥

संभु प्रसादेँ सुमति गेल फबि । रामचरितमानस तुलसी कवि ॥१॥
रची मनोहर मति अनुसारी । सुजन सुचित सुनि लेधु सुधारी ॥२॥

सुमति भूमि थल हृदय अगाधू । वेद पुरान उदधि घन साधू ॥३॥
बरषय राम सुजस बर बारी । मधुर मनोहर मंगलकारी ॥४॥
लीला सगुन जे कही बखानी । से स्वच्छता करय मल हानी ॥५॥
प्रेम भगति हो बरनि न जेहे । सीतलता सुमधुरता सेहे ॥६॥
से जल सुकृत सालि हित जानू । राम भगत जन जीवन मानू ॥७॥
मेधा महिगत से जल पावन । समटि श्रवन मग चलल सोहावन ॥८॥
भरल सुमानस सुथिर सुठामे । सीतल सुखद चिराय ललामे ॥९॥

दोहा—सुठि सुंदर संवाद बर, बिरचल बुद्धि बिचारि ।
से येहि पावन सुभग सर, घाट मनोहर चारि ॥३६॥

सप्त प्रबंध सुभग सोपाने । ज्ञान नयन निरखति प्रिय भाने ॥ १॥
रघुपति महिमा अगुन अबाधे । बरनब से बर बारि अगाधे ॥ २॥
राम सीय जस सलिल सुधा सम । उपमा बीचि बिलास मनोरम ॥ ३॥
घन पुरइन चौपाइ सोहावन । मुकुता सुकुति जुगुति मन भावन ॥ ४॥
छंद सोरठा दोहा संगे । सोभय कमल निकर बहुरंगे ॥ ५॥
अरथ अनूप सुभाब सुभासा । से पराग मकरंद सुबासा ॥ ६॥
सुकृत पुंज मंजुल अलि माला । ज्ञान बिराग बिचार मराला ॥ ७॥
धुनि अबरेब कबित गुन जाती । मीन मनोहर से बहु भाँती ॥ ८॥
अरथ धरम कामादिक चारी । कहब ज्ञान बिज्ञान बिचारी ॥ ९॥
नव रस जप तप जोग बिरागे । से सब जलचर चारु तड़ागे ॥१०॥
सुकृती साधु नाम गुन गाने । से बिचित्र जल बिहग समाने ॥११॥
अमराई चहुदिसि दल संतक । बरनल श्रद्धा सुरितु वसंतक ॥१२॥
भगति निरूपन बिबिध बिधाने । छमा दया द्रुम लता बिताने ॥१३॥
संयम नियम फूल फल ज्ञाने । हरि पद रति रस वेद बखाने ॥१४॥
औरो कथा अनेक प्रसंगे । से सुक पिक बहु बरन बिहंगे ॥१५॥

दोहा—पुलक बाटिका बाग बन, सुख सुबिहंग बिहार ।
मालि सुमन सीँचय दृगेँ, ढारि सिनेहक धार ॥३७॥

गावथि जे ई चरित विधाने । से येहि सर रखवार सयाने ॥१॥
सदा सुनथि सादर नर नारी । से सुर वर मानस अधिकारी ॥२॥
बक कागा सन विषयि महाखल । येहि सर निकट न जाय अभागल ॥३॥
संबुक भेक सेमार समाना । येतय न विषय कथा रस नाना ॥४॥
तहि कारन अबइत हिय हारे । कामी काक बलाक बेचारे ॥५॥
बड़ कष्टे येहि सर क्यो आवय । राम कृपा बिनु आवि न पावय ॥६॥
कठिन कुसंग कुपंथ कराले । तनिकर बचन बाघ हरि ब्याले ॥७॥
गृहक काज नाना जंजाले । से अति दुरगम सैल बिसाले ॥८॥
बन बहु विषम मोह मद माना । नदी कुतर्क भयंकर नाना ॥९॥

दोहा—जे श्रद्धा संवल रहित, संत सभक नहि साथ ।
तनिका मानस अगम अति, जाहि न प्रिय रघुनाथ ॥३८॥

जौँ कय कष्ट केओ चलि आवय । अवितहि नींद जड़ैया दाबय ॥ १॥
विषम उठय उर जड़ता जाड़े । नहा सकय नहि गेनहु बेचारे ॥ २॥
कयल होय नहि मज्जन पाने । घुरि आवय समेत अभिमाने ॥ ३॥
जौँ कदाच क्यो पूछय आवय । सर निंदा कय ताहि बुझावय ॥ ४॥
सकल विघ्न व्यापय नहि तनिका । राम कृपा कय चितवथि जनिका ॥ ५॥
से सादर सर मज्जन करइछ । महाघोर त्रयताप न जरइछ ॥ ६॥
कखनहुँ ई सर तजथि न सेहे । संतत रामचरन रत जेहे ॥ ७॥
जे नहाय चह येहि सर आबी । से सतसंग करथु मन लाबी ॥ ८॥
एहन मानस मानस नयने । लखि कवि मति भेल बिमल नहयने ॥ ९॥
भेल हृदय आनंद उछाहे । उमड़ल प्रेम प्रमोद प्रबाहे ॥१०॥
चलल सुभग से कविता सरिता । राम विमल जस जल सौँ भरिता ॥११॥
सरजू नाम सुमंगल मूले । लोक वेद मत मंजुल कूले ॥१२॥
नदी पुनीत सुमानस नंदिनि । कलिमल तृन तरु मूल निकंदिनि ॥१३॥

दोहा—श्रोता त्रिविध समाज पुर, गाम नगर दुहु कूल ।
संत सभा अनुपम अवध, सकल सुमंगल मूल ॥३९॥

राम भगति सुरसरिता धारा । मिलति सुकीरति सरजु उदारा ॥१॥
सानुज राम समर जस पावन । मिलल महानद सोन सोहावन ॥२॥
दुहु बिच सुरसरि सोभथि तहिना । भक्ति बिरक्ति ज्ञान बिच जहिना ॥३॥
तिमुहानी त्रिताप भय हरनी । चलली रामरूप दधि सरनी ॥४॥
मानस मूल देवसरि मिलथी । सुनति सुजन मन पावन करथी ॥५॥
बिच बिच कथा विचित्र बिभागे । जनि सरि तीर तीर बन बागे ॥६॥
उमा महेस बियाह बराती । से जलचर अगनित बहु भाँती ॥७॥
रघुवर जनम उछाह उमंगे । से मनहर छवि भँवर तरंगे ॥८॥

दोहा—बालचरित चहु बंधु केर, वनज विपुल बहुरंग ।
नृप रानी परिजन सुकृत, मधुकर बारि बिहंग ॥४०॥

सीय स्वयंबर कथा सोहावन । छाजय से सरिता छबि पावन ॥१॥
नदी नाव पटु प्रस्न अनेके । केवट कुसल उतर सबिबेके ॥२॥
सुनि अनुकथन परस्पर जेहो । पथिक समाज सोभ सरि सेहो ॥३॥
घोर धार भृगुपति रिस रचने । घाट सुबद्ध राम बर बचने ॥४॥
सानुज राम बियाहक रंगे । सबहुक हित सुभ सुखद उमंगे ॥५॥
कहति सुनति हरपथि पुलकाथी । से सुकृती मन मुदित नहाथी ॥६॥
राम तिलक हित मंगल साजे । परब जोग जनि जुटल समाजे ॥७॥
केकइ कुमति काइ जमि गेले । जहि कारन बिपत्ति बड़ भेले ॥८॥

दोहा—समन अमित उतपात सब, भरत चरित जप जाग ।
कलि अघ खल अवगुन कथन, से जलमल बक काग ॥४१॥

कीरति सरित छवो रितु बेसे । समय समय सुचि सुभग बिसेसे ॥१॥
हिम हिमसैल सुता सिव व्याहे । सिसिर सुखद प्रभु जनम उछाहे ॥२॥
बरनव राम बियाह समाजे । से मुद मंगलमय रितुराजे ॥३॥
ग्रीषम दुसह राम बन गमने । पंथ कथा खर आतप पवने ॥४॥
बरषा घोर निसाचर रारी । सुर कुल सालि सुमंगल कारी ॥५॥
राम राज सुख विनय बड़ाई । सरद विसद सुंदर सुखदाई ॥६॥

सती सिरोमनि सिय गुन गाथा । सैह अमल अनुपम गुन पाथा ॥७॥
सीतलता भल भरत सोभावे । सदा एकरस बरनि कें पावे ॥८॥

दोहा—अवलोकब वाजब मिलब, प्रीति परसपर हास ।
भैयारी चहु भाइ कर, जल माधुरी सुबास ॥४२॥

आरति विनय दीनता मोरे । लघुता ललित सुबारि न थोरे ॥१॥
अद्भुत जल सुनितहि गुनकारी । आस पियास मनोमल हारी ॥२॥
राम सुप्रेमहिँ पोषय पानी । हरय सकल कलि कलुष गलानी ॥३॥
भव श्रम सोषक तोषक तोषे । समन दुरित दुख दारिद दोषे ॥४॥
काम क्रोध मद मोह नसाओन । बिमल बिवेक बिराग बढ़ाओन ॥५॥
करइत सादर मज्जन पाने । नसय हियक अघ ताप महाने ॥६॥
जे येहि जल मानस न पखारल । तहि कायर कलि काल बिगाड़ल ॥७॥
तृषित निरखि रविकर भव बारी । भटकत मृग इव जीव दुखारी ॥८॥

दोहा—मति अनुसार सुबारि गुन, गनि नहाय निज चीत ।
सुमिरि भवानी संकरहिँ, कह कवि कथा पुनीत ॥
पुनि रघुपति पद पंकरुह, हिय धरि पावि प्रसाद ।
छी कहैत दुहु मुनिबरक, मिलन सुभग संवाद ॥४३॥

भरद्वाज मुनि बसथि प्रयागे । तनिक राम पद अति अनुरागे ॥१॥
तापस सम दम दया निधाने । परमारथ पथ परम सुजाने ॥२॥
माघ मकरगत रवि हो जखने । तीरथपति आबथि सब तखने ॥३॥
देव दनुज किन्नर नर श्रेनी । सादर मज्जथि सकल त्रिबेनी ॥४॥
पूजथि माधव पद जलजाते । परसि अछयबट हरषित गाते ॥५॥
भरद्वाज आश्रम अति पावन । परम रम्य मुनिवर मन भावन ॥६॥
तहाँ जुटथि मुनि रिषिक समाजे । जाथि नहाय जे तीरथराजे ॥७॥
मज्जथि प्रात समेत उछाहे । कहथि परसपर हरि गुन गाहे ॥८॥

दोहा—ब्रह्म निरूपन धरम बिधि, वरनथि तत्त्व विभाग।
कहथि भगति भगवंत केर, संजुत ज्ञान विराग ॥४४॥

येहि प्रकार भरि माघ नहाइछ। पुनि सब निज निज आश्रम जाइछ ॥१॥
प्रति संबत हो येहन अनंदे। मकर नहाय घुरथि मुनि बृंदे ॥२॥
एक बेर भरि मकर नहेला। मुनि सब निज निज आश्रम गेला ॥३॥
जाज्ञबल्क मुनि परम बिबेकी। भरद्वाज राखल पद टेकी ॥४॥
सादर चरन धोयल निज पानी। बैसाओल सुचि आसन आनी ॥५॥
कय पूजा मुनि सुजस बखानी। बजला अति पुनीत मृदु वानी ॥६॥
नाथ एक संसय बड़ मोही। करगत वेदतत्त्व सब तोही ॥७॥
हमरा कहति होअय भय लाजे। जौँ न कही बड़ होअय अकाजे ॥८॥

दोहा—येहन नीति कह संत मुनि, वेद पुरान जतेक।
गुरु सौँ कय गोपन न हो, उर मे बिमल बिबेक ॥४५॥

ई गुनि प्रगट कही निज मोहे। हरिय नाथ कय जन पर छोहे ॥१॥
राम नाम केर अमित प्रभावे। संत पुरान उपनिषद गावे ॥२॥
संतत जपथि संभु अबिनासी। सिव भगवान ज्ञान गुनरासी ॥३॥
आकर चारि जीव जग बासी। पाब परम पद मुइने कासी ॥४॥
सेहो राम महिमा मुनिराया। सिव उपदेस करथि कय दाया ॥५॥
राम कोन प्रभु पूछी तोही। कहू बुझाय कृपानिधि मोही ॥६॥
एक राम अवधेस कुमारे। तनिकर चरित विदित संसारे ॥७॥
नारि बियोग अमित दुख सहलनि। अति रिसाय रन रावन हतलनि ॥८॥

दोहा—सैह राम की अपर क्यो, जनिका जपथि पुरारि।
सत्य धाम सरबज्ञ अहँ, कहू बिबेक बिचारि ॥४६॥

जहि सौँ जाय मोह भ्रम भारी। कहु से कथा नाथ विस्तारी ॥१॥
जाज्ञबल्क कह मुसुकि सुबानी। रघुपति केर प्रभुता अहँ जानी ॥२॥

राम भगत अहँ मन क्रम वानी । चातुरि अहँक लेल हम जानी ॥३॥
चाही सुनय राम गुन गूढ़े । कैलहुँ प्रस्न जेना अति मूढ़े ॥४॥
मन लगाय सादर सुनु नीके । रामक कथा कहब रमनीके ॥५॥
महामोह महिषेस विसाले । रामकथा कालिका कराले ॥६॥
रामकथा ससि किरन समाने । संत चकोर करथि जे पाने ॥७॥
येहने संसय कयल भवानी । तखन कहल सिव कथा बखानी ॥८॥

दोहा—कही मतिक अनुसार से, उमा संभु संबाद ।
भेल जखन जहि हेतु जे, मुनि सुनु नसत बिषाद ॥४७॥

एक समय त्रेता बिच संकर । गेल छला जत कुंभज रिषिबर ॥१॥
संग सती जग जननि भवानी । रिषि पुजलनि अखिलेस्वर जानी ॥२॥
राम कथा मुनि कहल बखानी । सुनल महेस परम सुख मानी ॥३॥
रिषि पूछल हरि भगति बिसेसे । अधिकारी बुझि कहल महेसे ॥४॥
कहइत सुनइत रघुपति गाथे । किछु दिन तहँ रहला गिरिनाथे ॥५॥
मुनि सैँ बिदा माँगि त्रिपुरारी । चलला गृह सँग दच्छ कुमारी ॥६॥
तहि अवसर भंजन महि भारे । हरि रघुबंस लेल अवतारे ॥७॥
पिता बचन तजि राज उदासी । दंडक बन बिचरथि अबिनासी ॥८॥

दोहा—हृदय बिचारति जाथि हर, कोन बिधि दरसन हैत ।
गुपुत लेल अवतार प्रभु, गेने बूझि सब जैत ॥

सोरठा—संकर उर अति छोभ, सती न जानथि मरम से ।
तुलसी दरसन लोभ, मन डर लोचन लालची ॥४८॥

मरन मनुज कर रावन माँगल । प्रभु चाहथि विधि बचन प्रमानल ॥१॥
जौँ नहि जाइ रहत पछतावे । करथि विचार न बनि किछु आवे ॥२॥
येहि बिधि भेला सोच बस ईसे । ताही समय गेल दससीसे ॥३॥
लेल नीच मारीचहिँ संगे । भेल तुरित से कपट कुरंगे ॥४॥

छल सौँ बैदेही हरि आनल । प्रभुता प्रभुक मूढ़ नहि जानल ॥५॥
प्रभु सबंधु घुरला मृग मारी । आश्रम देखि भरल दृग बारी ॥६॥
बिरह बिकल रघुपति मनुजहिँ सन । तकइत घुमथि अनुज सँग बन बन ॥७॥
कहियो जोग बियोग न जनिका । देखल प्रगट बिरह दुख तनिका ॥८॥

दोहा—अति बिचित्र रघुपति चरित, जानथि परम सुजान ।
जे मति मंद बिमोह बस, हृदय धरय किछु आन ॥४६॥

एहन समय राम केँ देखी । संभुक हिय भेल हरष बिसेखी ॥१॥
भरि लोचन छबि सिंधु निहारी । कुसमय जानि न कयल चिन्हारी ॥२॥
जय सच्चिदानंद जग पावन । ई कहि चलला मदन नसाबन ॥३॥
चलल जाथि सिव सती समेते । पुनि पुनि पुलकथि कृपानिकेते ॥४॥
सती से दसा संभु केर देखी । उर उपजल संदेह बिसेखी ॥५॥
संकर जगत बंद्य जगदीसे । सुर नर मुनि सब नमबथि सीसे ॥६॥
से नृप सुत केँ कयल प्रनामे । कहि सच्चिदानंद परधामे ॥७॥
मगन भेला छबि हुनक बिलोकी । येँखनहुँ प्रीति होअनि नहि रोकी ॥८॥

दोहा—ब्रह्म जे ब्यापक बिरज अज, अकल अनीह अभेद ।
से कि देह धय होथि नर, जनिका जान न वेद ॥५०॥

विष्णु जे सुरहित नर तन धारी । से सरबज्ञ जथा त्रिपुरारी ॥१॥
ताकथि से कि अज्ञ इव नारी । ज्ञान धाम श्रीपति असुरारी ॥२॥
मृषा न हो पुनि संकर वानी । सिव सरबज्ञ जान सब ज्ञानी ॥३॥
एहन संसय भेल अपारे । हिय मे हो न प्रबोध प्रचारे ॥४॥
जदपि भवानि न प्रगट बखानल । हर अंतरजामी सब जानल ॥५॥
नारि सोभाव सती तव सूनू । करु संदेह न कखनहुँ गूनू ॥६॥
जनिक कथा कुंभज रिषि गाओल । भगति जनिक हम मुनिहिँ सुनाओल ॥७॥
से मम इष्टदेव रघुबीरे । सेबथि नित जनिका मुनि धीरे ॥८॥

छंद—मुनि धीर जोगी सिद्ध संतत बिमल मन जनि ध्यावयो ।
कहि नेति निगम पुरान आगम जनिक कीरति गावयो ॥
से राम व्यापक ब्रह्म भुवन निकाय पति माया धनी ।
अवतरल छथि निज भगत हित निजतंत्र नित रघुकुल मनी ॥

दोहा—लाग न उर उपदेस, जदपि कहल सिव बेर बहु ।
बजला बिहुँसि महेस, हरिमाया बल जानि जिय ॥५१॥

जैँ संदेह अहँक मन साँचे । तैँ किय नहि कय आबी जाँचे ॥१॥
बट तर हम बैसै छी तावत । आयब अहाँ घूरि कय जावत ॥२॥
जहि बिधि जाय मोह भ्रम भारी । करु से जतन बिबेक बिचारी ॥३॥
सिव अनुमति लहि चलली तहि खन । करू आब की सोचथि मन मन ॥४॥
येतय कयल सिव मन अनुमाने । दच्छसुताक न अछि कल्याने ॥५॥
हमरो कथेँ न संसय गेले । भल नहि बाम बिधाता भेले ॥६॥
हैत वैह छथि राम जेँ रचने । के बढ़बओ बहु तरकक बचने ॥७॥
बाजि जपय लगला हरि नामे । सती गेली जहँ प्रभु सुखधामे ॥८॥

दोहा—पुनि पुनि हृदय बिचार कय, धय सीता कर रूप ।
तहि पथ चलली आगु भय, जहि आबथि नर भूप ॥५२॥

लछुमन लखल उमा कृत भेसे । चकित भेला भ्रम हृदय बिसेसे ॥१॥
कहि न सकथि किछु अति गंभीरे । प्रभु प्रभाव जानथि मति धीरे ॥२॥
सती कपट जानल सुर स्वामी । सबदरसी सब अंतरजामी ॥३॥
सुमिरति जनिक नसय अज्ञाने । से सरबज्ञ राम भगवाने ॥४॥
चाहथि ततहु सती छल भावे । देखू नारि सोभाव प्रभावे ॥५॥
निज माया बल हृदय बखानी । बजला बिहुँसि राम मृदु बानी ॥६॥
जोरि पानि प्रभु कयल प्रनामे । पिता समेत लेल निज नामे ॥७॥
कहल बहोरि कतय बृषकेतू । येकसरि बन बिचरी की हेतू ॥८॥

दोहा—राम बचन मृदु गूढ़ सुनि, उपजल अति संकोच ।
सती सभीत महेस दिसि, चलली हिय बड़ सोच ॥५३॥

हम संकर केर कहल न मानल । निज अज्ञान राम पर आनल ॥१॥
देब जाय की उत्तर आबे । उर उपजल दारुन पछताबे ॥२॥
जानल राम सती दुख पाओल । निज प्रभाब किछु प्रगट जनाओल ॥३॥
सती देखल पथ अजगुत बाता । आगाँ राम सहित श्री भ्राता ॥४॥
पुनि घुरि लखल पाछु प्रभु रामे । सहित बंधु सिय बेष ललामे ॥५॥
जहँ ताकथि तहँ प्रभु आसीने । सेबथि सिद्ध मुनीस प्रवीने ॥६॥
देखल सिव विधि विष्णु अनेके । अमित प्रभाब एक सौँ एके ॥७॥
बंदथि चरन करथि प्रभु सेवा । देखल बिबिध बेष सब देवा ॥८॥

दोहा—सती विधात्री इंदिरा, देखल अमित अनूप ।
जहि जहि बेष अजादि सुर, तहि तहि तनु अनुरूप ॥५४॥

देखल जहँ तहँ रघुपति जतबा । सक्ति समेत देव गन ततबा ॥१॥
जीव चराचर जे संसारे । देखल सकल अनेक प्रकारे ॥२॥
प्रभु केँ पूजथि सुर बहु रूपे । लखल न दोसर राम सरूपे ॥३॥
अवलोकल रघुनाथ अनेके । सीता सहित बेष सब एके ॥४॥
से रघुवर से लछुमन सीता । देख सती भय गेलि सभीता ॥५॥
तन सुधि नहि हिय रहलनि काँपी । बैसली पथ दुहु लोचन झाँपी ॥६॥
बहुरि बिलोकल नयन उघारी । लखल न तहँ किछु दच्छ कुमारी ॥७॥
पुनि पुनि नमा राम पद सीसे । चलली तहँ जहँ रहथि गिरीसे ॥८॥

दोहा—गेलि महेस लग तखन ओ, पुछल कुसल मुसुकाय ।
लेल परिच्छा कोन बिधि, कहु सब सत्य सुनाय ॥५५॥

सती जानि रघुवीर प्रभावे । कयल लाथ सिव सौँ भय भावे ॥१॥
किछु न परिच्छा लेलहुँ नाथे । अहिँक समान नमाओल माथे ॥२॥
मृषा न होअय अहाँ जे भाषी । सदिखन अति प्रतीति हम राखी ॥३॥
संकर तखन देखल धय ध्याने । सबटा सतिक चरित भेल भाने ॥४॥
रामक माया कें सिर नाओल । सतिहिँ प्रेरि जे असत कहाओल ॥५॥
हरि इच्छा भावी बलवाने । हृदय बिचारथि संभु सुजाने ॥६॥
सती कयल सीता केर वेषे । सिव उर भेल बिषाद बिसेषे ॥७॥
जौँ पुनि करी सती सौँ प्रीती । नसति भगति पथ होयत अनीती ॥८॥

दोहा—परम पुनीत न हो तंजल, प्रेम कने बड़ पाप ।
प्रगट न कहथि महेस किछु, हृदय अधिक संताप ॥५६॥

संकर प्रभु पद माथ झुकायल । सुमिरति राम हृदय ई आयल ॥१॥
भेँट सती सौँ नहि येहि तन मे । सिव संकल्प लेल कय मन मे ॥२॥
ई विचारि संकर मति धीरे । चलला घर सुमिरति रघुवीरे ॥३॥
भेल नभ सुभ बानी येहि रूपे । जय महेस दृढ़ भगति अनूपे ॥४॥
अहँ विनु प्रन कर येहन के आने । राम भगत समरथ भगवाने ॥५॥
सुनि नभ गिरा सती उर सोचे । सिव सौँ पुछल सहित संकोचे ॥६॥
कयल कोन प्रन कहू कृपाले । सत्यधाम प्रभु दीन दयाले ॥७॥
जदपि सती पुछलनि बहु भाँती । तदपि न कहलनि त्रिपुरअराती ॥८॥

दोहा—सती कयल अनुमान हिय, सब जानल सरबज्ञ ।
कयल कपट हम संभु सौँ, नारि सहज जड़ अज्ञ ॥

सोरठा—जल पय सरिस विकाय, देखू प्रीतिक रीति भल ।
फाटि जाय रस जाय, पड़ितहिँ कपट खटाइ पुनि ॥५७॥

हृदय सोच बुझइत निज करनी । चिंता अमित होअय नहि बरनी ॥१॥
कृपासिंधु सिव परम अगाधे । प्रगट न कहल हमर अपराधे ॥२॥

सतिहिँ सिवक रुखि देखि बुझायल । प्रभु मोहि तजल हृदय अकुलायल ॥३॥
निज अघ बुझि किछु जाय न कहले । आबा जकाँ हृदय जरि रहले ॥४॥
सतिहिँ ससोच जानि बृषकेतू । कहल कथा सुंदर सुख हेतू ॥५॥
पथ कहइत बहु बिधि इतिहासे । बिस्वनाथ ऐला कैलासे ॥६॥
तहाँ संभु पुनि जानि अपन प्रन । बट तर लगा देल कमलासन ॥७॥
सहज सरूप अपन सिव साधी । धयल अखंड अपार समाधी ॥८॥

दोहा—सती बसथि कैलास पर, अधिक सोच मन छैन्ह ।
क्योनहि जानय मरम किछु, जुग सम दिवस बितैन्ह ॥५८॥

सतिहिँ नित्य नव चिंता भारे । कखन हैब दुखसागर पारे ॥१॥
हम जे रघुपति केँ अपमानल । पुनि पति बचन मृषा कय जानल ॥२॥
विधि हमरा तकरे फल देलनि । जेहन उचित छल तेहने केलनि ॥३॥
ई नहि आब उचित विधि तोही । संकर बिमुख जिआबह मोही ॥४॥
कहि न होअय किछु हृदय गलानी । रामहिँ सुमिरल तखन भवानी ॥५॥
जैँ प्रभु दीन दयाल कहाओल । आरतिहरन वेद जस गाओल ॥६॥
तैँ कर जोरि मँगैछी एहे । झट छुटि जाय हमर ई देहे ॥७॥
जैँ संकर पद मोहि सिनेहे । मन क्रम बचन सत्य व्रत सेहे ॥८॥

दोहा—तौँ सबदरसी प्रभु सुनू, झट से करू उपाय ।
जहि सौँ बिनु श्रम हो मरन, दुसह बिपति चलि जाय ॥५९॥

येहि बिधि दुखित प्रजेस कुमारी । अकथनीय दारुन दुख भारी ॥१॥
बीतल संबत सहस सतासी । तजल समाधि संभु अबिनासी ॥२॥
राम नाम सिव सुमिरय लगला । जानल सती जगतपति जगला ॥३॥
जाय संभु पद बंदन केलनि । सनमुख संकर आसन देलनि ॥४॥
आरंभल हरि कथा रसाले । दच्छ प्रजेस भेला तहि काले ॥५॥
देखल विधि बिचारि सब लायक । दच्छहिँ कयल प्रजापति नायक ॥६॥
दच्छ पौल बड़ प्रभुता जखने । अति अभिमान भेल हिय तखने ॥७॥
जग मे जनम येहन के लेले । प्रभुता लहि मद जाहि न भेले ॥८॥

दोहा—दच्छ बजाओल मुनिक गन, ठानि देल बड़ जाग ॥
न्योतल सादर सकल सुर, जे पावथि मख भाग ॥६०॥

किन्नर नाग सिद्ध गंधर्बे । बधू सहित चलला सुर सर्बे ॥ १॥
विष्णु बिरंचि महेसहिँ छाड़ी । चलला सुर सब साजि सबारी ॥ २॥
सती बिलोकल व्योम बिमाना । चलल जाय सुंदर बिधि नाना ॥ ३॥
सुर सुंदरी करथि कल गाने । सुनइत श्रवन छुटय मुनि ध्याने ॥ ४॥
पुछला पर संकर कहि देलनि । सुनि पितु जज्ञ हर्ष किछु मेलनि ॥ ५॥
देथि मोहि अनुमति जौँ नाथे । किछु दिन जाय रही येहि लाथे ॥ ६॥
पति परित्यागक हिय दुख भारी । कहथि न निज अपराध बिचारी ॥ ७॥
बजली सती मनोहर वानी । भय संकोच प्रेम रस सानी ॥ ८॥

दोहा—पिता भवन उतसव परम, जौँ प्रभु देथि निदेस ।
तौँ हम जाइ कृपायतन, देखय नैहर देस ॥६१॥

कहल नीक हमरहु मन भाओल । ई अनुचित नहि नेओत पठाओल ॥ १॥
दच्छ सकल निज सुता बजौलनि । हमर बैर अहुँ केँ बिसरौलनि ॥ २॥
ब्रह्मसभा मोहि सौँ दुख मानल । तैँ येखनहु अपमान इ ठानल ॥ ३॥
बिनु बजौल जौँ जैब भवानी । रहत न सील सनेह न पानी ॥ ४॥
जदपि मित्र प्रभु पितु गुरु गेहे । जाइ बिना कहनहुँ न सँदेहे ॥ ५॥
तदपि बिरोध जतय हो भाने । ततय गेने नहि हो कल्याने ॥ ६॥
बहु बिधि संभु प्रबोधन केलनि । भावी बस न ज्ञान उर एलनि ॥ ७॥
प्रभु कहलनि जौँ बिना हकारे । जाइ न भल हो हमर बिचारे ॥ ८॥

दोहा—कहि देखल हर जतन बहु, मान न दच्छकुमारि ।
तखन मुख्य गन संग दय, बिदा कयल त्रिपुरारि ॥६२॥

जखन पिता घर सती पधारल । दच्छ डरेँ क्यो नहि सतकारल ॥ १॥
मिलली माय मात्र हरषाइत । मिलली बहिनि बहुत मुसुकाइत ॥ २॥

कुसलो धरि पूछल नहि दच्छे । देह दगध लखि सती समच्छे ॥३॥
तखन सती जा देखल जागे । कतहु न लखल संभु केर भागे ॥४॥
तखन चढ़ल चित संभुक कहले । प्रभु अपमान जानि हिय दहले ॥५॥
ब्यापल पछिला दुख नहि तेहन । भेल महा दुख हिय ई जेहन ॥६॥
जद्यपि जग दारुन दुख नाना । सब सौँ कठिन जाति अपमाना ॥७॥
बुझि से सतिहिँ भेल अति क्रोधे । बहु बिधि जननी कयल प्रबोधे ॥८॥

दोहा—सिव अपमान न सहि भेलनि, हिय नहि होइनि प्रबोध ।
सहठ सभा केँ डाँटिकय, बजली बचन सक्रोध ॥६३॥

सुनू सभासद सकल मुनिंदा । कहल सुनल जे संकर निंदा ॥१॥
से फल आब तुरित सब गौना । नीके जकाँ पितो पछतौता ॥२॥
संत संभु श्रीपति अपवादे । सुनी जहाँ तहँ ई मरजादे ॥३॥
काटी जिह्वा जौँ बस पाबी । न तौँ पड़ाइ कान दुहु दाबी ॥४॥
जगदातमा महेस पुरारी । जगत जनक सबहुक हितकारी ॥५॥
पिता मंदमति निंदथि सेहे । दच्छ सुक्र संभव ई देहे ॥६॥
तजब तुरंत देह तहि हेतू । उर धय चंद्रमौलि बृषकेतू ॥७॥
कहि जोगानल तन देल जारी । हाहाकार भेल मख भारी ॥८॥

दोहा—सती मरन सुनि संभुगन, कर लागल मख नष्ट ।
रच्छा कयल मुनीस भृगु, करति देखि जग भ्रष्ट ॥६४॥

समाचार सब संकर पाओल । बीरभद्र केँ कोपि पठाओल ॥१॥
जग बिध्वंस जाय से केलनि । सब सुर केँ बिधिबत फल देलनि ॥२॥
भेल जग बिदित दच्छ गति सेहे । संभु बिमुख केँ होइछ जेहे ॥३॥
ई इतिहास सकल जग जानल । तहि सौँ हम संछेप बखानल ॥४॥
मरइत हरि सौँ माँगल सती । जनम जनम सिव पद हो रती ॥५॥
तहि कारन हिमगिरि गृह आबी । जनमलीह गिरिजा तन पाबी ॥६॥
जनम उमा हिमगृह जहिया सौँ । सिधि संपति उमड़ल तहिया सौँ ॥७॥
जहँ तहँ मुनि गन आश्रम केलनि । उचित बास हिमभूधर देलनि ॥८॥

दोहा—सदा सुमन फल सहित सब, द्रुम नव नाना जाति।
प्रगटल सुन्दर सैल पर, मनि आकर बहु भाँति ॥६५॥

सरिता पावन सलिल बहैछल। खग मृग अलि सब सुखी रहैछल ॥१॥
सहज बैर सब जीव तेयागल। गिरि पर सकल रहय अनुरागल ॥२॥
गिरि गिरिजा लहि सोभय तहिना। राम भगति लहिकय जन जहिना ॥३॥
नित नव मंगल भवन तनीके। गाबथि जस ब्रह्मादि जनीके ॥४॥
नारद मुनि सकौतुक हाले। पहुँचलाह गिरि गृह ततकाले ॥५॥
सैलराज बड़ आदर केलनि। पद पखारि वर आसन देलनि ॥६॥
तिय सह मुनि पद माथ नमाओल। चरन सलिल सब भवन सिचाओल ॥७॥
गिरि बहु निज सौभाग्य मनाओल। सुता बजा मुनि पद प्रनमाओल ॥८॥

दोहा—त्रिकालज्ञ सरबज्ञ अहँ, सबतरि अहँक प्रवेस।
कहू सुता गुन दोष मुनि, हृदय बिचारि बिसेस ॥६६॥

कह मुनि बिहुँसि गूढ़ मृदु बानी। कन्या अहँक सकल गुनखानी ॥१॥
सुंदरि सहज सुसील सयानी। नाम उमा अंबिका भवानी ॥२॥
सब लच्छन संपन्न कुमारी। हैती संतत पतिक पियारी ॥३॥
सदा अचल हिनकर अहिबाता। पौता जस हिनि सौँ पितुमाता ॥४॥
जग भरि पूजनीय ई हेती। सेवा कयने सब फल देती ॥५॥
हिन कर नाम सुमिरि संसारे। तिय चढ़ती पतिव्रत असिधारे ॥६॥
गिरि तब सुता सुलच्छनि भारी। सुनू आब अवगुन दुइ चारी ॥७॥
अगुन अमान मातु पितु हीने। उदासीन सब संसय छीने ॥८॥

दोहा—जोगी जटिल अकाम मन, नगन अमंगल भेख।
पति होयथिन हिनका एहन, पड़ल हस्त से रेख ॥६७॥

सुनि मुनि गिरा सत्य जिय जानल। दंपति दुखी उमा मुद मानल ॥१॥
नारद धरि ई भेद न बूझल। दसा एक मन भिन भिन सूझल ॥२॥

सकल सखी गिरिजा गिरि मयना । पुलकल देह भरल जल नयना ॥३॥
हैत न मृषा देवरिषि भाखल । उमा बचन से हिय धय राखल ॥४॥
उपजल सिव पद कमल सिनेहे । मिलन कठिन मन भेल संदेहे ॥५॥
जानि कुअवसर प्रीति नुका कय । बैसली सखिक कोर पुनि जा कय ॥६॥
फूसि न होअय देवरिषि वानी । सोचथि दंपति सखी सयानी ॥७॥
उर धरि धीर कहल गिरिराये । कहू नाथ की करी उपाये ॥८॥

दोहा--कह मुनीस हिमवंत सुनु, जे विधि लिखल लिलार ।
देव दनुज नर नाग मुनि, क्यो नहि मेटनिहार ॥६८॥

तदपि उपाय एक ई फूरय । दैव सहाय होथि तैँ पूरय ॥१॥
हम कैलहुँ बर बरनन जेहने । पौती उमा अबस्ये तेहने ॥२॥
जे जे बर केर दोप बखानल । से सब सिव मे हम अनुमानल ॥३॥
जौँ बियाह संकर सौँ हेतनि । दोपो सबटा गुने कहेतनि ॥४॥
जौँ अहि सेज सयन हरि करथी । बुध किछु तनिक दोप नहि धरथी ॥५॥
भानु कृसानु सकल रस खाथी । तइयो मंद कहल नहि जाथी ॥६॥
सुभ ओ असुभ सलिल सब आबय । सुरसरि नहि अपुनीत कहाबय ॥७॥
समरथ केँ न दोप भगवाने । रवि पावक सुरसरिक समाने ॥८॥

दोहा--जौँ हिसिखा नर कर यहन, जड़ बिबेक अभिमान ।
पड़य कलप भरि नरक मे, जीव कि ईस समान ॥६९॥

सुरसरि जल कृत बारुनि जानी । अमहु न संत पिबथि तसु पानी ॥१॥
सुरसरि मिलने पावन जेहने । ईस अनीसहिँ अंतर तेहने ॥२॥
संभु सहज समरथ भगवाने । येहि बियाह सब बिधि कल्याने ॥३॥
दुराराध्य छथि किंतु महेसे । आसुतोप यदि करी कलेसे ॥४॥
जौँ तप करथि अहाँक कुमारी । भावी मेटि सकथि त्रिपुरारी ॥५॥
यद्यपि जग मे बर छथि नाना । सिव तजि हिनका लेल न आना ॥६॥
बरदायक प्रनतारति भंजन । कृपासिंधु सेवक मन रंजन ॥७॥
इच्छित फल बिनु सिव अराधने । लह न कोटि जप जोग साधने ॥८॥

दोहा—ई कहि नारद सुमिरि हरि, गिरिजहिँ देल असीस।
हैत हिनक कल्यान सब, संसय तजिय गिरीस ॥७०॥

ई कहि ब्रह्म भवन मुनि गेले। आगुक चरित सुनू जे भेले ॥१॥
पतिहिँ येकान्त पावि कह मयना। नाथ न हम बुझलहुँ मुनि बयना ॥२॥
जैाँ घर बर कुल रहय अनूपे। करू बियाह सुता अनुरूपे ॥३॥
न तैाँ सुता बरु रहओ कुमारी। कंत उमा मम प्रान पियारी ॥४॥
जैाँ न भेँटत बर गिरजा जोगे। गिरि जड़ सहज कहत सब लोगे ॥५॥
से बिचारि कय करिय बियाहे। हो न जाहि सैाँ पुनि उर दाहे ॥६॥
ई कहि पड़ली पद धय सीसे। बजला सहित सिनेह गिरीसे ॥७॥
चानहु मे बरु प्रगटओ अनले। टरत न से नारद जे भनले ॥८॥

दोहा—प्रिया आब चिंता तजिय, सुमिरिय श्री भगवान।
पारवती निरमौल जे, से करता कल्यान ॥७१॥

बड़ जैाँ अहँक सुता पर नेहे। तैाँ दियौन हुनका सिख एहे ॥१॥
करथु तेहन तप भेँटथि महेसे। आन उपाय न नसत कलेसे ॥२॥
नारद बचन सगर्भ सहेतू। सुंदर सब गुननिधि बृषकेतू ॥३॥
ई बिचारि अहँ करिय न संके। सकल भाँति संकर अकलंके ॥४॥
सुनि पति बचन परम हरखेली। झट उठि से गिरिजा लग गेली ॥५॥
उमहिँ बिलोकि नयन भरि नोरे। नेह सहित बैसौलनि कोरे ॥६॥
लगा लेथि पुनि पुनि हिय आनी। गदगद कंठ निकस नहि वानी ॥७॥
जगत मातु सरवज्ञ भवानी। मातु सुखद बजली मृदु वानी ॥८॥

दोहा—सुनिय माय हम देखल ई, सपन सुनाबी तोहि।
सुंदर गौर सुविप्र वर, ई उपदेसल मोहि ॥७२॥

करू जाय तप सैल कुमारी। वचन नारदक सत्य बिचारी ॥१॥
ई मत भाओल तव पितु माता। तप दुख दोष हरन सुखदाता ॥२॥

तप बल रचथि प्रपंच विधाता । तप बल विष्णु सकल जग त्राता ॥३॥
तप बल संभु करथि संहारे । तप बल सेष धरथि महि भारे ॥४॥
तप अधार सब सृष्टि भवानी । करु तप जाय येहन जिय जानी ॥५॥
सुनि माता बड़ बिसमय पाओल । गिरिहिँ बजाकय सपन सुनाओल ॥६॥
बहु बिधि माता पिता बुझा कय । उमा चललि तप हित हरषा कय ॥७॥
प्रिय परिवार पिता ओ माता । सकल बिकल मुख आब न बाता ॥८॥

दोहा--वेदसिरा मुनि आबि पुनि, सब केँ देलनि बोध ।
पारवती महिमा सुनति, रहला पाबि प्रबोध ॥७३॥

उमा प्रानपति पद उर धारी । बन जाकय ठानल तप भारी ॥१॥
अति सुकुमारि न तन तप जोगे । पति पद सुमिरि तजल सब भोगे ॥२॥
नव अनुराग चरन नित जागल । बिसरल तन तप मे मन लागल ॥३॥
संबत सहस मूल फल खैलनि । साग खाय सय बरस गमैलनि ॥४॥
किछु दिन बारि पवन टा खैलनि । किछु दिन कठिन उपासो कैलनि ॥५॥
बेलपात महि पड़ल सुखायल । तीन सहस संबत से खायल ॥६॥
त्यागल फेर सुखैलो परना । उमा नाम तेँ पड़ल अपरना ॥७॥
देखि उमाहिँ तप खीन सरीरे । ब्रह्म गिरा भेल गगन गँभीरे ॥८॥

दोहा--भेल मनोरथ सुफल तव, सुनु गिरिराजकुमारि ।
परिहरु दुसह कलेस सब, पायब आब पुरारि ॥७४॥

क्यो न येहन तप कयल भवानी । भेला बहुत धीर मुनि ज्ञानी ॥१॥
धरु उर आब ब्रह्म बर वानी । सत्य सदा संतत सुचि जानी ॥२॥
आबथि पिता बजाबय जखने । घर जायब हठ परिहरि तखने ॥३॥
जखनहि ओता सप्तरिषीसे । बुझब प्रमान तखन बागीसे ॥४॥
सुनइत विधि केर ई नभ वानी । हरषे पुलकित भेली भवानी ॥५॥
उमा चरित गौलहुँ मनभावन । सुनू आब सिव चरित सोहावन ॥६॥
त्यागल सती सरीर जखन सौँ । सिव मन भेल बिराग तखन सौँ ॥७॥
जपथि सदा रघुनायक नामे । जहँ तहँ सुनथि राम गुन ग्रामे ॥८॥

दोहा--चिदानंद सुखधाम सिव, बिगत मोह मद काम।
विचरथि महि धय हृदय हरि, सकल लोक अभिराम ॥७५॥

कतहु मुनिहिँ उपदेसथि ग्याने। कतहु राम गुन करथि बखाने ॥१॥
जदपि अकाम तदपि भगवाने। भगत बिरह दुख दुखित सुजाने ॥२॥
येहि बिधि गेल काल बहु बीती। नित नव होअय राम पद प्रीती ॥३॥
नेम प्रेम संकर केर देखी। भक्तिक अचल रेख हिय लेखी ॥४॥
प्रगटल राम कृतज्ञ कृपाले। रूप सील निधि तेज बिसाले ॥५॥
संकर केँ बहु भाँति सराहल। अहँ बिनु के व्रत येहन निमाहल ॥६॥
सिव केँ बहु बिधि राम बुझाओल। पारवती केर जनम सुनाओल ॥७॥
अति पुनीत गिरजा केर करनी। कहल कृपानिधि बहु बिधि बरनी ॥८॥

दोहा--बिनती मम सुनु आब सिव, जौँ हमरा पर नेह।
जाय बियाहिय सैलजा, माँगी दिय मोहि एह ॥७६॥

सिव कह ई नहि समुचित जइयो। नाथ वचन टरि सकय न तइयो ॥१॥
अनुमति अहँक चढ़ावी माथे। परम धरम मम ई थिक नाथे ॥२॥
मातु पिता गुरु प्रभु केर वानी। बिना बिचार करी सुभ जानी ॥३॥
अहँ सब भाँति परम हितकारी। आज्ञा नाथ लेल सिर धारी ॥४॥
प्रभु प्रसन्न सुनि संकर बचने। भगति बिबेक धरम जुत रचने ॥५॥
कह प्रभु हर प्रन अहँक निमहले। आब धरू उर जे हम कहले ॥६॥
अंतरधान भेला ई भाखी। हर से उर मूरति लेल राखी ॥७॥
तखन सप्तरिषि सिव लग एला। सुंदर बचन कहति प्रभु भेला ॥८॥

दोहा--गिरिजा लग जा अहाँ सभ, परिखिय हुनकर नेह।
घर पठबिय पुनि प्रेरि गिरि, हटबिय जत संदेह ॥७७॥

रिषि गन देखल उमा तहँ केहन। मूरतिमंत तपस्या जेहन ॥१॥
बजला मुनि सुनु सैलकुमारी। कियक करै छी ई तप भारी ॥२॥

ककर ध्यान की अहाँ चहैछी । किय नहि हमरा मरम कहै छी ॥३॥
सप्तरिपिक सुनि बचन भवानी । बजली गूढ़ मनोहर बानी ॥४॥
मन सकुचय बड़ कहइत बानी । हँसब सबहुँ मम जड़ता जानी ॥५॥
मन हठ पड़ल सीख नहि भावय । चाहय जल पर भीत उठावय ॥६॥
नारद कहल सत्य अबगाही । बिना पाँखि ऊड़य हम चाही ॥७॥
सुनु मुनि निज अबिबेक कहैछी । सदासिवे पति अपन चहैछी ॥८॥

दोहा--ई सुनि कय रिषि बिहुँसला, गिरि संभव तव देह ।
नारद केर उपदेस सुनि, वसल ककर कहु गेह ॥७८॥

दच्छसुतहिँ उपदेसल जा कय । से पुनि भवन न देखल आ कय ॥१॥
चित्रकेतु घर वैह उजाड़ल । कनककसिपु कैर हाल बिगाड़ल ॥२॥
नारद सिख जे सुनय नर नारी । अवस होअय तजि भवन भिखारी ॥३॥
मन कपटी तन सजनक बाने । चाहथि सब हो अपन समाने ॥४॥
तनिकर बचन मानि बिस्वासे । अहँ चाही पति सहज उदासे ॥५॥
निरगुन निलज कुबेप कपाली । अकुल अगेह दिगंबर ब्याली ॥६॥
कहु सुख कोन येहन बर पौने । छी भरमैत ठकक बहकौने ॥७॥
पंचक कहने सती बियाहल । फेरी दय पुनि हुनकहुँ डाहल ॥८॥

दोहा--आब सुतथि सुख सोच नहि, पेटक लेल भिखारि ।
सहज एकाकिक भवन कहुँ, टिकय कि कखनहुँ नारि ॥७९॥

येखनहुँ अहँ मानिय मम वानी । अहँक हेतु भल बर हम जानी ॥१॥
अति सुंदर सुचि सुखद सुसीले । गावय वेद जनिक जस लीले ॥२॥
दूपन रहित सकल गुन रासी । श्रीपतिपुर वैकुंठ निवासी ॥३॥
येहने नर मिलैब हम आनी । सुनितहिँ कहलनि बिहुँसि भवानी ॥४॥
सत्य कहल गिरिभव ई देहे । हठ न छूट छूटय बरु सेहे ॥५॥
कनको पाथर सौँ बहराइछ । डहलो पर सोभाव नहि जाइछ ॥६॥
नारद बचन न हम परिहरबे । बसौ कि उजड़ौ घर नहि डरबे ॥७॥
गुरु बचनक परतीति न जकरा । सपनहुँ सुगम न सुख सिधि तकरा ॥८॥

दोहा—महादेव अवगुन भवन, विष्णु सकल गुन धाम।
जकरा सौँ मन रम जकर, तकरा तकरे काम ॥८०॥

मिलितहुँ अहँ जौँ प्रथम मुनीसे। सुनितहुँ सिख धय रखितहुँ सीसे ॥१॥
आब जनम हम सिव हित हारल। की गुन दूषन जाय बिचारल ॥२॥
जौँ अहँ मन मे अति हठ गहले। बिनु घटकैती जाय न रहले ॥३॥
तौँ न घटक अलसाथि कनेको। बर कन्या छथि जगत अनेको ॥४॥
कोटि जनम धरि मम हठ भारी। बरब संभु न त रहब कुमारी ॥५॥
तजब न नारद केर उपदेसे। कहता बरु सय बेर महेसे ॥६॥
गोड़ लगइ छी कह जगदंबे। अहाँ जाउ घर होइछ बिलंबे ॥७॥
देखि प्रेम बजला मुनि ज्ञानी। जय जय जगदंबिके भवानी ॥८॥

दोहा—अहँ माया भगवान सिव, सकल जगत पितु माय।
चलला मुनि गन सिर नमा, पुनि पुनि पुलकय काय ॥८१॥

मुनि सब जा हिमवंत पठाओल। सुता मनाय से घर पहुँचाओल ॥१॥
बहुरि सप्तरिषि सिव लग एला। कथा उमाक कहति सब भेला ॥२॥
मगन भेला सिव सुनति सिनेहे। हरषि सप्तरिषि गेला गेहे ॥३॥
मन थिर कय पुनि संभु सुजाने। लागि गेला रघुनायक ध्याने ॥४॥
तारक असुर भेल तहि काले। भुज प्रताप बल तेज बिसाले ॥५॥
से सब लोक लोकपति जीतल। देव सभक सुख संपति बीतल ॥६॥
अजर अमर नहि जाय से मारल। कय रन बहुतो सुरगन हारल ॥७॥
ब्रह्मा सौँ जा तखन पुकारल। विधि सब सुर केँ दुखी निहारल ॥८॥

दोहा—विधि सब केँ कहलनि बुझा, तखनहिँ मरत सुरारि।
संभु सुक्र संभूत सुत, जीतत रन मे मारि ॥८२॥

करू जुक्ति मम वच धय काने। हैब सफल सहाय भगवाने ॥१॥
त्यागल सती दच्छ मख देहे। जनमलि जाय हिमाचल गेहे ॥२॥

से तप कयल संभु पति लागी । सिव समाधि बैसला सब त्यागी ॥ ३॥
अछि असमंजस भारी जइयो । बात हमर सुनबे ई तइयो ॥ ४॥
कहिय काम कें सिव लग धाबथु । तनिकर मन छोभित कय आवथु ॥ ५॥
पुनि सब जा सिर सिवहिँ नमायब । हठि हुनि अबस बियाह करायब ॥ ६॥
सुर हित हैत यही परकारे । सबहु कहल अति नीक बिचारे ॥ ७॥
अस्तुति कयल देव अति हेतू । प्रगटल बिषम बान झखकेतू ॥ ८॥

दोहा—सुरगन निज कहलनि बिपति, सुनि मन कयल बिचार ।
संभु बिरोध न कुसल मम, बिहँसि कहल ई मार ॥८३॥

तदपि लेब तब काजक भारे । श्रुति कह परम धरम उपकारे ॥ १॥
परहित हेतु तजथि जे देहे । संतत संत प्रसंसथि सेहे ॥ २॥
चलला कहि ई माथ नमा कय । सह सहाय धनु सुमन चढ़ा कय ॥ ३॥
चलइत मन सोचथि पँचबाने । सिव बिरोध ध्रुव जैत पराने ॥ ४॥
कयल अपन प्रभाव बिस्तारे । निज बस कयल सकल संसारे ॥ ५॥
कोपल जखन बारिचरकेतू । छन मे मेटल सकल श्रुति सेतू ॥ ६॥
ब्रह्मचर्य ब्रत संयम नाना । धीरज धरम ज्ञान बिज्ञाना ॥ ७॥
जप आचार बिराग जोग भल । डर सौँ घसकल सब बिवेक दल ॥ ८॥

छंद—घसकल बिबेक सहाय सह तसु सुभट घूरल रन मही ।
सदग्रंथ परबत खोह जाय नुकाय गेल अबसर तही ॥
की हैत हा विधि के बचाओत, मचल जग खलबल बड़े ।
दुइ माथ ककरा कोपि जकरा पर गहल रतिपति सरे ॥

दोहा—जे सजीव जग अचर चर, नारि पुरुष अछि नाम ।
से निज निज मरजाद तजि, भेल सकल बस काम ॥८४॥

सबहुक हृदय मदन अभिलाषा । लता निहारि नमय तरु साखा ॥ १॥
नदी उमकि अंबुधि दिसि धायल । पोखर पोखरिक कोर समायल ॥ २॥

जखन दसा जड़हुक ई धरनी । के कहि सकय सचेतक करनी ॥ ३॥
पसु पच्छी नभ जल थल चारी । भेल काम बस समय बिसारी ॥ ४॥
मदन अंध व्याकुल सब लोके । निसि दिन नहि अवलोकय कोके ॥ ५॥
देव दनुज नर किन्नर ब्याले । प्रेत पिसाच भूत बैताले ॥ ६॥
येंकर दसा नहि कहल बखानी । सदा दास कामक तहि जानी ॥ ७॥
सिद्ध विरक्त महामुनि योगी । भेला काम बस सेहो बियोगी ॥ ८॥

छंद—जोगीस तापस काम बस सब तखन पापिक के कहे ।
देखय चराचर नारिमय जे ब्रह्ममय देखत रहे ॥
अबला बिलोकय पुरुषमय जग पुरुष सब अबलामयं ।
दुइ दंड भरि ब्रह्मांड भीतर काम कृत कौतुक अयं ॥

दोहा—धयल न क्यो जन धीर, सबहुक मन मनसिज हरल ।
जेहि राखल रघुवीर, से उबरल तेहि काल मे ॥८५॥

कौतुक येहन घड़ी दुइ भेले । जा धरि काम संभु लग गेले ॥ १॥
सिवहिँ देखि संकित पँचबाने । जकथक भय गेल सकल जहाने ॥ २॥
जीव सुखी भेल लगले तेना । मदक उतरने मातल जेना ॥ ३॥
रुद्रहिँ देखि डरल पँचबाने । दुराधरप दुरगम भगवाने ॥ ४॥
कहु कि लाज फिरइत बड़ भारी । रचल उपाय मरन अवधारी ॥ ५॥
प्रगटाओल रितुराजहिँ साजी । सोभय कुसुमित नव तरु राजी ॥ ६॥
बन उपवन वापिका तड़ागे । परम सुभग सब दिसा बिभागे ॥ ७॥
जनि अनुराग उमड़ सब ठामे । लखि मुइलो मन जागल कामे ॥ ८॥

छंद—जागल मदन मुइलोक मन मे, बिपिन सोभा के कहे ।
सीतल सुगंध सुमंद मारुत मदन अनल सखा बहे ॥
बिकसल सरसि बर कंज गुंजय पुंज मंजुल मधुकरो ।
कलहंस पिक सुक सरस रव कर गावि नाचय अपसरो ॥

दोहा--सकल कला कय कोटि बिधि, हारल सेन समेत।
चलल न अचल समाधि सिव, कोपल हृदयनिकेत ॥८६॥

देखि रसाल डारि अति चोखे। तहि पर चढ़ल मदन मन रोखे ॥ १॥
सुमन चाप निज सर संधानल। अति रिस ठिका श्रवण धरि तानल ॥ २॥
छोड़ल बिषम बिसिष उर लगले। छुटल समाधि संभु पुनि जगले ॥ ३॥
हर मन भेल छोभ बड़ भारी। ताकल चहु दिसि नयन उघारी ॥ ४॥
सौरभ पल्लव मदन बिलोकल। कँपल त्रिलोक जखन हर कोपल ॥ ५॥
तेसर दृग सिव खोलल जखने। चितइत काम छार भेल तखने ॥ ६॥
हाहाकार भेल जग भारी। सुर सब डरला असुर सुखारी ॥ ७॥
बूझि काम सुख सोचय भोगी। भेला अकंटक साधक जोगी ॥ ८॥

छंद—जोगी अकंटक भेला पति गति सुनति रति मुरछित भेली।
कानति खिझति बहु भाँति करुना करति संकर लग गेली॥
सनमुख रहलि दुहु पानि जोरि सप्रेम कय बिनती अती।
प्रभु आसुतोष कृपालु सिव बजला निरखि अबला रती ॥

दोहा--रति तव नाथक आब सौँ, होयत नाम अनंग।
बिनु बपु ब्यापत सकल पुनि, सुनु निज मिलन प्रसंग ॥८७॥

जदुकुल जखन कृष्ण अवतारे। लेता हरय महा महि भारे ॥ १॥
कृष्ण तनय हयता पति तोरे। बचन अन्यथा हैत न मोरे ॥ २॥
रति चलली सुनि संकर बानी। कथा अपर हम कही बखानी ॥ ३॥
सुर गन समाचार सब पेला। ब्रह्मादिक बैकुंठहिँ गेला ॥ ४॥
सब सुर विष्णु बिरंचि समेते। गेला जहँ सिव कृपानिकेते ॥ ५॥
पृथक पृथक सब कयल प्रसंसा। भेला प्रसन्न चंद्रअवतंसा ॥ ६॥
बजला कृपासिंधु वृषकेतू। कहू अमर अयलहुँ की हेतू ॥ ७॥
कह विधि प्रभु अँह अंतरजामी। तदपि भगति बस बिनमी स्वामी ॥ ८॥

दोहा—सकल सुरक हिय मे येहन, संकर परम उछाह।
देखय चाहथि नयन निज, नाथ अहाँक बियाह ॥८८॥

ई उतसव देखी भरि लोचन। से किछु करिय मदन मद मोचन ॥ १॥
काम जारि रति केँ वर देलहुँ। कृपासिंधु ई अति भल केलहुँ ॥ २॥
सासति कय पुनि कृपा पसारथि। नाथ सोभाव सहज प्रभु धारथि ॥ ३॥
पारवती तप कयल अपारे। आब करू हुनि अंगीकारे ॥ ४॥
सुनि विधि विनय बूझि प्रभु बानी। येहने हैत कहल सुख मानी ॥ ५॥
तखन देव दुंदुभी बजाओल। जय सुरनाथ सुमन बरसाओल ॥ ६॥
गुनि अवसर झट विधिक पठायल। रिषि सप्तक हिमगिरि घर आयल ॥ ७॥
प्रथम गेला जहँ छली भवानी। बजला मधुर बचन छल सानी ॥ ८॥

दोहा—तखन सुनल नहि कहल मम, सुनि नारद उपदेस।
आब भेल प्रन झूठ तव, डाहल काम महेस ॥८९॥

मास पारायण, विश्राम—३

सुनि बजली मुसुकाय भवानी। उचित कहल मुनिवर विज्ञानी ॥ १॥
तव मत काम आइ की डहला। ताधरि हर कि बिकारी रहला ॥ २॥
जनतव हमर सदासिव जोगी। अज अनवद्य अकाम अभोगी ॥ ३॥
जौँ हम सेवल सिव ई जानी। प्रीति समेत करम मन बानी ॥ ४॥
तौँ हमरो पन सुनू मुनीसे। करता सत्य कृपानिधि ईसे ॥ ५॥
अहँ जे कहल हर कामहिँ जारल। से अबिबेक अहाँ बड़ धारल ॥ ६॥
तात अनल केर सहज सोभावे। हिम तकरा लग जाय न पावे ॥ ७॥
लग गेने हो से ध्रुव नासे। कामक निधन जेना सिव पासे ॥ ८॥

दोहा—मुनि हिय हरषल बचन सुनि, देखि प्रीति विस्वास।
चलल उमा पद सिर नमा, गेल हिमाचल पास ॥९०॥

सब प्रसंग गिरिपतिहिँ सुनाओल। मदन दहन सुनि अति दुख पाओल ॥ १॥
बहुरि रतिक बरदान बखानल। सुनि हिमवंत बहुत सुख मानल ॥ २॥

संभुक प्रभुता हृदय बिचारी । सादर मुनिबर लेल हकारी ॥ ३॥
सुभ दिन घड़ी नछत्र तकाश्रोल । वेगि वेद बिधि लगन धराश्रोल ॥ ४॥
पाती सप्तरिषिहिँ से देलनि । गहि पद बिनय हिमाचल केलनि ॥ ५॥
से पाती जा विधि केँ देलनि । बँचइत प्रीति न हृदय समेलनि ॥ ६॥
लगन बाँचि अज सबहिँ सुनाश्रोल । सुर मुनि सकल हरष अति पाश्रोल ॥ ७॥
सुमन वृष्टि नभ बाजा बाजल । मंगल सकल दसो दिसि साजल ॥ ८॥

दोहा—लगला साजय सकल सुर, बाहन बिविध बिमान ।
होश्रय सगुन मंगल सुभद, करय अपसरा गान ॥९१॥

तखन संभु गन सिवहिँ सिँगारल । जटा मुकुट अहि मौर समारल ॥ १॥
कुंडल कंकन झलकय ब्यालक । तन बिभूति पट केहरि छालक ॥ २॥
ससि ललाट सुंदर सिर गंगा । नयन तीन उपवीत भुजंगा ॥ ३॥
गरल कंठ उर नर सिर माला । असिव वेष सिव धाम कृपाला ॥ ४॥
कर त्रिसूल श्रो डमरु बिराजय । चलला बृष चढ़ि बाजा बाजय ॥ ५॥
लखि सिव सुरतिय बिहुँसथि मन मे । बरक जोग कन्या न भुवन मे ॥ ६॥
सहित विष्णु विधि सुरक जमाती । चढ़ि बाहन चलला बरियाती ॥ ७॥
सुर समाज सब भाँति अनूपे । बरियाती न बरक अनुरूपे ॥ ८॥

दोहा—विष्णु कहल बिहुँसैत ई, बजा सकल दिसिराज ।
फुटुकि फुटुकि भय सब चलू, निज निज सहित समाज ॥९२॥

बरक न जोग बरियातक साजे । हँसी करायब पर पुर आजे ॥ १॥
विष्णु बचन सुनि सुर मुसुकेला । निज निज सेन सहित फुटि गेला ॥ २॥
सुनि महेस मुसुकायल मन मे । हरि नहि चूकथि ब्यंग बचन मे ॥ ३॥
प्रियक बचन सुनि कय प्रिय भारी । भृंगि प्रेरि गन लेलनि हकारी ॥ ४॥
सिव अनुसासन सुनि सब आयल । प्रभुपद पंकज सीस झुकायल ॥ ५॥
नाना बाहन नाना भेषे । बिहुँसथि सिव लखि स्वगन बिसेषे ॥ ६॥
क्यो येक मुह बहु मुख क्यो हीने । बहु करपद क्यो करपद छीने ॥ ७॥
बिपुल नयन क्यो नयन बिहीने । हृष्टपुष्ट क्यो अति तन खीने ॥ ८॥

छंद—तन खीन क्यो अति पीन पावन क्योअपावन गति धरै ।
भूषन कराल कपाल कर सब नव लिधुर लेपन करै ॥
खर स्वान सुगर शृगाल मुख गन वेष अगनित के गनै ।
बहु भाँति प्रेत पिसाच जोगी दल बखानति नहिँ बनै ॥

सोरठा—नाचय गावय गीत, परम तरंगी भूत सब ।
देखइत अति विपरीत, बाजय वचन विचित्र विधि ॥६३॥

जेंहने वर तेंहने बरियाती । कौतुक होअय बाट बहु भाँती ॥ १॥
येम्हर हिमाचल मड़वा तानल । अति विचित्र नहि जाय बखानल ॥ २॥
सैल सकल जहँ धरि संसारे । लघु बिसाल के कहत अपारे ॥ ३॥
पोखरि सरित सिंधु बन नाना । न्योत पठौल सबहिँ हिमवाना ॥ ४॥
कामरूप सुंदर तन धारी । सहित समाज सहित बर नारी ॥ ५॥
अयला सकल हिमाचल गेहे । गावथि मंगल सहित सिनेहे ॥ ६॥
पहिनहि गिरि बहु भवन समारल । जथा जोग सब तहाँ पधारल ॥ ७॥
पुर सोभा अवलोकि महाने । विधिक निपुनता लघु हो भाने ॥ ८॥

छंद—लघु लाग विधि रचना निरखि सोभा पुरक दृग नहि थकै ।
वन बाग कूप तड़ाग सरिता सुभग सब कहि के सकै ॥
मंगल बिपुल तोरन पताका केतु गृह-गृह सोभिते ।
बनिता पुरुष सुंदर चतुर छवि देखि मुनि मन लोभिते ॥

दोहा—जगदंबा जहँ अवतरलि, से पुर कहल कि जाय ।
रिद्धि सिद्धि संपत्ति सुख, नित नूतन अधिकाय ॥६४॥

सुनि पुर लग बरियाती आयल । पुर हलचल सोभा अधिकायल ॥ १॥
सजि सजि लय वाहन बहु भाँती । चलला सब आनय अरियाती ॥ २॥
हिय हरषल सुर सेन निहारी । हरि केँ लखि अति भेल सुखारी ॥ ३॥
जखन देखय सिव दल केँ लागल । भड़कि चलल वाहन सब भागल ॥ ४॥

धय धीरज तहँ रहल सयाने । बालक सब पड़ैल लय प्राने ॥ ५॥
भवन फिरल पूछथि पितु माता । कहथि वचन भय कँपइत गाता ॥ ६॥
कहल जाय नहि की कहु बाते । जमसेने थिक नहि बरियाते ॥ ७॥
बर बौराह बरद असवारे । ब्याल कपाल बिभूषन छारे ॥ ८॥

छंद—तन छार ब्याल कपाल भूषन नगन जटिल भयंकरे ।
सँग भूत प्रेत पिसाच योगिनि बिकट मुख रजनीचरे ॥
लखि जिबति रहता जे बरातिहिँ पुन्यवान महान से ।
देखता उमाक बियाह से सिसु सब करैछ बखान से ॥

दोहा—जननि जनक मुसुकाथि सुनि, जानि महेस समाज ।
बाल बुझौलनि बिबिध बिधि, डरक न कोनो काज ॥६५॥

पुरजन सब बरियाती आनल । जनवासा सुभ दय सनमानल ॥ १॥
साजल सुभ आरती मनाइनि । संग अनेक सुमंगल गाइनि ॥ २॥
कनक थार सोभय बर पानी । परिछय हर केँ चललि सयानी ॥ ३॥
रुद्रक बिकट सरूप निहारी । बड़ भयभीत भेलि सब नारी ॥ ४॥
भागि भवन पैसलि अति त्रासे । गेला महेस जहाँ जनवासे ॥ ५॥
मैना हृदय भेल दुख भारी । बजा लेल गिरि राजकुमारी ॥ ६॥
अति सिनेह बैसौलनि कोरे । स्याम सरोज नयन भरि नोरे ॥ ७॥
जे विधि येहन रूप तोहि देलनि । से जड़ बर बाउर किय केलनि ॥ ८॥

छंद—किय कैल बर बौराह बिधि जे, तोहि सुंदरता देले ।
जे फल चहिय सुरबृच्छ मे, वरबस बबूरहिँ से भेले ॥
लय कै तोरा गिरि सौँ खसी, पावक जरी जलनिधि परी ।
वर जाय अपजस हो जगत जिबइत बियाह न हम करी ॥

दोहा—भेलि बिकल अबला सकल, दुखित देखि गिरि नारि ।
कानथि बाजथि कलपि कय, सुता नेह मन पारि ॥६६॥

की हम नारद मुनिक बिगाड़ल । बसइत घर जे हमर उजाड़ल ॥१॥
येहन उमा कें पाठ पढ़ाश्रोल । उमत वरक हित तप करवाश्रोल ॥२॥
सरिपहुँ हुनका मोह न माया । उदासीन धनधाम न जाया ॥३॥
निरलज निडर परक घर घालक । बाँझ कि बुझ दुख परसब कालक ॥४॥
जननिहिँ विकल बिलोकि भवानी । बजली सह बिवेक मृदु बानी ॥५॥
सोच न करू येहन बुझि माता । टरय न से जे रचथि विधाता ॥६॥
बाउर पति जौँ लिखल कपारे । ककरहु दोष देब बेकारे ॥७॥
श्रहँ सौँ की मेटत विधि श्रंके । माय व्यर्थ जुनि लीय कलंके ॥८॥

छंद—जुनि लीय मातु कलंक करुना छोड़ु अवसर नहि यतै ।
दुख सुख लिखल जे भाल मम जायब जतै पायब ततै ॥
सुनि उमा बचन बिनीत कोमल सोच सब श्रबला करै ।
बहुभाँति दैश्रछि दोष विधिकेँ सभक दृग सौँ जल ढरै ॥

दोहा—तहि अवसर नारद सहित, श्रो रिषि सप्त समेत ।
समाचार सुनि तुहिन गिरि, गेला तुरत निकेत ॥९७॥

सब केँ नारद तखन बुझाश्रोल । पहिलुक कथा प्रसंग सुनाश्रोल ॥१॥
मैना सत्य सुनू मम बानी । जगदंबा तव सुता भवानी ॥२॥
श्रजा श्रनादि सक्ति श्रविनासिनि । सदा संभु श्ररधंग निवासिनि ॥३॥
जग संभव पालन लयकारिनि । निज इच्छेँ लीला बपु धारिनि ॥४॥
जनमलि प्रथम दच्छ गृह जा कय । नाम सती सुंदर तन पा कय ॥५॥
ततहु सतीक संभु भरतारे । कथा प्रसिद्ध सकल संसारे ॥६॥
एक बेर श्रबइत सिव संगे । देखल रघुकुल कमल पतंगे ॥७॥
भेल मोह सिव कहल न केलनि । भ्रम बस सियक वेष धय लेलनि ॥८॥

छंद—सिय वेष धयल सती तही श्रपराध सिव हुनि त्यागले ।
हर विरह जा पितु यज्ञ मे जारल स्वतन जोगानले ।

घर जनमि आब अहाँक पतिहित कयल दारुन तप क्रिया।
बुझि यहन संसय तजू गिरिजा सर्वदा संकर प्रिया॥

दोहा—तखन नारदक बचन सुनि, सबहुक नसल बिषाद।
छन मे ब्यापल सकल पुर, घर घर ई संबाद॥६८॥

मैना हिमवत मुदित अपारे। बंदल गिरिजा पद बहु बारे॥ १॥
नारि पुरुष सिसु बृद्ध जुआने। नगर लोक सब मुदित महाने॥ २॥
गँजल पुरभरि मंगल गाना। साजल सब सोनक घट नाना॥ ३॥
भोजभात भेल बिविध प्रकारे। सूप सास्त्र जेहन बेबहारे॥ ४॥
भोजक बिधि के सकय बखानी। बसथि जाहि गृह मातु भवानी॥ ५॥
सादर बजा सकल बरियाती। विष्णु विरंचि देव सब जाती॥ ६॥
बैसला सबहु लगाकय पाँती। परसथि भनसीया भलभाँती॥ ७॥
नारि बृंद सुर जेमइत जानी। दै छथि गारि बिहुँसि मृदु बानी॥ ८॥

छंद—दै छथि मधुर स्वर गारि सुंदरि ब्यंग बचन सुनाबथी।
भोजन करथि सुर अति बिलंब बिनोद सुनि सुख पाबथी॥
खाइत बढ़ल आनंद जे से कहु कोना कोटियो मुखे।
अँचबाय देलनि पान गेला बास जनिकर जहँ सुखे॥

दोहा—पुनि मुनिगन हिमवंत कें, लगन सुनाओल जाय।
समय बिलोकि बियाह केर, सुरहिँ पठौल बजाय॥६६॥

बजा सकल सुर सादर लेलनि। सबहिँ जथोचित आसन देलनि॥ १॥
बेदि सजाओल वेद विधाने। ललना करथि सुमंगल गाने॥ २॥
सिंहासन अतिसय मनभावन। कहल न हो विधि रचल सोहावन॥ ३॥
बैसला सिव बिप्रहिँ नमि माथे। हृदय सुमिरि निज प्रभु रघुनाथे॥ ४॥
पुनि मुनीस गन उमा बजाओल। कय सिंगार सखी लय आओल॥ ५॥
मुगधल सुर सब रूप निरखइत। छवि एहन के कवि कहि सकइत॥ ६॥

जगदंबिका जानि भव भामा । सुरगन मन मून कयल प्रनामा ॥ ७॥
सुंदरता मरजाद भवानी । सकय न मुख कोटियो बखानी ॥ ८॥

छंद—नहि कोटियो मुख वनय बरनति जग जननि सोभा अती ।
श्रुति सेष सारद कहि न सक तुलसी कहत की लघु मती ॥
छवि खानि मातु भवानि गेली मध्य मंडप सिव जहाँ ।
अवलोकि सकथि न सकुचि पति पद कमल मन मधुकर तहाँ ॥

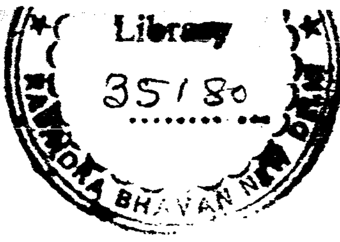
दोहा—मुनि अनुसासन गनपतिहिँ, पुजलनि संभु भवानि ।
क्यो सुनि संसय करथु जुनि, सुर अनादि जिय जानि ॥१००॥

जेहन बियाहक विधि श्रुति गाओल । सकल महामुनि से करवाओल ॥१॥
गहि गिरीस कुस कन्या पानी । भव केँ अरपल जानि भवानी ॥२॥
पानि ग्रहन विधि कयल महेसे । लखि हिय हरषित सकल सुरेसे ॥३॥
वेद मंत्र मुनिबर उच्चारथि । जय जय जय सिव देव पुकारथि ॥४॥
बाजा बाजय बिविध बिधाना । सुमन बृष्टि नभ भेल विधि नाना ॥५॥
हर गिरिजा केर भेल बियाहे । सकल भुबन भरि गेल उछाहे ॥६॥
दासी दास तुरग रथ नागे । धेनु बसन मनि बस्तु बिभागे ॥७॥
अन्न कनक भाजन भरि जाने । देल दहेज न होअय बखाने ॥८॥

छंद—बहु भाँति देल दहेज हिमगिरि हाथ जोड़ल कहि कथा ।
की देब पूरन काम संकर चढ़ा पद रज निज मथा ॥
सिव कृपा सागर ससुर केँ सब भाँति संतोषल भने ।
पुनि धयल पद पाथोज मैना प्रेम परिपूरन मने ॥

दोहा—नाथ उमा मम प्रान सम, गृह किंकरि कय लेथु ।
छमथु आब अपराध सब, भय प्रसन्न बर देथु ॥१०१॥

सासुहिँ बहुत बुझाओल ईसे । गेली भवन नमा पद सीसे ॥ १॥
जननी बजा उमा केँ लेलनि । कोर राखि सुंदर सिख देलनि ॥ २॥



करब सदा संकर पद सेवा । नारि धरम एके पतिदेवा ॥ ३॥
कहइत बचन भरल दृग बारी । लगा लेल उर जननि कुमारी ॥ ४॥
नारि सृजल विधि किये जग अपने । पराधीन नहि हो सुख सपने ॥ ५॥
प्रेम बिकल भेली महतारी । धीरज धयलनि समय बिचारी ॥ ६॥
पुनि पुनि मिलथि पड़थि पद छानी । परम प्रेम किछु निकस न बानी ॥ ७॥
नारी सब सौँ मिलइत जुलइत । पुनि जननिक उर लपटलि कनइत ॥ ८॥

छंद—पुनि जननि सौँ मिलि चललि सब आसिष उचित कहइत भेली ।
घुरि घुरि बिलोकथि माय मुख सखि लोकनि सिव लग लय गेली॥
जाचक सकल संतोषि सिव सह उमा घर चलइत भेला ।
हरखाय सुर बरखाय फूल निसान नभ भरइत गेला ॥

दोहा—सँग चलला गिरिपति तखन, पहुँचावय अति हेतु ।
बिविध भाँति परतोषि कय, बिदा कयल बृषकेतु ॥१०२॥

तुरत भवन ऐला गिरिराजे । लेल बजा सर सैल समाजे ॥ १॥
आदर दान बिनय बहु माने । सब केँ बिदा कयल हिमवाने ॥ २॥
संभु जखन कैलासहिँ एला । निज निज लोक देवगन गेला ॥ ३॥
जगत मातु पितु संभु भवानी । तनि सिंगार न कही बखानी ॥ ४॥
करथि बिविध बिधि भोग बिलासे । गन सब सहित बसथि कैलासे ॥ ५॥
नित नव हर गिरिजाक बिहारे । बितल काल बहु एहि प्रकारे ॥ ६॥
जनम लेल षटवदन कुमारे । तारक असुर कयल संहारे ॥ ७॥
आगम निगम पुरान बखानय । षट्मुख जनम सकल जग जानय ॥ ८॥

छंद—जग जान षटमुख जनम करम प्रताप पुरुषारथ कथा ।
तेँ कहल हम संछेप अति कयलनि चरित हरसुत यथा ॥
ई उमा संभु बियाह जे कहताह बा गौताह जे ।
कल्यान काज बियाह मंगल सुख सदा पौताह से ॥

दोहा—चरित सिंधु गिरिजापतिक, वेद न पाबथि पार ।
तुलसिदास बरनत कोना, अति मतिमंद गमार ॥१०३॥

सरस सोहावन संभु चरित सुनि । पौलनि अति सुख भरद्वाज मुनि ॥ १॥
बढ़ल कथा पर ललसा भारी । पुलक सरीर नयन बह बारी ॥ २॥
प्रेम बिवस मुख आब न बानी । दसा देखि हरषथि मुनि ज्ञानी ॥ ३॥
अहो धन्य तव जनम मुनीसे । अहँक प्रान सम प्रिय गौरीसे ॥ ४॥
जे सिव पद रति मन नहि लाबथि । से सपनहुँ रामहिँ नहि भाबथि ॥ ५॥
बिनु छल बिस्वनाथ पद नेहे । राम भगत केर लच्छन एहे ॥ ६॥
सिव सम के रघुपति ब्रत धारी । बिनु अघ तजल सती सन नारी ॥ ७॥
प्रन कय रघुपति भगति देखाओल । सिव सम के रामक प्रिय पाओल ॥ ८॥

दोहा—पहिनहिँ हम कहि सिव चरित, अहँक मरम बुझि लेल ।
रामक सुचि सेवक अहाँ, निरबिकार छी भेल ॥१०४॥

हम जानल अहाँक गुनसीला । सुनू आब अहँ रघुपति लीला ॥ १॥
अहँक समागम सुनु मुनिराजे । कहि न सकी हम जे सुख आजे ॥ २॥
रामचरित अति अमित मुनीसे । कहि न सकथि सत कोटि अहीसे ॥ ३॥
तदपि जथाश्रुत कहब बखानी । सुमिरि गिरापति प्रभु धनुपानी ॥ ४॥
सारद दारु नारि सम स्वामी । राम सूत्रधर अंतरजामी ॥ ५॥
जहि पर कृपा करथि जन जानी । कवि उर अजिर नचाबथि बानी ॥ ६॥
प्रनमी ओहि कृपालु रघुनाथे । बरनी बिसद तनिक गुनगाथे ॥ ७॥
परम रम्य गिरिबर कैलासे । सदा जहाँ सिव उमा निबासे ॥ ८॥

दोहा—सिद्ध तपोधन जोगि जन, सुर किन्नर मुनि बृंद ।
बसथि तहाँ सुकृती सकल, सेबथि सिव सुखकंद ॥१०५॥

हरि हर बिमुख धरम नहि प्रीती । सपनहुँ तकर ततय नहि थीती ॥ १॥
तहि गिरि पर वर बिटप बिसाले । नित नूतन सुंदर सब काले ॥ २॥

त्रिविध समीरन छाह सुसीते । सिव बिश्राम बिटप श्रुति गीते ॥ ३॥
एक बेर तहि तर प्रभु गेला । तरु लखि अति सुख पबइत भेला ॥ ४॥
निज कर ओछा नाग रिपु छाले । सहजहिँ बैसला संभु कृपाले ॥ ५॥
कुंद इंदु दर गौर सरीरे । भुज प्रलंब पहिरन मुनि चीरे ॥ ६॥
तरुन अरुन अंबुज सम चरने । नख दुति भगत हृदय तम हरने ॥ ७॥
भुजग भूति भूषन त्रिपुरारी । आनन सरद चंद छवि हारी ॥ ८॥

दोहा—**जटा मुकुट सुर सरित सिर, लोचन नलिन बिसाल ।**
नीलकंठ लाबन्य निधि, लसय बालविधु भाल ॥१०६॥

बैसल सोभ काम रिपु केहन । धैने सरीर सांत रस जेहन ॥ १॥
पारवती भल अवसर जानी । गेली संभु लग मातु भवानी ॥ २॥
जानि प्रिया आदर अति केलनि । बाम भाग आसन हर देलनि ॥ ३॥
बैसली सिव लग हरषि भवानी । मन पड़लनि गत जनम कहानी ॥ ४॥
पति हिय हेतु अधिक अनुमानी । विहुँसि उमा बजली प्रिय बानी ॥ ५॥
कथा जे सकल लोक हितकारी । पुछय चहथि से सैलकुमारी ॥ ६॥
विस्वनाथ मम नाथ पुरारी । त्रिभुवन बिदित महिम तव भारी ॥ ७॥
चर ओ अचर नाग नर देबा । सकल करथि पद पंकज सेबा ॥ ८॥

दोहा—**प्रभु समरथ सरबज्ञ सिव, सकल कला गुन धाम ।**
जोग ज्ञान बैराग्य निधि, प्रनत कलपतरु नाम ॥१०७॥

जौँ मोहि पर प्रसन्न सुख रासी । बूझी सत्य मोहि निज दासी ॥ १॥
तौँ प्रभु हरू हमर अज्ञाना । कहि रघुनाथ कथा बिधि नाना ॥ २॥
कल्पतरुक तर घर हो जकरा । दारिद जनित कि हो दुख तकरा ॥ ३॥
ससिभूषन हिय येहन बिचारी । हरू नाथ मम मति भ्रम भारी ॥ ४॥
प्रभु जे मुनि परमारथ बादी । कहथि राम केँ ब्रह्म अनादी ॥ ५॥
सेष सारदा वेद पुराने । सकल करथि रघुपति गुन गाने ॥ ६॥
अपनहु राम राम दिन राती । सादर जपी अनंग अराती ॥ ७॥
राम से अवध नृपक सुत धन्ये । की अज अगुन अलख गति अन्ये ॥ ८॥

दोहा—ब्रह्म कोना जौँ नृपतनय, नारि बिरह मति भोर।
देखि चरित महिमा सुनति, भ्रमय बुद्धि अति मोर ॥१०८॥

जौँ अनीह व्यापक बिभु आने। बुझा कहू से कृपानिधाने ॥ १॥
अज्ञ जानि रिस उर जुनि धरबे। जेहि बिधि मोह नसय से करबे ॥ २॥
बन मे राम प्रभुत लखि पाओल। अति भय बिकल न प्रभुहिँ सुनाओल ॥ ३॥
तदपि मलिन मन बोध न आओल। से फल नीक जकाँ हम पाओल ॥ ४॥
येखनहुँ अछि किछु मोहि संदेहे। बिनमी करिय कृपा हरु सेहे ॥ ५॥
देल बहु बिधि मोहि तखन प्रबोधे। से बुझि नाथ करिय नहि क्रोधे ॥ ६॥
आब न अछि बिमोह तखनुक सन। राम कथा पर जागल रुचि मन ॥ ७॥
कहू पुनीत राम गुन गाथा। भुजग राजभूषन सुरनाथा ॥ ८॥

दोहा—बंदी पद धय धरनि सिर, बिनय करी कर जोरि।
बरनिय रघुवर बिसद जस, श्रुति सिद्धांत निचोरि ॥१०९॥

जदपि जोपिता नहि अधिकारी। दासी मन क्रम बच अनुसारी ॥ १॥
गूढ़ो तत्त्व न साधु नुकाबथि। आरत अधिकारी जहँ पाबथि ॥ २॥
अति आरत पूछी सुरनाथा। कहू दया कय रघुपति गाथा ॥ ३॥
कहु से कारन प्रथम बिचारी। निरगुन ब्रह्म सगुन बपु धारी ॥ ४॥
पुनि प्रभु कहू राम अवतारे। बाल चरित पुनि कहू उदारे ॥ ५॥
कोना बियाहल जनक कुमारी। राज तजल की दोष बिचारी ॥ ६॥
कयल चरित बहु बन बसि जेना। कहु रावन केँ हतलनि केना ॥ ७॥
राज बैसि कयलनि बहु लीला। सकल कहू संकर सुखसीला ॥ ८॥

दोहा—करुनानिधि कहु बहुरि जे, कयलनि अजगुत राम।
प्रजा सहित रघुवंस मनि, गेला कोना निज धाम ॥११०॥

पुनि प्रभु कहू से सकल बखानी। जेहि बिज्ञान मगन मुनि ज्ञानी ॥ १॥
भगति ज्ञान बिज्ञान बिरागे। पुनि सब बरनिय सहित बिभागे ॥ २॥
औरो राम रहस्य अनेके। कहू नाथ अति बिमल बिबेके ॥ ३॥

होइ न हम पुछने प्रभु जेहो । दयानिधान नुकाउ न सेहो ॥ ४॥
अहँ त्रिभुवन गुरु वेद बखानय । आन जीव पामर की जानय ॥ ५॥
प्रस्न उमा केर सहज सोहावन । छल विहीन भेल सिव मन भावन ॥ ६॥
हर हिय राम चरित सब आयल । प्रेम पुलक लोचन जल छायल ॥ ७॥
श्री रघुनाथ रूप उर एलनि । परमानंद अमित सुख भेलनि ॥ ८॥

दोहा—**मगन ध्यान रस दंड जुग, पुनि मन बाहर आनि ।**
हरषि संभु रघुपति चरित, लगला कहय बखानि ॥१११॥

झूठो सत बुझाय बिनु जानल । जेना साँप रजु बिनु पहिचानल ॥ १॥
जनिका जनने जगत हेराइछ । जनने सपन जकाँ भ्रम जाइछ ॥ २॥
बंदी बाल रूप से रामे । सब बिधि सुलभ जपति जनि नामे ॥ ३॥
मंगल भवन अमंगल हारी । द्रवथु से दसरथ अजिर बिहारी ॥ ४॥
रामहिँ प्रनमि हरषि त्रिपुरारी । कहल अमिय बानी मनहारी ॥ ५॥
धन्य धन्य गिरिराज कुमारी । अहँ समान नहि क्यो उपकारी ॥ ६॥
पुछलहुँ रघुपति कथा प्रसंगे । सकल लोक जग पावनि गंगे ॥ ७॥
अहँ रघुवीर चरन अनुरागी । कैलहुँ प्रस्न जगत हित लागी ॥ ८॥

दोहा—**राम कृपा सौँ पारवति, सपनहुँ मन मे तोर ।**
सोक मोह संदेह भ्रम, अछि नहि से मति मोर ॥११२॥

तदपि असंका कैलहुँ सेहे । कहति सुनति सबहुक हित जेहे ॥ १॥
जे हरिकथा सुनल नहि काने । श्रवन रंध्र अहि भवन समाने ॥ २॥
कयल संत दरसन नहि जे टा । मोरपंख लोचन बुझु से टा ॥ ३॥
से सिर कटु तुम्मा समतूले । जे न नमत हरि गुरु पद मूले ॥ ४॥
जे हरि भगति न हिय लेल आनी । जीवित सव समान से प्रानी ॥ ५॥
जे नहि करय राम गुन गाने । जीभ से दादुर जीभ समाने ॥ ६॥
कुलिस कठोर निठुर हिय सेहे । सुनि हरि चरित न हरषय जेहे ॥ ७॥
गिरिजा सुनू राम केर लीला । सुर हित दनुज विमोहन सीला ॥ ८॥

दोहा—रामकथा सुरधेनु सम, सेवति सब सुख दानि ।
सत समाज सुरलोक सम, सुनत न के ई जानि ॥११३॥

राम कथा सुंदर करताली । जे उड़बय संसय बिहगाली ॥ १॥
राम कथा कलि बिटप कुठारी । सादर सुनु गिरिराज कुमारी ॥ २॥
राम नाम गुन सुभग चरीतें । जनम करम अगनित श्रुति गीते ॥ ३॥
जथा अनंत राम भगवाना । तथा कथा कीरति गुन नाना ॥ ४॥
तदपि जथाश्रुत जे मति मोही । लखि अति प्रीति कहब हम तोही ॥ ५॥
सहज प्रस्न जे अहाँ उठाओल । सुखद संत संमत मोहि भाओल ॥ ६॥
भाओल नहि अहाँक येक बानी । जदपि मोह बस कहल भवानी ॥ ७॥
अहँ जे कहल राम क्यो आने । जनि श्रुति भनथि धरथि मुनि ध्याने ॥ ८॥

दोहा—कहय सुनय ई अधम नर, ग्रसित जे मोह पिसाच ।
पाखंडी हरिपद बिमुख, जानय झूठ न साँच ॥११४॥

अज्ञ अकोविद अंध अभागल । काई विषय मुकुर मन लागल ॥ १॥
लंपट कुटिल हृदय छलबाजे । सपनहुँ लखल न संत समाजे ॥ २॥
कह से वेद असंमत बानी । जाहि न सुझय लाभ की हानी ॥ ३॥
मुकुर मलिन ओ नयन बिहीने । राम रूप लखि सकत कि दीने ॥ ४॥
जकरा अगुन न सगुन बिबेके । जलपय कलपित बचन अनेके ॥ ५॥
हरि माया जग भ्रमय बहूते । से किछु बाजय नहि अजगूते ॥ ६॥
सनकल मातल भूतक मारल । बाजय नहि से बचन बिचारल ॥ ७॥
कयल जे महामोह मद पाने- । तकर कहल पर दी नहि काने ॥ ८॥

सोरठा—निज हिय येहन बिचारि, तजु संसय भजु राम पद ।
सुनु गिरिराज कुमारि, भ्रम तम रवि कर बचन मम ॥११५॥

अगुन सगुन मे नहि किछु भेदे । गाबथि मुनि पुरान बुध वेदे ॥ १॥
अगुन अरूप अलख अज जेहे । भगत प्रेम बस सगुनो सेहे ॥ २॥

जे गुन रहित सगुन से केना । जल हिमउपल भिन्न नहि जेना ॥ ३॥
जनिक नाम भ्रम तिमिर पतंगे । कही कोना तनि मोह प्रसंगे ॥ ४॥
राम सच्चिदानंद दिनेसे । तहाँ न मोह निसा लवलेसे ॥ ५॥
सहज प्रकास रूप भगवाने । ततय न पुनि बिज्ञान बिहाने ॥ ६॥
हरष बिषाद ज्ञान अज्ञाने । जीव धरम अहमिति अभिमाने ॥ ७॥
राम ब्रह्म ब्यापक जग जाने । परमानंद परेस पुराने ॥ ८॥

दोहा—पुरुष प्रसिद्ध प्रकास निधि, प्रगट परावर नाथ ।
रघुकुल मनि मम स्वामि से, कहि नमौल सिव माथ ॥११६॥

निज भ्रम नहि बूझय अज्ञानी । प्रभु पर मोह धरय जड़ प्रानी ॥१॥
जथा गगन घन पटल निहारी । रवि झपि गेला कहय कुविचारी ॥२॥
दृग आँगुरि दय चितय जे चाने । प्रगट जुगल ससि हो तहि भाने ॥३॥
उमा राम प्रति मोहो येहने । नभ तम धूम धूरि रह जेहने ॥४॥
बिषय करन सुर जीव समेते । सकल एक सौँ एक सचेते ॥५॥
सबहुक परम प्रकासक जेहे । राम अनादि अवधपति सेहे ॥६॥
जगत प्रकास्य प्रकासक रामे । मायाधीस ज्ञान गुन धामे ॥७॥
जनिक सत्यता सौँ जड़ माया । भास सत्य इव मोह सहाया ॥८॥

दोहा—जथा सीप भासय रजत, जथा भानुकर बारि ।
जदपि मृषा तिहु काल से, भ्रम न सकय क्यो टारि ॥११७॥

हरि आश्रित जग येहि बिधि जइयो । थीक असत दुख दै अछि तइयो ॥१॥
सपना मे मूड़ी जौँ कटते । बिनु जगने से दुख नहि हटते ॥२॥
नस जसु कृपेँ येहन भ्रम जाले । सैह उमा रघुराज कृपाले ॥३॥
आदि अंत क्यो जनिक न पावय । मति अनुमानि निगम ई गावय ॥४॥
बिनु पद चलथि सुनथि बिनु काना । कर बिनु करम करथि बिधि नाना ॥५॥
आनन रहित सकल रस भोगी । बिनु बानी बकता बड़ जोगी ॥६॥
लख बिनु नयन परस बिनु देहे । ग्रह सब गंध घ्रान बिनु जेहे ॥७॥
सब बिधि येहन अलौकिक करनी । महिमा जनिक होअय नहि बरनी ॥८॥

दोहा—येहि बिधि गाबथि वेद बुध, जाहि धरथि मुनि ध्यान ।
से दसरथ सुत भगत हित, कोसलपति भगवान ॥११८॥

कासी मरइत जंतु बिलोकी । जनिक नाम बल करी बिसोकी ॥१॥
से प्रभु हमर चराचर स्वामी । रघुवर सब उर अंतरजामी ॥२॥
विवसहुँ नर जसु नाम उचारय । जनम अनेक रचित अघ जारय ॥३॥
सादर सुमिरन जे नर करथी । भव बारिधि गोपद इव तरथी ॥४॥
राम से परमातमा भवानी । तहँ भ्रम अति अबिहित तव बानी ॥५॥
जहि उर संसय येहन समाइछ । ज्ञान बिराग सकल गुन जाइछ ॥६॥
सुनि सिवक भ्रम भंजन बानी । टूटल सकल कुतर्कक फानी ॥७॥
भेल रघुपति पद प्रीति प्रतीती । दारुन कुभावना गेल बीती ॥८॥

दोहा—पुनि पुनि प्रभु पद कमल गहि, जोरि पंकरुह पानि ।
बजली गिरिजा बचन बर, मानु प्रेम रस सानि ॥११९॥

सुनि ससिकर समान बच तोरे । मेटल मोह सरदातप घोरे ॥१॥
सब संसय तव कृपेँ नसायल । राम सरूप हृदय मम आयल ॥२॥
प्रभुक कृपेँ सब गेल बिषादे । सुखी भेलहुँ प्रभु चरन प्रसादे ॥३॥
आब मोहि निज किंकरि जानी । जदपि सहज जड़ नारि अयानी ॥४॥
कहु जे प्रथम प्रस्न हम केलहुँ । जौँ मोहि पर प्रभु परसन भेलहुँ ॥५॥
राम ब्रह्म चिनमय अबिनासी । सर्वरहित सब उर पुर बासी ॥६॥
नाथ धयल नर तन की हेतू । कहु बुझाय हमरा बृषकेतू ॥७॥
उमा बचन सुनि परम बिनीते । रामकथा पर प्रीति पुनीते ॥८॥

दोहा—हिय हरषेला कामरिपु, संकर सहज सुजान ।
बहु बिधि उमहिँ प्रसंसि पुनि, बजला कृपानिधान ॥

नवाह पारायण, विश्राम—१
मास पारायण, विश्राम—४

सोरठा—सुनु सुभ कथा भवानि, रामचरित मानस विमल ।
कहल भुसुंडि बखानि, सुनल बिहग नायक गरुड़ ॥
से संबाद उदार, भेल जेना आगू कहब ।
सुनू राम अवतार, चरित परम सुंदर अनघ ॥

दोहा—हरिगुन नाम अपार, कथा रूप अगनित अमित ।
हम निज मति अनुसार, कही उमा सादर सुनू ॥१२०॥

सुनु गिरिजा हरि चरित पुनीते । बिपुल बिसद निगमागम गीते ॥१॥
हो जेंहि हेतु हरिक अवतारे । इदमित्थं से कहय के पारे ॥२॥
राम अतर्क्य बुद्धि मन बानी । येहन हमर मत सुनू सयानी ॥३॥
तदपि संत मुनि वेद पुराने । जे किछु कहथि स्वमति अनुमाने ॥४॥
सुमुखि सुनाबी अहँ केँ तेहन । बूझि पड़य मोहि कारन जेहन ॥५॥
जखन जखन हो धर्मक हानी । बाढ़य असुर महा अभिमानी ॥६॥
करय अनीति बरनि के पावय । बिप्र धेनु सुर धरनि सताबय ॥७॥
तखन तखन धय बिबिध सरीरा । हरथि कृपानिधि सज्जन पीरा ॥८॥

दोहा—असुर मारि थापथि सुरहिँ, राखथि निज श्रुति सेतु ।
जग बिस्तारथि बिसद जस, राम जनम कर हेतु ॥१२१॥

से जस गाबि भगत भव तरथी । कृपासिंधु जन हित तन धरथी ॥१॥
रामजनम केर हेतु अनेके । परम बिचित्र एक सौँ एके ॥२॥
जनम एक दुइ कही बखानी । साबधान सुनु सुमति भवानी ॥३॥
छला हरिक दुइ प्रिय दरबाने । जय ओ विजय प्रसिद्ध जहाने ॥४॥
बिप्र स्राप सौँ दूनू भ्राता । पौलनि असुरक तामस गाता ॥५॥
कनककसिपु ओ हाटकलोचन । जगत बिदित सुरपति मद मोचन ॥६॥
बिजयी समर बीर बिख्याते । येकहिँ हनल हरि सूकर गाते ॥७॥
भय नरहरि दोसर केँ मारल । जन प्रहलाद सुजस बिस्तारल ॥८॥

दोहा—भेला निसाचर जाय से, महावीर बलवान।
कुंभकरन रावन सुभट, सुर बिजयी जग जान ॥१२२॥

मुकुति न भेल मुइनहुँ प्रभु पानी। तीन जनम प्रमान द्विज बानी ॥१॥
एक बेर तनिके हित लागी। धयल सरीर भगत अनुरागी ॥२॥
कस्यप अदिति तहाँ पितु माता। दसरथ कौसल्या बिख्याता ॥३॥
एक कल्प येहि बिधि अवतारे। चरित पवित्र कयल संसारे ॥४॥
एक कल्प लखि सुरहिँ दुखारी। पाबि जलंधर सौँ रन हारी ॥५॥
कयलनि संभु घोर रन जइयो। दनुज महाबल मरल न तइयो ॥६॥
परम सती असुराधिप नारी। तकर बलेँ नहि जितथि पुरारी ॥७॥

दोहा—छल कय तोड़ल तकर ब्रत, प्रभु सुरगन हित लेल।
जखन बुझल ई मरम से, स्राप कोप कय देल ॥१२३॥

तकर स्राप हरि कयल प्रमाने। कौतुक निधि कृपालु भगवाने ॥१॥
तहाँ जलंधर रावन भेले। रन हति राम परम पद देले ॥२॥
यैह एक जनमक थिक कारन। राम कयल जे नर तन धारन ॥३॥
प्रभुक कथा बहु प्रति अवतारे। मुनि सुनु कविगन कहल अपारे ॥४॥
नारद स्राप देल येकबारे। एक कलप तैँ लेल अवतारे ॥५॥
गिरिजा चकित भेली सुनि बानी। नारद विष्णु भगत मुनि ज्ञानी ॥६॥
कारन कोन स्राप मुनि देलनि। की अपराध रमापति केलनि ॥७॥
ई प्रसंग मोहि कहू पुरारी। मोह मुनिक मन अचरज भारी ॥८॥

दोहा—क्यो नहि ज्ञानी मूढ़ बुझु, बिहुँसि महेस कहैछ।
रघुपति कर जकरा जेहन, तखन तेहन से हैछ ॥

सोरठा—कही राम गुन गाथ, भरद्वाज सादर सुनू।
भव भंजन रघुनाथ, भजु तुलसी तजि मान मद ॥१२४॥

हिमगिरि गुहा एक अति पावन । सुरसरि बहथि समीप सुहावन ॥१॥
परम पूत आश्रम तहँ देखी । भाग्रोल नारद मनहिँ बिसेखी ॥२॥
निरखि सैल सरि विपिन बिभागे । भेल रमापति पद अनुरागे ॥३॥
हरि सुमरैत स्राप गति रुद्धे । भेल समाधि मन सहज बिसुद्धे ॥४॥
मुनि गति लखि सुरेस भय मानल । कामहिँ बजा बहुत सनमानल ॥५॥
सहित सहाय जाउ मम हेतू । चलल हरषि हिय जलचर केतू ॥६॥
सुनासीर मन मे अति त्रासा । चाहथि सुर रिषि मम पुर बासा ॥७॥
जग लोलुप कामुक जनि चीते । कुटिल काक इव सब सौँ भीते ॥८॥

दोहा—सुखल हाड़ लय स्वान सठ, भागय लखि मृगराज ।
छिनि न लेअय कहुँ येहन गुनि, तहिना हुनि नहि लाज ॥१२५॥

जखन मदन तहि आश्रम गेले । निज माया वसंत रचि देले ॥१॥
कुसुमित विविध विटप बहु रंगे । कूजय कोकिल गुंजय भृंगे ॥२॥
चलल सुहावन त्रिविध बसाते । काम अनल बढ़बय सब गाते ॥३॥
रंभादिक सुर नारि नवीना । सकल असमसर कला प्रवीना ॥४॥
करथि गान बहु तान तरंगे । बहु बिधि क्रीड़थि पानि पतंगे ॥५॥
देखि सहाय मदन हरषेला । बहु प्रपंच पुनि करइत भेला ॥६॥
काम कला किछु मुनिहिँ न ब्यापल । पापी मनसिज निज भय काँपल ॥७॥
दबा सकय के सीमा तनिकर । बड़ रखबार रमापति जनिकर ॥८॥

दोहा—सहित सहाय सभीत अति, मानि मदन मन हारि ।
गहल जाय मुनि पद तखन, आरत बचन बिचारि ॥१२६॥

भेल न नारद मन किछु रोषे । प्रिय वचन कयल काम परितोषे ॥ १॥
माथ नमा अनुमति लय लेले । सहित सहाय मदन घुरि गेले ॥ २॥
मुनि सुसीलता ओो निज करनी । सुरपति सभा कहल सब वरनी ॥ ३॥
भेल सबहिँ बड़ बिसमय सुनि केँ । हरिहिँ बंदि परसंसल मुनि केँ ॥ ४॥
चलला नारद जहँ सिव सुंदर । जितल काम अहमिति लय मन भर ॥ ५॥

मार चरित संकरहिँ सुनाओल । अति प्रिय जानि महेस सिखाओल ॥ ६॥
बेर बेर मुनि अहँकाँ हम विनवी । जेना कथा ई हमरा सुनवी ॥ ७॥
तेना न हरिहिँ कदापि सुनायब । चललहुँ पर परसंग छिपायब ॥ ८॥

दोहा—संभु देल उपदेस हित, नीक न नारद मान ।
भरद्वाज कौतुक सुनिय, हरि इच्छा बलवान ॥१२७॥

राम जेहन चाहथि हो तेहन । करत अन्यथा क्यो नहि एहन ॥ १॥
संभु बचन मुनि केँ न सोहेलनि । तखन ब्रह्म लोकक पथ धेलनि ॥ २॥
एक बेर करतल बर बीने । गबइत हरि गुन गान प्रवीने ॥ ३॥
छीरसिंधु गेला मुनिनाथे । जहँ बस श्रीनिवास श्रुतिमाथे ॥ ४॥
मिलि सहर्ष उठि रमानिकेते । बैसला आसन रिपिक समेते ॥ ५॥
बजला बिहुँसि चराचर ईसे । बहुत दिबस पर दया मुनीसे ॥ ६॥
कामचरित नारद सब भाखल । जद्यपि प्रथम बरजि सिव राखल ॥ ७॥
रघुपति माया अमित प्रचंडे । जनमि न के मोहल ब्रह्मंडे ॥ ८॥

दोहा—रुच्छ बदन कय वचन मृदु, वजला श्री भगवान ।
अहँक सुमिरला सौँ नसय, मोह मार मद मान ॥१२८॥

सुनु मुनि मोह होअय मन तकरा । ज्ञान बिराग हृदय नहि जकरा ॥ १॥
ब्रह्मचर्य ब्रत रत मति धीरा । अहँ केँ करत कि मनसिज पीरा ॥ २॥
नारद कहल सहित अभिमाने । कृपा अहाँक सकल भगवाने ॥ ३॥
करुनानिधि मन देखल बिचारी । उर अंकुरल गरब तरु भारी ॥ ४॥
तकरा हम झट देब उखारी । मम प्रन अछि सेवक हितकारी ॥ ५॥
कौतुक हमर मुनिक हित जेहे । अवस उपाय करब हम सेहे ॥ ६॥
नारद हरिपद माथ नमा कय । चलला हिय अहमिति अधिका कय ॥ ७॥
श्रीपति निज माया तहि काले । प्रेरल सुनु तनि करनिक हाले ॥ ८॥

दोहा—बिरचि देल मग मे नगर, सत जोजन बिस्तार ।
श्रीनिवास पुर सौँ अधिक, रचना विविध प्रकार ॥१२९॥

बसथि नगर सुंदर नर नारी । जनि बहु मनसिज रति तनधारी ॥ १॥
तहि पुर बसथि सीलनिधि राजा । अगनित हय गय सेन समाजा ॥ २॥
सत सुरेस सम बिभव बिलासे । रूप तेज बल नीति निबासे ॥ ३॥
बिस्वमोहिनी तनिक कुमारी । श्री बिमोह जसु रूप निहारी ॥ ४॥
से हरि माया सब गुन खानी । सोभा तकर न सकी बखानी ॥ ५॥
करय स्वयंबर से नृपबाला । अयला तहँ अगनित महिपाला ॥ ६॥
मुनि कौतुकी नगर तहि गेला । पुरवासी सौँ पुछइत भेला ॥ ७॥
सुनि सब चरित भूप गृह गेला । नृप आसन दय पुजइत भेला ॥ ८॥

दोहा—आनि देखाओल नारदहिँ, भूपति राजकुमारि ।
कहू नाथ गुन दोष सब, हिनकर हृदय बिचारि ॥१३०॥

बिसरल बिरति रूप तनि हेरी । हेरितहिँ रहि गेला बड़ देरी ॥ १॥
लच्छन तनिक लखि सुधि नहि रहले । हृदय हरष परगट नहि कहले ॥ २॥
हैता अमर जे बरता हिनका । क्यो रन जीति सकत नहि तिनका ॥ ३॥
सेवत सकल चराचर तनिका । बरती सिलनिधि कन्या जनिका ॥ ४॥
लच्छन सब बिचारि उर राखल । किछु किछु बना भूप सौँ भाखल ॥ ५॥
कहि कय भूपहिँ सुता सुलच्छन । सोचइत नारद चलला ततछन ॥ ६॥
करी जाय से जतन बिचारी । जहि सौँ हमरा बरथि कुमारी ॥ ७॥
जप तप किछु न हैत येहि काले । हे बिधि मिलती कौन बिधि बाले ॥ ८॥

दोहा—येहि अबसर चाही परम, सोभा रूप बिसाल ।
जे बिलोकि रीझथि कुमरि, पहिराबथि जयमाल ॥१३१॥

हरि सौँ सुंदरता ली माँगी । तहु मे जैत देर अति लागी ॥ १॥
मम हित हरि समान नहि आने । होथु सहाय येखन भगवाने ॥ २॥
बहु बिधि बिनय कयल तहि काले । प्रगट भेला कौतुकी कृपाले ॥ ३॥
प्रभु बिलोकि मुनि नयन जुड़ायल । हैत काज बुझि हिय हरखायल ॥ ४॥
कहल कथा सब अति अकुला कय । होउ सहाय कृपालु कृपा कय ॥ ५॥

देल जाओ निज रूप कृपाला । आन जतन सौँ पैब न बाला ॥ ६॥
जहि विधि नाथ होअय हित मोरे । झट से करिय दास हम तोरे ॥ ७॥
निज माया वल देखि बिसाले । हिय हँसि बजला दीनदयाले ॥ ८॥

दोहा—नारद सुनु हो जाहि सौँ, अहँक सर्वथा नीक।
से हम करव न आन किछु, बचन न हमर अलीक ॥१३२॥

कुपथ माँग रुज व्याकुल रोगी । बैद न दैछ सुनू मुनि जोगी ॥१॥
करब अहँक भल तही समाने । कहि भेला प्रभु अन्तर्धाने ॥२॥
मायावस भेला मुनि मूढ़े । बुझलनि नहि हरिगिरा निगूढ़े ॥३॥
गेला तुरित रिपीस्वर ताहाँ । बनल स्वयंबर थल छल जाहाँ ॥४॥
निज निज आसन बैसला राजा । बनि ठनि कय बहु सहित समाजा ॥५॥
मुनि हरपथि मम रूप महाने । अमहुँ न मोहि तजि बरती आने ॥६॥
कृपानिधान मुनिक हित जानी । देल कुरूप न होअय बखानी ॥७॥
से चरित्र लखि क्यो नहि पाओल । नारद बुझि सब सीस नमाओल ॥८॥

दोहा—रहय तहाँ दुइ रुद्रगन, सकल भेद से जान।
लखइत फिर बनि विप्र दुहु, छल कौतुकी महान ॥१३३॥

जहि समाज बैसला मुनि जा कय । हृदय रूप अहमिति अधिका कय ॥१॥
तहँ बैसल छल दुहु महेसगन । विप्र बेष मे बुझय न क्यो जन ॥२॥
करय कूट नारदहिँ सुना कय । ललित रूप हरि देल बना कय ॥३॥
रिझती छवि लखि राजकुमारी । वरती हिनकहिँ हरि अबधारी ॥४॥
मुनिहिँ मोह मन आनक पानी । हँसय संभुगन आनँद सानी ॥५॥
अटपट बचन सुनथि मुनि जइयो । भ्रम बस बुधि बूझथि नहि नइयो ॥६॥
लखल चरित से क्यो नहि अन्ये । से सरूप देखल नृप कन्ये ॥७॥
मरकट बदन देह भयकारी । कुपित भेली लखि राजकुमारी ॥८॥

दोहा—तखन कुमरि सखि सँग चललि, जनि चल राज मराल।
नृप गन केँ लखइत फिरथि, कर सरोज जयमाल ॥१३४॥

जहि दिसि बैसला नारद फूली । तहि दिसि से न बिलोकल भूली ॥१॥
मुनि आकुल उसकथि कत बेरी । हर गन बिहुँस दसा तनि हेरी ॥२॥
धय नृप तन तहँ गेला कृपाला । पहिरौलनि कुमारि जयमाला ॥३॥
कन्या लय गेल लच्छिनिवासे । भूपति सब भय गेल निरासे ॥४॥
मुनि अति बिकल मोह मति हरले । फुजल गेँठ जनि मनि खसि पड़ले ॥५॥
हर गन तखन कहल मुसुका कय । निज मुख लखिय मुकुर मे जा कय ॥६॥
ई कहि दुहु भागल भय भारी । देखल मुनि मुह बारि निहारी ॥७॥
बेष बिलोकि क्रोध अति भेलनि । तकरा घोर श्राप ई देलनि ॥८॥

दोहा—होअह निसाचर जाय दुहु, छली अघी छह ढेर ।
हँसलह हमरा लैह फल, हँसिहह मुनिकेँ फेर ॥१३५॥

पुनि जल हेरि रूप निज देखल । तदपि हृदय संतोष न लेखल ॥१॥
फड़कय अधर कोप मन जोरे । चलला झट कमलापति ओरे ॥२॥
श्राप देब की तजब पराने । हँसी करौलनि हमर जहाने ॥३॥
भेटला बीचहिँ पथ दनुजारी । संग रमा से राजकुमारी ॥४॥
बजला मधु सुरस्वामी काहाँ । चललहुँ ब्याकुल सन बनि आहाँ ॥५॥
सुनति बचन उपजल अति क्रोधे । माया बस न रहल मन बोधे ॥६॥
पर संपदा सकी नहि देखी । अहँ केँ इरिषा कपट बिसेखी ॥७॥
मथइत सिंधु रुद्र बौरौलहुँ । सुरहिँ प्रेरि बिष पान करौलहुँ ॥८॥

दोहा—असुर सुरा बिष संकरहिँ, स्वयं रमा मनि सार ।
स्वारथ साधक कुटिल अहँ, सतत कपट व्यवहार ॥१३६॥

परम स्वतंत्र न सिर पर आने । करी मैह जे तव मन माने ॥१॥
मंदहिँ भल भल मंद करैछी । बिसमय हरष न हृदय धरैछी ॥२॥
ठकि ठकि सबहुँ परिकलहुँ सदि खन । सतत उछाहो बड़ असंक मन ॥३॥
करम सुभासुभ किछु नहि बाधल । अहँ केँ क्यो न येखन धरि साधल ॥४॥
नीकाँ घर अहँ बैन पठौलहुँ । पैब अहाँ फल जे किछु बौलहुँ ॥५॥

ठकलहुँ हमरा धय तन जेहे । तन से धरब साप मम एहे ॥६॥
कयल सरुप मम कपिक सरीसे । होयत सहायक अहँ काँ कीसे ॥७॥
मम अपकार कयल अहँ भारी । नारि वियोगेँ होयब दुखारी ॥८॥

दोहा—श्राप सीस धय हरषि प्रभु, कयलनि विनती ढेरि ।
निज माया कॅर प्रबलता, लॅलनि कृपानिधि फेरि ॥१३७॥

हरि जखनहिँ माया लॅल टारी । नहि तहँ रमा न राजकुमारी ॥१॥
तखन गहल डरि मुनि हरि चरने । कहल रच्छु प्रनतारति हरने ॥२॥
हो असत्य मम साप कृपाले । मम इच्छा कह दीनदयाले ॥३॥
हम दुरबचन कहल बहु घोरे । कोन बिधि मॅटत पाप से मोरे ॥४॥
जपू जाय संकर सत नामे । हिय मे होयत तुरत बिस्रामे ॥५॥
प्रिय न तॅहन क्यो मोहि सिव जेहन । भ्रमहुँ प्रतीत तजू नहि एहन ॥६॥
जहि पर करथि न कृपा पुरारी । से नहि हमर भगति अधिकारी ॥७॥
ई उर धय विचरू गय जग मे । आब न आओत माया लग मे ॥८॥

दोहा—बहु बिधि मुनिहिँ प्रबोधि प्रभु, भॅला अन्तरधान ।
सत्यलोक चललाह मुनि, करति राम गुन गान ॥१३८॥

हर गन मुनि केँ जाइत देखी । बिगत मोह मन हरप बिसेखी ॥१॥
अति सभीत नारद लग आओल । पद धय आरत बचन सुनाओल ॥२॥
हर गन हम न बिप्र मुनिराजे । कय अपराध पौल फल आजे ॥३॥
श्राप अनुग्रह करिय कृपाले । बजला नारद दीन दयाले ॥४॥
होअह निसाचर दुहु जन जा कय । बैभव बिपुल तेज बल पा कय ॥५॥
भुज बल जग जितबह तोँ जहिया । धरता विष्णु मनुज तन तहिया ॥६॥
हरि हाथेँ रन मारल जैबह । हैबह मुकुत न पुनि भव पैबह ॥७॥
मुनि पद प्रनमि दुहू चलि गेले । काल पाबि पुनि निसिचर भेले ॥८॥

दोहा—एक कल्प येहि हेतु प्रभु, लॅल मनुज अवतार ।
सुर रंजन सज्जन सुखद, हरि भंजन भू भार ॥१३९॥

हरि केर जनम करम येहि बीधी । अति बिचित्र सुंदर सुख नीधी ॥१॥
कलप कलप प्रति प्रभु अवतरथी । चारु चरित नाना बिधि करथी ॥२॥
तखन तखन मुनि कथा बना कय । परम पुनीत प्रबंध सजा कय ॥३॥
कहथि अनूप प्रसंग बहूते । सुनि न सयान बुझथु अजगूते ॥४॥
हरि अनंत हरि कथा अनंते । कहथि सुनथि बहु बिधि सब संते ॥५॥
चरित रामचंद्रक सुभ निरमल । कोटि कल्प धरि जाय न बरनल ॥६॥
ई प्रसंग हम कहल भवानी । हरि माया मोहथि मुनि ज्ञानी ॥७॥
प्रभु कौतुकी प्रनत हितकारी । सेवइत सुलभ सकल दुखहारी ॥८॥

दोहा—सुर नर मुनि नहि एक, मोह न जहि माया प्रबल ।
येहन बूझि धय टेक, भजू महामाया पतिहिँ ॥१४०॥

अपर हेतु सुनु सैलकुमारी । कही बिचित्र कथा बिस्तारी ॥१॥
जहि कारन अज अगुन अरूपे । ब्रह्म भेला कोसलपुर भूपे ॥२॥
प्रभु बन घुमइत लखल जे नयने । बंधु सहित मुनि बेष बनयने ॥३॥
जनिक भवानी चरित निहारी । बाउरि छलहुँ सती तन धारी ॥४॥
येखनहुँ छाया सकल न छारी । तनिक चरित सुनु भ्रम रुज हारी ॥५॥
लीला कयल जे तहि अवतारे । से सब कहब स्वमति अनुसारे ॥६॥
भरद्वाज संकर बानी सुनि । उमा सप्रेम सकुचि बिहुँसलि गुनि ॥७॥
लगला पुनि बरनय बृषकेतू । से अवतार भेल जहि हेतू ॥८॥

दोहा—से सब आब कहैत छी, मन दय सुनु मुनिनाथ ।
कलिमल हर मंगल करन, सुंदर रामक गाथ ॥१४१॥

स्वायंभुव मनु ओ सतरूपे । जनिका सौँ नर सृष्टि अनूपे ॥१॥
दंपति धरम आचरन नीके । येखनहुँ श्रुति जस गाब जनीके ॥२॥
नृप उत्तानपाद सुत तनिकर । ध्रुव हरिभगत भेला सुत जनिकर ॥३॥
लघु सुत नाम प्रियव्रत तनिका । वेद पुरान प्रसंसथि जनिका ॥४॥
देवहूति पुनि तनिक कुमारी । मुनि कर्दमक रहथि प्रिय नारी ॥५॥
जठर धयल जे कपिल कृपाले । आदि देव प्रभु दीन दयाले ॥६॥

प्रगटाओल सांख्यक विज्ञाने । तत्व विचार निपुन भगवाने ॥७॥
से मनु राज काल बहु केलनि । प्रभु निदेश बहु बिधि सिर धेलनि ॥८॥

सोरठा—हो नहि विषय विराग, चारिमपन भेल वसथि घर ।
हृदय वहुत दुख लाग, जनम गेल हरि भजन विनु ॥१४२॥

बरबस राज सुतहिँ नृप देलनि । नारि समेत गमन वन केलनि ॥१॥
तीरथ बर नैमिष बिख्याता । अति पुनीत साधक सिधि दाता ॥२॥
बसथि तहाँ मुनि सिद्ध समाजे । तहँ सहर्ष चलला मनु राजे ॥३॥
पथ जाइत सोभथि मतिधीरे । ज्ञान भगति जनि धयल सरीरे ॥४॥
जाय पहुँचला धेनुमति तीरे । हरषि नहयला निरमल नीरे ॥५॥
ऐला मिलय सिद्ध मुनि ज्ञानी । धरम धुरंधर नृप रिषि जानी ॥६॥
जतय जतय भल तीरथ पाओल । मुनि से से सादर करबाओल ॥७॥
कृस सरीर मुनिपट परिधाने । सत समाज नित सुनथि पुराने ॥८॥

दोहा—द्वादस अच्छर मंत्र पुनि, जपथि सहित अनुराग ।
वासुदेव पद पंकरुह, दंपति मन अति लाग ॥१४३॥

करथि अहार साक फल कंदे । सुमिरथि ब्रह्म सच्चिदानंदे ॥१॥
पुनि हरि हेतु तपोब्रत धारल । बारि अधार मूल फल छाड़ल ॥२॥
होइन उर अभिलाष बिसेखी । लैह परम प्रभु निज दृग देखी ॥३॥
अगुन अखंड अनंत अनादी । जनि चिंतथि परमारथ बादी ॥४॥
नेति नेति जनि वेद निरूपे । निजानंद निरुपाधि अनूपे ॥५॥
संभु बिरंचि विष्णु भगवाना । उपजथि जनिक अंस सौँ नाना ॥६॥
येहनो प्रभु सेवक बस रहथी । भगत हेतु लीला तन गहथी ॥७॥
जौँ ई वचन सत्य श्रुति भाखल । तौँ अभिलाष पुरत मन राखल ॥८॥

दोहा—येहि बिधि बीतल बरष षट, सहस बारि आहार ।
संवत सप्त सहस्र पुनि, रहल समीर अधार ॥१४४॥

बरष सहस दस सेहो त्यागल । येक पद ठाढ़ दुहू तप लागल ॥१॥
विधि हरि हर तप देखि अपारे । मनु समीप अयला बहु बारे ॥२॥
माँगू बर बहु भाँति लोभौलनि । धीर न टगला लाख टगौलनि ॥३॥
अस्थि मात्र रहि गेल सरीरे । तैयो कनियो मन नहि पीरे ॥४॥
प्रभु सर्वज्ञ दास निज जानी । गति अनन्य तापस नृप रानी ॥५॥
माँगु माँगु बर भेल नभ बानी । परम गँभीर कृपामृत सानी ॥६॥
गिरा से मृत संजीबन धारा । गेल जखन उर श्रुतिपुट द्वारा ॥७॥
सुंदर हृष्ट पुष्ट तन भेले । येखनहिँ मानु भवन सौँ एले ॥८॥

दोहा—श्रवन सुधा सम बचन सुनि, पुलक प्रफुल्लित देह ।
बजला मनु कय दण्डवत, हृदय समाय न नेह ॥१४५॥

सुनु सेबक सुरतरु सुरधेनू । विधि हरि हर बंदित पद रेनू ॥१॥
सेबइत सुलभ सकल सुखदायक । प्रनतपाल सचराचर नायक ॥२॥
जौँ अनाथ हित हम पर नेहे । तौँ प्रसन्न भय दिय बर एहे ॥३॥
जाहि सरूपक सिव कर ध्याने । जहि हित मुनि कर जतन महाने ॥४॥
जे भुसुंडि मन मानस हंसे । सगुन अगुन कर निगम प्रसंसे ॥५॥
से सरूप देखी भरि लोचन । कृपा करू प्रनतारति मोचन ॥६॥
दंपति बचन परम प्रिय लागल । मृदुल विनीत प्रेम रस पागल ॥७॥
भगत बछल प्रभु कृपानिधाने । प्रगटल विस्वबास भगवाने ॥८॥

दोहा—नील सरोरुह नील मनि, नील नीरधर स्याम ।
देखि लजाइछ देह छबि, कोटि कोटि सत काम ॥१४६॥

सरद मयंक बदन छबि सीमे । चारु कपोल चिबुक दर ग्रीमे ॥१॥
अधर अरुन रद सुंदर नासा । बिधु कर निकर विनिंदक हासा ॥२॥
नव अंबुज अंबक छबि सुंदर । भावय चितवनि ललित मनोहर ॥३॥
भृकुटि मनोज चाप छबिहारी । तिलक ललाट पटल दुतिकारी ॥४॥
कुंडल मकर मुकुट सिर राजे । कुटिल केस जनि मधुप समाजे ॥५॥
उर श्रीबत्स रुचिर बनमाला । पदिक हार भूपन मनि जाला ॥६॥

केहरि कंध जनेउ विराजय । बाँहि विभूषन सुंदर छाजय ॥७॥
करि कर सरिस सुभग भुज दंडे । कटि निषंग कर सर कोदंडे ॥८॥

दोहा—तड़ित विनिंदक पीत पट, उदर रेख वर तीनि ।
नाभि मनोहर लैछ जनि, जमुन भँवर छवि छीनि ॥१४७॥

बरनत के पद कमल ललामे । मुनि मन मधुप लुबुध जहि ठामे ॥१॥
वाम भाग सोभथि अनुकूले । आदि सक्ति छवि निधि जग मूले ॥२॥
जनिक अंस प्रगटथि गुन खानी । अगनित रमा उमा ब्रह्मानी ॥३॥
भृकुटि विलास रचथि जग जेहे । राम बाम दिसि सीता सेहे ॥४॥
छवि समुद्र हरि रूप बिलोकी । येकटक भेला नयन पट रोकी ॥६॥
चितवथि सादर रूप अनूपा । तृप्ति न मानथि मनु सतरूपा ॥६॥
हरप विवस तन सुधि बुधि गेले । दंड सरिस पड़ि पद गहि लेले ॥७॥
सिर परसल प्रभु निज कर कंजे । तुरत उठाओल करुना पुंजे ॥८॥

दोहा—बजला कृपानिधान पुनि, अति प्रसन्न मोहि जानि ।
जे भावय मन माँगु बर, महादानि अनुमानि ॥१४८॥

सुनि प्रभु वचन जोरि जुग पानी । धय धीरज बजला मृदु बानी ॥१॥
प्रभु लखि तव पद कमल ललामे । आब हमर पूरल सब कामे ॥२॥
एक लालसा बड़ मन रहले । सुगम अगम किछु जाय न कहले ॥३॥
स्वामी दैत सुगम बड़ तोही । अगम बुझाय कृपन मति मोही ॥४॥
जेना दरिद्र कलपतरु पावय । मँगइत बहु धन मन सँकुचावय ॥५॥
से नहि जानय तकर प्रभावे । तहिना मम हिय संसय आवे ॥६॥
अहँ जानी से अंतरजामी । हमर पुराउ मनोरथ स्वामी ॥७॥
तजि संकोच माँगु नृप मोही । हमरा नहि अदेय किछु तोही ॥८॥

दोहा—दानि सिरोमनि कृपानिधि, कही भाव सत नाथ ।
चाही अहँक समान सुत, स्वामी सौं की लाथ ॥१४९॥

देखि प्रीत सुनि अनुपम बानी । एवमस्तु कह करुना खानी ॥१॥
निज सन हम तकनहुँ कहँ पायब । नृप तव सुत भय अपनहिँ आयब ॥२॥
कर जोड़ने बिलोकि सतरूपे । देवि माँगु बर रुचि अनुरूपे ॥३॥
जे बर नाथ चतुर नृप माँगल । से कृपालु मोहि अति प्रिय लागल ॥४॥
प्रभु बुझाय बड़ ढिठपन मोही । जद्यपि रुचय भगत हित तोही ॥५॥
अहँ ब्रह्मादि जनक जग स्वामी । ब्रह्म सकल उर अंतरजामी ॥६॥
ई बुझइत मन हो संदेहे । कहल जे प्रभु प्रमान पुनि सेहे ॥७॥
प्रभु अपनेक भगत जे रहथी । से जे सुख ओ जे गति लहथी ॥८॥

दोहा—से सुख से गति से भगति, से सिनेह पद तोहि ।
से बिबेक से रहनि प्रभु, दियऽ कृपाकय मोहि ॥१५०॥

सुनि मृदु गूढ़ रुचिर बच रचने । कृपासिंधु बजला मृदु बचने ॥१॥
अहँक हृदय जे जे रुचि भेले । नहि संसय से से हम देले ॥२॥
मातु बिबेक अलौकिक तोरे । छनहुँ न मेटत अनुग्रह मोरे ॥३॥
बंदि चरन मनु पुनि ई कहले । औरो येक बिनती मम रहले ॥४॥
सुत बुझि हो तव पद अनुरागे । मूढ़ कहओ बरु हमरा जागे ॥५॥
फनि मनि बिनु जनु जल बिनु मीने । मम जीवन हो अहिँक अधीने ॥६॥
ई बर माँगि चरन गहि रहले । एवमस्तु करुनानिधि कहले ॥७॥
आब हमर अनुसासन मानी । जाय बसू सुरपति रजधानी ॥८॥

सोरठा—तहँ कय भोग बिसाल, तात गेने किछु काल पुनि ।
हैब अवध भूपाल, तखन बनब हम अहँक सुत ॥१५१॥

इच्छामय नर तन हम धरबे । जाय अहाँक भवन अवतरबे ॥१॥
अंस समेत देह धय ताता । करब चरित भगतक सुखदाता ॥२॥
जे सुनि सादर नर बड़भागी । भव तरता ममता मद त्यागी ॥३॥
आदि सक्ति रचलनि जे जगती । मम माया सेहो अवतरती ॥४॥
करब पूर हम तव अभिलाषा । सत्य सत्य मम सत्ये भाषा ॥५॥
पुनि पुनि कहि ई कृपानिधाने । अंतरधान भेला भगवाने ॥६॥

दंपति उर धय भगति कृपाले । तहि आश्रम बसला किछु काले ॥७॥
समय पावि तन तजि अनयासे । जाय कयल अमरावति बासे ॥८॥

दोहा—ई इतिहास पुनीत अति, उमहिँ कहल बृषकेतु ।
भरद्वाज सुनु अपर पुनि, राम जनम केर हेतु ॥१५२॥

मास पारायण, विश्राम—५

सुनु मुनि सुचि प्राचीन कहानी । गिरजा सुनल संभु मुख बानी ॥१॥
विस्व विदित येक कैकय देसे । सत्यकेतु तहँ बसथि नरेसे ॥२॥
धरम धुरंधर नीति निधाने । तेज प्रताप सील बलवाने ॥३॥
तनिका भेल जुगल सुत बीरे । सब गुन धाम महा रनधीरे ॥४॥
जेठ राज अधिकारी बेटा । नाम प्रतापभानु छल सेटा ॥५॥
दोसर सुत अरिमर्दन नामे । भुज बल अतुल अचल संग्रामे ॥६॥
छल दुहु भाय मेल भल रीती । सकल दोष छल बरजित प्रीती ॥७॥
राज जेठ सुत केँ नृप देलनि । हरि हित स्वयं गमन बन केलनि ॥८॥

दोहा—भेला भूप प्रतापरवि, जनि प्रताप भरि देस ।
प्रजा पाल अति वेद बिधि, अघक कतहु नहि लेस ॥१५३॥

नृप हितकारक सचिव सयाने । नाम धरमरुचि सुक्र समाने ॥१॥
सचिव सयान बंधु बल बीरे । भूप प्रतापपुंज रन धीरे ॥२॥
सेन संग चतुरंग अपारे । अमित सुभट सब समर जुझारे ॥३॥
सेन विलोकि हरपला राजा । लागल बाजय धमधम बाजा ॥४॥
विजय हेतु सब सेन सजा कय । नृप चलला दिन सोधि बजा कय ॥५॥
जतय ततय रन मचल अनेके । जीतल बल सौँ भूप जतेके ॥६॥
सत दीप भुज बल बस केलनि । लय लय दंड छोड़ि नृप देलनि ॥७॥
सकल अवनि मंडल तहि काले । एक प्रतापभानु महिपाले ॥८॥

दोहा—विस्व स्वबस कय बाहु बल, निज पुर कयल प्रवेस ।
अरथ धरम कामादि सुख, सेबथि समय नरेस ॥१५४॥

पाबि प्रतापभानु भल भूपे । भूमि भेल सुरधेनु सरूपे ॥१॥
सब दुख बरजित प्रजा सुखारी । धरमसील सुंदर नर नारी ॥२॥
सचिब धरमरुचि हरि पद प्रीती । नृप हित नित्य सिखाबथि नीती ॥३॥
गुरु सुर संत पितर महिदेबा । करथि सदा नृप सबहुक सेबा ॥४॥
जे नृप धरम बिदित श्रुति बानी । सकल करथि सादर सुख मानी ॥५॥
प्रतिदिन देथि बिबिध बिधि दाने । सुनथि सास्त्र बर वेद पुराने ॥६॥
नाना बापी कूप तड़ागे । सुमन बाटिका सुंदर बागे ॥७॥
बिप्र भबन सुर भबन बनौलनि । तीरथ सकल बिचित्र सजौलनि ॥८॥

दोहा—जहँ धरि कहल पुरान श्रुति, एक एक सब जाग ।
बेर सहस्र सहस्र नृप, कयल सहित अनुराग ॥१५५॥

हृदय न किछु फल अनुसंधाने । भूप बिबेकी परम सुजाने ॥१॥
करथि जे धरम करम मन बानी । बासुदेब अरपित नृप ज्ञानी ॥२॥
चढ़ि बर बाजि एकबेर राजा । मृगया हित सब साजि समाजा ॥३॥
बिंध्याचलक सघन बन गेला । मृग पुनीत कत हतइत भेला ॥४॥
देखल फिरति नृप कोल महाने । जनि बन छिपल राहु ग्रसि चाने ॥५॥
बड़ बिधु छल नहि अँटय बदन मे । नहि उगलैछ क्रोध बड़ मन मे ॥६॥
कोल कराल दसन छबि कहले । देह बिसाल मोट बड़ रहले ॥७॥
घुरघुराय हय आहट पौने । चकित बिलोकय कान उठौने ॥८॥

दोहा—नील महीधर सिखर सम, लखि बराह अतिकाय ।
सरपट हाँकल हय नृपति, कोल न बाँचि पड़ाय ॥१५६॥

हनहनाय हय अबति निहारी । भागल कोल मरुत गति भारी ॥१॥
तुरत कयल नृप सर संधाने । महि सटि गेल बिलोकइत बाने ॥२॥
ठिका ठिका नृप चलबथि तीरे । छल सौँ बचबय सुगर सरीरे ॥३॥
छन छन छिपति जाय मृग भागल । रिस बस भूप चलथि सँग लागल ॥४॥
गेल कोल अति घन बन देसे । जहाँ न हो गजबाजि प्रवेसे ॥५॥
अति येकसर वन बिपुल कलेसे । तदपि न मृग मग तजथि नरेसे ॥६॥

कोल निरखि नृप केँ बड़ धीरे । भागि नुकायल गुहा गँभीरे ॥७॥
अगम देखि नृप अति पछतैला । फिरति महावन पथ भुतियैला ॥८॥

दोहा—खेद खिन्न तिरपित छुधित, राजा बाजि समेत ।
तकइत व्याकुल सरित सर, जल बिनु भेला अचेत ॥१५७॥

फिरइत देखल आश्रम भूपे । तहँ छल नृपति कपटमुनि रूपे ॥१॥
छिनल नृपति ई जनिकर राजे । भागल छल तजि सेना साजे ॥२॥
समय प्रतापभानु केँर जानी । ओ निज अति असमय अनुमानी ॥३॥
गेल न गृह मन बहुत गलानी । कयल संधि नहि नृप अभिमानी ॥४॥
रिस उर मारि रंक सम भूपे । बिपिन बसै छल तापस रूपे ॥५॥
तकरा लग नृप गेला जखने । ई प्रतापरवि चीन्हल तखने ॥६॥
तृपित नृपति तकरा नहि जानल । देखि सुबेप महामुनि मानल ॥७॥
उतरि तुरग सौँ कयल प्रनामे । परम चतुर न कहल निज नामे ॥८॥

दोहा—से विलोकि भूपति तृषित, सरबर देल देखाय ।
कयलनि मज्जन पान नृप, हय समेत हरखाय ॥१५८॥

श्रम सब दुरल सुखी नृप भेले । निज आश्रम तापस लय गेले ॥१॥
आसन देल अस्त रवि जानी । पुनि तापस बाजल मृदु बानी ॥२॥
के तोँ किय वन घुरह येकाकी । सुंदर जुबा न जीवक चाँकी ॥३॥
चक्रबर्ति केँर लच्छन देखी । लागय हमरा दया विसेखी ॥४॥
नाम प्रतापभानु अवनीसे । तनिक सचिव हम सुनू मुनीसे ॥५॥
मृगया करइत भोतिया गेलहुँ । देखल पद बड़ भागेँ एलहुँ ॥६॥
तव दरसन दुरलभ मोहि भारी । बुझी आब किछु भल होनिहारी ॥७॥
मुनि कहलनि अन्हार भेल पूरे । तव पुर जोजन सत्तरि दूरे ॥८॥

दोहा—निसा घोर गंभीर बन, पंथ न सुनह सुजान ।
बसह आइ तोँ बुझि येहन, जइहह होइत बिहान ॥

तुलसी जे भवितव्यता, तेहने भेटय सहाय ।
अपनहि आबय तकरलग, तकरहि तहँ लय जाय ॥१५६॥

बेस नाथ आज्ञा धय सीसे । बैसल तरु हय बान्हि महीसे ॥१॥
बहु प्रसंसि नृप तनि हिय आनल । चरन बंदि निज भाग्य बखानल ॥२॥
पुनि बजला सुंदर मृदु बानी । करी ढिठाइ पिता प्रभु जानी ॥३॥
मोहि मुनीस सुत सेवक जानी । नाथ नाम निज कहू बखानी ॥४॥
मुनि चिन्हलनि तनि चिन्हल न राजा । नृप सुधमति से पटु छलबाजा ॥५॥
बैरी पुनि छत्री पुनि राजा । छल बल साधय चह निज काजा ॥६॥
सोचि राज सुख दुखित अराती । अबा अनल इव सुनगय छाती ॥७॥
भूपक सरल बचन से सूनी । हरषित भेल बैर मन गूनी ॥८॥

दोहा—कपट बोरि बानी मृदुल, बाजल जुगुति समेत ।
आब भिखारी नाम मम, निरधन रहित निकेत ॥१६०॥

कह नृप जे बिज्ञान निधाने । अहँक समान गलित अभिमाने ॥१॥
सदा रहथि अपनत्व छिपा कय । सब बिधि कुसल कुवेष बनाकय ॥२॥
तैं कहैछ श्रुति संत चिरंतन । होथि हरिक प्रिय परम अकिंचन ॥३॥
अहँ सन अधन भिखारि अगेहे । होअय बिरंचि सिवहिँ संदेहे ॥४॥
जोसि सोसि तव चरन नमामी । मोहि पर कृपा आब करु स्वामी ॥५॥
सहज प्रीति भूपति केर देखी । अपना पर बिस्वास बिसेखी ॥६॥
सब बिधि राजा केँ अपना कय । बाजल अधिक सनेह जना कय ॥७॥
सुनु सत भाव कही महिपाले । बसइत येतय बितल बहु काले ॥८॥

दोहा—भेटल क्यो नहि येखन धरि, ककरहु परिचय दी न ।
लोक मान्यता अनल मे, तप बन जरि हो छीन ॥

सोरठा—तुलसी देखि सुरूप, भुलय मूढ़ नहि चतुर नर ।
मोर मनोहर रूप, बचन सुधा सम असन अहि ॥१६१॥

तैँ हम निबसी गुपुत जहाने । हरि तजि किछु न प्रयोजन आने ॥१॥
प्रभु जानथि सब बिना जनौने । कहू कोन फल लोक रिझौने ॥२॥
अहँ सुचि सुमति परम प्रिय मोरे । मोहि पर प्रीति प्रतीति न थोरे ॥३॥
आब जँ अहँ सौँ बात छिपाबी । तौँ अति कठिन दोष हम पाबी ॥४॥
जौँ जौँ मुनि बतिआय उदासे । तौँ तौँ नृपहिँ उपज बिस्वासे ॥५॥
देखल स्वबल करम मन बानी । बाजल तखन छली बकध्यानी ॥६॥
भ्राता हमर एकतनु नामे । सुनि नृप बजला कय परनामे ॥७॥
कहु मुनि नामक अरथ बखानी । हमरा निज सेवक बड़ जानी ॥८॥

दोहा—आदि सृष्टि भेल जखन हम, तखनहि उतपति लेल ।
नाम एकतनु जैँ न पुनि, तन दोसर मम भेल ॥१६२॥

सुत जनि अचरज करु अहँ मन मे । तप सौँ किछु दुरलभ न भुवन मे ॥१॥
तप बल सौँ जग सृजथि विधाता । तप बल विष्णु भेला परित्राता ॥२॥
तप बल संभु करथि संहारे । तप सौँ अगम न किछु संसारे ॥३॥
नृपहिँ भेल सुनि प्रीति महाने । लागल कहय से कथा पुराने ॥४॥
करम धरम इतिहास अनेके । करय निरूपन बिरति बिबेके ॥५॥
उदभव पालन प्रलय कहानी । अजगुत कहल अनेक बखानी ॥६॥
सुनि नृप तापस बस भय गेला । पुनि निज नाम कहय पर भेला ॥७॥
अहँ केँ नृपति चिन्ही मुनि बाजल । कयलहुँ छल हमरा भल लागल ॥८॥

सोरठा—सुनु महीप थिक नीति, जहँ तहँ नाम न कहथि नृप ।
अहँ पर मम अति प्रीति, नय चातुरी विचारि तव ॥१६३॥

थिक तव नाम प्रतापदिनेसे । सत्यकेतु तव पिता नरेसे ॥१॥
गुरु प्रसाद सब जानी राजा । कही न से बुझि अपन अकाजा ॥२॥
देखि अहँक सुधपन भल रीती । नीति निपुनता प्रीति प्रतीती ॥३॥
उपजि पड़ल ममता मन मोही । पुछने कही कथा निज तोही ॥४॥
संसय नहि प्रसन्न छी आवे । माँगु भूप जे तोहि मन भावे ॥५॥

सुनि सुबचन भूपति हरषयले । गहि पद बिनय बिबिध बिधि कयले ॥६॥
कृपासिंधु मुनि दरसन तोरे । चारि पदारथ करतल मोरे ॥७॥
प्रभु केँ तदपि प्रसन्न बिलोकी । माँगि अगम बर हैब असोकी ॥८॥

दोहा—जरा मरन दुख रहित तन, जितय न क्यो रन मोय ।
एक छत्र रिपु रहित महि, राज कलप सत होय ॥१६४॥

तपसी कहल भूप येहने हो । कारन एक कठिन सुनु सेहो ॥१॥
कालो तव पद राखत सीसे । एक बिप्र कुल छोड़ि महीसे ॥२॥
तप बल बिप्र सदा बरियारे । तनिक कोप नहि क्यो रखबारे ॥३॥
जौँ बिप्रहिँ बस करी नरेसे । तौँ तव बस बिधि बिष्णु महेसे ॥४॥
चल न ब्रह्मकुल पर बल सूनू । सत सत कही उठा भुज दूनू ॥५॥
बिप्र श्राप बिनु सुनु महिपाले । अहँक नास नहि कोनहु काले ॥६॥
नृप हरषयला सुनि मुनि बचने । आब न होयत मम नासक रचने ॥७॥
तव प्रसाद प्रभु कृपा निधाने । हमरा सरब काल कल्याने ॥८॥

दोहा—एबमस्तु कहि कपट मुनि, बहुरि कहल दय जोर ।
मिलब हमर भटकब अपन, कहब तँ दोष न मोर ॥१६५॥

तैँ हम तोहि बरजी महराजे । कहला सौँ तव परम अकाजे ॥१॥
छठम कान जौँ परत कहानी । होयब नास सत्य मम बानी ॥२॥
प्रगट भेने ई बा द्विज श्रापे । नास अहँक सुनु भानुप्रतापे ॥३॥
आन जुगुति तव निधन न तइयो । कुपित होथि हरि ओ हर जइयो ॥४॥
सत्य नाथ पद गहि नृप भाखल । द्विज गुरु कोप कहू के राखल ॥५॥
रच्छथि गुरु जौँ कुपित बिधाता । गुरु बिरोध क्यो नहि जग त्राता ॥६॥
जौँ न कहल तव हम अनुसरबे । नास होअओ नहि चिंता करबे ॥७॥
एके डरेँ डरय मन मोरे । प्रभु महिदेव श्राप अति घोरे ॥८॥

दोहा—कोन बिधि होयत बिप्र बस, कहु कृपया से आब ।
तव तजि दीनदयाल निज, हित नहि दोसर पाब ॥१६६॥

जग बहु जतन किंतु नृप सेहे । कष्टसाध्य होय बहु संदेहे ॥१॥
सुगम उपाय एक हम देखी । एक कठिनता ततहु विसेखी ॥२॥
मम अधीन से जुगति नरेसे । तव पुर करब न किंतु प्रवेसे ॥३॥
जहिया सौँ ई तन हम धेलहुँ । ककरो गाम धाम नहि गेलहुँ ॥४॥
जौँ न जाइ तौँ होयत अकाजे । आबि पड़ल असमंजस आजे ॥५॥
सुनि महीस बानी मृदु कहले । प्रभु ई नीति निगम कहि रहले ॥६॥
बड़क सिनेह सतत लह छोटे । धर सिर पर तृन गिरि बड़गोटे ॥७॥
जलधि अगाध उपर बह फेने । धरनी रेनु रहय सिर लेने ॥८॥

दोहा--गहल येहन कहि चरन नृप, स्वामी होउ कृपाल ।
हमरा हित प्रभु दुख सहू, सज्जन दीनदयाल ॥१६७॥

जानि भूप केँ अपन अधीने । बाजल तापस कपट प्रबीने ॥१॥
सत्य कही भूपति सुनु तोही । किछु नहि दुरलभ अछि जग मोही ॥२॥
करब अवस्य काज हम तोरे । मन बच करम भगत अहँ मोरे ॥३॥
जोग जुगुति तप मंत्र प्रभावे । रहनहि गुपुत सफल भय पावे ॥४॥
जौँ नरेस हम बनबी भोजन । परसी अहँ नहि जानय क्यो जन ॥५॥
से अन जे जन भोजन करता । से सभ तव अनुमति अनुसरता ॥६॥
पुनि तकरा घर जे क्यो खैता । भूप सुनू से तव बस हैता ॥७॥
यैह उपाय नरेस करू गय । बरष भरिक संकल्प धरू गय ॥८॥

दोहा--नित नूतन द्विज सहस सय, न्योतू सह परिवार ।
दिनहिँ करब संकल्प धरि, हम मानसक जोगार ॥१६८॥

अति अल्पे कष्टहिँ येहि रूपे । हैता बिप्र सकल बस भूपे ॥१॥
करता बिप्र होम मख सेवा । सहजहिँ होयता बस पुनि देवा ॥२॥
और एक हम भेद कहै छी । येहि बेषे नहि आबि सकै छी ॥३॥
नृप तव पुरहित घर हम जायब । निज माया तकरा हरि लायब ॥४॥
तप बल तनि कय अपन समाने । राखब येतय बरष परमाने ॥५॥
हम धय तकर बेष सुनु राजा । सब बिधि अहँक सम्हारब काजा ॥६॥

निसि बड़ भेल करू गय सयने । बहुरि मिलब हम परस्स्र अयने ॥७॥
हम तप बल सौं तुरग समेते । सुतले पहुँचा देब निकेते ॥८॥

दोहा--आयब पुरहित वेष धय, तैखन चीन्हब मोहि ।
जहि खन बजा येकान्त मे, कथा कहब हम तोहि ॥१६९॥

सयन कयल नृप अनुमति मानी । आसन बैसल कपट गेआनी ॥१॥
मातल नीन भूप अति थाकल । सोचइत कत खल मुनि छल जागल ॥२॥
कालकेतु निसिचर तहँ आओल । सूगर भय जे नृपहिँ भुलाओल ॥३॥
तापस नृपक मित्र छल भारी । जानय बहुत कपट बुधियारी ॥४॥
तकरा सत सुत ओ दस भ्राता । खल अति अजय देव दुख दाता ॥५॥
नृप प्रथमहिँ सब कें देल मारी । बिप्र संत सुर देखि दुखारी ॥६॥
से खल पुरुब बैर मन पागल । तापस नृप मिलि मंत्र बिचारल ॥७॥
रिपु छय हेतु रचल से साजा । भावी बस किछु बुझल न राजा ॥८॥

दोहा--तेजस्वी रिपु येकसरो, लघु नहि बुझी कदापि ।
सिर अवसेषो राहु रवि, ससि सतबय अद्यापि ॥१७०॥

तापस नृप निज सखहिँ निहारी । हरषि मिलल उठि भेल सुखारी ॥१॥
कथा सखा कें कहल सुना कय । जातुधान बाजल सुख पा कय ॥२॥
साधल रिपु सुनु आब नरेसे । जों अहँ करी हमर उपदेसे ॥३॥
रहू सुति अहँ परिहरि सोगे । विधि विनु औषध कयल अरोगे ॥४॥
कुल समेत रिपु मूल बहा कय । चारिम दिबस मिलब हम आ कय ॥५॥
तापस नृपहिँ बहुत परितोषी । चलल महाकपटी अति रोषी ॥६॥
भानुप्रतापहिँ बाजि समेते । पहुँचौलक छन माभ निकेते ॥७॥
नृपहिँ रानि लग सैन करा कय । हय कें बान्हल हयगृह जा कय ॥८॥

दोहा--राजा कें उपरोहितहिँ, हरि लय गेल येकांत ।
माया सौं गिरि खोह मे, राखल कय मति भ्रांत ॥१७१॥

तीनू भाय बिविध तप ठानल । परम उग्र नहि जाय बखानल ॥१॥
गेला लग तप देखि बिधाता । माँगू बर प्रसन्न हम ताता ॥२॥
कय बिनती पद गहि दससीसे । बाजल बचन सुनू जगदीसे ॥३॥
हमरा कैयो सकय नहि मारी । बानर मनुज जाति दुइ छारी ॥४॥
एवमस्तु अहँ बड़ तप केलहुँ । हम विधि मिलि तकरा बर देलहुँ ॥५॥
पुनि प्रभु कुंभकरन लग गेला । तकरा लखि मन बिसमित भेला ॥६॥
जौं ई खल नित करत अहारे । जायत उजड़ि सकल संसारे ॥७॥
सारद प्रेरि फेरल मति तासू । माँगल ओ निद्रा षटमासू ॥८॥

दोहा—गेला निकट बिभीषनक, कहल पुत्र बर माँग ।
से माँगल भगवंत पद, कमल अमल अनुराग ॥१७७॥

सब कें बर दय ब्रह्मा गेला । हरषित सब निज निज घर एला ॥१॥
मय तनुजा मंदोदरि नामे । परम सुंदरी नाम ललामे ॥२॥
से मय देलक रावनहिँ आनी । हैती बूझि दनुजपति रानी ॥३॥
हरषित भेल नारि भल पा कय । पुनि दुहु बंधु बियाहल जा कय ॥४॥
गिरि त्रिकूट सागर बिध अनुपम । विधि निरमित छल जे अति दुरगम ॥५॥
तकरा मय दानव पुनि साजल । कनक रचित बहु मनिगृह आजल ॥६॥
जेहन भोगावति अहिकुल बासे । ओ अमरावति सक्र निवासे ॥७॥
तहुँ सौं अधिक रम्य अति बंका । जग बिख्यात नाम छल लंका ॥८॥

दोहा—परिखा सिंधु गभीर अति, चारू दिसि लहराय ।
कनक कोट मनि खचित दृढ़, सोभा कहल न जाय ॥
हरि प्रेरित जहि कलप हो, जातुधान पति जैह ।
सूर प्रतापी अतुल बल, बसय सहित दल सैह ॥१७८॥

निसिचर सुभट रहय तहि ठामे । हतल देवगन ताहि तमामे ॥१॥
आब ततय आदेस सुरेसक । रहय कोटि रच्छक जच्छेसक ॥२॥
दसमुख कतहु खबरि ई पा कय । सेन साजि गढ़ घेरल जा कय ॥३॥

कटक बिलोकि बिकट भट नाना । भागल जच्छ बचा निज प्राना ॥४॥
बुलि भरि नगर दसानन देखल । गेल सोच अतिसय सुख लेखल ॥५॥
सुंदर सहज अगम अनुमानी । कयल तहाँ रावन रजधानी ॥६॥
जे जहि जोग बाँटि गृह देलक । सुखी सकल निसिचर केँ केलक ॥७॥
एक बेरि धनपति पर धाओल । पुष्पक जान जीति कय लाओल ॥८॥

दोहा—कौतुक सौँ कैलास पुनि, लेलक जाय उठाय ।
मानु तौलि निज बाहु बल, चलल बहुत हरखाय ॥१७९॥

सुख संपति सुत सेन सहाये । जय प्रताप बल बुद्धि उपाये ॥१॥
बढ़ल जाय सब दिन दिन तहिना । बढ़इछ लोभ लाभ सौँ जहिना ॥२॥
कुंभकरन भ्राता बलवाने । भट नहि जनमल जकर समाने ॥३॥
कर मद पान सुतय षटमासे । जगइत होइछ तिहुपुर त्रासे ॥४॥
जौँ दिन प्रति ई करतअहारे । चौपट होयत सपदि संसारे ॥५॥
जाय न कहल येहन रनधीरे । तकरे सन अगनित बलबीरे ॥६॥
छल घननाद जेठ सुत तकरा । भट मे प्रथम गनय जग जकरा ॥७॥
जकर सम्मुख क्यो टिकय न रन मे । भगदड़ मचय सरग छन छन मे ॥८॥

दोहा—कुमुख अकंपन कुलिस रद, धूमकेतु अतिकाय ।
एक एक जग जीति सक, येहने सुभट निकाय ॥१८०॥

काभरूप जानय सब माया । सपनहुँ जकरा धरम न दाया ॥१॥
दसमुख बैसि सभा एक बेरी । ताकल निज परिबारक ढेरी ॥२॥
सुत समूह जन परिजन नाती । गनल न जाय निसाचर जाती ॥३॥
सेन बिलोकि सहज अभिमानी । बाजल वचन क्रोध मद सानी ॥४॥
सुनह सकल रजनीचर जूथे । हमर सत्रु अछि बिबुध बरूथे ॥५॥
से न करय रन सनमुख लागी । देखि सबल रिपु जाइछ भागी ॥६॥
तनिकर मरन एक बिधि एहे । सुनू बुझाय कहै छी सेहे ॥७॥
द्विज भोजन मख होम सराधा । सबतरि जाय करह तौँ बाधा ॥८॥

दोहा--छुधाहीन बलहीन सुर, झुकता लगले धाय।
मारब की छाड़ब तखन, भल रूपेँ अपनाय ॥१८१॥

मेघनाद केँ फेर बजौलक । सिख देलक बल बैर बढ़ौलक ॥ १॥
जे सुर समर धीर बलवाने । जकरा लड़बा केर अभिमाने ॥ २॥
आबह बान्हि रनहि जिति बेटा । उठि सुत लेल सिर पितुबच सेटा ॥ ३॥
येहि बिधि सब केँ आज्ञा देलक । अपनो चलल गदा कर लेलक ॥ ४॥
दसमुख चलइत डोलय अवनी । गरजति गरभ स्रवय सुर रमनी ॥ ५॥
सुनि अबैछ क्रोधित दसकंधर । सुर गन गहल मेरुगिरि कंदर ॥ ६॥
सुभग लोक दिगपालक जे सब । पौल सून दसकंधर से सब ॥ ७॥
पुनि पुनि सिंहनाद कय भारी । दैत गारि सुर गनहिँ प्रचारी ॥ ८॥
रन मद मत्त फिरति जग धावय । तकितहुँ कतहु न प्रतिभट पावय ॥ ९॥
रबि ससि पवन बरुन धनधारी । अगिनि काल जम जत अधिकारी ॥१०॥
किन्नर सिद्ध नाग नर देबा । सब सौँ हठि खल लै छल ढेबा ॥११॥
ब्रह्मसृष्टि जहँ धरि तन धारी । दसमुख बसबर्ती नर नारी ॥१२॥
आज्ञा पालय सब भयभीते । नमय आबि नित चरन बिनीते ॥१३॥

दोहा--भुज बल जगभरि कयल बस, बाँचल क्यो न स्वतंत्र।
मंडलीक मनि रावने, राज करय निज मंत्र ॥
देव जच्छ गंधर्व नर, किन्नर नाग कुमारि।
जीति बरल निज बाहु बल, बहु सुंदरि बर नारि ॥१८२॥

इन्द्रजीत सौँ जे किछु भाखल । से सब जनि पहिनहि कय राखल ॥१॥
पहिनहु जकरा आज्ञा देलक । तकर चरित्र सुनू जे केलक ॥२॥
देखइत भीम रूप सब पापी । निसिचर निकर देब परितापी ॥३॥
करय उपद्रव असुर निकाया । नाना रूप धरय कय माया ॥४॥
हो जहि भाँति धरम निरमूले । से सब करय वेद प्रतिकूले ॥५॥
जहि जहि देस धेनु द्विज पाबय । नगर ग्राम पुर आगि लगाबय ॥६॥

सुर गुरु द्विज ककरो नहि मानय । सुभ आचरन कतहु नहि ठानय ॥७॥
नहि हरि भगति जज्ञ तप ज्ञाने । सपनहु सुनी न वेद पुराने ॥८॥

छंद--जप जोग बिरागे तप मख भागे श्रवन सुनति दससीसे ।
अपनहि उठि धाबय रहय न पाबय धय सब घालय खीसे ॥
अति भ्रष्ट अचारे भेल संसारे धरम सुनी नहि काने ।
तकरा बहु त्रासय देस निकासय जे कह वेद पुराने ॥

सोरठा—कहल न जाय अनीति, घोर निसाचर जे करय ।
हिंसा पर अति प्रीति, तकरा पापक कोन मिति ॥१८३॥

मास पारायण, विश्राम--६

बढ़ि गेल बहु खल चोर जुआरी । जे लंपट परधन परनारी ॥१॥
मानय मातु पिता नहि देबा । साधु लोकनि सौँ करबय सेबा ॥२॥
येहन आचरन जकर भवानी । से बूझू निसिचर सम प्रानी ॥३॥
धरमक अतिसय ग्लानि निहारी । भेली धरा भयाकुल भारी ॥४॥
गिरि सरि सिंधु भार नहि मोही । तते जतेक एक पर द्रोही ॥५॥
सकल धरम देखथि बिपरीते । कहि न सकथि रावन भयभीते ॥६॥
ई बिचारि गो रूपा भेली । जहँ सुर मुनि गन तहँ चलि गेली ॥७॥
कानि कानि संताप सुनौलनि । किनकहु सौँ किछु मदति न पौलनि ॥८॥

छंद--सुर मुनि गंधर्वे मिलिकय सर्वे गेला बिरंचिक लोके ।
संग गो तनुधारी भूमि बेचारी परम बिकल भय सोके ॥
ब्रह्मा सब जानल मन अनुमानल मम बस किछु न उपाये ।
जनिकर अहँ दासी से अविनासी हमर अहाँक सहाये ॥

सोरठा--धरनि धीर धय ध्यान, करु हरि चरनक बिधि कहल ।
से सब जन दुख जान, प्रभु हरता दारुन बिपति ॥१८४॥

बैसल सुर सब करथि बिचारे । प्रभु मिलता कहँ करी पुकारे ॥१॥
पुर बैकुंठ जाय क्यो कहथी । क्यो कह छीरसिंधु प्रभु रहथी ॥२॥
जेँहन जनिक हिय भगति पिरीती । प्रभु तहँ प्रगट हुनक से रीती ॥३॥
ताहि समाज गिरिजा हम रहलहुँ । अवसर पाबि बचन येक कहलहुँ ॥४॥
हरि व्यापक सर्वत्र समाने । प्रेमेँ प्रगटथि से मोहि भाने ॥५॥
देस काल दिसि बिदिसि कतय से । कहु कहु प्रभु नहि रहथि जतय से ॥६॥
अग जगमय सब रहित बिरागी । प्रगटथि प्रभु प्रेमहिँ जनि आगी ॥७॥
हमर बचन सबहुक मन मानल । साधु साधु कय ब्रह्म बखानल ॥८॥

दोहा—सुनि बिरंचि मन हरष तन, पुलक नयन बह नीर ।
हाथ जोरि अस्तुति करथि, सावधान मति धीर ॥१८५॥

छंद—जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रनतपाल भगवंते ।
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिंधुसुता प्रिय कंते ॥
पालन सुर धरनी अदभुत करनी क्यो जन मरम न जाने ।
से सहज कृपाले दीन दयाले करथु कृपा भगवाने ॥

जय जय अविनासी सब घट बासी व्यापक परमानंदे ।
अविगत गोतीते चरित पुनीते माया रहित मुकुंदे ॥
जहि लागि बिरागी अति अनुरागी बिगत मोह मुनि बृंदे ।
निसि बासर ध्यावथि गुन गन गावथि जयति सच्चिदानंदे ॥

जे सृष्टि रचाओल त्रिविध बनाओल आन सहाय न संगे ।
से करथु अघारी हमर पुछारी पूजा भगति न ढंगे ॥
जे भव भय भंजन मुनि मन रंजन गंजन बिपति बरूथे ।
मन बच क्रम बानी छाड़ि सयानी सरन सकल सुर जूथे ॥

सारद श्रुति सेषे ऋषय असेषे जनिका क्यो नहि जाने ।
जहि दीने भावय श्रुति गुन गावय द्रवथु से श्री भगवाने ॥
भव बारिधि मंदर सब बिधि सुंदर गुन मंदिर सुख पुंजे ।
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमथि नाथ पदकंजे ॥

दोहा—जानि सभय सुर भूमि सुनि, बचन समेत सनेह ।
भेल गिरा गंभीर नभ, हरन सोक संदेह ॥१८६॥

जुनि डेराउ मुनि सिद्ध सुरेसे । अहिँ सब हित धरबे नर वेसे ॥१॥
अंस समेत मनुज अवतारे । लेब दिबाकर बंस उदारे ॥२॥
कसिपु अदिति तप कयल महाने । तनिका पुरुब देलहुँ नरदाने ॥३॥
से दसरथ कौसल्या रूपे । कोसलपुरी प्रगट नर भूपे ॥४॥
जाय तनिक घर लेब अवतारू । रघुकुल तिलक भाइ हम चारू ॥५॥
नारद बचन सत्य सब करबे । परम सक्ति समेत अवतरबे ॥६॥
हरब सकल हम भूमिक भारे । होउ अभय सुर सकल प्रकारे ॥७॥
ब्रह्म गिरा नभ माँझ सुनायल । झट घुरला सुर हृदय जुड़ायल ॥८॥
धरनिहिँ ब्रह्मा तखन बुझाओल । अभय भेली भरोस जिय पाओल ॥९॥

दोहा—गेला अपना लोक विधि, सुर गन यैह सिखाय ।
महि धय धय बानरक तन, हरिपद सेबू जाय ॥१८७॥

गेला सुर सब निज निज धामे । भूमि सहित भेल मन बिस्रामे ॥१॥
जे किछु आज्ञा ब्रह्मा देलनि । देव हरपला झट से केलनि ॥२॥
बनचर देह धगल छिति आबी । अतुलित बल प्रताप सब पाबी ॥३॥
गिरि तरु नख आयुध सब बीरे । हरिक बाट ताकथि मति धीरे ॥४॥
छथि पसरल बन परबत जाकय । निज निज सुंदर कटक सजा कय ॥५॥
ई सब रुचिर चरित हम भाखल । आब सुनू जे बीचहिँ राखल ॥६॥
रघुकुल तिलक अवधपुर धामे । वेद बिदित नृप दसरथ नामे ॥७॥
धरम धुरंधर गुननिधि ज्ञानी । हृदय भगति मति सारंगपानी ॥८॥

दोहा—कौसल्यादि नारि प्रिय, सब आचरन पुनीत।
पति अनुकूल सुप्रेम दृढ़, हरि पद कमल विनीत ॥१८८॥

एक समय मन मे भूपालक। भेल गलानि हमरा नहि बालक ॥१॥
गुरु गृह गेला झट महिपाले। कयल पैर पड़ि विनय बिसाले ॥२॥
निज दुख सुख सब गुरुहिँ सुनौलनि। कहि बसिष्ठ बहु बिधि समुझौलनि ॥३॥
धीरज धरु होयत सुत चारी। त्रिभुवन विदित भगत भय हारी ॥४॥
शृंगी रिषिहिँ बसिष्ठ बजाओल। पुत्रकाम सुभ जज्ञ कराओल ॥५॥
भगति सहित मुनि आहुति देले। अगिनि प्रगट चरु कर लय भेले ॥६॥
जे बसिष्ठ मन सोचल काजे। सिद्ध भेल नृप से तोहि आजे ॥७॥
ई हवि बाँटि दियनु नृप जा कय। जथा जोग जे भाग बना कय ॥८॥

दोहा—तखन भेल पावक अदृस, सकल सभा समुझाय।
मगन परम आनंद नृप, हरष न हृदय समाय ॥१८९॥

तखन भूप प्रिय नारि बजेलनि। कौसल्यादि तहाँ चलि एलनि ॥१॥
अर्ध भाग कौसल्यहिँ देलनि। सेष भाग कें आधा केलनि ॥२॥
एक भाग कैकइ कें देलनि। सेषहिँ उभय भाग पुनि केलनि ॥३॥
कौसल्या कैकइ धय हाथे। देल सुमित्रहिँ आनँद साथे ॥४॥
येहि बिधि गरभवती सब नारी। भेली हिय हरषित सुख भारी ॥५॥
हरि गरभहिँ अयलाह जखन सौँ। सुख संपति जग भरल तखन सौँ ॥६॥
मंदिर मे राजथि सब रानी। सोभा सील तेज कें खानी ॥७॥
किछु दिन सुख समेत बिति गेले। प्रभु प्रगटथि से अवसर भेले ॥८॥

दोहा—जोग लगन ग्रह वार तिथि, सबटा भेल अनुकूल।
सकल चराचर हरष जुत, राम जनम सुखमूल ॥१९०॥

नवमी तिथि मधुमास पुनीते। सुक्ल पच्छ अभिजित हरिप्रीते ॥१॥
मध्य दिवस अति सीत न घामे। पावन काल लोक बिस्रामे ॥२॥
सुरभि सुसीत वायु बह मंदे। संत मुदित मन सुर आनंदे ॥३॥

बन कुसुमित गिरिगन मनिआरे । स्रवय सकल सरितामृत धारे ॥४॥
से अवसर जानल विधि जखने । साजि जान सुर चलला तखने ॥५॥
बिमल गगन संकुल सुर जूथे । गाबथि गुन गंधर्ब बरूथे ॥६॥
बरखाबथि फुल अंजलि साजी । रहल धमाधम दुंदुभि बाजी ॥७॥
असतुति करथि नाग मुनि देबा । बहु विधि लाबथि निज निज सेबा ॥८॥

दोहा—बिनती कय कय सुर सकल, गेला निज निज धाम ।
जगनिबास प्रभु प्रगटला, अखिल लोक बिस्राम ॥१६१॥

छंद—भेल' प्रगट कृपाले दीनदयाले कौसल्या हितकारी ।
हरषित महतारी मुनिमनहारी अदभुत रूप बिचारी ॥
लोचन अभिरामे तन घनस्यामे निज आयुध भुजचारी ।
भूषन बनमाले नयन बिसाले सोभासिंधु खरारी ॥
कह जोरि कर दूनू कोन बिधि गूनू असतुति करब अनंते ।
माया गुन ज्ञानातीत अमाना वेद पुरान भनंते ॥
करुना सुखसागर सब गुन आगर जहि गाबथि श्रुति संते ।
से मम हित लागी जन अनुरागी भेला प्रगट श्रीकंते ॥
ब्रह्मांड निकाया निरमित माया रोम रोम प्रति वेद कहै ।
मम उर से बासी ई उपहासी सुनति धीर मति थिर न रहै ॥
उपजल जब ज्ञाने हस भगवाने चरित बहुत बिधि चहथि करै ।
मधुकथा सुनाओल मातु बुझाओल जहि प्रकार सुत प्रेम भरै ॥
मति फिरइत माता बजली ताता तजू आब ई रूपे ।
करियौ सिसु लीला अति प्रिय सीला ई सुख परम अनूपे ॥
सुनि बचन सुजाने लगला कानै बनि बालक सुरभूपे ।
ई चरित जे गाबथि हरि पद पाबथि से न परथि भव कूपे ॥

दोहा—विप्र धेनु सुर संत हित, लेल मनुज अवतार।
निज इच्छा निरमित तनु, माया गुन गो पार ॥१९२॥

सुनि सिसु रुदन परम प्रिय बानी। संभ्रम चलि ऐली सब रानी ॥१॥
हरषित जहँ तहँ धायलि दासी। आनँद मगन सकल पुरबासी ॥२॥
दसरथ पुत्र जनम सुनि काने। ब्रह्मानंद मगन भेल भाने ॥३॥
परम प्रेम मन पुलक सरीरे। उठय चाह करइत मति धीरे ॥४॥
सुभ हो सुनइत जनिकर नामे। से प्रभु ऐला हमरा धामे ॥५॥
परमानंद पूर मन राजा। कहल बजाय बजाबह बाजा ॥६॥
गुरु बसिष्ठ कें गेल हँकारे। द्विज गन सङ ऐला नृप द्वारे ॥७॥
अनुपम बालक देखय धाओल। रूप रासि गुन अंत न पाओल ॥८॥

दोहा—कय नंदीमुख श्राद्ध पुनि, जातकर्म कय लेल।
कनक धेनु मनि ओ बसन, भूप बिप्र कें देल ॥१९३॥

पुर तोरन ध्वज केतु लगाओल। हो न कहल जहि भाँति सजाओल ॥१॥
नभ सौं सुमन बृष्टि हो भारी। ब्रह्मानंद मगन नर नारी ॥२॥
नारि बृंद बहु सहज सिँगारे। उठि झट पहुँचलि राज दुआरे ॥३॥
कनक कलस मंगल भरि थारे। गवइत पैसथि भूप दुआरे ॥४॥
कय आरती निछाउरि करथी। बेर बेर सिसु पद पर पड़थी ॥५॥
मागध सूत बंदिगन गायक। पावन गुन गावथि रघुनायक ॥६॥
सरबस दान सकल जन कैलनि। जे पौलनि सेहो नहि धैलनि ॥७॥
मृग मद चंदन कुंकुम कीचे। गेल पसरि सब बीथिक बीचे ॥८॥

दोहा—गृह गृह बाज बधाइ सुभ, परगट सुखमा कंद।
पुर जहँ तहँ नर नारि गन, भेल परम आनंद ॥१९४॥

केकइ तथा सुमित्रा नारी। कयल प्रसव पुनि सुत मनहारी ॥१॥
से सुख संपति समय समाजे। कहि न सकथि सारद अहिराजे ॥२॥
अवधपुरी सोभय येहि भाँती। प्रभु सौं मिलय ऐल जनि राती ॥३॥

देखि भानु से मन सकुचेली । संध्या बनि तैयो रहि गेली ॥४॥
अगर धूप बहु जनि तम जाले । उड़ अबीर किरनावलि लाले ॥५॥
मंदिर मनि गन तारक पाँती । नृप गृह कलस चंद्रमा भाती ॥६॥
भवन वेद धुनि मधुर उचारे । जनि खग मुखर समय अनुसारे ॥७॥
कौतुक लखि दिनपति भुलि गेले । बितइत मास लछित नहि भेले ॥८॥

दोहा—भेल मास दिवसक दिवस, क्यो नहि मरम बुझैछ ।
रथ समेत रवि अटकला, निसा कोन बिधि हैछ ॥१९५॥

ककरहु रहस भेल नहि भाने । चलला सुरुज करति गुन गाने ॥१॥
देखि महोत्सव सुर मुनि नागे । चलला गृह बरनति निज भागे ॥२॥
कयल चोरा जे काज सुनाबी । सुनु गिरिजा तव मति दृढ़ पाबी ॥३॥
कागभुसुंडिक सङ हम कयने । क्यो नहि जान मनुज तन धयने ॥४॥
परमानंद प्रेम सुख फूलल । वीथी घुमी मगन मन भूलल ॥५॥
ई सुभ चरित जानि सक सेहे । कृपा राम कँर पाबय जेहे ॥६॥
तहि अवसर जे जहि बिधि आयल । देल भूप जकरा जे भायल ॥७॥
गज रथ तुरग हेम गो हीरो । देल भूप नाना बिधि चीरो ॥८॥

दोहा—सबहुक मन संतोष अति, जहँ तहँ देथि असीस ।
चिरजीबू चारू तनय, तुलसीदासक ईस ॥१९६॥

बितल कतोक दिवस यँहि भाँती । नहि बुझाय बितइत दिन राती ॥१॥
नामकरन कँर अवसर जानी । बजा पठौलनि नृप मुनि ज्ञानी ॥२॥
कय पूजा भूपति ई भाखल । धरू नाम मुनि जे गुनि राखल ॥३॥
दिनकर नाम अनेक अनूपे । हम नृप कहब स्वमति अनुरूपे ॥४॥
जे आनंद सिंधु सुख रासी । सीकर सौँ त्रैलोक सुपासी ॥५॥
से सुखधाम राम ई नामे । अखिल लोक दायक बिस्रामे ॥६॥
बिस्व भरन पोषन कर जेहे । भरत नाम सौँ जानिय सेहे ॥७॥
जनिका सुमिरन सौँ रिपु नासे । नाम सत्रुहन वेद प्रकासे ॥८॥

दोहा—लच्छन धाम राम प्रिय, सकल जगत आधार ।
गुरु बसिष्ठ राखल तनिक, लछुमन नाम उदार ॥१९७॥

धयल नाम गुरु हृदय बिचारी । वेद तत्त्व नृप तव सुत चारी ॥१॥
सिवक प्रान मुनि धन जन सरबस । मानल सुख से बाल केलि रस ॥२॥
नेंनपन सौं निज हित पति जानल । लछुमन राम चरन रति मानल ॥३॥
भरत सत्रुहन दुहु भल रीती । प्रभु सेबक सन बढ़बथि प्रीती ॥४॥
स्याम गोर सुंदर दुहु जोरी । निरखथि छबि जननी तृन तोरी ॥५॥
चारू सील रूप गुन धामे । तदपि अधिक सुख सागर रामे ॥६॥
हृदय अनुग्रह इंदु प्रकासे । सूचय किरन मनोहर हासे ॥७॥
कौखन कोरा कौखन पलना । माय दुलारथि कहि प्रिय ललना ॥८॥

दोहा—ब्यापक ब्रह्म निरंजन, निरगुन विगत बिनोद ।
प्रेम भगति बस सैह अज, कौसल्या कर गोद ॥१९८॥

काम कोटि छबि स्याम सरीरे । नील कंज वारिद गंभीरे ॥ १॥
अरुन चरन पंकज नख जोती । कमलक दल बैसल जनि मोती ॥ २॥
रेख कुलिस ध्वज अंकुस सोहय । नूपुर धुनि सुनि मुनि मन मोहय ॥ ३॥
कटि किंकिनि पुनि उदर तिरेखल । नाभि गँभीर जान जे देखल ॥ ४॥
भुज बिसाल बहु भूपन धारी । हिय हरिनख सोभा अति भारी ॥ ५॥
उर मनिहार पदिक सह सोहय । बिप्र चरन देखितहि मन लोभय ॥ ६॥
कंबुकंठ अति चिबुक बिराजय । आनन अमित मदन छबि छाजय ॥ ७॥
दुइ दुइ दसन अधर सुभ रकते । नासा तिलक बरनि के सकते ॥ ८॥
सुंदर श्रवन सुचारु कपोले । अति प्रिय लाग मधुर अधबोले ॥ ९॥
चिक्कन कुंचित गरभज केसे । माय सम्हारल सीटि सुनेसे ॥१०॥
पिअर अँगरखा तन पहिराओल । चलब ठेहुनिया मोहि अति भाओल ॥११॥
रूप न श्रुति सेषो कहि सकथी । बुझथि सैह जे सपनहु लखथी ॥१२॥

दोहा—सुख संदोह मोह पर, ज्ञान गिरा गोतीत ।
परम प्रेम वस दंपतिक, कर सिसु चरित पुनीत ॥१९९॥

येहि विधि राम जगत पितु माता । कोसलपुर बासी सुखदाता ॥१॥
मानल जे रघुनाथ चरन रति । प्रगट भवानी तनिकर ई गति ॥२॥

रघुपति बिमुख जतन कय कोटी । के सकैछ भव बंधन खोटी ॥३॥
जीव चराचर बस जे राखय । से माया प्रभु सौं डरि भाखय ॥४॥
भृकुटि बिलास नचाबथि तकरा । एहन प्रभु तजि कहु भजु ककरा ॥५॥
त्यागि चतुरपन मन बच काया । भजति कृपा करता रघुराया ॥६॥
येहि बिधि सिसु बिनोद प्रभु केलनि । सकल नगर बासिहिँ सुख देलनि ॥७॥
लय कोरा कखनहु बहलावथि । कखनहु पलना राखि झुलाबथि ॥८॥

दोहा—कौसल्या प्रेमेँ मगन, निसि दिन बितति न जान ।
माता पुत्र सिनेह बस, बाल चरित कर गान ॥२००॥

एक समय नहबा महतारी । कय सिँगार पलना देल पारी ॥१॥
निज कुल इष्टदेव भगवाने । पूजा हेतु कयल असनाने ॥२॥
कय पूजा नैबेद चढ़ाओल । गेली जहँ छल पाक बनाओल ॥३॥
माय बहुरि तहिँ ठाँ जा देखलि । करइत भोजन सुत केँ पेखलि ॥४॥
भय बिस्मित जननी गेलि मन गुनि । सुत छल सुतल निहारल पुनि पुनि ॥५॥
फिरि पुनि ततहि निहारल पूते । मन अधीर उर कंप बहूते ॥६॥
येतय ओतय दुइ देखल बाले । मति भ्रम मम कि आन किछु हाले ॥७॥
देखि राम जननी अकुलाइत । हँसि देलनि प्रभु मृदु मुसुकाइत ॥८॥

दोहा—मायहिँ देल देखाय निज, अदभुत रूप अखंड ।
लागल छल प्रति रोम मे, कोटि कोटि ब्रह्मंड ॥२०१॥

अगनित रवि ससि सिव चतुरानन । बहु गिरि सरित सिंधु महि कानन ॥१॥
काल सोभाव करम गुन ज्ञाने । सेहो लखल जे सुनल न काने ॥२॥
माया प्रबल देखल सब रीती । ठाढ़ि जोरि कर बहुत सभीती ॥३॥
लखल जीव नचबय से जकरा । देखल भगति से छोड़बय तकरा ॥४॥
तन पुलकित किछु बाजि न पाओल । आँखि मूनि पद माथ नमाओल ॥५॥
बिसमयवंति देखि महतारी । भेला पुनि सिसु रूप खरारी ॥६॥
असतुति हो न कयल भय भेले । जगतपिता हम सुत बुझि लेले ॥७॥
हरि बहु बिधि समुझौलनि माता । कहब न कतहु माय ई बाता ॥८॥

दोहा—कौसल्या कर जोरि दुहु, बिनय करथि बहु बेरि ।
प्रभु हमरा माया न तव, व्यापय कहियो फेरि ॥२०२॥

बाल चरित हरि बहु विधि केलनि । दास गनहिँ अति आनँद देलनि ॥१॥
बितल कतोक दिबस सब भ्राता । बढ़ि भेला परिजन सुखदाता ॥२॥
मुनि बसिष्ठ मुंडन बिधि केलनि । दछिना बहु ब्राह्मन सब पेलनि ॥३॥
परम मनोहर चरित अपारे । करइत फिर चारू सुकुमारे ॥४॥
मन क्रम बचन अगोचर जेहे । दसरथ अजिर बिचर प्रभु सेहे ॥५॥
खाइत खन नृप जखन बजाबथि । बाल वृन्द केँ तजि नहि आबथि ॥६॥
बजबय जाथि कौसिला जखनहिँ । दूर पड़ाथि ठुमुकि प्रभु तखनहिँ ॥७॥
निगम नेति सिव अंत न पावथि । तनिका धरय जननि हठि धाबथि ॥८॥
धूलि भरल तन जखनहिँ आबथि । भूपति बिहुँसि कोर बैसाबथि ॥९॥

दोहा—चपल चित्त भोजन करथि, यम्हर ओम्हर गओँ पाय ।
भागि चलथि किलकैत मुख, दधि ओदन लपटाय ॥२०३॥

सहज सरल सिसु चरित विसेषे । गाओल श्रुति सिव सारद सेषे ॥१॥
हिनका मे मन रतल न जकरा । मानू ठकल विधाता तकरा ॥२॥
भेला कुमर जखन सब भ्राता । जनेउ देल हुनि गुरु पितु माता ॥३॥
रघुपति पढ़य गुरुक गृह गेला । झट सब विद्या पबइत भेला ॥४॥
जनिकर सहज स्वास श्रुति चारी । से हरि पढ़ ई कौतुक भारी ॥५॥
विद्या बिनय निपुन गुन सीला । खेल खेलाथि सकल नृप लीला ॥६॥
करतल बान धनुष अति सोहय । देखइत रूप चराचर मोहय ॥७॥
बिहरथि जहि पथ भ्राता चारी । थकित होथि लखि सब नर नारी ॥८॥

दोहा—कोसल पुरवासी नर, नारि बृद्ध ओ बाल ।
बढ़ि प्रानहु सँ प्रिय लगथि, सब केँ राम कृपाल ॥२०४॥

बंधु सखा सब संग बजा कय । बन मृगया नित खेलथि जा कय ॥१॥
पावन मृग मारथि जिय जानी । दिन प्रति नृपहिँ देखाबथि आनी ॥२॥

जे मृग राम बान केर मारल । से तन तजि सुर लोक सिधारल ॥३॥
अनुज सखा सङ भोजन करथी । मातु पिता आज्ञा अनुसरथी ॥४॥
जहि विधि सुखी होथि पुर लोगे । करथि कृपानिधि सैह सँजोगे ॥५॥
मन लगाय सुन वेद पुराने । बुझा अनुज कें कहथि प्रमाने ॥६॥
प्रातकाल उठि कय रघुनाथे । मातु पिता गुरु नमबथि माथे ॥७॥
आज्ञा माँगि करथि पुर काजा । देखि चरित हरषथि मन राजा ॥८॥

दोहा—ब्यापक अकल अनीह अज, निरगुन नाम न रूप ।
भगत हेतु बहु बिधि करथि, चरित पवित्र अनूप ॥२०५॥

कयलहुँ ई सब चरित बखाने । आगुक कथा सुनू दय ध्याने ॥१॥
बिस्वामित्र महामुनि ज्ञानी । बसथि बिपिन सुभ आश्रम जानी ॥२॥
जहँ जप जज्ञ जोग मुनि करथी । अति मारिच सुबाहु सौं डरथी ॥३॥
देखइत जज्ञ निसाचर धाबय । करय उपद्रब मुनि दुख पाबय ॥४॥
गाधितनय मन चिंता दुस्तर । हरि बिनु मरत न पापी निसिचर ॥५॥
तखन कयल मुनि हृदय बिचारे । हरय प्रगटला हरि भूभारे ॥६॥
येहु लाथें पद देखय जायब । कय बिनती दुहु भ्रातहिँ लायब ॥७॥
ज्ञान बिराग सकल गुन अयने । से प्रभु हम देखब भरि नयने ॥८॥

दोहा—करति मनोरथ बहुत बिधि, जाइत लगल न देर ।
सरयू मज्जन कय गेला, नृप दरबार सबेर ॥२०६॥

मुनिक आगमन सुनि कय राजा । मिलय गेला लय बिप्र समाजा ॥ १॥
कय दंडवत मुनिहिँ सनमानी । निज आसन बैसौलनि आनी ॥ २॥
पद पखारि पूजल सविधाने । मम सम धन्य आइ नहि आने ॥ ३॥
विविध भाँति भोजन करनाओल । मुनिवर हृदय हरष अति पाओल ॥ ४॥
चारू सुत मुनि चरन लगाओल । रामहिँ लखि मुनि तन बिसराओल ॥ ५॥
भेला मगन लखति मुख सोभे । जेना चकोर पुर्न ससि लोभे ॥ ६॥
*सहरष तखन कहल नृप बयने । येहन कृपा मुनि छलहुँ न कयने ॥ ७॥
कहु मुनि निज आगमन निदेसे । पूर्त्ति करी हम सत्वर से से ॥ ८॥

असुर समूह सताबय मोही । हम जाचय अयलहुँ नृप तोही ॥ ९॥
सानुज देल जाय रघुनाथे । निसिचर बध सौँ हैब सनाथे ॥१०॥

दोहा—हरख सहित नृप दीअ मोहि, तजू मोह अज्ञान ।
अहँ केँ सुजस ओ धरम पुनि, हिनकर अति कल्यान ॥२०७॥

सुनि अति अप्रिय बचन तनीके । हृदय कंप मुख दुति भेल फीके ॥ १॥
चारिमपन पाओल सुत चारी । बिप्र बचन नहि कहल बिचारी ॥ २॥
माँगू भूमि धेनु धन कोसे । सरबस देब आइ सहरोसे ॥ ३॥
सब सौँ बढ़ि प्रिय देह पराने । मुनि से तुरित करब बरु दाने ॥ ४॥
सब सुत प्रिय मोहि प्रान समाने । दैत न राम बनय भगवाने ॥ ५॥
कहाँ निसाचर घोर कठोरे । कहँ सुंदर सुत परम किसोरे ॥ ६॥
सुनि नृप गिरा प्रेम रस सानल । हृदय हरष ज्ञानी मुनि मानल ॥ ७॥
बहु बिधि तखन बसिष्ठ बुझाओल । नृपक सकल संदेह नसाओल ॥ ८॥
अति आदर दुहु सुतहिँ बजाओल । हृदय लगा बहु भाँति सिखाओल ॥ ९॥
नाथ दुनू ई सुत मम प्राने । थिकियन्हि अहीँ पिता नहि आने ॥१०॥

दोहा—सौँपल नृप रिषि केँ तनय, दय बहु भाँति असीष ।
जननी भवन गेलाह प्रभु, चलला नमि पद सीस ॥

सोरठा—पुरुष सिंह दुहु बीर, चलल हरषि मुनि भय हरन ।
कृपासिंधु मति धीर, अखिल बिस्व कारन करन ॥२०८॥

अरुन नयन उर बाहु बिसाले । नील जलद तन स्याम तमाले ॥१॥
कटि पट पीत कसल बर भाथा । रुचिर चाप सायक दुहु हाथा ॥२॥
गौर स्याम दुहु सुंदर सब बिधि । पौलनि बिस्वामित्र महानिधि ॥३॥
प्रभु ब्रह्मन्यदेव हम जानल । जैँ तजि पितहिँ हमर हित ठानल ॥४॥
बाटहिँ मुनि ताड़का देखाओल । सुनितहिँ से क्रोधित भय धाओल ॥५॥
एकहि सरेँ प्रान हरि लेलनि । दीन जानि तहि निज पद देलनि ॥६॥

रिषि निज नाथहिँ हिय चिन्हि लेलनि । विद्यानिधि केँ विद्या देलनि ॥७॥
जहि सौँ लाग न छुधा पियासे । अतुलित बल तन तेज प्रकासे ॥८॥

दोहा—आयुध सकल समर्पि कय, प्रभु केँ आश्रम आनि ।
कंद मूल फल प्रिय असन, देल भगत हित जानि ॥२०९॥

प्रात कहल मुनि सौँ रघुराजे । निरभय जज्ञ करू गय आजे ॥ १॥
होम करय लगला मुनिगन इत । उत प्रभु लगला मख रच्छन हित ॥ २॥
से क्रोधी मारिच मुनि पाओल । लय सहाय मुनिद्रोही धाओल ॥ ३॥
बिनु फर बान राम तहि मारल । सिंधु पार सत जोजन टारल ॥ ४॥
पावक सर सुबाहु पुनि मारल । अनुज निसाचर कटक सँहारल ॥ ५॥
असुर मारि भय द्विजक हँटैलनि । सकल देव मुनि विनती कैलनि ॥ ६॥
ततय कतोक दिवस रघुराया । रहि कयलनि द्विजगन पर दाया ॥ ७॥
विप्र भगत हित कथा पुराने । कहथि जदपि प्रभु जान प्रमाने ॥ ८॥
पुनि मुनि सादर कहल बुझा कय । चरित एक प्रभु देखिय जा कय ॥ ९॥
धनुष जज्ञ सुनि रघुकुल नाथे । हरषित चलला मुनिवर साथे ॥१०॥
पथ आश्रम देखल येक ठामे । जीव जंतु खग मृगक न नामे ॥११॥
पूछल मुनिहिँ सिला प्रभु देखी । सकल कथा मुनि कहल बिसेखी ॥१२॥

दोहा—गौतम नारी श्राप बस, उपल देह धय धीर ।
चाहथि पद पंकजक रज, कृपा करू रघुवीर ॥२१०॥

छंद—परसति पद पावन सोक नसावन परगट भेली तप पुंजे ।
देखइत रघुनायक जन सुखदायक जोरि ठाढ़ि छथि कर कंजे ॥
अति प्रेम अधीरे पुलक सरीरे आबय नहि किछु मुख बयने ।
अतिसय बड़ भागिनि पद अनुरागिनि ढारथि नोर जुगल नयने ॥

धैरज मन आनल प्रभु केँ जानल पौल भगति रघुपति दाया ।
कह बचन पुनीते अस्तुति गीते ज्ञान गम्य जय रघुराया ॥

हम नारि अपावन प्रभु जग पावन रावन रिपु जन दुख हरने ।
राजीव बिलोचन भव भय मोचन पाहि पाहि ऐलहुँ सरने ॥

मुनि श्राप जे देलनि अति भल केलनि परम अनुग्रह हम मानी ।
देखल भरि लोचन हरि भव मोचन लाभ बुझथि संकर दानी ॥
विनती प्रभु मोरे मम मति भोरे नाथ न माँगी बर आने ।
पद कमल परागे रस अनुरागे मम मन मधुप करय पाने ॥

जहि पद सुर सरिता परम पुनीता प्रगट भेली सिव सिर लैले ।
सेहे पद पंकज जहि पूजथि अज हरि कृपाल मम सिर धैले ॥
येहि भाँति बेचारी गौतम नारी चलली हरि पद रज सिर धै ।
जे मन अति भाओल से बर पाओल गेलि पति लोक मोद उर लै ॥

दोहा—दीनबंधु प्रभु येहन हरि, कारन रहित कृपाल ।
तुलसिदास सठ ताहि भजु, छाड़ि कपट जंजाल ॥२११॥

मास पारायण, विश्राम—७

चलला राम लखन मुनि संगे । गेला जहाँ जग पावनि गंगे ॥१॥
गाधि तनय सब कहलनि बरनी । जहि बिधि सुरसरि अयली धरनी ॥२॥
रिषि समेत प्रभु कयल सनाने । महिसुर पाओल बहु बिधि दाने ॥३॥
मुनि सहाय हरषित चलि देलनि । जनक नगर झट लगिचा गेलनि ॥४॥
पुरक रम्यता राम निहारी । भेला सानुज हरषित भारी ॥५॥
बापी कूप सरित सर नाना । सलिल सुधा सम मनि सोपाना ॥६॥
गुंजय मंजु मत्त रस भृंगे । कूजय कल बहु बरन विहंगे ॥७॥
बरन बरन विकसल बनजाता । त्रिबिध समीर सदा सुखदाता ॥८॥

दोहा—सुमन बाटिका बाग बन, बिपुल बिहंग निवास ।
फरल फुलल पल्लव भरल, पुरक चतुर दिस भास ॥२१२॥

बनय न बरनति नगरक सोभे । मन जहँ जाय ततहि रह लोभे ॥१॥
चारु बजार बिचित्र अमारी । जनि विधि निज कर रचल समारी ॥२॥
धनिक बनिक बर धनद समाना । बैसल सकल बस्तु लय नाना ॥३॥
सुंदर चौक गली भल सीटल । संतत रहय सुगंधेँ सीचल ॥४॥
मंगलमय सब भबन ललामे । चित्रित स्वयं कयल जनि कामे ॥५॥
पुर नर नारि सुभग सुचि संते । धरमसील ज्ञानी गुनवंते ॥६॥
अति अनूप जहँ जनक निबासे । होथि चकित सुर देखि बिलासे ॥७॥
चित्त चकित हो कोट बिलोकी । सकल भुवन छवि राखल रोकी ॥८॥

दोहा—धबल धाम मनि पुरट पट, बहु बिधि घटित सोहाय ।
सिय निबास सुंदर सदन, सोभा कहल न जाय ॥२१३॥

सुभग द्वार सब कुलिस कपाटे । भीड़ भूप नट मागध भाटे ॥१॥
बनल बिसाल बाजि गजसाले । हय गज रथ संकुल सब काले ॥२॥
सूर सचिब सेनापति नाना । सबहुक गृह नृप गृहक समाना ॥३॥
पुर बाहर सर सरित समीपे । उतरल जहँ तहँ बिपुल महीपे ॥४॥
लखि अमराई एक अनूपे । सब सुपास सब भाँति सुरूपे ॥५॥
कौसिक कहल रुचय ई थाने । रही येतय रघुबीर सुजाने ॥६॥
बेस नाथ कहि कृपानिकेते । रहला तहँ मुनि बृंद समेते ॥७॥
विस्वामित्र महामुनि आओल । समाचार मिथिलापति पाओल ॥८॥

दोहा—संग सचिब सुचि भूरि भट, भूसुर बर गुरु ज्ञाति ।
मुनिबर सौँ चलला मिलय, मुदित भूप येहि भाँति ॥२१४॥

कयल प्रनाम चरन धय माथे । आसिष देलनि मुदित मुनि नाथे ॥१॥
बंदल विप्र गनहिँ सनमानी । हरषित भूप भाग्य बड़ जानी ॥२॥
पुनि पुनि कुसल पूछि बहु रूपे । कौसिक मुनि बैसौलनि भूपे ॥३॥
तहि खन दुहु भ्राता धनुधारी । घुरि अयलाह देखि फुलबारी ॥४॥
स्याम गौर मृदु बयस किसोरे । लोचन सुखद विस्व चितचोरे ॥५॥
रघुपति अबइत उठला सब पुनि । लग हुनि बैसौलनि कौसिक मुनि ॥६॥

सुखी भेला सब लखि दुहु भ्राता । बारि बिलोचन पुलकित गाता ॥७॥
मूरति मधुर मनोहर देखी । भेला विदेह विदेह बिसेखी ॥८॥

दोहा—प्रेम मगन मन जानि नृप, कय विवेक धरि धीर ।
बजला मुनिपद सिर नमा, गदगद गिरा गँभीर ॥२१५॥

कहू नाथ सुंदर दुहु बालक । मुनि कुल तिलक कि नृप कुल पालक ॥१॥
ब्रह्म जे निगम नेति कहि ख्याते । सैह येला की धय दुइ गाते ॥२॥
सहज विराग रूप मन मोरे । थकित जेना हो चान चकोरे ॥३॥
तैँ प्रभु पुछी कहू मोहि नाथे । लखि सतभाव करू नहि लाथे ॥४॥
हिनका लखितहि अति अनुरागल । बरबस ब्रह्म सुखहिँ मन त्यागल ॥५॥
कह मुनि बिहुँसि कहल नृप नीके । बचन अहाँक न होअय अलीके ॥६॥
ई प्रिय सभक जहाँ धरि प्रानी । मन मुसुकाथि राम सुनि बानी ॥७॥
रघुकुल मनि दसरथ केर लाले । मम हित सँग कय देल नृपाले ॥८॥

दोहा—राम लखन दुहु बंधु बर, रूप सील बल धाम ।
मख रच्छल साछी जगत, जीति असुर संग्राम ॥२१६॥

कहल नृपति मुनि तव पद देखी । कहि न सकी निज पुन्य बिसेखी ॥१॥
सुंदर स्याम गौर दुहु भ्राता । आनंदहु केर आनँददाता ॥२॥
हिनकर प्रीति परसपर पावन । होअय न कहि मन भाव सोहावन ॥३॥
सुनू नाथ कह मुदित विदेहे । ब्रह्म जीव इव सहज सिनेहे ॥४॥
पुनि पुनि प्रभुहिँ चितथि नरनाहे । पुलक गात उर अधिक उछाहे ॥५॥
मुनिहिँ प्रसंसि नमा पद सीसे । लय चललाह नगर अवनीसे ॥६॥
सुंदर सदन सुखद सब काले । तहाँ बास देलनि महिपाले ॥७॥
सब बिधि सेवा पूजा केलनि । बिदा माँगि नृप गृह चलि देलनि ॥८॥

दोहा—रिपिक संग रघुवंस मनि, कय भोजन बिस्राम ।
बंधु सहित प्रभु बैसला, दिवस रहल भरि जाम ॥२१७॥

लखन हृदय लालसा बिसेखी । जाय जनकपुर आबी देखी ॥१॥
प्रभु भय पुनि मुनि सौँ सकुचाथी । प्रगट न कहथि मनहिँ मुसुकाथी ॥२॥
राम अनुज हृदयक गति पौलनि । भगत बछलता हिय हुलसौलनि ॥३॥
परम बिनीत सकुचि मुसुका कय । बजला गुरु अनुसासन पा कय ॥४॥
नाथ लखन पुर देखय चहै छथि । प्रभु संकोच न डरेँ कहै छथि ॥५॥
जौँ अहाँक अनुमति हम पाबी । नगर देखाय तुरत लय आबी ॥६॥
सुनि मुनीस कह बचन सप्रीती । किय न राम राखब अहँ नीती ॥७॥
धरम सेतु पालक अहँ ताता । प्रेम बिबस सेवक सुखदाता ॥८॥

दोहा—देखि आउ जा कय नगर, सुख निधान दुहु भाय ।
करू सफल सबहुक नयन, सुंदर बदन देखाय ॥२१८॥

मुनि पद कमल बंदि दुहु भ्राता । चलला लोक लोचन सुखदाता ॥१॥
बालक बृंद देखि अति सोभे । लागल सँग लोचन मन लोभे ॥२॥
पीत बसन परिकर कटि भाथे । चारु चाप सर सोभय हाथे ॥३॥
तनु अनुरूप सुचंदन खोरे । जुगल मनोहर स्यामल गोरे ॥४॥
केहरि कंधर बाहु बिसाले । उर अति रुचिर नाग मनि माले ॥५॥
सुभग सोन सरसीरुह लोचन । बदन मयंक ताप त्रय मोचन ॥६॥
कानहि कनक फूल छबि पाबय । चितवति मानू चित्त चोराबय ॥७॥
चितबनि चारु भृकुटि बर बाँके । तिलक रेख सोभा जनि चाँके ॥८॥

दोहा—सुंदर चौतनि सुभग सिर, कारी कुंचित केस ।
नख सिख सुंदर बंधु दुहु, सोभा सकल सुदेस ॥२१९॥

नृप सुत अयला देखय नगरे । पौल खबरि पुरबासी सगरे ॥१॥
दौड़ल सकल त्यागि घर काजे । लूटय जनि निधि रंक समाजे ॥३॥
सुभग सहज दुहु भ्राता देखी । होअय सुखी लोचन फल लेखी ॥२॥
जुबती भवन झरोखा लागलि । निरखय राम रूप अनुरागलि ॥४॥
कहथि परस्पर नेहेँ रीतल । सखि ई कोटि काम छबि जीतल ॥५॥
सुर नर असुर नाग मुनिगन मे । सोभा येहन न सुनल भुवन मे ॥६॥

विष्णु चारि भुज विधि मुख चारी । विकट वेष मुख पंच पुरारी ॥७॥
देव येहन नहि क्यो अनुमानी । जकरा सौँ सखि परतर मानी ॥८॥

दोहा—वय किसोर सुषमा सदन, स्याम गौर सुखधाम ।
अंग अंग पर निहुँछि दी, कोटि कोटि सत काम ॥२२०॥

येहन कहह सखि के तनधारी । जे न मोहय ई रूप निहारी ॥१॥
क्यो सप्रेम बजली मृदु बानी । जे सुनलहुँ से सुनह सयानी ॥२॥
ई अवधेसक जुगल किसोरे । बाल मरालक सुंदर जोरे ॥३॥
मुनि कौसिक मख रच्छाकारी । जे रन हनल निसाचर भारी ॥४॥
स्याम गात कल कंज बिलोचन । जे मारिच सुबाहु मदमोचन ॥५॥
कौसल्या सुत से सुख खानी । नाम राम धनु सायक पानी ॥६॥
गौर किसोर वेष बर धेने । रामक पाछू धनु सर लेने ॥७॥
लछुमन नाम राम लघु भ्राता । सुनु सखि तनिक सुमित्रा माता ॥८॥

दोहा—विप्र काज कय बंधु दुहु, मग मुनि बधू उधारि ।
ऐला देखय चाप मख, सुनि हरखलि सब नारि ॥२२१॥

क्यो येक कहथि राम छबि देखी । जानकि जोग यैह बर लेखी ॥१॥
जौँ सखि हिनि देखता नरनाहे । प्रन तजि हठ करताह बियाहे ॥२॥
क्यो कह हिनि भूपति पहचानल । मुनि समेत सादर सनमानल ॥३॥
सखि परंतु प्रन नृप नहि तजता । विधि बस हठि अविवेकहिँ भजता ॥४॥
क्यो कह जौँ भल होथि विधाता । सबकेँ सुनी उचित फलदाता ॥५॥
तौँ पौती बर यैह जानकी । सखि येहि मे संदेह आन की ॥६॥
जौँ विधि वस ई हो संयोगे । तौँ कृतकृत्य हैत सब लोगे ॥७॥
हमरा आरति सखि येहि बाते । कहियो ई औता येहि नाते ॥८॥

दोहा—सखि नहि तौँ हमरा सुनू, हिनकर दरसन दूरि ।
ई संघट होइछ तखन, पुन्य पुराकृत भूरि ॥२२२॥

बजली अपर कहल सखि ठीके । येहि बियाह सैँ सबहुक नीके ॥१॥
क्यो कह संकर चाप कठोरे । ई स्यामल मृदु गात किसोरे ॥२॥
सब अछि असमंजसे सयानी । ई सुनि अपर कहल मृदु बानी ॥३॥
सखि हिनका दय क्यो क्यो भाखथि । देखइत लघु प्रभाव बड़ राखथि ॥४॥
परसि जनिक पद पंकज धूरी । तरलि अहिल्या कृत अघ भूरी ॥५॥
से सिवधनु देताहे तोड़ी । ई प्रतीति भरमहु नहि छोड़ी ॥६॥
जे विरंचि सिय रचल समारी । से स्यामल बर रचल बिचारी ॥७॥
तनिक बचन सुनि सब हरषैली । येहने हो सब मृदु बतियैली ॥८॥

दोहा—हिय हरषथि बरषथि सुमन, सुमुखि सुलोचनि बृंद ।
जाथि जहाँ जहँ बंधु दुहु, तहँ तहँ परमानंद ॥२२३॥

दुहू भाय गेला पुर पूबे । जहँ धनु मख थल साजल खूबे ॥१॥
अति बिस्तार चारु गच ढारल । बिमल बेदिका रुचिर समारल ॥२॥
चहु दिसि कंचन मंच बिसाले । रचल जहाँ बैसथि महिपाले ॥३॥
तहि पाछाँ समीप चहु पासे । अपर मंच मंडली बिलासे ॥४॥
किछु उचगर सब बिधि छबि रासी । बैसथि जतय जाय पुरबासी ॥५॥
तकरे निकट बिसाल सुढंगे । बिरचल धवल धाम बहुरंगे ॥६॥
जहाँ बैसि देखथि सब नारी । जथाजोग निज कुल अनुसारी ॥७॥
पुर बालक कहि कहि मृदु बचने । सादर प्रभुहिँ देखाबथि रचने ॥८॥

दोहा—येहि लाथेँ सब प्रेम बस, परसि मनोहर गात ।
तन पुलकथि अति हरष हिय, देखि देखि दुहु भ्रात ॥२२४॥

सिसु सब राम प्रेमबस जानल । प्रीति समेत निकेत बखानल ॥१॥
बजा लेथि निज निज रुचि सेहे । जाथि भाइ दुहु सहित सिनेहे ॥२॥
राम देखावथि अनुजहिँ रचना । कहि मृदु मधुर मनोहर बचना ॥३॥
लब निमेष मे भुबन निकाया । रचथि जनिक अनुसासन माया ॥४॥
भगति हेतु से दीन दयाला । देखथि चकित धनुष मख साला ॥५॥
कौतुक लखि चलला मुनि पासे । बुझि बिलंब होइन मन त्रासे ॥६॥

त्रासेँ जनिक डरो डर पावे । सैह देखाबथि भजन प्रभावे ॥७॥
कहि मृदु मधुर मनोहर बचने । बाल बृंद फेरल हटि जतने ॥८॥

दोहा—सभय सप्रेम विनीत अति, सकुच सहित दुहु भाय ।
गुरु पद कंज नमाय सिर, बैसला अनुमति पाय ॥२२५॥

साँझ होइत मुनि आज्ञा देलनि । सब क्यो संध्याबंदन केलनि ॥१॥
कहति कथा इतिहास ललामे । रुचिर रजनि बीतल जुग यामे ॥२॥
तखन जाय सुतला मुनिनाथे । जाँतथि चरन बंधु दुहु साथे ॥३॥
जनिका चरन सरोरुह लागी । करथि विविध जप जोग विरागी ॥४॥
प्रेमक जितल बंधु दुहु सेहे । जाँतथि गुरु पद सहित सिनेहे ॥५॥
बेरि बेरि मुनि आज्ञा देलनि । तखन सयन रघुवर जा केलनि ॥६॥
लखन लगा उर चरन दबाबथि । सभय सप्रेम परम मुद पाबथि ॥७॥
पुनि पुनि प्रभु कह सूतू ताता । पड़ला धय उर पद जलजाता ॥८॥

दोहा—उठला निसि गत लखन सुनि, अरुन सिखा धुनि कान ।
गुरु सौँ पहिनहि जगतपति, जगला राम सुजान ॥२२६॥

कय सब सौच नहैला जा कय । प्रनमल मुनि केँ नित्य निभा कय ॥१॥
समय जानि गुरु अनुमति लेलन्हि । लोढ़य फूल दुहू चलि देलन्हि ॥२॥
भूप बाग बर देखल जा कय । जहँ बसंत रितु रहय लोभा कय ॥३॥
लागल बिटप मनोहर नाना । बरन बरन बर बेलि बिताना ॥४॥
फल प्रसून नव पल्लव भाबय । निज संपति सुरतरुहिँ लजावय ॥५॥
चातक कोकिल कीर चकोरे । कूजय खग नाचय कल मोरे ॥६॥
सोभय सर बागक बिच ठामे । मनि सोपान बिचित्र ललामे ॥७॥
बिमल सलिल सरसिज बहु रंगे । जल खग कूजय गुंजय भृंगे ॥८॥

दोहा—बाग तड़ाग बिलोकि प्रभु, छथि सबंधु हरखैत ।
परम रम्य आराम जे, अछि रामहिँ सुख दैत ॥२२७॥

पूछि मालिगन चिति चहु काते । लगला लोढ़य समुद फुल पाते ॥१॥
तहि अबसर तहँ सीता ऐली । गिरिजा पूजय जननि पठैली ॥२॥
संग सखी सब सुभग सयानी । गाबथि गीत मनोहर बानी ॥३॥
सर समीप गिरिजा गृह सोभय । कहल न जाय देखि मन लोभय ॥४॥
मज्जन कय सर सखिक समेते । गेली मुदित मन गौरि निकेते ॥५॥
पूजा कयल अधिक अनुरागल । निज अनुरूप सुभग बर माँगल ॥६॥
एक सखी सिय संगहिँ छाड़ी । गेलि छली देखय फुलबाड़ी ॥७॥
लखि दुहु बंधुहिँ सँह सहेली । प्रेम बिबस सीता लग एली ॥८॥

दोहा—तकर दसा सखि सब लखल, पुलक गात जल नैन ।
निज हरषक कारन कहह, सब पूछथि मृदु बैन ॥२२८॥

अयेला बूलय बाग कुमारे । दुहु किसोर सब बिधि सुखसारे ॥१॥
स्याम गौर की कहू बखानी । गिरा अनयन नयन बिनु बानी ॥२॥
सुनि हरषलि सब सखी सयानी । सिय हिय अति उत्कंठा जानी ॥३॥
एक कहल नृपसुत से आली । सुनलहुँ मुनि सँग ऐला काली ॥४॥
रूप मोहनी अपन पसारी । कयल जे स्वबस सकल नर नारी ॥५॥
बरनथि छबि जहँ तहँ सब लोगे । अबस देखूगय देखय जोगे ॥६॥
तकर बचन अति सियहिँ सोहायल । दरस हेतु लोचन अकुलायल ॥७॥
चललि अग्र प्रिय सखि लय सेहे । क्यो नहि लखय पुरातन नेहे ॥८॥

दोहा—सुमिरि सीय नारद बचन, उपजल प्रीति पुनीत ।
चकित बिलोकथि सकल दिस, जनि सिसु मृगी सभीत ॥२२९॥

कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि । कहथि लखन सौँ राम हृदय गुनि ॥१॥
मानु मदन दुंदुभी बजैलक । बिस्व बिजय करबे चित धैलक ॥२॥
लखल येहन कहि घुरि तहि ओरे । सिय मुख ससि भेल नयन चकोरे ॥३॥
भेल बिलोचन चारु अचंचल । मानु सकुचि निमि तजल दृगंचल ॥४॥
देखि सीय सोभा सुख पाओल । हृदय सराहथि बचन हेराओल ॥५॥
बिधि जे जते निपुनता पाओल । बिरचि बिस्व केँ प्रगट देखाओल ॥६॥

सुंदरता कें सुंदर करइछ । छबि गृह दीप सिखा जनु बरइछ ॥७॥
सब उपमा ऐँठाओल कबिहिक । परतर देब ककर बैदेहिक ॥८॥

दोहा—सिय सोभा हिय बरनि प्रभु, कय निज दसा बिचार ।
बजला सुचि मन अनुज सौँ, बचन समय अनुसार ॥२३०॥

तात बैह ई जनककुमारी । जनिका हित हो धनु मख भारी ॥१॥
अनलनि सखि सब गौरि पुजाबय । घुमइत फुलबाड़ी दुति पाबय ॥२॥
जनिक बिलोकि अलौकिक सोभा । भेल सहज सुचि मम मन छोभा ॥३॥
से सब कारन जान बिधाता । फड़कय सुभग अंग सुनु भ्राता ॥४॥
रघुबंसीक सोभावे सहजहिँ । मन कुपंथ जाइछ कखनहुँ नहिँ ॥५॥
मोहि परतीति मनक अछि भारी । सपनहुँ जे न हेरल पर नारी ॥६॥
रन मे लखय न रिपु जनि पीठी । दैछ न जनि मन परतिय डीठी ॥७॥
जाचक पाब न जनिक नकारे । से नर बर बिरले संसारे ॥८॥

दोहा—करथि बतकही अनुज सौँ, मन लुबधल सिय रूप ।
मुख सरोज मकरंद छबि, पीबथि बनल मधूप ॥२३१॥

सीता चकित चितथि चहु ओरे । चिंता मन कहँ नृपति किसोरे ॥१॥
जहँ निरखथि मृग सावक नेनी । जनि तहँ बरष कमल सित श्रेनी ॥२॥
लता झरोतहिँ युगल किसोरे । सखी देखौलनि स्यामल गोरे ॥३॥
देखि रूप लोचन ललचायल । हरखल जनि निधि अपन चिन्हायल ॥४॥
येकटक दृग रघुपति छबि हेरी । पलको सकय निमेष न फेरी ॥५॥
उमड़ल नेह न देहक भाने । लख चकोरि जनि सरदद चाने ॥६॥
लोचन मग रामहिँ उर आनी । देलनि पलक कपाट सयानी ॥७॥
सखि सब सियहिँ प्रेम बस जानी । मन सकुचथि कहि सकथि न बानी ॥८॥

दोहा—लता भवन सौँ प्रगटला, तहि अवसर दुहु भाय ।
निकसल जनि जुग बिमल बिधु, जलदक पटल हटाय ॥२३२॥

सोभा सीम सुभग दुहु बीरे । नील पीत जलजाभ सरीरे ॥१॥

मोर पाँखि सोभय भल माथे । गुच्छा कुसुम कलिक तहि साथे ॥२॥
श्रम कन ललित भाल पर टीका । श्रवन सुभग भूषन छबि नीका ॥३॥
बिकट भृकुटि कुंचित कचजाले । नव सरोज सन लोचन लाले ॥४॥
चारु चिबुक नासिका कपोले । हास बिलास लैछ मन मोले ॥५॥
हो न बदन छबि कयल बखाने । जे लखि सँकुचथि बहु पँचबाने ॥६॥
उर मनिमाल कंबु कल ग्रीमा । काम कलभ कर भुज बल सीमा ॥७॥
सुमन सहित दोना कर बामे । स्याम कुमर सखि अधिक ललामे ॥८॥

दोहा—केहरि कटि पट पीत धर, सुषमा सील निधान ।
लखि रविकुलभूषन सखिहिँ, रहल न अपनो मान ॥२३३॥

धय धीरज येक आलि सयानी । सीता सौँ कहलनि गहि पानी ॥१॥
ध्यान गौरि केर करब बहोरे । देखी कियेक नहि भूप किसोरे ॥२॥
तखन सकुचि सिय नयन उघारल । सनमुख दुहु रघुसिंह निहारल ॥३॥
नख सिख रामक सोभा देखी । सुमिरि पिता प्रन छोभ बिसेखी ॥४॥
तखन लखल सखि परबस सीता । भेल बिलंब सभ कहल सभीता ॥५॥
पुनि आयब येहि बेरिया काली । बाजि कथा बिहुसलि येक आली ॥६॥
गूढ़ बचन सुनि सकुचलि सीता । भेल अबेर जननिक भय चिंता ॥७॥
धय बड़ धीर राम उर आनी । फिरली निज केँ पितु बस जानी ॥८॥

दोहा—खग मृग तरु कॆर व्याज सौँ, पुनि पुनि घूरि निहार ।
निरखि निरखि रघुवीर छबि, बाढ़य प्रीति अपार ॥२३४॥

कठिन सिवक धनु करइत सुरति । चलली धय उर स्यामल मूरति ॥१॥
जानकि केँ प्रभु जाइत जानी । सुख सिनेह सोभा गुन खानी ॥२॥
परम प्रेममय मृदु मसि केलनि । चारु चित्त भिति छबि लिखि लेलनि ॥३॥
गेली भवानी भवन बहोरी । बंदि चरन बजली कर जोरी ॥४॥
जय जय गिरिवर राज किसोरी । जय महेस मुख चंद चकोरी ॥५॥
जय गज बदन षड़ानन माता । जगत जननि दामिनि दुति गाता ॥६॥
नहि तव आदि अंत अबसाने । अमित प्रभाव वेद नहि जाने ॥७॥
भव भव विभव पराभव कारिनि । विस्व बिमोहिनि स्वबस बिहारिनि ॥८॥

दोहा—पति देवता सुतीय विच, मातु प्रथम तव रेख।
महिमा अमित न सकथि कहि, सहस सारदा सेख ॥२३५॥

सेबइत तोहि सुलभ फल चारी। बरदायिनी पुरारि पियारी ॥१॥
सुर नर मुनि सब तव पद सेवी। होथि सुखी सब बिधि हे देवी ॥२॥
जानी अहाँ हमर मन कामे। बसी सदा सबहुक उर धामे ॥३॥
प्रगट कयल नहि कारन एही। ई कहि चरन गहल बैदेही ॥४॥
भेली भवानी बिनय प्रेम बस। मुसुकलि मूरति माल गेल खस ॥५॥
सादर सिय प्रसाद सिर धेलनि। बजली गौरि हरप बड़ भेलनि ॥६॥
सुनु आसीस सत्य सिय मोरे। पूरत मनक कामना तोरे ॥७॥
सदा सत्य सुचि नारद बचने। पायब बर जे छी मन रचने ॥८॥

छंद—मन रतल जनिमे हेता से सुंदर सहज स्यामल पती।
करुनानिधान सुजान बुझ तव सील ओ नेहक गती॥
येहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित सखि हरखित भेली।
तुलसी भवानिहिँ पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर गेली॥

सोरठा—जानि गौरि अनुकूल, सिय हिय हरष न होअय कहि।
मंजुल मंगल मूल, फड़कय लागल बाम अँग ॥२३६॥

गुरु लग येला बंधु सह घूरी। हिय सिय रूप सराहति भूरी ॥१॥
गुरु कें कहलनि राम असेसे। सरल सोभाव छलक नहि लेसे ॥२॥
सुमन पाबि मुनि पूजा केलनि। आसिख दुहू भाइ कें देलनि ॥३॥
होयत पूर अहँक मनकामे। सुनि से मुदित लखन सह रामे ॥४॥
कय भोजन मुनिबर बिज्ञानी। लगला कहय पुरान कहानी ॥५॥
बिगत दिबस गुरु अनुमति देले। बंधु सहित संध्या हित गेले ॥६॥
लखि ससि उगल सोहावन पूबे। सिय मुख सम गनि सुख भेल खूबे ॥७॥
बहुरि बिचार कयल अछि चाने। किछुओ नहि सिय बदन समाने ॥८॥

दोहा—जनम सिंधु पुनि बंधु बिष, दिन मलीन सकलंक।
सिय मुख समता पौत नहि, चान बेचारा रंक ॥२३७॥

घटय बढ़य बिरहिनी सतावय । गरसय राहु संधि जौँ पाबय ॥१॥
कोक सोक प्रद पंकज द्रोही । अवगुन बहुत चंद्रमा तोही ॥२॥
बैदेही मुख परतर देने । हैत दोष बड़ अनुचित केने ॥३॥
सिय मुख छवि बिधु ब्याज बखानी । गुरु लग गेला राति बड़ जानी ॥४॥
कय मुनि चरन सरोज प्रनामे । अनुमति पाबि कयल बिस्रामे ॥५॥
बिगत निसा रघुनायक जगला । बंधु बिलोकि कहय ई लगला ॥६॥
उगल अरुन अवलोकू ताता । पंकज लोक कोक सुखदाता ॥७॥
बजला लखन जोरि जुग पानी । प्रभु प्रभाव सूचक मृदु बानी ॥८॥

दोहा—अरुनोदय सकुचल कुमुद, उडुगन जोति मलीन ।
जेना आगमन अहँक सुनि, भेला नृपति बलहीन ॥२३८॥

जगमग नृप गन नखत समाने । टारि न सक तम धनुष महाने ॥ १॥
कमल कोक मधुकर खग नाना । हरखल सकल निसा अबसाना ॥ २॥
येहिना प्रभु टुटने धनु भारी । हैत अहँक सब भगत सुखारी ॥ ३॥
उगइत रवि बिनु श्रम तम नासल । छपल नखत जग तेज प्रकासल ॥ ४॥
रवि निज उदय ब्याज सौँ रघुपति । देखवथि प्रभु प्रताप प्रति भूपति ॥ ५॥
तव भुज बल महिमा उदघाटी । प्रगटल धनु बिघटन परिपाटी ॥ ६॥
बंधु बचन सुनि प्रभु मुसकैला । जे सुचि सहज पुनीत नहैला ॥ ७॥
नित्य क्रिया कय गुरु लग गेला । सुभग कमल पद नमइत भेला ॥ ८॥
सतानंद केँ जनक बजौलनि । कौसिक मुनि लग तुरत पठौलनि ॥ ९॥
जनक बिनय से आबि सुनौलनि । हरषल मुनि दुहु भाइ बजौलनि ॥१०॥

दोहा—सतानंद पद बंदि प्रभु, बैसला गुरु लग जाय ।
तखन कहल मुनि तात चलु, नृप छथि रहल बजाय ॥२३९॥

मास पारायण, विश्राम—८

नवाह्न पारायण, विश्राम—२

लखु गय सीय स्वयंबर जा कय । कनिका जस प्रभु देथि बढ़ा कय ॥१॥
कहल लखन जस भाजन सेहे । नाथ कृपा तव पाबथि जेहे ॥२॥

हरखित मुनि सब सुनि बर बानी । आसिख देल सकल सुख मानी ॥३॥
पुनि मुनि बृंद समेत कृपाला । चलला देखय धनुष मखसाला ॥४॥
रंगभूमि दुहु भ्राता ऐलनि । ई सुधि सब पुरबासी पैलनि ॥५॥
चलला गृह सब काज बिसारी । बाल जुआन जरठ नर नारी ॥६॥
देखल जनक भीर भेल भारी । सुचि सेबक सब लेल हँकारी ॥७॥
तुरित सकल लोकक लग जाऊ । आसन उचित सबहिँ दय आऊ ॥८॥

दोहा—कहि विनीत मृदु बचन सब, नर नारिहिँ बैसौल ।
उत्तम मध्यम नीच लघु, समुचित थल सब पौल ॥२४०॥

राजकुमर अयला तहि छन मे । भरल मनोहरता छबि तन मे ॥१॥
गुन सागर नागर बर बीरे । सुंदर स्यामल गौर सरीरे ॥२॥
सोभथि राज समाज अनूपे । उडु बिच जुगल पूर्ण विधु रूपे ॥३॥
रहलनि जनिक भावना जेहन । प्रभु मूरति देखलनि से तेहन ॥४॥
देखथि भूप महा रनधीरे । मानु बीर रस धेने सरीरे ॥५॥
डरल कुटिल नृप प्रभुहिँ निहारी । मानु भयानक मूरति भारी ॥६॥
छल जे असुर कपट नृप रूपे । प्रगट ताहि प्रभु काल सरूपे ॥७॥
दुहु भ्रातहिँ देखल पुरबासी । नर भूपन लोचन सुखरासी ॥८॥

दोहा—नारि बिलोकथि हरषि हिय, निज निज रुचि अनुरूप ।
जनि सोभथि सिंगार धय, मूरति परम अनूप ॥२४१॥

प्रभु बिराटमय देखल ज्ञानी । बहु सिर लोचन मुख पद पानी ॥१॥
जनक जातिगन देखथि केना । अपन कुटुंब लाग प्रिय जेना ॥२॥
सहित विदेह बिलोकथि रानी । सिसु सम प्रीति न होअय बखानी ॥३॥
जोगिहिँ परम तत्त्वमय भासे । सांत सुद्ध सम सहज प्रकासे ॥४॥
हरिक भगत देखथि दुहु भ्राता । इष्टदेव इव सब सुख दाता ॥५॥
सीय चितथि रामहिँ जहि भावे । से सिनेह सुख के कहि पावे ॥६॥
उर अनुभवथि न निकसय बानी । कोना कोनो कवि सकथु बखानी ॥७॥
जकर भाव छल जहि बिधि जेहने । देखल मे कोसलपति तेहने ॥८॥

दोहा—राजथि राज समाज मे, कोसल राजकिसोर।
सुंदर स्यामल गौर तन, विस्व बिलोचन चोर ॥२४२॥

सहज मनोहर मूरति दूनू। कोटि काम उपमा लघु गूनू ॥१॥
मुख छबि निंदय सरदक चाने। जिय भावय भल कमल नयाने ॥२॥
चितबनि चारु मार मनहरनी। भावय हृदय सकय नहि बरनी ॥३॥
कल कपोल श्रुति कुंडल लोले। चिबुक अधर सुंदर मृदु बोले ॥४॥
कुमुद बंधु कर निंदक हासा। भृकुटी बंक मनोहर नासा ॥५॥
भाल बिसाल तिलक अति राजय। कच बिलोकि अलि गन मन लाजय ॥६॥
पियर चौतनी सिर सुभ सोभय। काढ़ल कुसुम कली मन लोभय ॥७॥
रेखा रुचिर कंबु कल गीमा। जनि त्रिभुबन सुखमा केर सीमा ॥८॥

दोहा—कुंजरमनि कंठा कलित, उर पर तुलसी माल।
बृषभ कंध केहरि ठबनि, बल निधि बाहु बिसाल ॥२४३॥

कटि पीतांबर बद्ध तुनीरे। बाम कान्ह धनु कर मे तीरे ॥१॥
पीत जज्ञ उपबीत बिराजय। नख सिख मंजु महा छबि छाजय ॥२॥
भेल सुखी सब लोक निहारी। हेरइत पुतरि सकय नहि टारी ॥३॥
जनक हरखला लखि दुहु भ्राता। गहल तखन मुनि पद जलजाता ॥४॥
कय बिनती निज कथा सुनाओल। रंगभूमि सब मुनिहिँ देखाओल ॥५॥
जाथि कुमर बर दूनू जेम्हरे। सब क्यो चितथि चकित भय तेम्हरे ॥६॥
निज निज रुचि सब रामहिँ देखल। क्यो किछु मरम बिसेख न लेखल ॥७॥
भल रचना मुनि नृप सँ कहले। राजा मुदित महा सुख लहले ॥८॥

दोहा—सकल मंच बिच मंच यक, सुंदर बिसद बिसाल।
मुनि समेत दुहु बंधु तहँ, बैसौलनि महिपाल ॥२४४॥

प्रभु लखि हिय हारल सब राजा। उगल पुनिम ससि नखत समाजा ॥१॥
सबहुक मन प्रतीति छल एहे। राम धनुष तोड़ता न सँदेहे ॥२॥
बिनु तोरनहु भव धनुष बिसाला। देथिन सीय राम उर माला ॥३॥

येहन सोचि बैसह घर जा कय । जस प्रताप बल तेज गमा कय ॥४॥
बिहुँसल अपर भूप सुनि बानी । जे अबिबेक अंध अभिमानी ॥५॥
तोड़नहु धनुष बियाह अथाहे । बिनु तोड़ने के कुमरि बियाहे ॥६॥
एक बेर कालहुँ सौँ लड़बे । सिय हित समर बिजय हम करबे ॥७॥
ई सुनि मुसुकायल नृप आने । धरमसील हरि भगत सयाने ॥८॥

सोरठा—सिय बियाहता राम, गरब दूरि कय नृप सभक ।
जीतत के संग्राम, रनबंका दसरथ तनय ॥२४५॥

ब्यर्थ मरह जुनि गाल बजा कय । भूख कि हट मनमोदक खा कय ॥१॥
सीख हमर सुनि परम पुनीता । जगदंबा जानह जिय सीता ॥२॥
जगत पिता रघुपतिहिँ बिचारी । भरि लोचन छबि लैह निहारी ॥३॥
सुंदर सुखद सकल गुन रासी । ई दुहु बंधु संभु उर बासी ॥४॥
सुधा समुद्र समीपक त्यागी । दौड़ि मरह किय मृग जल लागी ॥५॥
जे रुचि जकर करओ से काजे । हम तौँ पौल जनम फल आजे ॥६॥
ई कहि भल भूपति अनुरगला । रूप अनूप बिलोकय लगला ॥७॥
देखथि सुर नभ चढ़ल बिमाने । बरषथि सुमन करथि कुल गाने ॥८॥

दोहा—तखन सुअवसर बुझि सियहिँ, जनक पठौल बजाय ।
चतुर सखी सुंदरि सकल, सादर चललि लेआय ॥२४६॥

सिय सोभा कहि सकय न बानी । जगदंबिका रूप गुन खानी ॥१॥
सब उपमा हम लघु अबधारी । प्राकृत नारि अंग अनुसारी ॥२॥
उपमा येहन सियहिँ जे देते । कुकवि कहाय अजस से लेत ॥३॥
जौँ परतरी तीय सम सीया । येहन जुवति जग कहँ कमनीया ॥४॥
गिरा मुखर तनु अरध भवानी । रति अति दुखित अतनुपति जानी ॥५॥
जहि विष वारुनि बंधुक ममता । रमा कि कर वैदेहिक समता ॥६॥
जौँ हो छबि पीयूषक सागर । कच्छप परम रूप कैर आगर ॥७॥
सोभा रजु मंदर सिंगारे । मथय पानि पंकज निज मारे ॥८॥

दोहा—जौँ येहि विधि लछमी उपज, सुंदरता सुख मूल ।
तदपि सहित संकोच कवि, कहता सिय समतूल ॥२४७॥

चलली सँग लय सखी सयानी । गबइत गीत मनोहर बानी ॥१॥
सोभ नबल तन सुंदर सारी । जगत जननि अतुलित छवि भारी ॥२॥
भूषन सकल सुदेस सुरंगे । सखिगन रचि पहिराओल अंगे ॥३॥
रंगभूमि सिय अयली जखने । मुगुधल रूप देखि सब तखने ॥४॥
हरषि देव दुंदभी बजाओल । बरषि प्रसून अपसरा गाओल ॥५॥
पानि सरोज सोभ जयमाले । चकित बिलोकथि सब महिपाले ॥६॥
सीय चकित चित हेरथि रामहिँ । भेल सब नृपति मोह बस ठामहिँ ॥७॥
मुनि समीप दुहु भाय निहारी । टिकल ललकि दृग लहि निधि भारी ॥८॥

दोहा—गुरुजन लाज समाज बड़, लखि सिय सकुचलि बेस ।
सखिगन दिस लगली हेरय, उर रघुवीर उदेस ॥२४८॥

राम रूप ओ सिय छबि देखी । नर नारी परिहरल निमेखी ॥१॥
सोचथि सभ कहइत सकुचै छथि । मन मन विधि सौँ बिनय करै छथि ॥२॥
जनकक जड़ता बेगि हटाबिअ । मम सम विधि तनि सुमति बनाबिअ ॥३॥
बिनु बिचार प्रन तजि नरनाहे । करथि राम सौँ सियक बियाहे ॥४॥
सबहुक रुचि जग भल कहताहे । हठ कयने पाछाँ उर दाहे ॥५॥
येहि लालसा मगन सब लोगे । बर सामर छथि जानकि जोगे ॥६॥
बंदी जन केँ जनक बजाओल । पढ़इत बिरुदावलि चलि आओल ॥७॥
कह नृप जाय कहह प्रन मोरे । चलल भाट हिय हरष न थोरे ॥८॥

दोहा—बाजल बंदी बचन बर, सुनू सकल महिपाल ।
प्रन विदेह कर कही हम, भुजा उठाय बिसाल ॥२४९॥

नृप भुजबल विधु गरुअ कठोरे । सिव धनु राहु बिदित सब ओरे ॥१॥
रावन बान महाभट भारी । गँओ सौँ घसकल धनुष निहारी ॥२॥
सैह कठोर सिवक धनु आजे । तोड़त जे क्यो राज समाजे ॥३॥

वैदेही त्रिभुवन जय अंगे । ब्याहल जयती तनिका संगे ॥४॥
सब नृप अभिलाखल प्रन जानी । कुपित भेल जे भट अभिमानी ॥५॥
परिकर बाँधि उठल अकुला कय । इष्टदेव केँ माथ नमा कय ॥६॥
तमकि ताकि गर सिव धनु धरइछ । उठय न कोटि भाँति बल करइछ ॥७॥
जकरा किछु बिचार मन भेले । से नृप चाप समीप न गेले ॥८॥

दोहा—तमकि धरय धनु मूढ़ नृप, उठय न फिरय लजाय ।
जनु समेटि भट बाहु बल, अधिक अधिक भरिआय ॥२५०॥

नृप दस सहस येकहि बेर मिलले । लगला उठबय हिला न सकले ॥१॥
डिगय न संभु सरासन तेना । कामी बचन सती मन जेना ॥२॥
पौल हँसारति सब नृप केना । बिनु बिराग संन्यासी जेना ॥३॥
कीरति बिजय बीरता भारी । चलल चाप कर बरबस हारी ॥४॥
श्रीहत भेल हारि हिय राजा । बैसल निज निज जाय समाजा ॥५॥
नृप गन निरखि जनक अकुलायल । बजला बच जनि रोप सनायल ॥६॥
दीप दीप केर भूप अनेके । अयेला सुनि हमर ई टेके ॥७॥
देब दनुज धय मनुज सरीरे । बिपुल बीर अयला रन धीरे ॥८॥

दोहा—कुमरि मनोहर बिजय बड़, कीरति अति कमनीय ।
पौनिहार केँ रचल नहि, विधि जनि धनु दमनीय ॥२५१॥

कहु ककरा ई लाभ न भाओल । क्यो नहि संकर चाप चढ़ाओल ॥१॥
क्यो की सकल तोड़ि बा तानी । भेल तिलो भरि उपर न आनी ॥२॥
आब बघारथु भट नहि साने । बीर बिहीन मही मोहि भाने ॥३॥
तजह आस निज निज गृह जाहे । लिखल न विधि वैदेहि बियाहे ॥४॥
सुकृत जाय जौँ प्रन परिहरबे । कुमरि कुमारि रहथु की करबे ॥५॥
भू भट हीन जँ सकितहुँ जानी । हँसी करबितहुँ नहि प्रन ठानी ॥६॥
जनक बचन सुनि सब नर नारी । देखि जानकिहिँ भेल दुखारी ॥७॥
लखन तमसला भौँह टेढ़ायल । रद पट फड़कय नयन रिसायल ॥८॥

दोहा—कहि न सकथि रघुवीर डर, लगलनि बच जनि वान ।
नमा राम पद कमल सिर, बजला गिरा प्रमान ॥२५२॥

रघुवंसी बिच क्यो जहँ रहते । येहन बात क्यो नहि तहँ कहते ॥१॥
कहल जनक जे अनुचित बानी । विद्यमान रघुकुल मनि जानी ॥२॥
सुनू भानुकुल पंकज भानू । कही सोभाव गुमान न जानू ॥३॥
जौं अहाँक अनुसासन पाबी । कंदुक इव ब्रह्मांड उठाबी ॥४॥
काँचे घैल जकाँ दी फोड़ी । मेरुहिं मूर जकाँ दी तोड़ी ॥५॥
तव प्रताप महिमा भगवाने । की थिक तुच्छ पिनाक पुराने ॥६॥
जौं अनुमति हो बुझि कय एहे । कौतुक करी बिलोकिअ सेहे ॥७॥
कमल नाल इव चाप चढ़ाबी । जोजन सत प्रमान लय धाबी ॥८॥

दोहा—तोड़ी छत्रक दंड जनि, तव प्रताप बल नाथ ।
जौं न करी प्रभु पद सपथ, पुनि न धरी धनु भाथ ॥२५३॥

बजला लखन क्रुद्ध भय जखने । दिग्गज डोल कँपल महि तखने ॥१॥
सकल लोक सब भूप डेरयला । सिय हिय हरष जनक सकुचयला ॥२॥
मन मन गुरु रघुपति जत मुनिगन । मुदित भेला पुनि पुनि पुलकित तन ॥३॥
रघुपति रोकि लखन संकेते । लग बैसाओल प्रेम समेते ॥४॥
विस्वामित्र समय सुभ जानी । बजला अति सनेहमय बानी ॥५॥
उठिय राम भंजिय भव चापे । हरिय तात जनकक परितापे ॥६॥
सुनि गुरु बच पद माथ नमायल । हरष बिषाद न किछु उर आयल ॥७॥
सहज सोभाव ठाढ़ उठि भेला । ठवनि जुबा मृगराज लजेला ॥८॥

दोहा—उदित उदयगिरि मंच पर, रघुवर बाल पतंग ।
बिकसल संत सरोज सब, हरषल लोचन भृंग ॥२५४॥

नृप समाज आसा निसि नासल । बचन नखत अवली न प्रकासल ॥१॥
मानी महिप कुमुद सकुचायल । कपटी भूप उलूक नुकायल ॥२॥
भेला बिसोक कोक मुनि देबा । बरखथि सुमन जनाबथि सेबा ॥३॥

गुरु पद बंदि अमित अनुरागल । मुनि गन सौँ अनुमति पुनि माँगल ॥४॥
चलला सहज सकल जग स्वामी । मत्त मंजुवर कुंजर गामी ॥५॥
देखइत से सब पुर नर नारी । पुलकित तन पाओल सुख भारी ॥६॥
बंदि पितर सुर सुकृत मनावे । जौँ किछु अछि मम पुन्य प्रभावे ॥७॥
तौँ सिवधनुष मृनाल सरीसे । तोड़थु राम गोसाइँ गनेसे ॥८॥

दोहा—रामहिँ प्रेम समेत लखि, सखि गन निकट बजाय ।
सीता मातु सिनेह बस, वचन कहल बिलखाय ॥२५५॥

देखथि कौतुक सब मिलि सेहो । सखी कहावथि मम हित जेहो ॥१॥
क्यो न बुझाय कहथि नरपाले । भल न येहन हठ ई छथि बाले ॥२॥
रावन बान छुअल नहि चापे । हारल सकल भूप कय दापे ॥३॥
देथि कुमर कर धनुष कराले । मंदर धरय कि बाल मराले ॥४॥
भेल लुप्त सब भूपक ज्ञाने । सखि विधि गति किछु होअय न भाने ॥५॥
बजली चतुर सखी मृदु बानी । तेजवंत लघु गनी न रानी ॥६॥
कहँ कुंभज कहँ सिंधु अपारे । सोखल सुजस सकल संसारे ॥७॥
रवि मंडल देखइत लघु लागय । उदय होइत त्रिभुवन तम भागय ॥८॥

दोहा—मंत्र परम लघु जकर बस, विधि हरिहर सुर सर्व ।
महामत्त गजराज केँ, बस कर अंकुस खर्ब ॥२५६॥

काम कुसुम धनु सायक लेने । सकल भुवन निज वस छथि केने ॥१॥
देवि तजू संसय से जानी । तोड़ता धनुष राम सुनु रानी ॥२॥
सखी वचन सुनि भेल प्रतीती । नसल विषाद बढ़ल अति प्रीती ॥३॥
वैदेही रामक दिसि देखी । जहि तहि बिनमथि सभय विसेखी ॥४॥
मन मन मनवथि आकुल बानी । होथु प्रसन्न महेस भवानी ॥५॥
निज सेवाक आइ फल दीयउ । करु हित धनु गुरुता हरि लीयउ ॥६॥
गननायक बरदायक देवा । अजुके लेल कैल तव सेवा ॥७॥
बेरि बेरि विनति वचन सुनि मोरे । करू चाप गरुता अति थोरे ॥८॥

दोहा—देखि देखि रघुवीर तन, मनवथि सुर धय धीर ।
भरल बिलोचन प्रेम जल, पुलकावली सरीर ॥२५७॥

नीके निरखि नयन भरि सोभा । पितु पन सुमिरि भेल मन छोभा ॥१॥
अहह तात दारुन हठ ठानल । लाभ हानि किछुओ नहि जानल ॥२॥
सचिब न सिख दइछथि भयभीते । बुध समाज बड़ हो अनुचीते ॥३॥
कहँ धनु कुलिसहुँ बाढ़ि कठोरे । कहँ स्यामल मृदु गात किसोरे ॥४॥
विधि कोन भाँति धरी उर धीरे । सिरिस सुमन कन बेध कि हीरे ॥५॥
सकल सभा केर भेल मति छीने । मम गति सिव धनु तोहर अधीने ॥६॥
निज जड़ता सब जन पर डारी । हलुक होअह रघुपतिहिँ निहारी ॥७॥
सिय मन मे परिताप महाने । पल लव बित सय जुगक समाने ॥८॥

दोहा—प्रभु केँ चिति पुनि चितथि महि, राजय लोचन लोल ।
खेलय मनसिज मीन जुग, जनि विधुमंडल डोल ॥२५८॥

गिरा अलिन मुख पंकज रोकी । प्रगट न लाज निसा अवलोकी ॥१॥
रहल नयन जल नयनक कोना । जेना परम कृपन केर सोना ॥२॥
सकुचलि ब्याकुलता बड़ जानी । धय धीरज प्रतीति उर आनी ॥३॥
तन मन वच मम प्रन सत संचित । रघुपति पद सरोज चित रंजित ॥४॥
तौँ भगवान सकल उर बासी । करता हमरा रघुवरदासी ॥५॥
जकर जाहि पर सत्य सिनेहे । मिलय ताहि से नहि संदेहे ॥६॥
प्रभु दिसि देखि प्रेम पन ठानल । कृपानिधान राम सब जानल ॥७॥
सिय केँ लखि निरखल धनु केना । देखय गरुड़ लघु पोआ जेना ॥८॥

दोहा—लखन लखल रघुवंसमनि, तकलनि हर कोदंड ।
पुलकित तन बजला बचन, चरन चापि ब्रह्मंड ॥२५९॥

दिग्गज कमठ कोल अहिनाथे । डोल न महि सब कसि धरु साथे ॥१॥
तोड़ता राम धनुष से जानी । होउ सजग मम आज्ञा मानी ॥२॥
राम चाप लग जखनहि एला । देव सुकृत सब मनवति भेला ॥३॥
सबहुक संसय ओ अज्ञाने । मंद महीप गनक अभिमाने ॥४॥
भृगुनाथक गरबक जे गुरुपन । सुरगन मुनिबर केर कदरपन ॥५॥
सियक सोच जनकक पछतावा । रानिगनक दारुन दुख दावा ॥६॥

संभु चाप बड़ बोहित पाकय । चढ़ल जाय सब संग बनाकय ॥७॥
राम बाहु बल सिंधु अपारे । तरय चाह नहि खेबनिहारे ॥८॥

दोहा—राम विलोकल लोक सब, चित्र लिखल सन देख ।
चितइत सियहिँ कृपायतन, जानल बिकल बिसेख ॥२६०॥

बिकल लखल बैदेहि महाने । निमिष बितै छनि कलप समाने ॥१॥
तृषित बारि बिनु जौँ क्यो मरते । मुइने सुधा तड़ाग कि करते ॥२॥
की बरषा सब कृषी सुखैने । समय चूकि पुनि की पछतैने ॥३॥
ई जिय जानि जानकी देखी । प्रभु पुलकल लखि प्रीति बिसेखी ॥४॥
गुरुहिँ प्रनाम मनहि मन केलनि । अति लाघव उठाय धनु लेलनि ॥५॥
धरितहि बिजुरि छिटकि जनि गेले । पुनि धनु नभ मंडल सम भेले ॥६॥
लैत चढ़बइत खिचइत गाढ़े । लखल न क्यो देखइछ सब ठाढ़े ॥७॥
तोड़ल राम बिचहिँ धनु छन मे । धुनि भर घोर कठोर भुबन मे ॥८॥

छंद—भुव भरल घोर कठोर रव रवि बाजि तजि मारग चलैं ।
चिक्करय दिग्गज डोल महि अहिकोल कच्छप कलमलैं ॥
सुर असुर मुनि कर कान देने सकल बिकल बिचारथी ।
कोदंड खंडल राम तुलसी बचन जयति उचारथी ॥

सोरठा—संकर चाप जहाज, सागर रघुवर बाहु बल ।
से सब डुबल समाज, प्रथमे चढ़ल जे मोह बस ॥२६१॥

प्रभु दुइ टुक धनु महि देल डारी । देखि लोक सब भेल सुखारी ॥१॥
कौसिक रूप पयोनिधि पावन । प्रेमक बारि अथाह सोहावन ॥२॥
राम रूप राकेस निहारी । बढ़ल बीचि पुलकावलि भारी ॥३॥
बाज धमाधम गगन निसाने । देवबधू नाचथि कय गाने ॥४॥
ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीसे । प्रभुहिँ प्रसंसथि देथि असीसे ॥५॥
बरपथि सुमन रंग बहु माले । गावथि किन्नर गीत रसाले ॥६॥
जय जय धुनि भरि भुवन पसरले । धनुष भंग रव सुनि नहि पड़ले ॥७॥
मुदित कहथि जहँ तहँ नर नारी । भंजल राम संभु धनु भारी ॥८॥

दोहा--बंदी मागध सूत गन, विरुद कहथि मति धीर।
करथि निछाउरि लोक सब, हय गय धन मनि चीर ॥२६२॥

झाँझ पखाउज संख नफेरी। सुंदर ढोल नगाड़ा भेरी ॥१॥
बाजा कत बिधि बाजय थल थल। जहँ तहँ ललना गाबय मंगल ॥२॥
सखिगन सह हरषथि सब रानी। सुखइत धान पड़ल जनि पानी ॥३॥
जनक पौल सुख सोच बिलायल। हेलइति थाकि थाह जनि पायल ॥४॥
धनु टुटने नृप श्रीहत तहिना। दिन मे मलिन दीप छबि जहिना ॥५॥
सिय केर सुख बरनी कोन भाँती। जनि चातकि पाओल जल स्वाती ॥६॥
रामहिँ लखन बिलोकथि केना। ससिहिँ किसोर चकोरक जेना ॥७॥
तखन निदेस सतानँद देलनि। सीता गमन राम दिसि केलनि ॥८॥

दोहा--संग सखी सुंदरि चतुर, गाबथि मँगलाचार।
चलली बाल मराल गति, सुषमा अंग अपार ॥२६३॥

सखिगन बिच सोहथि सिय केहनि। छबि गन मध्य महाछबि जेहनि ॥१॥
कर सरोज जयमाल ललामे। विस्व बिजय सोभा केर धामे ॥२॥
तन सँकोच मन उत्सुक परमे। गूढ़ प्रेम क्यो बुझय न मरमे ॥३॥
लग जा देखि राम छबि सूरति। कुमरि भेली जनि चित्रक मूरति ॥४॥
कहल चतुर सखि लखि तेहि काले। पहिरबिऔन सुभग जयमाले ॥५॥
सुनि दुहु कर जयमाल उठाओल। होनि न प्रेम बिबस पहिराओल ॥६॥
सोभय जनि जुग जलज सनाले। ससि केँ सभय दैछ जयमाले ॥७॥
छबि लखि लखि गाबथि सखि बाला। देलनि राम उर सिय जयमाला ॥८॥

सोरठा—रघुवर उर जयमाल, देखि देब बरषथि सुमन।
सकुचल सकल नृपाल, रवि बिलोकि जनि कुमुद गन ॥२६४॥

पुर ओ नभ मे बाजा बाजय। खल भेल मलिन साधु सब राजय ॥१॥
सुर किन्नर नर नाग मुनीसे। जय जय जय कहि देथि असीसे ॥२॥
सुर ललनागन नाचय गाबय। पुनि पुनि कुसुमांजलि बरिसाबय ॥३॥

जहँ तहँ वेद विप्रगन गावथि । बंदी विरुदावली सुनावथि ॥४॥
महि पाताल स्वर्ग जय भरलनि । राम भंजि धनु सिय कें बरलनि ॥५॥
करथि आरती पुर नर नारी । देथि निछाउरि बित्त बिसारी ॥६॥
जुगल मुरति सोभथि सियरामे । छवि सिंगार मानु येक ठामे ॥७॥
सखि गन कह प्रभु पद गहु सीता । करथि न चरन परस अति भीता ॥८॥

दोहा—गौतम तिय गति सुरति कय, नहि परसथि पद पानि ।
रघुकुल मनि बिहुँसथि मनहिँ, प्रीति अलौकिक जानि ॥२६५॥

पुनि सिय कें लखि नृप ललचायल । कूर कपूत मूढ़ खिसिआयल ॥१॥
उठि उठि पहिरि सनाह अभागल । जहँ तहँ गाल बजावय लागल ॥२॥
क्यो बाजल सियकें छिनि आनू । दुहु नृप बालक कें धय बान्हू ॥३॥
तोरनहु धनुष पुरत नहि चाहे । छी जिबैत के करत बियाहे ॥४॥
करथि विदेह मदति जौँ हिनका । बंधु दुहू सँग जीतू तनिका ॥५॥
से सुनि कय बजला भल राजा । लाज लजाइछ राज समाजा ॥६॥
बल पौरुष बड़ाइ जस जेटा । नाक पिनाक संग गेल सेटा ॥७॥
अछि बल सैह कि नव किछु पाओल । येहने मति बिधि मुँह करिअओल ॥८॥

दोहा—देखु राम कें नयन भरि, तजि इरषा मद कोप ।
लखन रोष पावक सलभ, बनि कय होउ न लोप ॥२६६॥

बैनतेय बलि जेना कागे । चाहय ससक नाग अरि भागे ॥१॥
चाहय कुसल अकारन क्रोधी । संपति चाहय सिवक बिरोधी ॥२॥
लोभी लोलुप कीरति चहथी । अकलंकता कि कामी लहथी ॥३॥
हरि पद बिमुख परम गति चाहे । तव लालच तेँहने नरनाहे ॥४॥
सहमलि सिय सुनि कलमल बानी । सखी लेँआय गेली जहँ रानी ॥५॥
सहजहिँ गुरु लग चलला रामे । सिय सनेह बरनति हियधामे ॥६॥
रानी सहित सोचबस सीया । आबहु विधि कें की करनीया ॥७॥
भूप बचन सुनि दिसि दिसि ताकथि । लखन राम डर किछु नहि भाखथि ॥८॥

दोहा—अरुन नयन भृकुटी कुटिल, चितबथि नृपहिँ कोपैल ।
मानु मत्त गज गन निरखि, सिंह किसोर रोसैल ॥२६७॥

कलमल देखि बिकल पुर नारी । मिलि दै छथि नृपगन कें गारी ॥१॥
तहि अबसर सुनि सिव धनु भंगे । अयला भृगुकुल कमल पतंगे ॥२॥
लखि नृपगन सकुचयला तहिना । बाज झपट डर बगड़ा जहिना ॥३॥
गौर सरीर भूति भल भ्राजय । भाल बिसाल त्रिपुंड बिराजय ॥४॥
सीस जटा मुख चान समाने । रिस बस हो अरुनायल भाने ॥५॥
भृकुटी कुटिल नयन अरुनायल । सहजहुँ चितथि मानु खिसिआयल ॥६॥
बृषभ कंध उर बाहु बिसाले । चारु जनेउ माल मृग छाले ॥७॥
कटि मुनि बसन तून दुइ साथे । कान्ह कुठार धनुष सर हाथे ॥८॥

दोहा—सांत वेष करनी कठिन, जाय न बरनल रूप ।
धय मुनि तन जनि बीर रस, अयला जहँ सब भूप ॥२६८॥

देखितहिँ भृगुपति बेष कराले । उठला डेरा सकल महिपाले ॥१॥
पितु समेत कहि कहि निज नामे । सब करैत छथि दंड प्रनामे ॥२॥
जकरा सहज हेरथि हित जानी । आयु खटायल से लेथि मानी ॥३॥
आबि जनक पुनि माथ नमौलनि । सियकें बजा प्रनाम करौलनि ॥४॥
आसिष देलनि सखी हरषेली । निज समाज तनिका लय गेली ॥५॥
विस्वामित्र मिलल पुनि आ कय । गोड़ लगौल दुहु बंधु बजा कय ॥६॥
राम लखन दसरथक किसोरे । आसिष देलनि देखि भल जोरे ॥७॥
रामहिँ चितथि थकित भेल लोचन । रूप अपार मार मद मोचन ॥८॥

दोहा—बहुरि बिलोकि विदेह सौँ, कहल कियेक अति भीर ।
पुछथि जानि अनजान सन, ब्यापल कोप सरीर ॥२६९॥

जनकराज कहलनि सब हाले । जहि कारन जुटला महिपाले ॥१॥
सुनति बचन पुनि अनत निहारल । देखल चाप खंड महि डारल ॥२॥
अति रिस कटु स्वर कहल सदापे । कह जड़ जनक तोड़ल के चापे ॥३॥

मूढ़ देखा झट नहि तोँ आजे । उनटब महि जहँ धरि तब राजे ॥४॥
उतर न फुर अति डर नृप चूपे । हिय हरषैल कुटिल मति भूपे ॥५॥
सुर मुनि नाग नगर नर नारी । सोचथि सकल त्रास उर भारी ॥६॥
मन मे पछताबथि सिय माता । सम्हरल बात बिगाड़ विधाता ॥७॥
भृगुपति केर सोभाव सिय सूनल । अरध निमेष कलप सम गूनल ॥८॥

दोहा—सभय निरखि सब लोक केँ, सहमलि जानकि जानि ।
बजला श्री रघुवीर हिय, हरष विषाद न मानि ॥२७०॥

मास पारायण, विश्राम—९

तोड़ल धनु जे संकर देबक । से थिक प्रभु अहीँक येक सेवक ॥१॥
आज्ञा हमरा कहिय बुझा कय । सुनि उग्र मुनि कहल रिसा कय ॥२॥
जे सेवय तहि सेवक जानी । जे कर द्रोह ताहि रन ठानी ॥३॥
सुनह राम धनु तोड़ल जेहे । सहसबाहु सम मम रिपु सेहे ॥४॥
हटौ तेजि से सकल समाजा । न त मारल जयते सब राजा ॥५॥
लखन विहुँसला सुनि मुनि बानी । बजला परसुधरहिँ अपमानी ॥६॥
सैंसब बहु धनु तोड़ि खेलैलहुँ । प्रभु न येहन रिस कहियो कैलहुँ ॥७॥
येहि धनु पर ममता कोन हेतू । सुनि रिसाय कह भृगुकुलकेतू ॥८॥

दोहा—रे नृप बालक काल बस, मुह तोँ अपन सम्हार ।
धनुही सम त्रिपुरारि धनु, बिदित सकल संसार ॥२७१॥

लखन कहल हँसि हमरा ज्ञाने । सुनू देव सब धनुष समाने ॥१॥
टुटल जीर्न धनु की हित हानी । देखलनि राम अमहि नव जानी ॥२॥
छुबइत टुटल न रघुपति दोषे । मुनि बिनु काज करी किये रोषे ॥३॥
बजला चितइत परसुक ओरे । रे सठ बुझहिँ सोभाव न मोरे ॥४॥
बालक जानि बधी नहि तोही । बुझहिँ मंद केवल मुनि मोही ॥५॥
बाल ब्रह्मचारी अति क्रोधी । विस्व विदित छत्रीक बिरोधी ॥६॥
भुज बल भूमि भूप बिनु केलहुँ । कत बेर भूसुर केँ दय देलहुँ ॥७॥
सहसबाहु भुज छेदनिहारे । परसु बिलोक महीप कुमारे ॥८॥

दोहा—मातु पितहिँ जुनि सोच बस, कर रे महिप किसोर ।
गरभक अरभक दलन थिक, परसु मोर अति घोर ॥२७२॥

बिहुँसि लखन बजला मृदु बानी । अहो मुनीस महाभट मानी ॥१॥
पुनि पुनि देखबी मोहि कुठारे । उड़बय चाही फूकि पहारे ॥२॥
येंतय कुम्हर बतिया अछि क्यो ने । जैंत जे मरि तरजनी देखौने ॥३॥
देखि कुठार सरासन बाने । हम किछु कहल सहित अभिमाने ॥४॥
भृगुबंसी बुझि जनेंउ बिलोकी । जे किछु कही सही रिस रोकी ॥५॥
सुर द्विज गो हरिजन येंहि चारू । ऊपर नहि मम कुल दरियारू ॥६॥
बधें पाप अपजस जौं हारी । पड़ब चरन यद्यपि अहँ मारी ॥७॥
तव बच कोटि कुलिस सम भारी । ब्यर्थ धरी धनु बान कुठारी ॥८॥

दोहा—जे बिलोकि अनुचित कहल, छमू महामुनि धीर ।
सुनि सरोष भृगुवंस मनि, वजला गिरा गभीर ॥२७३॥

कौसिक सुनू मंद ई बालक । कुटिल काल बस निज कुल घालक ॥१॥
भानुवंस राकेस कलंके । निपट –निरंकुस अबुध असंके ॥२॥
कालक ग्रास हैत ई छोरा । कही प्रचारि दोष नहि मोरा ॥३॥
बचबय चाहि त दियनु मना कय । मम प्रताप बल रोष जना कय ॥४॥
लखन कहल तव कीर्त्ति महाने । अहाँ छोड़ि के कहि सक आने ॥५॥
अपने मुँह सौं अपने करनी । अहँ कत बेरि सुनाओल बरनी ॥६॥
नहि संतोष तँ पुनि किछु कहबे । जुनि रिस रोकि दुसह दुख सहबे ॥७॥
बीर ब्रती अहँ धीर अछोभे । गारि दैत नहि पाबी सोभे ॥८॥

दोहा—सूर समर करनी करय, अपनहिँ कहय न गावि ।
कायर कहय प्रताप निज, रन समच्छ रिपु पावि ॥२७४॥

हाँकि काल आनल अहँ संगे । पुनि पुनि वजबी हमर प्रसंगे ॥१॥
सुनितहिं लखनक वचन कठोरे । परसु सम्हारि धयल कर घोरे ॥२॥
आब न दोष देथु मोहि लोगे । कटु वादी बालक बध जोगे ॥३॥

बहुत बचौलहुँ हम बुझि बालक । बनत ग्रास साँचे ई कालक ॥४॥
कौसिक कहल छमिअ अपराधू । बाल दोष गुन गनथि न साधू ॥५॥
खर कुठार हम अकरुन रोषी । अछि सम्मुख गुरु द्रोही दोषी ॥६॥
उत्तर दैछ तदपि नहि मारी । मुनि केवल तव सील बिचारी ॥७॥
नहि तौँ हति येँहि कठिन कुठारे । लघु श्रम गुरु रिन होइत उधारे ॥८॥

दोहा—कौसिक कहलनि हृदय हँसि, मुनि केँ हरिअर सूझ ।
लोह खाँड़ ई उखिक नहि, येखनहुँ बुझ न अबूझ ॥२७५॥

लखन कहल तव सील महाने । के नहि जानय बिदित जहाने ॥१॥
माय बाप सौँ भेलहुँ उरीने । चित छल गुरु रिन चिंता लीने ॥२॥
से जनि हमरहिँ माथे काढ़ल । दिन बिति गेल सूदि बड़ बाढ़ल ॥३॥
लाउ बजा ब्योहरिया आबे । तोड़ा खोलि चुकैब हिसाबे ॥४॥
सुनि कटु बचन उठौल कुठारे । हाय हाय सब कयल पुकारे ॥५॥
भृगुबर परसु देखाबी मोही । बिप्र जानि बचबी नृप द्रोही ॥६॥
कहियो भेँटल न सुभट समर मे । बिप्रदेब चसकल छी घर मे ॥७॥
अनुचित कहि सब लोक पुकारल । रघुपति लखन सँकेति निबारल ॥८॥

दोहा—लखन उतर आहुति सरिस, भृगुबर कोप कृसानु ।
बढ़इत लखि जल सम बचन, बजला रघुकुलभानु ॥२७६॥

नाथ दया करु बाल अबोधे । दुधमुँह सुध करू नहि क्रोधे ॥१॥
जौँ जनितथि प्रभु महिम महाने । की सरबरि करितथि अज्ञाने ॥२॥
जौँ नेना किछु कर उतपाता । होथि मुदित मन गुरु पितु माता ॥३॥
करू कृपा सिसु सेवक जानी । अहँ सम सील धीर मुनि ज्ञानी ॥४॥
राम बचन सुनि कने जुड़ैला । कहि किछु पुनि लछुमन मुसुकैला ॥५॥
से लखि रिस नख सिख गेल ब्यापी । राम तोहर भ्राता बड़ पापी ॥६॥
गोर सरीर किंतु मन कारी । दुधमुँह नहि बिषमुहँ थिक भारी ॥७॥
सहज टेढ़ अनुहरय न तोही । नीच मृत्यु सम गुनय न मोही ॥८॥

दोहा—लखन कहल हँसि मुनि सुनू, क्रोध पाप केर मूल ।
जहि सौँ जन अनुचित करय, होअय विस्व प्रतिकूल ॥२७७॥

हम अहाँक अनुचर मुनिराया । परिहरि कोप आब करु दाया ॥१॥
टुटल चाप रिस सौँ नहि जूटत । बैसू पैर दुखायब छूटत ॥२॥
बड़ प्रिय जौँ तौँ करिअ उपाये । कारीगर सँ लियऽ जोड़ाये ॥३॥
बजइत लखन जनक भयभीते । चुप रहु बाजब हो अनुचीते ॥४॥
थर थर कापय पुर नर नारी । छोट कुमार खोट बड़ भारी ॥५॥
भृगुपति सुनि सुनि निरभय बानी । रिसेँ जरय तन हो बल हानी ॥६॥
कहल राम सौँ करति निहोरे । छोड़ी जानि बंधु लघु तोरे ॥७॥
मन मलीन तन सुंदर केहन । विपरस भरल कनक घट जेहन ॥८॥

दोहा—सुनि लछुमन बिहुँसथि वहुरि, नयन गुड़ेरल राम ।
गुरु समीप गेला सँकुचि, परिहरि बानी बाम ॥२७८॥

अति विनीत मृदु सीतल बानी । बजला राम जोरि जुग पानी ॥१॥
सुनू नाथ अहँ सहज सुजाने । बालक बचन करी नहि काने ॥२॥
बाल बताह सोभाव समाने । कहियो दोष न देथि सुजाने ॥३॥
ओ नहि अहँक विगाड़ल काजे । तव अपराधी हम प्रभु आजे ॥४॥
कृपा कोप बध बंधन स्वामी । करू मोहि बुझि जन अनुगामी ॥५॥
कहु रिस तुरित हटय तव जेना । मुनिबर जतन करी हम तेना ॥६॥
कह मुनि राम कोना रिस टारी । देखय अनुज तव आँखि गुड़ारी ॥७॥
येकरा कंठ कुठार न देलहुँ । तौँ हम कोप कथी लय केलहुँ ॥८॥

दोहा—गरभ स्रवय अवनिप रमनि, सुनि कुठार गति घोर ।
परसु हाथ जिबइत लखो, बैरी भूप किसोर ॥२७९॥

चलय न हाथ जरय रिस छाती । भेल भोथ फरसा नृपघाती ॥१॥
विधि भेल बाम प्रकृत भेल तेहन । मम हिय कृपा न कहियो एहन ॥२॥
आइ दैव दुख दुसह सहाओल । सुनि सौमित्र विहुँसि सिर नाओल ॥३॥
कृपा वायु मूरति अनुकूले । बाजी बचन झरय जनि फूले ॥४॥
मुनि कय कृपा जरय यदि गाते । रिस भेने तनु राख विधाते ॥५॥
देखु जनक हठि बालक एहे । करय चाह जड़ जमपुर गेहे ॥६॥

किये न करह झट आँखिक ओटे । लखिअ छोट नृपसुत अति खोटे ॥७॥
विहुँसि लखन पुनि उठला भाखी । क्यो न कतहु जौँ मुनि ली आँखी ॥८॥

दोहा—परसुराम पुनि राम प्रति, बजला उर अति क्रोध ।
संभु सरासन तोड़ि सठ, हमरा करह प्रबोध ॥२८०॥

ई तव मतेँ कहय कटु बानी । तोँ छल बिनय करह जोरि पानी ॥१॥
करह तोष मम कय संग्रामे । नहि तौँ तजह कहायब रामे ॥२॥
छल तजि करह समर सिव द्रोही । नहि तौँ सानुज मारब तोही ॥३॥
परसु उठाय बकय भृगुनाथे । मुसुकथि राम झुकौने माथे ॥४॥
लखन दोष पुनि मोहि पर रोषे । सुधपन सेहो कतहु बड़ दोषे ॥५॥
टढ़ जानि सभ नमय जहाने । राहु न गरसय बंकिम चाने ॥६॥
राम कहल रिस तजू मुनीसे । कर कुठार आगू मम सीसे ॥७॥
जाय जेना रिस से करु स्वामी । हमरा बुझू अपन अनुगामी ॥८॥

दोहा—प्रभु सेवक बिच समर की, तजू बिप्रवर रोष ।
बेष देखि कय कहल किछु, नेना कर नहि दोष ॥२८१॥

देखि कुठार बान धनुधारी । सिसु केँ भेल रिस बीर बिचारी ॥१॥
चिन्हल न जनितहुँ नाम प्रभावे । उतर देल तैँ वंस स्वभावे ॥२॥
मुनिक बेष मे जैँ अहँ अबितहुँ । पद रज सिर धरइत सिसु पबितहुँ ॥३॥
छमिय चूक बुझि कय अनजाने । चही बिप्र उर कृपा महाने ॥४॥
हमर अहँक समता की नाथे । कहु तौँ कहाँ चरन कहँ माथे ॥५॥
राम मात्र अछि मम लघु नामे । तव बड़ नाम परसु सह रामे ॥६॥
मात्र एक गुन धनु मम हाथे । नव गुन परम पूत तव नाथे ॥७॥
सब बिधि अहँ सौँ मानल हारी । छमु अपराध बिप्र मम भारी ॥८॥

दोहा—बार बार मुनि बिप्रवर, कहल राम सौँ राम ।
बजला भृगुपति सरुप हँसि, तोहू बंधु मन बाम ॥२८२॥

निपट बिप्र तोँ बुझलह मोही । जेहन बिप्र सुनवैछी तोही ॥१॥

चाप स्रुवा सर आहुति जानह । घोर कृसानु कोप मम मानह ॥२॥
समिधा चतुरंगिनी बिसाले । बलि पसु भेल महा महिपाले ॥३॥
हम येहि परसु काटि बलि देलहुँ । समर जज्ञ जप कोटिक केलहुँ ॥४॥
हमर प्रभाव बिदित नहि तोही । बाजह निदरि बिप्र बुझि मोही ॥५॥
अहमिति बढ़लह तोड़ल चापे । जनि जग जीति ठाढ़ बड़ दापे ॥६॥
राम कहल मुनि कहू बिचारी । लघु मम चूक क्रोध तव भारी ॥७॥
छुबितहि टुटल पिनाक पुराने । हम कोन हेतु करब अभिमाने ॥८॥

दोहा—जौँ हम निदरी बिप्र बुझि, सत्य सुनू भृगुनाथ ।
एहन के जग सुभट जनि, डरेँ झुकाबी माथ ॥२८३॥

देव दनुज भूपति भट नाना । सम बल हो कि अधिक बलवाना ॥१॥
जौँ क्यो रन ललकारय आबी । करब सुखेँ रन कालहुँ पाबी ॥२॥
डरय समर धय छत्रिय देहे । कुल कलंक पामर अछि सेहे ॥३॥
कही सोभाव न कुलहिँ प्रसंसी । कालहुँ डरथि न रन रघुवंसी ॥४॥
बिप्रकुलक ई प्रभुत महाने । अहँ सौँ डरि हो अभय जहाने ॥५॥
सुनि मृदु गूढ़ बचन रघुपति केर । उघरल पटल परसुधर मति केर ॥६॥
राम रमापति कर धनु धारू । खीँचि हमर सभ संसय टारू ॥७॥
दैत चाप अपनहि चलि गेले । परसुराम मन बिसमय भेले ॥८॥

दोहा—बुझि प्रभाव रामक तखन, पुलक प्रफुल्लित काय ।
जोरि पानि बजला बचन, हृदय न प्रेम समाय ॥२८४॥

जय रघुबंस बनज बन भानू । गहन दनुज कुल दहन कृसानू ॥१॥
जय सुर बिप्र धेनु हितकारी । जय मद मोह क्रोध भ्रमहारी ॥२॥
बिनयसील करुना गुन सागर । जयति बचन रचना अति नागर ॥३॥
सेबक सुखद सुभग सब अंगे । जय सरीर छबि कोटि अनंगे ॥४॥
करी कोना मुख एक प्रसंसे । जय महेस मन मानस हंसे ॥५॥
अनुचित बहुत कहल अज्ञाते । छमू छमा मंदिर दुहु भ्राते ॥६॥
कहि जय जय जय रघुकुलकेतू । भृगुपति गेला बन तप हेतू ॥७॥

अपभय कुटिल महीप डेरायल । जहँ तहँ कायर गमहिँ पड़ायल ॥८॥

दोहा—देव वजाओल दुंदुभी, प्रभु पर बरपल फूल ।
हरपल पुर नर नारि सब, नसल मोहमय सूल ॥२८५॥

खूब धमाधम बाजा बाजल । सकल मनोहर मंगल साजल ॥१॥
जूथ जूथ मिलि सुमुख सुनयनी । करथि गान कल कोकिल बयनी ॥२॥
जनकक सुख बरनू कोन बीधी । जनम दरिद पाओल जनि नीधी ॥३॥
विगत त्रास सिय भैली सुखारी । जनि बिधु उदय चकोर कुमारी ॥४॥
जनक कयल कौसिकहिँ प्रनामे । प्रभु प्रसाद धनु भंजल रामे ॥५॥
मोहि कृतकृत कयलनि दुहु भाई । उचित आब से कहू गोसाँई ॥६॥
कह मुनि सुनु नरनाथ प्रबीने । छल बियाह सिव चाप अधीने ॥७॥
टुटितहिँ धनु बियाह भय गेले । सुर नर नाग जानि सब लेले ॥८॥

दोहा—तदपि आब अहँ जाय करु, जथा बंस ब्यवहार ।
पूछि बिप्र कुल बृद्ध गुरु, वेद विदित आचार ॥२८६॥

दूत पठाउ अवधपुर जा कय । आनओ नृप दसरथहिँ बजा कय ॥१॥
मुदित कहल नृप बेस कृपाले । दूत पठौल बजा ततकाले ॥२॥
बहुरि महाजन सबहिँ बजौलनि । सादर सिर सब आबि नमौलनि ॥३॥
हाट बाट मंदिर सुरधामे । नगर सजाबह गय सब ठामे ॥४॥
हरपि सबहुँ निज निज गृह गेले । परिचर गन केँ बजबा लेले ॥५॥
मंडप रचह बिचित्र बना कय । सिर धय बचन चलल हरषा कय ॥६॥
बजा पठौल गुनी से ! नाना । जे मंडप बिधि कुसल सुजाना ॥७॥
विधि केँ बंदि कयल आरंभे । बिरचल कनक कदलि केर खंभे ॥८॥

दोहा—हरिअर मनि केर पत्र फल, पदुमराग केर फूल ।
रचना देखि विचित्र अति, हो विरंचि मन भूल ॥२८७॥

हरित मनिक बिरचित सब बाँसे । सरल सगेँठ असल सन भासे ॥१॥
कनक कलित अहि बेलि बनाओल । चिन्हल न जाय सपर्न सजाओल ॥२॥
तकरा रचि पचि बंधन देलनि । बिच बिच मुकुता दाम बनेलनि ॥३॥

मानिक मरकत कुलिस पिरोजे । पचि पचि गहि गुहि रचल सरोजे ॥४॥
बनल भृंग बहुरंग बिहंगे । गूँजय कूजय पवन प्रसंगे ॥५॥
खंभ रचल सुर प्रतिमा काढ़ी । मंगल द्रव्य नेने सब ठाढ़ी ॥६॥
विविध प्रकारें अरिपन साजल । सिंधुर मनिमय सहज बिराजल ॥७॥

दोहा—सौरभ पल्लव सुभग सुचि, कयल नील मनि गोरि ।
मरकत घौर सुवर्णमय, मज्जर पाटक डोरि ॥२८८॥

बंदनबार रुचिर बनबाओल । मानु मनोभव फंद लगाओल ॥१॥
मंगल घट थापल बहु ठामे । ध्वज पताक पट चमर ललामे ॥२॥
दीप मनोहर मनिमय नाना । जाय न कहल बिचित्र बिताना ॥३॥
मंडप जतय बधू बैदेही । कवि के बरनि सकथि कहु तेही ॥४॥
बर छथि राम रूप गुन सागर । से मंडप तिहु लोक उजागर ॥५॥
जनक भवन केर सोभा जेहने । गृह गृह प्रति पुर देखी तेहने ॥६॥
जे तिरहुति ओहि समय निहारल । भुबन चतुर्दस लघु अवधारल ॥७॥
जे संपदा नीच गृह सोहय । से बिलोकि सुरनायक मोहय ॥८॥

दोहा—जहि पुर लछमी बसथि कय, कपट नारि बर बेष ।
कहइत सोभा तहि पुरक, सकुचथि सारद सेष ॥२८९॥

पहुँचल दूत रामपुर पावन । हरषल नगर बिलोकि सोहाओन ॥१॥
भूप द्वार से खबरि जनाओल । दसरथ नृप सुनि दूत बजाओल ॥२॥
कय प्रनाम से पाता देले । मुदित महिप अपने उठि लेले ॥३॥
बारि बिलोचन बचइत पाती । पुलकल गात उमड़ि गेल छाती ॥४॥
राम लखन उर पाती पानी । तीत मीठ किछु फुरय न बानी ॥५॥
बाचल पत्र धीर धय पुनि पुनि । हरषल सभा बात सत सुनि सुनि ॥६॥
खेलइत भरत लखन सुधि पाओल । बंधु सखा सब संगहि धाओल ॥७॥
पुछलनि अति सिनेह सकुचायल । तात कहाँ सौँ पाता आयल ॥८॥

दोहा—कुसल प्रान प्रिय बंधु दुहु, छथि कहु कोन सुदेस ।
सुनि सिनेह सानल बचन, बाचल बहुरि नरेस ॥२९०॥

सुनि पाती पुलकित दुहु भ्राता। अधिक सिनेह समाय न गाता ॥१॥
प्रीति पुनीत भरत केर देखी। सकल सभा सुख लहल बिसेखी ॥२॥
भूप दूत कें लग बैसाओल। मधुर मनोहर वचन सुनाओल ॥३॥
भैया कहह कुसल दुहु लालक। निज दृग देखलह नीकें बालक ॥४॥
स्याम गौर धेने धनु भाथे। बय किसोर कौसिक मुनि साथे ॥५॥
चिन्हलह कहह सोभाव सरूपे। प्रेम बिबस पुनि पुनि पुछ भूपे ॥६॥
कौसिक लय गेलथिन्ह जहिया सौं। सच सुधि आइ पौल तहिया सौं ॥७॥
कहह कोना चिन्हि लेल बिदेहे। बिहुँसल चर, प्रिय बच सुनि सेहे ॥८॥

दोहा—सुनू महीपति मुकुट मनि, अहँ सम धन्य न अन्य।
राम लखन जनि तनय युग, बिस्व बिभूषन गन्य ॥२६१॥

पुछय जोग नहि अहँक कुमारे। पुरुष सिंह तिहुपुर उजियारे ॥१॥
जनिकर जस प्रताप लग भूतल। चान मलिन रवि लागथि सीतल ॥२॥
तनिका चिन्हल पुछी किय नाथे। देखब रवि की दीपक हाथे ॥३॥
सीय स्वयंबर भूप अनेके। जुटला सुभट एक सौं एके ॥४॥
संभु सरासन क्यो नहि टारल। सब बरियार बीरगन हारल ॥५॥
जे भट मानी त्रिभुवन मंडल। सिव धनु सबहुक गौरव खंडल ॥६॥
बुझय सरासुर मेरु न भारी। सेहो घुरि फिरि सटकल हारी ॥७॥
कौतुक जे सिव सैल उठौलक। सेहो सभा पराभव पौलक ॥८॥

दोहा—तहाँ राम रघुवंसमनि, सुनू महा महिपाल।
भाँगल चाप प्रयास बिनु, जनु गज पंकज नाल ॥२६२॥

भृगुपति येला क्रोध सौं माँती। आँखि देखौलनि से बहु भाँती ॥१॥
देखि राम बल निज धनु देलनि। कय बहु बिनय गमन बन केलनि ॥२॥
राजन राम अतुल बल जेहने। तेज निधान लखन पुनि तेहने ॥३॥
हेरितहिँ जनिक काँप नृप तहिना। सिंह सिसुक सनमुख गज जहिना ॥४॥
प्रभु दुहु बालक लखल जखन सौं। क्यो नहि आवय नजरि तखन सौं ॥५॥
दूत वचन रचना प्रिय लागल। प्रेम प्रताप वीर रस पागल ॥६॥
सभा समेत भूप अनुरगला। चरहिँ निछाउरि देबय लगला ॥७॥
मूनल कान अनीति उचारी। मानल सुख सब धरम बिचारी ॥८॥

दोहा—नृप उठि तखन बसिष्ठ कें, देल पत्रिका जाय।
गुरु कें कथा सुनौल सब, सादर चरहिँ बजाय ॥२९३॥

सुनि गुरु बजला अति सुख मानी। पुन्य पुरुष कें महि सुख खानी ॥१॥
सरित जेना सिंधुक पथ धरइछ। जदपि न सिंधु कामना करइछ ॥२॥
तहिना सुख संपति अनयासे। जाय स्वयं पुनमंतक पासे ॥३॥
अहँ गुरु बिप्र धेनु सुर सेवी। तहिना सुचि कौसल्या देवी ॥४॥
जग मे सुकृती अहँक समाने। भेल न अछि न हैत नहि आने ॥५॥
अहँ सौं अधिक पुन्य बड़ कनिका। राजन राम सरिस सुत जनिका ॥६॥
बीर बिनीत धरम ब्रत धारी। गुन सागर बर बालक चारी ॥७॥
अहँ कें सर्बकाल कल्याने। सजु बरियात बजाय निसाने ॥८॥

दोहा—चलू तुरत गुरु बचन सुनि, कहि भल माथ झुकाय।
गेला भूपति भवन निज, चर कें बास देआय ॥२९४॥

राजा सब रनिबास बजौलनि। जनक पत्रिका बाँचि सुनौलनि ॥१॥
सुनि संदेह हरष सब मानल। अपर कथा सब भूप बखानल ॥२॥
प्रेम प्रफुल्लित राजथि रानी। जेना सिखिनि सुनि बारिद बानी ॥३॥
आसिष देथि मुदित गुरु नारी। अति आनंद मगन महतारी ॥४॥
लेथि परसपर अति प्रिय पाती। हृदय लगाय जुड़ाबथि छाती ॥५॥
राम लखन कीरति करतूते। नृपबर बरनल बेरि बहूते ॥६॥
मुनि प्रसाद कहि गेला दोआरी। रानी लेल महिदेब हँकारी ॥७॥
देलनि दान सहित आनंदे। आसिष दैत गेला द्विज बृंदे ॥८॥

सोरठा—जाचक लेलनि हकारि, देलनि निछाउरि कोटि बिधि।
चिरजीबथु सुत चारि, चक्रबर्ति दसरथ नृपक ॥२९५॥

कहइत चलल पहिरि पट नाना। हरषि धमाधम हनल निसाना ॥१॥
समाचार पुरबासी जानल। हरष बधाबा घर घर ठानल ॥२॥
भुवन चारिदस भरल उछाहे। जनकसुता रघुबीर बियाहे ॥३॥
सुनि सुभ कथा लोक अनुरागल। पथ गृह गली सजाबय लागल ॥४॥
जद्यपि अवध सदैव सोहावन। रामपुरी मंगलमय पावन ॥५॥

तदपि प्रीति केर रीति बिचारी । मंगल साज रचल मनहारी ॥६॥
ध्वज पताक पट चमर ललामे । हाट बजार परम छवि धामे ॥७॥
कनक कलस तोरन मनि जाले । हरदि दूबि दधि अच्छत माले ॥८॥

दोहा—मंगलमय निज निज भवन, सब क्यो सजइत भेल ।
गली गली सिंचि अरगजा, चौक मनोहर देल ॥२६६॥

जहँ तहँ जूथ जूथ मिलि भामिनि । सजि नबसप्त सकल दुति दामिनि ॥१॥
बिधु बदनी मृग साबक लोचनि । निज सरूप रति मान बिमोचनि ॥२॥
मंगल मंजुल बानी गाबथि । कलरब सौँ कलकंठि लजाबथि ॥३॥
भूप भवन नहि जाय बखानल । विस्व बिमोहन मंडप तानल ॥४॥
मंगल द्रब्य मनोहर नाना । राजय बाजय बिपुल निसाना ॥५॥
कतहु बिरद बंदीजन पढ़इछ । कतहु वेद धुनि द्विज उच्चरइछ ॥६॥
गाबथि सुंदरि मंगल गीते । लय लय नाम राम औ सीते ॥७॥
बहुत उछाह भवन लघु भरले । उमगि उमड़ि चहु दिसि चलि पड़ले ॥८॥

दोहा—दसरथ गृह सोभा बरनि, के कवि पाओत पार ।
जतय सकल सुर सीस मनि, राम लेल अबतार ॥२६७॥

कहल भरत केँ भूप बजा कय । हय गज स्यंदन साजू जा कय ॥१॥
चलू वेगि रघुवीर बराते । सुनति पुलकि उठला दुहु भ्राते ॥२॥
भरत प्रबंधक गनहिँ बजाओल । अनुमति देल मुदित उठि धाओल ॥३॥
रुचिर जीन रचि हय सब साजय । बरन बरन बर बाजि बिराजय ॥४॥
सुभग सकल सुठि चंचल करनी । अय इव जरय धरति पद धरनी ॥५॥
नाना जाति न होअय बखानी । उड़य चाह पवनहुँ अपमानी ॥६॥
बनि ठनि सब पर भेल असबारे । भरतक सम बय राजकुमारे ॥७॥
सब सुंदर सब भूषनधारी । कर सर चाप तून कटि भारी ॥८॥

दोहा—बीछल छबिगर छैल सब, सूर सुजान नवीन ।
जुग पदचर असवार प्रति, जे असि कला प्रवीन ॥२६८॥

बिरुद प्रसिद्ध बीर रन गाढ़े । निकसि भेला पुर बाहर ठाढ़े ॥१॥
फेरथि चतुर तुरग गति नाना । हरषथि सुनि सुनि पनव निसाना ॥२॥

रथ बिचित्र सारथी बनाओल । ध्वज पताक मनि भुषन लगाओल ॥३॥
चँवर चारु किंकिनि धुनिकारी । भानु जान सोभा अपहारी ॥४॥
मख मत स्यामकरन बहु बाजी । जोतल रथ सारथिगन साजी ॥५॥
सुंदर सकल अलंकृत सोहय । जे विलोकि मुनिगन मन मोहय ॥६॥
जे जल मे चल थलक समाने । टाप न डुबय तेँहन गतिमाने ॥७॥
अस्त्र सस्त्र सब साज सजा कय । आनल सारथि रथी बजा कय ॥८॥

दोहा—चढ़ि चढ़ि रथ बाहर नगर; जूटि रहल बरियात ।
जे जहि काजे जाय जहँ, होअय सगुन सब कात ॥२९९॥

हौदा करिबर पीठ सजाओल । कहि न होयअ जहि भाँति बनाओल ॥१॥
चलल मत्त गज घंट बिराजय । मानु सुभग साओन घन राजय ॥२॥
बाहन उपर अनेक बिधाने । सिबिका सुभग सुखासन जाने ॥३॥
चढ़ि चललाह बिप्रबर बृंदे । जनि तन धयल सकल श्रुति छंदे ॥४॥
मागध सूत बंदिगन गायक । चलल जान चढ़ि जे जहि लायक ॥५॥
बेसर ऊँट बृषभ बहु जाती । चलल बस्तु भरि अगनित भाँती ॥६॥
चलल कोटि भरिया भरि भारे । सकय बरनि के बस्तु अपारे ॥७॥
चलल सकल सेवकगन संगे । साज समाज बना बहु रंगे ॥८॥

दोहा—सबहुक उर पूरल हरष, पुलकित सकल सरीर ।
दृग भरि अबलोकब कखन, राम लखन दुहु वीर ॥३००॥

गरजय गज घंटा धुनि घोरे । रथ रब हय हिन हिन चहु ओरे ॥१॥
निदरि जलद घुमरैछ निसाने । निज पर किछु सुनि पड़य न काने ॥२॥
महाभीर महराजक द्वारे । पाथर रज कन पैरक मारे ॥३॥
चढ़लि अटारी देखथि नारी । लेँने आरती मंगल थारी ॥४॥
गाबथि गीत मनोहर बानी । अति आनंद न होअय बखानी ॥५॥
तखन सुमंत जुगल रथ साजी । जोतल रवि हय निंदक बाजी ॥६॥
दुहु रथ रुचिर भूप लग आनल । जाय सारदहुँ सौँ न बखानल ॥७॥
राज समाज एक रथ साजल । दोसर तेजपुंज अति भ्राजल ॥८॥

दोहा—तहि रथ रुचिर वसिष्ठ कें, हरपि चढ़ाय नरेस।
अपनहु रथ चढ़ला सुमिरि, हर गुरु गौरि गनेस ॥३०१॥

सहित वसिष्ठ सोभ नृप केना। सुर गुरु संग पुरंदर जेना ॥१॥
कय कुल रीति वेद बिधि राजा। देखि समारल सकल समाजा ॥२॥
सुमिरि राम गुरु अनुमति पाकय। चलला भूपति संख बजाकय ॥३॥
सुर हरषित निहारि बरियाती। बरखाबथि मंगल फुलपाती ॥४॥
हय हिँहिँआय गरज गजराजा। नभ बरियात बाज बहु बाजा ॥५॥
सुर नर नारि सुमंगल गाबय। सरस राग सहनाइ बजाबय ॥६॥
घंट घंटि धुनि के कहि पाबय। सरोँ करय भट ध्वज फहराबय ॥७॥
करय बिदूषक कौतुक नाना। हास कुसल कलगान सुजाना ॥८॥

दोहा—तुरग नचावथि कुमर बर, सुनि मिरदंग निसान।
चकित निहारय चतुर नट, डगय न ताल बँधान ॥३०२॥

बरनल हो न एजल बरियाता। होअय सगुन सुंदर सुभदाता ॥१॥
नीलकंठ चरइत अछि बामे। कहय सकल मंगल परिनामे ॥२॥
कौआ दहिन सुखेतहिँ भाबय। नकुलक दरसन सब क्यो पाबय ॥३॥
पवन त्रिविध अनुकूल जुड़ाबय। घट भरि सिसु सँग बनिता आबय ॥४॥
नढ़या घुरि घुरि दरस देखाबय। सनमुख सिसु केँ सुरभि पिआबय ॥५॥
मृग पाँती घुरि दहिना आबय। जनि मंगल समूह दरसाबय ॥६॥
छेमकरी कह छेम बिसेखी। स्यामा बाम सुतरु पर देखी ॥७॥
सनमुख ऐल दही ओ मीने। कर पुस्तक दुइ बिप्र प्रवीने ॥८॥

दोहा—मंगलमय कल्यानमय, दाता अभिमत केर।
मानु सगुन सत होअक हित, भेल सब एकहि बेर ॥३०३॥

मंगल सगुन सुगम सब तनिका। सगुन ब्रह्म सुंदर सुत जनिका ॥१॥
राम सरिस बर दुलहिन सीते। समधी दसरथ जनक पुनीते ॥२॥
येहन बियाह सगुन सब नाचे। आब कयल बिधि हमरा साँचे ॥३॥
कयल बराति जखन प्रस्थाने। हय गज गरजय हनल निसाने ॥४॥
अबइत जानि भानु कुल केतू। जनक बन्हौल सरित सब सेतू ॥५॥

बास रचाओल बिच बिच सुंदर । सुरपुर सन संपदा भरल घर ॥६॥
असन सयन बर बसन सोहाओन । पाबथि सब निज निज मन भाओन ॥७॥
लखि लखि प्रिय सुख नित नव भाँती । निज घर बिसरि गेल बरियाती ॥८॥

दोहा--धमधम धुनि डंकाक सुनि, अबइत बुझि बरियाति ।
सजि गजरथ पदचर तुरग, चलल लेबय सरियाति ॥३०४॥

मास पारायण, विश्राम--१०

कनक कलस भरि कोपर थारे । भाजन ललित अनेक प्रकारे ॥१॥
भरल सुधा सम सब पकवाने । भाँति भाँति नहि होअय बखाने ॥२॥
फल अनेक बर बस्तु अनूपे । हरषि पठौल भेंट हित भूपे ॥३॥
भूषन बसन महामनि नाना । खग मृग हय गज बहुविधि जाना ॥४॥
मंगल सगुन सुगंध जतेको । महिप पठौलनि भाँति अनेको ॥५॥
दधि चूराक उपाति अपारे । चलल उठा भरिया बहु भारे ॥६॥
सरियाती केँ लखि बरियाती । गेल पुलकि तन प्रमुदित छाती ॥७॥
देखि साज सज्जित सरियाती । मुदित निसान हनल बरियाती ॥८॥

दोहा--हरषि परस्पर मिलक हित, चलल डोरि ढिलि मोड़ि ।
जनि आनंद समुद्र दुइ, मिलय किनारहिँ छोड़ि ॥३०५॥

बरषि सुमन सुर सुंदरि गाबथि । मुदित देब दुंदुभी बजाबथि ॥१॥
बस्तु सकल नृप आगू धयलनि । नेह समेत बिनय बहु कयलनि ॥२॥
प्रेम समेत भूप सब लेलनि । भेल बकसीस जाचकहिँ देलनि ॥३॥
पूजि प्रसंसा कय सनमानल । जनबासा सादर लय आनल ॥४॥
बसन बिचित्र पथंबर पड़ले । देखि धनद धनमद परिहरले ॥५॥
अति सुंदर देलनि जनबासे । जहँ सब केँ सब भाँति सुपासे ॥६॥
ऐल बराति सीय बुझि पौलनि । किछु निज महिमा प्रगटि जनौलनि ॥७॥
हृदय सुमिरि सब सिद्धि बजौलनि । करय भूप पहुनाइ पठौलनि ॥८॥

दोहा--सिय निदेस सुनि सिद्ध सब, गेली जहँ जनबास ।
लेने संपदा सकल सुख, सुरपुर भोग बिलास ॥३०६॥

निज निज वास देखि बरियाती । सुर सुख सकल सुलभ सब भाँती ॥१॥
बिभव भेद किछु क्यो नहि जानथि । सब क्यो जनक बड़ाइ बखानथि ॥२॥
सिय महिमा रघुनायक जानल । हृदय हेतु बुझइत मुद मानल ॥३॥
पितु आगमन सुनति दुहु भ्राते । अति आनंद अँटय नहि गाते ॥४॥
सकुचथि कहि न सकथि किछु गुरु लग । पितु दरसन लालच मन उन्मग ॥५॥
विस्वामित्र बिनय बड़ देखी । उपजल उर संतोष बिसेखी ॥६॥
हृदय लगौल हरषि दुहु भ्राते । दृग जल उमड़ल पुलकित गाते ॥७॥
चलला जहँ दसरथ जनबासे । सर जनि चलल पियासुक पासे ॥८॥

दोहा—मुनि केँ देखल जखन नृप, तनय समेत अबैत ।
उठि हरषित सुख सिंधु मे, चलथि थाह जनु लैत ॥२०७॥

मुनिहिँ दंडवत कयल मुनीसे । बेरि बेरि पद रज धय सीसे ॥१॥
कौसिक लेल नृपति उर आनी । कुसल पुछल कहि आसिष बानी ॥२॥
पुनि दंडवत करति दुहु भ्राते । लखि समाय नहि सुख नृप गाते ॥३॥
सुत हिय लगा दुसह दुख मेटल । मृतक सरीर प्रान जनि भेटल ॥४॥
पुनि बसिष्ठ पद सीस नमौलनि । प्रेम मुदित मुनि हृदय लगौलनि ॥५॥
द्विजहिँ भाय दुहु कयल प्रनामे । पौलनि आसिष मन अभिरामे ॥६॥
भरत सहानुज कयल प्रनामे । लेल उठाय लगा उर रामे ॥७॥
हरषित लखन देखि दुहु भ्राते । मिलथि प्रेम परिपूरित गाते ॥८॥

दोहा—पुरजन परिजन जातिजन, जाचक मंत्री मीत ।
मिलला बिधिवत सबहिँ प्रभु, परम कृपालु बिनीत ॥२०८॥

रामहिँ लखि जुड़ैल बरियाती । प्रीतिक रीति कही कोन भाँती ॥१॥
नृप समीप सोभथि सुत चारी । जनि धन धरम आदि तनधारी ॥२॥
सुत समेत दसरथ केँ देखी । मुदित नगर नर नारि बिसेखी ॥३॥
सुमन बरषि सुर हनय निसाने । नाक नटी नाचय कय गाने ॥४॥
सतानंद औ बिप्र सचिवगन । मागध सूत बिदुप बंदीजन ॥५॥
सनमानल नृप सह बरियाती । आज्ञा माँगि घुरल सरियाती ॥६॥
लगन पूर्व बरियाती आयल । तहि सौँ पुर प्रमोद अधिकायल ॥७॥
ब्रह्मानंद लोक सब लहथी । बढ़ौ दिबस निसि बिधि सौँ कहथी ॥८॥

दोहा—राम सीय सोभा अवधि, सुकृत अवधि दुहु राज ।
जहँ तहँ पुरजन कहथि ई, मिलि नर नारि समाज ॥३०९॥

जनक सुकृत मूरति वैदेही । दसरथ सुकृत राम छथि देही ॥१॥
सिव न अराधल हिनि सम आने । लहल न क्यो फल हिनक समाने ॥२॥
हिनि सम क्यो न भेल संसारे । अछि नहि कतहु न पुनि होनिहारे ॥३॥
भेलहुँ सकल सुकृत केर रासी । हम जग जनमि जनकपुर बासी ॥४॥
राम जानकी छबि जे देखल । मम सम सुकृती जाय के लेखल ॥५॥
पुनि रघुवीर बियाह निहारी । नयन लाभ फल पायब भारी ॥६॥
कहथि परसपर कोकिल बयनी । यहि बियाह बड़ लाभ सुनयनी ॥७॥
विधि बड़ भाग बनाओल बाता । नयन अतिथि हैता दुहु भ्राता ॥८॥

दोहा—बारंबार सिनेह बस, जनक बजौता सीय ।
लेबय औता बंधु दुहु, कोटि काम कमनीय ॥३१०॥

सब बिधि पहुनइ होयत भारी । ककरा प्रिय न येहन ससुरारी ॥१॥
राम लखन केँ तखन निहारी । होयता सब पुरलोक सुखारी ॥२॥
राम लखन जोड़ी सखि जेहने । भूप संग दुइ औरो तेहने ॥३॥
स्यामल गौर अंग छबिधारी । से सब कहय जे ऐल निहारी ॥४॥
कहल एक हम आइ निहारल । जनि विरंचि निज हाथ समारल ॥५॥
भरत रामहिक छथि अनुहारी । सहसा लखि न सकथि नर नारी ॥६॥
लखन सत्रुसूदन येक रूपे । नख सौँ सिख धरि अंग अनूपे ॥७॥
मन भावय मुख बरनि न पावय । उपमा त्रिभुवन ध्यान न आवय ॥८॥

छंद—तुलसी न उपमा क्यो कतहु कवि बुध कहथि जे से सुनू ।
बल बिनय बिद्या सील सोभा सिंधु हिनि सन हिनि गुनू ॥
हम नगर नारि पसारि आँचर येह विधि विनती करी ।
चारू बियाहल जाथि एतहि गाबि मंगल मुद भरी ॥

सोरठा—कहथि परसपर नारि, बारि बिलोचन पुलक तन ।
पुरता सब त्रिपुरारि, पुन्य पयोनिधि भूप दुहु ॥३११॥

यहि विधि सकल मनोरथ करथी । आनँद उमगि उमगि उर भरथी ॥१॥
जे नृप सीय स्वयंबर एला । लखि सब बंधु सुखी भय गेला ॥२॥
कहथि राम जस बिरद बिसाले । निज निज गृह गेला महिपाले ॥३॥
गेल बीति किछु दिन यहि भाँती । प्रमुदित पुरजन सब बरियाती ॥४॥
मंगल लगन ऐल मनभावन । हिमरितु अगहन मास सोहावन ॥५॥
ग्रह तिथि नखत जोग बर बारे । लगन ताकि विधि कयल बिचारे ॥६॥
पठा देल नारद कर सेहे । जनक गनकजन गुनलनि जेहे ॥७॥
सकल लोक सुनि कय ई बाता । कहथि जोतिषी थिका विधाता ॥८॥

दोहा—गोधूली बेला बिमल, सकल सुमंगल मूल ।
द्विजगन कहल बिदेह सौँ, जानि समय अनुकूल ॥३१२॥

पुरहित केँ कहलनि महराजे । देरिक आब कोन अछि काजे ॥१॥
सतानंद सुनि सचिव बजाओल । मंगल सकल साजि सब लाओल ॥२॥
संख निसान ढोल बहु बाजय । मंगल कलस सगुन सुभ साजय ॥३॥
सुभग सुआसिनि गाबथि गीते । करथि वेद धुनि बिप्र पुनीते ॥४॥
लँबय चलल सादर यहि भाँती । जहँ छल जनबासा बरियाती ॥५॥
कोसलनाथक देखि समाजे । लागल तनि अति लघु सुरराजे ॥६॥
समय भेल प्रभु जाय पधारल । सुनितहिँ चोट निसानहिँ मारल ॥७॥
गुरु सौँ पुछि कुलविधि कय राजा । चलला सँग मुनि साधु समाजा ॥८॥

दोहा—भाग्य बिभव कोसलपतिक, सुर ब्रह्मादि निहारि ।
करथि प्रसंसा सहस मुख, अपन जनम धिरकारि ॥३१३॥

सुरगन जानि सुमंगल बेरी । फुल बरसौल बजा कय भेरी ॥१॥
सिव ब्रह्मादिक गिविध बरूथे । चढ़ि बिमान कय नाना जूथे ॥२॥
प्रेम पुलक तन हृदय उछाहे । चलला देखय राम बियाहे ॥३॥
देखि जनकपुर सुर अनुरागल । निज निज लोक सबहिँ लघु लागल ॥४॥
देखथि चकित विचित्र बिताना । रचना सकल अलौकिक नाना ॥५॥
नगर नारि नर रूप निधाने । सुघर सुधरम सुसील सुजाने ॥६॥
तनिका देखि सब सुर सुरदारा । भेली जनि ससि सनमुख तारा ॥७॥
विधिहिँ भेल आश्चर्य बिसेखी । कतहु न किछु निज करनी देखी ॥८॥

दोहा—संभु बुझौलनि सुरगनहिँ, अचरज करति न जाह ।
हृदय बिचारह धीर धय, सिय रघुबीर बियाह ॥३१४॥

जनिकर नाम लैत भूतल मे । नसय समूल अमंगल पल मे ॥१॥
करतल होअय पदारथ चारी । से सिय राम कहल कामारी ॥२॥
येहि बिधि सिब सुरगनहिँ बुझौलनि । बर बसहा पुनि आगु बढ़ौलनि ॥३॥
सुरगन देखल दसरथ जाइत । महामोद मन अँग पुलकाइत ॥४॥
साधु समाज संग महिदेबा । जनि धय देह करय सुख सेबा ॥५॥
सोभथि संग सुभग सुत चारी । जनि अपबरग सकल तनुधारी ॥६॥
मरकत कनक बरन बर जोरे । देखि सुरहिँ भेल प्रीति न थोरे ॥७॥
पुनि रामहिँ बिलोकि हिय हरषल । नृपहिँ सराहि सुमन सुर बरषल ॥८॥

दोहा—राम रूप नख सिख सुभग, बारंबार निहारि ।
पुलक गात लोचन सजल, उमा समेत पुरारि ॥३१५॥

केकि कंठ दुति स्यामल अंगे । तड़ित बिनिंदक बसन सुरंगे ॥१॥
ब्याह बिभूषन बिबिध बनाओल । मंगलमय सब भाँति सजाओल ॥२॥
सरद बिमल बिधु बदन सोहावन । नयन नबल राजीब लजावन ॥३॥
सब सौँदर्य अलौकिक रहले । भावय मनहिँ जाय नहि कहले ॥४॥
बंधु मनोहर सोभथि संगे । जाथि चपल नचबैत तुरंगे ॥५॥
राजकुमर बर बाजि देखाबथि । बंस प्रसंसक बिरद सुनाबथि ॥६॥
राम बिराजथि जाहि तुरंगे । गति बिलोकि खगनायक दंगे ॥७॥
कहि न सकी सब भाँति अनूपे । काम धयल जनि बाजि सरूपे ॥८॥

छंद—जनि बाजि बेष बनाय मनसिज राम हित अति सोहथी ।
से अपन बय बल रूप गुन गति सकल भुबन बिमोहथी ॥
जगमगय जीन जड़ाउ जोति सुमोति मनि मानिक खचित ।
किंकिनि ललाम लगाम सुठि लखि देव मुनि नर बहु चकित ॥

दोहा—प्रभु मानस लयलीन मन, हय चलैत छबि पाव ।
भूषित उड़गनु तड़ित घन, मानु मयूर नचाब ॥३१६॥

राम सवार बाजि बर जाही । बरनि सारदो सकथि न ताही ॥१॥
संकर राम रूप अनुरागल । नयन पंचदस अति प्रिय लागल ॥२॥
प्रेम सहित हरि राम निहारल । रमा रमापति स्वसुधि बिसारल ॥३॥
निरखि राम छबि विधि हरषैला । आठे नयन जानि पछतैला ॥४॥
छथि प्रसन्न बड़ सुरसेनानी । विधि सौँ डेढ़ गुन दृग फल जानी ॥५॥
रामहिँ चितथि सुजान सुरेसे । गौतम साप बुझल हित वेसे ॥६॥
लखि सिहाथि सब देव समाजे । क्यो न पुरंदर सम छथि आजे ॥७॥
मुदित देवगन रामहिँ देखी । नृप समाज दुहु हरष बिसेखी ॥८॥

छंद—अति हरष देव समाज दुहु दिसि बाज दुंदुभि धुनि घनी ।
सुर हरषि उझिलथि सुमन कहि कहि जयति जय रघुकुल मनी ॥
येहि भाँति बुझि बरियाति अबइत, बहुत बाजन बाजले ।
रानी सुआसिनि बजा परिछनि हेतु मंगल साजले ॥

दोहा—साजि आरती विविध बिधि, मंगल सकल सम्हारि ।
चललि मुदित परिछन करय, गजगामिनि वर नारि ॥३१७॥

बिधुवदनी सब सब मृगलोचनि । सब निज तनु छबि रति मदमोचनि ॥१॥
सजने बरन बरन बर चीरे । रचने भूषन सकल सरीरे ॥२॥
अंग सुमंगल सकल सजाओल । मधुर गीत कलकंठि लजाओल ॥३॥
कंकन किंकिनि नूपुर झंकृत । चालि बिलोकि काम गज कंपित ॥४॥
बाजय बाजा बिविध प्रकारे । नभ ओ नगर मंगलाचारे ॥५॥
सची सारदा रमा भवानी । जे सुर तिय सुचि सहज सयानी ॥६॥
कपट नारि वर बेष बना कय । मिलली सब रनिबासा जा कय ॥७॥
मंगल बानी सब क्यो गाबथि । हरष बिवस क्यो नहि बुझि पाबथि ॥८॥

छंद—के जान ककरा मोद बस सब ब्रह्मवर परिछय तहाँ ।
कलगान मधुर निसान सुर बरखथि सुमन सोभा महा ॥
आनंद कंद बिलोकि बर कैँ सकल हिय हरषित छली ।
अंभोज अंबक अंबु उमड़ल अंग अति पुलकावली ॥

दोहा—जे सुख सिय कर माय मन, देखि राम बर बेष।
से न सकथि कहि कलप सय, सहस सारदा सेष ॥३१८॥

रोकि नयन जल मंगल जानी। परिछनि करथि मुदित मन रानी ॥१॥
वेद बिदित ओ कुल आचारे। कयलनि भल बिधि सब व्यवहारे ॥२॥
पंच सबद धुनि मंगल गाना। बाट पथंबर पड़ बिधि नाना ॥३॥
कय आरती अरघ तनि देलनि। राम गमन मंडप दिसि केलनि ॥४॥
दसरथ सहित समाज बिराजय। बिभव बिलोकि लोकपति लाजय ॥५॥
समय समय बरखथि सुर फूले। सांति पढ़थि महिसुर अनुकूले ॥६॥
कोलाहल नभ नगर महाने। निज पर क्यो किछु सुनय न काने ॥७॥
येहि बिधि माड़ब राम अनाओल। अरपि अरघ आसन बैसाओल ॥८॥

छंद—बैसाय आसन आरती कय निरखि सुख पाबथि कते।
मनि बसन भूषन भूरि निहुछथि गाबि मंगल तिय जते ॥
ब्रह्मादि सुर नर बिप्र बेष बनाय कौतुक देखथी।
अबलोकि रघुकुल कमल रवि छबि सुफल जीवन लेखथी ॥

दोहा—नौआ बारी भाट नट, राम निछाउरि पाय।
मुदित असीषथि सिर नमा, हरष न हृदय समाय ॥३१९॥

दसरथ जनक मिलथि अति प्रीती। कय बैदिक लौकिकहु सब रीती ॥१॥
सोभथि मिलइत दुहु महराजे। उपमा तकइत कवि मन लाजे ॥२॥
मिलल न कतहु हारि हिय मानल। छथि अपने सन ई उर आनल ॥३॥
समधि मिलन लखि सुर अनुरगला। सुमन बरपि जस गाबय लगला ॥४॥
जग उपजौल बिरंचि जखन सौँ। देखल सुनल बहु ब्याह तखन सौँ ॥५॥
सकल भाँति सम साज समाजे। सम समधी देखल हम आजे ॥६॥
सत सुंदर सुर बच सुनि पड़ले। प्रीति अलौकिक दुहु दिसि भरले ॥७॥
पथपट ओछा अरघ दय सादर। आनल दसरथ केँ माँड़ब पर ॥८॥

छंद—मंडप बिलोकि बिचित्र रचना रुचिरता हर मुनि मने।
निज पानि जनक सुजान सब केँ आनि देल सिंहासने ॥

कुल इष्ट सरिस बसिष्ठ पुजि आसीष पौलनि विनय कै।
कौसिकहिँ पूजल परम प्रेमेँ रीति क्यो नहि कहि सकै॥

दोहा—वामदेव रिषि आदि केँ, पूजल मुदित महीस।
देल दिव्य आसन सबहिँ, सब सौँ पौल असीस॥३२०॥

अवधपतिहिँ पुजि कय सनमाने। जानि ईस सम भाव न आने॥१॥
विनय बड़ाइ कयल जोरि पानी। भाग्य बिभव निज बहुत बखानी॥२॥
पूजल भूपति सब बरियाती। सादर समधिक सम सब भाँती॥३॥
सब केँ आसन देल उचीते। मुख येक कहु कि उछाह अमीते॥४॥
सनमानल बरियाती अपने। दान मान बिनती मृदु बचने॥५॥
दिक्पति रवि हरि संभु विधाता। जे रघुवीर प्रभावक ज्ञाता॥६॥
कपट बिप्रवर वेष बना कय। कौतुक देखथि अति हरषा कय॥७॥
पूजल जनक देव सम जानी। बिनु चिन्हनहि देल आसन आनी॥८॥

छंद—जानल चिन्हल ककरो न क्यो सब अपन सुधि बुधि बिसरले।
आनंद कंद बिलोकि बर दुहु पच्छ आनँद उमगले॥
लखि सुरहिँ राम सुजान पूजल मानसिक दय आसने।
पुनि प्रभुक सील सोभाव लखि कय अति मुदित सुरगन मने॥

दोहा—रामचंद्र मुखचंद्र छबि, लोचन चारु चकोर।
करथि पान सादर सकल, प्रेम प्रमोद न थोर॥३२१॥

समय बिलोकि बसिष्ठ बजाओल। सादर सतानंद मुनि धाओल॥१॥
आनु आब झट कुमरि बजा कय। चलला मुद मुनि आज्ञा पा कय॥२॥
सुनि पुरहित केर बानी रानी। प्रमुदित सखिगन सहित सयानी॥३॥
बिप्रबधू कुलबृद्ध बजैलनि। गबइत मंगल कुल बिधि कैलनि॥४॥
नारि वेष जे सुर बर बामा। सब क्यो सहज सुंदरी स्यामा॥५॥
तनिका लखि सुख पावथि नारी। बिनु जननहुँ प्रानहुँ सौँ प्यारी॥६॥
वेरि वेरि सनमानथि रानी। उमा रमा सारद सम जानी॥७॥
सियहिँ सिँगारि समाज सजा कय। मंडप लय चलली हरषा कय॥८॥

छंद—लय चललि सीतहिँ सखी सादर साजि मंगल भामिनी ।
नव सप्त सजने सुंदरी सब मत्त कुंजरगामिनी ॥
कलगान सुनि मुनि ध्यान त्यागथि काम कोकिल लज्जिते ।
मंजीर नूपुर कलित कंकन ताल गति बर रंजिते ॥

दोहा—सोभथि बनिता बृंदमे, सहज सोहावनि सीय ।
छबि ललनागन मध्य जनि, सुखमा तिय कमनीय ॥३२२॥

सिय सुंदरता कौन बिधि गाबी । मति लघु सुंदरता बड़ पाबी ॥१॥
अबितहिँ बरियाती लखि सीता । रूप रासि सब भाँति पुनीता ॥२॥
सकल मनहिँ मन कयल प्रनामे । भेला राम लखि पूरन कामे ॥३॥
दसरथ तनय सहित हरषेला । कहब कि आनंदित कत भेला ॥४॥
सुर प्रनाम कय बरषथि फूले । मुनि आसिष धुनि मंगल मूले ॥५॥
गान निसान कोलाहल भारी । प्रेम प्रमोद मगन नर नारी ॥६॥
सिय मंडप अयली यहि रीती । सांति पढ़थि मुनिराज सप्रीति ॥७॥
तहि अबसर केर बिधि बेवहारे । दुहु कुल गुरु कयलनि आचारे ॥८॥

छंद—आचार कय गुरु गौरि गनपति मुदित पुजबथि द्विजगने ।
सुर प्रगटि पूजा लेथि देथि असीस पाबथि सुख घने ॥
मधुपरक मंगल द्रव्य जे जे मुनि मनहिँ चाहथि जहाँ ।
भरि भरि सुबरनक थार लेने कलस परिचर रह तहाँ ॥
कुल रीति प्रीति समेत रवि कहि देथि कर सब सादरे ।
यहि भाँति सुरगन पूजि सीतहिँ देल सिंहासन बरे ॥
सिय राम अवलोकनि परसपर प्रेम क्यो लखि नहि सकै ;
मन बुद्धि बर बानी अगोचर प्रगट कवि के कहि सकै ॥

दोहा—होम समय तन धय अनल, अति सुख आहुति लेथि ।
बिप्र बेष धय बेद सब, कहि बियाह बिधि देथि ॥३२३॥

जगत बिदित जनकक पटरानी । सीय मातु के सकय बखानी ॥१॥
सुजस सुकृत सुख ओ सुंदरता । सकल समेटि रचल बिधि करता ॥२॥
समय जानि मुनिगन बजबाओल । सुनति सुआसिनि सादर लाओल ॥३॥
जनक बाम दिसि सोभ सुनयना । हिमगिरि सँग जनि सोभथि मयना ॥४॥
कनक कलस सुंदर मनि थारी । भरल सुरभि सुचि मंगल बारी ॥५॥
निज कर प्रमुदित राना रानी । राखल रामक आगू आनी ॥६॥
पढ़थि वेद मुनि मंगल बानी । गगन सुमन झर अवसर जानी ॥७॥
बर बिलोकि दंपति अनुरागल । पैर पुनीत पखारय लागल ॥८॥

छंद—लागल पखारय पाद पंकज प्रेम तन पुलकाबली ।
नभ नगर गान निसान जय धुनि उमड़ सब दिसि पथ गली ॥
जे पद सरोज मनोज अरि उर सर सदैव विभासिते ।
जे सकृत सुमिरति बिमल मन हो सकल कलिमल नासिते ॥
जे परसि कय मुनिघरनि पाओल सुगति पातक दूषिता ।
सुचिता अवधि सुरसरि जकर मकरंद सिव सिर भूषिता ॥
कय मधुप मुनि मन जोगि जन जे सेबि अभिमत गति लहै ।
से पद पखारथि भाग्य भाजन जनक जय जय सभ कहै ॥

बर कुमरि करतल जोरि साखोच्चार दुहु कुलगुरु करैं ।
लखि भेल पानिग्रहन बिधि सुर मनुज मुनि आनँद भरैं ॥
सुखमूल बर लखि दंपतिक तनु पुलक हिय अति हुलसिते ।
कय लोक श्रुति विधि कयल कन्यादान सुभ मिथिलापते ॥
हिमवंत सिव कें सैलजा हरि कें उदधि श्री अरपले ।
जनकहु समरपल राम कें सिय कीर्ति नव जग चमकले ॥
कर कोना विनय विदेह कयल विदेह मूरति साँवरे ।
कय होम बिधिवत गेँठि जोड़ल होअय लागल भाँवरे ॥

दोहा—जय धुनि बंदी वेद धुनि, मंगल गान निसान।
सुनि हरषथि बरषथि बिबुध सुरतरु सुमन सुजान ॥३२४॥

कुमर कुमरि कल भाँवरि देथी। नयन लाभ सब सादर लेथी ॥ १॥
बरनि न होअय मनोहर जोड़े। जे उपमा फुर सब हो थोड़े ॥ २॥
राम सीय सुंदर प्रतिरूपे। जगमगाय मनि खाम्ह अनूपे ॥ ३॥
धय बहु रूप मानु रति कामे। देखथि राम बियाह ललामे ॥ ४॥
सकुच दरस ललसा अति मन मे। प्रगटय ओ बिलाय छन छन मे ॥ ५॥
देखनिहार मगन सब भेला। जनक जकाँ सुधि बुधि भुलि गेला ॥ ६॥
प्रमुदित मुनि भाँमरि करबाओल। नेग सहित बिधि सब निपटाओल ॥ ७॥
राम सीय सिर सिंदुर देले। हो नहि कहि जत सोभा भेले ॥ ८॥
मानु कमल भरि अरुन मरंदहिँ। अमिय लोभ सौँ भूषय चंदहिँ ॥ ९॥
बहुरि बसिष्ठ देल अनुसासन। बैसला बर कन्या येक आसन ॥१०॥

छंद—बैसला बरासन राम जानकि मुदित मन दसरथ भले।
तन पुलक पुनि पुनि देखि कय निज सुकृत सुरतरु नव फले ॥
भरि भुबन भरल उछाह राम बियाह भेल कह सब अहा।
क्यो नहि बखानि सकैछ रसना एक ई मंगल महा ॥
सुनि बहुरि जनक बसिष्ठ अग्याँ ब्याह साज समारि कै।
मुद कुमरि मांडवि उर्मिला श्रुतिकीर्ति आन हँकारि कै ॥
कुसकेतु कन्या प्रथम जे गुन सील सुख सोभावती।
सब रीति प्रीति समेत से ब्याहल भरत कैँ भूपती ॥
जानकि बहिनि लघु उर्मिला सुंदरि सिरोमनि जानि कै।
से सुता देल बियाहि लखनहिँ सकल बिधि सनमानि कै ॥
जनि नाम श्रुतिकीरति सुलोचनि सुमुखि सब गुन आगरी।
से देल रिपुसूदनहिँ भूपति रूप सील उजागरी ॥

अनुरूप बर कन्या परसपर लखि सकुच हिय हरषथी।
सब मुदित सुंदरता सराहथि सुमन सुरगन बरषथी॥
सब सुंदरी सुंदर बरक सह एक मंडप राजथी।
जनि जीव उर चारू अवस्था विभु समेत बिराजथी॥

दोहा—मुदित अवधपति सकल सुत, बधू समेत निहारि।
मानु पौल महिपाल मनि, क्रिया सहित फल चारि॥३२५॥

बिधि रघुवीर बियाहक जहिना। सकल कुमार बियाहल तहिना॥१॥
कहल न हो दहेज जत देले। माड़ब कनक रतन भरि गेले॥२॥
कंबल बसन विचित्र पटोरे। भाँति भाँति बहु मोल न थोरे॥३॥
दासि दास गज रथ हय नाना। धेनु अलंकृत सुरभि समाना॥४॥
बस्तु अनेक जाय नहि लेखल। कहल न हो जानय जे देखल॥५॥
लोकपाल धरि देखि सिहेले। सब सुख मानि अवधपति लेले॥६॥
जाचक जे चाहल से पाओल। उबरल से जनवास पठाओल॥७॥
तखन जोरि कर जनक सुबानी। बजला बरियातिहिँ सनमानी॥८॥

छंद—सनमानि सब बरियाति बिनय बड़ाइ आदर दान दै।
वंदल महामुनिगन समुद पुजि प्रेम ओ सम्मान कै॥
नत माथ देव मनाय सब सौँ कहथि कर संपुट कने।
सुर साधु चाहथि भाव तोष कि सिंधु जल अंजलि देने॥

पुनि जनक बंधु समेत कोसलराज सौँ कर जोरि कै।
बजला मनोहर बयन सील सिनेह रस मे बोरि कै॥
हम अहँक संबंधेँ महीपति पैघ सब विधि आइ छी।
बिनु मोल राज समाज सह सेबक बुझब हरखाइ छी॥

करुनानिधे पालब सदय बुझि दारिका परिचारिका।
बजबाय कयलहुँ धृष्टता से छमब दोष बिकारिका॥

पुनि भानुकुलभूषन समधिकेँ कयल सब आदरनिधी।
छल प्रेम पूरित दुहुक हिय कहि होय नहि विनती बिधी॥
सुरगन सुमन बरषा करथि जनबास गेला भूपती॥
दुंदुभी जय धुनि वेद धुनि नभ पुर भरल कौतुक अती॥
सखि तखन मंगल गान करति मुनीस अनुमति पाय कै।
सह बर बधूगन सुंदरी कोबर चललि हरषाय कै॥

दोहा—पुनि पुनि रामहिँ चितथि सिय, सकुचथि मन सकुचैन।
हरय मनोहर मीन छबि, प्रेम पियासल नैन॥३२६॥

मास पारायण, विश्राम—११

सहजहिँ स्याम सरीर सोहाओन। सोभा कोटि मनोज लजाओन॥ १॥
जावक जुत पद पंकज मनहर। सोहरय मुनि मन मधुप जाहि पर॥ २॥
पीत पुनीत मनोहर धोती। हरय बाल रवि दामिनि जोती॥ ३॥
कल किंकिनि कटि सूत्र मनोहर। बाहु बिसाल बिभूषन सुंदर॥ ४॥
पीयर जनेउ महाछबि पाबै। करक मुद्रिका चित्त चोराबै॥ ५॥
सकल बियाह साज बहु छाजय। उर आयत उर भूपन राजय॥ ६॥
तौनी पियर काँख लपटाओल। दुहु किनार मनि मोति लगाओल॥ ७॥
नयन कमल कल कुंडल काने। बदन सकल सौँदर्य निधाने॥ ८॥
सुंदर भृकुटि मनोहर नासा। भाल तिलक सौंदर्य निबासा॥ ९॥
सोभय मौर मनोहर माथे। गाँथल सुभ मुकुता मनि साथे॥१०॥

छंद—गाँथल महामनि मौर मंजुल अंग सब चितचोर यो।
पुर नारि सुर सुंदरि सकल बर केँ निरखि तृन तोर यो॥
मनि बसन भूषन निहुछि आरति करथि मंगल गाब यो।
सुर सुमन बरषथि सूत मागध बंदि सुजस सुनाब यो॥
आनल सुआसिनि कुमर कुमरिहिँ कोबरा सुख पाबि यो।
अति प्रीति लौकिक रीति लागलि करथ मंगल गाबि यो॥

महुअक सिखाबथि गौरि रामहिँ सीय सौँ सारद कहे।
रनिवास हास बिलास रस बस जनम फल सब क्यो लहे॥
निज पानि मनि मे रूपखानिक मूर्ति लखि मुद धारथी।
जानकि न भुजबल्ली बिलोकन बिरह भय बस टारथी॥
कौतुक विनोद प्रमोद प्रेम न होय कहि जानथि अली।
जनवास चलति लंआय बर कुमरिहिँ सखी सब जे छली॥
तहि समय सुनिय असीस जहँ तहँ नगर नभ आनँद भने।
चिर जिवथु जोरी चारु चारू सब कहल प्रमुदित मने॥
जोगींद्र सिद्ध मुनीस देब बिलोकि प्रभु दुंदुभि हनै।
चल हरषि बरषि प्रसून निज निज लोक जय जय जय भनै॥

दोहा—सब बधु सँग सब बर तखन, अबति गेला पितु पास।
सोभा मंगल मोद भरि, उमगल जनि जनबास॥३२७॥

फेर भेल भानस बहु भाँती। बजा पठौल जनक बरियाती॥१॥
पड़य पथंवर रूप अनूपे। सुत सब सहित पधारल भूपे॥२॥
सादर सब केँ पैर धोओलनि। समुचित आसन दय बैसौलनि॥३॥
धोयल जनक अवधपति पादे। थोड़ न सील नेह अहलादे॥४॥
बहुरि राम पद पंकज धोयल। जे हर हृदय कमल बिच गोयल॥५॥
तीनू भाय राम सम जानी। धोयलनि चरन जनक निज पानी॥६॥
आसन उचित सबहिँ नृप देलनि। बजा सकल भनसीया लेलनि॥७॥
अति आदर गेल पात ओछाओल। कनक कील मनि पात बनाओल॥८॥

दोहा—सूपोदन सुरभी सरपि, सुंदर स्वाद पुनीत।
परसल सब केँ छनहिँ मे, बारिक चतुर विनीत॥३२८॥

पंच ग्रास कय जेमय लगला। डहकन सुनि सुनि अति अनुरगला॥१॥
भाँति अनेक पड़ल पकवाने। सुधा स्वाद नहि होय बखाने॥२॥
परसथि बारिक सविधि सुजाने। ब्यंजन बिविध नाम के जाने॥३॥

साञ्च चारि बिधि भोजन गावय । एक एक बिधि कहि के पावय ॥४॥
छरस रुचिर व्यंजन बहु जाती । एक एक रस अगनित भाँती ॥५॥
जेमइत देथि मधुर धुनि गारी । लय लय नाम पुरुष ओ नारी ॥६॥
गारि सेहो भावय सुभ काले । सुनि समाज सह हँसथि भुपाले ॥७॥
येहि बिधि सब क्यो भोजन केलनि । सादर अँचबाओल पुनि गेलनि ॥८॥

दोहा--जनक पान दय दसरथहिँ, पूजल सहित समाज ।
जनबासा गेला मुदित, सकल भूप सिरताज ॥३२९

नित नव मंगल पुर बहु भाँती । निमिष सरिस बीतय दिन राती ॥१॥
अहल भोर भूपति मनि जगला । जाचक गुनगन गाबय लगला ॥२॥
बधू सहित बर कुमर निहारी । कहि न होअय मन मुद जत भारी ॥३॥
प्रातकृत्य कय नृप गुरु पासे । गेला मन बड़ प्रेम हुलासे ॥४॥
कय पूजा प्रनाम कर जोरल । बजला गिरा अमिय जनि बोरल ॥५॥
कृपेँ अहाँक सुनू मुनिराजे । आइ भेलहुँ हम पूरन काजे ॥६॥
प्रभु सब द्विज केँ आब बजा कय । दियनु धेनु सब भाँति सजा कय ॥७॥
सुनि गुरु नृपक प्रसंसा केलनि । पुनि मुनिगन केँ बजबा लेलनि ॥८॥

दोहा—बामदेव ओ देवरिषि, बालमीकि जाबालि ।
ऐला मुनिबर सब तखन, कौसिकादि तपसालि ॥३३०॥

दंड प्रनाम सबहिँ नृप केलनि । पूजि सप्रेम बरासन देलनि ॥१॥
मँगवाओल सुधेनु लख चारी । सील सोभाब सुरभि अनुसारी ॥२॥
सब बिधि सब केँ भूपित केलनि । मुदित महिप महिदेवहिँ देलनि ॥३॥
करथि बिनय बहु बिधि महराजे । जीवन लाभ पौल जग आजे ॥४॥
पाबि असीस महीस अनंदे । लेल बजा पुनि जाचक बृंदे ॥५॥
कनक बसन मनि हय गज स्यंदन । रुचि बुझि देलनि रविकुलनंदन ॥६॥
चलला गबइत नृप गुन गाथे । कहि जय जय जय रविकुलनाथे ॥७॥
येहि बिधि रामक भेल बियाहे । सहस मुखो कहि सक न उछाहे ॥८॥

दोहा--पुनि पुनि कौसिक चरन पर, नमा कहल नृप माथ ।
कृपा कटाच्छ प्रभाव तव, ई सुख सब मुनिनाथ ॥३३१॥

जनक सिनेह सील करतूती । नृप सब भाँति सराह बिभूती ॥१॥
माँगथि नित्य बिदा अवधेसे । अनुरागे राखथि मिथिलेसे ॥२॥
नित बाढ़य नव आदर माने । पहुनइ दिन प्रति सहस बिधाने ॥३॥
नित नित नव उछाह पुर सगरो । दसरथ गमन सोहाय न ककरो ॥४॥
कतोक दिवस बीतल येँहि भाँती । नेह रज्जु बान्हल बरियाती ॥५॥
कौसिक सतानंद सँग जा कय । नृप बिदेह केँ कहल बुझा कय ॥६॥
दियनु बिदा दसरथ केँ आबे । जदपि न तजि हो नेहक भाबे ॥७॥
बेस नाथ कहि सचिब बजौलनि । जय जिव कहि से माथ नमौलनि ॥८॥

दोहा—अवधनाथ चाहथि चलय, भीतर दियनु जनाय ।
भेला प्रेम बस सुनि सचिब, बिप्र सभासद राय ॥३३२॥

पुरजन सुनि जायत बरियाते । व्याकुल पुछय परसपर बाते ॥१॥
सत्य गमन सुनि सब अकुलायल । जेना साँझ सरसिज सकुचायल ॥२॥
अबइत बसल जतय बरियाती । बहुबिधि तत पुनि चलल उपाती ॥३॥
बिबिध भाँति मेबा पकबाने । कहल न हो भोजनक बिधाने ॥४॥
भरि भरि भरिया बरद अपारे । जनक पठौल बहुत सुपकारे ॥५॥
तुरग लाख रथ सहस पचीसे । सकल सजाओल छल नख सीसे ॥६॥
छल दस सहस मत्त गजराजे । निरखि होअय दिग्गज केँ लाजे ॥७॥
कनक बसन मनि भरि भरि जाना । महिषी धेनु बस्तु बिधि नाना ॥८॥

दोहा—पुनि बिदेह जौतुक देलनि, अमित कहल नहि जाय ।
जे लखि लोकप लोकहुक, संपति तुच्छ बुझाय ॥३३३॥

येँहि बिधि बस्तुजात ओरिओलनि । अवधपुरी सब जनक पठौलनि ॥१॥
बिदा बरातिक सुनि सब रानी । बिकल मीनगन जनि लघु पानी ॥२॥
पुनि पुनि सियहिँ कोर मे लेथी । आसिष सहित सीख कत देथी ॥३॥
सतत पतिक प्रिय रहब अथोरे । चिर अहिबात सुभासिष मोरे ॥४॥
सासु ससुर गुरु सेबा करबे । पति रुखि लखि अनुमति अनुसरबे ॥५॥
अति सिनेह बस सखी सयानी । नारि धरम सिखबथि मृदु बानी ॥६॥
सादर सबहिँ कुमरि समुझाओल । रानी पुनि पुनि हृदय लगाओल ॥७॥
पुनि पुनि छथि मिलैत महतारी । कहथि कियैक रचल बिधि नारी ॥८॥

दोहा—तहि अवसर सब भाय सँग, राम भानुकुलकेतु ।
जनक भवन चलला मुदित, बिदा करावय हेतु ॥३३४॥

चारू भाय सहज मनहारी । देखय धाओल पुर नर नारी ॥१॥
क्यो कह चलय चहै छथि आजे । कयल बिदेह बिदाइक साजे ॥२॥
लैह नयन भरि रूप निहारी । प्रिय पाहुन भूपति सुत चारी ॥३॥
सुकृत कोन के जान सयानी । नयन अतिथि केलनि विधि आनी ॥४॥
मरनसील अमरित लह जहिना । जनम भुखल सुरतरु लह जहिना ॥५॥
पाबय नारकि हरिपद जहिना । हिनकर दरसन हमरा तहिना ॥६॥
निरखि राम सोभा उर धरिऔ । निज मन फनि मूरति मनि करिऔ ॥७॥
दैत नयन फल एहि प्रकारे । राजभवन सब गेला कुमारे ॥८॥

दोहा—रूप सिंधु सब बंधु लखि, हरषि उठल रनिवास ।
करथि निछाउरि आरती, सासु महा उल्लास ॥३३५॥

देखि राम छबि अति अनुरगली । प्रेम बिबस पुनि पुनि पद लगली ॥१॥
गीति बढ़ल उर लाज न रहले । सहज सिनेह जाय नहि कहले ॥२॥
उबटन लगा सबंधु नहौलनि । पुनि षटरस अति प्रीति खोऔलनि ॥३॥
बजला राम सुअवसर जानी । सील सनेह सकुचमय बानी ॥४॥
अवध जाय चाहथि महराजे । गेलहुँ पठौल बिदा केर काजे ॥५॥
अनुमति माय दीय मुद मानी । करब नेह नित बालक जानी ॥६॥
भेल रनिवास बिकल से जानी । सासु प्रेम बस निकस न बानी ॥७॥
कुमरि सबहिँ केँ हृदय लगेलनि । पति केँ सौँपि विनति अति केलनि ॥८॥

छंद—सिय अरपि रामहिँ जोरि कर पुनि पुनि करथि विनती अती ।
बलिहारि तात सुजान अहँकेँ विदित अछि सबहुक गती ॥
परिवार पुरजन हमर भूपक प्रानप्रिय सिय जानबे ।
तुलसी सुसील सिनेह लखि निज किंकरी कय मानबे ॥

सोरठा—अहँ परिपूरन काम, ज्ञान सिरोमनि भाव प्रिय ।
जन गुन गाहक राम, दोष दलन करुनायतन ॥३३६॥

कहि ई रहलि चरन गहि रानी । प्रेमक पाँक फँसल जनि बानी ॥१॥
सुनि वर बचन नेह रस सानल । बहु बिधि राम सासु सनमानल ॥२॥
राम बिदा माँगल कर जोरी । कयल प्रनाम बहोरि बहोरी ॥३॥
आसिष पाबि नमा पुनि माथे । भाइ सहित चलला रघुनाथे ॥४॥
मंजु मधुर मूरति उर आनी । भेली नेह सिथिल सब रानी ॥५॥
कुमरि बजा धीरज धय भारी । पुनि पुनि मिलथि जुलथि महतारी ॥६॥
बिदा करथि पुनि पुनि धरि मिलइछ । अलप न प्रीति परस्पर बढ़इछ ॥७॥
सखिगन हटा मिलथि बेरि बेरी । मिल सिसु बच्छ धेनु घेरि घेरी ॥८॥

दोहा—प्रेम विबस नर नारि सब, सखी सहित रनिबास ।
मानू भेल विदेहपुर, करुना बिरह निवास ॥३३७॥

सोनक पिंजड़ा पोसि जिआओल । जानकि सुक सारिका पढ़ाओल ॥१॥
से कह आकुल कहँ बैदेही । सुनि धैरज राखय के देही ॥२॥
होय विकल खग मृग जहँ एना । मनुज दसा तहँ बरनू केना ॥३॥
एला लखन सबंधु बिदेहे । नोर भरल दृग उमड़ि सिनेहे ॥४॥
सिय केँ लखि धैरज गेल भागी । जदपि कहाबथि परम बिरागी ॥५॥
नृप उर लगा जानकी भेटल । ज्ञान महा मरजादा मेटल ॥६॥
बुझबथि सकल सचिव बुधियारे । अनअवसर बुझि कयल बिचारे ॥७॥
पुनि पुनि सिय केँ हृदय लगौलनि । साजल सुभ पालकी मँगौलनि ॥८॥

दोहा—प्रेम बिबस परिबार सब, जानि सुलगन नरेस ।
कुमरि चढ़ाओल पालकी, सुमिरति सिद्ध गनेस ॥३३८॥

कन्या केँ नृप बहुत बुझौलनि । नारि धरम कुलरीति सिखौलनि ॥१॥
देलनि दासी दास अनेके । सुचि सेबक प्रिय सियक जतेके ॥२॥
सिय चलइत व्याकुल पुरबासी । होअय सगुन सुभ मंगल रासी ॥३॥
भूसुर सचिव समेत समाजा । चलला पहुँचाबय महराजा ॥४॥
होइत समय सब बाजा बाजल । रथ गज हय बरियाती साजल ॥५॥
बजा सकल द्विज दसरथ लेलनि । दान मान परिपूरन केलनि ॥६॥
चरन सरोज धूरि धय सीसे । मुदित महीपति पाबि असीसे ॥७॥
सुमिरि गनेस कयल प्रस्थाना । मंगल मूल सगुन भेल नाना ॥८॥

दोहा—सुर प्रसून बरषथि हरषि, करथि अपसरा गान।
चलला अवध नृपति अवध, मुदित बजाय निसान ॥३३९॥

सबिनय नृप गुरु जनहिँ घुराओल। सादर सब जाचकहिँ बजाओल ॥१॥
भूषन बसन बाजि गज देलनि। प्रेमेँ पोषि ठाढ़ हुनि केलनि ॥२॥
बेरि बेरि बिरुदाबलि भाखी। फिरला सब रामहिँ उर राखी ॥३॥
पुनि पुनि कोसलनाथ घुराबथि। जनक प्रेमबस घूरि न पाबथि ॥४॥
पुनि कह मधुर बचन अवधेसे। कत दुर येलहुँ घुरू मिथिलेसे ॥५॥
उतरि ठाढ़ भेल पुनि नरनाहे। बढ़ल बिलोचन प्रेम प्रबाहे ॥६॥
पुनि बिदेह बजला कर जोरी। बचन सिनेह सुधा रस बोरी ॥७॥
करू कोन बिधि बिनती आजे। हमरा देल बड़ाइ महराजे ॥८॥

दोहा—समधि स्वजन केँ अवधपति, सनमानल सब रीति।
मिलन परसपर बिनय अति, उर समाय नहि प्रीति ॥३४०॥

मुनिगन केँ सिर जनक नमौलनि। आसिरबाद सबहुँ सौँ पौलनि ॥१॥
सादर पुनि मिलला जामाता। रूप सील गुन निधि सब भ्राता ॥२॥
सुंदर पानि पंकरुह जोरी। बजला बचन प्रेमरस घोरी ॥३॥
करू कोन बिधि राम प्रसंसा। मुनि महेस मन मानस हंसा ॥४॥
करथि जोग जोगी जहि लागी। क्रोध मोह ममता मद त्यागी ॥५॥
ब्यापक ब्रह्म अलख अबिनासी। चिदानंद निरगुन गुनरासी ॥६॥
मन समेत जहि जान न बानी। तरकि न सकथि सकल अनुमानी ॥७॥
निगम नेति जसु महिमा कहथी। जे तिहुकाल एकरस रहथी ॥८॥

दोहा—लोचन बिषय भेलाह मम, से समस्त सुख मूल।
सकल लाभ जग जीव केँ, भेने ईस अनुकूल ॥३४१॥

सब तरहेँ बड़ाइ मोहि देलनि। जानि अपन जन अपना लेलनि ॥१॥
होथि सहसदस सारद सेखा। लगबथि कोटि कलप भरि लेखा ॥२॥
मम बड़ भाग अहँक गुन गाथा। कहितहुँ सठत न सुनु रघुनाथा ॥३॥
हम किछु कही एक बल मोरे। रीझी अहँ सिनेह सुठि थोरे ॥४॥
पुनि पुनि हम माँगी कर जोरी। भ्रमहु न मन भरमय पद छोरी ॥५॥

सुनि बर बचन प्रेम जनि पोपल । पूरन काम राम परितोपल ॥६॥
कय कत विनति ससुर सनमानल । पितु कौसिक बसिष्ठ सम जानल ॥७॥
विनती बहुत भरत सौँ केलनि । मिलि सप्रेम पुनि आसिष देलनि ॥८॥

दोहा—बहुरि लखन रिपुदमन मिलि, आसिष देल महीस ।
भेला परसपर प्रेम बस, फिरि फिरि नमवथि सीस ॥३४२॥

बेरि बेरि कय बिनय बड़ाई । चलला रघुपति सँग सब भाई ॥१॥
जनक जाय कौसिक पद गहलनि । पद रज माथ आँखि लय कहलनि ॥२॥
सुनु मुनीस बर दरसन तोरे । अगम न किछु प्रतीत मन मोरे ॥३॥
लोकप जे सुख सुयस सिहाथी । करति मनोरथ मन सकुचाथी ॥४॥
से सुख सुजस सुलभ मोहि स्वामी । सब सिधि तव दरसन अनुगामी ॥५॥
कयल विनय पुनि पुनि नमि सीसे । घुरला आसिष पाबि महीसे ॥६॥
चलल निसान बजा बरियाती । मुदित छोट बड़ दल सब भाँती ॥७॥
रामहिँ निरखि ग्राम नर नारी । पाबि नयन फल होथि सुखारी ॥८॥

दोहा—बीच बीच बर बास बसि, पथ जन सुखी करैत ।
ऐल बराती अवध लग, सुभ दिन सोभा दैत ॥३४३॥

हनल निसान ढोल सुभ बाजल । तुरहि संख पुनि हय गज गाजल ॥१॥
बीना झाँझ डिमडिमी राजय । सुभ सहनाइ सरस धुनि बाजय ॥२॥
पुरजन सुनि अबइत बरियाते । मुदित सकल पुलकावलि गाते ॥३॥
साजल अपन अपन आगारे । हाट बाट चौपथ पुर द्वारे ॥४॥
गली गली अरगजा सिचायल । जहँ तहँ अरिपन चारु पुरायल ॥५॥
बनल बजार न होअय बखाने । तोरन केतु पताक बिताने ॥६॥
सफल पूगफल कदलि रसाले । गेपल बकुल कदंब तमाले ॥७॥
फल लुधकल तरु छूवय धरनी । मनिमय आलवाल मनहरनी ॥८॥

दोहा—विविध भाँति मंगल कलस, गृह गृह रचल समारि ।
सुर ब्रह्मादि सिहाथि सब, रघुवर पुरी निहारि ॥३४४॥

भूप भवन तहि अवसर सोभय । रचना देखि मदन मन लोभय ॥१॥

मंगल सगुन मनोहर रूपे । रिधि सिधि सुख संपदा अनूपे ॥२॥
जनि उछाह सब सहज सोहायल । तनु धय धय दसरथ गृह आयल ॥३॥
लही राम बैदेही दरसन । ककरा मन नहि हो ई तरसन ॥४॥
जूथ जूथ मिलि चललि सुआसिनि । निज छवि निंदथि मदन बिलासिनि ॥५॥
सकल सुमंगल साजि आरती । गावथि जनि बहु बेष भारती ॥६॥
होअय कोलाहल भूप भवन मे । हो न बरनि जे सुख तहि छन मे ॥७॥
कौसिलादि सब रामक माता । प्रेम बिबस बिसरलि निज गाता ॥८॥

दोहा—देल दान द्विज कें विपुल, पूजि गनेस पुरारि ।
प्रमुदित परम दरिद्र जनि, पावि पदारथ चारि ॥३४५॥

प्रेम प्रमोद बिबस सब माता । चलय न चरन सिथिल भेल गाता ॥१॥
राम दरस हित अति अनुरगली । परिछन साज सजय सब लगली ॥२॥
बिविध भाँति सब बाजा बाजल । मंगल मुदित सुमित्रा साजल ॥३॥
हरदि दूबि दधि पल्लव फूले । पान सुपारी मंगल मूले ॥४॥
अच्छत लावा रोचन अँकुरी । सोभय तुलसिक मंजुल मँजरी ॥५॥
सोनक पुरहर सहज ललामे । नीड़ रचल जनि खगबर कामे ॥६॥
सगुन सुगंध न सकी बखानी । मंगल सकल सजथि सब रानी ॥७॥
रचल आरती बिविध बिधाने । मुदित करथि कल मंगल गाने ॥८॥

दोहा—कनक थार मंगल भरल, कर सरोज लय माय ।
चलली परिछय मुदित मन, पुलक पल्लवित काय ॥३४६॥

धूप धूम नभ मेचक केहन । घन घमंड साओन मे जेहन ॥१॥
सुरतरु सुमनमाल सुर बरषय । जनि बलाक अबली मन करषय ॥२॥
मनिमय बंदनबार बिराजल । राखल इंद्रधनुष जनि साजल ॥३॥
प्रगटथि छिपथि अटारी भामिनि । चारु चपल जनि दमकय दामिनि ॥४॥
दुंदुभि धुनि घन गरजन घोरे । जाचक चातक दादुर मोरे ॥५॥
सुर सुगंध सुचि बरषथि बारी । सुखी सकल ससि पुर नर नारी ॥६॥
समय जानि गुरु अनुमति देलनि । पुर प्रबेस रघुकुलमनि केलनि ॥७॥
सुमिरि संभु गिरिजा गनराजे । मुदित महीपति सहित समाजे ॥८॥

दोहा—होअय सगुन बरषथि सुमन, सुर निसान बजबैत ।
बिबुध बधू नाचथि मुदित, मंगल मंजु गबैत ॥३४७॥

मागध सूत बंदि नट नागर । गाबय जस तिहु लोक उजागर ॥१॥
जय धुनि बिमल वेद बर बानी । दस दिसि सुनिय सुमंगल खानी ॥२॥
बहु बहु बाजा बाजय लागल । नभ सुर नगर लोक अनुरागल ॥३॥
कहल न जाय सजल बरियाती । प्रमुदित मन सुख अँटय न छाती ॥४॥
पुरजन नृप पद माथ झुकौलनि । राम निहारि अमित सुख पौलनि ॥५॥
देथि निछाउरि मनिगन चीरे । बारि बिलोचन पुलक सरीरे ॥६॥
आरति करथि मुदित पुर नारी । हरषथि निरखि कुमर बर चारी ॥७॥
महफा सुभग ओहार उघारी । कनियाँ लखि सब होथि सुखारी ॥८॥

दोहा—येहि बिधि सबकें दैत सुख, ऐला राज दुआर ।
मुदित माय परिछन करथि, बधू समेत कुमार ॥३४८॥

करथि आरती बारंबारे । प्रेम प्रमोद पाब के पारे ॥१॥
भूषन मनि पट नाना जाती । करथि निछाउरि अगनित भाँती ॥२॥
बधुगन सहित देखि सुत चारी । परमानंद मगन महतारी ॥३॥
पुनि पुनि सीय राम छबि देखी । मुदित सुफल जग जीवन लेखी ॥४॥
सखी सीय मुख पुनि पुनि चाही । गान करथि निज सुकृति सराही ॥५॥
बरषथि सुमन छनहि छन देबा । नाचि गाबि कय बजबथि सेवा ॥६॥
चारु चारु जोड़ी लखि बानी । ताकल सबटा उपमा खानी ॥७॥
दैत न बनय परम लघु लागल । येकटक रहलि रूप अनुरागल ॥८॥

दोहा—अरघ पथंबर दैत कत, निगम नीति कुल रीति ।
चलली सुत सह बधु परिछि, घर अनलनि सह प्रीति ॥३४९॥

चारि सिँहासन सहज ललामे । निज कर मानु बनाओल कामे ॥१॥
कुमरि कुमर कें तहँ बैसौलनि । सादर पैर पुनीत धोओलनि ॥२॥
धूप दीप नैवेद्य वेद विधि । पूजल बर कनियाँ मंगल निधि ॥३॥
आरति करथि समुद बहु बेरी । हौंकथि ब्यजन चमर सिर फेरी ॥४॥
बस्तु अनेक निछाउरि करथी । सब माता प्रमोद सौं भरथी ॥५॥

पौलनि परम तत्त्व जनि जोगी । अमिय लहल जनि संतत रोगी ॥६॥
जनम रंक जनि पारस गहले । आन्हर सुंदर लोचन लहले ॥७॥
गिरा प्रगट जनि मूक बदन मे । पाओल सूर विजय जनि रन मे ॥८॥

दोहा—येहि सुख सौँ सतकोटि गुन, पावथि माय अनंद ।
भाय समेत बियाहि घर, ऐला रघुकुल चंद ॥
लोकरीति जननी करथि, बर कनियाँ सकुचाथि ।
मोद बिनोद बिलोकि बड़, राम मनहिँ मुसुकाथि ॥३५०॥

देव पितर केँ सभ बिधि पूजल । सकल वासना मन केर पूरल ॥१॥
सबहिँ बंदि माँगथि बरदाने । बंधु सहित रामक कल्याने ॥२॥
अंतरहित सुर आसिष दै छथि । मुदित माय आँचर भरि लै छथि ॥३॥
नृप बजाय बरियाती लेलनि । जान बसन मनि भूषन देलनि ॥४॥
पाबि निदेस राखि उर रामे । मुदित गेला सब निज निज धामे ॥५॥
पुर नर नारिहिँ देल पहिराओन । घर घर बाज बधाइ सोहाओन ॥६॥
जे जाचक जन जाचथि जेहे । ताहि देथि प्रमुदित नृप सेहे ॥७॥
सेबक सकल बजनियाँ नाना । तिरपित कयल दान सनमाना ॥८॥

दोहा—प्रनमि देथि आसीस सब, गाबथि गुन गन गाथ ।
तखन बिप्र गुरु सहित गृह, गमन कयल नरनाथ ॥३५१॥

जे बसिष्ठ अनुसासन देलनि । लोक वेद बिधि सादर केलनि ॥१॥
बिप्र भीड़ लखि कय सब रानी । सादर उठलि भाग्य बड़ जानी ॥२॥
पद पखारि सबकेँ नहबौलनि । पूजि नीक बिधि भूप खोऔलनि ॥३॥
आदर दान प्रेम परिपोषल । आसिस दैत चलल मन तोषल ॥४॥
पूजल कौसिक केँ बहु माने । नाथ हमर सन धन्य न आने ॥५॥
भूपति भूरि प्रसंसा केलनि । रानी सहित चरन रज लेलनि ॥६॥
भीतर भवन देल बर बासे । मन जोगबथि नित नृप रनिबासे ॥७॥
पुनि गुरु पद पूजल भल रीती । कयल विनय उर परम पिरीती ॥८॥

दोहा—सहित बधूगन कुमर सब, रानी सहित महीस।
पुनि पुनि बंदथि गुरु चरन, आसिष देथि मुनीस ॥३५२॥

अति अनुराग बिनय बहु कैलनि । सुत संपति सब संमुख धैलनि ॥१॥
नेग माँगि मुनिनायक लेलनि । आसिरबाद बहुत बिधि देलनि ॥२॥
उर धय रामहिँ सीय समेते । हरषि कयल गुरु गमन निकेते ॥३॥
बिप्र बधूगन नृप बजबौलनि । रानी बसन भुषन पहिरौलनि ॥४॥
तखन सुआसिनि गनहिँ बजाओल । रुचि अनुरूप बसन सब पाओल ॥५॥
इच्छित नेग नेगिगन लेथी । रुचि अनुरूप भूपमनि देथी ॥६॥
बुझल पूज्य प्रिय पाहुन जनिका । सनमानल भल बिधि नृप तनिका ॥७॥
देब देखि रघुवीर बियाहे । बरषि प्रसून प्रसंस उछाहे ॥८॥

दोहा—चलला सुर डंका बजा, निज निज पुर सुख पाय।
कहति परसपर राम जस, प्रेम न हृदय समाय ॥३५३॥

सबके परितोषल नरनाहे । रहल हृदय भरपूर उछाहे ॥१॥
भूप तखन रनिबास पधारल । कनियाँ सह सब कुमर निहारल ॥२॥
मोद सहित लय लेलनि कोरे । ताहि सुखक के कहि सक ओरे ॥३॥
बधू समेत कोर लय लेलनि । हरषि दुलार बेरि बहु केलनि ॥४॥
देखि समाज मुदित रनिबासे । कयल सकल उर आनँद बासे ॥५॥
कहलनि जेना ब्याह भेल भूपे । सबके सुनि भेल हरष अनूपे ॥६॥
जनक नृपक गुन सील पिरीती । धन बड़ाइ ओ सुंदर रीती ॥७॥
भाट जकाँ भूपति भल गाओल । सुनि रानी सब बड़ मुद पाओल ॥८॥

दोहा—तनय समेत नहाय नृप, बजा बिप्र गुरु ज्ञाति।
भोजन कयल अनेक बिधि, घरी पाँच बित राति ॥३५४॥

मंगल गान करथि बर भामिनि । भेल सुखमूल मनोहर जामिनि ॥१॥
कय आचमन पान सब खेलनि । स्रग सुगंध भूषित छबि केलनि ॥२॥
राम निरखि सब अनुमति पा कय । निज गृह गेला माथ नमा कय ॥३॥
समय समाज बड़ाइ बिनोदे । सुंदरता ओ प्रेम प्रमोदे ॥४॥

कहि न सकथि सय सारद सेसे । वेद बिरंचि महेस गनेसे ॥५॥
कहू कोन बिधि से हम बरनी । भूमि नाग सिर धरय कि धरनी ॥६॥
नृप सब भाँति सकल सनमानी । कहि बजौल रानिहिँ मृदु बानी ॥७॥
बालबधू एली घर आने । राखब आँखिक पुतरि समाने ॥८॥

दोहा—नेना थाकल नींद बस, सयन करबियनु जाय ।
गेला कहि बिश्राम गृह, राम चरन चित लाय ॥३५५॥

भूप बचन सुनि सहज सोहाओन । कयल कनक मनि पलँग ओछाओन ॥१॥
सुभग सुरभि पय फेन समाना । कोमल सुंदर तोसक नाना ॥२॥
बरनि न हो गेरुआ जे चमकय । मनि मंदिर स्रग सौरभ गमकय ॥३॥
रतन दीप चनवा भल तानल । देखितहिँ बनय न जाय बखानल ॥४॥
सेज रुचिर रचि राम उठाओल । प्रेम समेत पलंग सुताओल ॥५॥
पुनि पुनि भायहिँ अनुमति देलनि । निज निज सेज सयन से केलनि ॥६॥
देखि स्याम मृदु मंजुल गाता । कहथि सप्रेम बचन सब माता ॥७॥
जाइत बाट भयाओन भारी । कोना ताड़का देलहुँ मारी ॥८॥

दोहा—घोर बिकट भट दनुज नहि, गन ककरहु रन बीच ।
सह सहाय मारल कोना, खल सुबाहु मारीच ॥३५६॥

भल हो तात मुनि कृपा सम्हारल । ईस अनेक बिघ्न तव टारल ॥१॥
दुहू बंधु मख रच्छा कैलहुँ । गुरु प्रसाद सब विद्या पैलहुँ ॥२॥
पद रज लगति तरलि मुनि नारी । पुरल भुवन भरि कीरति भारी ॥३॥
कमठ पीठ पवि कूट कठोरे । कोना तोड़ल कहु सिब धनु घोरे ॥४॥
विस्व बिजय जस जानकि पैलहुँ । भवन बियाहि भाय सब ऐलहुँ ॥५॥
सबटा करम अमानुप तोरे । कौसिक कृपा सुधारल ओरे ॥६॥
आइ सुफल गम जनम जहाने । देखि तात तव आनन चाने ॥७॥
जे दिन गेल तोहि बिनु लखने । विधि न रहथु लेखा मे रखने ॥८॥

दोहा—राम प्रतोषल माय सब, कहि विनीत बर बैन ।
सुमिरि संभु गुरु बिप्र पद, कयल निंद बस नैन ॥३५७॥

निंदहुँ बदन सोभ सुठि केहन । नव राजीव साँझ मे जेहन ॥१॥
घर घर करथि जागरन नारी । देथि परस्पर मंगल गारी ॥२॥
पुरी विराजय राजय रजनी । रानी कहथि विलोकू सजनी ॥३॥
सुतली सासु बधू लय केना । फनि सिर मनि उर मे धय जेना ॥४॥
उठला प्रभु पुनीत अन्हरोपे । अरुनचूड़ कर सुंदर घोषे ॥५॥
बंदी मागध गुनगन गाबय । पुरजन द्वार नमन हित आबय ॥६॥
बंदि विप्र सुर गुरु पितु माता । आसिष पाबि मुदित सब भ्राता ॥७॥
जननी सादर बदन निहारल । तखन भूप सँग द्वार पधारल ॥८॥

दोहा—कयल सौच सब सहज सुचि, सरित पुनीत नहाय ।
प्रात क्रिया कय तात लग, ऐला चारू भाय ॥३५८॥

नवाह्न पारायण, विश्राम—३

लखि उर लगा लेलनि अवधेसे । हरषित बैसला पाबि निदेसे ॥१॥
सभा जुड़ायल राम निहारी । लोचन लाभ अवधि अवधारी ॥२॥
पुनि वसिष्ठ कौसिक मुनि आबी । बैसला समुचित आसन पाबी ॥३॥
पूजि सहित सुत कयल प्रनामे । दुहु गुरु अनुरागल लखि रामे ॥४॥
कहथि वसिष्ठ धरम इतिहासे । सुनथि महीस सहित रनिवासे ॥५॥
मुनि मन अगम गाधिसुत करनी । मुदित वसिष्ठ कहल बहु बरनी ॥६॥
बामदेव बजला सब ठीके । पसरल त्रिभुवन कीर्ति तनीके ॥७॥
सुनि सब केँ आनंद प्रवाहे । राम लखन उर अधिक उछाहे ॥८॥

दोहा—मंगल मोद उछाह नित, येहि प्रकार दिन जाय ।
उमड़ल अवध अनंद भरि, अधिक अधिक अधिकाय ॥३५९॥

फूजल कंगन सुदिन विचारी । मुद मंगल विनोद बड़ भारी ॥१॥
सुर सिहाथि लखि नित नवसुख सिधि । बेर बेर जनमी अवधहिँ दिय विधि ॥२॥
कौसिक नित जायब निरधारथि । रामक प्रेम विनय वस टारथि ॥३॥
नृपक भाव नित सयगुन देखी । महामुनीस प्रसंस विसेखी ॥४॥
बिदा मँगैत सहित अनुरागा । ठाढ़ भेला नृप सुत सह आगाँ ॥५॥
प्रभु अहँ सब संपति अधिकारी । हम सेवक समेत सुत नारी ॥६॥

नेना सब पर राखब दाया । दैत रहब दरसन मुनि राया ॥ ७॥
कहि नृप येहन सहित सुत रानी । पड़ला पद मुख आब न बानी ॥ ८॥
आसिष देल बिप्र बहु रीती । चलला कहल जाय नहि प्रीती ॥ ९॥
राम सप्रेम भाय सँग जा कय । अनुमति लय फिरला पहुँचा कय ॥१०॥

दोहा—राम रूप भूपति भगति, ब्याह उछाह अनंद ।
जाथि सराहति मनहि मन, मुदित गाधि कुलचंद ॥३६०॥

बामदेव रघुकुल गुरु ज्ञानी । कहल गाधि सुत कथा बखानी ॥१॥
सुनि सुनि कय मुनि केर जस गाथा । सुकृत सराहथि निज नरनाथा ॥२॥
अनुमति पाबि लोक घुरि एला । तनय समेत नृपति घर गेला ॥३॥
जहँ तहँ राम बियाहक गीते । त्रिभुवन पसरल सुजस पुनीते ॥४॥
ऐला राम बियाहि जखन सौँ । अवध अनँद सब बसल तखन सौँ ॥५॥
प्रभु बियाह जे भेल उछाहे । सकथि न बरनि गिरा अहिनाहे ॥६॥
कवि कुल जीवन पावन जानी । राम सीय जस मंगल खानी ॥७॥
तैँ हम किछु किछु कहल बखानी । करक हेतु पावन निज बानी ॥८॥

छंद—निज गिरा पावन करक कारन राम जस तुलसी कहै ।
रघुवीर चरित अपार बारिधि पार कवि क्यो नहि लहै ॥
उपनयन ब्याह उछाह मंगल सुनि जे सादर गाओते ।
बैदेहि राम प्रसाद से जन सरबदा सुख पाओते ॥

सोरठा—सिय रघुवीर बियाह, जे सप्रेम गावथि सुनथि ।
तनिका सदा उछाह, मंगलायतन राम जस ॥३६१॥

मास पारायण, विश्राम—१२

इति श्रीमद्रामचरितमानसस्य श्रीरामलोचनशरणविरचिते मैथिलीरूपान्तरे सकल-
कलिकलुषविध्वंसने सुखसम्पादनो नाम प्रथमः सोपानः समाप्तः ॥

श्रीसीतारामजी

मैथिली

श्रीरामचरितमानस

द्वितीय सोपान (अयोध्याकाण्ड)

वामाङ्के च विभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके
भाले बालविधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्यालराट् ।
सोऽयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा
शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्रीशङ्करः पातु माम् ॥१॥

प्रसन्नतां या न गताभिषेकतस्तथा न मम्ले वनवासदुःखतः ।
मुखाम्बुज-श्रीरघुनन्दनस्य मे सदाऽस्तु सा मञ्जुलमङ्गलप्रदा ॥२॥

नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं सीतासमारोपितवामभागम् ।
पाणौ महासायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥३॥

दोहा—श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुर सुधारि ।
बरनी रघुबर बिमल जस, जे दायक फल चारि ॥

ऐला राम बियाहि जखन सौं । नित नब मंगल मोद तखन सौं ॥१॥
भुवन चारि दस भूधर भारी । सुकृत मेघ बरषय सुख बारी ॥२॥
रिधि सिधि संपति नदी उजागर । आयल उमड़ि अवधपुर सागर ॥३॥
मनिगन पुर नर नारि सुजाती । सुचि अमोल सुंदर सब भाँती ॥४॥
कहि न सकी किछु नगर बिभूती । जनि येतवये विरंचि करतूती ॥५॥
सब विधि सब पुरलोक सुखारी । रामचंद्र मुखचंद्र निहारी ॥६॥
मुदित माय सब सखी सहेली । फलित बिलोकि मनोरथ बेली ॥७॥
राम सोभाव सील गुन रूपे । प्रमुदित होथि देखि सुनि भूपे ॥८॥

दोहा—सब कर उर अभिलाष ई, कहथि मनाय महेस ।
निज अछैत जुबराज पद, रामहिँ देथु नरेस ॥१॥

एक समय सब सहित समाजे । राज सभा राजित रघुराजे ॥१॥
सकल सुकृत मूरति नरनाहे । राम सुजस सुनि अमित उछाहे ॥२॥
नृप सब रहथि कृपा अभिलाखी । लोकप करथि प्रीति रुखि राखी ॥३॥
त्रिभुवन तीनू काल जहाने । दसरथ सम बड़ भाग न आने ॥४॥
मंगल मूल राम सुत जनिका । जे किछु कही थोड़ सब तनिका ॥५॥
सहजहिँ भूप मुकुर कर लेलनि । बदन बिलोकि मुकुट सरि केलनि ॥६॥
श्रवन समीप भेल सित केसे । करय जरठपन जनि उपदेसे ॥७॥
नृप रामहिँ जुबराज बनाबिय । जीबन जनम लाभ झट पाबिय ॥८॥

दोहा—ई बिचार उर आनि नृप, सुदिन सुअवसर पाय ।
प्रेम पुलक तन मुदित मन, गुरुहिँ सुनौलनि जाय ॥२॥

कहथि महीप सुनू मुनि नायक । भैला राम सब विधि सब लायक ॥१॥
सेबक सचिब सकल पुरबासी । जे छथि मम अरि मित्र उदासी ॥२॥
मोहि सम राम सबहिँ प्रिय भारी । प्रभु आसिष जनि लस तनुधारी ॥३॥
प्रभु सब बिप्र सहित परिवारे । करथि प्रेम बड़ तव अनुसारे ॥४॥
जे गुरु चरन रेनु सिर धरथी । से जनि सकल बिभव बस करथी ॥५॥
मम सम ई अनुभबल न अन्ये । पौलहुँ सकल पूजि रज धन्ये ॥६॥

आब एक अभिलाषा मन मे । प्रभु अनुकंपे पूरत छन मे ॥७॥
सहज नेह लखि मुदित बिसेसे । मुनि बजला नृप दीय निदेसे ॥८॥

दोहा—सब अभिमत दाता नृपति, अहँक सुजस ओ नाम ।
फल अनुगामी महिप मनि, अछि अहाँक मनकाम ॥३॥

सब बिधि गुरु प्रसन्न जिय जानी । बजला भूप हरषि मृदु बानी ॥१॥
नाथ करी रामहिँ जुबराजे । कहू कृपा कय साजिय साजे ॥२॥
मम अछैत ई उत्सव आबओ । लोचन लाभ सकल जन पाबओ ॥३॥
प्रभुक कृपेँ पुरौल सिव बेसे । मन लालसा एक ई सेसे ॥४॥
पुनि न सोच तन रहत कि जायत । जहि सौँ पाछु न मन पछतायत ॥५॥
मुनि हरषित सुनि दसरथ बानी । सकल सुमंगल मोदक खानी ॥६॥
नृप रहि जनिक बिमुख पछताइछ । जनिक भजन बिनु दाह न जाइछ ॥७॥
सैह भेलाह अहँक सुत स्वामी । राम पुनीत प्रेम अनुगामी ॥८॥

दोहा—बेगि बिलंब न नृपति करु, साजू सकल समाज ।
तखनहिँ सब मंगल सुदिन, राम होअथि जुबराज ॥४॥

मुदित महीपति मंदिर एला । सचिब सुमंत्रहिँ बजबति भेला ॥१॥
कहि जयजीव झुकबितहिँ माथे । मंगल बचन कहल नरनाथे ॥२॥
हमरा कहल मुदित गुरु आजे । करू राम केँ नृप जुबराजे ॥३॥
लागय पाँचहिँ जौँ मन नीका । दियनु हरषि हिय रामहिँ टीका ॥४॥
मुदित सचिब सुनइत प्रिय बानी । अभिमत बिड़बा पड़ जनि पानी ॥५॥
बिनती सचिब करथि कर जोरी । जीबू जगपति बरष करोरी ॥६॥
जग मंगल भल सोचल काजे । झट करु हो न देर महराजे ॥७॥
नृपहिँ मोद सुनि सचिब सुभाखा । लता बढ़ति जनि लहल सुसाखा ॥८॥

दोहा—अनुमति जे जे देथि सब, कहल भूप मुनिराय ।
राम राज्य अभिषेक हित, से से करु झट जाय ॥५॥

हरषि मुनीस कहल मृदु बानी । आनू सकल सुतीरथ पानी ॥१॥
ओषधि मूल फूल फल पाना । कहल नाम गनि मंगल नाना ॥२॥

चामर चमर बसन बहु भाँती । रोम पाट पट अगनित जाती ॥३॥
मनिगन मंगल वस्तु अनेके । जे जग जोग भूप अभिषेके ॥४॥
वेद विहित कहि सकल बिधाने । कइल तानु पुर बिविध बिताने ॥५॥
सफल रसाल पूगफल केरा । रोपू गली गली बहु फेरा ॥६॥
रचू मंजु मनि चौक ललामे । कहु साजय बजार सब ठामे ॥७॥
पूजू गनपति गुरु कुलदेवा । सब विधि करू भूमि सुर सेवा ॥८॥

दोहा—ध्वज पताक तोरन कलस, साजु तुरग रथ नाग ।
सब सिर धय मुनिबर बचन, करथि काज निज भाग ॥६॥

मुनि निदेस जनिका जे देलनि । से से काज प्रथम जनि केलनि ॥१॥
बिप्र साधु सुर पूजथि राजा । करथि राम हित मंगल काजा ॥२॥
सुनति राम पौता सिंहासन । बाजय अवध दधावा छन छन ॥३॥
परगट सगुन राम सिय तन मे । मंगल अंग फड़क छन छन मे ॥४॥
कहथि परसपर पुलकित देहे । भरत आगमन सूचक एहे ॥५॥
बड़ चिंता बहु दिन गेल बीती । मिलता प्रियजन सगुन प्रतीती ॥६॥
जग मे प्रिय के भरत समाने । यैह सगुन फल और न आने ॥७॥
रामहिँ बंधु सोच दिन राती । कमठ सोच अंडा जहि भाँती ॥८॥

दोहा—येहि अवसर मंगल परम, सुनि हरषल रनिवास ।
सोभय लखि जनि बिधु बढ़ति, बारिधि बीचि बिलास ॥७॥

प्रथम जाय जे बचन सुनौलनि । भूरि बसन भूषन से पौलनि ॥१॥
प्रेम पुलकि तन मन अनुरागलि । मंगल कलस सजय सब लागलि ॥२॥
सुंदर चौक सुमित्रा देलनि । मनिमय बहु बिधि रुचिर बनेलनि ॥३॥
आनँद मगन राम महतारी । देल दान बहु बिप्र हँकारी ॥४॥
पूजल ग्राम देवि सुर नागे । कइलनि फेर देब बलि भागे ॥५॥
जहि बिधि हो रामक कल्याने । दीय दया कय से बरदाने ॥६॥
गाबथि मंगल कोकिल बयनी । बिधु बदनी मृग सावक नयनी ॥७॥

दोहा—राम राज्य अभिषेक सुनि, हिय हरषल नर नारि ।
लागल मंगल सजय सब, बिधि अनुकूल बिचारि ॥८॥

नृप बसिष्ठ केँ तखन बजौलनि । राम धाम सिख हेतु पठौलनि ॥१॥
सुनितहि गुरु आगम रघुनाथे । देहरि आबि धयल पद माथे ॥२॥
सादर अरघ देल घर आनी । सोलहो बिधि पूजल सनमानी ॥३॥
गहल चरन सिय सहित बहोरी । बजला राम कमल कर जोरी ॥४॥
सेबक सदन स्वामि आगमने । मंगल मूल अमंगल दमने ॥५॥
तदपि उचित छल बजा सप्रीती । कहितहुँ काज येहनि प्रभु नीती ॥६॥
प्रभुता तजि प्रभु कयल सिनेहे । भेल पुनीत आइ ई गेहे ॥७॥
दिअ आदेस करी से देबे । छज सेबक केँ स्वामिक सेबे ॥८॥

दोहा—सुनि सिनेह सानल बचन, मुनि रघुवरहिँ प्रसंस ।
राम येहन नहि कहब किय, हंस बंस अवतंस ॥९॥

राम प्रकृति गुन सील बखानी । बजला प्रेम पुलकि मुनि ज्ञानी ॥१॥
नृप अभिषेकक साजल साजे । चहथि करय अहँ केँ जुबराजे ॥२॥
राम करू सब संजम आजे । जे बिधि कुसल निमाहथि काजे ॥३॥
गुरु सिख दय भूपति लग गेला । राम मनहि मन बिसमित भेला ॥४॥
सँग सँग जनम बंधु सब लेले । असन सयन नैनपन ओ खेले ॥५॥
करनबेध उपनयन बियाहे । संग संग सब भेल उछाहे ॥६॥
बिमल बंस ई अनुचित एके । बंधु छोड़ि जेठक अभिषेके ॥७॥
प्रेम समेत प्रभुक पछताबे । भगतक हरओ कुटिलता भावे ॥८॥

दोहा—तहि अवसर ऐला लखन, मगन प्रेम आनंद ।
सनमानल प्रिय बचन कहि, रघुकुल कैरव चंद ॥१०॥

बाजय बाजा बिबिध बिधाने । पुर प्रमोद के करत बखाने ॥१॥
भरत आगमन सबहु मनाबथि । आबथु झट जे दग फल पाबथि ॥२॥
हाट बाट घर गली दलाने । करथि नारि नर येँह बखाने ॥३॥
काल्हि लगन देरी कोन बाता । पुरता मम अभिलाष बिधाता ॥४॥
कनक सिंहासन सीय सहीते । बैसता राम जुड़ायत चीते ॥५॥
कखन हैत भिनसर सब भावय । देब कुचालि अकाज मनावय ॥६॥

तनि न सोहाइछ अवध उछाहे । राति इजोरिया चोर न चाहे ॥७॥
सारद बजा बिनय सुर करथी । बारंबार चरन पर पड़थी ॥८॥

दोहा—विपदा हमर विलोकि बड़, माय करिय से आज ।
राम जाथि वन राज तजि, हो सुर सवहुक काज ॥११॥

सुनि पछताथि ठाढ़ि सब भाँती । मेलहुँ कमल बिपिन हिमराती ॥१॥
देखि देवि पुनि करथि निहोरा । कनियो दोप देवि नहि तोरा ॥२॥
रघुपति कें नहि बिसमय हरषे । जानी अहँ रामक उतकरषे ॥३॥
जीव करम बस सुख दुख भागी । जाउ अवध देवक हित लागी ॥४॥
गहि गहि चरन निहोरा केलनि । सुर मतिमंद सोचि चलि देलनि ॥५॥
ऊँच निवास नीच करतूती । देखि सकथि नहि परक बिभूती ॥६॥
पुनि बिचारि कय अगिला काजे । करत चाह मम सुकबि समाजे ॥७॥
हरषि हृदय दसरथ पुर अयली । जनि ग्रह दसा दुखद अति लयली ॥८॥

दोहा—नाम मंथरा मंद मति, चेरी केकइ केरि ।
तकरा अजस पेटारि कय, धुरलि गिरा मति फेरि ॥१२॥

देखल मंथरा नगर सजाओल । मंजु बधैया जाय बजाओल ॥१॥
पुछल लोक सौं कथिक उछाहे । रामतिलक सुनि भेल उर दाहे ॥२॥
करय बिचार कुबुद्धि कुजाती । हैत अकाज कोन बिधि राती ॥३॥
कुटिल किरातिनि मधु लखि जेना । गौं तकैत हो पाबी केना ॥४॥
भरत मातु लग कनइत गेले । पुछल रानि हँसि की तोहि भेले ॥५॥
नारि चरित कय बहबय नोरे । उतर न दैछ उसासय जोरे ॥६॥
गाल तोर बड़ हँसि कह रानी । लखन सीख देल हम अनुमानी ॥७॥
तदपि न बाज चेरि बड़ि पापिनि । साँस छोड़य जनि कारी सापिनि ॥८॥

दोहा—सभय रानि पुछ बात की, कुसल राम महिपाल ।
लखन भरत रिपुदमन सुनि, भेल कुबड़ी उर साल ॥१३॥

माय किये ककरो सिख पायब । ककरा बल पर गाल बजायब ॥१॥
ककरा कुसल राम तजि आजे । जनिका भूप करथि जुवराजे ॥२॥

कौसल्या हित दहिन विधाता । लखि न अँटय गौरव जनि गाता ॥३॥
जाय कियै नहि देखह सोभा । जे अवलोकि भेल मोहि छोभा ॥४॥
भवन पूत नहि सोच न मानह । छथि मम हाथ नाथ तोँ जानह ॥५॥
निंद बहुत प्रिय सेज तुराई । लखह न भूप कपट चतुराई ॥६॥
सुनि प्रिय बचन मलिन मन जानी । चुप रह दपटि कहल झुकि रानी ॥७॥
घरफोड़ी पुनि जौँ सुनि पैबौ । पकड़ि जीभ हम तोहर खिचैबौ ॥८॥

दोहा—कुब्बर खोँड़ कनाह पुनि, कुटिल कुचालिन फूसि ।
ततहु तीय पुनि चेरि कहि, केकइ देलनि बिहूँसि ॥१४॥

प्रियबादिनि सिख देलहुँ तोही । सपनहुँ तोहि पर कोप न मोही ॥१॥
सुदिन सुमंगल दायक तखने । तोर कहल सत होयत जखने ॥२॥
जेठ स्वामि सेबक लघु भ्राता । रीति भानुकुल ई बिख्याता ॥३॥
राम तिलक भिनसर जौँ ठीके । देबौ माँग जे लागौ नीके ॥४॥
कौसल्या सम सब महतारी । रामहिँ सहज सोभाब पियारी ॥५॥
मोहि पर करथि सिनेह बिसेखी । देखल हम तनि प्रीति परेखी ॥६॥
जौँ बिधि कृपेँ जनम हो भावी । पूत पुतोहु राम सिय पाबी ॥७॥
राम प्रान सौँ बढ़ि प्रिय मोही । छोभ तनिक तिलकेँ किय तोही ॥८॥

दोहा—तेजि कपट छल सत्य कह, भरत सपथ थिक तोहि ।
हरष समय बिसमय करहिँ, कारन की कह मोहि ॥१५॥

एकहि बेर आस सब पूरल । पुनि की कहब जीभ लय थूरल ॥१॥
फोड़य जोग कपार अभागल । भल कहितहुँ अनभल तोहि लागल ॥२॥
गढ़ि गढ़ि बात कहय जे नीते । से तोहि मीठ भेलहुँ हम तीते ॥३॥
हमहूँ बाजब ठकुरसोहाती । नहि तौँ चूप रहब दिन राती ॥४॥
कय कुरूप बिधि परबस केलनि । जे रोपल तकरे फल देलनि ॥५॥
क्यो नृप होथु हमर की हानी । चेरि छाड़ि की होयब रानी ॥६॥
झरकल सन अछि हमर सोभाबे । अनभल तोहर सहय न पाबे ॥७॥
तैँ किछु एहन बात चलैलहुँ । छमिय देबि बड़ अनुचित कैलहुँ ॥८॥

दोहा—गूढ़ कपट प्रिय बचन सुनि, तीय अधरबुधि रानि।
सुरमाया बस बैरिनिहिँ, पतियैली हित जानि ॥१६॥

सादर पुनि पुनि पूछथि केना। मोह मृगी सबरी धुनि जेना ॥१॥
भावी तनिकर मति देल फेरी। सुतरल घात जानि हँस चेरी ॥२॥
पुछह कि डरी कहति हम तोही। नाम धेलह घरफोड़ी मोही ॥३॥
सजि प्रतीति गढ़ि छिलि बहु भाँती। बाजलि तखन अवध सढ़साती ॥४॥
प्रिय सियराम कहल जे रानी। रामहिँ तोँ प्रिय से सत बानी ॥५॥
छल पहिने गेल से दिन आबे। दिन घटने हित कर रिपु भावे ॥६॥
भानु कमलकुल पोषनकारी। जरबय सेहो ताहि बिनु बारी ॥७॥
सौतिनि तब चाहय जड़ि काटी। घेरह ताहि लगा कय टाटी ॥८॥

दोहा—तोहि न सोच सोहाग बल, निज बस नृप केँ जान।
तोहर सरल सोभाव भल, नृप मुख मधु मन म्लान ॥१७॥

रामक माय गँभीर सयानी। काज बनाओल अवसर जानी ॥१॥
मात्रिक भरत पठाओल राजा। बुझह से राम मातुहिक काजा ॥२॥
सौतिनि सकल सेवथि हमरा भल। भरत माय छथि गरबित पिय बल ॥३॥
तकर सल्य कौसल्यहिँ भारी। कपट चतुर नहि होथि देखारी ॥४॥
तोहि पर भूपहिँ प्रेम बिसेखी। सौतिनि डाहेँ सकथि न देखी ॥५॥
रचि प्रपंच भूपहिँ अपनौलनि। राम तिलक हित लगन धरौलनि ॥६॥
राम तिलक कुल समुचित थीके। सबकेँ रुचइछ हमरो नीके ॥७॥
डरी सोचि हम आगुक बाता। से फल ओकरहि देथु बिधाता ॥८॥

दोहा—गढ़ि गढ़ि कोटिक कुटिलपन, कयलक कपट प्रबोध।
कहल कथा सय सौतिनिक, जहि बिधि बढ़य बिरोध ॥१८॥

भावी बस प्रतीत उर आनी। बहुरि सपथ दय पुछलनि रानी ॥१॥
पुछह कि तोहि आबहु नहि सूझय। निज हित अनहित पसुओ बूझय ॥२॥
पख बीतल सजइत सब साजे। तोँ पौलह सुधि मोहि सौँ आजे ॥३॥
पहिरी खाइ राज मे तोरे। सत्य कहय मे दोष न मोरे ॥४॥

असत कही जौँ गढ़ि किछु बाता। तौँ मोहि दंड देताह विधाता ॥५॥
रामक तिलक काल्हि जौँ भेले। विधि तव विपति बीज बपि देले ॥६॥
कही तीन रेखा खिचि साछी। होयबह भामिनि दूधक माछी ॥७॥
जौँ सुत सह तौँ सेबा करबह। गति न आन तखनहि घर रहबह ॥८॥

दोहा—कद्रू बिनतहिँ देल दुख, कौसल्या तोहि देत।
भरत भोगता बंदि गृह, लखन नायबी लेत ॥१६॥

केकइ कटु बच सुनितहिँ काने। मुँह न बोल डर सुखल पराने ॥१॥
तन घमाय कदली सम कापय। कुबरी जीभ दसन सौँ चापय ॥२॥
कोटि कोटि कहि कपट कहानी। धैरज दय परबोधल रानी ॥३॥
कयल कठोर पढ़ाय कुपाठे। पुनि न लबय जनि उकठ कुकाठे ॥४॥
फुटल करम प्रिय लगल कुचाली। बकी सराहथि मानि मराली ॥५॥
सुन मंथरा कहब सत तोरे। दहिन आँखि नित फड़कय मोरे ॥६॥
प्रतिदिन देखी राति कुसपना। कही न तोहि मोह बस अपना ॥७॥
सुध सोभाव मोर करू कि बहिना। कहिओ बुझल न बामा दहिना ॥८॥

दोहा—हमरा सौँ नहि आइ धरि, ककरो अनभल भेल।
कोन पापेँ एके सँगेँ, दैव दुसह दुख देल ॥२०॥

बरु नैहर रहि जनम गमायब। जिबति न सौतिनि चेरि कहायब ॥१॥
अरि बस दैब जियाबथि जकरा। मरने निक जीवन सौँ तकरा ॥२॥
दीन बचन कहि बहु बिधि कानलि। सुनि कुबरी तिय माया ठानलि ॥३॥
येहन कहह किय मन कय ऊने। सुख सोहाग तोरा दिन दूने ॥४॥
ताकल तोहर अहित अति जेहे। तकर फलाफल पाओत सेहे ॥५॥
सुनलहुँ कुमत जखन सौँ स्वामिनि। भूख न बासर निंद न जामिनि ॥६॥
गुनिगन पुछल कहल दिढ़ सेहे। भरत हेता नृप नहि संदेहे ॥७॥
कही करह जौँ तौँ येक काजे। तव सेबा बस छथि महराजे ॥८॥

दोहा—खसब कूप तव बचन पर, सकब पूत पति त्यागि।
कहह हमर दुख देखि बड़, किय न करब हित लागि ॥२१॥

कुबड़ि कैकयि कें बलिपसु कैलक । कपट छुरी उर सिला पिजैलक ॥१॥
लखथि न रानि निकट दुख केना । चरय हरित तृन बलिपसु जेना ॥२॥
सुनइत मधुर अंत कटु बानी । दैछ मानु मधु माहुर सानी ॥३॥
कहल चेरि छहु मन नहि तोही । स्वामिनि कहलह कथा जे मोही ॥४॥
दुइ बरदान भूप सौं थाती । माँगह आइ जुड़ावह छाती ॥५॥
सुतहिँ राज रामहिँ बनबासे । दैह लैह सौतिनिक हुलासे ॥६॥
रामक सपथ जखन नृप करता । मँगिहह तखन बचन नहि टरता ॥७॥
हैत अकाज बितति निसि जानह । मन सौं हमर बचन प्रिय मानह ॥८॥

दोहा—बड़ कुघात कय पातकिनि, कहल कोपगृह जाह ।
काज सम्हारह सजग सब, सहसा जुनि पतियाह ॥२२॥

कुबड़िहिँ रानि प्रानप्रिय जानल । पुनि पुनि बड़ि बुधियारि बखानल ॥१॥
तुअ सन हित न हमर संसारे । भसिआइत तों भेलह अधारे ॥२॥
जौं विधि पुरथि मनोरथ काल्ही । करब तोहि दृग पुतरी आली ॥३॥
तखन चेरि कें बहु सनमानी । गेली कोपगृह केकयि रानी ॥४॥
बिपति बीज बरषा रितु नउरी । खेत केकयी केर मति बउरी ॥५॥
जनमल अँकुर कपट जल पाबी । बर दुइ दल दुख फल अछि भावी ॥६॥
सुतलि सालि सब कोपक साजे । नसलि कुमति निज करइत राजे ॥७॥
राजमहल पुर होअय कोलाहल । ई कुचालि क्यो किछु नहि थाहल ॥८॥

दोहा—प्रमुदित पुर नर नारि सब, साजथि मँगलाचार ।
क्यो पैसथि बहराथि क्यो, भीड़ भूप दरबार ॥२३॥

बाल सखा सुनि हिय हरषाथी । मिलि दस पाँच राम लग जाथी ॥१॥
प्रभु आदरथि प्रेम अति जानी । पूछथि कुसल छेम मृदु बानी ॥२॥
प्रिय निदेस लहि घर घुरि जाथी । राम बड़ाइ पथहिँ बतियाथी ॥३॥
के रघुबीर सरिस संसारे । सील सिनेह निमाहनि हारे ॥४॥
जनमि करम बस जाइ जोनि जहँ । देथु ईस हमरा ई पुनि तहँ ॥५॥
सेबक हम स्वामी सियकंते । निबहौ भाव अंत परजंते ॥६॥

सकल नगर जन मन ई चाहे । केकइ सुता हृदय अति दाहे ॥७॥
के नहि नसइछ पाबि कुसंगे । भसिआइछ मति नीच प्रसंगे ॥८॥

दोहा—साँझ समय सानंद नृप, गेला केकयिक गेह ।
गेल निठुरता लग जेना, धयने देह सिनेह ॥२४॥

नृप सँकुचला कोपगृह सूनी । पायर सिथिल भेल भय गूनी ॥१॥
जनिक बाहुबल सुथिर सुरेसे । ताकथि जसु रुखि सकल नरेसे ॥२॥
सुनि तिय कोप सुखयला से टा । देखह काम प्रताप कते टा ॥३॥
सूल कुलिस असि अँगबथि जेहो । काम कुसुम सर भेल हत सेहो ॥४॥
सभय नरेस प्रिया लग गेला । दारुन दुखी दसा लखि भेला ॥५॥
भूमि सयन पट मोट पुराना । देल फेकि तन भूषन नाना ॥६॥
लाग कुवेष केकयिक केना । अनअहिवात हो भावी जेना ॥७॥
जाय निकट कह नृप मृदु बानी । रुसलहुँ कियेक प्रान प्रिय रानी ॥८॥

छंद—रुसलहुँ कियेक कहु रानि छुबइत पानि पतिहिँ निबारथी ।
मानू सरोष भुजंगभामिनि विषम भाँति निहारथी ॥
दुइ बासना रसना दसन बर ठाम मरमक देखथी ।
तुलसी नृपति भवितव्यता बस काम कौतुक लेखथी ॥

सोरठा—पुनि पुनि कहथि नरेस, सुमुखि सुलोचनि पिकबचनि ।
कहु निज रिसक उदेस, हमरा झट गजगामिनी ॥२५॥

प्रिये अहाँक अहित के कयलक । के जमप्रिय के दुइ सिर धयलक ॥१॥
कोन रंक केँ करी नरेसे । कहु कोन नृपहिँ निकाली देसे ॥२॥
सकी अहँक अरि अमरहुँ मारी । कीट सरिस पुनि की नर नारी ॥३॥
जनितहिँ छी सोभाव अहँ मोरे । मन तुअ आनन चान चकोरे ॥४॥
प्रिया प्रान सुत सरबस जे टा । परिजन प्रजा अहिँक बस से टा ॥५॥
जौँ किछु कही कपट कय तोही । भामिनि राम सपथ सय मोही ॥६॥
हँसी खुसी माँगू जे किछु मन । साजू पुनि भूषन सुंदर तन ॥७॥
बेर कुबेर सोचि जिय देखू । बेगि प्रिया परिहरू कुबेषू ॥८॥

दोहा—ई सुनि मन गुनि सपथ बड़, बिहुँसि उठलि मतिमंद ।
भूपन सजथि बिलोकि मृग, मानु किरातिनि फंद ॥२६॥

नृप पुनि कहल सुहृद जिय जानी । प्रेम पुलकि मृदु मंजुल बानी ॥१॥
भामिनि पुरल अहिँक मनकामे । पुर बधाइ आनँद प्रति धामे ॥२॥
राम काल्हि होयता जुबराजे । सजू सुलोचनि मंगल साजे ॥३॥
दलकि उठलि सुनि हृदय कठोरे । जनि छुबइत पाकल बलतोरे ॥४॥
बिहुँसि नुकाओल पीड़ा तेना । प्रगट चोरतिय कान न जेना ॥५॥
छल चतुरइ नृप लखि नहि पाओल । कोटि कुटिलमनि गुरुक पढ़ाओल ॥६॥
जद्यपि नीति निपुन नरनाहे । जलनिधि सम तिय चरित अथाहे ॥७॥
कपट सिनेह बढ़ाय बहोरी । बजली बिहुँसि नयन मुँह मोरी ॥८॥

दोहा—माँगु माँगु प्रिय अहँ कही, किंतु न कहियो देल ।
कहल देब दुइ बर सेहो, संसय पैबा लेल ॥२७॥

नृप हँसि कहल मरम हम जानल । रुसबा मे अहँ बड़ रस मानल ॥१॥
मँगलहुँ नहि थाती कय देलहुँ । छी बिसराह बिसरि हम गेलहुँ ॥२॥
फुसिये दोष न हमरा देबे । दू की चारि माँगि बरु लेबे ॥३॥
रघुकुल रीति सदा बिख्याते । प्रान जाय बरु जाय न बाते ॥४॥
नहि असत्य सम पातक पुंजे । गिरि सम हो कि कोटिओ गुंजे ॥५॥
सत्यमूल सब सुकृत बखानल । वेद पुरान बिदित मनु मानल ॥६॥
राम सपथ कयलनि तहि साथे । सुकृत सिनेह अवधि रघुनाथे ॥७॥
दिढ़ कय बात उठलि हँसि भाखी । कुमति बाज खोलल जनि आँखी ॥८॥

दोहा—भूप मनोरथ सुभग बन, सुख सुबिहंग समाज ।
जनि भिल्लनि छोड़य चहय, बचन भयंकर बाज ॥२८॥

मास पारायण, विश्राम—१३

दियऽ प्रान प्रिय ई बर एके । चाही हम भरतक अभिषेके ॥१॥
माँगी दोसर बर कर जोरी । पूर मनोरथ करू बहोरी ॥२॥
तापस बेष बिसेष उदासी । चौदह बरष राम बनवासी ॥३॥

सुनि मृदु बचन भूप हिय सोके । ससिकर छुवि बिहबल जनि कोके ॥४॥
गेला सहमि न किछु कहि आबय । बाज जेना बगड़ा पर धाबय ॥५॥
बिबरन भेल निपट नरपाले । दामिनि हनल मानु तरु ताले ॥६॥
माथ हाथ दय मुनि दुहु नयने । सोचथि सोच जेना तनु धयने ॥७॥
मोर मनोरथ सुरतरु फूले । फरति करिनि जनि हतल समूले ॥८॥
अवध उजाड़ केकयी केलनि । अचल बिपति केर न्यो हठि देलनि ॥९॥

दोहा—**कोन समय की भेल ई, गेलहुँ तिय बिस्वास ।**
जोग सिद्धिफल समय जनि, जतिहिँ अबिद्या नास ॥२९॥

येहि बिधि सोच भूप मन करथी । देखि कुभाँति कुमति मन जरथी ॥१॥
भरत अहाँक पूत नहि छल की । हमरा किनि बेसाहि आनल की ॥२॥
जे सुनि लागल सर सम तोही । किय न सम्हारि बचन देल मोही ॥३॥
कहु दै छी अथवा नहि दै छी । रघुकुल सत्यसंध कहबै छी ॥४॥
गछने रही आब नठि नैबे । सत्य तेजि जग अपजस पैबे ॥५॥
सत सराहि कहलहुँ बर देबे । बुझल कि हम फुटहा लय लेबे ॥६॥
सिबि दधीचि बलि जे किछु भाषल । तन धन तजल बचन प्रन राखल ॥७॥
अति कटु बचन केकयी भाषथि । मानू नोन जरल पर राखथि ॥८॥

दोहा—**धरम धुरंधर धीर धय, भूपति नयन उघारि ।**
सिर धुनि लेल उसास ई, मरम हनल तरुआरि ॥३०॥

आगू लखल जरति रिस भारी । काढ़ल मानु रोप तरुआरी ॥१॥
मूठि कुबुद्धि निठुरता धारे । कुबड़ि सान दय कयल तैयारे ॥२॥
लखल महीप कराल कठोरे । लेत सत्य की जीवन मोरे ॥३॥
हृदय बज्र कय बजला भूपे । बिनय बचन तनि रुचि अनुरूपे ॥४॥
प्रिये कहीं की बचन कुरंगे । प्रीति प्रतीति भीति कय भंगे ॥५॥
राम भरत दूनू मम आँखी । सत्य कही साछी सिव राखी ॥६॥
दूत पठैब अवस्य पराते । औता झट सुनितहिँ दुहु भ्राते ॥७॥
सुदिन सोधि सब साज सजा कय । देब भरत केँ राज बजा कय ॥८॥

दोहा—राजक लोभ न राम केँ, बहुत भरत पर प्रीति ।
हम बड़ छोट बिचारि जिय, करति छलहुँ नृप नीति ॥३१॥

राम सपथ सत भाषी तोही । राम माय किछु कहल न मोही ॥१॥
तोहि बिनु पुछि कयलहुँ सब काजे । तेँ मम टुटल मनोरथ आजे ॥२॥
रिस तजि साजिअ मंगल साजे । होयता सपदि भरत जुबराजे ॥३॥
येंके बात हमरा दुख भारी । बर दोसर असमंजस कारी ॥४॥
येखनहुँ हृदय जरय तहि आँचे । रिस परिहास कि साँचे साँचे ॥५॥
कहु तजि रोष राम अपराधू । सब क्यो कहथि राम सुठि साधू ॥६॥
अहूँ सराही करी सिनेहे । आब होअय सुनि मोहि संदेहे ॥७॥
जकर सोभाव अरिहुँ अनुकूले । कोना करथि मातुक प्रतिकूले ॥८॥

दोहा—प्रिया हास रिस परिहरिअ, माँगु बिचारि बिबेक ।
देखी जहि सौँ नयन भरि, भरत राज अभिषेक ॥३२॥

जीबय पानि बिना बरु मीने । जीबय मनि बिनु फनि दुखदीने ॥१॥
कही सोभाव हृदय छल हीने । जीवन नहि मम राम बिहीने ॥२॥
बुझि देखू जिय प्रिया प्रवीने । जीवन रामक दरस अधीने ॥३॥
मृदु बच सुनि कुमति अति जरले । मानु अनल आहुति घृत पड़ले ॥४॥
कहथि करू बरु कोटि उपाया । येतय अहाँक चलत नहि माया ॥५॥
दिय की लिय अहँ अजसक टीका । बहु प्रपंच मोहि लाग न नीका ॥६॥
राम साधु अहँ साधु गेआनी । राम माय भल हम सब जानी ॥७॥
कौसिला मम भल ताकल जेहने । देब तनिका उपकरि फल तेहने ॥८॥

दोहा—होइत प्रात मुनि बेष धय, जौँ न जेता बन राम ।
हमर मरन अपजस अहँक, नृपति हैत परिनाम ॥३३॥

ई कहि कुटिल भेली उठि ठाढ़ी । रोष नदी जनि आयल बाढ़ी ॥१॥
से पापक गिरि सौँ अवतरले । देखल न जाय क्रोध जल भरले ॥२॥
दुहु बर कूल कठिन हठ धारे । भमर कूबड़ी बचन प्रचारे ॥३॥
ढाहति भूपरूप तरु मूले । चलल बिपति बारिधि अनुकूले ॥४॥

बात सत्य देखल नरनाथे । माथ नचैछ मृत्यु तिय लाथे ॥५॥
पद धय कयलनि बिनय प्रकारे । होउ न अहँ रविबंस कुठारे ॥६॥
माँगू सिर येखनहिँ देब तोही । राम बिरह जुनि मारू मोही ॥७॥
राखू रामहिँ कोनहु भाँती । नहिँ तौँ जरत जनम भरि छाती ॥८॥

दोहा—देखल ब्याधि असाध नृप, पड़ला महि धुनि माथ ।
कहति परम आरत बचन, राम राम रघुनाथ ॥३४॥

बिकल महीप सिथिल तन केना । करिनि खसौल कलपतरु जेना ॥१॥
कंठ सूख मुख आब न बानी । जेना दीन पोठी बिनु पानी ॥२॥
पुनि केकइ कटु कठिन कहै छथि । मानु घाओ मे माहुर दै छथि ॥३॥
जौँ येहने करतब छल आगू । कहल कोन बल माँगू माँगू ॥४॥
दुहु कि होअय येक संग भुपाले । हँसब ठठाय फुलायब गाले ॥५॥
दानि बनब धय कृपनक रंगे । हो कि बीरता कुसलक संगे ॥६॥
छोड़ू बचन कि धीरज आनू । अबला जकाँ न करुना ठानू ॥७॥
धरनि धाम धन तिय सुत प्राने । सत्यसंध हित तृनक समाने ॥८॥

दोहा—मरम बचन सुनि कहल नृप, अछि किछु दोष न तोर ।
लागल तोहि पिसाच जनि, काल कहाबय मोर ॥३५॥

भरमहु भरत न चाहथि राजे । तव हिय कुमति देल विधि आजे ॥१॥
ई सब हमर पाप परिनामे । जैँ कुसमय भेला विधि बामे ॥२॥
नीके जकाँ अवध पुनि बसते । गुनमय रामक प्रभुता लसते ॥३॥
सेबा करथिन पुनि सब भाई । तिहु पुर रामक होयत बड़ाई ॥४॥
तव कलंक पछताबा मोरे । मुइनहुँ जैत न हैत न ओरे ॥५॥
जे मन भावय करु से जा कय । होउ कात झट मूँह नुका कय ॥६॥
जाधरि जिबी कही कर जोरी । ताधरि जुनि किछु कहू बहोरी ॥७॥
अंत अभागिनि होयतहु तापे । करह सिंह हित गोबध पापे ॥८॥

दोहा—खसला नृप कहि कोटि बिधि, करी कियैक निदान ।
कपट चतुर नहि कहथि किछु, साधथि मानु मसान ॥३६॥

राम राम रट बिकल नृपाले । जनि बिनु पाँखि विहंग बेहाले ॥१॥
हृदय मनावथि भोर न आवय । क्यो न राम कें जाय जनावय ॥२॥
उगू न हे रघुकुल गुरु भानू । सूल हैत अवधहिँ लखि जानू ॥३॥
केकइ निठुरइ दसरथ प्रीती । विधि दुहु अवधि रचल भल रीती ॥४॥
विलपति नृपहिँ भोर भय गेले । बीना वेनु संख धुनि भेले ॥५॥
पढ़थि भाट गुन गाबथि गायक । सुनइत नृप कें लागय सायक ॥६॥
मंगल सकल सोहाय न केना । सहगामिनि कें भूषन जेना ॥७॥
तहि निसि ककरहु नीन न आयल । राम दरस ललसा उमगायल ॥८॥

दोहा--द्वार भीर सेवक सचिव, कहथि उगल रवि देखि ।
जगला आइ न अवधपति, कारन कोन बिसेखि ॥३७॥

पहर राति जागथि नित राजा । बड़ अचरज मोहि लागय आजा ॥१॥
जाउ भूप कें सचिव जगाऊ । अनुमति लय सभ काज कराऊ ॥२॥
तखन सुमंत महल मे गेला । जाइत देखि भेऔन डेरेला ॥३॥
देखल न जाय जेना धय खाइछ । बिपति बिपादक बास बुझाइछ ॥४॥
पुछनहुँ क्यो जन उतर न कहथी । गेला जहँ नृप केकइ रहथी ॥५॥
बैसला सिर नति कहि जय जीवे । नृप गति लखि सुखि गेला अतीबे ॥६॥
सोच विकल बिवरन महि पड़ले । मानू जड़ि सौं कमल उखड़ले ॥७॥
सचिव सभीत सकथि नहि पूछी । बजली असुभ भरलि सुभ छूछी ॥८॥

दोहा--भेल न नृप कें नीन निसि, हेतु जान जगदीस ।
राम राम रटि रात गत, कहथि न मरम महीस ॥३८॥

सपदि राम कें आनु बजा कय । तखन हाल सब पूछब आ कय ॥१॥
चलला सचिव भूप रुचि जानी । बुझल कुचालि कयल किछु रानी ॥२॥
पड़य न पथ पग सोच बिकलता । रामहिँ बजा भूप की बजता ॥३॥
गेला द्वार उर धीरज धारी । लखि उदास सब करय पुछारी ॥४॥
समाधान कय सभक सजतने । गेला जतय दिनकर कुल रतने ॥५॥
राम सुमंत्रहिँ अबइत देखी । आदर कयल पिता सम लेखी ॥६॥

मुख लखि सुना निदेस महीपक । चलला सँग लय रघुकुल-दीपक ॥७॥
ज्ञाथि कुभाँति सचिब सँग रामे । लखि बिलखथि सभ जत तत धामे ॥८॥

दोहा—जाय लखल रघुवंसमनि, नरपति निपट कुसाज ।
सहमि गेल सिंहिनि निरखि, मानु बृद्ध गजराज ॥३६॥

अधर सुखाय जरय सब अंगे । मानु दीन मनि हीन भुजंगे ॥१॥
लग छथि कुपित केकयी केना । घड़ी गनैत मृत्यु हो जेना ॥२॥
मृदु सोभाव करुनामय रामे । प्रथम देखल दुख सुनल न नामे ॥३॥
तदपि धीर धय अवसर जानी । पुछल माय सौँ मधुमय बानी ॥४॥
कहु कहु माय तात दुख कारन । करी जतन जे होअय निवारन ॥५॥
सुनू तात थिक कारन एहे । नृप केँ अहँ पर बहुत सिनेहे ॥६॥
कहलनि दुइ बर दै छी तोही । माँगल जे किछु भाओल मोही ॥७॥
से सुनि भेल भूप उर सोचे । छाड़ि न सकथि अहँक संकोचे ॥८॥

दोहा—येम्हर नेह सुत ओम्हर सत, संकट पड़ल नरेस ।
सकी तँ सिर आज्ञा धरू, मेटू कठिन कलेस ॥४०॥

बाजथि बैसि निधोक तितायल । सुनति कठिनतो अति अकुलायल ॥१॥
जीभ कमान बचन सर नाना । मानु महिप मृदु लच्छ समाना ॥२॥
जनि कठोरपन धेने सरीरे । सिखय धनुष विद्या बर बीरे ॥३॥
रघुपति केँ सब सुना प्रसंगे । बैसलि जनि निठुरइ धय अंगे ॥४॥
रघुकुल रवि मुसुकाथि मनेमन । राम सहज आनंद निकेतन ॥५॥
बजला बचन बिगत सब दूषन । मृदु मंजुल जनि बाग विभूषन ॥६॥
जननि सैह सुत छथि बड़ भागी । जे पितु मातु बचन अनुरागी ॥७॥
तनय मातु पितु तोषनिहारे । दुरलभ जननि सकल संसारे ॥८॥

दोहा—बन मुनि मिलन बिसेष मम, सब बिधि भल परिनाम ।
तहु पर पितु आज्ञा जननि, तव संमत तहु ठाम ॥४१॥

भरत प्रान प्रिय पावथि राजे । विधि सब विधि मोहि सनमुख आजे ॥१॥
जौँ न जाइ बन येहनहु काजे । प्रथम हैब हम मूढ़ समाजे ॥२॥

सेबथि अराड़ि कलपतरु त्यागी । परिहरि अमिय लेथि बिष माँगी ॥३॥
चुकय न से हो एहन छन मे । देखु बिचारि माय निज मन मे ॥४॥
अंब एक दुख मोहि बिसेखी । निपट बिकल नरनायक देखी ॥५॥
अल्पहि बात तात दुख भारी । मोहि परतीति न हो महतारी ॥६॥
भूप धीर गुन उदधि अगाधे । भेल मोहि सौँ किछु बड़ अपराधे ॥७॥
तेँ नृप मोहि न कहथि किछु बाता । हमर सपथ सत सत कहु माता ॥८॥

दोहा—सहज सरल रघुबर बचन, कुमति कुटिल कय जान ।
चलय जोँक जनि बक्र गति, जद्यपि सलिल समान ॥४२॥

रानी मुदित राम रुखि जानी । बजली कपट नेह भरि बानी ॥१॥
अहँक ओ भरतक सपथ कहै छी । आन हेतु हम किछु न जनै छी ॥२॥
अहँ अपराध जोग नहि ताता । जननी जनक बंधु सुखदाता ॥३॥
राम कहैछी सब अहँ ठीके । अहँ पितु मातु बचन रत नीके ॥४॥
गोहराबी पितु कहू बुझा कय । अजस न होअय चरम वय पा कय ॥५॥
तव सम सुत जे सुकृत अछि देने । भल नहि तकर अनादर केने ॥६॥
लागय कुमुख बचन सुभ केना । तीर्थ गयादि मगह मे जेना ॥७॥
रामहिँ माइक बचन सोहायल । जेना सोभय जल सुरसरि आयल ॥८॥

दोहा—गत मुरछा रामहिँ सुमिरि, लेल करौट महीप ।
कहल समय सम बिनय कय, अयला राम समीप ॥४३॥

अयला राम सुनल नृप जखने । खोलल नयन धीर धय तखने ॥१॥
सचिब नृपहिँ बैसाय सम्हारल । नृप रामहिँ पद पड़ति निहारल ॥२॥
नेह बिकल हुनि हृदय लगाओल । मानु गेल मनि फनि पुनि पाओल ॥३॥
रामहिँ नृप चितइत रहलाहे । चलत बिलोचन बारि प्रबाहे ॥४॥
सोच बिबस किछु नहि कहि पाबथि । बेरि बेरि हुनि हृदय लगाबथि ॥५॥
विधिहिँ मनहि मन भूप मनाबथि । वन रघुनाथ जाय नहि पाबथि ॥६॥
सुमिरि महेसहिँ करथि निहोरा । विनती सुनू सदासिव मोरा ॥७॥
आसुतोष अहँ औढर दानी । आरति हरू दीन जन जानी ॥८॥

दोहा—उर प्रेरक सबहुक अहाँ, दी मति रामहिँ सेह ।
बचन हमर तजि रहथु घर, परिहरि सील सिनेह ॥४४॥

अजस लही बरु सुजस गमावी । सुरपुर नसओ नरक बरु पावी ॥१॥
सकल दुसह दुख मोहि सहायव । लोचन ओट न राम करायब ॥२॥
येहन गुनथि मन मुँह नहि बाते । डोलय मन जनि पिपरक पाते ॥३॥
रघुपति पितहिँ प्रेम बस जानल । मा पुनि किछु कहती अनुमानल ॥४॥
देस काल अवसर अनुसारी । बजला बचन विनीत विचारी ॥५॥
तात कही किछु ढिठपन ठानी । छमब दोष मम नेनपन जानी ॥६॥
अति लघु बातहिँ अहँ दुख पाओल । क्यो नहि पहिने मोहि जनाओल ॥७॥
लखि ई दसा माय सौँ पूछल । सुनितहिँ भय गेल सीतल हीतल ॥८॥

दोहा—मंगल समय सिनेह बस, तजू सोक सब तात ।
दिय निदेस हरषित हृदय, कहति पुलक प्रभु गात ॥४५॥

धन्य जनम जगती तल तकरे । हरषित पिता चरित सुनि जकरे ॥१॥
चारि पदारथ करतल तनिकर । प्रिय पितु मातु प्रान सम जनिकर ॥२॥
आज्ञा पालि जनम फल पयबे । दिय निदेस हम झट घुरि अयबे ॥३॥
बिदा माय सौँ आबी माँगी । जायब बिपिन बहुरि पद लागी ॥४॥
ई कहि राम गमन झट केलनि । भूप सोक बस उतर न देलनि ॥५॥
पसरल पुर भरि बात सुतीछे । छुबति चढ़ल जनि सब तनु बीछे ॥६॥
भेल बिकल सुनि सब नर नारी । बेलि बिटप जनि देखि दवारी ॥७॥
माथ धुनय जे जहँ सुनि पाबय । बड़ बिपाद सब धिरज गमाबय ॥८॥

दोहा—मुख सुखाय लोचन स्रवय, सोच न हृदय समाय ।
जनि करुना रस दल चढ़ल, पुर पर डंक बजाय ॥४६॥

बिचहि देल विधि बात बिगारी । सबहु पढ़य केकयि केँ गारी ॥१॥
ई पापिनि की मन बुझि लेलक । छारल घर पर पावक देलक ॥२॥
निज कर काढ़ि देखय चह आँखी । अमिय उझिलि चाहय विप चाखी ॥३॥
कुटिल कठोर कुबुद्धि अभागलि । रघुकुल बेनु अगिनि बनि लागलि ॥४॥

पल्लव बैसि गाछ ई कटलक । सुख मे सोक ठाठ धय ठठलक ॥५॥
रामहिँ सदा प्रान सम मानल । ई कोन हेतु कुटिलपन ठानल ॥६॥
सत्य कहल कवि नारि सोभावे । सब बिधि अगह अगाध दुरावे ॥७॥
पकड़ल होअय अपन बरु छाया । बुझल जाय नहि नारिक माया ॥८॥

दोहा—की नहि पावक जारि सक, की न समुद्र समाय ।
की न करय अबला प्रबल, ककरा काल न खाय ॥४७॥

की सुनाय विधि पुनि कि सुनाबय । की देखाय की चाह देखाबय ॥१॥
एक कहथि भल भूप न केलनि । बर बिचारि नहि कुमतिहिँ देलनि ॥२॥
जहि कारन सब क्यो दुख पाओल । नारि बिबस गुन ज्ञान गमाओल ॥३॥
एक धरम मरजादा जानथि । भूप दोप से चतुर न मानथि ॥४॥
सिवि दधीचि हरिचंद कहानी । एक एक सौँ कहथि बखानी ॥५॥
भरत बिचार एक जन कहथी । एक उदास भाव सुनि रहथी ॥६॥
जीभ कूचि आँगुर धय काने । फूसि कथा ई कह क्यो आने ॥७॥
नसत सुकृत तव येहन उचारी । भरतहिँ राम प्रान प्रिय भारी ॥८॥

दोहा—ससि चुअबथु बरु अनल कन, सुधा बनओ बिष तूल ।
सपनहु किछु कय सकथि नहि, भरत राम प्रतिकूल ॥४८॥

एक बिधातहिँ दोष लगाबथि । सुधा देखा जे गरल पियाबथि ॥१॥
खरभर नगर दुसह उर दाहे । सबहिँ सोक मन नसल उछाहे ॥२॥
कुलक मान्य बृद्धा द्विज नारी । जे कैकयि केर परम पियारी ॥३॥
लगली सिखबय सील सराही । बचन बान सम लागय ताही ॥४॥
भरत न प्रिय मोहि राम समाने । सतत कही अहँ जान जहाने ॥५॥
सहज सिनेह राम पर केलहुँ । की अपराध आइ बन देलहुँ ॥६॥
सौतिनि डाह न कहियो आनल । प्रीति प्रतीति सकल जग जानल ॥७॥
आइ कोसिला कयल कि दोपे । पुरहिँ बज्र हनलहुँ जहि रोपे ॥८॥

दोहा—तजती की पिय संग सिय, लखन कि रहता धाम ।
राज भरत करताह की, जिउत कि नृप बिनु राम ॥४९॥

ई बुझि सपदि क्रोध दिअ छारी। होउ न सोक कलंक पेटारी ॥१॥
भरतहिँ अबस करू जुबराजे। जाथि राम बन तकर कि काजे ॥२॥
छनि न रामके राजक भूखे। धरमधुरिन रस बिषय बिमूखे ॥३॥
गुरु गृह बसथु राम तजि गेहे। नृप सौँ लिय दोसर वर एहे ॥४॥
कहल हमर जौँ धरब न माथे। तौँ न तोहि लागत किछु हाथे ॥५॥
कैने होइ जौँ किछु परिहासे। तौँ से झट दय करू प्रकासे ॥६॥
रामक सन सुत कानन जोगे। सुनि की कहत अहाँके लोगे ॥७॥
उठु झट करु उपाय से जतने। मेटय सोक कलंकक घटने ॥८॥

छंद—जहि भाँति सोक कलंक जाय उपाय कय कुल राखु हे।
बन चलति रामहिँ हठि धुरा जुनि बात दोसर भाखु हे॥
जनि भानु बिनु दिन प्रान बिनु तन चंद बिनु जनि जामिनी।
तहिना अवध तुलसी प्रभुक बिनु जानु ध्रुव जिय भामिनी॥

सोरठा—सखि सब सिच्छा देल, फल हितकर सुनइत मधुर।
से किछु कान न लेल, कुटिला कुबड़िक टुसल छलि ॥५०॥

उतर न दै रिस दुसह रिसायल। लखय हरिन जनि बघिन भुखायल ॥१॥
ब्याधि असाध सबहु बुझि लेलनि। अबुधि अभागलि कहि चलि देलनि ॥२॥
दैब बिगाड़ल करइत राजे। कयल से जे क्यो कयल न काजे ॥३॥
यहि बिधि बिलपय पुर नर नारी। दैछ कुचालिहिँ कोटिक गारी ॥४॥
जरय बिषम जर लैछ उसासे। रामक बिनु की जीवन आसे ॥५॥
प्रजा बियोग बेआकुल भारी। जनि जलचर गन सुखइत बारी ॥६॥
अति बिषाद बस पुर नर नारी। राम गेलाह निकट महतारी ॥७॥
मुख प्रसन्न चित चौगुन चाहे। मिटल सोक नृप नहि रोकताहे ॥८॥

दोहा--नव गयंद रघुवीर मन, राज अलान समान।
छुटति जानि बनगमन सुनि, हृदय अनंद महान ॥५१॥

रघुकुल तिलक जोरि दुहु हाथे। मुदित नमौल माय पद माथे ॥१॥
आसिष देलनि लगा उर लेलनि। भूषन बसन निछाउरि केलनि ॥२॥
बेरि बेरि मुख चूमथि माता। नयन नेह जल पुलकित गाता ॥३॥
हृदय लगौल रखल पुनि गोदे। स्त्रवय प्रेमरस पूत पयोदे ॥४॥
प्रेम प्रमोद जाय नहि कहले। रंक धनद पदवी जनि लहले ॥५॥
सादर सुंदर वदन निहारी। बजली मधुर बचन महतारी ॥६॥
कहू तात जननी बलिहारी। कखन लगन मुद मंगलकारी ॥७॥
सुकृत सील सुख सीमा रूपे। जनम लाभ केर अवधि अनूपे ॥८॥

दोहा—चाहय सब नर नारि जे, अति आरत येहि भाँति।
जनु चातक चातकि तृषित, बृष्टि सरद रितु स्वाति ॥५२॥

ली बलाय सुत सपदि नहाऊ। जे मन रुचय मधुर किछु खाऊ ॥१॥
पितु लग तखन जैब अहँ बाऊ। टलओ बलाय न देर लगाऊ ॥२॥
माय वचन सुनि अति अनुकूले। जथा सिनेह देवतरु फूले ॥३॥
सुख मकरंद भरल श्री मूले। रिझ न राम मन अलि तहि फूले ॥४॥
धरम धुरीन धरम गति जानी। कहल माय सौं अति मृदु बानी ॥५॥
पिता देल मोहि कानन राजे। जहँ सब भाँति हमर बड़ काजे ॥६॥
दिय आदेस माय प्रमुदित मन। जहि सौं हो मंगल जाइत बन ॥७॥
जुनि सिनेह बस करु डर मन मे। अहिँक अनुग्रह आनँद बन मे ॥८॥

दोहा—बरष चारिदस बिपिन बसि, कय पितु बचन प्रमान।
आबि फेर देखब चरन, मन नहि करब मलान ॥५३॥

रघुबर बचन विनीत मधूरे। सर सम बेधल माइक उरे ॥१॥
सिहरि सुखलि सुनि सीतल बानी। जनि जबास पर पावस पानी ॥२॥
कहि न होअय किछु हृदय विषादे। जनि हरिनी सुनि केहरि नादे ॥३॥
तन थर थर काँपय जल नयने। मीन मतल जनि माँजा खयने ॥४॥
धय धैरज सुत बदन निहारी। गदगद बचन कहथि महतारी ॥५॥
पितुक प्रान प्रिय अहँ छी भारी। प्रमुदित नित नव चरित निहारी ॥६॥

तिलकक सुभ दिन ताकल रहले । की अपराध जाउ बन कहले ॥७॥
हमरा तात सुनाउ निदाने । के भेल रविकुल अगिनि समाने ॥८॥

दोहा—निरखि राम रुखि सचिव सुत, कारन कहल बुझाय ।
भेली मूक प्रसंग सुनि, दसा न बरनल जाय ॥५४॥

राखि न सक नहि कहि सक जाहे । दुहु बिधि उर मे दारुन दाहे ॥१॥
लिखति सुधाकर राहु लिखायल । विधि गति बाम सदा चलि आयल ॥२॥
धरम नेह बिच मति घुरियेलनि । साप छुछुन्नरि केर गति भेलनि ॥३॥
राखी पूत करी अनुरोधे । धरम जाय ओ बंधु बिरोधे ॥४॥
कही जाय बन तौँ बड़ हानी । भेली सोच संकट बस रानी ॥५॥
पुनि बुझि कय तिय धरम सयानी । राम भरत दुहु सुत सम जानी ॥६॥
सरल सोभाब राम महतारी । बजली बचन धीर धय भारी ॥७॥
ली बलाय सुत कैलहुँ नीके । पितु निदेस सब धरमक टीके ॥८॥

दोहा—राज देब कहि देल बन, हमरा नहि दुख लेस ।
भरत भूप पुनि प्रजा केँ, अहँ बिनु दुसह कलेस ॥५५॥

जौँ केवल पितु आयसु ताता । तौँ जुनि जाउ जानि बड़ि माता ॥१॥
जौँ पितु मातु कहल बन जाऊ । तौँ सय अवध सरिस बन बाऊ ॥२॥
पितु बनदेव मातु बनदेवी । खग मृग चरन सरोरुह सेवी ॥३॥
अंतहु उचित नृपति बनबासे । बयस हेरि हिय होअय हरासे ॥४॥
बड़भागी बन अवध अभागल । रघुकुल मनि जकरा अहँ त्यागल ॥५॥
जौँ सुत कही संग लिय मोही । होयत हृदय मे संसय तोही ॥६॥
सभक परम प्रिय अहाँ जहाने । जीबक जीब प्रानहुक प्राने ॥७॥
से अहँ कही माय बन जाई । सुनि हम बचन बैसि पछताई ॥८॥

दोहा—ई बिचारि नहि हठ करी, फूसि सिनेह बढ़ाय ।
जीबु माइ केर भाव गुनि, सुरति न दिय बिसराय ॥५६॥

करता देव पितर सब काले । नयन पुतरि सन तव प्रतिपाले ॥१॥
अवधि अंबु प्रिय परिजन मीने । अहँ करुनाकर धरम धुरीने ॥२॥

तात करब से जतन मनहिँ गुनि । जिबितहिँ सबकेँ भेँटी अहँ पुनि ॥३॥
जीबू जाउ बिपिन सुख साथे । कय जन परिजन गाम अनाथे ॥४॥
सबहुक आइ सुकृत फल गेले । काल कराल बाम अछि भेले ॥५॥
कत बिलाप कय पद लपटेली । निजहिँ अभागल बुझइत भेली ॥६॥
दारुन दुसह दाह उर व्यापल । जाय बिलाप कलाप न मापल ॥७॥
राम उठा उर माय लगौलनि । मृदुल बचन कहि फेर बुझौलनि ॥८॥

दोहा—समाचार तहि समय सुनि, सिय उठली अकुलाय ।
जाय सासु पद कमल नमि, बैसली माथ झुकाय ॥५७॥

सासु मधुर बच आसिष देलनि । लखि सुकुमारि हृदय अकुलेलनि ॥१॥
बैसि नमित मुख सोचथि सीता । रूप रासि पतिप्रेम पुनीता ॥२॥
जाय चाह बन जीवननाथे । कोन सुकृत बल होयब साथे ॥३॥
की तन प्रान कि केवल प्राने । जानल जाय न विधिक बिधाने ॥४॥
रेखथि धरनि चरन नख चाने । नूपुर मुखर मधुर कवि भाने ॥५॥
मातु प्रेम बस करय निहोरे । सिय पद त्याग करू जुनि मोरे ॥६॥
मंजु बिलोचन मोचथि वारी । बजली देखि राम महतारी ॥७॥
तात सुनू सिय अति सुकुमारी । सासु ससुर परिजनक पियारी ॥८॥

दोहा—पिता जनक भूपाल मनि, ससुर भानु कुल भानु ।
पति रविकुल कैरब बिपिन, बिधु गुन रूप निधान ॥५८॥

पौलहुँ हमहु पुतोहु उजागरि । रूप सील गुन आगरि नागरि ॥१॥
दृग पूतरि कय प्रीति बढ़ौलहुँ । जानकि मे निज प्रान बसौलहुँ ॥२॥
कलप बेलि सन बहु बिधि लालल । सींचि सिनेह सलिल प्रतिपालल ॥३॥
फुलइत फड़इत भेल विधि बामे । बुझल न जाय कोन परिनामे ॥४॥
पलँग पीठ तजि हिड़ुला कोरे । सिय न देल पग अवनि कठोरे ॥५॥
जिवन जड़ी जनु जोगवति रहलहुँ । दीप बाति नहि टारय कहलहुँ ॥६॥
से सिय चलय कहथि बन साथे । अनुमति की होइछ रघुनाथे ॥७॥
चंद्र किरन रस रसिक चकोरी । रबि रुखि नयन कोना सक जोरी ॥८॥

दोहा—करि केहरि निसिचर विचर, दुष्ट जंतु बन बूल ।
बिष बाटिका कि सोभ सुत, सुभग सजीवन मूल ॥५९॥

कोल किरात सुता बन जोगे । बिधि रचलनि बंचित सुख भोगे ॥१॥
पाहन कृमि सम कठिन सोभावे । नहि कलेस बन कहियो पावे ॥२॥
बा तापस तिय कानन जोगे । जे तप हेतु तजल सब भोगे ॥३॥
बन बसती कोन बिधि सिय सेहे । लखि डेराथि चित्रहुँ कपि जेहे ॥४॥
सुरसर सुभग बनज बन चारी । डाबर जोग कि हंसकुमारी ॥५॥
येहन सोचि अनुमति हो जेहन । हम सिख देब जानकिहि ँ तेहन ॥६॥
जौ ँ सिय रहथि भवन कह अंबे । हमरा हैत बहुत अवलंबे ॥७॥
सुनि रघुबीर माय प्रिय बानी । सील सिनेह सुधारस खानी ॥८॥

दोहा—कहि प्रिय बचन बिवेकमय, दलनि माय कँ तोष ।
लगला बोधय जानकिहिँ, कहि बिपिनक गुन दोष ॥६०॥

मास पारायण, विश्राम—१४

जदपि सँकोच माय लग रहले । मन मन गुनि अवसर पुनि कहले ॥१॥
राजकुमारि सीख ई सुनबे । आन भाँति जिय जुनि किछु गुनबे ॥२॥
हमर अपन दुहु भल यदि चाही । रहु घर हमर बचन हित थाही ॥३॥
सासुक सेबा हमर निदेसे । सब बिधि भामिनि भबनहिँ बेसे ॥४॥
येहि सौ ँ बाढ़ि धरम नहि आने । सासु ससुर पद पुजन समाने ॥५॥
जखन जखन जननी सुधि करती । सुधमति प्रेम बिकलता धरती ॥६॥
कहि कहि तखन पुरान कहानी । सुंदरि समुझयबनि मृदु बानी ॥७॥
कही सोभाव सपथ सय मोही । सुमुखि मातु हित राखी तोही ॥८॥

दोहा—गुरु श्रुति सम्मत धरम फल, पावी बिना कलेस ।
हठ बस सब संकट सहल, गालव नहुष नरेस ॥६१॥

हम पुनि कय प्रमान पितु बानी । सपदि घुरब सुनु सुमुखि सयानी ॥१॥
दिबस बितैत देर नहि गुनबे । हमर सिखाओन सुंदरि सुनबे ॥२॥

जौँ हठ करब प्रेम बस बामे । तौँ दुख अहँ पायब परिनामे ॥३॥
कानन कठिन भयंकर भारी । घोर बसात रौद हिम बारी ॥४॥
पथ कुस कंटक काँकर नाना । पैरहिँ चलब बिना पदत्राना ॥५॥
चरन कमल मृदु मंजुल तोरे । पथ बड़ बड़ गिरि दुरगम घोरे ॥६॥
कंदर खोह नदी नद बाहा । जाय न देखल अगम अथाहा ॥७॥
सिंह बाघ रिछ बृक गज गाजय । नाद करय सुनि धीरज भागय ॥८॥

दोहा—भूमि सयन बलकल बसन, असन कंद फल मूल ।
सेहो की सब दिन भेटत, सबहि समय अनुकूल ॥६२॥

नर भच्छक निसिचर चर नाना । धय धय कोटि कपटमय बाना ॥१॥
लागय अति पहाड़ केर पानी । कहू कते बन बिपति बखानी ॥२॥
ब्याल कराल बिहग बन घोरे । निसिचर निकर नारि नर चोरे ॥३॥
धीरो डरथि बनक सुधि अयने । अहँ छी सहज भीरु मृगनयने ॥४॥
हंसगमनि अहँ नहि बन जोगे । देत अजस सुनि हमरा लोगे ॥५॥
पोसल मानस अमि जल धारे । जियत मरालि कि जलनिधि खारे ॥६॥
नब रसाल बन बिहरन सीले । सोभ कि कोकिल बिपिन करीले ॥७॥
रहू भवन हिय येहन बिचारी । चंदबदनि बन मे दुख भारी ॥८॥

दोहा—सहज सुहृद गुरु स्वामि सिख, जे न करय सिर मानि ।
से पछताय अघाय उर, अबस होअय हित हानि ॥६३॥

पियक मनोहर सुनि मृदु बयने । नोर भरल सिय पंकज नयने ॥१॥
सीतल सिख दाहक भेल केहन । चकबाहिँ सरद चंद्र निसि जेहन ॥२॥
उतर न आब बिकल बैदेही । तजय चहथि सुचि स्वामि सिनेही ॥३॥
बरबस रोकि बिलोचन बारी । धय धीरज उर अवनि कुमारी ॥४॥
कह सासुक पद कर जुग धारी । छमब देवि मोर अविनय भारी ॥५॥
देल प्रानपति मोहि सिख जेहे । हमर परम हितकारक सेहे ॥६॥
हम पुनि सोचि देखल निज मन मे । प्रिय वियोग सम दुख न भुवन मे ॥७॥

दोहा—**प्राननाथ करुनायतन, सुंदर सुखद सुजान ।**
अहँ बिनु रघुकुल कुमुद बिधु, सुरपुर नरक समान ॥६४॥

मातु पिता भगिनी प्रिय भ्राता । प्रिय परिवार सुहृद संघाता ॥१॥
सासु ससुर गुरु स्वजन सहायक । सुत सुंदर सुसील सुखदायक ॥२॥
नाथ नेह नाता अछि जे जे । प्रिय बिनु तियहिँ तरनि सौँ तेजे ॥३॥
तन धन धाम धरनि पुर राजे । पति बिहीन सब सोक समाजे ॥४॥
भोग रोग सम भूषन भारे । जम जातना सरिस संसारे ॥५॥
प्राननाथ बिनु अहँक जहाने । सुखद न मोहि कतहु किछु आने ॥६॥
जी बिनु देह नदी बिनु बारी । तहिना नाथ पुरुष बिनु नारी ॥७॥
नाथ अहँक सँग सब सुखकारी । सरद बिमल विधु बदन निहारी ॥८॥

दोहा—**खग मृग परिजन नगर बन, बलकल बिमल दुकूल ।**
नाथ संग सुर सदन सम, परन साल सुख मूल ॥६५॥

बनदेवी बनदेव उदारा । सासु ससुर सन करत सम्हारा ॥१॥
कुस किसलय मय गोनरि जेहो । प्रभु सँग काम सेज सम सेहो ॥२॥
कंद मूल फल अमिय अहारे । अवध महल सय सरिस पहारे ॥३॥
छन छन प्रभु पद कमल बिलोकी । रहब मुदित जनि दिन मे कोकी ॥४॥
बन दुख नाथ कहल कत रासे । भय बिपाद परिताप तरासे ॥५॥
प्रभु बियोग लवलेस समाने । सब मिलि हैत न कृपानिधाने ॥६॥
जानि सुजान सिरोमनि सेहे । लिअ मोहि संग छोड़िअ नहि गेहे ॥७॥
विनती बहुत करू की स्वामी । करुनामय उर अंतरजामी ॥८॥

दोहा—**राखु अवध विच यदि बुझी, रहत अबधि धरि प्रान ।**
दीनबंधु सुंदर सुखद, सील सिनेह निधान ॥६६॥

पथ नहि होयत मोहि श्रमकारी । छन छन चरन सरोज निहारी ॥१॥
पिय सेवा हम सब विधि करबे । मारग जनित सकल श्रम हरबे ॥२॥
बैसि छाँह तब चरन पखारी । वियनि डोलायब मन मुद धारी ॥३॥
श्रमजल बिंदु भरल तन स्यामे । चितति प्रानपति दुखक न नामे ॥४॥

सम महि बिछा पात तृन रासी । नित निसि जाँतत पद ई दासी ॥५॥
बेरि बेरि मृदु मूरति जोही । लागत तपत बसात न मोही ॥६॥
के प्रभु संग हेरि मोहि सकते । सिंहिनि केँ सियार की तकते ॥७॥
हम सुकुमारि नाथ बन जोगे । अहँ केँ तप भल हमरा भोगे ॥८॥

दोहा—जौँ न हृदय फाटत हमर, सुनि वच येहन पखान ।
तौँ प्रभु बिषम बियोग दुख, सहते पामर प्रान ॥६७॥

ई कहि बिकल भेली सिय भारी । बचन बियोग न भेल सम्हारी ॥१॥
रघुपति बुझल दसा लखि तखने । रखती प्रान न हठ कय रखने ॥२॥
कहल कृपालु भानुकुल नाथे । परिहरि सोक चलू बन साथे ॥३॥
अछि न बिषादक अवसर आजे । बेगि साजु बन गमनक साजे ॥४॥
मधुर बचन कहि सियहिँ बुझौलनि । लागि मातु पद आसिष पौलनि ॥५॥
बेगि प्रजा दुख आबि मेटैबनि । निठुर माय केँ बिसरि न जैबनि ॥६॥
विधि पुनि घुरते दसा हमर की । लखब नयन जोड़ी मनहर की ॥७॥
सुदिन सुछन सुत हैत से कहिया । जिबइत माँ मुख देखती जहिया ॥८॥

दोहा—बहुरि बाउ कहि लाल कहि, रघुपति रघुवर तात ।
कहिया बजा लगाय हिय, हरखि बिलोकब गात ॥६८॥

लखि सिनेह कातरि महतारी । बाजि न सकथि बिकलि छथि भारी ॥१॥
राम प्रबोधल बिबिध प्रकारे । तखनुक नेह बरनि के पारे ॥२॥
जानकि तखन सासु पद लगली । सुनू माय हम परम अभगिली ॥३॥
सेबा समय दैब बन देलनि । हमर मनोरथ सफल न केलनि ॥४॥
करब सिनेह न राखब रोषे । करम कठिन किछु हमर न दोषे ॥५॥
आकुल सासु सुनि सिय बानी । दसा कोन बिधि कहू बखानी ॥६॥
बारंबार लगा उर लेलनि । धय धीरज सिख आसिष देलनि ॥७॥
तुअ अहिवात रहओ थिर ताधरि । गंगा जमुना धारा जाधरि ॥८॥

दोहा—सीतहिँ सासु असीष सिख, देल अनेक प्रकार ।
चलली नमि पद पदुम सिर, अति हित बारंबार ॥६९॥

सुधि जखनहिँ लछुमन ई पाओल । ब्याकुल बिलख बदन उठि धाओल ॥१॥
कंप पुलक तन नयन सनीरे । गहल चरन अति प्रेम अधीरे ॥२॥
बाजि न सकथि चितथि ठकुआयल । दीन मीन जनि जल सौँ लायल ॥३॥
सोचथि विधि इच्छा की तोरे । सभ सुभ सुकृत अंत भेल मोरे ॥४॥
हमरा की कहता रघुनाथे । रखता भवन कि लेता साथे ॥५॥
राम देखि लखनहिँ कर जोड़ने । देह गेह सबसौँ तृन तोड़ने ॥६॥
बजला बचन राम नय नागर । सील सिनेह सरल सुख सागर ॥७॥
तात प्रेम बस हृदय न हारू । अंत उछाह बूझि अवधारू ॥८॥

दोहा—मातु पिता गुरु स्वामि सिख, सिर धय सहज करैछ ।
तकरे जनम सुफल न तौँ, जीवन बृथा धरैछ ॥७०॥

सुनि सिख जिय गुनि बुझू बाता । सेबू जननि जनक पद ताता ॥१॥
घर नहि भरत सत्रुहन आजे । मम दुख दुखी वृद्ध महराजे ॥२॥
जौँ बन जाइ तोहि लय साथे । सब बिधि होयत अवध अनाथे ॥३॥
गुरु पितु मातु प्रजा परिवारे । सबके़ँ पड़त दुसह दुख भारे ॥४॥
रहू करू सबहुक परितोषे । नहि तौँ तात हैत बड़ दोषे ॥५॥
जनिक राज प्रिय प्रजा दुखारी । से नृप अबस नरक अधिकारी ॥६॥
रहू तात ई नीति बिचारी । लखन बिकल भेला सुनि भारी ॥७॥
सीतल बच सुनि सुखला केना । छुबइत तुहिन तामरस जेना ॥८॥

दोहा—उतर न आबय प्रेम बस, गहल चरन अकुलाय ।
नाथ स्वामि अहँ दास हम, तजब त कोन उपाय ॥७१॥

प्रभु मोहि देलहुँ अहँ भल ज्ञाने । निज कदराइ अगम हो भाने ॥१॥
नर बर धीर धरम धुर धारी । सैह निगम नीतिक अधिकारी ॥२॥
प्रभु सिनेह पालित हम बाले । मंदर मेरु कि धरत मराले ॥३॥
गुरु पितु मातु न ककरहु जानी । कही सोभाव साँच बुझु बानी ॥४॥
जग जत नाता प्रीति प्रतीती । श्रुति सम्मत संबंधक रीती ॥५॥
एक अही ँ सब किछु मोहि स्वामी । दीनबंधु उर अंतरजामी ॥६॥

धरम नीति उपदेसी तकरा । कीरति भूति सुगति प्रिय जकरा ॥७॥
मन क्रम वचनें चरनहिँ लागल । कृपासिंधु से जाय कि त्यागल ॥८॥

दोहा—करुनानिधि सुनि अति मृदुल, बंधुक वचन विनीत ।
बोधल हृदय लगाय प्रभु, जानि सिनेह सभीत ॥७२॥

जाय विदा माता सौँ माँगू । चलू बिपिन जलदी सँग लागू ॥१॥
मुदित भेला सुनि रघुवर बानी । भेल बड़ लाभ गेल बड़ हानी ॥२॥
ऐला माता लग हरपायल । अंधहिँ नयन पलटि जनि आयल ॥३॥
जाय झुकौल जननि पद माथे । मन रघुनंदन जानकि साथे ॥४॥
पूछल माय मलिन मन देखी । लखन कहल सब कथा बिसेखी ॥५॥
गेल्हि सहमि सुनि बचन कठोरे । जनि मृगि लखि दवागि चहु ओरे ॥६॥
लखन लखल भेल अनरथ आजे । नेह बिवस करतीह अकाजे ॥७॥
मँगइत बिदा सभय सकुचै छथि । जाइ न वा सँग कि ओ कहै छथि ॥८॥

दोहा—जानि सुमित्रा राम सिय, रूप सुसील सोभाव ।
नृप सिनेह लखि धुनल सिर, पापिनि रचल कुदाव ॥७३॥

धीरज धैल कुअबसर जानी । सहज सुहृद बजली मृदु बानी ॥१॥
तात अहाँक माय बैदेही । पिता राम सब भाँति सिनेही ॥२॥
अवध तहाँ जहँ राम निबासे । ततहि दिवस जहँ भानु प्रकासे ॥३॥
जौँ सिय राम जाथि बन आजे । अहँक अवध मे नहि किछु काजे ॥४॥
गुरु पितु मातु बंधु प्रभु देवा । सबहुक करी प्रान सम सेवा ॥५॥
जीवक जिवन राम प्रिय प्रानक । बिनु स्वारथ छथि सखा जहानक ॥६॥
पूज्य परम प्रिय जन छाथे जे टा । मान्य राम संबंधहिँ से टा ॥७॥
ई गुनि मनहिँ संग बन जाऊ । तात जगत जीवन फल पाऊ ॥८॥

दोहा—मोहि सह बड़भागी अहाँ, ली हम अहँक बलाय ।
जैँ अहाँक मन छाड़ि छल, गहल राम पद जाय ॥७४॥

पुत्रवती जुबती जग से टा । रघुपति भगत जकर हो बेटा ॥१॥
भल वरु बाँझ व्यर्थ जननिक तन । राम विमुख सुत सौँ हित बुझ मन ॥२॥

राम जाथि तव भाग्यहिँ कानन । येहि मे तात हेतु किछु आन न ।।३।।
सब सुकृतक महान फल एहे । राम सीय पद सहज सिनेहे ।।४।।
राग मोह मद इरषा रोखे । येहि मे सपनहुँ फँसब न धोखे ।।५।।
सब बिकार तजि सकल प्रकारे । सेबब मन क्रम बचन बिचारे ।।६।।
बनहुँ अहँक सुबिधा सब रंगे । जेँ पितु मातु राम सिय संगे ।।७।।
जहि सौँ लह न राम बन क्लेसे । सुत से करब ऐह उपदेसे ।।८।।

छंद—उपदेस यतबे अहँक गेने राम सिय सुख पाबथी ।
पितु मातु प्रिय परिबार पुर सुख सुरति बन बिसराबथी ।।
तुलसी प्रभुहिँ उपदेसि अनुमति दय देलनि आसिष अती ।
तोहि रहय अबिरल अमल सिय रघुवीर पद नित नित रती ।।

सोरठा—माय चरन सिर टेकि, चलला झट संकित हृदय ।
बिषम फाँस तोड़ि फेँकि, जनि पड़ाय मृग भाग बस ।।७५।।

लखन गेला जहँ जानकिनाथे । भेल मन मुदित पाबि प्रिय साथे ।।१।।
बंदि रामसिय चरन ललामे । संगे सँग अयला नृप धामे ।।२।।
कहय परसपर पुर नर नारी । बनल बात विधि देल बिगारी ।।३।।
तन कृस मन दुख बदन मलीने । मधु छीनल माछी जनि दीने ।।४।।
सिर धुनि कर मलि मलि पछताइछ । जनि बिनु पाँखि बिहग अकुलाइछ ।।५।।
भेल भीड़ बड़ नृप दरबारे । कहल न जाय बिषाद अपारे ।।६।।
भूपहिँ सचिब उठा बैसौलनि । येला राम प्रिय बचन सुनौलनि ।।७।।
सिय समेत दुहु तनय निहारी । भेला बिकल भूमिपति भारी ।।८।।

दोहा—सीय सहित सुत सुभग दुहु, देखि देखि अकुलाय ।
बारंबार सिनेह बस, नृप उर लेथि लगाय ।।७६।।

सकथि न बाजि बिकल नरनाहे । सोक जनित उर दारुन दाहे ।।१।।
अति अनुराग बंदि पद धीरे । माँगल बिदा ऊठि रघुवीरे ।।२।।

दिय आज्ञा पितु आसिष बानी । हरष समय बिसमय किय आनी ॥३॥
तात कैने प्रिय प्रेम प्रमादे । जस जग नसत होयत अपबादे ॥४॥
सुनि सिनेह बस उठि नरनाथे । बैसाओल रघुपति धय हाथे ॥५॥
तात अहाँकेँ कहथि मुनीसे । राम थिकाह चराचर ईसे ॥६॥
सुभ ओ असुभ करम अबधारी । ईस देथि फल हृदय बिचारी ॥७॥
करय जैह पाबय फल सेहे । सब कह निगम नीति थिक एहे ॥८॥

दोहा—आन करय अपराध क्यो, आन पाब फल भोग ।
अति बिचित्र भगवंत गति, के जग जानय जोग ॥७७॥

भूप राम केँ राखय लागी । बहुत उपाय कयल छल त्यागी ॥१॥
रहता नहि रामक रुखि जानी । धरम धुरंधर धीर प्रमानी ॥२॥
सिय केँ हृदय लगा नृप लेलनि । अति हित बहुत भाँति सिख देलनि ॥३॥
कहि कहि बन दुख दुसह सुनौलनि । सासु ससुर पितु सुख समुझौलनि ॥४॥
सिय मन राम चरन अनुरागल । घर न सुगम बन बिषम न लागल ॥५॥
आनो सब क्यो सियहिँ बुझौलनि । कहि कहि बन दुख बहुत सुझौलनि ॥६॥
सचिब नारि गुरु नारि सयानी । सहित सिनेह कहथि मृदु बानी ॥७॥
तोहि बनबास भेंटल नहि जानू । सासु ससुर गुरु कहथि से मानू ॥८॥

दोहा—सिख सीतल हित मधुर मृदु, सुनि सीतहिँ न सोहाय ।
लगइत सरद इजोरिया, जनि चकबी अकुलाय ॥७८॥

सिय सकुचा न उतर दय सकली । सुनितहिँ उठि केकयी तमकली ॥१॥
मुनि पट भूषन भाजन आनी । आगू धय बजली मृदु बानी ॥२॥
नृपहिँ प्रान प्रिय अहँ रघुबीरू । सील सिनेह न तजता भीरू ॥३॥
जस परलोक सुकृत नस जइयो । अहँ बन जाउ न कहता तइयो ॥४॥
ई बिचारि करु जे रुचि धारी । जननि सीख सुनि राम सुखारी ॥५॥
बचन बान सम नृप केँ लागल । करय न प्रान प्रयान अभागल ॥६॥
लोक बिकल मुरछित नरपाले । ककरो किछु न सुझय तहि काले ॥७॥
बुझि मुनि बेष राम झट धेलनि । प्रनमि जनक जननी चलि देलनि ॥८॥

दोहा—सजि बन साज समाज सब, बनिता बंधु समेत ।
चलला गुरु द्विज पद परसि, प्रभु कय सबहिँ अचेत ॥७९॥

गुरुक द्वार जा ठाढ़ भेलाहे । देखल लोक जर बिरहक दाहे ॥१॥
सबके कहि प्रिय बचन बुझौलनि । द्विजगन केँ रघुवीर बजौलनि ॥२॥
गुरु सौँ कहि बरषासन देलनि । आदर दान बिनय बस केलनि ॥३॥
जाचक दान मान सौँ तोषल । मीतहिँ पूत प्रेम परितोषल ॥४॥
दासी दास बजाय बहोरी । गुरुहिँ सौँपि बजला कर जोरी ॥५॥
करबनि सभक सम्हार मुनीसे । सब बिधि जननी जनक सरीसे ॥६॥
बारंबार जोरि जुग पानी । कहथि राम सब सौँ मृदु बानी ॥७॥
से सब भाँति हमर हितकारी । जहि सौँ रहथि महीप सुखारी ॥८॥

दोहा—जननि सकल बिरहेँ हमर, पुनि न होथि दुख दीन ।
से उपाय अहँ सब करब, पुरजन परम प्रबीन ॥८०॥

येहि बिधि सबके राम बुझौलनि । हरषि गुरुक पद माथ झुकौलनि ॥१॥
गनपति गौरि गिरीस मना कय । चलला रघुपति आसिष पा कय ॥२॥
राम चलति अति भेल बिषादे । जाय सुनल नहि आरत नादे ॥३॥
असगुन लंक अवध अति सोके । हरष बिषाद बिबस सुर लोके ॥४॥
मुरछा बिगत तखन नृप जगला । बजा सुमंत कहय पुनि लगला ॥५॥
गेला राम बन प्रान न गेले । तन मे रहल कोन सुख लेले ॥६॥
येहि सौँ कोन व्यथा बलवाने । जे दुख पाबि तजत तन प्राने ॥७॥
पुनि कह नृपति धीर धय चीते । लय रथ संग जाउ अहँ मीते ॥८॥

दोहा—सुठि सुकुमार कुमार दुहु, जनकसुता सुकुमारि ।
रथ पर चढ़ा देखाय बन, घुरब बितति दिन चारि ॥८१॥

जौँ नहि घुरथि बंधु दुहु साथे । सत्यसंध दृढ़ ब्रत रघुनाथे ॥१॥
तौँ अहँ बिनय करब कर जोरी । प्रभु घुराउ मिथिलेस किसोरी ॥२॥
जखन डेराथि सीय बन हेरी । कहब हमर ई सिख तहि बेरी ॥३॥

कहलनि सासु ससुर संदेसे । फिरिय पुत्रि बन बहुत कलेसे ॥४॥
खन नैहर खन ससुर भवन मे । रहब ततहि जत रुचि हो मन मे ॥५॥
येहि बिधि करब कोनो परकारे । घुरथि तँ होयत प्रान अधारे ॥६॥
नहि तौं हमर मरन परिनामे । बस न चलय किछु बिधि भेल बामे ॥७॥
मुरुछि खसल नृप कहि ई तखने । देखब आनि राम सिय लखने ॥८॥

दोहा--पावि निदेस नमाय सिर, रथ द्रुतगामि सजाय ।
गेला जहँ बाहर नगर, सीय सहित दुहु भाय ॥८२॥

तखन सचिव नृप बचन सुनौलनि । कय बिनती रथ राम चढ़ौलनि ॥१॥
चढ़ि रथ दुहु भ्राता सिय साथे । चलला अवधहिँ हिय नमि माथे ॥२॥
चलति राम लखि अवध अनाथे । बिकल लोक सब लागल साथे ॥३॥
कृपासिंधु बहु भाँति बुझावथि । घुरथि प्रेम बस पुनि घुरि आवथि ॥४॥
लागय अवध भयाओन भारी । मानू काल राति हो कारी ॥५॥
घोर जंतु सम पुर नर नारी । डरथि एक केँ एक निहारी ॥६॥
घर मसान परिजन जनि भूते । सुत हित मीत मानु जमदूते ॥७॥
उपवन विटप बेलि कुम्हिलाइछ । सरित सरोवर देखल न जाइछ ॥८॥

दोहा--कोटिक हय गज केलि मृग, पुर पशु चातक मोर ।
पिक रथांग सुक सारिका, सारस हंस चकोर ॥८३॥

राम बियोग ठाढ़ ठकुआयल । जहँ तहँ सब जनि चित्र लिखायल ॥१॥
नगर सकल घन कानन भारी । खग मृग बिपुल सकल नर नारी ॥२॥
विधि केकई किरातिनि केलनि । जे दव दुसह दसो दिसि देलनि ॥३॥
सहि न सकल रघुवर बिरहागी । चलल लोक सब ब्याकुल भागी ॥४॥
यैह बिचारथि सब मन अपने । राम लखन सिय बिनु सुख सपने ॥५॥
जहाँ राम तहँ सकल समाजे । बिनु रघुवीर अवध नहि काजे ॥६॥
ई अवधारि चलल सँग लागी । सुर दुरलभ सुख सदन तेयागी ॥७॥
राम चरन पंकज प्रिय जनिका । बिषय भोग बस करत कि तनिका ॥८॥

दोहा—बाल बृद्ध केँ छोड़ि घर, चलल लोक सब साथ ।
टिकला तमसा तीर पर, प्रथम दिबस रघुनाथ ॥८४॥

रघुपति प्रजा प्रेम बस देखल । सदय हृदय अतिसय दुख लेखल ॥१॥
करुनामय रघुनाथ बिसेखी । होथि दुखी झट परदुख देखी ॥२॥
कहि सप्रेम मृदु बचन ललामे । बहुत बुझौल लोक केँ रामे ॥३॥
कयल धरम उपदेस कतेको । प्रेम बिवस घुरइछ नहि एको ॥४॥
सील सिनेह होअय नहि छारी । रघुपति असमंजस मे भारी ॥५॥
श्रम बस सूतल लोक सोगायल । किछु सुर माया बसेँ मोहायल ॥६॥
बितल जाम जुग जामिन जखने । राम सचिब केँ कहलनि तखने ॥७॥
लीक बारि रथ हाँकू ताता । आन उपाय बनत नहि बाता ॥८॥

दोहा—राम लखन सिय रथ उपर, चढ़ला संभु मनाय ।
सचिब चलौलनि तुरित रथ, इत उत लीक बराय ॥८५॥

जागल सकल लोक भेल भोरे । रघुपति गेला भेल अति सोरे ॥१॥
कोम्हरहु रथक लीक नहि पाबथि । राम राम कहि चहु दिसि धाबथि ॥२॥
मानु सिंधु मे डुबल जहाजे । बिकल भेल हो बनिक समाजे ॥३॥
एकहिँ एक देथि उपदेसे । राम तजल बुझि हमर कलेसे ॥४॥
निंदथि निजहिँ सराहथि मीने । धिक जीवन रघुबीर बिहीने ॥५॥
बिधि जौँ प्रिय बियोग ई केलनि । तौँ किय मरन न मँगने देलनि ॥६॥
यहि बिधि करति प्रलाप कलापे । ऐला अवध भरल परितापे ॥७॥
बिषम बियोग होअय नहि भाखल । अबधि आस सब प्रानहिँ राखल ॥८॥

दोहा—राम दरस हित नेम ब्रत, करय लगल नर नारि ।
मानु कोक कोकी कमल, दीन बिहीन तमारि ॥८६॥

सीता सचिब सहित दुहु भ्राते । ऐला शृंगबेरपुर काते ॥१॥
राम उतरला सुरसरि देखी । कयल दंडवत हरषि बिसेखी ॥२॥
लखन सचिब सिय कयल प्रनामे । सभक सहित सुख पौलनि रामे ॥३॥
गंग सकल मुद मंगल मूले । सब सुख करनि हरनि सब सूले ॥४॥

कहि कहि कोटि कथा परसंगे । राम बिलोकथि गंग तरंगे ॥५॥
सचिवहिँ अनुजहिँ प्रियहिँ सुनौलनि । सुरसरि महिमा बहुत बुझौलनि ॥६॥
मज्जन कयल पंथ श्रम गेले । सुचि जल पिबइत मुद मन भेले ॥७॥
सुमिरति जनिका नस श्रम भारे । तनि श्रम ई लौकिक व्यवहारे ॥८॥

दोहा—सुद्ध सच्चिदानंदमय, कंद भानुकुल केतु ।
चरित करथि मानव सरिस, संसृति सागर सेतु ॥८७॥

जखन निषाद येहन सुधि पौलनि । मुदित भेला प्रिय बंधु बजौलनि ॥१॥
भरि फल मूल सनेसक भारे । मिलय चलल हिय हरष अपारे ॥२॥
कय दंडवत आगु धय मेटे । चितथि प्रभुहिँ अति प्रेम समेटे ॥३॥
सहज सिनेह बिबस रघुनाथे । कुसल पूछि बैसाओल साथे ॥४॥
लखि पद कंज कुसल महराजे । भेलहुँ भाग भाजन जन आजे ॥५॥
प्रभु अहीँक ई धन घर द्वारे । हम जन नीच सहित परिवारे ॥६॥
कृपया पुर पद धरु भगवाने । जन बनबू सिहाय सब आने ॥७॥
कहल सत्य सब सखा सुजाने । मोहि देल पितु आज्ञा आने ॥८॥

दोहा—बरष चारि दस बास बन, मुनि ब्रत बेष अहार ।
ग्राम बास नहि उचित सुनि, दुख भेल गुहहिँ अपार ॥८८॥

राम लखन सिय रूप निहारी । कहथि सप्रेम ग्राम नर नारी ॥१॥
से पितु मातु कहह सखि केहन । जे पठौल बन बालक एहन ॥२॥
एक कहथि भल भूपति केलनि । नयन लाभ हमरा बिधि देलनि ॥३॥
तखन अपन हिय गुह अनुमानल । तरु सिंसुपा मनोहर जानल ॥४॥
जा देखौल रघुपति केँ ठामे । सब बिधि सुंदर कहलनि रामे ॥५॥
गोड़ लागि पुरजन घर गेले । रघुबर संध्या हित चलि देले ॥६॥
गुह खड़तरि सजि कयल ओछाओन । कुस किसलयमय मृदुल सोहाओन ॥७॥
सुचि फल मूल मधुर मृदु जानी । दौना भरि भरि राखल आनी ॥८॥

दोहा—सिय सुमंत्र भ्राता सहित, कंद मूल फल खाय ।
सयन कयल रघुबंस मनि, पद जुग जाँतथि भाय ॥८९॥

उठला लखन सुतल प्रभु जानी । सचिवहिँ सुतय कहल मृदु बानी ॥१॥
किछु हटि सजि कय बान सरासन । जागय लगला कय बीरासन ॥२॥
लेल पहरुआ बजा प्रतीती । थल थल राखल गुह अति प्रीती ॥३॥
बैसलाह लखनक लग जा कय । कटि भाथी सर चाप चढ़ा कय ॥४॥
सुतइत प्रभुहिँ निहारि निषादे । भेलनि प्रेम बस हृदय बिषादे ॥५॥
तन मे पुलक आँखि मे नोरे । कहथि लखन सौँ प्रेम बिभोरे ॥६॥
नृपति भवन भल सहज ललामे । पाब न परतर सुरपति धामे ॥७॥
रचित चारु चौद्वार रतन सौँ । स्वकर मदन जनि रचल जतन सौँ ॥८॥

दोहा—सुचि सुबिचित्र सुभोगमय, सुमन सुगंध सुबास ।
पलँग मंजु मनि दीप जहँ, सब बिधि सकल सुपास ॥९०॥

बिबिध बसन तुराइ उपधाने । स्वच्छ मृदुल पय फेन समाने ॥१॥
तहँ सियराम सयन निसि करथी । निज छवि रति मनोज मद हरथी ॥२॥
से सियराम बसन बिनु थाकल । खड़तारि सुतथि जाय नहि ताकल ॥३॥
माय पिता परिजन पुरबासी । सखा सुसील दास ओ दासी ॥४॥
जोगबथि जनिका प्रान समाने । महि सुतथि से राम महाने ॥५॥
पिता जनक परभाव बिदीते । दसरथ ससुर सुरेसक मीते ॥६॥
से बैदेहि राम पति जिनका । सुतथि महि बिधि बाम न किनका ॥७॥
सिय रघुवीर न कानन जोगे । करम प्रधान सत्य कह लोगे ॥८॥

दोहा—केकय नंदिनि मंद मति, कुटिलइ कयल कठोर ।
देल रघुनंदन जानकिहिँ, सुख अवसर दुख घोर ॥९१॥

भेलि दिनकर कुल बिटप कुठारी । देलि कुमति जग भरि दुख भारी ॥१॥
भेल बिषाद निषादहिँ भारी । राम सीय महि सयन निहारी ॥२॥
कहल लखन मृदु बच मधु बोरल । ज्ञान बिराग भगति रस घोरल ॥३॥
क्यो नहि ककरहु सुख दुख दाता । निज कृत करम भोग सब भ्राता ॥४॥
जोग बियोग भोग भल मंदे । हित अनहित मध्यम भ्रम फंदे ॥५॥
जनम मरन जहँ धरि जग जाले । संपति बिपति करम ओ काले ॥६॥

धरनि धाम धन पुर परिवारे। सरग नरक जहँ धरि व्यवहारे ॥७॥
देखी सुनी गुनी मन चीते। मोह मूल परमार्थ रहीते ॥८॥

दोहा—भिच्छुक हो नृप सपन मे, सुरपुर स्वामि भिखारि।
लाभ हानि जगने न किछु, जिय परपंच बिचारि ॥६२॥

करू येहन बुझि नहि किछु रोषे। व्यर्थ दियनु ककरहुँ नहि दोषे ॥१॥
मोह निसा सब सूतनिहारे। देखथि सपन अनेक प्रकारे ॥२॥
येहि जग जामिनि जागथि जोगी। परमारथी प्रपंच बियोगी ॥३॥
जानी तखन जीव जग जागल। विषय बिलास जखन हो त्यागल ॥४॥
होइत बिवेक मोह भ्रम भागय। रघुपति पदहिँ तखन रति जागय ॥५॥
सखा परम परमारथ एहे। मन क्रम बचन राम पद नेहे ॥६॥
राम ब्रह्म परमारथ रूपे। अबिगत अलख अनादि अनूपे ॥७॥
सकल बिकार रहित गत भेदे। कहि नित नेति निरूपथि वेदे ॥८॥

दोहा—भगत भूमि भूसुर सुरभि, सुरहित लागि कृपाल।
करथि चरित धय मनुज तन, सुनति नसय जग जाल ॥६३॥

मास पारायण, विश्राम—१५

सखा मोह तजि ई गुनि मन मे। रहु रत सिय रघुबीर चरन मे ॥१॥
कहति राम गुन भेल पराता। जगला जग मंगल सुख दाता ॥२॥
राम सौच कय कयल सनाने। मँगबौलनि बट छीर सुजाने ॥३॥
अनुज सहित सिर जटा बनेलनि। देखि सुमंत्रक दृग भरि एलनि ॥४॥
हृदय दाह अति बदन मलीने। हाथ जोरि बजला भय दीने ॥५॥
येहन कहल प्रभु कोसलनाथे। जाइय रथ लय रामक साथे ॥६॥
बन देखाय सुरसरि नहबा कय। आनू झट दुहु बंधु फिरा कय ॥७॥
लखन राम सिय आनु घुरा कय। सब संसय संकोच दुरा कय ॥८॥

दोहा—कहलनि नृप ई प्रभु जेहन, कहब लेब हम मानि।
खसला पद पर बिनय कय, देलनि सिसु सम कानि ॥६४॥

करु से आब कृपा कय नाथे । जहि सौँ हो नहि अवध अनाथे ।।१।।
राम उठाय सचिव केँ बोधल । तात धरम मत अहँ सब सोधल ।।२।।
सिवि दधीचि हरिचंद नरेसे । सहल धरम हित कोटि कलेसे ।।३।।
रंतिदेव बलि भूप सुजाना । पालल धरम कष्ट सहि नाना ।।४।।
धरम न दोसर सत्य समाने । बरनथि आगम निगम पुराने ।।५।।
सहजहिँ पौल धरम हम सेहे । तिहु पुर अपजस तेँजने जेहे ।।६।।
संभावित केँ अपजस लाहे । मरन कोटि सम दारुन दाहे ।।७।।
अहँ सौँ तात बहुत की कहबे । देने उतर पुनि पातक लहबे ।।८।।

दोहा—**पितु पद गहि कहि कोटि नति, विनय करब जोरि हाथ।**
चिंता मम विषयक कोनो, तात रखब जुनि माथ ।।९५।।

अहँ पुनि पितु सम अति हित मोरे । तात जोरि कर करी निहोरे ।।१।।
सब बिधि करतब ई तब बेसे । मन सोचेँ न पितहिँ हो क्लेसे ।।२।।
सुनि रघुनाथ सचिब संवादे । भेला सपरिजन बिकल निषादे ।।३।।
पुनि किछु लखन कहल कटु बानी । प्रभु बरजल बड़ अनुचित जानी ।।४।।
राम सपथ दय कह सकुचा कय । लखन सँदेस कहब जुनि जा कय ।।५।।
कह सुमंत्र पुनि भूप सँदेसे । सहि नहि सकती सिय बन क्लेसे ।।६।।
अवध जेना फिरि आबथि सीया । रघुवर से अहँ केँ करनीया ।।७।।
न तौँ निपट अवलंब बिहीने । हम न जियब जनि जल बिनु मीने ।।८।।

दोहा—**नैहर सासुर सकल सुख, जखनहिँ जहँ मन मान ।**
रहथु सीय सुख सौँ ततय, जाधरि बिपति बिहान ।।९६।।

कैलनि नृप बिनती जहि रीती । हो न कहल से आरति प्रीती ।।१।।
पितु सँदेस सुनि कृपानिधाने । सियहिँ देल सिख कोटि बिधाने ।।२।।
सासु ससुर गुरु प्रिय परिवारे । घुरने मेटत सभक दुख भारे ।।३।।
सुनि पति बचन कहथि बैदेही । सुनू प्रानपति परम सिनेही ।।४।।
प्रभु करुनामय परम बिवेकी । तन तजि छाँह राख के छेकी ।।५।।
*प्रभा जाय कहँ रवि केँ टारी । रह कि चंद्रिका चंद्रहिँ छारी ।।६।।

पतिहिँ बिनय कय सहित सिनेहे । कहल सचिव सौँ मृदु वच एहे ॥७॥
पिता ससुर सम अहँ हितकारी । उतर देव थिक अनुचित भारी ॥८॥

दोहा—आरति बस सनमुख भेलहुँ, अनुचित बुझू न तात ।
आरज सुत पद कमल बिनु, ब्यर्थ जहाँ धरि नात ॥९७॥

देखल हम पितु बिभव बिलासे । नृप मनि मुकुट झुकय पद पासे ॥१॥
येहन सुखित मम नैहर जइयो । पति बिनु अमहुँ सोहाय न तइयो ॥२॥
ससुर चक्रबर्ती अवधेसे । चौदह भुवन प्रभाव बिसेसे ॥३॥
सुरपति जाहि करथि अगवानी । अरध सिँहासन बैसवथि आनी ॥४॥
ससुर येहन पुनि अवध निवासू । प्रिय परिवार माय सन सासू ॥५॥
से रघुपति पद पंकज छारी । सपनहुँ नहि मोहि हो सुखकारी ॥६॥
अगम पंथ वन भूमि पहारे । करि केहरि सर सरित अपारे ॥७॥
कोल किरात कुरंग बिहंगे । मोहि सब सुखद प्रानपति संगे ॥८॥

दोहा—सासु ससुर सौँ पैर पड़ि, बिनय देव कहि मोर ।
हमर सोच नहि करथि किछु, मोहि बन सुख नहि थोर ॥९८॥

प्राननाथ प्रिय देवर साथे । बीर धुरीन धेने धनु भाथे ॥१॥
नहि मोहि पथ श्रम भ्रम दुख चित्ते । अमहु न करु दुख हमर निमित्ते ॥२॥
सचिव सियक सुनि सीतल बानी । भेला बिकल जनि फनि मनि हानी ॥३॥
सुनय न कान सुझय नहि नयने । अति ब्याकुल बहराय न बयने ॥४॥
राम प्रबोध कयल बहु भाँती । तदपि होअय नहि सीतल छाती ॥५॥
जतन अनेक संग हित केलनि । उचित उतर रघुनंदन देलनि ॥६॥
राम निदेस न जाय मेटाओल । कहि न करम गति के टरकाओल ॥७॥
राम लखन सिय माथ नमा कय । घुरल बनिक जनि मूर गमा कय ॥८॥

दोहा—रथ हाँकल हय राम तन, हेरि हेरि हिहिँआय ।
देखि निषाद बिषाद बस, धुनथि माथ पछताय ॥९९॥

जनिक बियोग बिकल पसु एना । प्रजा मातु पितु जीता केना ॥१॥
राम सुमंत्रहिँ फेरि बलाते । अपने ऐला सुरसरि काते ॥२॥

माँगल नाव न केवट आनल । कहलक अहँक मरम हम जानल ॥३॥
लोक कहय तव पदरज पूते । मानुष करन जड़ी अजगूते ॥४॥
सिला छुबैत भेलि बर नारी । काठ न कठिन ताहि सौँ भारी ॥५॥
नाबो भय जायत मुनि घरनी । कोन विधि जियब गमा कय तरनी ॥६॥
येहि सौँ पाली सब परिबारे । जानी किछु न आन ब्यापारे ॥७॥
चाही होइ पार जौँ प्रभु झट । कहु तौँ चरन धोय ली हम चट ॥८॥

छंद—पद कमल धोय चढ़ैब नाव, न नाथ किछु खेवा चही ।
मोहि राम सपथ अहाँक दसरथ सपथ सब साँचे कही ॥
बरु तीर मारथु लषन हमरा जा' न पैर पखारबे ।
ता धरि न तुलसी दास नाथ कृपालु पार उतारबे ॥

सोरठा—सुनि केवट कर बैन, अटपट लपटल प्रेम सौँ ।
बिहुँसथि करुनाऐन, चितइत जानकि लषन दिसि ॥१००॥

बिहुँसि कृपानिधि बजला भैया । करू सैह जे बाँचय नैया ॥१॥
तुरत लाउ जल पैर पखारू । देर होइत अछि पार उतारू ॥२॥
जनिक नाम सुमिरति येक बारे । उतरय नर भव सिंधु अपारे ॥३॥
से कृपालु कर येकर निहोरे । जग जनिकर तिन पदहु सँ थोरे ॥४॥
पद नख लखि हरपयली गंगे । सुनि प्रभु बचन मोह भेल भंगे ॥५॥
केवट रामक आज्ञा मानी । भरि कठौत लय आनल पानी ॥६॥
अति आनंद उमगि अनुरागल । चरन सरोज पखारय लागल ॥७॥
सुर सिहाथि बरषाबथि फूले । पुन्य पुंज के येकरा तूले ॥८॥

दोहा—पद पखारि जलपान कय, अपने सह परिबार ।
पितर पार कय प्रभुहिँ पुनि, मुदित गेल लय पार ॥१०१॥

उतरि ठाढ़ छथि सुरसरि रेते । सीय राम गुह लखन समेते ॥१॥
केवट उतरि दंडवत केलनि । प्रभु सकुचथि जेँ नहि किछु देलनि ॥२॥
सिय पिय हिय गति जाननि हारी । मनि मुँदरी मुद लेल उतारी ॥३॥

खेवा लिय कृपालु से कहले । केवट अकुलायल पद गहले ॥४॥
की न आइ हमरा प्रभु भेटल । ताप दोष दुख दारिद मेटल ॥५॥
बहुत काल धरि घाट चलौलहुँ । आइ बोनि हम सबटा पौलहुँ ॥६॥
चाही किछु नहि येकरा बादे । दीनदयाल अहाँक प्रसादे ॥७॥
फिरती बेर मोहि जे देबे । से प्रसाद हम सिर धय लेबे ॥८॥

दोहा—बहुत कहल प्रभु लखन सिय, नहि किछु केवट लेल ।
विदा कयल करुनायतन, भगति बिमल बर देल ॥१०२॥

पुनि मज्जन कय रघुकुल नाथे । पुजि पारथिव नमौलनि माथे ॥१॥
सीय जोरि कर कयल निहोरा । माय पुराउ मनोरथ मोरा ॥२॥
सकुसल पति देवर सँग आबी । पुनि अहाँक पूजा कय पाबी ॥३॥
सुनि सिय विनय प्रेम रस सानी । विमल बारि निकसल बर बानी ॥४॥
सुनु रघुवीर प्रिया बैदेही । तव प्रभाव अविदित के देही ॥५॥
तव हेरइत लोकप हो प्रानी । सेवथि तोहि सब सिधि युगपानी ॥६॥
हमरा जे बड़ बिनय सुनौलहुँ । कृपा कयल मोहि पैघ बनौलहुँ ॥७॥
देवि तदपि हम देब असीसे । सफल करक हित निज बागीसे ॥८॥

दोहा—प्राननाथ देओर सहित, आबी अवध प्रसन्न ।
पूरओ सब मन कामना, जग जस हो आछन्न ॥१०३॥

गंग वचन सुनि मंगल मूले । मुदित सीय सुरसरि अनुकूले ॥१॥
लखन कहल प्रभु गुह घर जाहे । सुनति सूख मुख भेल उर दाहे ॥२॥
गुह कह बिलखि जोरि कर दूनू । रघुकुल मनि विनती मम सूनू ॥३॥
नाथ संग रहि बाट देखायब । सेवि दिन चारि चरन धुरि आयब ॥४॥
रघुपति रहब जाहि बन पावन । परन कुटी हम रचब सुहावन ॥५॥
पुनि मोहि जे किछु आज्ञा करबे । रघुवीरक दोहाइ सिर धरबे ॥६॥
सहज सिनेह राम तनि देखी । संग लेल गुह हरष बिसेखी ॥७॥
पुनि गुह बजा ज्ञाति सब लेलनि । कय परितोष बिदा सब केलनि ॥८॥

दोहा—पुनि गनपति सिव सुमिरि प्रभु, सुरसरि माथ झुकाय ।
सखा अनुज सिय सहित वन, गमन कयल रघुराय ॥१०४॥

तहि दिन भेल बिटप तर बासे । लखन सखा सब कयल सुपासे ॥१॥
रघुपति प्रातक्रिया निपटा कय । तीर्थराज देखल प्रभु जा कय ॥२॥
सचिब सत्य श्रद्धा प्रिय नारी । माधव सरिस मीत हितकारी ॥३॥
भरल भँडार पदारथ चारी । पुन्य प्रदेस देस चितहारी ॥४॥
छेत्र अगम गढ़ दिढ़ मन भावय । सपनहुँ प्रतिपच्छी नहि पावय ॥५॥
सेन सकल तीरथ बर बीरे । कलुष अनीक दलन रनधीरे ॥६॥
संगम सिंहासन सुठि सोहय । छत्र अछयबट मुनि मन मोहय ॥७॥
चौर जमुन औ गंग तरंगे । देखि होअय दुख दारिद भंगे ॥८॥

दोहा—सेवथि सुकृती साधु सुचि, पावथि सब मन काम ।
बंदी बेद पुरान गन, कहथि बिमल गुन ग्राम ॥१०५॥

के कहि सकय प्रयाग प्रभावे । कलुष पुंज कुंजर मृगरावे ॥१॥
येहन सुरम्य तीर्थपति देखी । सुखनिधि रघुबर सुखित बिसेखी ॥२॥
तखन सुनौल लखन सिय गूहहिँ । तीर्थराज महिमा , श्री मूहहिँ ॥३॥
कय प्रनाम लखइत बन बागे । कहथि महातम अति अनुरागे ॥४॥
यहि बिधि देखल जाय त्रिवेनी । सुमिरति देथि सुमंगल श्रेनी ॥५॥
मुदित नहाय कयल सिव सेवा । पूजि जथा बिधि तीरथ देवा ॥६॥
पुनि प्रभु भरद्वाज लग आओल । प्रनमति लखि मुनि हृदय लगाओल ॥७॥
मुनि मन मोद न होअय बखानी । जनि मिल ब्रह्मानंदक खानी ॥८॥

दोहा—देल असीस मुनीस उर, अति अनंद ई जानि ।
लोचन गोचर सुकृत फल, मानु कयल विधि आनि ॥१०६॥

कुसल प्रस्न पुछि आसन देलनि । पूजि प्रेम परिपूरन केलनि ॥१॥
कंद मूल फल अंकुर नाना । देल आनि मुनि अमिय समाना ॥२॥
सीय लखन जन सहित ललामे । अति रुचि खैल मूल फल रामे ॥३॥

राम सुखी भेने श्रम दूरे । भरद्वाज कह बचन मधूरे ॥४॥
आइ सुफल तप तीरथ त्यागे । आइ सुफल जप जोग बिरागे ॥५॥
सफल सकल सुभ साधन साजे । राम अहँक दर्शन सौं आजे ॥६॥
लाभ अवधि सुख अबधि न आने । पुरल आस तव दरस महाने ॥७॥
आव कृपा कय दिय बर एहे । निज पद सरसिज सहज सिनेहे ॥८॥

दोहा—करम बचन मन छाड़ि छल, अहँक न जन भय जाय ।
ता धरि सपनहु मे न सुख, केनहु कोटि उपाय ॥१०७॥

सुनि मुनि बचन राम सकुचैला । भाव भगति आनंद अघैला ॥१॥
पुनि रघुवर मुनि सुजस अपारे । सबहिँ सुनाओल कोटि प्रकारे ॥२॥
से बड़ से सब गुनक निधाने । जकर मुनीस करी अहँ माने ॥३॥
मुनि रघुवीर परस्पर नमइछ । बचन अगोचर सुख अनुभवइछ ॥४॥
ई सुधि पाबि प्रयाग निवासी । बड़ु तापस मुनि सिद्ध उदासी ॥५॥
ऐला भरद्वाज मुनि धामे । देखय दसरथ तनय ललामे ॥६॥
राम सबहुँ केँ माथ नमौलनि । प्रमुदित नयन लाभ सब पौलनि ॥७॥
आसिप देथि परम सुख पबइत । घुरथि रूप परसंसा गबइत ॥८॥

दोहा—राम कयल विश्राम निसि, प्रात प्रयाग नहाय ।
चलला सँग सिय लखन जन, मुदित मुनिहिँ सिरनाय ॥१०८॥

राम मुनिहिँ कह प्रेमक साथे । कौन पथ जाउ मोहि कहु नाथे ॥१॥
मुनि मन बिहुँसि राम सौं कहले । सुगम सकल मग अहँ केँ रहले ॥२॥
संग हेतु मुनि सिष्य बजाओल । सुनि मन मुदित पचासेक धाओल ॥३॥
सबहिँ राम पर प्रेम महाने । सबहुँ कहथि हमरा पथ ज्ञाने ॥४॥
मुनि बड़ु चारि संग कय देलनि । जे बहु जनम सुकृति सब केलनि ॥५॥
कय प्रनाम रिषि अनुमति पा कय । चलला रघुपति हिय हरषा कय ॥६॥
जखन गाम लग जाइत रहथी । दौड़ि दरस नर नारी लहथी ॥७॥
होथि सनाथ जनम फल पा कय । घुरथि दुखित मन संग पठा कय ॥८॥

दोहा—बटुहिँ घुरौलनि विनय कय, घुरला लहि मनकाम ।
उतरि नहेला जमुन जल, जे सरीर सन स्याम ॥१०९॥

सुनइत तटवासी नर नारी । धाओल निज निज काज बिसारी ॥१॥
लखन राम सिय रूपहिँ देखी । भाग सराहथि अपन बिसेखी ॥२॥
अति लालसा जदपि सब जन मे । परिचय पुछइत सकुचथि मन मे ॥३॥
बूढ़ चतुर तहि मे छल जेहे । जुगुति राम केँ चीन्हल सेहे ॥४॥
सबहिँ सुनाओल सकल कहानी । बन चलला पितु आज्ञा मानी ॥५॥
सुनि पछताय बिकल नर नारी । कयल रानि नृप अनुचित भारी ॥६॥
तापस येक आयल तहि ठामे । तेज पुंज लघु बयस ललामे ॥७॥
कवि अलखित गति वेष बिरागी । मन क्रम बचन राम अनुरागी ॥८॥

दोहा—सजल नयन तनु पुलक निज, इष्ट देव पहिचानि ।
खसला महि पर दंड इव, दसा न होय बखानि ॥११०॥

राम सप्रेम पुलकि उर लाओल । परम रंक जनि पारस पाओल ॥१॥
प्रेम तथा परमारथ जेना । तनु धय मिलय बुझाइछ तेना ॥२॥
लगला तखन लखन केँ गोड़े । लेल उठा अनुराग विभोरे ॥३॥
पुनि सिय चरन धूरि धय सीसे । जननि जानि सिसु देल असीसे ॥४॥
कयल निषाद दंडबत आबी । मिलला राम सिनेही पाबी ॥५॥
रूप सुधा दृग पीबथि केना । पाबि सुभोजन भूखल जेना ॥६॥
से पितु मातु कहू सखि केहन । जे पठौल बन बालक एहन ॥७॥
राम लखन सिय रूप निहारी । होथि सिनेह बिकल नर नारी ॥८॥

दोहा—तखन सखा केँ सीख सुभ, कत बिध रघुवर देल ।
रामक अनुमति सीस धय, भवन बिदा भय गेल ॥१११॥

पुनि सिय राम लखन कर जोरी । जमुनहिँ कयल प्रनाम बहोरी ॥१॥
चलला दुहू मुदित सिय साथे । बरनथि रवि तनुजा गुन गाथे ॥२॥
पथिक मिलय पथ जाइत ढेरी । कहय सप्रेम बंधु दुहु हेरी ॥३॥
राजलछन सब अँग मे तोही । देखि सोच अति हिय मे मोही ॥४॥

पैरहिँ बाट चली अहँ सेहे । जोतिष फूसि कि साँच सँदेहे ॥५॥
अगम पंथ गिरि कानन भारी । तहु मे संग नारि सुकुमारी ॥६॥
विपिन भयान सिंह मातंगे । जौँ हो हुकुम चली हम संगे ॥७॥
जायब जहँ धरि तहँ पहुँचा कय । घुरि आयब पुनि माथ नमा कय ॥८॥

दोहा—येहि बिधि पूछथि प्रेम बस, पुलक गात जल नैन ।
कृपा सिंधु घुरबथि सबहिँ, कहि विनीत मृदु वैन ॥११२॥

जे पुर गाम पड़य पथ सगरे । तनि सिहाय सुर नागक नगरे ॥१॥
के सुकृती कोन घड़ी बसाओल । धन्य पुन्य महिमा जे पाओल ॥२॥
जहँ जहँ धरथि चरन निज रामे । अमरावति नहि तकर उपामे ॥३॥
पुन्य पुंज मग निकट निवासी । ताहि सराहथि सुरपुर वासी ॥४॥
जे भरि नयन विलोकथि रामे । सीता लखन सहित घनस्यामे ॥५॥
जहि सर सरित राम अवगाहथि । तनिका सुर सर सरित सराहथि ॥६॥
जहि तरु तर प्रभु बैसय आबथि । तकर बड़ाइ कल्पतरु गाबथि ॥७॥
परसि राम पद पदुम परागे । मानय भूमि भूरि निज भागे ॥८॥

दोहा—छाह करय घन बिबुध गन, बरषति सुमन सिहाथि ।
निरखथि गिरिबन बिहग मृग, राम चलल मग जाथि ॥११३॥

ग्राम समीप जखन रघुनाथे । निकसथि सीता लखनक साथे ॥१॥
सुनि सब बाल बृद्ध नर नारी । चलथि तुरित गृह काज बिसारी ॥२॥
राम लखन सिय रूप निहारी । पाबि नयन फल होथि सुखारी ॥३॥
सजल बिलोचन पुलक सरीरे । होथि मगन सब लखि दुहु बीरे ॥४॥
तनिक दसा बरनब कोन भाँती । रंक लहल जनि सुरमनि पाँती ॥५॥
कहय एक दोसर केँ आदह । नयन लाभ यहि छन मे पाबह ॥६॥
क्यो जन राम निरखि अनुरागल । चितइत चलल जाथि सँग लागल ॥७॥
एक नयन मग छवि उर आनी । होथि सिथिल तन मन बर बानी ॥८॥

दोहा—एक देखि बट छाह भल, बिछा मृदुल तृन पात ।
छन भरि कहथि गमाउ श्रम, जैब येखन बा प्रात ॥११४॥

एक कलस भरि आनथि पानी । नाथ अचाउ कहथि मृदु बानी ॥१॥
सुनि प्रिय बचन प्रीति अति देखी । राम कृपालु सुसील बिसेखी ॥२॥
सीय श्रमित गुनि मन मे रामे । छन बट छाह कयल बिश्रामे ॥३॥
मुदित नारि नर देखथि सोभे । रूप अनूप नयन मन लोभे ॥४॥
येकटक सब सोभय चहुँओरे । रामचंद्र मुख चंद्र चकोरे ॥५॥
तरुन तमाल बरन तन सोहय । लखितहिँ कोटि मदन मन मोहय ॥६॥
दामिनि दुति तन लखन सोहाओन । नख सिख सुभग परम मनभाओन ॥७॥
मुनिपट कटि मे कसल तुनीरे । सोभय पानि पदुम धनु तीरे ॥८॥

दोहा—जटा मुकुट सिर पर सुभग, उर भुज नयन बिसाल ।
सरद परब विधु बदन बर, लसय स्वेद कन जाल ॥११५॥

बरनि सकी न मनोहर जोड़े । सोभा अधिक हमर मति थोड़े ॥१॥
राम लखन सिय सुंदर रूपे । चित मन मति सब चितथि अनूपे ॥२॥
प्रेम पियास थकित नर नारी । जथा मृगी मृग दीप निहारी ॥३॥
सियक समीप ग्राम तिय जाइछ । पुछइत अति सिनेह सकुचाइछ ॥४॥
बेरि बेरि सब पद पर पड़थी । सरल सोभाव मृदुल गप करथी ॥५॥
राज कुमारि बिनय छी करइत । तिय सोभाव पुछइत छी डरइत ॥६॥
स्वामिनि अबिनय छमब बिचारी । बुझब न अनुचित जानि गमारी ॥७॥
राजकुमर दुहु सहज सलोने । जनि दुति लब लह मरकत सोने ॥८॥

दोहा—स्यामल गौर किसोर बर, सुंदर सुषमा ऐन ।
सरद सरबरी नाथ मुख, सरद सरोरुह नैन ॥११६॥

मास पारायण, विश्राम—१६
नवाह्न पारायण, विश्राम—४

कोटि मनोज लजावथि जेहे । के छथि अहँक कहू धनि सेहे ॥१॥
सुनि सिनेहमय मंजुल बानी । सिय मुसुकाथि सकुच हिय मानी ॥२॥
तनिका निरखि बिलोकथि धरनी । दुहु सँकोच सकुचथि बरबरनी ॥३॥
सकुचि सप्रेम बाल मृग नयनी । बजली मधुर बचन पिकबयनी ॥४॥
*सहज सोभाव सुभग तन गोरे । नाम लखन लघु देओर मोरे ॥५॥

पुनि आँचर दय बदन मयंके । प्रिय दिसि चितल भौँह कय बंके ॥६॥
खंजन मंजु तिरिछ कय नयने । निज पति कहल सीय बिनु बयने ॥७॥
भेल मुदित सब ग्राम बधूटी । जनि लेल रंक राज निधि लूटी ॥८॥

दोहा—अति सप्रेम सिय पैर पड़ि, बहु विधि देथि असीस ।
सदा सोहागिनि रहु अहाँ, जा धरि महि अहि सीस ॥११७॥

होउ गिरिजा सम पतिक पियारी । मोहि पर देवि छोह जुनि छाड़ी ॥१॥
पुनि पुनि विनय करी कर जोरी । जौँ येहि मारग घुरी बहोरी ॥२॥
दासी बुझि दरसन देव मोही । प्रेम तृषित देखल सिय ओही ॥३॥
मधुर वचन कहि कहि परितोषल । जनि कुमुदिनि केँ कौमुदि पोषल ॥४॥
तखनहिँ लखन राम रुखि जानी । पुछल लोक सौँ मग मृदु बानी ॥५॥
सुनति नारि नर भेल दुखारी । पुलकित गात बिलोचन वारी ॥६॥
मेटि गेल मोद मलिन मन भेले । विधि निधि दय पुनि छिनि जनि लेले ॥७॥
समुझि करम गति धीरज धारी । कहल सुगम मग सकल बिचारी ॥८॥

दोहा—तखन लखन जानकि सहित, गमन कयल रघुनाथ ।
कहि प्रिय बचन घुरौल जन, लगा लेल मन साथ ॥११८॥

पछतबइत घूरथि नर नारी । मन मन दैत दैव केँ गारी ॥१॥
सहित बिषाद परसपर कहइछ । अटपट सदा विधाता करइछ ॥२॥
निपट निरंकुस निठुर निसंकी । ससि केँ कयलनि सरुज कलंकी ॥३॥
बिरिछ कलप तरु सागर खारे । वन पठौल पुनि सैह कुमारे ॥४॥
जौँ विधि देलनि हुनि बनबासे । बृथा रचल सब भोग बिलासे ॥५॥
मग विचरथि ई बिनु पदत्राना । रचथि बृथा विधि वाहन नाना ॥६॥
ई महि सुतथि ओछा कुस पाता । सुभग सेज किय सृजल विधाता ॥७॥
तरु तर बास हिनक विधि केलनि । धवल धाम रचि किय श्रम लेलनि ॥८॥

दोहा—जौँ ई मुनि पट धर जटी, सुंदर सुठि सुकुमार ।
विविध भाँति भूषन बसन, व्यर्थ रचल करतार ॥११९॥

कन्द मूल फल हिनका भोजन । अमिय असन जग कोन प्रयोजन ॥१॥
एक कहथि ई सहज सोभावे । अपनहिँ प्रगट न विधिक प्रभावे ॥२॥
जहँ धरि श्रुति विधि सृष्टि बनाओल । श्रवन नयन मन गोचर गाओल ॥३॥
देखह ताकि भुवन दस चारी । कत एहन नर एहनि नारी ॥४॥
हिनका लखि विधि मन अनुरगला । परतर जोग बनाबय लगला ॥५॥
श्रम बहु कयल बना नहि पौलनि । तहि इरिषेँ बन आनि नुकौलनि ॥६॥
एक कहय हम बहुत न जानी । परम धन्य अपना केँ मानी ॥७॥
पुन्य पुंज तनिका हम लेखल । जे देखथि देखता जे देखल ॥८॥

दोहा—येहि बिधि कहि कहि वचन प्रिय, लैछ नयन भरि नीर ।
कोन बिधि चलता अगम पथ, सुठि सुकुमार सरीर ॥१२०॥

नारि सिनेह विकल वस केहन । चकबी साँभ समय मे जेहन ॥१॥
मृदु पद कमल कठिन पथ जानी । व्याकुल हृदय कहथि बर बानी ॥२॥
अरुन चरन मृदु रोपथि जखने । मम उर सम महि सँकुचय तखने ॥३॥
जौँ गोसाइँ हिनका बन देलनि । किय न सुमनमय मारग केलनि ॥४॥
जौँ विधि सौँ मँगने सखि पाबी । तौँ हिनि राखी नयनहिँ लाबी ॥५॥
ऐल न तहि छन जे नर नारी । से सियराम न सकल निहारी ॥६॥
सुनि सरूप पुछ आकुल भावे । गेल हेताह कतय धरि आबे ॥७॥
समरथ दौड़ि बिलोकथि जा कय । प्रमुदित फिरथि जनम फल पा कय ॥८॥

दोहा—अबला बालक बृद्ध जन, कर मीड़थि पछताथि ।
होथि प्रेम बस लोक सब, राम जतय जत जाथि ॥१२१॥

गाम गाम हो येहन अनंदे । देखि भानुकुल कैरब चंदे ॥१॥
जे कयो समाचार सुनि पाबथि । से नृप रानिहिँ दोप लगाबथि ॥२॥
कहथि एक नृप अति भल केलनि । नयन लाभ हमरा जे देलनि ॥३॥
कहथि परसपर सब नर नारी । सरल सिनेह बात मन हारी ॥४॥
धनि पितु मातु देलनि जे जनमे । धनि पुर जहँ सौँ अयला बन मे ॥५॥
से धनि देस सैल बन गामे । जँह जँह जाथि धन्य से ठामे ॥६॥

सुख पाओल विरंचि रचि तनिका । सब विधि छथि ई प्रेमी जनिका ॥७॥
राम लखन पथ कथा ललामे । पसरल मग कानन सब ठामे ॥८॥

दोहा—येहि विधि रघुकुल कमल रवि, सुख सभ कें पथ दैत ।
सिय सौमित्र समेत बन, चलल जाथि निरखैत ॥१२२॥

आगाँ राम पाछु छथि लखने । तापस बेस मनोहर रखने ॥१॥
दुहुक बीच सिय सोभथि केना । ब्रह्म जीव बिच माया जेना ॥२॥
पुनि बरनी छबि जे मन बसले । जनि मधु मदन मध्य रति लसले ॥३॥
पुनि दोसर उपमा उर आबय । जनि बिधु बुध बिच रोहिनि भाबय ॥४॥
प्रभु पद रेख बीच बिच सीता । धरथि चरन मग चलथि सभीता ॥५॥
सीय राम पद अंक बरा कय । लखन चलथि मग दहिन लगा कय ॥६॥
सुंदर राम लखन सिय प्रीती । बचन अगोचर कहु कोहि रीती ॥७॥
खग मृग मगन देखि छबि भेले । राम बटोहि चोरा चित लेले ॥८॥

दोहा—जे जे देखल पथिक प्रिय, सिय समेत दुहु भाय ।
भव मग अगम अनंद से, बिनु श्रम देल कटाय ॥१२३॥

येखनहुँ सपनहुँ जनि हिय धामे । बसथि पथिक लछुमन सियरामे ॥१॥
रामधाम पथ पओता सेहे । क्यो मुनि बिरल लहथि पथ जेहे ॥२॥
श्री रघुवीर श्रमित सिय जानी । देखि निकट बट सीतल पानी ॥३॥
तहँ रहि कंद मूल फल खा कय । चलला रघुपति प्रात नहा कय ॥४॥
लखइत बन सर सैल ललामे । ऐला बालमीकि केर धामे ॥५॥
राम लखल मुनि बास सोहावन । सुंदर गिरि कानन जल पावन ॥६॥
सर सरसिज बन बिटप फुलैले । अलि अति गुंजय रसहिँ भुलैले ॥७॥
खग मृग कलमल करय सुछंदे । बैर बिहीन चरय सानंदे ॥८॥

दोहा—कमलनयन आश्रम सुभग, सुचि लखि हरषयलाह ।
सुनि रघुवर आगमन मुनि, लेअय आगु अयलाह ॥१२४॥

मुनि कें राम दंडबत केलनि । आसिरबाद विप्रबर देलनि ॥१॥
देखि राम छबि नयन जुड़ाओल । मान सहित निज आश्रम लाओल ॥२॥

मुनिबर अतिथि प्रान प्रिय पाओल । कंद मूल फल मधुर मँगाओल ॥३॥
सिय सौमित्रि राम फल खेलनि । सुभग निवास लखन मुनि देलनि ॥४॥
बालमीकि मन आनँद भारी । मंगल मूरति नयन निहारी ॥५॥
रघुपति दुहु कर पंकज जोरी । कहल बचन श्रुति सुखद बहोरी ॥६॥
अहँ त्रिकाल दरसी मुनि नाथे । बिस्व बदर सम अछि तव हाथे ॥७॥
सकल कथा प्रभु कहल बखानी । जहि जहि भाँति देल बन रानी ॥८॥

दोहा—तात बचन पुनि मातु हित, भाय भरत सन भूप ।
दरस अहँक प्रभु सकल मम, पुन्य प्रभाव सरूप ॥१२५॥

देखि अहाँक चरन मुनिराजे । मम सब सुकृत सुफल भेल आजे ॥१॥
आब जतय अपनेक निदेसे । कोनहुँ मुनि केँ हो न कलेसे ॥२॥
जनि सौँ मुनि तापस दुख लहइछ । से नरेस बिनु पावक दहइछ ॥३॥
मंगल मूल बिप्र परितोषे । दहय कोटि कुल भूसुर रोषे ॥४॥
कहू ठाम से येहन बिचारी । सीय लखन सँग जहाँ सिधारी ॥५॥
तहँ रचि रुचिर परन तृन साले । बास करी किछु काल कृपाले ॥६॥
सहज सरल सुनि रघुवर बानी । साधु साधु बजला मुनि ज्ञानी ॥७॥
किय न कहब से रघुकुल केतू । अहँ पालक संतत श्रुति सेतू ॥८॥

छंद--श्रुति सेतु पालक राम अहँ जगदीस माया जानकी ।
जग सृजथि पालथि पुनि हरथि रुखि राखि प्रभुक प्रमान ई ॥
से सहस सीस अहीस महिधर लखन सचराचर धनी ।
सुरकाज हित तन नृपक धय चललहुँ दलय निसिचर अनी ॥

सोरठा—राम सरुप ई तोर, वचन अगोचर बुद्धि पर ।
नेति नेति श्रुति सोर, अविगत अकथ अपार अछि ॥१२६॥

जग पेखन अहँ देखनिहारे । ब्रह्मा हरि हर नचबनिहारे ॥१॥
तनिकहुँ नहि तव मरमक ज्ञाने । के पुनि जननिहार छथि आने ॥२॥
जनि जनाय दी जानथि सेहे । जनितहिँ तोहि तोहि हो न सँदेहे ॥३॥
अहिँक कृपेँ अहँ केँ रघुनंदन । जानथि भगत भगत उर चंदन ॥४॥

चिदानंदमय देह अहँ धारी। बिगत बिकार जान अधिकारी ॥५॥
नर तन धयल संत सुर काजा। कही करी जनि प्राकृत राजा ॥६॥
राम चरित तव सुनि निहारी। जड़ मोहित बुध होथि सुखारी ॥७॥
अहँ जे कही करी सब साँचे। जेहने कछनी तेहने नाचे ॥८॥

दोहा—मोहि पूछी जे रहव कहँ, पुछइत मन सकुचाय।
जहँ न होइ अहँ तहँ कहू, से थल देब देखाय ॥१२७॥

सनल नेह रस मुनि बच सुनी। मुसुकथि राम सँकुच मन गूनी ॥१॥
बालमीकि हँसि कहल बहोरी। बानी मधुर अमिय रस बोरी ॥२॥
राम आब सुनु कही निकेते। जहाँ बसब सिय लखन समेते ॥३॥
जनिकर श्रवन समुद्र समाना। कथा अहाँक सुभग सरि नाना ॥४॥
खसय निरंतर भरय न सेहे। तनिक हृदय तव सुंदर गेहे ॥५॥
लोचन चातक जे कय राखल। रहथि दरस जलधर अभिलाषल ॥६॥
निदरथि सरित सिंधु सर भारी। रूप बिंदु जल होथि सुखारी ॥७॥
तनिके हृदय सदन सुखदायक। बसू बंधु सिय सह रघुनायक ॥८॥

दोहा—अहँक बिमल जस मानसक, हंसिनि जीभ जनीक।
मुकुता हल गुन गन चुनय, हिय बसु राम तनीक ॥१२८॥

प्रभु प्रसाद सुचि सुभग सुबासा। सादर जनिक लहय नित नासा ॥१॥
अरपि अहाँ के ँ भोजन करथी। प्रभु प्रसाद पट भूषन धरथी ॥२॥
नमबथि सिर सुर गुरु द्विज देखी। प्रीति सहित कय बिनय बिसेखी ॥३॥
पुजथि राम पद नित निज कर गहि। रामक कर भरोस आनक नहि ॥४॥
चरन राम तीरथ कर जेहे। बसू राम तनिकर मन गेहे ॥५॥
मंत्रराज तव जपथि जे नीते। तोहि पूजथि परिवार सहीते ॥६॥
तरपन होम करथि बिधि नाना। विप्र जेमाय देथि बहु दाना ॥७॥
अहँ सो ँ अधिक गुरुहि ँ जिय जानी। सब भावे ँ सेबथि सनमानी ॥८॥

दोहा—सबहुक माँगथि एक फल, हो रति रामक पाय।
तनि मन मंदिर ससिय बसु, रघुनंदन दुहु भाय ॥१२९॥

काम क्रोध मद मान न मोहे । लोभ न छोभ न राग न द्रोहे ॥१॥
कपट दंभ माया नहि जनिका । रघुपति बसू हृदय बिच तनिका ॥२॥
सबहुक प्रिय सबहुक हितकारी । दुख सुख सरिस प्रसंसा गारी ॥३॥
कहथि सत्य प्रिय बचन बिचारी । जागथि सुतथि सरन तव धारी ॥४॥
अहँ तजि आन न गति अछि जनिका । बसू राम अहँ मन मे तनिका ॥५॥
जननी सम जानथि पर नारी । धन आनक बिष सौँ बिष भारी ॥६॥
जे हरषथि पर बिभव निहारी । दुखी होथि पर दुख लखि भारी ॥७॥
राम प्रान प्रिय अहँ छी जनिके । थिक सुभ सदन अहँक मन तनिके ॥८॥

दोहा—स्वामि सखा पितु मातु गुरु, जनिक अहाँ सब तात ।
मन मंदिर तनिके बसू, सीय सहित दुहु भ्रात ॥१३०॥

अवगुन तजि सबहुक गुन गहथी । विप्र धेनु हित संकट सहथी ॥१॥
नीति निपुन जे बिदित भुवन मे । घर अहाँक भल तनिका मन मे ॥२॥
गुन अहाँक बूझथि निज दोसे । जनिका सब बिधि अहिँक भरोसे ॥३॥
राम भगत प्रिय लागन्हि जनिका । सह वैदेहि बसू उर तनिका ॥४॥
जाति पाति धन धरम बड़ाई । प्रिय परिबार सदन सुखदाई ॥५॥
सब तजि तोहि लव रहथि लगा कय । रहु रघुपति तनिके हिय जा कय ॥६॥
सरग नरक अपबरग समाने । जहँ तहँ देखथि धेने धनुबाने ॥७॥
करम बचन मन सौँ तव दासे । राम करू तनिका उर बासे ॥८॥

दोहा—कखनहुँ चाहथि जे न किछु, अहँ सौँ सहज सिनेह ।
बसू निरंतर तनिक मन, से अहाँक निज गेह ॥१३१॥

येहि बिधि मुनिवर भवन देखाओल । बचन सप्रेम राम मन भाओल ॥१॥
कह मुनि सुनू भानुकुल नायक । आश्रम कही समय सुख दायक ॥२॥
चित्रकूट गिरि करू निवासे । सब बिधि तहाँ अहाँक सुपासे ॥३॥
सैल सोहाओन सुंदर कानन । बिहरय खग मृग करि पंचानन ॥४॥
नदी पुनीत पुरान बखानल । अत्रि प्रिया निज तप बल आनल ॥५॥
सुरसरि धार नाम मंदाकिनि । जे सब पातक पोतक डाकिनि ॥६॥

अत्रि आदि मुनिबर बहु बसथी । करथि जोग जप तप तन कसथी ॥७॥
चलू सभक श्रम सफल बनायब । गिरिबर गौरव राम बढ़ायब ॥८॥
दोहा—चित्रकूट महिमा अमित, कहल महामुनि गावि ।
सिय समेत दोउ बंधु बर, सरित नहैला आवि ॥१३२॥
रघुवर कहल लखन भल घाटे । आब कतहु करु रहइक ठाटे ॥१॥
पय उत्तर तट लछुमन हेरल । धनु सम सोत चारु दिसि बेढ़ल ॥२॥
नदी पनच सर सम दम दाना । कलिमल सब मृगया पसु नाना ॥३॥
चित्रकूट बुझु अचल सिकारी । चुकय न घात खसाबय मारी ॥४॥
लखन येहन कहि ठाम देखौलनि । थल बिलोकि रघुवर सुख पौलनि ॥५॥
रमल राम मन सुर बुझि पाओल । सुरसिल्पी सह सुरपति धाओल ॥६॥
ऐला बनि बनि कोल किराते । रचल कुटीर सुभग तृन पाते ॥७॥
बरनि न होअय मंजु दुइ साला । एक ललित लघु एक बिसाला ॥८॥
दोहा—लखन जानकी सहित प्रभु, राजथि रुचिर निकेत ।
सोभ मदन मुनि वेष जनि, रति रितुराज समेत ॥१३३॥

मास पारायण, विश्राम—१७

अमर नाग किन्नर दिगपाले । चित्रकूट ऐला तहि काले ॥१॥
सबहु प्रनाम राम केँ कैलनि । मुदित देव लोचन फल पैलनि ॥२॥
बरषि सुमन कह देव समाजे । नाथ सनाथ भेलहुँ हम आजे ॥३॥
कय बिनती दुख दुसह सुना कय । निज निज सदन गेला हरषा कय ॥४॥
चित्रकूट रघुनंदन एला । से सुनि सुनि मुनि जन जुटि गेला ॥५॥
अबइत देखि मुदित मुनि बृंदे । कयल दंडबत रघुकुल चंदे ॥६॥
मुनि रघुवर केँ उर लगबै छथि । सफल होअक हित आसिप दै छथि ॥७॥
सिय सौमित्रि राम छबि देखथि । साधन सकल सफल कय लेखथि ॥८॥
दोहा—जथा जोग सनमानि प्रभु, विदा कयल मुनि बृंद ।
करथि जोग जप जाग तप, निज आश्रमहिँ सुछंद ॥१३४॥
कोल किरात सुनि हरपायल । मानू घर नव निधि हो आयल ॥१॥
कंद मूल फल भरि भरि दोना । चलल रंक जनि लूटय सोना ॥२॥

जे दुहु भायहिँ पाओल हेरी । तहि तहि आन पूछय पथ घेरी ॥३॥
कहति सुनति रघुबीरक रूपे । आबि सबहु देखय रघुभूपे ॥४॥
भेँट आगु धय भुकबय माथे । प्रभुहिँ चितय अनुरागक साथे ॥५॥
ठाढ़ जहाँ तहँ चित्र समाने । नयन नीर तन पुलक महाने ॥६॥
सब केँ प्रेम मगन प्रभु जानल । कहि प्रिय बचन सबहिँ सनमानल ॥७॥
पुनि पुनि प्रभु केँ कय परनामे । कर जोरि कह बच बिनय ललामे ॥८॥

दोहा—भेलहुँ नाथ सनाथ हम, प्रभु पद लखि कय आज ।
हमरहि भागेँ भेल तव, आगम कोसलराज ॥१३५॥

से भू बन पथ गिरि धनि भेले । जहँ जहँ चरन नाथ अहँ देले ॥१॥
धन्य बिहग मृग कानन चारी । सफल जनम भेल तोहि निहारी ॥२॥
हम परिवार सहित धनि भेलहुँ । जे भरि नयन दरस तव पेलहुँ ॥३॥
कयल बास भल ठाम बिचारी । येतय सकल रितु रहब सुखारी ॥४॥
करब टहल सब चित्त लगा कय । करि केहरि अहि बाघ बेरा कय ॥५॥
बन गिरि कंदर दुर्गम खोहे । पग पग खेहल हमरा ओहे ॥६॥
तहँ तहँ प्रभुहिँ सिकार खेलायब । सर निर्भर भल ठाम देखायब ॥७॥
सेबक हम परिबारक साथे । दैत निदेस न सकुचब नाथे ॥८॥

दोहा—वेद बचन मुनि मन अगम, से प्रभु करुना ऐन ।
सुनथि किरातक वचन सब, पिता जेना सिसु बैन ॥१३६॥

राम सतत प्रेमेँटा थाहथि । जानि लेथु जे जानय चाहथि ॥१॥
राम सकल बन बासिहिँ तोषल । कहि मृदु बचन प्रेम परिपोषल ॥२॥
बिदा कयल सिर नमि चलि देले । प्रभु गुन कहति सुनति घर गेले ॥३॥
येहि बिधि सिय समेत दुहु भ्राता । बिपिन बसथि सुर मुनि सुखदाता ॥४॥
जहिया सौँ रहला रघुनायक । तहिया सौँ बन मंगल दायक ॥५॥
फूलय फड़य बिटप बिधि नाना । मंजु बलित बर बेलि बिताना ॥६॥
सहज सुभग सुर तरु अनुहारी । मानू ऐल बिबुध बन छारी ॥७॥
गुंज मंजु तर मधुकर पाँते । बह बहु सुखकर त्रिबिध बसाते ॥८॥

दोहा—नीलकंठ कलकंठ सुक, चातक चाक चकोर।
भाँति भाँति बाजय बिहग, श्रवण सुखद चित चोर ॥१३७॥

करि केहरि कपि कोल कुरंगे। बिगत बैर बिचरय सब संगे ॥१॥
फिरति सिकार राम छवि देखी। होअय मुदित मृगबृंद बिसेखी ॥२॥
जते देव बन अछि त्रिभुवन मे। देखि सिहाय रामवन मन मे ॥३॥
सुरसरि सरस्वती रविकन्या। मेकलसुता गोदावरि धन्या ॥४॥
सब सर सिंधु नदी नद नाना। मंदाकिनिक करथि गुन गाना ॥५॥
उदय अस्त गिरि ओ कैलासे। मंदर मेरु सकल सुर बासे ॥६॥
हिमगिरि आदि जते गिरिराजे। चित्रकूट जस गाबथि आजे ॥७॥
बिंध्य मुदित सुख अँटय न मन मे। बिनु श्रम गौरव पौल भुवन मे ॥८॥

दोहा—चित्रकूट खग मृग सकल, बेलि बिटप तृन जाति।
पुन्य पुंज सब धन्य अति, कहथि देव दिन राति ॥१३८॥

नयनबंत रघुवरहिँ बिलोकी। पाबि जनम फल होअय असोकी ॥१॥
परसि चरन रज अचर सुखारी। भेल परम पद केर अधिकारी ॥२॥
जे बन परवत सहज सोहावन। मंगलमय अति पावन पावन ॥३॥
महिमा कोन बिधि तकर प्रकासी। सुखसागर छथि जकर निबासी ॥४॥
छाड़ि छीरनिधि अवध ललामे। जहँ रह आबि लखन सिय रामे ॥५॥
कहि न सकथि जे छवि यहि कानन। जौँ सत सहस होथि सहसानन ॥६॥
से कवि कोन बिधि बरनन करते। डाबर काछु की मंदर धरते ॥७॥
सेबथि लखन करम मन बानी। सील सिनेह न होअय बखानी ॥८॥

दोहा—छन छन लखि सिय राम पद, बुझि अपना पर नेह।
करथि न सपनहुँ लखन चित, बंधु मातु पितु गेह ॥१३९॥

राम संग सिय रहथि सुखारी। पुर परिजन गृह सुरति बिसारी ॥१॥
छन छन पिय बिधु बदन निहारी। प्रमुदित मानु चकोरकुमारी ॥२॥
नाह नेह नित बढ़ति बिलोकी। मुदित रहथि दिन मे जनि कोकी ॥३॥
सिय मन राम चरन अनुरागल। अवध सहस सम बन प्रिय लागल ॥४॥

परन कुटी प्रिय प्रियतम संगे । प्रिय परिवार कुरंग बिहंगे ॥५॥
सासु ससुर सम मुनितिय मुनिबर । असन अमिय सम कंद मूल फर ॥६॥
पतिक संग खड़तरियो भाबै । मदन सेज सय सम सुख आबै ॥७॥
लोक लोकपति हो लखि जनिका । विषय बिलास मोह की तनिका ॥८॥

दोहा—सुमिरति रामहिँ तजथि जन, तृन सम बिषयक भोग ।
रामप्रिया जगजननि सिय, किछु नहि अचरज जोग ॥१४०॥

सीय लखन सुख पाबथि जहिना । रघुपति कहथि करथि सब तहिना ॥१॥
कहथि पुरातन कथा पिहानी । सुनथि लखन सिय अति सुख मानी ॥२॥
राम करथि सुधि अवधक जखने । बारि बिलोचन भरइछ तखने ॥३॥
सुमिरि मातु पितु भ्राता परिजन । भरतक सेबा नेह सील मन ॥४॥
कृपासिंधु प्रभु होथि दुखारी । धीर धरथि कुसमय अवधारी ॥५॥
सीय लखन लखि ब्याकुल तेना । अनुसर छाया पुरुषहिँ जेना ॥६॥
प्रिया बंधु गति लखि रघुनंदन । धीर कृपालु भगत उर चंदन ॥७॥
लागथि सुनबय कथा पुनीता । सुनि सुख पाबथि लछुमन सीता ॥८॥

दोहा—राम लखन सीता सहित, सोभथि परन निकेत ।
बसथि इंद्र जनि अमरपुर, सची जयंत समेत ॥१४१॥

जोगबथि प्रभु सिय लखनहिँ तहिना । नयन पलक पुतरी केँ जहिना ॥१॥
सेबथि लखन सीय रघुबीरहिँ । जनि अबिबेकी पुरुष सरीरहिँ ॥२॥
येहि बिधि प्रभु बन बसथि सुखारी । खग मृग सुर तापस हितकारी ॥३॥
कहल राम बन गेला जेना । सुनु सुमंत घुरला पुर केना ॥४॥
घुरला गुह प्रभु केँ पहुँचा कय । सचिब सहित रथ देखल आ कय ॥५॥
बिकल सचिव केँ देखि निषादे । कहि न होअय जे भेल बिषादे ॥६॥
राम राम सिय लखन पुकारी । खसला महि पर ब्याकुल भारी ॥७॥
देखि दछिन दिसि हय हिहिँआइछ । जनि बिनु पाँखि बिहग अकुलाइछ ॥८॥

दोहा—नहि तृन खाय न पिबय जल, मोचय लोचन बारि ।
भेला बिकल निषाद सब, रघुबर बाजि निहारि ॥१४२॥

कहल धीर धय तखन निषादे । छोड़ू आब सुमंत्र विषादे ॥१॥
अहँ पंडित परमारथ ज्ञाता । धीरज धरु लखि वाम बिधाता ॥२॥
कहि कहि बिबिध कथा मृदु बानी । रथ बैसौलनि बल सौँ आनी ॥३॥
सक न हाँकि रथ सिथिल सरीरा । उर घन रघुवर बिरहक पीड़ा ॥४॥
भड़कय हय पथ धरय न केना । बन मृग आनि जोतल हो जेना ॥५॥
ठेसि खसय चलि पाछु निहारी । राम बियोग बिकल दुख भारी ॥६॥
राम लखन बैदेहि उचारय । हिँछि हिँछि तनि लख बूझि हितारय ॥७॥
बाजि बिरह दुख कहि हो केना । फनि बिनु मनि हो ब्याकुल जेना ॥८॥

दोहा—भेला निषाद बिषाद बस, देखइत सचिव तुरंग ।
चारि सुसेबक तखन कय, देल सारथी संग ॥१४३॥

गुह फिरला सारथि अरिआती । बिरह बिषाद बरनु कोन भाँती ॥१॥
चलला रथ लय अवध निषादे । होथि छनहिँ छन मगन बिषादे ॥२॥
सोचथि सचिव बिकल दुख दीने । धिक जीवन रघुवीर बिहीने ॥३॥
अंत रहत नहि अधम सरीरे । लेल न जस बिछुरति रघुवीरे ॥४॥
भेल अजस अघ भाजन प्राने । करय न कोन हेतु प्रस्थाने ॥५॥
हाय चुकल अवसर मन मंदे । आबहु हो न हृदय दुइ खंडे ॥६॥
पछतावथि सिर धुनि मलि पानी । कृपन गमौल मानु धन खानी ॥७॥
बिरुद बाँधि बरबीर कहा कय । भट जनि रन सौँ चलल पड़ा कय ॥८॥

दोहा—बिप्र बिबेकी वेद विद, संमत साधु सुजाति ।
जनि धोखेँ मद जाथि पिबि, सचिव सोच तहि भाँति ॥१४४॥

जनि कुलीन तिय साधु सयानी । पति देवता करम मन बानी ॥१॥
रहथि करम बस परिहरि नाहे । तेना सचिव हिय दारुन दाहे ॥२॥
डीठि मंद भेल सजल नयाने । भोर बिकल मति सुनथि न काने ॥३॥
मुँह लठियाइछ ठोर सुखाइछ । अवधि फटक उर जिय नहि जाइछ ॥४॥
बिवरन भेला न जाथि निहारल । मानू माय बाप केँ मारल ॥५॥
हानि गलानि गेल बहु ब्यापी । जेना सोच जमपुर पथ पापी ॥६॥

बचन न आब हृदय पछतावे । लखब कि जाय अवध हम आबे ॥७॥
राम सहित रथ निरखत जेहे । सकुचत हमरा देखइत सेहे ॥८॥

दोहा—दौड़ि पुछत हमरा जखन, बिकल नगर नर नारि ।
उतर देब सब केँ तखन, बज्र हृदय पर धारि ॥१४५॥

पुछती दीन दुखी सब माता । हम की तनिका कहब विधाता ॥१॥
पुछती जखन लखन महतारी । कहबनि कोन संदेस सुखारी ॥२॥
दौड़ल औती रामक माये । बच्छहिँ सुमिरि जेना धेनु गाये ॥३॥
पुछती उतर देब छन तेही । गेल बन राम लखन बैदेही ॥४॥
जे जे पुछत उतर ई देबे । आब अबध जा ई सुख लेबे ॥५॥
पुछता जखन भूप दुख दीने । जनि जीवन रघुनाथ अधीने ॥६॥
देबनि उतर कोन मुँह जा कय । अयलहुँ कुसल कुमर पहुँचा कय ॥७॥
सुनति लखन सिय राम सँदेसे । तृन सम तजता देह नरेसे ॥८॥

दोहा—हृदय न फाटल पाँक जनु, बिछुरति प्रियतम नीर ।
बुझि पड़ैछ विधि देल मोहि, ई जातना सरीर ॥१४६॥

येहि बिधि पछताइत भरि बाटे । तुरत अयल रथ तमसा घाटे ॥१॥
कयल विनय कय बिदा निषादे । घुरला पद पड़ि बिकल विषादे ॥२॥
प्रविसति नगर सचिव सकुचाथी । जनि गो गुरु बाभन बधि जाथी ॥३॥
बैसि बिटप तर दिवस गमौलनि । तखन साँझ खन अवसर पौलनि ॥४॥
कयलनि अवध प्रवेस अन्हारे । गेला महल राखि रथ द्वारे ॥५॥
जे जे समाचार सुनि पाओल । भूप द्वार रथ देखय धाओल ॥६॥
रथ चिन्हि देखि बिकल हय सेहे । आतप हिम इव पघिलय देहे ॥७॥
नगर नारि नर व्याकुल केना । निघटति नीर मीन गन जेना ॥८॥

दोहा—सचिव आगमन सुनति सब, बिकल भेल रनिवास ।
भवन भयंकर लाग जनि, लेलक प्रेत निवास ॥१४७॥

अति आरति सब पूछथि रानी । आबय उतर न व्याकुल बानी ॥१॥
श्रवन न सुनय नयन नहि सूझय । कहु कहँ छथि नृप जहँ तहँ बूझय ॥२॥

सचिवहिँ तखन विकल बड़ हेरी । लय गेलि कौसल्या घर घेरी ॥३॥
लखथि सुमंत्र नृपहिँ जा केहन । अमिय रहित ससि लागय जेहन ॥४॥
आसन सयन बिभूषन हीने । पड़ल भूमि पर निपट मलीने ॥५॥
लेथि साँस सोचथि येहि भाँती । सुरपुर सौँ जनि खसल जजाती ॥६॥
छन छन लेथि सोच भरि छाती । जनि जरि पाँखि खसल संपाती ॥७॥
राम राम कह राम सिनेही । पुनि कह राम लखन बैदेही ॥८॥

दोहा—देखि सचिब जय जीव कहि, कयलनि दंड प्रणाम ।
सुनइत उठला विकल नृप, कहु सुमंत्र कहँ राम ॥१४८॥

नृप सुमंत्र केँ हृदय लगौलनि । जनि अधार डुबइत किछु पौलनि ॥१॥
लग बैसाय सिनेह बिभोरे । पूछथि भूप नयन भरि नोरे ॥२॥
राम कुसल कहु सखा सिनेही । कहँ रघुनाथ लखन बैदेही ॥३॥
आनल घुरा कि चलला बन मे । सुनितहि जल भर सचिव नयन मे ॥४॥
सोच बिकल पुनि पुछथि नरेसे । कहु सिय राम लखन संदेसे ॥५॥
राम सोभाव सील गुन रूपे । सुमिरि सुमिरि उर सोचथि भूपे ॥६॥
राज सुनाय देल बनवासे । सुनि मन भेल न हरष हरासे ॥७॥
से सुत बिछुरति गेल न प्राने । के पापी बड़ हमर समाने ॥८॥

दोहा—सखा राम सिय लखन जहँ, तहँ पहुँचा दिय मोहि ।
न तौँ आब चाहय चलय, प्रान कही सत तोहि ॥१४९॥

मंत्रिहिँ पुनि पुनि पुछथि नरेसे । कहु प्रियतम तनुजक संदेसे ॥१॥
झट से सखा उपाय रचाऊ । राम लखन सिय नयन देखाऊ ॥२॥
सचिब धीर धय कह मृदु बानी । महाराज अहँ पंडित ज्ञानी ॥३॥
वीर सुधीर धुरंधर देवा । सदा कयल अहँ साधुक सेवा ॥४॥
जनम मरन सब दुख सुख भोगे । हानि लाभ प्रिय मिलन बियोगे ॥५॥
काल करम बस हो सब तहिना । राति दिबस बरबस प्रभु जहिना ॥६॥
सुख हरपथि जड़ दुख पड़ि कानथि । धीर दुहु केँ सम कय मानथि ॥७॥
धीरज धरू बिबेक बिचारी । छोड़ू सोच सकल हितकारी ॥८॥

दोहा—प्रथम बास तमसाक तट, दोसर सुरसरि तीर।
नहासुना जल पिबि रहल, सिय समेत दुहु बीर ॥१५०॥

कयल केवट सेवा बहु भाँती। सिंगबेर बन काटल राती ॥१॥
होइत प्रात बट छीर मँगौलनि। जटा मुकुट निज माथ बनौलनि ॥२॥
राम सखा देल नाव मँगा कय। रघुपति चढ़ला प्रिया चढ़ा कय ॥३॥
सर धनु धयलनि लखन जोगा कय। चढ़ला पुनि प्रभु आज्ञा पा कय ॥४॥
बिकल बिलोकि मोहि रघुबीरे। बजला मधुर बचन धय धीरे ॥५॥
तात प्रनाम तात सौँ कहबनि। बेरि बेरि पद पंकज गहबनि ॥६॥
पुनि पुनि पद पड़ि करब निहोरा। तात करब जुनि चिंता मोरा ॥७॥
मंगल कुसल बिपिन पथ मोरे। कृपा अनुग्रह पुन्यहिँ तोरे ॥८॥

छंद—हे तात अहिँक अनुग्रहेँ बन बीच सब सुख पायबे।
प्रतिपालि आज्ञा कुसल देखय पैर पुनि घुरि आयबे॥
जननी सकल परितोषि बिनती कहब पुनि पुनि पद नती।
तुलसी करब से जतन जे कुसलेँ रहथि कोसलपती॥

सोरठा—गुरु सौँ कहब सँदेस, बेरि बेरि पद पदुम गहि।
करथु सैह उपदेस, जहि न सोच मम अवधपति ॥१५१॥

कय पुरजन परिजनहिँ निहोरा। तात कहब ई बिनती मोरा ॥१॥
से सब भाँति हमर हितकारी। जहि सौँ रह नरनाथ सुखारी ॥२॥
कहब समाद भरत सौँ अबिते। नीति न तजिय राजपद पबिते ॥३॥
पालिय प्रजा करम मन बानी। मातु सकल सेविय सम जानी ॥४॥
अंत निमाहब भाइक नाता। सेबइत सुजन पिता ओ माता ॥५॥
रखबनि नृपहिँ तात तहि रूपे। जे मन सोच करथि नहि भूपे ॥६॥
लखन कहल किछु बचन कठोरा। बरजल मोहि कय राम निहोरा ॥७॥
कहलनि अपन सपथ दय पुनि पुनि। लखनक नेनपन तात कहब जुनि ॥८॥

दोहा—कहि प्रनाम कछु कहक हित, सिय भेलि सिथिल सिनेह।
थकित बचन लोचन सजल, पुलक पल्लबित देह ॥१५२॥

तहि अवसर रघुवर रुखि पाओल । केवट तट सौँ नाव चलाओल ॥१॥
रघुकुल मनि चलला येहि भाँती । देखल ठाढ़ कुलिस धय छाती ॥२॥
कोना कहब हम अपन कलेसे । जिवति येलहुँ लय राम सँदेसे ॥३॥
सचिव येहन कहि चुप भय गेला । हानि गलानि सोच बस भेला ॥४॥
सूत वचन सुनितहिँ नरनाहे । खसला महि उर दारुन दाहे ॥५॥
छटपट विषम मोह मन बढ़ले । माजा असरि माछ जनि चढ़ले ॥६॥
कय विलाप कानथि सब रानी । महा बिपति के सकय बखानी ॥७॥
सुनि विलाप दुखहुँ दुख लागल । धीरजहुक सब धीरज भागल ॥८॥

दोहा—भेल कोलाहल अवध अति, सुनि नृप भवनक सोर ।
विपुल विहग बन खसल निसि, मानू कुलिस कठोर ॥१५३॥

भेल कंठगत प्रान भुआले । मनि विहीन जनि व्याकुल व्याले ॥१॥
इंद्रिय सकल विकल भेल भारी । जनि सर सरसिज बन बिनु बारी ॥२॥
नृपति मलान कोसिला देखल । रबिकुल रबि डुबइत जिय लेखल ॥३॥
राममातु धीरज उर धारी । बजली समुचित समय बिचारी ॥४॥
बुझि मन मे करु नाथ बिचारे । राम बियोग पयोधि अपारे ॥५॥
करनधार अहँ अवध जहाजे । चढ़ल सकल प्रिय पथिक समाजे ॥६॥
धीरज धरी तँ पायब पारे । नहि तौँ डुबत सकल परिवारे ॥७॥
हमर विनय प्रिय जौँ हिय लायब । तौँ पुनि राम लखन सिय पायब ॥८॥

दोहा—सुनइत नृप मृदु प्रिया बच, देखल नयन उघारि ।
तलफति मीन मलीन जनि, सीँचय सीतल बारि ॥१५४॥

धय धीरज उठि बैसि भुपाले । कहु सुमंत्र कहँ राम कृपाले ॥१॥
कहाँ लखन कहँ राम सिनेही । कहँ प्रिय पुत्र बधू बैदेही ॥२॥
विलपथि नृप विकल बहु भाँती । जुग सम भेल ओराय न राती ॥३॥
सुमिरि अंध मुनि साप जे पाओल । कौसल्यहिँ सब कथा सुनाओल ॥४॥
बिकल भेला कहइत इतिहासे । राम सहित धिक जीवन आसे ॥५॥
आब कि करब राखि तन सेहे । प्रन न निमाहल प्रेमक जेहे ॥६॥

हा रघुनंदन प्रान पिरीते । अहँ बिनु बहु दिन रहलहुँ जीते ॥७॥
हा जानकी लखन हा रघुवर । हा पितु हित चित चातक जलधर ॥८॥

दोहा—राम राम कहि राम कहि, राम राम कहि राम ।
तन परिहरि रघुवर बिरह, भूप गेला सुर धाम ॥१५५॥

जिबन मरन फल दसरथ पेलनि । अंड अनेक सुजस भरि गेलनि ॥१॥
जिबति राम विधु बदन निहारल । राम बिरह सौँ मरन समारल ॥२॥
सोक बिकल कानथि सब रानी । रूप सील बल तेज बखानी ॥३॥
करथि बिलाप अनेक प्रकारे । खसथि धरनि तल बारंबारे ॥४॥
बिलपय बिकल दास ओ दासी । घर घर रुदन करय पुरबासी ॥५॥
डुबला आइ भानुकुल भानू । धरम अवधि गुन रूप निधानू ॥६॥
सबहुँ दैछ केकयि केँ गारी । जग दग हीन कयल कुबिचारी ॥७॥
येहि बिधि बिलपति भेल बिहाना । ऐला ज्ञानि महामुनि नाना ॥८॥

दोहा—अवसर उचित बसिष्ठ मुनि, कहि अनेक इतिहास ।
सोक निवारल सभक कय, निज बिज्ञान प्रकास ॥१५६॥

तेल नाव भरि नृप तन राखल । दूत बजाय येहन पुनि भाखल ॥१॥
दौड़ू झटदय भरतक पासे । नृप सुधि कतहु न करू प्रकासे ॥२॥
कहु गय येते भरत केँ बाता । कहलनि गुरु आबथु दुहु भ्राता ॥३॥
मुनि निदेस सुनि धावन धायल । चलल वेगि बर बाजि लजायल ॥४॥
अनरथ अवध अरंभ जखन सौँ । असगुन भरतहिँ होइन तखन सौँ ॥५॥
देखथि राति भयानक सपना । जागि करथि कटु कोटि कलपना ॥६॥
बिप्र जेमाय देथि नित दाना । सिव अभिषेक करथि बिधि नाना ॥७॥
माँगथि मना संभु केँ मन मन । कुसल मातु पितु भ्राता परिजन ॥८॥

दोहा—येहि बिधि सोचथि भरत मन, धावन पहुँचल आय ।
गुरु अनुसासन श्रवन सुनि, चलला गनप मनाय ॥१५७॥

वायु वेग हय हँकइत चलला । दुर्गम गिरि सरि बन कत टपला ॥१॥
किछु न सोहाय सोच बड़ मन मे । सोचथि उर उड़ि जैतहुँ छन मे ॥२॥

बीतनि निमिष बरष हो जेना । भरत नगर लग ऐला एना ॥३॥
पइसति पुर अपसगुन तमामे । कुचरय काक कुभाँति कुठामे ॥४॥
खर सियार बाजय प्रतिकूले । सुनि सुनि होनि भरत मन सूले ॥५॥
श्रीहत सर सरिता वन बागे । नगर बिसेखि भयाओन लागे ॥६॥
खग मृग हय गज लखक न जोगे । मृतवत राम बियोग कुरोगे ॥७॥
नगर नारि नर निपट दुखारी । जनि सब सब संपति गेल हारी ॥८॥

दोहा—पुरजन मिलथि न कहथि किछु, प्रनमि चलथि चुपचाप ।
भरत कुसल नहि पुछि सकथि, भय बिषाद मन व्याप ॥१५८॥

हाट बाट नहि होअय निहारी । जनि पुर दस दिसि लाग दवारी ॥१॥
सुत अबइत सुनि केकय नंदिनि । हरपलि रविकुल जलरुह चंदिनि ॥२॥
आरति साजि मुदित उठि धायलि । द्वारहिँ भेँटि भवन लय आयलि ॥३॥
भरत दुखित परिवार निहारल । मानु कमल बन तुहिनक मारल ॥४॥
कैकेयी हरषित तहि भाँती । आगि लगा वन जेना किराती ॥५॥
लखि सुत केँ ससोच मन घोरे । पुछल कुसल अछि नैहर मोरे ॥६॥
भरत सुना सब कुसलक हाले । निज कुल कुसल पुछल ततकाले ॥७॥
कहु कहँ तात कहाँ सब माता । कहँ सिय राम लखन प्रिय भ्राता ॥८॥

दोहा—सुनि सुत वचन सिनेहमय, कपट नोर भरि नैन ।
भरत श्रवन मन सूल सम, पापिनि बाजलि बैन ॥१५९॥

तात बात सभ लेल सम्हारी । कयल मदति मंथरा बेचारी ॥१॥
बिधि किछु बिच मे काज बिगाड़ल । भूपति सुरपति नगर सिधारल ॥२॥
भेला भरत सुनि बिबस बिषादेँ । जनि सहमल करि केहरि नादेँ ॥३॥
तात तात हा तात पुकारी । खसला महितल व्याकुल भारी ॥४॥
सुरपुर चलइत देखल न तोही । तात न रामहिँ सौँपल मोही ॥५॥
उठला पुनि धय धीर सम्हारी । कहु पितु मरन हेतु महतारी ॥६॥
कहथि केकयी सुनि सुत बानी । पाचथि मरम मानु बिष आनी ॥७॥
हुलसि आदि सौँ सब निज करनी । कुटिल कठोर सुनाओल बरनी ॥८॥

दोहा—भरत बिसरला पितु मरन, गमन राम बन सूनि ।
थगित रहि गेला मौन भय, कारन निज केँ गूनि ॥१६०॥

सुत केँ बिकल बिलोकि बुझाबथि । मानु जरल पर नोन लगाबथि ॥१॥
बाउ नृपति नहि सोचय जोगे । सुकृत कमैला केलनि भोगे ॥२॥
जिबइत सकल जनम फल पैलनि । अंत अमरपति पुर पद धैलनि ॥३॥
येहन बिचारि सोच परिहरबे । सहित समाज राजपुर करबे ॥४॥
सहमलाह सुनि राजकुमारे । पाकल ब्रन जनि पड़ल अँगारे ॥५॥
धीरज धय अति लेथि उसासे । पापिनि कयले कुलक बिनासे ॥६॥
जौँ छलौक ई दुरमति तोही । किय न जनमितहिँ मारल मोही ॥७॥
गाछ काटि तो सिँचले पाते । जियबय माछ केले जल काते ॥८॥

दोहा—हंस बंस दसरथ जनक, राम लखन सन भाय ।
जननी तोँ जननी भेलेँ, विधि नहि बस मे हाय ॥१६१॥

येहन कुमति जखने मन एलौ । खंड खंड हिय किय नहि भेलौ ॥१॥
वर मँगइत मन भेलौ नै पीड़ा । गललौ जिह न भेलौ मुह कीड़ा ॥२॥
नृप प्रतीति तव कोना केलनि । मरन काल बिधि मत हरि लेलनि ॥३॥
विधियो सकथि न तिय हिय जानी । सकल कपट अघ अबगुन खानी ॥४॥
सरल सुसील धरम रत भूपे । तिय सोभाव जनितथि कोन रूपे ॥५॥
येहन के जीव जंतु संसारे । जाहि न रघुपति प्रान पियारे ॥६॥
सैह राम अति अहित कि तोही । के तो छैँ सत सत कह मोही ॥७॥
जे छैँ से छैँ मुह करिया कय । आँखि इरोत बैस तोँ जा कय ॥८॥

दोहा—राम बिरोधी हृदय सौँ, प्रगट कयल विधि मोहि ।
हमरा सन के पातकी, ब्यर्थ कही किछु तोहि ॥१६२॥

जननि कुटिलपन रिपुहन सूनी । रिस सौँ जरथि बिबसता गूनी ॥१॥
आयलि तहँ कुबरी तहि छन मे । बसन बिभूषन सजने तन मे ॥२॥
लखन अनुज उर रिस सौँ भरले । जनि धधरा घृत आहुति परले ॥३॥
मारल हुमकि कुबर पर लाते । रुदति खसल मुँह भर जा काते ॥४॥

कूबड़ टूटल फुटल कपारे । दलित दसन मुख रुधिरक धारे ॥५॥
हाय दैव हम की छति कैलहुँ । निक करइत फल अनुचित पैलहुँ ॥६॥
सुनि रिपुहन नख सिख धरि खोटे । घिसियाबय लगला धय झोँटे ॥७॥
भरत दयानिधि छोड़बति भेला । दुहु भ्राता कोसिला लग गेला ॥८॥

दोहा—मलिन बसन बिबरन बिकल, कृस सरीर दुख भार ।
कनक कलप बर बेलि बन, मारल मानु तुषार ॥१६३॥

देखि भरत केँ माँ उठि दौड़लि । मुरुछि खसलि भूतल दुख बौड़लि ॥१॥
भरत बिकल भेला लखि भारी । पड़ला पद तनु दसा बिसारी ॥२॥
माय देखाउ कतय छथि ताता । कहँ सिय राम लखन दुहु भ्राता ॥३॥
कैकयि किय जनमल जग माँझे । जौँ जनमलि किय भेल न बाँझे ॥४॥
कुल कलंक जनमौलक मोही । अपजस भाजन प्रिय जन द्रोही ॥५॥
त्रिजग अभागल के हम जेहन । जननि जकर हित तव गति एहन ॥६॥
पितु सुरपुर बन रघुवर केतू । हमही सकल अनर्थक हेतू ॥७॥
धिक हम भेलहुँ बेनुबन आगी । दुसह दाह दुख दूषन भागी ॥८॥

दोहा—भरत वचन मृदु माय सुनि, उठली बहुरि सम्हारि ।
लेल उठाय लगाय उर, दृग सौँ बहवति बारि ॥१६४॥

सुध सोभाव हिय माय लगौलनि । अति हित जनि पुनि रामहिँ पौलनि ॥१॥
रिपुहन सौँ मिलली पुनि सेहे । हृदय समाय न सोक सिनेहे ॥२॥
लखि सोभाव सब कह ई बाता । किय न येहन हो रामक माता ॥३॥
भरतहिँ माय कोर बैसौलनि । नोर पोछि मृदु बचन सुनौलनि ॥४॥
आवहु पुत्र धीर हिय धारू । कुसमय जानि सोक केँ छारू ॥५॥
जुनि मानू हिय हानि गलानी । काल करम गति अघटित जानी ॥६॥
ककरो दोष दियनु जुनि ताता । सब बिधि हमरा बाम बिधाता ॥७॥
जे येतबहु दुख जियबय मोही । जान कं आबहु भाव कि ओही ॥८॥

दोहा—पितु निदेस भूषन बसन, तात तजल रघुवीर ।
बिसमय हरष न हृदय किछु, पहिरल बलकल चीर ॥१६५॥

मुख प्रसन्न मन राग न रोषे । सबहुक सब बिधि कय परितोषे ॥१॥
चलला बन सुनि सिय सँग लागलि । रहलि न राम चरन अनुरागलि ॥२॥
सुनितहिँ लखन चलल उठि साथे । रहथि न जतनहु पर रघुनाथे ॥३॥
सबके ँ प्रनमि लखन रघुनाथें । चलला सिय लघु बंधुक साथे ॥४॥
राम लखन सिय बिपिन पठयलहुँ । गेलहुँ न सँग न प्रान सँग केलहुँ ॥५॥
ई सब भेल येहि नयन समच्छे । तदपि गेल नहि जीव अलच्छे ॥६॥
मोहि न लाज निज नेह बिचारी । राम सरिस सुत हम महतारी ॥७॥
जियब मरब भल जानल भूपे । हमर हृदय सय कुलिस सरूपे ॥८॥

दोहा—सुनि कय कौसल्या बचन, भरत सहित रनिवास ।
ब्याकुल बिलपय राजगृह, मानू सोक निवास ॥१६६॥

बिलपथि बिकल भरत दुहु भ्राता । हिय लगौल कौसल्या माता ॥१॥
भरतहिँ बिबिध प्रकार बुझौलनि । कहि बिबेकमय बचन सुनौलनि ॥२॥
माय सबहुँ के ँ भरत बुझौलनि । श्रुति पुरान केर कथा सुनौलनि ॥३॥
छल बिहीन सुचि सरल सुबानी । बजला भरत जोरि जुग पानी ॥४॥
जे अघ मातु पिता सुत मारी । गाय गोठ महि सुरपुर जारी ॥५॥
जे अघ तिय बालक बध केने । मीत महीपति माहुर देने ॥६॥
जे पातक उपपातक नाना । मन क्रम बच भव कहल सुजाना ॥७॥
से पातक मोहि लाग विधाता । येहि मे जौँ हो मम मत माता ॥८॥

दोहा—जे परिहरि हरिहर चरन, भजय भूतगन घोर ।
तकरे गति मोहि देथु विधि, जौँ जननी मत मोर ॥१६७॥

बेचथि वेद धरम दुहि लेथी । पिसुन पाप आनक कहि देथी ॥१॥
कपटी कुटिल कलह प्रिय क्रोधी । वेद बिदूषक विस्व बिरोधी ॥२॥
लोभी लंपट लोलुप चारी । जे ताकय पर धन पर नारी ॥३॥
पावी हम तकरे गति घोरे । जौँ जननी संमत ई मोरे ॥४॥
जे न साधु संगति अनुरागल । परमारथ पथ विमुख अभागल ॥५॥
भजय न हरि जे लहि नर देहे । जाहि न हरिहर सुयस सिनेहे ॥६॥

चलय बाम पथ श्रुति पथ-छारी । बंचक छलय बेष बहु धारी ॥७॥
देधु तनिक गति संकर दानी । येकर भेद जननी जौं जानी ॥८॥

दोहा—सहज सरल सत भरत केर, सुनि वच रामक माय ।
कहथि बाउ अहँ राम प्रिय, सदा बचन मन काय ॥१६८॥

राम अहाँक प्रानहुक प्राने । अहँ रघुपति प्रिय प्रान समाने ॥१॥
विधु बिष चुवय स्रवय हिम आगी । हो बरु जलचर बारि बिरागी ॥२॥
कटय न ज्ञानहुँ मोहक मूले । हयब न अहाँ राम प्रतिकूले ॥३॥
जे अहाँक मत येहि मे कहता । से सपनहुँ सुख सुगति न लहता ॥४॥
ई कहि माय भरत हिय लेलनि । मेल स्रवित पय दग भरि गेलनि ॥५॥
करइत बहु बिलाप येहि भाँती । बैसले बितल सगर से राती ॥६॥
बामदेव गुरु तखन पधारल । सचिब महाजन सकल हँकारल ॥७॥
देल भरत केँ पुनि उपदेसे । कहि परमारथ बचन सुदेसे ॥८॥

दोहा—तात हृदय धीरज धरू, करू जे अवसर आज ।
गुरु बच सुनि उठला भरत, करय कहल सब साज ॥१६९॥

वेद बिहित नृप तनहिँ नहौलनि । परम बिचित्र विमान बनौलनि ॥१॥
गहि पद भरत माय लैल राखी । रहली राम दरस अभिलाषी ॥२॥
चंदन अगर ऐल बहु भारे । ओ बहु भाँति सुगंध अपारे ॥३॥
चिता रचल सरयू तट पावन । जनि सुरपुर सोपान सोहावन ॥४॥
येहि बिधि दाह क्रिया सब केलनि । विधिबत नहा तिलांजलि देलनि ॥५॥
सोधि सास्त्र सब वेद पुराने । कयल भरत दस गात्र बिधाने ॥६॥
अनुमति मुनि जहँ जेहन देलनि । सहस भाँति तहँ तेहन केलनि ॥७॥
भय बिसुद्ध देलनि सब दाने । धेनु बाजि गज नाना याने ॥८॥

दोहा—सिंहासन भूषन बसन, अन्न धरनि धन धाम ।
देल भरत लहि भूमिसुर, भेला पूरन काम ॥१७०॥

पितु हित भरत कयल जे करनी । लाख मुखहुँ से होअय न बरनी ॥१॥
पुनि गुनि सुदिन बसिष्ठ पधारल । सचिब महाजन सकल हँकारल ॥२॥

बैसला राजसभा सब जा कय । दुहु भ्राता कें लौल बजा कय ॥३॥
भरतहिँ लग बसिष्ठ बैसौलनि । नीति धरममय बचन सुनौलनि ॥४॥
प्रथम कथा मुनि कहलनि बरनी । केकयि कुटिल कयल जे करनी ॥५॥
भूप धरम ब्रत सत्य सराहल । जे तनु परिहरि प्रेम निमाहल ॥६॥
करति राम गुन सील बखाने । गुरु पुलकित तन सजल नयाने ॥७॥
कहल लखन सिय प्रीति बखानी । सोक सिनेह मगन मुनि ज्ञानी ॥८॥

दोहा—**सुनू भरत भावी प्रबल, बिलखि कहल मुनिनाथ ।**
हानि लाभ जीवन मरन, जस अपजस विधि हाथ ॥१७१॥

येहन जानि ककरा दी दोषे । ब्यर्थ करब ककरहु पर रोषे ॥१॥
तात विचार करू भल रूपे । सोच जोग नहि दसरथ भूपे ॥२॥
सोचिय बिप्र जे वेद बिहीने । तजि निज धरम विषय लवलीने ॥३॥
सोचिय नृप जे नीति न जानय । प्रान सरिस जे प्रजा न मानय ॥४॥
सोचिय वैस्य कृपिन धनवाने । जे न अतिथि सिब भगति सुजाने ॥५॥
सोचिय सूद्र बिप्र अवमानी । मुखर मान प्रिय ज्ञान गुमानी ॥६॥
सोचिय पुनि पति बंचक नारी । कुटिल कलह प्रिय इच्छा चारी ॥७॥
सोचिय बटु निज ब्रत परिहारी । जे नहि गुरु अनुमति अनुसारी ॥८॥

दोहा—**सोचिय गृही जे मोह बस, करय करम पथ त्याग ।**
सोचिय जती प्रपंच रत, बिगत बिबेक बिराग ॥१७२॥

बैखानस से सोचय जोगे । तप तजि जकरा भावय भोगे ॥१॥
सोचिय पिसुन अकारन क्रोधी । जननि जनक गुरु बंधु बिरोधी ॥२॥
सब बिधि सोचिय पर अपकारी । निज तन पोषक निर्दय भारी ॥३॥
सोचनीय छथि सब बिधि सेहे । छल तजि होअय न हरिजन जेहे ॥४॥
सोचनीय नहि कोसल राजे । चौदह भुवन प्रभाव बिराजे ॥५॥
भेल ने अछि न हैत नहि तेहन । भरत अहँक पितु भूपति जेहन ॥६॥
विधि हरिहर सुरपति दिसि नाथे । बरनथि सब दसरथ गुन गाथे ॥७॥

दोहा—**कहू कोन विधि तात क्यो, करत बड़ाइ तनीक ।**
राम लखन अहँ सत्रुहन, सन सुचि पुत्र जनीक ॥१७३॥

सब प्रकार भूपति बड़भागी । बृथा विषाद करब तनि लागी ॥१॥
ई सुनि बूझि सोक सब टारी । नृपक निदेस करू सिर धारी ॥२॥
भूपति देल अहाँ केँ राजे । सत्य करू पितु बच अहँ आजे ॥३॥
रामहिँ तजल जाहि बच लागी । त्यागल देह राम बिरहागी ॥४॥
नृपहिँ बचन प्रिय नहि प्रिय प्राने । करू तात पितु बचन प्रमाने ॥५॥
पालिय सिर धय भूप निदेसे । सैह अहँक हित सब विधि वेसे ॥६॥
परसुराम पितु आज्ञा राखी । मारल मातु लोक सब साखी ॥७॥
तनय जजातिहिँ जौबन देले । पितु आज्ञा अघ अजस न भेले ॥८॥

दोहा—अनुचित उचित बिचार तजि, जे पालथि पितु बैन ।
सुजस सुखद भाजन बनथि, बसथि अमरपुर ऐन ॥१७४॥

अवस सत्य करु बचन नृपालक । होउ सोक तजि परजा पालक ॥१॥
पौता सुरपुर मे नृप तोपे । अहँ केँ सुकृत सुजस नहि दोपे ॥२॥
वेद बिदित सब सम्मत एहे । जेहि पितु देथि राज लह सेहे ॥३॥
करिय राज परिहरिय गलानी । मानिय हमर बचन हित जानी ॥४॥
सुनि बैदेहि राम सुख लहता । क्यो पंडित नहि अनुचित कहता ॥५॥
कौसल्यादि सकल महतारी । सेहो प्रजा सुख हेती सुखारी ॥६॥
रामक अहँक मरम जे जानत । से सब बिधि अहँके भल मानत ॥७॥
राज समरपब रामक अयने । सेबा करब नेह उर धयने ॥८॥

दोहा—करू गुरुक अनुमति अबस, कहथि सचिब कर जोरि ।
रघुपति ऐने उचित जे, से अहँ करब बहोरि ॥१७५॥

कौसल्या कह धैरज धारी । गुरुक निदेस पथ्य हितकारी ॥१॥
सादर करू सैह हित मानी । तजू बिपाद काल गति जानी ॥२॥
बन छथि रघुवर सुरपुर भूपे । अहँ कदराइ तात येहि रूपे ॥३॥
परिजन प्रजा सचिब सब अंबे । अहीँ बाउ सबहिक अवलंबे ॥४॥
काल कठिन विधि बाम निहारी । धैरज धरिय माय बलिहारी ॥५॥
गुरुक बचन माथा लय धारिअ । प्रजा पालि परिजन दुख टारिअ ॥६॥

गुरुक बचन सचिवक अभिनंदन । सुनल भरत हिय हित जनि चंदन ॥७॥
सुनल बहुरि जे माय बखानल । सील सिनेह सरल रस सानल ॥८॥

छंद—सानल सरल रस मातु बानी सुनि भरत ब्याकुल उरे ।
लोचन सरोरुह स्रवय सींचय हिय बिरह नव अंकुरे ॥
से दसा लखइत तहि समय निज देह सुधि सब भुलि गेला ।
भन तुलसि सहज सिनेह सीमहिँ सबहु परसंसति भेला ॥

सोरठा—भरत कमल कर जोरि, धीर धुरंधर धीर धय ।
बचन अमिय जनि बोरि, देथि उचित उत्तर सबहिँ ॥१७६॥

मास पारायण, विश्राम—१८

मोहि उपदेस देल गुरु नीके । प्रजा सचिव सबहुक मत ठीके ॥१॥
भल उपदेस देलनि महतारी । अवस करय चाही सिर धारी ॥२॥
गुरु पितु मातु स्वामि हित बानी । सुनि मन मुदित करी भल जानी ॥३॥
उचित कि अनुचित कैने बिचारे । धरम जाय सिर पातक भारे ॥४॥
अहँ तौँ देलहुँ सरल सिख सेहे । होयत हमर भल कयने जेहे ॥५॥
नीक बुझै छी ई हम जइयो । जिय परितोष न होइछ तइयो ॥६॥
हमरो बिनय आब सुनि लेबे । हमरा जोग सिखाओन देबे ॥७॥
दै छी उतर छमब अपराधू । दुखित दोष दुख गनथि न साधू ॥८॥

दोहा—पितु सुर पुर सियराम बन, करय कही मोहि राज ।
येहि सौँ जानी हमर हित, बा निज किछु बड़ काज ॥१७७॥

छल मम हित सियपति सेवे टा । माय कुटिलपन हरलक से टा ॥१॥
हम बिचारि अपना मन देखी । आन भाँति हित अपन न लेखी ॥२॥
सोक भरल राजे की रखने । बिनु सियराम लखन पद लखने ॥३॥
ब्यर्थ बसन बिनु भूषन भारे । ब्यर्थ बिरति बिनु ब्रह्म बिचारे ॥४॥
सरुज सरीर ब्यर्थ बहु भोगे । बिनु हरि भगति ब्यर्थ जप जोगे ॥५॥
जिय बिनु सुभग देह कोन काजे । मम सब ब्यर्थ बिना रघुराजे ॥६॥

जाइ राम लग अनुमति दीयऽ । यैह हमर हित ध्रुव बुझि लीयऽ ॥७॥
मोहि नृप कय भल अपन चहै छी । नेहक जड़ते सेंहो कहै छी ॥८॥

दोहा—कैकयि नंदन कुटिल मति, राम विमुख गत लाज ।
छी चहैत सुख मोह बस, मम सम अधमक राज ॥१७८॥

हम जे कही सत्य बुझु ताही । धरम सील नृप होबक चाही ॥१॥
देब राज मोहि हठ कय जखने । रसा रसातल जयती तखने ॥२॥
हमर सरिस के पाप निवासे । जहि लेल सिया राम बनवासे ॥३॥
भूप राम कें कानन देलनि । बिछुरति गमन अमरपुर केलनि ॥४॥
हम सठ सब अनरथ केर हेते । बैसि बात सब सुनी सचेते ॥५॥
बिनु रघुबीर बिलोकि अबासे । रहल प्रान सहि जग उपहासे ॥६॥
राम पुनीत विषय रस दूरे । लोलुप भूमि भोग हम पूरे ॥७॥
कहु की हृदय कठिन कत भेले । बज्रहुँ सौं आगू बढ़ि गेले ॥८॥

दोहा—कारन सौं कारज कठिन, येहि मे दोष न मोर ।
कुलिस अस्थि सौं उपल सौं, लोह कराल कठोर ॥१७९॥

कैकेयी भव तनु अनुरागल । पामर प्रान अघाओ अभागल ॥१॥
प्रिय बिरहहुँ जौं प्रिय रह प्राने । देखब सुनब कत आगु प्रमाने ॥२॥
लखन राम सिय कें बन देलक । सुरपुर पठा पतिक हित केलक ॥३॥
अजस बिधबपन अपने लेलक । सोक सँताप प्रजा कें देलक ॥४॥
देलक मोहि सुख सुजस सुराजे । कैकयि कयलक सबहुक काजे ॥५॥
येहि सौं आब हैत की नीका । तहु पर देबय चहैछी टीका ॥६॥
केकयि जठर जनमि येहि धरनी । मम हित ई नहि अनुचित करनी ॥७॥
विधि मम सकल बनाओल काजे । मदति करिअ की प्रजा समाजे ॥८॥

दोहा—ग्रह ग्रहीत पुनि बात बस, तनि पुनि बीछी मार ।
ताहि पियाबी बारुनी, कहू कोन उपचार ॥१८०॥

कैकयि सुवन जोग जग जतबा । चतुर बिरंचि देल मोहि ततबा ॥१॥
दसरथ तनय राम लघु भ्राता । देल बड़ाइ मोहि व्यर्थ विधाता ॥२॥

अहँ सब कही करावय टीका । नृपक निदेस सबहु जन नीका ॥३॥
उतर देब हम कनिका कनिका । सुख सौँ कहू रुचय जे जनिका ॥४॥
सह कुमातु हमरा तजि ई के । कहत जगत मे भेल ई नीके ॥५॥
के सचराचर मम बिनु आने । जहि सिय राम न प्रान समाने ॥६॥
परम हानि मम सबहुक नीके । दोष न परक अदिन मम थीके ॥७॥
संसय सील प्रेम बस जेहे । कही सबहु थिक समुचित सेहे ॥८॥

दोहा—राम माय सुठि सरल चित, मोहि पर प्रेम बिसेखि ।
कहलनि सहज सिनेह बस, हमर दीनता देखि ॥१८१॥

गुरु जग बिदित बिवेक निधाने । जग जनिका कर बदर समाने ॥१॥
सेहो सजथि मम तिलकक साजे । बिधि बिमुखे सब बिमुखे आजे ॥२॥
राम सीय के छाड़ि जहाने । मम मत नहि से कहत के आने ॥३॥
से हम सुनब सहब सुख मानी । अंतहु थाल जतय रह पानी ॥४॥
अधम कहत जग तकर न रोचे । परलोको कैर मोहि न सोचे ॥५॥
उर बस एके दुसह दवारी । मम कारन सिय राम दुखारी ॥६॥
जीवन लाभ लखन भल पाओल । सब तजि राम चरन मन लाओल ॥७॥
रघुवर बन हित भेल मम जनमे । की फुसिये पछतावी मन मे ॥८॥

दोहा—अपनुक दारुन दीनता, सबहिँ कही सिर नाय ।
बिनु देखने रघुनाथ पद, जियक जरनि नहि जाय ॥१८२॥

आन उपाय मोहि नहि सूझय । के हृदयक रघुवर बिनु बूझय ॥१॥
एके मनहिँ आब अभिलासे । होइतहिँ प्रात जाइ प्रभु पासे ॥२॥
जद्यपि हम अनभल अपराधी । मम कारन सब भेल उपाधी ॥३॥
तदपि सरन सनमुख मोहि देखी । छमि सब करता कृपा बिसेखी ॥४॥
सील सँकोच सोभाव ललामे । रघुपति कृपा सिनेहक धामे ॥५॥
अरिहुक अनभल कयल न रामे । हम सिसु सेवक जद्यपि वामे ॥६॥
आब पाँच अहँ मम भल मानी । अनुमति आसिप दीय सुबानी ॥७॥
जे सुनि बिनय मोहि जन जानी । आबथि घूरि राम रजधानी ॥८॥

दोहा—जद्यपि जनम कुमातु सौँ, हम सठ सदा सदोस।
तजता नहि ओ अपन बुझि, मोहि रघुवीर भरोस ॥१८३॥

भरत वचन सबके प्रिय लागल। राम सिनेह सुधा रस पागल ॥१॥
लोक वियोग बिषम बिप दागल। मंत्र सबिज सुनइत जनि जागल ॥२॥
माय सचिव गुरु पुर नर नारी। भेल सिनेह बिकल सब भारी ॥३॥
कहथि बखानि भरत के जानू। राम प्रेम मूरति अहँ मानू ॥४॥
तात भरत किय कहब न एहन। रामहिँ प्रिय अहँ जिव प्रिय जेहन ॥५॥
निज जड़ता बस जे अज्ञानी। माय कुमति तोहि सानत आनी ॥६॥
से सठ पुरुषा कोटि समेते। बसत कलप सय नरक निकेते ॥७॥
अहिक न अघ अवगुन मनि धारय। हरय गरल दुख दारिद टारय ॥८॥

दोहा—अवस चलू बन राम जहँ, थिक भल भरत विचार।
सोक सिंधु डुबइत सबहिँ, देल अहाँ आधार ॥१८४॥

भेल सभक मन मोद न थोरे। जनि घन धुनि सुनि चातक मोरे ॥१॥
चलब प्रात निक निरनय देखी। भरत प्रान प्रिय सभक बिसेखी ॥२॥
मुनिहिँ बंदि भरतहिँ सिर नावी। घर चलला सब अनुमति पावी ॥३॥
धन्य भरत जीवन येहि जग मे। सील सिनेह सराहथि मग मे ॥४॥
कहथि परस्पर भेल बड़ काजे। सब चलबाक सजै अछि साजे ॥५॥
रहय कहथि घर ओगरय जनिका। गरदनि कटल पड़य बुझि तनिका ॥६॥
क्यो कह ककरो करू न रोके। जीवन लाभ चाह सब लोके ॥७॥

दोहा—जरय से संपति सदन सुख, सुहृद मातु पितु भाय।
होइत समुख जे राम पद, करय न सहस सहाय ॥१८५॥

घर घर साजथि बाहन नाना। हिरदय हरष परात प्रयाना ॥१॥
भरत जाय घर कयल विचारे। पुर गज बाजि भवन भंडारे ॥२॥
सकल धनक रघुपति अधिकारी। जौँ बिनु जतन चली तहि छारी ॥३॥
तौँ मम हित फल हैत न नीके। स्वामी द्रोह पाप बड़ थीके ॥४॥
से सेवक जे प्रभु हित सेवय। किय न कोटि दूपन क्यो देवय ॥५॥
येहन सोचि सुचि जनहिँ बजौलनि। जे सपनहुँ नहि धरम डिगौलनि ॥६॥

कहि सब मरम धरम भल भाखल । जे जहि जोग ताहि तहँ राखल ॥७॥
कय सब जतन सौँपि रखबारी । भरत गेला जहँ राम मतारी ॥८॥

दोहा—आरत बुझि सब जननि केँ, भरत सिनेह सुजान ।
कहल सजाबय पालकी, तथा सुखासन जान ॥१८६॥

चकवा चकवी पुर नर नारी । चाह प्रात उर आरति भारी ॥१॥
जगइत निसि भरि भेल बिहाने । भरत बजौलनि सचिब सुजाने ॥२॥
कहल लीय सब तिलकक साजे । बनहिँ देता मुनि रामहिँ राजे ॥३॥
चलु झट सुनि नमि सचिब समाजे । साजल झट हय गय रथ साजे ॥४॥
अरुंधती सह अगिनि समाजे । पहिने रथ चढ़ला मुनिराजे ॥५॥
बिप्र बृन्द चढ़ि बाहन नाना । चलला सब तप तेज निधाना ॥६॥
नगर लोक सब सजि सजि जाने । कयल चित्रकूटहिँ प्रस्थाने ॥७॥
सुंदर महफा हो न बखानी । चढ़ि चढ़ि कय चलली सब रानी ॥८॥

दोहा—सुचि सेवक केँ सौँपि पुर, सादर सबहिँ चलाय ।
पुनि चलला सिय राम पद, सुमिरि भरत दुहु भाय ॥१८७॥

राम दरस बस सब नर नारी । चलल करिनि करि लखि जनि बारी ॥१॥
बन सियराम सोचि से बाता । पैरहिँ जाथि भरत सह भ्राता ॥२॥
देखि सिनेह लोक अनुरागल । उतरि चलल हय गज रथ त्यागल ॥३॥
जाय समीप रखाय सबारी । मृदु बच कहल राम महतारी ॥४॥
चढ़ु रथ तात जननि बलिहारी । होइछ प्रिय परिबार दुखारी ॥५॥
अहँके चलति चलत सब लोगे । सकल लोक कृस नहि मग जोगे ॥६॥
सिर धय बचन झुका पद माथे । चलला रथ चढ़ि भाइक साथे ॥७॥
कयल प्रथम दिन तमसा बासे । दोसर दिबस गोमती पासे ॥८॥

दोहा—पय अहार फल असन क्यो, निसि भोजन क्यो लोग ।
करथि राम हित नेम ब्रत, परिहरि भूपन भोग ॥१८८॥

सइ तट बसि चलि देल पराते । ऐला शृंगवेरपुर काते ॥१॥
समाचार सब सुनल निपादे । हृदय बिचार करथि सबिपादे ॥२॥

भरत जाथि की कारन बन मे । छनि किछु कपट भाव की मन मे ॥३॥
जौँ न कुटिलपन रहितनि मन मे । तौँ सेना किय अनितथि बन मे ॥४॥
सोचथि सानुज रामहिँ मारी । करी अकंटक राज सुखारी ॥५॥
राजनीति बुझलक नहि भरते । तखन कलंक आब लड़ि मरते ॥६॥
लड़त असुर सुर सब मिलि जइयो । रामहिँ जीति सकत नहि तइयो ॥७॥
की आचरज भरत कर एना । फड़ बिष लता अमृत फल जेना ॥८॥

दोहा--कहल सोचि गुह ज्ञाति सौँ, सजग रहह सब भाय ।
डुबबह लग्गा नाव सब, रोकह घाट सब जाय ॥१८९॥

रनक साज लय रोकह घाटे । मरक हेतु ठाठह सब ठाटे ॥१॥
सँमुख लड़ब हम भरतक संगे । जिबइत देब न उतरय गंगे ॥२॥
समर मरन पुनि सुरसरि तीरे । राम काज छन भंगु सरीरे ॥३॥
हम जन नीच भरत नृप भ्राता । येहन मरन बड़ भागक बाता ॥४॥
स्वामी हित करबै रन रारी । जस छिटकैब भुवन दस चारी ॥५॥
प्रान गमायब हित रघुनाथे । मुद मोदक हमरा दुहु हाथे ॥६॥
साधु समाज जनिक नहि लेखा । राम भगत मे जनिक न रेखा ॥७॥
ब्यर्थ जियब जग से महि भारे । जननी जौबन बिटप कुठारे ॥८॥

दोहा--बिगत बिषाद निषादपति, सब केँ बढ़ा उछाह ।
सुमिरि राम माँगल तुरित, तरकस धनुष सनाह ॥१९०॥

तुरत भाइ साजह सब साजे । सुनि आज्ञा कदराह न आजे ॥१॥
बेस नाथ सब कहय सहरषे । एकहिँ एक बढ़ाबय करषे ॥२॥
प्रनमि निषादहिँ सब चलि देले । सूर सदैब जुद्ध प्रिय मेले ॥३॥
सुमिरि राम पद पंकज पनही । भाथी बान्हि चढ़ाबय धनुही ॥४॥
लोह टोप सिर कवच लगा कय । फरसा बल्लम सेल पिजा कय ॥५॥
क्यो अति कुसल ढाल तरुआरी । कूदय गगन मानु छिति छारी ॥६॥
निज निज साज समाज बना कय । गुहराजहिँ सब प्रनमल जा कय ॥७॥
देखि सुभट सब लायक जानल । लय लय नाम सबहिँ सनमानल ॥८॥

दोहा—भैया धोखा देह जुनि, आइ पड़ल बड़ भीर।
सुनि सरोष बाजल सुभट, वीर न होअय अधीर ॥१९१॥

राम प्रताप नाथ तव जोरे। करब कटक बिनु भट बिनु घोरे ॥१॥
जिबइत पैर न पाछू धरबे। रुंड मुंडमय मेदिनि करबे ॥२॥
लखि निषादपति भल दल साजा। कहल बजाउ लड़ाइक बाजा ॥३॥
कहितहिँ येते छीँक भेल बामे। सगुनी कहलनि भल परिनामे ॥४॥
बूढ़ एक कह सगुन बिचारी। मिलू भरत सौँ हैत न रारी ॥५॥
भरत जाइ छथि मनबय रामे। सगुन कहय बिग्रहक न कामे ॥६॥
सुनि गुह कहल कहथि भल बूढ़ा। सहसा कय पछताबय मूढ़ा ॥७॥
भरत सोभाव सील बिनु जनने। बड़ हित हानि हैत रन ठनने ॥८॥

दोहा—रोकह झट मिलि घाट सब, मरम बुझैछी जाय।
हित रिपु ओ मध्यस्थ गति, बुझि पुनि करब उपाय ॥१९२॥

सहज सोभाब नेह लखि पड़ते। बैर पिरीत दबा के धरते ॥१॥
कहि लगला उपाति ओरिआबय। कंद मूल फल खग मृग लाबय ॥२॥
पैध जोआयल नीक बोआरे। भरिया आनल भरि भरि भारे ॥३॥
चलला मिलय सजा कय साजे। मंगल मूल सगुन सुभ राजे ॥४॥
लखि दूरहिँ सौँ कहि निज नामे। कयल मुनीसहिँ दंड प्रनामे ॥५॥
जानि राम प्रिय देल असीसे। भरतहिँ कहल बुझाय मुनीसे ॥६॥
राम सखा सुनि स्यंदन त्यागल। चलला उतरि हुलसि अनुरागल ॥७॥
गाम जाति गुह नाम सुना कय। प्रनमल महि पर माथ लगा कय ॥८॥

दोहा—करति दंडबत लखि भरत, तनि उर लेल लगाय।
भेँट भेल जनि लखन सौँ, प्रेम न हृदय समाय ॥१९३॥

मिलथि भरत तनि सौँ अति प्रीती। लोक सिहाथि प्रेम केर रीती ॥१॥
धन्य धन्य धुनि मंगल मूले। सुर सराहि हुनि बरषथि फूले ॥२॥
लोक वेद सबतरि जे नीचे। छुबि जसु छाइ लैछ जल सीँचे ॥३॥
तहि भरि अंक राम लघु भ्राता। मिलथि पुलक परिपूरित गाता ॥४॥

राम राम कहि जे हफियाइछ । पाप पुंज तनि समुख न जाइछ ॥५॥
येकरा राम लगा उर लेलनि । कुल समेत जग पावन केलनि ॥६॥
करमनास जल सुरसरि आबय । तकरा के नहि सीस चढ़ाबय ॥७॥
बालमीकि जपि उलटो नामे । जगत बिदित छथि ब्रह्म उपामे ॥८॥

दोहा—स्वपच सबर खस जबन जड़, अधमो कोल किरात ।
राम कहति पावन परम, होइछ भुवन बिख्यात ॥१९४॥

नहि अचरज जुग जुग चलि ऐले । ककरा बड़ रघुवीर न कैले ॥१॥
राम नाम महिमा सुर गाबथि । सुनि सुनि अवध लोक सुख पाबथि ॥२॥
राम सखहिँ मिलि भरत सप्रेमे । पूछल कुसल सुमंगल छेमे ॥३॥
लखि कय भरतक सील सिनेहे । तहि छन भेला निपाद बिदेहे ॥४॥
सकुच सिनेह मोद मन गाढ़े । चितथि भरत केँ येक टक ठाढ़े ॥५॥
धैरज धय पद बंदि बहोरी । बिनय सप्रेम करथि कर जोरी ॥६॥
कुसल मूल पद पंकज देखल । हम तिहुकाल कुसल निज लेखल ॥७॥
प्रभु अपनेक अनुग्रह भावे । हमर कोटि कुल मंगल आवे ॥८॥

दोहा—बुझि कय मम करतूति कुल, प्रभु महिमा जिय गूनि ।
जे न भजथि रघुवीर पद, जग विधि बंचल हूनि ॥१९५॥

कपटी कायर कुमति कुजाती । लोक वेद बाहर सब भाँती ॥१॥
अपन बनौल राम जखनहिँ सौँ । भेलहुँ भुवन भूपन तखनहिँ सौँ ॥२॥
सुनि कय बिनय प्रीति बड़ पाबी । भरत अनुज पुनि मिलला आबी ॥३॥
सादर कहि निपाद निज नामे । सब रानी केँ कयल प्रनामे ॥४॥
जानि लखन सम देथि असीसे । जिबू सुखी सय लाख बरीसे ॥५॥
लखि निपाद केँ पुर नर नारी । भेल सुखी जनि लखन निहारी ॥६॥
कहल इ भल जीवन फल पाओल । रामभद्र भुज गहि उर लाओल ॥७॥
सुनि निपाद भाग्यक उतकरषे । सबके ँ लय चलला ह सहरषे ॥८॥

दोहा—संकेतल सेवक सकल, चलल स्वामि रुखि पावि ।
घर तरु तर सर बाग बन, वास रचल भल आवि ॥१९६॥

श्रृंगबेरपुर देखल जखने । नेहें सिथिल भरत तनु तखने ॥१॥
सोभ निपाद कान्ह कर देने । जनि अनुराग बिनय तनु धेने ॥२॥
येहि बिधि भरत सैन्य सब संगे । देखल जाय जग पावनि गंगे ॥३॥
रामघाट कें कयल प्रनामे । भेला मगन जनि भेंटला रामे ॥४॥
करथि प्रनाम नगर नर नारी । मुदित ब्रह्ममय बारि निहारी ॥५॥
मज्जन कय माँगथि बरदाने । रामचंद्र पद प्रीति महाने ॥६॥
भरत कहल सुरसरि तव रेनू । सबहिँ सुखद सेबक सुर धेनू ॥७॥
जोरि पानि बर माँगी एहे । सीय राम पद सहज सिनेहे ॥८॥

दोहा—येहि बिधि मज्जन भरत कय, गुरु अनुसासन पाय ।
जानि नहैली माय सब, चलला बास लेआय ॥१६७॥

जहँ तहँ सब जन डेरा केलनि । सभक पुछारि भरत कय लेलनि ॥१॥
गुरु सेबा कय अनुमति पाओल । सानुज राम माय लग धाओल ॥२॥
पैर जाँति कहि बच मधु सानल । भरत सकल जननी सनमानल ॥३॥
भायहिँ माय टहल सुनभा कय । संग निषादहिँ लेल बजा कय ॥४॥
धय सखाक कर चलला संगे । नेह अपार सिथिल सब अंगे ॥५॥
पूछथि सखहिँ से ठाम देखाऊ । दृग, मन जरनि कनेक मेटाऊ ॥६॥
जहँ सिय राम लखन निसि सयने । कहइत नोर भरल तनि नयने ॥७॥
भरत बचन सुनि भेल बिषादे । गेला ततय लय तुरत निषादे ॥८॥

दोहा—रघुवर जहि सुचि सिंसुपा, तर कयलनि बिश्राम ।
अति सिनेह सादर भरत, कयलनि दंड प्रनाम ॥१६८॥

कुसक सेज लखि ललित ललामे । कय परदच्छिन कयल प्रनामे ॥१॥
चरन रेख रज आँजल आँखी । बढ़ल प्रीति अति होअय न भाखी ॥२॥
कनक बिंदु देखल दुइ चारी । सिय सम गुनि राखल सिर धारी ॥३॥
सजल बिलोचन हृदय गलानी । कहथि सखा सौं सुंदर बानी ॥४॥
श्री हत सीय बिरह दुति हीने । जथा अवध नर नारि मलीने ॥५॥
पिता जनक दी पटतर कनिका । करतल भोग जोग जग जनिका ॥६॥

ससुर भानुकुल भानु नरेसे । जनिका देखि सिहाथि सुरेसे ॥७॥
प्राननाथ रघुनाथ गोसाईँ । जे बड़ होय से राम बड़ाई ॥८॥

दोहा—पति देवता सुतीय मनि, सीयक खरतरि देखि ।
फाटय हृदय न हहरि सिव, पवि सौँ कठिन बिसेखि ॥१९९॥

लालन जोग लखन लघु जेहन । भाइ त्रिकाल न होयत एहन ॥१॥
पुरजन प्रिय पितु मातु दुलारू । सिय रघुवीर प्रान प्रिय चारू ॥२॥
मधुर सोभाव सरल मृदु गाते । कहियो ल'गल न तपत बसाते ॥३॥
से बन सहथि विपति सब भाँती । निदरल कोटि कुलिस ई छाती ॥४॥
राम जनमि जग कयल उजागर । रूप सील सुख सब गुन सागर ॥५॥
पुरजन परिजन गुरु पितु माता । राम सोभाव सकल सुख दाता ॥६॥
राम बड़ाइ नैरियो करइछ । बाजब मिलब बिनय मन हरइछ ॥७॥
सारद कोटि कोटि सत सेखा । कय न सकथि प्रभु गुन गन लेखा ॥८॥

दोहा—सुख सरूप रघुवंस मनि, मंगल मोद निधान ।
कुस बिछाय से सुतथि महि, विधि गति अति बलवान ॥२००॥

राम न दुख कहियो सुनि पौलनि । जीवन तरु इव भूप जोगौलनि ॥१॥
पलक नयन फनि मनि जहि भाँती । जोगबथि जननि सकल दिन राती ॥२॥
से बन घुमथि आब पदचारी । कंद मूल फल फूल अहारी ॥३॥
धिक केकयी अमंगल मूले । भेली प्रान प्रियतम प्रतिकूले ॥४॥
हम धिक धिक अघ उदधि अभागी । सब उत्पात भेल जहि लागी ॥५॥
कुल कलंक कय सृजल विधाता । स्वामिक द्रोही कयल कुमाता ॥६॥
सुनि सप्रेम बुझबैछ निपादे । नाथ करी किय ब्यर्थ विपादे ॥७॥
रामक प्रिय अहँ तव प्रिय रामे । ई निस्चय दोपी विधि बामे ॥८॥

छंद—विधि बाम करनी कठिन जननी कैँ बताहि बनाओले ।
पुनि पुनि अहिँक प्रभु कत बखान करैत राति बिताओले ॥
तुलसी न अहँ सम राम प्रिय क्यो हम सपथ खा कय कही ।
परिनाम मंगल जानि सब हिय बीच रहु धीरज गही ॥

सोरठा—अंतरजामी राम, सकुच सप्रेम कृपायतन।
चलू करू बिश्राम, ई बिचार दृढ़ आनि मन ॥२०१॥

सखा बचन सुनि उर धय धीरे। बास गेला सुमिरति रघुबीरे ॥१॥
ई सुधि पाबि नगर नर नारी। चलल बिलोकय आरत भारी ॥२॥
कय परिकरमा करय प्रनामे। देअय केकयिहिँ दोष निकामे ॥३॥
पुनि पुनि भरय बिलोचन बारी। बाम बिधातहिँ दै अछि गारी ॥४॥
एक सराहय भरत सिनेहे। क्यो कह नृपति निमाहल नेहे ॥५॥
निंदय निजहिँ सराहि निषादे। के कहि सकय बिमोह बिषादे ॥६॥
यहि बिधि राति लोक सब जागल। भिनसर पार करय सब लागल ॥७॥
गुरु केँ चढ़ा नाव मन हरनी। सब मायहिँ चढ़ौल नव तरनी ॥८॥
घड़ियहिँ चारि भेला सब पारे। कयलनि सबहुक भरत सम्हारे ॥९॥

दोहा—प्रातक्रिया कय मातु पद, बंदि गुरुहिँ सिर नाय।
पुनि निषाद गन आगु कय, देलनि कटक चलाय ॥२०२॥

अगुआ पति निषाद केर कैलनि। मातु पालकी सकल चलैलनि ॥१॥
संग सत्रुहन केँ कय देलनि। बिप्र समेत गमन गुरु केलनि ॥२॥
स्वयं सुरसरिहिँ कयल प्रनामे। सुमिरल लखन सहित सिय रामे ॥३॥
पैरहिँ भरत आगु पथ धेलनि। कोतल डोरिआओल सँग गेलनि ॥४॥
कहथि सुसेवक बारंबारे। होउ अहँ नाथ अस्व असबारे ॥५॥
पैरहिँ राम गेला धय बाटे। मम हित की हय गय रथ ठाटे ॥६॥
सिर भर जाइ उचित ई मोरे। सब सौँ सेवक धरम कठोरे ॥७॥
देखि भरत गति सुनि मृदु बानी। सब सेवकगन गलय गलानी ॥८॥

दोहा—भरत होइत तेसर पहर, कयल प्रबेस प्रयाग।
अनुखन रटइत राम सिय, उमगि उमगि अनुराग ॥२०३॥

पद मे फोका झलकय केहन। पंकज कोस ओस कन जेहन ॥१॥
भरत ऐल छथि पैरहिँ आजे। भेल दुखित सुनि सकल समाजे ॥२॥
लोक नहैल खबरि ई पाबी। कयल प्रनाम त्रिबेनी आबी ॥३॥
सबिधि नहाय सितासित पानी। देल दान बिप्रहिँ सनमानी ॥४॥

देखइत स्यामल धवल तरंगे । भरत जोड़ल कर पुलकित अंगे ॥५॥
सकल काम प्रद तीरथरावे । वेद बिदित जग प्रगट प्रभावे ॥६॥
माँगी भीख त्यागि निज धरमे । आरत करय न कोन कुकरमे ॥७॥
बुझि जिय येहन सुजान सुदानी । सफल करथि जग जाचक बानी ॥८॥

दोहा—अरथ न धरम न काम रुचि, चाह न गति निरबान ।
जनम जनम रति राम पद, ई बरदान न आन ॥२०४॥

जानथु राम कुटिल कय मोही । लोक कहओ गुरु स्वामी द्रोही ॥१॥
सीताराम चरन रति मोरे । अनुदिन बढ़ओ अनुग्रह तोरे ॥२॥
जलद जनम भरि सुरति बिसारओ । जचइत जल पबि पाहन मारओ ॥३॥
चातक घटय रटनि घट जखने । बढ़य प्रेम सब बिधि भल तखने ॥४॥
कनक कांति बढ़ जरने जहिना । प्रिय पद प्रेम निबहने तहिना ॥५॥
भरत बचन सुनि माँझ त्रिबेनी । भेल मृदुल धुनि मंगल देनी ॥६॥
तात साधु अहँ सकल प्रकारे । राम चरन अनुराग अपारे ॥७॥
बृथा गलानि न करिय कनेको । अहँ सम रामक प्रिय नहि एको ॥८॥

दोहा—तन पुलकल हिय हरष सुनि, बेनि बचन अनुकूल ।
भरत धन्य कहि धन्य सुर, हरषित बरषथि फूल ॥२०५॥

प्रमुदित तीरथ राज निबासी । बैखानस बटु गृही उदासी ॥१॥
कहथि परस्पर मिलि दस पाँचे । भरत सिनेह सील सुचि साँचे ॥२॥
सुनइत ललित राम गुन ग्रामे । अयला भरद्वाज जहि ठामे ॥३॥
दंड प्रनाम करति मुनि देखल । मूरतिवंत भाग्य निज लेखल ॥४॥
दौड़ि उठाय लगा उर लेलनि । दय आसीस कृतारथ केलनि ॥५॥
बैसला सिर नमि आसन पा कय । चहथि सकुच गृह ढुकी पड़ा कय ॥६॥
मुनि पुछता किछु ई बड़ सोचे । बजला रिषि लखि सील सँकोचे ॥७॥
भरत हाल हम पहिनहिँ बूझल । बिधि करतब पर किछु नहि बस चल ॥८॥

दोहा—जिय गलानि अहँ जुनि करू, मायक करनी हेरि ।
तात कैकयिक दोष नहि, गिरा गेली मति फेरि ॥२०६॥

इहो कहथि क्यो कहत न नीके । लोक वेद बुध मत दुहु थीके ॥१॥
तात गाबि तव निरमल महिमा । लोक वेद दुहु पाओत गरिमा ॥२॥
लोक वेद सम्मति सब गावय । पितु जहि देथि राज से पावय ॥३॥
तोहि बजाय भूपति सत निष्ठे । दितथि राज सुख धरम प्रतिष्ठे ॥४॥
राम गमन बन अनरथ मूले । जे सुनि भेल विस्व भरि सूले ॥५॥
बिधि बस रानी ज्ञान गमौलनि । कय कुचालि अंतहु पछतौलनि ॥६॥
ततहु दोप तव कह किछु जे टा । अधम असाधु मूढ़ थिक से टा ॥७॥
करितहुँ राज तदपि नहि दोपे । होइत राम कें सुनि संतोषे ॥८॥

दोहा--कयल आब अति भरत भल, ई मत अहँ अनुकूल ।
रघुवर चरन सिनेह जग, सकल सुमंगल मूल ॥२०७॥

से अहाँक धन जीवन प्राने । भूरि भाग के अहँक समाने ॥१॥
ई अहँ हित नहि अचरज ताता । दसरथ सुवन राम प्रिय भ्राता ॥२॥
सुनू भरत रघुवर कैर मन मे । प्रेम पात्र अहँ सम न भुबन मे ॥३॥
राम लखन सीतहिँ अति प्रीती । तोहि सराहति निसि गेल बीती ॥४॥
बुझल नहाइत मरम प्रयागे । मगन जाथि भय तव अनुरागे ॥५॥
रघुवर नेह अहाँ पर तेहने । जड़ नर सुख जीवन जग जेहने ॥६॥
ई नहि रघुवीरक बड़ काजे । प्रनत कुटुंब पाल रघुराजे ॥७॥
अहँ तौँ भरत हमर मत एहे । धयल देह जनि राम सिनेहे ॥८॥

दोहा--भरत अहाँक कलंक ई, मोहि सब कें उपदेस ।
राम भगति रस सिद्धि हित, भेल ई समय गनेस ॥२०८॥

तात बिमल नव विधु जस तोरे । रघुवर किंकर कुमुद चकोरे ॥१॥
हैत न कहियो अस्त न ऊने । उदित जगत नभ दिन दिन दूने ॥२॥
कोक त्रिलोक प्रीति अति करते । प्रभु प्रताप रवि छबि नहि हरते ॥३॥
निसि दिन सतत सभक सुख सरसत । कैकयि करतव राहु न गरसत ॥४॥
राम सप्रेम अमिय परिपूरे । गुरु अपमान दोप सौँ दूरे ॥५॥
पिबथु अघा सब रामक भगते । कयलहुँ सुलभ सुधा अहँ जगते ॥६॥

देल भगीरथ सुरसरि आनी । सुमिरति सकल सुमंगल खानी ॥७॥
जाय न कहले दसरथ गुनगन । अधिक कतय जग मे नहि हुनि सन ॥८॥

दोहा—जनिक सिनेह सँकोच बस, राम प्रगटला आय ।
कहियो जे हर हिय नयन, लखि सकले न अघाय ॥२०९॥

कीरति विधु अहँ कयल अनूपे । जहँ बस राम प्रेम मृग रूपे ॥१॥
व्यर्थ तात मन ग्लानि करै छी । पारस लहि दारिदें डरै छी ॥२॥
सुनू भरत हम असत न भाखी । बनहिँ करी तप राग न राखी ॥३॥
सब साधनक सुफल जे गाओल । लखन राम सिय दरसन पाओल ॥४॥
ताहि फलक फल दरसन तोरे । सहित प्रयाग भाग सुभ मोरे ॥५॥
भरत धन्य अहँ जग जस लेले । ई कहि प्रेम मगन मुनि भेले ॥६॥
सुनि मुनि वचन सभासद हरषल । साधु सराहि सुमन सुर बरषल ॥७॥
धन्य धन्य धुनि गगन प्रयागे । सुनि सुनि भरत मगन अनुरागे ॥८॥

दोहा—पुलक गात हिय राम सिय, सजल सरोरुह नैन ।
कय प्रनाम मुनि मंडलहिँ, बजला गदगद बैन ॥२१०॥

मुनि समाज ओ तीरथ राजे । साँचहुँ सपथें परम अकाजे ॥१॥
यहि थल जौँ किछु करब बहाने । अघ नीचता येहन नहि आने ॥२॥
अहँ सरवज्ञ कही विनु लाथे । उर अन्तरजामी रघुनाथे ॥३॥
मोहि न माइक करनिक सोचे । बरु जग नीच कहओ नहि रोचे ॥४॥
ई डर नहि बिगड़त परलोके । मोहि नहि पिता मरनहुक सोके ॥५॥
सुकृत सुजस त्रिभुवन चमकाओल । लछुमन राम सरिस सुत पाओल ॥६॥
राम बिरह छनभंगुर अंगे । तेजल नृप की सोच प्रसंगे ॥७॥
राम लखन सिय घूमथि बन मे । मुनि बेपें पनही न चरन मे ॥८॥

दोहा—अजिन बसन फल असन महि, सयन ओछा कुसपात ।
बसि तरुतर नित सहथि हिम, आतप बरषा बात ॥२११॥

येहि दुखदाह दहय नित छाती । भूख न बासर निंद न राती ॥१॥
येहि कुरोग औषध नहि एको । थकलहुँ मन जग सोधि कतेको ॥२॥

माय कुमत अघमूल कमारे । मम हित रचलन्हि बसिला धारे ॥३॥
कलि कुकाठ केर कयल कुजंत्रे । गाड़ि अवधि भरि कठिन कुमंत्रे ॥४॥
से मम हित कुठाठ ई ठाठल । सब जग बरह बाट कय बाँटल ॥५॥
फिरता राम कुजोग इ नसते । आन उपाय अवध नहि बसते ॥६॥
भरत वचन सुनि मुनि सुख पैलनि । बहु बिधि सबहु प्रसंसा कैलनि ॥७॥
तात करू जुनि सोच बिसेखी । सब दुख नसत राम पद देखी ॥८॥

दोहा—**मुनि प्रबोधि कह होउ अहँ, पाहुन प्रेम अधार ।**
कंद मूल फलफूल मम, कृपया करु स्वीकार ॥२१२॥

सुनि मुनि बचन भरत हिय सोचे । कुसमय भेल कठिन संकोचे ॥१॥
बुझि कय गुरु गुरु गिरा बहोरी । चरन बंदि बजला कर जोरी ॥२॥
करी अहँक अनुमति धय माथे । परम धरम ई थिक मम नाथे ॥३॥
भरत बचन मुनिबर मन भाओल । सुचि सेवक सिख निकट बजाओल ॥४॥
भरतक पहुनइ करतब थीके । कंद मूल फल आनह नीके ॥५॥
नाथ बेस कहि माथ झुका कय । निज निज काजेँ गेल हरषा कय ॥६॥
मुनि सोचथि बड़ पाहुन देबा । जत गोट देव चही तत सेबा ॥७॥
सुनइत ऐली जत जे रिधि सिधि । दिय निदेस मुनि हम की करु बिधि ॥८॥

दोहा—**राम बिरह ब्याकुल भरत, सानुज सहित समाज ।**
कय पहुनाइ हटाउ श्रम, कहल मुदित मुनिराज ॥२१३॥

रिधि सिधि सिर धय मुनिबर बानी । भागवंति निज केँ अनुमानी ॥१॥
कहथि परसपर सिधि संघाता । अतुलित अतिथि राम लघुभ्राता ॥२॥
मुनि पद बंदि करू से आजे । होथि सुखी सब राज समाजे ॥३॥
ई कहि रचल रुचिर गृह नाना । जे लखि सकुचय देव विमाना ॥४॥
राखल भोग बिभूति बिसेखी । तरसथि सुरगन जकरा देखी ॥५॥
दासी दास बस्तु सब लेने । जोगवति रहथि मने मन देने ॥६॥
सिधि ओरिओल साज सब पल मे । जे सुख सपनहुँ नहि सुरथल मे ॥७॥
प्रथम बास देल सबकेँ तेहन । सुंदर सुखद जकर रुचि जेहन ॥८॥

दोहा--तखन सपरिजन भरत कैँ, रिषिवर आज्ञा देल।
विधि बिसमय दायक बिभव, मुनिक तपोबल भेल ॥२१४॥

जखन भरत मुनि महिमा देखल। लोकप लोक तुच्छ कय लेखल ॥१॥
सुख समाज नहि होअय बखानी। बिसरथि बिरति देखि कय ज्ञानी ॥२॥
आसन सयन सुबस्त्र बिताना। बन बाटिका बिहग मृग नाना ॥३॥
सुरभि फूल फल अमिय समाने। बिमल जलासय बिबिध बिधाने ॥४॥
असन पान सुचि मधुर अमिय सन। देखि सकल सकुचाथि जमी सन ॥५॥
सुर सुरभी सुरतरुहु सबहु कैँ। लखि अभिलाष सुरेस सचिहु कैँ ॥६॥
मधु रितु त्रिविध पवन सुखकारी। सब कैँ सुलभ पदारथ चारी ॥७॥
स्रक चंदन बनितादिक भोगे। देखि हरष बिसमय बस लोगे ॥८॥

दोहा--संपति चकबी भरत चक, मुनि निदेस कर खेल।
तहि निसि आश्रम पिंजरा, राखल भिनसर भेल ॥२१५॥

मास पारायण, विश्राम--१९

कयल निमज्जन तीरथ राजे। मुनि प्रनाम कय सहित समाजे ॥१॥
रिषि आयसु असीस सिर राखल। कय दंडबत बिनय बहु भाखल ॥२॥
पथ गति कुसल सबहु सँग लेने। चलला चित्रकूट चित देने ॥३॥
रामसखा कर आश्रय लेने। जनि अनुराग चलय तन धेने ॥४॥
नहि पद त्रान सीस नहि छाया। प्रेम नेम ब्रत धरम अमाया ॥५॥
लखन राम सिय पंथ कहानी। पूछथि सखा कहथि मृदु बानी ॥६॥
राम बास थल बिटप निहारी। उर अनुराग न भेल सम्हारी ॥७॥
देखि दसा सुर बरषथि फूले। भेल महि मृदु मग मंगल मूले ॥८॥

दोहा--छाहरि कयने जाय घन, सुखद बसात बहैछ।
भेल न मग रामक तेहन, जेहन भरत कैँ हैछ ॥२१६॥

पथ जड़ चेतन जीव जते जे। प्रभु जहि लखल प्रभुहिँ लख जे जे ॥१॥
से सब भेला परम पद जोगे। नसल भरत दरसन भव रोगे ॥२॥

भरतक हित ई बात न भारी । सुमिरथि राम जाहि उर धारी ॥३॥
एक बेर जे राम उचारथि । अपनहुँ तरथि लोकके ँ तारथि ॥४॥
भरत रामप्रिय पुनि लघु भ्राता । कियक न हो मग मंगल दाता ॥५॥
सिद्ध साधु मुनि करथि बखाने । भरत निरखि हिय हरख महाने ॥६॥
देखि प्रभाव सुरेसहि ँ सोके । अधमहि ँ अधम भलहि ँ भल लोके ॥७॥
गुरु सौ ँ कहल करू प्रभु तेना । भे ँट भरत रामक रुक जेना ॥८॥

दोहा—राम सँकोची प्रेम बस, भरत सुप्रेम पयोधि ।
बनल बात बिगड़य चहय, करू जतन छल सोधि ॥२१७॥

सुरगुरु मुसकेला सुनि बयने । सहस नयन के ँ बुझि बिनु नयने ॥१॥
कह गुरु तजु छल छोभ बेकारे । येतय कपट कय होयब देखारे ॥२॥
माया पति सेबक सौ ँ माया । कैने उनटि पड़त सुर राया ॥३॥
पहिने कयल राम रुखि जानी । करति कुचालि आब बड़ हानी ॥४॥
सुनु सुरेस रघुनाथ सोभावे । निज अपराध क्रोध नहि आबे ॥५॥
जे अपराध भगत केर करते । राम रोष पावक से जरते ॥६॥
लोको वेद बिदित इतिहासा । ई महिमा जानथि दुरबासा ॥७॥
रामहि ँ भरतक सम प्रिय छनि के । जग जप राम राम जप जनिके ॥८॥

दोहा—मनहुँ न आनू अमरपति, रघुवर भगत अकाज ।
अजस लोक पर लोक दुख, दिन दिन सोक समाज ॥२१८॥

मम उपदेस अमर पति मानू । रामहि ँ सेबक परम प्रिय जानू ॥१॥
सेबक सेबा सौ ँ सुख मानथि । सेबक बैर बैर बड़ जानथि ॥२॥
जद्यपि सम नहि राग न रोषे । गहथि न पाप पुन्य गुन दोषे ॥३॥
करम प्रधान रचित संसारे । पाबय फल करमक अनुसारे ॥४॥
तदपि करथि सम बिषम बिहारे । भगत अभगत हृदय अनुसारे ॥५॥
अगुन अलेप अमान एक रस । राम सगुन छथि भगत प्रेम बस ॥६॥
राम सदा सेबक रुचि राखथि । वेद पुरान साधु सुर भाखथि ॥७॥
छाड़ु कुटिलता ई बुझि मन मे । राखु प्रीति सुचि भरत चरन मे ॥८॥

दोहा--रामभगत पर हित निरत, पर दुख दुखी दयाल ।
भगत सिरोमनि भरत सौँ, जुनि डेराउ सुरपाल ॥२१६॥

सत्यसंध प्रभु सुर हितकारी । भरत राम अनुमति अनुसारी ॥१॥
स्वारथ बस अहँ बिकल महाने । भरत दोष नहि तव अज्ञाने ॥२॥
सुनि सुरवर सुरगुरु बर बानी । प्रमुदित भेला नसल मन ग्लानी ॥३॥
कय कय फूलक बरषा सुरपति । भरत सोभाव सराह मुदित मति ॥४॥
येहि विधि चलल भरत पथ जाइछ । दसा देखि मुनि सिद्ध सिहाइछ ॥५॥
जखन राम कहि लेथि उसासे । मानु प्रेम उमड़नि चहु पासे ॥६॥
द्रवय बचन सुनि कुलिस पखाने । पुरजन प्रेम कें करत बखाने ॥७॥
बीच बास कय जमुना तीरे । अयला लखि उमड़ल दृग नीरे ॥८॥

दोहा--रघुवर बरन बिलोकि बर, बारि समेत समाज ।
उबडुब बिरहक बारि निधि, चढ़ल बिबेक जहाज ॥२२०॥

तहि दिन कयल जमुन तट बासे । भेल समय सम सबहिँ सुपासे ॥१॥
रातियें घाट घाट सौँ तरनी । आयल अगनित होअय न बरनी ॥२॥
एकहिँ खेप पार भेल भोरे । गुह सेवा सौँ मोद बिभोरे ॥३॥
चलल नहाय नमा सरि माथे । बंधु दुहू निषाद पति साथे ॥४॥
मुनिवर बाहन आगु बिराजे । चलय पाछु भय राज समाजे ॥५॥
तहि पाछाँ पयरे दुहु भ्राता । सादा बसन भुषन बर गाता ॥६॥
सेवक सुहृद सचिब सुत साथे । सुमिरथि लखन सीय रघुनाथे ॥७॥
जहँ जहँ राम बास बिश्रामे । तहँ तहँ करथि सप्रेम प्रनामे ॥८॥

दोहा--मग बासी नर नारि सुनि, धाम काम तजि धाव ।
देखि सरूप सिनेह बस, मुदित जनम फल पाव ॥२२१॥

कहय सप्रेम परसपर काने । सखि ई राम लखन की आने ॥१॥
बय बपु बरन रूप हे बहिना । सील सिनेह चालि सब तहिना ॥२॥
बेष न से सखि सीय न संगे । आगू अनी चलय चतुरंगे ॥३॥
नहि प्रसन्न मुख मानस खेदे । सखि संदेह होअय येहि भेदे ॥४॥

तकर तरक मानल सब नारी । कहल तोहर सन के बुधियारी ॥५॥
तहि सराहि तनि बच सच मानी । बाजलि दोसरि मधुरिम बानी ॥६॥
कहि सप्रेम सब कथा प्रसंगे । जहि विधि राम राज रस भंगे ॥७॥
त्यागलि भरत सराहय सेहे । सील सोभाव सुभाग सिनेहे ॥८॥

दोहा--फल खाइत पैरें चलति, तेजि पितुक देल राज ।
जाथि मनाबय रघुवरहिँ, भरत सरिस के आज ॥२२२॥

भरतक भगति बंधुता करनी । कहइत सुनइत दुख अघ हरनी ॥१॥
सखि सब अलप कहब जत बाता । किय न येहन हो रामक भ्राता ॥२॥
हम सब सानुज भरतहिँ देखी । भेलहुँ जुबति बिच धन्य बिसेखी ॥३॥
सुनि गुन लखि गति बिलख बहूते । केकयि जननि जोग नहि पूते ॥४॥
क्यो कह रानिक दोष न बहिना । बिधि सब कयल हमर भय दहिना ॥५॥
कहँ हम लोक वेद बिधि हीने । लघु तिय कुल करतूति मलीने ॥६॥
बसी कुदेस कुगाम कुबामे । कहँ ई दरस पुन्य परिनामे ॥७॥
ई अचरज आनँद प्रति ग्रामे । जनि जनमल सुरतरु मरु ठामे ॥८॥

दोहा--भरतक दरसन सौँ जगल, सब मग लोकक भाग ।
सिंहल बासिहिँ भेल जनि, विधि बस सुलभ प्रयाग ॥२२३॥

निज गुन सहित राम गुन गाथा । सुनति जाथि सुमिरति रघुनाथा ॥१॥
तीरथ मुनि आश्रम सुर धामे । निरखि निमज्जथि करथि प्रनामे ॥२॥
मन मन मँगइत छथि बर एहे । सीय राम पद पदुम सिनेहे ॥३॥
मिलय किरात कोल बन बासी । बैखानस बटु जती उदासी ॥४॥
जनि तनि पद नमि पुछथि सिनेही । कोन बन लखन राम बैदेही ॥५॥
से से प्रभु केर हाल जनाबय । भरतहिँ देखि जनम फल पाबय ॥६॥
जे क्यो कहय कुसल हम देखल । राम लखन सम प्रिय तहि लेखल ॥७॥
येहि विधि सब सौँ पुछथि सुबानी । सुनथि राम बनवास कहानी ॥८॥

दोहा--तहि निसि रहि चलला उषे, सुमिरि हीय रघुनाथ ।
राम दरस हित लालसा, भरत सरिस सब साथ ॥२२४॥

मंगल सगुन सबहिँ हो भारी । फड़कय बाँहि नयन सुखकारी ॥१॥
भरतहिँ सहित समाज उछाहे । भेंटता राम नसत दुख दाहे ॥२॥
करति मनोरथ जनि मन जेहे । जाथि अघायल सुरा सिनेहे ॥३॥
सिथिल अंग पग डगमग पड़इछ । बिह्वल वचन प्रेम बस कहइछ ॥४॥
राम सखा तहि समय देखाओल । सैल सिरोमनि सहज सोहाओल ॥५॥
जकरा निकट पयस्विनि तीरे । सीय समेत बसथि दुहु बीरे ॥६॥
देखि करथि सब दंड प्रनामे । कहि जय जानकिजीवन रामे ॥७॥
प्रेम मगन सब राज समाजे । जनि घुरि पुर चलला रघुराजे ॥८॥

दोहा—भरत प्रेम तखनुक जँहन, बरनि सकथि नहि सेषु ।
कविहिँ अगम जनु ब्रह्म सुख, अह मम मलिन जनेषु ॥२२५॥

रघुवर नेह सिथिल सब भेला । दिनकर ढड़ति कोस दुइ गेला ॥१॥
जल थल देखि बास निसि केलनि । रघुपति प्रिय भोरे पथ धेलनि ॥२॥
ओतय राम जागल निसि सेपे । सिय सपना ई देखल बिसेपे ॥३॥
सहित समाज भरत अयलाहे । तापित नाथ वियोगक धाहे ॥४॥
दीन दुखी सब परम मलाने । देखल सासु रूप किछु आने ॥५॥
सुनि सिय सपन भरल जल लोचन । भेला सोच बस सोच बिमोचन ॥६॥
लखन सपन ई नीक न जानू । क्यो बड़ असुभ सुनाओत मानू ॥७॥
कहि केलनि सानुज असनाने । हर पुजि केलनि साधु सनमाने ॥८॥

छंद--सनमानि सुरमुनि बंदि बैसल उतर दिसि हेरल कने ।
नभ धूरि ऐल पड़ाय प्रभु आश्रम बिकल खग मृग गने ॥
तुलसी निरखि उठलाह कारन कोन प्रभु सचकित मने ।
सब खबरि कोल किरात दौड़ल आबि देलक तहि छने ॥

सोरठा—सुनइत मंगल बैन, मन प्रमोद अति पुलक तन ।
सरद सरोरुह नैन, तुलसी भरल सिनेह जल ॥२२६॥

भेला सोच बस पुनि सियरसने । कारन कोन भरत आगमने ॥१॥
पुनि येक आबि कहल तहि काले । संग सेन चतुरंग बिसाले ॥२॥

से सुनि राम भेलाह ससोचे । यत पितु बच ओत बंधु सँकोचे ॥३॥
भरत सोभाव जानि निज चीते । प्रभु न पाव चित हित किछु थीते ॥४॥
समाधान भेल ई पुनि जानी । भरत कहल मे छथि सुठि ज्ञानी ॥५॥
प्रभु हिय छोभ लखन लखि भारी । कहल समय सम नीति बिचारी ॥६॥
बिनु पुछनहिँ प्रभु बाजी बानी । सेवक अवसर ढीठ न जानी ॥७॥
अहँ सरवज्ञ सिरोमनि स्वामी । निज मति कही रही अनुगामी ॥८॥

दोहा—नाथ सुहृद सुठि सरल चित, सील सिनेह निधान ।
सब पर प्रीति प्रतीति जिय, जानी अपन समान ॥२२७॥

बिषयी जन प्रभुता लह जखने । मूढ़ मोह बस प्रगटय तखने ॥१॥
भरत नीति रत साधु सुजाने । प्रभु पद प्रीति जनैछ जहाने ॥२॥
सेहो आइ राज पद पा कय । येला धरम मरजाद गमा कय ॥३॥
कुटिल कुबंधु कुअवसर ताकी । जानि राम बनवास येकाकी ॥४॥
कय कुमंत्र मन साजि समाजे । अयला करय अकंटक राजे ॥५॥
कोटि प्रकार कुटिलपन जोरी । येला बंधु दुहु सैन बटोरी ॥६॥
जौँ जिय कपट कुचालि न रखितथि । किय हय गय रथ सजि धजि अबितथि ॥७॥
ब्यर्थ भरत केँ दोष लगाबी । जग बौराय राज पद पाबी ॥८॥

दोहा—ससि गुरु तिय गामी नहुष, चढ़ल भूमिसुर जान ।
लोक वेद सौँ बिमुख भेल, अधम न बेनु समान ॥२२८॥

सहसबाहु सुरनाथ त्रिसंकू । देल राज मद सबहिँ कलंकू ॥१॥
कयल उपाय भरत ई ठीके । रिपु रिन रंच न राखब नीके ॥२॥
भरत एक ई अनुचित ठानल । बुझि असहाय राम अपमानल ॥३॥
बूझि पड़त से आइ बिसेखी । समर सरोष राम मुख पेखी ॥४॥
येतबा कहति नीति रस भूलल । पुलक ब्याज रन रस तरु फूलल ॥५॥
प्रभु पद बंदि सीस रज राखी । बजला सत्य सहज बल भाखी ॥६॥
अनुचित नाथ न मानब मोरे । भरत कयल अपकार न थोरे ॥७॥
सहू कते धरि रहु मन मारी । जखन नाथ सँग हम धनुधारी ॥८॥

दोहा—छत्रि जाति रघुकुल जनम, राम अनुग जग जान ।
लात मारलहुँ चढ़य सिर, नीच के धूरि समान ॥२२९॥

जोड़ि हाथ उठि अनुमति माँगल । मानू सुतल बीर रस जागल ॥१॥
बाँधि जटा सिर कटि कसि भाथे । साजि सरासन सायक हाथे ॥२॥
आइ राम सेवक जस लेबे । समरक सिच्छा भरतहिँ देबे ॥३॥
राम निरादर केर फल पाबी । रन थल सुतथु बंधु दुहु आबी ॥४॥
आइ बनल अछि भल सब साजे । प्रगट करब पहिलुक रिस आजे ॥५॥
करि दल दलय जेना मृगराजे । बगड़हिँ जेना लपेटय बाजे ॥६॥
तहिना भरतहिँ सेन समेते । सानुज निदरि निपातब खेते ॥७॥
संकर होथि सहायक जइयो । राम सपथ रन मारब तइयो ॥८॥

दोहा—लछुमन अति रोषेँ रडल, लखि सुनि सपथ प्रमान ।
सभय लोक सब लोकपति, चह पड़ाय लय प्रान ॥२३०॥

जग भय मगन गगन भेल बानी । लखन बाहु बल बिपुल बखानी ॥१॥
तात अहाँक प्रताप प्रभावे । के कहि सकय जानि के पावे ॥२॥
उचित कि अनुचित करतब जेटा । सोचि करी सब कह भल सेटा ॥३॥
सहसा कय पाछाँ पछताबय । श्रुति बुध कह से बुध न कहाबय ॥४॥
सुनि सुर बचन सकुचला लखने । सीयराम सनमानल तखने ॥५॥
कहलहुँ अहाँ नीति भल ताता । सब सौँ कठिन राज मद भ्राता ॥६॥
से चिखैत मातय नृप सेहे । साधु सभा नहि सेबल जेहे ॥७॥
सुनू लखन भल भरत समाने । देखल सुनल न बिधिक बिधाने ॥८॥

दोहा—भरतहिँ होयत न राज मद, बिधि हरि हर पद पाय ।
कहुँ की काँजिक बुंद सौँ, फाटि छीर निधि जाय ॥२३१॥

तम बरु करय तरुन रबि ग्रासे । बरु समाय घन मे आकासे ॥१॥
गोपद जल डूबय घटजोनी । सहज छमा बरु छोड़य छोनी ॥२॥
मोसक फूक मेरु उड़ जइयो । नृप मद भरतहिँ हैत न तइयो ॥३॥
लखन सपथ तव पितुक दोहाई । भरत सरिस सुचि सुभग न भाई ॥४॥

सगुन छीर अवगुन जल ताता । फेंटि रचथि परपंच विधाता ॥५॥
भरत हंस रवि बंस तड़ागे । जनमि कयल गुन दोष विभागे ॥६॥
गहि गुन पय तजि अवगुन बारी । जगमगौल जग सुजस पसारी ॥७॥
कहइत भरत सील गुन गाथे । प्रेम पयोधि मगन रघुनाथे ॥८॥

दोहा—सुनि रघुवर बच भरत पर, लखि सुर प्रीति महान ।
सकल सराहथि राम सम, के प्रभु कृपा निधान ॥२३२॥

जौँ नहि भरत जगत अवतरितथि । सकल धरम धुर भुवि के धरितथि ॥१॥
कवि कुल अगम भरत गुन गाथे । अहँ बिनु के जानय रघुनाथे ॥२॥
लखन राम सिय सुनि सुर बानी । अति सुख लहल न होअय बखानी ॥३॥
येँतय भरत सब दल मिलि ऐला । सुचि मंदाकिनि सरित नहैला ॥४॥
सरित समीप राखि सब लोगे । माँगि मातु गुरु सचिव नियोगे ॥५॥
चलला पुनि जहँ सिय रघुनाथे । लघुभ्राता निषाद पति साथे ॥६॥
माइक करनी गुनि सकुचाइछ । मन कुतर्क बहु करइत जाइछ ॥७॥
राम लखन सिय सुनि मम नामे । चल न जाथि अनतय तजि ठामे ॥८॥

दोहा—माइक मत मे जानि मोहि, कहथि जेँह से थोर ।
निज दिसि बुझि अघ दोष छमि, करता आदर मोर ॥२३३॥

जौँ तजि देथि मलिन मन जानी । जौँ सनमानथि सेवक मानी ॥१॥
हमरा सरन रामहिक पनहिक । राम सुस्वामि दोष सब जनहिक ॥२॥
जग जस भाजन चातक मीने । नेम प्रेम नित निपुन नवीने ॥३॥
चलल जाथि मग गुनइत बाते । सँकुच सिनेह सिथिल सब गाते ॥४॥
माइक करनि रहय मन मोड़ी । चलथि भगति बल धीरज धोड़ी ॥५॥
पड़ रघुपति सोभाव मन जखने । पैर उताहुल पथ बढ़ तखने ॥६॥
भरत दसा तहि अवसर केहन । जल प्रवाह जल अलि गति जेहन ॥७॥
लखि कय भरतक सोच सिनेहे । गुह तहि समय भेलाह विदेहे ॥८॥

दोहा—लागल होबय सुभ सगुन, सुनि गुनि कहथि निषाद ।
हैत हरष चिंता हटत, पुनि परिनाम विषाद ॥२३४॥

सेवक वचन राखि बिस्वासे । भरत पहुँचला आश्रम पासे ॥१॥
भरत सैल बन देखल केना । मुदित छुधित लहि भोजन जेना ॥२॥
ईति भीति जनि प्रजा दुखारी । त्रिबिध ताप पीड़ित ग्रह भारी ॥३॥
जाय सुराज सुदेसहिँ जहिना । होइछ सुखी भरत गति तहिना ॥४॥
राम वास बन संपति केहन । पाबि सुराज प्रजा सुख जेहन ॥५॥
सचिव विराग विवेक नरेसे । बिपिन सोहाओन पाबन देसे ॥६॥
भट जम नियम सैल रजधानी । सांति सुमति सुचि सुंदर रानी ॥७॥
सुख संपन्न सुनृप सब अंगे । राम पदाश्रित चित्त उमंगे ॥८॥

दोहा—जीति मोह महिपाल दल, सहित बिबेक भुपाल ।
करथि अकंटक राजपुर, सुख संपदा सुकाल ॥२३५॥

बन बिच घन मुनि बास ललामे । छनि पुर नगर टोल बहु गामे ॥१॥
बिपुल बिचित्र बिहग मृग नाना । प्रजा समाज न होअय बखाना ॥२॥
गेँड़ा बाघ सुअर मृगराजे । करि बृक महिप मनोहर साजे ॥३॥
बैर बिसरि चरइछ येक संगे । जहँ तहँ मानु सेन चतुरंगे ॥४॥
झरना झरय मत्त गज गाजय । मानु नगाड़ा बहु बिधि बाजय ॥५॥
चक्क चकोर चातक सुक पिकगन । कूजय मंजु मराल मुदित मन ॥६॥
अलिगन गावय नाचय मोरे । जनि सुराज मंगल चहु ओरे ॥७॥
वेलि बिटप तृन सफल सफूले । सब समाज मुद मंगल भूले ॥८॥

दोहा—राम सैल सोभा निरखि, भरत हृदय अति प्रेम ।
तापस तप फल पाबि जनि, सुखी पूरने नेम ॥२३६॥

मास पारायण, विश्राम—२०
नवाह्न पारायण, विश्राम—५

केवट दौड़ि ऊँच थल जा कय । कहल भरत सौँ भुजा उठा कय ॥१॥
प्रभु देखू ओ बिटप बिसाले । पाकड़ि जामु रसाल तमाले ॥२॥
ओहि तरु सभक बीच बट सोभय । मंजु बिसाल देखि मन लोभय ॥३॥
नील सघन पल्लव फल लाले । छाहरि सघन सुखद सब काले ॥४॥

तिमिर अरुन रासिहिँ जनि फेटी । सुखमा सब बिधि रचल समेटी ।।५।।
प्रभु ई सब तरु सरिता तीरे । जहँ अछि रघुवर परन कुटीरे ।।६।।
तुलसी तरुवर बिबिध सुसोभित । कहुँ लछुमन कहुँ सिय कर रोपित ।।७।।
बट छाया मे बेदि बनाओल । सिय निज पानि सरोज सजाओल ।।८।।

दोहा—जतय बैसि मुनि गन सहित, नित सिय राम सुजान ।
सुनथि कथा इतिहास सब, आगम निगम पुरान ।।२३७।।

सखा बचन सुनि बिटप निहारी । उमड़ल भरत बिलोचन बारी ।।१।।
करति प्रनाम बंधु दुहु जाथी । प्रीति कहति सारद सकुचाथी ।।२।।
हरषथि निरखि राम पद अंके । पारस मनि पौलक जनि रंके ।।३।।
रज सिर धय हिय नयन लगाबथि । रघुबर मिलन सरिस सुख पाबथि ।।४।।
देखि भरत गति अकथ अतीबे । प्रेम मगन खग मृग जड़ जीबे ।।५।।
नेह बिबस गुह पथ बिसराबथि । फूल बरषि सुर सुपथ देखाबथि ।।६।।
निरखि सिद्ध साधक अनुरगला । सहज सिनेह सराहय लगला ।।७।।
जौँ महि जनम भरत नहि धरितथि । अचर सचर चर अचर के करितथि ।।८।।

दोहा—प्रेम अमिय मंदर बिरह, भरत पयोधि गँभीर ।
मथि काढ़ल सुर साधु हित, कृपासिंधु रघुवीर ।।२३८।।

गुह सह सुभग भाय दुहु तखने । घन बन ओट लखल नहि लखने ।।१।।
भरत देखल प्रभु आश्रम पावन । सकल सुमंगल सदन सुहाबन ।।२।।
प्रबिसति दुख दाबानल मेटल । जनि जोगिहिँ परमारथ भेटल ।।३।।
देखल भरत लखन प्रभु आगू । पूछल कहथि सहित अनुरागू ।।४।।
सीस जटा कटि मुनि पट बंधे । कसल तून कर सर धनु कंधे ।।५।।
बेदी पर मुनि साधु समाजे । सीय सहित राजथि रघुराजे ।।६।।
बलकल बसन जटिल तन स्यामे । जनि मुनि बेष धयल रति कामे ।।७।।
कर सरसिज धनु सायक फेरथि । हरथि जरनि जिय जहँ हँसि हेरथि ।।८।।

दोहा—लसथि मंजु मुनि मंडली, मध्य सीय रघुचंद ।
ज्ञान सभा जनि तनु धने, भगति सच्चिदानंद ।।२३९।।

सानुज सखा समेत मगन मन । बिसरल हरप सोक सुख दुख गन ॥१॥
कहइत पाहि पाहि भगवाने । भूतल खसला लकुट समाने ॥२॥
बचन सप्रेम लखन पहिचानल । भरत प्रनाम करथि जिय जानल ॥३॥
बंधु नेह रस येम्हर अथोरे । ओम्हर स्वामि सेवा बड़ जोरे ॥४॥
मिलि न होअय कय हो न निवेदन । सुकवि लखन मन गति भन एहन ॥५॥
सेवा पर मन दृढ़ कय धारी । चढ़ल पतँग जनि घीँच खेलाड़ी ॥६॥
कहथि सप्रेम नमा महि माथे । भरत प्रनाम करथि रघुनाथे ॥७॥
उठला राम सिनेह अधीरे । कहुँ पट कहुँ निषंग धनु तीरे ॥८॥

दोहा—बल सौँ उठा लगाय उर, लेलनि कृपानिधान ।
भरत राम केर मिलन लखि, बिसरल सब तन ज्ञान ॥२४०॥

मिलन प्रीति होअ कोना बखानी । कवि कुल अगम करम मन बानी ॥१॥
दुहु भ्राता अति प्रेम उमंगे । मन बुधि चिति अहमिति सुधि भंगे ॥२॥
प्रेम प्रगट कहु के कय सकते । ककर देखाउसि कवि अनुसरते ॥३॥
कवि केँ शब्द अर्थ बल साँचे । जनि तालक गति पर नट नाचे ॥४॥
रघुवर भरत सिनेह अथाहे । विधि हरि हर मन पाब न थाहे ॥५॥
कहब कुमति हम से कोन भाँती । बजत सुराग कि कतराँ ताँती ॥६॥
रघुवर भरतक मिलन निहारी । सुरगन हिय धड़कल भय भारी ॥७॥
गुरु बुझौल पुनि सुर जड़ जगला । बरषि प्रसून प्रसंसय लगला ॥८॥

दोहा—मिलि सप्रेम रिपुसूदनहिँ, मिलला केवटहिँ राम ।
भूरि भाव भेटल भरत, लखि लछुमनक प्रनाम ॥२४१॥

हुलसि अनुज सौँ मिलला लखने । उर लगौल गुह केँ पुनि तखने ॥१॥
जुगल बंधु कय मुनिक प्रनामे । हर्षित लहि आसिष अभिरामे ॥२॥
सानुज भरत उमगि अनुरागे । धय सिर सिय पद पदुम परागे ॥३॥
पुनि पुनि करति प्रनाम उठौलनि । सिर कर कमल परसि बैसौलनि ॥४॥
सीय असीस मनहिँ मन देलनि । नेह मगन तन सुधि बिसरेलनि ॥५॥
सब बिधि लखि सीतहिँ अनुकूले । गेल सोच डर हटल समूले ॥६॥

क्यो न कहय किछु पुछय न क्यो जन । निज गति बिरहित प्रेम भरल मन ॥७॥
केवट लखन धीर उर आनी । बिनमथि प्रनमि जोरि जुग पानी ॥८॥

दोहा—नाथ संग मुनिनाथ कें, सकल माय पुर लोग ।
सेवक सेनप सचिव छथि, आयल बिकल बियोग ॥२४२॥

सील सिंधु सुनि गुरु आगमने । सीय समीप राखि रिपुदमने ॥१॥
चलला राम झटकि तहि काले । धीर धरम धुर दीनदयाले ॥२॥
गुरुहिँ देखि सानुज अनुरगला । दंड प्रनाम करय प्रभु लगला ॥३॥
मुनिबर दौड़ि लगा उर लेले । भेंटला सानुज प्रेम अलेले ॥४॥
प्रेम पुलकि केवट कहि नामे । कयल दूर सौँ दंड प्रनामे ॥५॥
राम सखहिँ रिषि मिलला केना । समटथि महि लुंठित नेँह जेना ॥६॥
रघुपति भगति सुमंगल मूले । सुर सराहि नभ बरषथि फूले ॥७॥
येँहि सम निपट नीच के आने । बड़ के जगत वसिष्ठ समाने ॥८॥

दोहा—जहि लखि लखनहुँ सौँ अधिक, मिलथि मुदित मुनिराज ।
सीतापति भजनक येँहन, प्रगट प्रभाव बिराज ॥२४३॥

राम सकल जन आरत जानी । प्रभु सुजान करुना कें खानी ॥१॥
जे जेहन भावक अभिलाखल । तकर तकर तेहन रुखि राखल ॥२॥
सानुज छनभरि मे मिलि पूरे । दारुन दाह दुखक कैल दूरे ॥३॥
ई बड़ बात न रामक तेंहिना । एके सूर्य कोटि घट जेंहिना ॥४॥
मिलि केवटहिँ उमगि अनुरागे । सब पुरजन सराह निज भागे ॥५॥
राम माय केँ दुखित निहारल । जनि सुबेलि अबली हिम मारल ॥६॥
राम कैकयि सौँ मिलला पहिने । सुद्ध सोभाव भगति कत कहि ने ॥७॥
पद पड़ि पड़ि देलनि परितोषे । काल करम बिधि सिर धय दोषे ॥८॥

दोहा—मिलला रघुवर माय सौँ, कय प्रबोध परितोष ।
अंब ईस आधीन जग, ककरो दियउ न दोष ॥२४४॥

बंदल गुरुतिय पद दुहु भ्राता । सँग आइलि द्विज तिय संघाता ॥१॥
गंग गौरि सम आदर केलनि । सबहु समुद सुभ आसिष देलनि ॥२॥

गहि पद गेला सुमित्रा अंके । जनि पाओल संपति अति रंके ॥३॥
पुनि जननीक चरन दुहु भ्राते । पड़ला प्रेम बिकल सब गाते ॥४॥
अनुरागे उर अंब लगौलनि । नयन सिनेह सलिल नहबौलनि ॥५॥
तहि अवसर केर हरष बिषादे । कह कवि कोना मूक जनि स्वादे ॥६॥
मायहिँ मिलि सानुज रघुनाथे । गुरु सौँ कहल चलू मुनिनाथे ॥७॥
पुरजन पावि मुनिक आदेसे । बास लेल लखि जल थल वेसे ॥८॥

दोहा—भूसुर मंत्री माय गुरु, गनल गुथल जन साथ ।
चलला सुचि आश्रमक दिसि, भरत लखन रघुनाथ ॥२४५॥

सीय आवि मुनिबर पद नाओल । समुचित बाँछित आसिष पाओल ॥१॥
गुरुतिय मुनि तिय संग कतेके । मिलली के कह प्रेम जतेके ॥२॥
सिय सबहुक पद बंदन केलनि । सब मनबाँछित आसिष देलनि ॥३॥
सकल सासु केँ सीय निहारी । मुनलनि आँखि सहमि सुकुमारी ॥४॥
पड़लि बधिक बस मानु मराली । की कयलनि करतार कुचाली ॥५॥
ओहो सिय लखि अति दुख पावथि । सही सकल जे दैब सहावथि ॥६॥
जनकसुता पुनि उर धय धीरे । नील नलिन लोचन भरि नीरे ॥७॥
मिलली सीय सासु सौँ जखने । पाटल भरि महि करुना तखने ॥८॥

दोहा—परसि परसि पद सभक सिय, मिलली अति अनुराग ।
हृदय असीसथि प्रेम बस, पूरल रहौ सोहाग ॥२४६॥

बिकल सिनेह सील सब रानी । बैसय कहल सबहिँ गुरु ज्ञानी ॥१॥
कहि जग गति मायिक मुनिनाथे । कहलनि किछु परमारथ गाथे ॥२॥
नृपक देवपुर गमन सुनौलनि । सुनि रघुनाथ दुसह दुख पौलनि ॥३॥
मरन हेतु निज नेह बिचारी । भेला बिकल धीर धुर धारी ॥४॥
कठिन कुलिस सन सुनि कटु बानी । बिलपथि लखन सीथ सब रानी ॥५॥
सोक बिकल अति सकल समाजे । तेजल होथि नृप जनु तनु आजे ॥६॥
पुनि मुनिबर रामहिँ समुझायल । सहित समाज सुसरित नहायल ॥७॥
निरजल ब्रत प्रभु तहि दिन केलनि । मुनि कहनहु जल क्यो नहि लेलनि ॥८॥

दोहा—भोर होइत रघुनंदनहिँ, जे मुनि अनुमति देल ।
श्रद्धा भगति समेत प्रभु, सकल करम कय लेल ॥२४७॥

कय पितु क्रिया जथा श्रुति सरनी । भेला पुनीत पाप तम तरनी ॥१॥
जनिक नाम पावक अघ तूले । सुमिरति सकल सुमंगल मूले ॥२॥
सुध से होथि साधु मत एहन । तीर्थ अवाहन सुरसरि जेहन ॥३॥
सुद्ध भेला दुइ दिन गेल बीती । कहलनि गुरु सौँ राम सप्रीती ॥४॥
नाथ लोक सब निपट दुखारी । कंद मूल फल अंबु अहारी ॥५॥
सानुज भरत सचिब महतारी । लखि लागय पल युग सम भारी ॥६॥
गेल जाओ पुर सहित समाजा । अपने येतय अमरपुर राजा ॥७॥
बहुत कहल सब कयल ढिठाई । उचित होअय से करू गोसाँई ॥८॥

दोहा—धरमसेतु करुनायतन, कहब कियैक न राम ।
लोक दुखित दिन दुइ दरस, पाबि लहथि बिश्राम ॥२४८॥

राम बचन सुनि सभय समाजे । जनि जलनिधि मे बिकल जहाजे ॥१॥
सुनि गुरु गिरा सुमंगल मूले । भेल मानु मारुत अनुकूले ॥२॥
पाबन पय नहाथि तिहु काले । जे बिलोकि बिनसय अघ जाले ॥३॥
मंगल मूरति लोचन भरि भरि । हरषथि निरखि दंडवत परि परि ॥४॥
राम सैल बन लखथि ललामे । जहँ सुख सकल दुखक नहि नामे ॥५॥
झरना झरय सुधा सम बारी । त्रिबिध बसात ताप त्रय हारी ॥६॥
बिटप लता तृन अगनित जाती । फल प्रसून पल्लब बहु भाँती ॥७॥
सुंदर सिला सुखद तरु छाहे । बन छबि बरनि न क्यो सकताहे ॥८॥

दोहा—सर सरसीरुह जल बिहग, कूजय गुंजय भृंग ।
बिगत बैर बिहरैछ बन, मृग बिहंग बहुरंग ॥२४९॥

कोल किरात भील बनबासी । मधु सुचि अमिय सरिस रस रासी ॥१॥
भरि भरि परन पुटी रचि खाँटी । कंद मूल फल अंकुर आँटी ॥२॥
देथि सबहिँ कय बिनय प्रनामे । कहि कहि स्वाद भेद गुन नामे ॥३॥
लोक दाम बहु दैछ न लैअछि । फेरइत राम दोहाई दै अछि ॥४॥

कहथि सिनेह मगन मृदु बानी । मानथि साधु प्रेम पहिचानी ।।५।।
अहँ सुकृती हम नीच निपादे । पौलहुँ दरसन राम प्रसादे ।।६।।
मोहि तव दरस अगम अति तेहन । मरुमहि सुरसरि धारा जेहन ।।७।।
धन्य कयल गुह राम कृपाले । परजा चाही नेहन नृपाले ।।८।।

दोहा—ई मन बुझि लखि नेह करु, कृपा सकुच तजि दीय ।
मोहि कृतारथ करक हित, फल तृन अंकुर लीय ।।२५०।।

प्रिय पाहुन बन अयलहुँ आहाँ । सेवा जोग भाग मोर काहाँ ।।१।।
कथि गोसाइँ देव हम बनचारी । जारनि पात किरात इयारी ।।२।।
यैह हमर अछि बुझु बड़ सेवे । बासन बसन चोराय न लेवे ।।३।।
हम जड़ जीव जीवगन घाती । कुटिल कुचालि कुबुद्धि कुजाती ।।४।।
करइत अघ निसि दिवस गमावी । नहि कटि पट न पेट भरि पावी ।।५।।
सपनहु धरम बुद्धि नहि आबे । ई रघुनंदन दरस प्रभावे ।।६।।
प्रभु पद पदुम लखल जहिया सौँ । दुसह दोष दुख गेल तहिया सौँ ।।७।।
बचन सुनति पुरजन अनुरागल । तनिकर भाग सराहय लागल ।।८।।

छंद—लागल सराहय भाग सब अनुराग बचन सुनावथी ।
बाजब मिलब सियराम चरन सिनेह लखि सुख पावथी ।।
सुनि कोल भिल्लक बचन निज नर नारि नेह निरादरैं ।
तुलसी कृपा रघुवंस मनि कर लोह लय नौका तरैं ।।

सोरठा—बिचरथि बन चहु ओर, प्रतिदिन प्रमुदित लोक सब ।
जेना दादुर मोर, पीन प्रथम पावस जलेँ ।।२५१।।

पुर नर नारि मगन अति प्रीती । बासर जाय पलक सम बीती ।।१।।
सिय प्रति सासु बेष धय नाना । सेवा सादर करथि समाना ।।२।।
राम छोड़ि क्यो बुझलक ई ने । सब माया सियमायाधीने ।।३।।
सेवेँ सीय सासु बस केलनि । लहि सुख से सिख आसिष देलनि ।४।।
सिय सह सरल बंधु दुहु देखी । कुटिल रानि पछताथि बिसेखी ।।५।।
जम महि सौँ केकई मँगैछथि । महि न फाट विधि मृत्यु न दैछथि ।।६।।

कवि कह बिदित वेद लोकहु मे । राम विमुख नहि थल नरकहु मे ॥७॥
संसय लागल सबहुक मन मे । घुरता राम कि रहता बन मे ॥८॥

दोहा--निसि न निंद नहि भूख दिन, भरत बिकल सुचि सोच।
नीच कीच बिच मगन जनि, मीनहिँ सलिल सँकोच ॥२५२॥

कयल मातु मिष काल कुचाली । ईति भीति जनि पकड़त साली ॥१॥
रामतिलक हो कोन परकारे । हमरा सुझय न एको द्वारे ॥२॥
घुरता ध्रुब गुरु आज्ञा मानी । मुनि कहताह राम रुचि जानी ॥३॥
घुरता रघुपति माइक बानी । सकथि न राम जननि हठ ठानी ॥४॥
अनुचर गनक लखन की बाते । तहु मे कुसमय बाम विधाते ॥५॥
हठहु करब तौँ निपट कुकरमे । हर गिरि सौँ गुरु सेबक धरमे ॥६॥
एको जुगुति न बैसल हीतल । सोचइत भरतहिँ निसिओ बीतल ॥७॥
प्रात नहा सिर प्रभुहिँ नमौलनि । बैसइत रिषि भरतहिँ बजबौलनि ॥८॥

दोहा--गुरु पद कमल प्रनाम कय, बैसला अनुमति पाबि ।
बिप्र महाजन सचिब सब, जुटल सभासद आबि ॥२५३॥

बजला मुनिबर समय समाने । सुनू सभासद भरत सुजाने ॥१॥
धरम धुरीन भानुकुल भानू । राजा राम स्वबस भगवानू ॥२॥
सत्यसंध पालक श्रुति सेतू । राम जनम जग मंगल हेतू ॥३॥
गुरु पितु मातु बचन अनुसारी । खल दल दलन देव हितकारी ॥४॥
नीति प्रीति स्वारथ परमारथ । क्यो न राम सम जान जथारथ ॥५॥
विधि हरि हर ससि रवि दिगपाले । माया जीब करम कुल काले ॥६॥
अहिप महिप जत प्रभुता पाओल । जोग सिद्धि निगमागम गाओल ॥७॥
करु बिचार जिय देखु बिसेसे । सबहुक सिर पर राम निदेसे ॥८॥

दोहा--रखइत राम निदेस रुखि, सबहुक हितकर जैह ।
सब सयान गुनि आब करु, समुचित निरनय सैह ॥२५४॥

सबहुक सुखद राम अभिषेके । मंगल मोद मूल मग एके ॥१॥
रघुपति चलथि अवध पुनि जेना । कहु गुनि जतन करी सब तेना ॥२॥

सादर मुनिबर बचन अकानल । नय परमारथ स्वारथ सानल ॥३॥
फुर न उतर अकबक सब प्रानी । प्रनमि भरत जोड़ल जुग पानी ॥४॥
रवि कुल भेला भूप अनेके । पैघ एक सौँ बढ़ि कय एके ॥५॥
सभक जनम कारन पितु माता । करम सुभासुभ देथि बिधाता ॥६॥
दलि दुख सकल सुमंगल आनय । येहन असीस अहँक जग जानय ॥७॥
नाथ अहाँ विधिहुक गति छेकल । सकय के टारि टेक जे टेकल ॥८॥

दोहा—पूछी आव उपाय जे, से सब हमर अभाग ।
सुनि सिनेहमय बचन गुरु, उर उमगल अनुराग ॥२५५॥

राम कृपहिँ हो सत सब बाता । राम बिमुख सिधि सपन न ताता ॥१॥
बात एक कहबे सकुचाइत । अरध तजथि बुध सरबस जाइत ॥२॥
अहँ दुहु भाय जाउ बन साथे । घूरथु लखन सीय रघुनाथे ॥३॥
सुनि सुबचन हरषित दुहु भ्राता । भेल प्रमोद परिपूरित गाता ॥४॥
मन प्रसन्न तन तेज अनूपे । राम राज जनि जिउला भूपे ॥५॥
लोकहिँ बहुत लाभ लघु हानी । सम दुख सुख सब कानथि रानी ॥६॥
कहथि भरत मुनि कहल से केने । फल जग जीवन अभिमत देने ॥७॥
कानन करी जनम भरि बासे । येहि सौँ अधिक न हमर सुपासे ॥८॥

दोहा—अंतरजामी राम सिय, अहँ सरवज्ञ सुजान ।
कही सत्य जौँ तौँ करू, प्रभु निज बचन प्रमान ॥२५६॥

भरत बचन सुनि देखि सिनेहे । सभा सहित मुनि भेला बिदेहे ॥१॥
भरत महा महिमा जल बाढ़ी । मुनि मति तट अबला इव ठाढ़ी ॥२॥
जतन पार उतरक हिय लाबय । नाव जहाज न बेरा पाबय ॥३॥
भरत बड़ाइ कि दोसर गाओत । सरसी सीप के सिंधु समाओत ॥४॥
मुनिहिँ भरत जिय सौँ प्रिय भेला । सहित समाज राम लग गेला ॥५॥
प्रभु प्रनाम कय देल सुआसन । बैसला सब सुनि मुनि अनुसासन ॥६॥
बजला मुनिबर बचन बिचारी । देस काल अवसर अनुसारी ॥७॥
सुनू राम सरबज्ञ सुजाने । धरम नीति गुन ज्ञान निधाने ॥८॥

दोहा—सबहुक उर अंतर बसी, जानी भाव कुभाव।
पुरजन जननी भरत हित, हो से दीय सुभाव ॥२५७॥

आरत जन बाजय न बिचारी। देखय अपने दाव जुआरी ॥१॥
सुनि मुनि बचन कहथि रघुनाथे। सकल उपाय नाथ तव हाथे ॥२॥
हित सबहुक तव रुखि मे रहने। आज्ञा कैने मुदित सत कहने ॥३॥
आज्ञा हैत प्रथम मोहि जेहे। सिर धय अवस करब सिख सेहे ॥४॥
पुनि जनिका प्रभु जे कहि देवे। से सब बिधि करता तव सेवे ॥५॥
कह मुनि राम सत्य अहँ भाखल। भरत सिनेह बिचार न राखल ॥६॥
तैँ हम कहइत छी दय जोरे। भरत भगति बस भेल मति मोरे ॥७॥
मोहि जनइत भरतक रुचि राखी। जैह करब से सुभ सिव साखी ॥८॥

दोहा—भरत बिनय सादर सुनू, करू विचारि बहोरि।
करब साधु मत लोक मत, नृप नय निगम निचोरि ॥२५८॥

गुरु अनुराग भरत पर देखी। राम हृदय आनंद बिसेखी ॥१॥
भरतहिँ धरम धुरंधर जानी। निज सेवक बुझि तन मन बानी ॥२॥
बजला गुरु अनुमति अनुकूले। बचन मंजु मृदु मंगल मूले ॥३॥
नाथ सपथ पितु चरन दोहाई। भेल न भुबन भरत सम भाई ॥४॥
जे गुरु पद अंबुज अनुरागी। लोक वेद दुहु से बड़ भागी ॥५॥
जनि पर अहँक येहन अनुरागे। के कहि सकत भरत केर भागे ॥६॥
गुनि लघु बंधु सकुच बस रुकवे। मुँह पर भरत बड़ाइ न करबे ॥७॥
कयने हो भल भरत जे कहले। ई कहि राम मौन गहि रहले ॥८॥

दोहा—तखन कहल मुनि भरत सौँ, सब सँकोच तजि तात।
कृपासिंधु प्रिय बंधु सौँ, कहु सब हृदयक बात ॥२५९॥

सुनि मुनि बचन राम रुखि देखी। गुरु स्वामी अनुकूल बिसेखी ॥१॥
छारभार सब निज सिर हेरी। कहि न सकथि सोचथि कय बेरी ॥२॥
ठाढ़ सभा बिच पुलक सरीरे। दृग नीरज बह नेहक नीरे ॥३॥
कहल निमाहल अहँ मुनिराजे। येहि सौँ अधिक कहक की काजे ॥४॥

हम जानी निज नाथ सोभावे । अपराधिहुँ पर क्रोध न आवे ॥५॥
मोहि पर कृपा सिनेह बिसेखी । खेलहुँ खुनुस न पौलहुँ देखी ॥६॥
नेनहि सौँ हम तजल न संगे । कहियो नहि केलनि मन भंगे ॥७॥
कृपा रीति हम प्रभुक निहारल । जितबथि खेल जैहो हम हारल ॥८॥

दोहा—हमहूँ नेह सँकोच बस, सनमुख कहल न बैन ।
दरसन तृपित न आइ धरि, प्रेम पियासल नैन ॥२६०॥

मम दुलार सहि सकल न नीचे । विधि धैलक जननी मिस बीचे ॥१॥
छजय मोहि नहि कहइत सेहो । अपनहि मने साधु सुचि के हो ॥२॥
माय मंद हम साधु सुचाली । ई उर अनने कोटि कुचाली ॥३॥
फड़य कि कोदो बालि सतरिया । मुकुता प्रसव कि घोँघा करिया ॥४॥
सपनहुँ ककरो दोष न लेसे । हमर अभागक उदधि असेसे ॥५॥
नहि निज अघ परिपाक बिचारल । ब्यर्थ ब्यंग कहि जननी जारल ॥६॥
सब दिसि हेरि हृदय मे हारल । निज भल एके भाँति बिचारल ॥७॥
गुरु गोसाँइ स्वामी सिय रामे । मोहि बुझि पड़इछ भल परिनामे ॥८॥

दोहा—साधु सभा गुरु प्रभु निकट, सुथल कही सत आज ।
प्रेम प्रपंच कि साँच फुसि, जानथि मुनि रघुराज ॥२६१॥

भूपक मरन प्रेम पन राखी । जननिक कुमति जगत सब साखी ॥१॥
देखल न जाय बिकल महतारी । जरय दुसह जर पुर नर नारी ॥२॥
हमही सकल अनर्थक मूले । से सुनि बूझि सही सब सूले ॥३॥
सुनि बन गमन कयल रघुनाथे । कय मुनि बेप लखन सिय साथे ॥४॥
गेला पैरहिँ बिनु पदत्राने । सिव सिव येहि घाबहुँ रह प्राने ॥५॥
बहुरि निहारि निषादक नेहे । कुलिस कठिन उर भेल न बेहे ॥६॥
आब देखल सब येतय नयन सौँ । सब सहाय जिब जाय न तन सौँ ॥७॥
जनिका लखि मग सापिनि बीछे । तजय बिषम बिष तामस तीछे ॥८॥

दोहा—तहि रघुनंदन लखन सिय, अनहित जे बुझि लेथि ।
तकर तनय तजि दुसह दुख, विधि कहु ककरा देथि ॥२६२॥

सुनि अति विकल भरत बर बानी। आरति प्रीति विनय नय खानी ॥१॥
सोकित सभा बेआकुल केना। पड़ल तुषार कमल बन जेना ॥२॥
कहि कहि बहु बिधि कथा पुरातन। बोधल भरतहिँ ज्ञानी मुनिगन ॥३॥
बजला उचित बचन रघुनंदे। दिनकर कुल कैरव बन चंदे ॥४॥
तात करी जुनि व्यर्थ गलानी। ईस अधीन जीव गति जानी ॥५॥
मम मत त्रिजग त्रिकाल जतेको। पुन्य सिलोक न अहँ सम एको ॥३॥
अहँ प्रति कुटिल भाव उर अनइछ। तकर लोक परलोक न बनइछ ॥७॥
दोष देत जननिहिँ जड़ सेहे। सेवल साधु गुरू नहि जेहे ॥८॥

दोहा—मेटत पाप परपंच सब, अखिल अमंगल गाम।
लोक सुजस परलोक सुख, अहँक सुमिरितहिँ नाम ॥२६३॥

कही सुभाव सत्य सिब साखी। भरत बचाय अही॑ महि राखी ॥१॥
तात कुतर्क बृथा मन लाओल। बैर प्रेम नहि होअय नुकाओल ॥२॥
मुनिगन निकट बिहग मृग जाइछ। बाधक बधिक बिलोकि पराइछ ॥३॥
हित अनहित पसु पछियो जाने। मानुस तन गुन ज्ञान निधाने ॥४॥
तात निके॑ जानी हम तोही। करु की मन असमंजस मोही ॥५॥
राखल सत्य नृपति मोहि त्यागी। त्यागल देह प्रेम पन लागी ॥६॥
हुनक बचन मेटबति मन सोचे। तहुँ सौँ अधिक अहँक संकोचे ॥७॥
तहुपर गुरु मोहि देल निदेसे। चाही करय कही अहँ जे से ॥८॥

दोहा—मन प्रसन्न कय सँकुच तजि, कहू करी से आज।
सत्यसंध रघुवर बचन, सुनि भेल सुखी समाज ॥२६४॥

सुरगन सहित सभय सुरराजे। सोचथि होबय चहैछ अकाजे ॥१॥
कोनो उपाय करैत न बनइछ। राम सरन सब मन मन गहइछ ॥२॥
बहुरि बिचारि परस्पर कहथी। रघुपति भगति भगत बस रहथी ॥३॥
सुधि कय अंबरीष दुरबासे। सुर सुरपति भेल निपट निरासे ॥४॥
सहल देव बहुकाल बिषादे। नरहरि प्रगटाओल प्रहलादे ॥५॥
कानहिँ कान कहथि धुनि माथे। सब सुरकाज भरत कैर हाथे ॥६॥

आन उपाय लखी नहिँ देवा । मानथि राम सुसेवक सेवा ॥७॥
सुमिरु सप्रेम भरत उर धारी । निज गुन सील राम बसकारी ॥८॥

दोहा—सुनि सुरमत सुरगुरु कहल, भल अहाँक बड़ भाग ।
सकल सुमंगल मूल जग, भरत चरन अनुराग ॥२६५॥

सीतापति सेवक केर सेवा । सय सुर धेनु तुल्य सुभ देवा ॥१॥
भरत भगति अहँ सब मन लाओल । तजू सोच विधि काज बनाओल ॥२॥
भरत प्रभाव देखु सुरराजे । सहज सोभाव बिबस रघुराजे ॥३॥
मन थिर करु सुर डर नहि आनू । भरतहिँ रामक छाया जानू ॥४॥
सुनि सुर गुरु सुर संमत सोचे । अंतरजामी प्रभुहिँ सँकोचे ॥५॥
भरत जानि जिय निज सिर भारे । उर अनुमानथि कोटि प्रकारे ॥६॥
कय विचार मन कयलनि ठीके । राम कहल कयनहिँ निज नीके ॥७॥
निज पन तजि राखल पन मोरे । छोह सिनेह कयल नहि थोरे ॥८॥

दोहा—कयल अनुग्रह अमित अति, सब विधि सीतानाथ ।
कय प्रनाम बजला भरत, जोरि जलज जुग हाथ ॥२६६॥

कहिअ कहाविअ आब कि स्वामी । कृपा अंबुनिधि अंतरजामी ॥१॥
गुरु प्रसन्न स्वामी अनुकूले । नसल मलिन मन कलपित सूले ॥२॥
सोच अमूल कयल डर धोखे । प्रभु दिगभ्रम मम रविक न दोषे ॥३॥
मातु कुटिलपन दुरदिन मोरे । बिषम विधिक गति काल कठोरे ॥४॥
जोर लगा सब मिलि मोहि घालल । प्रनतपाल अहँ निज पन पालल ॥५॥
अछि अहाँक ई नहि नब बाते । गुपुत न लोक वेद बिख्याते ॥६॥
जग अनभल प्रभु भल अहँ एके । जसु भलाइ भल हो कहु से के ॥७॥
देव देवतरु सरिस सोभावे । सभक सम्मुख बिमुखक नहि भावे ॥८॥

दोहा—सोन्ह समनि छाया जकर, चिन्हि तरुतर जे जाय ।
भूप रंक भल नीच जग, मगिँ तहि अभिमत पाय ॥२६७॥

लखि सब विधि गुरु स्वामि सिनेहे । नसल छोभ नहि मन संदेहे ॥१॥
सैह करू करुनाकर आबे । जन हित प्रभु चित छोभ न पाबे ॥२॥

प्रभुहिँ सँकोचय सेवक जेहे । निज हित चाह मंद मति सेहे ॥३॥
सब सुख लोभ हृदय सौँ छारी । प्रभु सेवा सेवक हितकारी ॥४॥
स्वारथ सभक नाथ फिरि गेने । नीक कोटि बिधि आज्ञा केने ॥५॥
ई स्वारथ परमारथ सारे । सकल सुकृत फल सुगति सिँगारे ॥६॥
प्रभु मम एक बिनति लिय सूनी । पुनि से करब उचित जे गूनी ॥७॥
तिलकक साज साजि आनल बन । करिय सुफल जौँ मानय प्रभु मन ॥८॥

दोहा—**सानुज बिपिन पठाउ मोहि, सब केँ करू सनाथ ।**
बा घुराउ दुहु बंधु केँ, नाथ चली हम साथ ॥२६८॥

बा बन जाइ बंधु तिहु साथे । अहँ सिय सहित घुरिय रघुनाथे ॥१॥
होअय प्रसन्न प्रभुक मन जहिना । कयल जाय करुनानिधि तहिना ॥२॥
देव देल मोहिं सब बिधि भारे । हमरा नहि नय धरम बिचारे ॥३॥
कही बचन सब स्वारथ हेतू । आरत चित न रहय किछु चेतू ॥४॥
स्वामि निदेस उतर कर जे टा । लाजो लज्जित लखि जन से टा ॥५॥
अवगुन उदधि येहन हम जइयो । कही साधु प्रभु नेहेँ तइयो ॥६॥
आब कृपालु सैह मोहि भावय । जहि सौँ प्रभु मन सँकुच न पावय ॥७॥
प्रभु पद सपथ कही सत भाए । जग मंगल हित एक उपाए ॥८॥

दोहा—**प्रभु प्रसन्न मन सकुच तजि, जकरा जे कहि देब ।**
से सिर धय धय करत सब, बिनसत अनट उरेब ॥२६९॥

भरत बचन सुनि सुनि सुर हरषथि । साधु सराहि सुमन सुर बरषथि ॥१॥
असमंजस बस अवध निवासी । प्रमुदित मन तापस बनबासी ॥२॥
चुप रहला रघुनाथ सँकोचे । प्रभु गति देखि सभा केँ सोचे ॥३॥
जनकक दूत ऐल तहि काले । गुरु बजौल झट सुनि से हाले ॥४॥
कय प्रनाम हुनि राम निहारी । बेष देखि भेल निपट दुखारी ॥५॥
पुछल दूत केँ मुनिवर एहे । कहू कुसल छथि भूप विदेहे ॥६॥
सुनि सकुचाय नमा महि माथे । चरवर कहल जोरि जुग हाथे ॥७॥
पुछब गोसाँइक आदर साथे । कुसलक मूल सैह भेल नाथे ॥८॥

दोहा—नहि तौँ कोसलनाथ सँग, कुसल सकल चलि गेल ।
मिथिला अवध विशेष कय, जग अनाथ सब भेल ॥२७०॥

कोसल पति गति सुनि अति सोके । बौरल जनक पुरक सब लोके ॥१॥
तहि छन जे विदेह केँ देखल । क्यो नहिँ तनिक नाम सत लेखल ॥२॥
रानि कुचालि सुनति नरपाले । सूझ न किछु जनि मनि बिनु ब्याले ॥३॥
भरत राज रघुबर बनबासे । मिथिलेसक हिय भेल हरासे ॥४॥
पुछल भूप बुध सचिब समाजे । कहू बिचारि उचित की आजे ॥५॥
दुहु असमंजस अवध निहारी । जाइ कि नहि क्यो कह न बिचारी ॥६॥
भूप धीर धय हृदय बिचारी । अवध पठौल चतुर चर चारी ॥७॥
भरतक भाव गमय अहँ जाऊ । बुझय न क्यो जन झट घुरि आऊ ॥८॥

दोहा—गेल अवध चर भरत गति, बूझि सूझि करतूति ।
चित्रकूट चलला भरत, चार चलल तिरहूति ॥२७१॥

दूत जथामति भरतक करनी । जनकहिँ आबि सुनाओल बरनी ॥१॥
सुनि गुरु परिजन सचिब भुपाले । सोच सिनेह बिकल सुनि हाले ॥२॥
भरत सराहि धीर उर आनी । लेलनि बजाय सुभट सेनानी ॥३॥
घर पुर देस राखि रखबारे । हय गज रथ बहु कयल तयारे ॥४॥
दुघड़ि साधि चलला ततकाले । मग बिश्राम न लेल महिपाले ॥५॥
भोरे आइ प्रयाग नहा कय । जमुना उतरय लगला जा कय ॥६॥
खबरि हेतु भेजलनि मोहि नाथे । ई कहि भूमि नमाओल माथे ॥७॥
बिदा दूत केँ मुनि झट केलनि । सँग किरात गोट सातेक देलनि ॥८॥

दोहा—सुनइत जनकक आगमन, हरषल अवध समाज ।
रघुनंदनहिँ सँकोच बड़, सोच बिबस सुरराज ॥२७२॥

कुटिल केकयी गलथि गलानी । ककर दोष देथु कहथु कि बानी ॥१॥
ई गुनि मुदित भेल नर नारी । रहब आब बन पुनि दिन चारी ॥२॥
यहि प्रकार दिन बितल समस्ते । प्रात नहयबा मे सब ब्यस्ते ॥३॥
कय मज्जन पूजथि नर नारी । गनप गौरि त्रिपुरारि तमारी ॥४॥

रमा रमन पद बंदि बहोरी । बिनमथि आँजुर आँचर जोरी ।।५।।
राजा राम जानकी रानी । आनँद अवधि अवध रजधानी ।।६।।
स्वबस बसथु पुनि सहित समाजे । भरतहिँ राम करथु जुवराजे ।।७।।
सब केँ यहि सुख सुधा नहाबिय । प्रभु जग जीवन लाभ कराबिय ।।८।।

दोहा—गुरु समाज भ्राता सहित, पुर हो रामक राज ।
राम अछैतहिँ अवध नृप, माँगथि मृत्यु समाज ।।२७३।।

सुनि सिनेहमय पुरजन बानी । निंदथि जोग बिरति मुनि ज्ञानी ।।१।।
येँहि विधि नित्य करम कय पुरजन । रामहिँ करथि प्रनाम पुलक तन ।।२।।
ऊँच नीच मध्यम नर नारी । लहथि दरस निज निज अनुहारी ।।३।।
प्रभु रहि सजग सबहिँ सनमानथि । कृपासिंधु गुन सकल बखानथि ।।४।।
नेनहिँ सौँ ई रघुवर बानी । पालथि नीति प्रीति पहिचानी ।।५।।
सील सँकोच सिंधु रघुराऊ । सुमुख सुलोचन सरल सुभाऊ ।।६।।
कहति राम गुन गन अनुरागल । सब निज भाग सराहय लागल ।।७।।
मम सम पुन्य पुंज जग ककरा । राम अपन कय बूझथि जकरा ।।८।।

दोहा—प्रेम मगन तहि समय सब, सुनि अबैत मिथिलेस ।
उठला संभ्रम सह सभा, रविकुल कमल दिनेस ।।२७४।।

भाय सचिब गुरु पुरजन साथे । आगाँ गमन कयल रघुनाथे ।।१।।
जनक लखल गिरिवर केँ जखने । कय प्रनाम रथ त्यागल तखने ।।२।।
राम दरस लालस आबेसे । ककरहु किछु नहि पथ श्रम क्लेसे ।।३।।
मन रघुवर बैदेही पासे । बिनु मन तन दुख सुखक न भासे ।।४।।
आबथि चलल जनक येँहि भाँती । सहित समाज प्रेम मति माँती ।।५।।
ऐला निकट देखि अनुरगला । सादर मिलय परसपर लगला ।।६।।
कयल जनक मुनिगन पद बंदन । रिषिहिँ प्रनाम कयल रघुनंदन ।।७।।
भाय समेत राम मिलि राजहिँ । संग लेल कय सहित समाजहिँ ।।८।।

दोहा—आश्रम सागर सांत रस, पूरन पावन पाथ ।
सेन मानु करुना सरित, लने जाथि रघुनाथ ।।२७५।।

ज्ञान बिराग किनारहि बोड़य । सोक बचन नल नालहिँ जोड़य ॥१॥
सोच उसास समीर तरंगे । धीरज तट तरुबर कर भंगे ॥२॥
बिषम बिपाद बेगमय धारे । भय भ्रम भमर अवर्त अपारे ॥३॥
केवट बुध बिद्या बड़ नावे । सकय न खेबि ठेकान न पावे ॥४॥
कोल किरात पथिक बन चारी । भेल बिलोकि थगित हिय हारी ॥५॥
आश्रम उदधि समायल जखने । अकुला उठल मानु से तखने ॥६॥
सोक बिकल दुहु राज समाजे । रहल न ज्ञान न धीरज लाजे ॥७॥
भूप रूप गुन सील सराही । कानथि सोक सिंधु अवगाही ॥८॥

छंद—अवगाहि सोक समुद्र सोचय नारि नर ब्याकुल महा ।
दय दोष बाज सरोष सब विधि बाम की कयलनि अहा ॥
सुर सिद्ध तापस जोगि मुनि जन लखि बिदेहहिँ तहि घरी ।
तुलसी समर्थ न क्यो येहन जे सकय तरि नेहक सरी ॥

सोरठा—कयल अमित उपदेस, जहँ तहँ मुनिबर लोक केँ ।
धीरज धरिय नरेस, कहल बसिष्ठ बिदेह सौँ ॥२७६॥

जनिक ज्ञान रवि भव निसि नासय । बचन किरन मुनि कमल बिकासय ॥१॥
ममता मोह कि तनि लग आवे । ई सियराम सिनेह प्रभावे ॥२॥
बिषयी साधक सिद्ध सयाने । त्रिबिध जीव श्रुति कहथि जहाने ॥३॥
राम सिनेह सरस मन जनिका । साधु सभा बड़ आदर तनिका ॥४॥
सोभ न राम प्रेम बिनु ज्ञाने । करनधार बिनु जनि जलजाने ॥५॥
मुनि बहु बोध बिदेहहिँ देलनि । रामघाट मज्जन सब केलनि ॥६॥
सकल सोक संकुल नर नारी । से बासर बीतल बिनु बारी ॥७॥
पसु खग मृग नहि कयल अहारे । प्रिय परिजन केर कोन बिचारे ॥८॥

दोहा—निमि रघुराज समाज दुहु, संग नहा कय प्रात ।
सब क्यो बट तर बैसला, मन मलीन कृस गात ॥२७७॥

जे महि सुर दसरथ पुर बासी । जे मिथिलापति नगर निवासी ॥१॥
हंस बंस गुरु जनक पुरोधा । जे जग मग परमारथ बोधा ॥२॥

करथि उचित उपदेस अनेके । सहित धरम नय बिरति बिवेके ॥३॥
कौसिक सुना पुरान कहानी । समझाओल सब सभा सुबानी ॥४॥
रघुवर तखन कौसिकहिँ कहले । नाथ काल्हि सब जल बिनु रहले ॥५॥
कहथि उचित रघुपति मुनि कहले । आब त डेढ़ पहर दिन रहले ॥६॥
रिषि रुखि लखि कह तिरहुति राजे । यैतय उचित नहि असन अनाजे ॥७॥
नृप बच सब केँ भेल भल भाने । अनुमति लहि चलला असनाने ॥८॥

दोहा—ताहि समय फल फूल दल, मूल अनेक प्रकार ।
लय आयल बनचर बिपुल, भरि भरि कामरि भार ॥२७८॥

कामद भेल गिरि राम प्रसादे । हेरितहिँ हरय समस्त बिषादे ॥१॥
सर सरिता बन भूमि बिभागे । जनि उमगय आनँद अनुरागे ॥२॥
बेलि बिटप सब सफल सफूले । बाजय खग मृग अलि अनुकूले ॥३॥
तहि अबसर बन आनँद भारी । त्रिबिध समीर सभक सुखकारी ॥४॥
बनक रम्यता होअय न बरनी । करथि जनक स्वागत जनि धरनी ॥५॥
तखन लोक सब नहा नहा कय । राम जनक मुनि अनुमति पा कय ॥६॥
देखि देखि तरुवर अनुरगला । जहँ तहँ पुरजन उतरय लगला ॥७॥
दल फल मूल कंद बिधि नाना । पाबन सुंदर सुधा समाना ॥८॥

दोहा—सादर सब केँ भेजलनि, मुनि बसिष्ठ भरि भार ।
पूजि पितर सुर अतिथि गुरु, कयलनि सब फलहार ॥२७९॥

येहि बिधि बीतल बासर चारी । रामहिँ निरखि सुखी नर नारी ॥१॥
दुहु समाज मन मे रुचि सुचिते । बिनु सियराम घुरब नहिँ उचिते ॥२॥
सीताराम संग बनबासे । कोटि अमरपुर सरिस सुपासे ॥३॥
छोड़ि लखन बैदेही रामे । घर सोहाय जनि तनि बिधि बामे ॥४॥
दहिन दैव भय जेता जखने । बन मे बसब राम लग तखने ॥५॥
मज्जन मंदाकिनी त्रिकाला । राम दरस मुद मंगल माला ॥६॥
अटन रामगिरि बन तापस थल । असन अमिय सम कंद मूल फल ॥७॥
बरष चतुरदस निमिष समाने । सुख सौँ बितत होयत नहि भाने ॥८॥

दोहा—कहथि लोक सब येहन सुख, जोग कहाँ अछि भाग।
सहज सोभाव समाज दुहु, राम चरन अनुराग ॥२८०॥

करथि मनोरथ सब येहि रीती। मन हर सुनइत बचन सप्रीती ॥१॥
सीय माय भेजल निज चेरी। घूरलि से भल अवसर हेरी ॥२॥
साबकास सुनि सब सिय सासू। आयल जनक राज रनिवासू ॥३॥
कौसल्या सादर सनमानी। आसन देल समय सम आनी ॥४॥
सील सिनेह सकल दुहु ओरे। द्रवय देखि सुनि कुलिस कठोरे ॥५॥
पुलक सिथिल तन लोचन नोरे। सब लिख महि नख सोच बिभोरे ॥६॥
सब सियराम पिरीत सुमूरति। सोचय जनि करुना कत सूरति ॥७॥
बक्र बुद्धि विधि कहथि सुनेने। पबि छेनी फोड़ जे पय फेने ॥८॥

दोहा—सुनी सुधा देखी गरल, सब करतूति कराल।
जत तत काग उलूक बक, मानस सकृत मराल ॥२८१॥

सुनि ससोच कह देवि सुमित्रे। विधि गति बड़ बिपरीत बिचित्रे ॥१॥
जे सृजि पालय पुनि तनि नासय। बाल केलि सम बिधि मति भासय ॥२॥
कह कौसिला दोष ककरहु नहि। दुख सुख छति संपति सभ करमहिँ ॥३॥
कठिन करम गति बुझथि विधाता। जे सुभ असुभ सकल फल दाता ॥४॥
ईसक आज्ञा सीस सबहु केँर। उतपति थिति लय विष अमियहु केँर ॥५॥
देवि मोह बस सोचु न रंचे। अचल अनादि विधिक परपंचे ॥६॥
भूपति जियब मरब उर आनी। सोचब सखि लखि निज हित हानी ॥७॥
सीय माय कह सत्य सुबानी। सुकृती अवधि अवध पति रानी ॥८॥

दोहा—लखन राम सिय जाथु बन, भल परिनाम न हानि।
भरत सोच मोहि बिकल हिय, कहथि कोसिला कानि ॥२८२॥

ईस कृपा तब आसिष भारी। सुत सुतबधू देवसरि बारी ॥१॥
कयल न राम सपथ भरि जीवन। कही सेहो कय भाव सत्य मन ॥२॥
भरत सील गुन बिनय बड़ाई। भगति बंधुता आस भलाई ॥३॥
कहइत सारदहुक मन हारय। सीप समुद्र उपछि की पारय ॥४॥

जानी सदा भरत कुलदीपे । बेरि बेरि मोहि कहल महीपे ॥५॥
कसि कय कनक परिखि मनि जानी । समय सोभाब पुरुष पहिचानी ॥६॥
येहनो कहब उचित नहि मोरे । सोक नेह बस मति हो भोरे ॥७॥
सुनि सुरसरि सम पावन बानी । भेली सिनेह बिकल सब रानी ॥८॥

दोहा—कौसल्या कह धीर धय, सुनू देवि मिथिलेसि ।
अहँ बिबेकनिधि बल्लभा, के सकैछ उपदेसि ॥२८३॥

रानि भूप सौँ अवसर पा कय । कहबनि अपना जकाँ बुझा कय ॥१॥
राखथि लखनहिँ भरत जाथि बन । जौँ ई मत माननि महीप मन ॥२॥
तौँ भल जतन करब सुबिचारी । हमरा सोच भरत केर भारी ॥३॥
गूढ़ सिनेह भरत मन जानी । हुनक रहब घर भल नहि मानी ॥४॥
लखि सोभाब सुनि सरल सुबानी । सब भेलि मगन करुन रस रानी ॥५॥
सुमन झड़ी नभ धन्य धन्य धुनि । सिथिल सिनेह सिद्ध जोगी मुनि ॥६॥
लखि रनिवास थगित सब रहले । धीरज बान्हि सुमित्रा कहले ॥७॥
देवि दंड जुग निसि गेल बीती । उठली रामक माय सप्रीती ॥८॥

दोहा—कहल नेह सद्भाव सौँ, जाउ बेगि निज बास ।
हमरा तौँ बस ईस गति, बा मिथिलेसक आस ॥२८४॥

लखि सिनेह सुनि बचन बिनीते । जनकप्रिया पद गहल पुनीते ॥१॥
देवि बिनय ई तव अनुरूपे । पूत राम पति दसरथ भूपे ॥२॥
नीचहुँ केँ प्रभु आदर करथी । गिरि तृन अगिनि धूम सिर धरथी ॥३॥
सेबक भूप करम मन बानी । सदा सहाय महेस भवानी ॥४॥
अंग जोग तव के छथि जग मे । दीप सहाय कि दिनकर लग मे ॥५॥
राम जाय बन कय सुर काजे । अचल अवधपुर करता राजे ॥६॥
सुर नर नाग राम बाहुक बल । बसता सुख सौँ सब निज निज थल ॥७॥
ई सब जाग्यबल्क कहि राखल । देवि न फूसि हैत मुनि भाखल ॥८॥

दोहा—कहि अति प्रेमेँ पैर पड़ि, सिय हित बिनय सुनाय ।
सिय सह सिय माता तखन, चलली अनुमति पाय ॥२८५॥

बैदेही मिलली प्रिय परिजन । जे जेँहि जोग ताहि बिधि तहि छन ।।१।।
तापसि बेष जानकिक देखी । सब छथि बिकल बिषाद बिसेखी ।।२।।
जनक रामगुरु अनुमति पाबी । गेला थलहिँ सिय देखल आबी ।।३।।
जानकि केँ हिय जनक लगौलनि । प्रेम प्रान पाहुन सुचि पौलनि ।।४।।
उर उमड़ल अंबुधि अनुरागे । भेल भूप मन मानु प्रयागे ।।५।।
सिय सिनेह बट बढ़इत देखल । तहि पर राम प्रेम सिसु पेखल ।।६।।
चिरजीवी मुनि ज्ञान बिकल मन । डुबइत लह जनि सिसु अवलंबन ।।७।।
मोह मगन मति नहि बिदेह केँर । महिमा सिय रघुवर सिनेह केँर ।।८।।

दोहा--सिय पितु मातु सिनेह बस, बिकल न सकलि सम्हारि ।
धयल धीर धरनीसुता, समय सुधरम बिचारि ।।२८६।।

जनक देखि सिय तापस बेसे । भेल प्रेम परितोष बिसेसे ।।१।।
पुत्रि कयल दुहु बंस पवित्रे । गाबय सब जग धवल चरित्रे ।।२।।
जिति सुरसरिहिँ किरिति सरि तोरे । गमन कयल ब्रह्मांड करोरे ।।३।।
कयल गंग तिनि थल पुनमंते । कयल इ साधु समाज अनंते ।।४।।
पितु कह सत सिनेह ई जइयो । सिय संकोच समयली तइयो ।।५।।
पुनि पितु मातु लगा उर लेलनि । सुभ हितकर आसिख सिख देलनि ।।६।।
कहि न सकथि सिय चित संकुचिते । येतय रहब नहि रजनी उचिते ।।७।।
लखि रुख रानि जनाओल रावे । हृदय सराहथि सील सोभावे ।।८।।

दोहा--सिय सौँ पुनि पुनि मिलि तखन, बिदा कयल सनमानि ।
कहल समय सम भरत गति, रानि सुबानि सयानि ।।२८७।।

सुनि भूपाल भरत बेँबहारे । सोन सुगंध सुधा ससि सारे ।।१।।
मुनल सजल दृग भरल पुलक तन । सुजस सराहथि भय प्रमुदित मन ।।२।।
सुनू ध्यान धय सुमुखि सुलोचनि । भरत कथा भव बंध बिमोचनि ।।३।।
धरम राज नय ब्रह्म बिचारे । हमर जथामति अछि अधिकारे ।।४।।
भरतक महिमा से मति मोरे । कहत कि छुअत न छाँहक कोरे ।।५।।
बिधि गनपति अहिपति सिव सारद । कवि कोविद बुध बुद्धि बिसारद ।।६।।

भरत चरित कीरति करतूती । धरम सील गुन बिमल बिभूती ॥७॥
बुझइत सुनइत सब सुख पावय । सुरसरि सुचि रुचि अमिय हरावय ॥८॥

दोहा—निरबधि गुन निरुपम पुरुष, भरत भरत सम एक ।
कहिय सुमेरु कि सेर सम, सँकुचय कविक बिबेक ॥२८८॥

अगम सबहिँ बरनति बरबरनी । जनि जल बिनु मीनक गति धरनी ॥१॥
भरत अमित महिमा सुनु रानी । जानथि राम न सकथि बखानी ॥२॥
प्रेम सहित कहि भरत प्रभावे । कहल भूप गुनि तिय हिय भावे ॥३॥
जाथु भरत बन घूरथु लखने । सबहुक मन भल सबहुक तखने ॥४॥
रघुवर भरत प्रीति परतीती । गमल न होइछ कोनहु रीती ॥५॥
भरत नेह ओ ममता सीमा । जदपि राम छथि समता सीमा ॥६॥
परमारथ स्वारथ सुख सारे । भरत न सपनहुँ कयल बिचारे ॥७॥
साधन सिद्धि राम पद नेहे । मोहि लखि पड़य भरत मत सेहे ॥८॥

दोहा—भ्रमहुँ भरत नहि टारता, मन सौँ राम निदेस ।
करू न सोच सिनेह बस, कहलनि बिलखि नरेस ॥२८९॥

राम भरत गुन गनति सप्रीती । गेल दुहुक निसि पल सम बीती ॥१॥
नृप समाज दुहु प्राते जगला । नहा नहा सुर पूजय लगला ॥२॥
रघुवर नहा गुरुक लग आबी । बंदि चरन बजला रुखि पाबी ॥३॥
नाथ भरत पुरजन महतारी । सोक बिकल बनबास दुखारी ॥४॥
सहित समाज भूप मिथिलेसे । दिवस गेल बहु सहति कलेसे ॥५॥
जे हो उचित करू से नाथे । सबहुक नीक अहिँक अछि हाथे ॥६॥
कहि रघुपति भेला अति सँकुचित । सील सोभावेँ मुनि भेल पुलकित ॥७॥
अहँ बिनु राम सकल सुख साजे । नरक सरिस दुहु राज समाजे ॥८॥

दोहा—प्रान प्रानहुक सुखक सुख, जिवक जीव अहँ राम ।
अहँ तजि तात सोहाय गृह, जनि तनिका विधि बाम ॥२९०॥

जरौ से करम धरम सुख जगती । जहँ न राम पद पंकज भगती ॥१॥
जोग कुजोग ज्ञान अज्ञाने । जहँ नहि राम प्रेम परधाने ॥२॥

अहँ बिनु दुख सुख अहँ केर सँग मे । जानी अहँ ककरा की मन मे ॥३॥
सभक सीस अछि तव आदेसे । बुझी कृपालु सभक गति बेसे ॥४॥
गेल जाय आश्रम कहि सेहे । मुनिबर भेला सिथिल सिनेहे ॥५॥
राम लखन प्रनाम कय गेला । रिषि धय धीर जनक लग एला ॥६॥
राम बचन गुरु कहलनि भूपे । सील सिनेह सोभाव अनूपे ॥७॥
महाराज करु संप्रति सेहे । धरम सहित सबहुक हित जेहे ॥८॥

दोहा--ज्ञान निधान सुजान सुचि, धरम धीर नरपाल ।
अहँ बिनु असमंजस समन, के समरथ येहि काल ॥२९१॥

सुनि मुनि बचन जनक अनुरागल । लखि गति ज्ञान बिराग बिरागल ॥१॥
सिथिल सिनेह गुनथि निज मन मे । कयल न भल जे ऐलहुँ बन मे ॥२॥
नृप बनवास राम केँ देलनि । निज प्रिय प्रेम प्रमानित केलनि ॥३॥
हम पुनि बन सौँ बनहि पठा कय । प्रमुदित फिरब बिबेक बढ़ा कय ॥४॥
तापस मुनि महिसुर सुनि देखी । भेला प्रेम बस बिकल बिसेखी ॥५॥
समय जानि धय धीरज राजा । गेला भरत लग सहित समाजा ॥६॥
आगू आबि भरत लय गेले । अबसर सरिस सुआसन देले ॥७॥
मिथिलापति कह भरतहिँ ताता । अहँ रघुवीर सोभावक ज्ञाता ॥८॥

दोहा--राम सत्यब्रत धरम रत, सील सिनेह बिसेस ।
संकट सहथि सँकोच बस, कहिय जे होय निदेस ॥२९२॥

सुनि पुलकित तन दृग भरि बारी । बजला भरत धीर धय भारी ॥१॥
पितु सम अहाँ पूज्य प्रिय तेहन । हित न माय पितु कुल गुरु जेहन ॥२॥
कौसिकादि मुनि सचिव समाजे । ज्ञान अंबु निधि अपनहुँ आजे ॥३॥
सिसु सेबक अनुमति अनुगामी । जानि मोहि दिय सिच्छा स्वामी ॥३॥
येहि समाज थल मे तव पूछब । मौन मलिन हम बाउर बाजब ॥५॥
लय मुँह छोट कही बड़ बाता । छमब तात लखि बाम विधाता ॥६॥
आगम निगम पुरान बखानय । सेवा धरम कठिन जग जानय ॥७॥
स्वामि धरम स्वारथहिँ बिरोधे । वैर अंध प्रेमक न प्रबोधे ॥८॥

दोहा—राखि राम रुखि धरम ब्रत, पराधीन मोहि जानि ।
सबहुक सम्मत हित सभक, करू प्रेम पहिचानि ॥२६३॥

भरत बचन सुनि देखि सोभावे । सहित समाज सराहथि रावे ॥१॥
सुगम अगम मृदु मंजु कठोरे । अरथ अमित अति आखर थोरे ॥२॥
जनि मुख मुकुर मुकुर निज पानी । जाय गहल नहि अद्भुत बानी ॥३॥
भूप भरत मुनि साधुक बृंदे । गेला जतय सुर कैरब चंदे ॥४॥
सुनि सुधि सोच बिकल सब लोगे । मानु मीन गन नव जल जोगे ॥५॥
देव प्रथम कुलगुरु गति देखी । निरखि बिदेह सिनेह बिसेखी ॥६॥
राम भगतिमय भरत निहारी । सुर स्वारथी बिकल हिय भारी ॥७॥
सब कें राम प्रेममय देखी । देव सोच बस भेला बिसेखी ॥८॥

दोहा—राम सिनेह सँकोच बस, कह ससोच सुरराज ।
रचु प्रपंच सब पंच मिलि, नहि तौँ भेल अकाज ॥२६४॥

सुर सारद कें सुमिरि सराही । कहल देवि सरनागत पाही ॥१॥
फेरि भरत मति कय निज माया । पालु बिबुधकुल कय छल छाया ॥२॥
बिबुध बिनय सुनि देवि सयानी । बजली सुर स्वारथ जड़ जानी ॥३॥
हमरा कही भरत मति फेरू । लोचन सहस न सूझ सुमेरू ॥४॥
बिधि हरि हर माया बड़ भारी । सेहो भरत मति सक न निहारी ॥५॥
हमरा कही से मति भरमाबय । रवि कें चाँदनि कतहु चोराबय ॥६॥
भरत हृदय सियराम निबासे । तहँ कि तिमिर जहँ तरनि प्रकासे ॥७॥
ई कहि गिरा गेली बिधिलोके । बिबुध बिकल निसि मे जनि कोके ॥८॥

दोहा—सुर स्वारथी मलीन मन, कयल कुमंत्र कुठाट ।
रचि प्रपंच माया प्रबल, भय भ्रम अरति उचाट ॥२६५॥

कय कुचालि सोचथि सुरराजे । भरत हाथ सब काज अकाजे ॥१॥
जनक गेला रघुनाथ समीपे । सकल आदरल रघुकुल दीपे ॥२॥
समय समाज धरम अबिरोधा । कहल तखन रघुबंस पुरोधा ॥३॥
जनक भरत संबाद सुनौलनि । भरतक कहिनी कें दोहरौलनि ॥४॥

राम अहँक अनुमति हो जेहे । से सब करओ हमर मति सेहे ॥५॥
सुनि रघुनाथ जोड़ि जुग पानी । बजला सत्य सरल मृदु बानी ॥६॥
विद्यमान अपने मिथिलेसे । हमर कहब सब भाँति भदेसे ॥७॥
अहँक नृपक निदेस हो जेहे । अहँक सपथ सबहुक सिर सेहे ॥८॥

दोहा—राम सपथ सुनि मुनि जनक, सहित सभा सकुचैछ ।
सबहु निहारय भरत मुख, उत्तर किछु न फुरैछ ॥२६६॥

सकुचल सभा भरत से देखी । राम बंधु धय धीर बिसेखी ॥१॥
कुसमय जानि सिनेह सम्हारल । बढ़ति बिंध्य जनि घटज निबारल ॥२॥
सोच कनक लोचन मति छोनी । हरल बिमल गुन गन जगजोनी ॥३॥
भरत बिवेक बराह बिसाले । अनायास उबरल तहि काले ॥४॥
कय प्रनाम सबके कर जोड़ल । राम साधु गुरु नृपहिँ निहोरल ॥५॥
छमब आइ अति अनुचित मोरे । कही बदन मृदु बचन कठोरे ॥६॥
मनहि सुमिरले सारद बिमले । मानस सौँ आयलि मुख कमले ॥७॥
बिमल बिबेक धरम नय साली । भरत भारती मंजु मराली ॥८॥

दोहा—निरखि बिबेकक दृष्टि सौँ, सिथिल सिनेह समाज ।
कय प्रनाम बजला भरत, सुमिरि सीय रघुराज ॥२६७॥

प्रभु पितु मातु सुहृद गुरु स्वामी । पूज्य परम हित अंतरजामी ॥१॥
सरल सुसाहेब सील निधाने । प्रनतपाल सरबज्ञ सुजाने ॥२॥
समरथ सरनागत हितकारी । गुन गाहक अवगुन अघहारी ॥३॥
छी गोसाँइ प्रभु अहँ अपने सन । स्वामि दोहाइ हमहुँ अपने सन ॥४॥
प्रभु पितु बचन मोह बस छोरी । अयलहुँ येतय समाज बटोरी ॥५॥
अमिय गरल भल खल उँच नीचे । मृत्यु अमरता जत जग बीचे ॥६॥
राम निदेस मेटाओत मन मे । देखल सुनल न कतहु भुवन मे ॥७॥
से हम सब बिधि ढिठपन ठानल । नेहेँ प्रभु से सेवा मानल ॥८॥

दोहा—निज स्वभाव भल कृपा बल, नाथ कयल भल मोर ।
दूषन भूषन गेल भय, सुजस चारु चहुओर ॥२६८॥

अहँक सुरीति बड़ाइ सुबानी । जगत बिदित श्रुति कहय बखानी ॥१॥
क्रूर कुटिल खल कुमति कलंकी । नीच निसील निरीस निसंकी ॥२॥
तकरहु सुनि सरनागत भेले । सकृत प्रनामहिँ अपना लेले ॥३॥
दोषो देखि न उर मे आनल । सुनि गुन साधु समाज बखानल ॥४॥
सेबक केँ के स्वामि नेबाजय । साज समाज स्वयं सब साजय ॥५॥
निज करतूति न सपनहुँ मानथि । सेबक सकुच सोच उरआनथि ॥६॥
से गोसाँइ नहि दोसर एको । भुजा उठाय कही पन टेको ॥७॥
पसु नाचय सुक पाठ प्रबीने । गुन गति नट पाठकक अधीने ॥८॥

दोहा—इमि सुधारि सनमानि जन, कयल साधु सिरमौर ।
के कृपालु बिनु पालते, बिरुदाबलि बरजोर ॥२९९॥

सोक सिनेह कि नेनपन ठानी । ऐलहुँ येतय निदेस न मानी ॥१॥
तदपि कृपालु अपन दिसि देखल । सब प्रकार भल कय मोहि लेखल ॥२॥
देखल चरन सुमंगल मूले । स्वामिहिँ बुझल सहज अनुकूले ॥३॥
पैघ समाज देखल निज भागे । बड़ चूकहुँ स्वामिक अनुरागे ॥४॥
कृपा अनुग्रह अंग अघैलहुँ । अधिके अधिक कृपानिधि कैलहुँ ॥५॥
राखल हमर दुलारक भावे । अपने भलपन सील सोभावे ॥६॥
प्रभु कयलहुँ हम ढिठपन भारी । स्वामि समाज सँकोचहिँ छारी ॥७॥
अबिनय बिनय जथारुचि बानी । छमब देव अति आरति जानी ॥८॥

दोहा—सुहृद सुजान सुसाहेबहिँ, बहुत कहब नहि ठीक ।
देव आब आज्ञा भेटय, से कैनहि मोहि नीक ॥३००॥

प्रभु पद पदुम पराग सोहावन । सत्य सुकृत सुख सीमा पावन ॥१॥
तकर सपथ रुचि अपन सुनाबी । जागल सुतल सपन जे भाबी ॥२॥
सहज नेहेँ प्रभु सेवा पूरी । स्वारथ छल फल चहु कय दूरी ॥३॥
आज्ञा सम न सुसाहिब सेवा । से प्रसाद जन पाबओ देवा ॥४॥
ई कहि भेला प्रेम बस भारी । पुलक सरीर बिलोचन बारी ॥५॥
आकुल प्रभु पद पंकज गहले । तखनुक नेह जाय नहि कहले ॥६॥

कृपासिंधु सनमानि सुबानी । बैसौलनि समीप गहि पानी ॥७॥
भरत विनय सुनि देखि स्वभावे । सिथिल सिनेह सभा रघुरावे ॥८॥

छंद—नेहेँ सिथिल रघुराज साधु समाज मुनि मिथिलापती ।
भरतक भगति ओ बंधुता महिमा सराहथि मन अती ॥
भरतहिँ प्रसंसथि विबुध बरपथि सुमन मन सौँ मलिन यो ।
तुलसी बिकल सब लोक सुनि सकुचल निसा जनि नलिन यो ॥

सोरठा—देखि दुखारी दीन, दुहु समाज नर नारि केँ ।
मघवा महा मलीन, मुइल मारि मंगल चहय ॥३०१॥

कपट कुचालि सीम सुरराजे । पर अकाज प्रिय अपना काजे ॥१॥
काक समान पाकरिपु रीती । छली मलिन नहि कतहु प्रतीती ॥२॥
प्रथम कुमत कय कपट बटोरल । से उचाट सबहुक सिर घोरल ॥३॥
सुर माया सब लोक बिमोहल । राम प्रेम अतिसय न बिछोहल ॥४॥
भेल उचाट न थिरता मन मे । छन रुचि सदन छनहि रुचि बन मे ॥५॥
दुबिध मनोगति प्रजा दुखारी । सरित सिंधु संगम जनि बारी ॥६॥
दुचित कतहु परितोष न लहइछ । एक एक सौँ मरम न कहइछ ॥७॥
लखि हिय हँसि कह कृपानिधाने । सरिस स्वान मघवान जुआने ॥८॥

दोहा—भरत जनक मुनिजन सचिब, साधु सचेतहिँ त्यागि ।
पाबि जथोचित जन सबहिँ, सुर माया गेल लागि ॥३०२॥

निज सिनेह सुरपति छलभारे । देखत दुखी जन कृपाआगारे ॥१॥
सभा सचिव गुरु द्विज महिपाला । भरत भगति सबहुक मति ताला ॥२॥
रामहिँ चितवथि चित्र लिखल जनु । सकुचथि बाजथि बचन सिखल मनु ॥३॥
भरत प्रीति नति बिनय बड़ाई । बरनति कठिन सुनति सुखदाई ॥४॥
जनिक बिलोकि भगति लबलेसे । प्रेम मगन मुनिगन मिथिलेसे ॥५॥
महिमा कोना कहय तनि तुलसी । सुमति भगति बस हिय उठ हुलसी ॥६॥
निजहिँ छोट बुझि बड़ि गोट महिमा । सकुचय मति गुनि कवि कुल गरिमा ॥७॥
कहि न सकय गुन रुचि बड़ जागय । मति गति बाल बचन सन लागय ॥८॥

दोहा—भरत बिमल जस बिमल विधु, सुमति चकोर कुमारि।
उदित बिमल जन हृदय नभ, येक टक रहलि निहारि॥३०३॥

निगमहु सुगम न भरत सोभावे। कवि छमु लघुमति चंचल भावे॥१॥
कहति सुनति भरतक सदभावे। के न रामसिय पद रति पावे॥२॥
सुमिरति भरत राम रति जागल। जाहि न तहि सम क्यो न अभागल॥३॥
देखि दयाल दसा सबही केर। राम सुजान जानि जन जी केर॥४॥
धरमधुरीन धीर नय नागर। सत्य सिनेह सील सुख सागर॥५॥
देस काल लखि समय समाजे। नीति प्रीति पालक रघुराजे॥६॥
बजला बचन बानि सरबस सन। हित परिनाम सुनति ससि रस सन॥७॥
तात भरत अहँ धरमधुरीने। लोक वेद बिद प्रेम प्रवीने॥८॥

दोहा—करम बचन मानस बिमल, अहाँ अहीँ सन भाय।
गुरु समाज लघु बंधु गुन, कुसमय कहल न जाय॥३०४॥

जानी तात तरनिकुल रीती। सत्यसंध पितु कीरति प्रीती॥१॥
समय समाज लाज गुरु जन केर। उदासीन हित अनहित मन केर॥२॥
अहँ केँ बिदित सभक अछि करमो। अपनो हमर परम हित धरमो॥३॥
तव भरोस मोहि सकल प्रकारे। तदपि कही अबसर अनुसारे॥४॥
तात परोछ हमर सब बाता। कुलगुरु कृपे सम्हारल ताता॥५॥
न तौँ प्रजा परिबार जतेको। मम समेत सम्हरैत न एको॥६॥
जौँ बिनु अबसर अस्त दिनेसे। कहु ककरा जग हो न कलेसे॥७॥
तेँहने उकठ विधाता केलनि। मुनि मिथिलेस राखि सब लेलनि॥८॥

दोहा—राज काज सब लाज पति, धरम धरनि धन धाम।
गुरु प्रभाव पालित सकल, होयत नीक परिनाम॥३०५॥

तव मम सह समाज परिवारे। घर बन गुरु प्रसाद रखबारे॥१॥
माय बाप गुरु स्वामि निदेसे। सकल धरम धरनी धर सेसे॥२॥
सैह करिय हमरहु करबाबिय। रविकुल पालक तात कहाबिय॥३॥
साधक येक सब सिद्धिक श्रेनी। कीरति सुगति भूतिमय वेनी॥४॥

से बिचारि सहि संकट भारी । करू प्रजा परिवार सुखारी ॥५॥
बिपति बँटल हम सब पर साथे । कष्ट अवधि भरि बड़ तव माथे ॥६॥
अहँ केँ मृदु बुझि कही कठोरे । कुसमय तात न अनुचित मोरे ॥७॥
बंधु कुठामहुँ छोड़य न साथे । असनि अघातहुँ ओड़इछ हाथे ॥८॥

दोहा—सेवक कर पद नयन सम, स्वामी मुख सम थीक ।
प्रीति रीति तुलसी यहन, सुकबि सराहथि नीक ॥३०६॥

रघुवर बानी सभा अकानल । प्रेम पयोधि अमिय जनि सानल ॥१॥
सिथिल सिनेह समाधि समाजे । देखि दसा बानिहुँ नहि बाजे ॥२॥
भरतहिँ भेल परम संतोषे । सनमुख स्वामि बिमुख दुख दोषे ॥३॥
मुख प्रसन्न मन मेटल बिषादे । गोँग लहल जनि गिरा प्रसादे ॥४॥
कयल सप्रेम प्रनाम बहोरी । बजला पानि पंकरुह जोरी ॥५॥
पौलहुँ सुख प्रभु सँग जनि गेलहुँ । भेटल लाभ जनम जे लेलहुँ ॥६॥
प्रभुक निदेस आब हो जेहे । करब कृपालु माथ धय सेहे ॥७॥
देव देब से मोहि अधारे । जाहि सेबि होइ अबधिक पारे ॥८॥

सोरठा—देव देव अभिषेक हित, पाबि गुरुक आदेस ।
आनल अछि सब तीर्थ जल, की अछि तकर निदेस ॥३०७॥

एक मनोरथ मन बड़ रहले । भय सँकोच बस जाय न कहले ॥१॥
तात कहू सुनि प्रभुक निदेसे । बजला बचन सिनेह असेसे ॥२॥
चित्रकूट सुचि थल तीरथ बन । खग मृग सरि सर निरझर गिरिगन ॥३॥
प्रभु पद अंकित अवनि बिसेखी । हो निदेस तौँ आबी देखी ॥४॥
अबस माथ धय अत्रि निदेसे । बन बिचरन करु बिनु भय लेसे ॥५॥
मुनिक कृपेँ बन मंगलदाता । पाबन परम सोहाओन आता ॥६॥
रिषिनायक आयसु हो जाहाँ । राखू तीरथ जल अहँ ताहाँ ॥७॥
सुनि प्रभु वचन भरत सुख पाओल । मुनि पद कमल मुदित सिर नाओल ॥८॥

दोहा—भरत राम संवाद सुनि, सकल सुमंगल मूल ।
सुर स्वारथी सराहि कुल, बरषथि सुरतरु फूल ॥३०८॥

धन्य भरत जय राम गोसाँई । कहथि देव हरखथि बरिआई ॥१॥
सभा तथा मुनि मिथिलानाहे । भरत बचन सुनि भेल उछाहे ॥२॥
भरत राम गुन ग्राम सिनेहे । पुलकि प्रसंसथि भूप बिदेहे ॥३॥
सेबक स्वामि सोभाव सोहाबन । नेम प्रेम अति पाबन पाबन ॥४॥
मति अनुसार सराहय लगला । सचिब सभासद सब अनुरगला ॥५॥
सुनि सुनि राम भरत संबादे । दुहु समाज हिय हरष बिषादे ॥६॥
राममाय दुख सुख सम जानी । कहि रामक गुन बोधल रानी ॥७॥
क्यो रघुबीर बड़ाइ सुनाबय । क्यो पुनि भरतक महिमा गाबय ॥८॥

दोहा—अत्रि कहल भरतहिँ तखन, सैल समीप सुकूप ।
राखू तीरथ तोय तहँ, पाबन अमिय अनूप ॥३०९॥

पाबि भरत अत्रिक अनुसासन । अगुसारल कलसी जलभाजन ॥१॥
अपने अनुज अत्रि मुनि साधू । सहित गेला जहँ कूप अगाधू ॥२॥
पाबन पाथ पुन्य थल राखल । मुदित सप्रेम अत्रि ई भाखल ॥३॥
लुप्त काल बस रहल न बिदितहु । सिद्धिक थल अनादि ई रहितहु ॥४॥
सैह सरस थल सेबक देखी । कयल सुजल हित कूप बिसेखी ॥५॥
बिधि बस भेल बिस्व उपकारे । सुगम अगम अति धरम बिचारे ॥६॥
भरतकूप येकरा सब कहते । तीर्थ जलेँ अति पाबन रहते ॥७॥
प्रेम सनेम नहैतहिँ प्रानी । हैता बिमल करम मन बानी ॥८॥

दोहा—कहति कूप महिमा सबहु, गेला जतय रघुनाथ ।
अत्रि सुनौलनि रघुबरहिँ, तीरथ पाबन गाथ ॥३१०॥

कहति धरम इतिहास प्रसंगे । भेल भोर निसि गेल सुख संगे ॥१॥
भरत सत्रुहन नित्य क्रिया कय । राम अत्रि गुरु अनुमति पा कय ॥२॥
सहित समाज साज साधारन । चलला पैरहिँ घुमय रामबन ॥३॥
चलथि न पनही कोमल पग मे । भेल मृदु मही सकुचि मन मग मे ॥४॥
आँकड़ कटु कुबस्तु कुस काँटे । कयल दूर जे छल ओहि बाटे ॥५॥
महि मंजुल मृदु बाट बनाओल । सिहकि समीर त्रिबिध सुख लाओल ॥६॥

सुर फुल बरसि मेघ कय छाया । तरु फुलि फरि तृन कय मृदु काया ॥७॥
मृग बिलोकि खग बाजि सुबानी । सेवय सकल राम प्रिय जानी ॥८॥

दोहा—सुलभ सिद्धि सब प्राकृतहु, राम कहति हँफियाय ।
राम प्रानप्रिय भरत हित, ई नहि अधिक बुझाय ॥३११॥

फिरथि भरत बन मे येहि रीती । मुनि सकुचथि लखि नेम पिरीती ॥१॥
पुन्य जलाश्रय भूमि बिभागे । खग मृग तरु तृन गिरि बन बागे ॥२॥
चारु बिचित्र पवित्र बिसेखी । पूछथि भरत दिव्य सब देखी ॥३॥
सुनि रिषिराज कहथि मुद भावे । हेतु नाम गुन पुन्य प्रभावे ॥४॥
कतहु निमज्जन कतहु प्रनामे । कतहु बिलोकथि मन अभिरामे ॥५॥
मुनि अनुमतियेँ बैसि कतहु बन । करथि ससिय दुहु भाइक सुमिरन ॥६॥
देखि सोभाव सिनेह सुसेबा । आसिख देथि मुदित मन देबा ॥७॥
घुरथि अढ़ाइ पहर दिन भेने । प्रभु पद कमल बिलोकथि एने ॥८॥

दोहा—देखल थल तीरथ सकल, भरत पाँच दिन माँझ ।
कहति सुनति हरिहर सुजस, बितल दिबस भेल साँझ ॥३१२॥

भोर नहा सब जुटल समाजे । भरत भूमि सुर तिरहुति राजे ॥१॥
मन मे जानि आइ सुभ काले । कहइत सकुचथि राम कृपाले ॥२॥
गुरु नृप भरत सभा अबलोकल । सकुचि राम पुनि अवनि बिलोकल ॥३॥
सील सराहि सोच सब लोके । स्वामि सँकोचि राम सन हो के ॥४॥
भरत सुजान राम रुखि देखी । उठि सप्रेम धय धीर बिसेखी ॥५॥
कय दंडवत कहल जोरि हाथे । राखल हमर सकल रुचि नाथे ॥६॥
सबहु सँताप हमर हित सहले । नाना भाँति अहूँ दुख लहले ॥७॥
दियऽ निदेस आब मोहि देबा । करी अवधि भरि अवधक सेबा ॥८॥

दोहा—जन पुनि देखय जाहि बिधि, प्रभु पद दीनदयाल ।
से सिख दिय मोहि अवधि धरि, कोसल पाल कृपाल ॥३१३॥

पुरजन परिजन परजा ताता । सब सुचि सरस सिनेहक नाता ॥१॥
अहँ लगि भल भव पीड़ा सहबो । अहँ बिनु बृथा परम पद लहबो ॥२॥

स्वामि सुजान बुझी सब हिय गति । जन जिय रुचि लालसा रहनि मति ॥३॥
प्रनतपाल प्रभु सब कें पालू । करु दुहु दिसि निरबाह दयालू ॥४॥
येहि बिधि अछि भरोस मोहि भारी । तिल भरि सोच न होय बिचारी ॥५॥
प्रभुक छोह ओ आरति मोरे । दुहु मिलि कयल ढीठ बरजोरे ॥६॥
ई बड़ दोष दूरि कय स्वामी । तजि सँकोच दिय सिख अनुगामी ॥७॥
भरत बिनय सुनि कयल प्रसंसे । नीर छीर बिबरन बिधि हंसे ॥८॥

दोहा—**दीन बंधु सुनि बंधु केर, बचन दीन छल हीन ।**
देस काल अबसर बिहित, बजला राम प्रबीन ॥३१४॥

तात अहाँक मोर परिजन केर । चिंता गुरुहिँ नृपहिँ घर बन केर ॥१॥
सिर पर छथि गुरु मुनि मिथिलेसे । तोहि मोहि सपनहुँ न कलेसे ॥२॥
हमर अहाँक परम पुरुपारथ । स्वारथ सुजस धरम परमारथ ॥३॥
पितु निदेस करु पालन दुहु जन । लोक वेद भल नृपहुक हित बन ॥४॥
गुरु पितु मातु सचिब सिख करइत । अभल न हो कुपथहुँ पद धरइत ॥५॥
ई बिचारि सब सोच हटा कय । पालू अवध अबधि भरि जा कय ॥६॥
देस कोस परिजन परिवारे । गुरु पद रज निर्भर सब भारे ॥७॥
अहँ मुनि माय सचिब सिख मानी । पालू पुहुमि प्रजा रजधानी ॥८॥

दोहा—**मुखिया चाही मुखक सम, खान पान हित एक ।**
पालय पोसय सकल अँग, तुलसी सहित बिबेक ॥३१५॥

राज धरम सरबस ई तहिना । सब मन गुपुत मनोरथ जहिना ॥१॥
बंधु प्रबोध कयल बहु भाँती । बिनु अधार मन तोष न साँती ॥२॥
भरत सील गुरु सचिब समाजे । सकुच सिनेह बिबस रघुराजे ॥३॥
प्रभु कय कृपा पादुका देलनि । सादर भरत सीस धय लेलनि ॥४॥
चरनपीठ करुनानिधान केर । जनि जुग जामिक प्रजा प्रान केर ॥५॥
संपुट भरत सिनेह रतन केर । आखर जुग जनि जीव जतन केर ॥६॥
कुस कपाट कर कुसल करम केर । बिमल नयन सेवा सुधरम केर ॥७॥
भरत मुदित अवलंबन लहने । सुखी जेहन सियरामक रहने ॥८॥

दोहा—माँगल बिदा प्रनाम कय, राम लगा उर लेल ।
इंद्र कुटिल गओ़ँ लखि सभक, मन उचाट कय देल ॥३१६॥

से कुचालि हित भेल जहानक । अवधि आस सनजीवनि प्रानक ॥१॥
न तौँ लखन सियराम बियोगे । मरइत सभ क्यो हहरि कुरोगे ॥२॥
राम कृपेँ उरेब सब गेले । सुरगन गुन प्रद रच्छक भेले ॥३॥
मिलथि भरत सौँ गहि भुज छाती । राम प्रेम बस कहु कोन भाँती ॥४॥
तन मन बचन उमग अनुरागल । धीर धुरंधर धीरज त्यागल ॥५॥
बारिज लोचन मोचथि बारी । देखि दसा सुर सभा दुखारी ॥६॥
मुनिगन गुरु धुर धीर जनक सन । ज्ञान अनल मन कसल कनक सन ॥७॥
जनिका विधि निरलेप बनौलनि । जगजल पदुम पत्र उपजौलनि ॥८॥

दोहा—लखि सेहो रघुवर भरत, प्रीति अनूप अपार ।
मगन भेला तन मन बचन, सहित बिराग बिचार ॥३१७॥

जहँ गुरु जनक मतिक नहि थीती । कहब दोष बड़ प्राकृत प्रीती ॥१॥
बरनति रघुवर भरत बियोगे । सुनि कठोर कबि बूझत लोगे ॥२॥
से सँकोच रस अकथ सुबानी । सकुचल समय नेह हिय जानी ॥३॥
रघुवर मिलि भरतहिँ समुझौलनि । रिपुदमनहिँ हिय हरषि लगौलनि ॥४॥
सेवक सचिब भरत रुखि पा कय । निज निज काजहिँ लागल जा कय ॥५॥
सुनि दारुन दुख दुहू समाजे । लागल साजय चलइक साजे ॥६॥
प्रभु पद बंदि बंधु दुहु साथे । चलला राम बचन धय माथे ॥७॥
मुनि तापस बन देव मना कय । सबहिँ बहुरि सम्मान जना कय ॥८॥

दोहा—मीलि लखन सौँ प्रनमि पुनि, सिर धय सिय पद धूल ।
सुनि सप्रेम आसिस चलल, सकल सुमंगल मूल ॥३१८॥

सानुज राम प्रनमि कय भूपे । कयल बड़ाइ बिनय बहु रूपे ॥१॥
देव दया बस दुख बड़ पौलहुँ । सहित समाज बिपिन बिच ऐलहुँ ॥२॥
दय आसिख पधारु रजधानी । चलला नृपति धीर उर आनी ॥३॥
मुनि महिसुर साधुहिँ सनमानी । बिदा कयल हरि हर सम जानी ॥४॥

सासु समीप बंधु दुहु आबी । फिरला नमि पद आसिख पाबी ॥५॥
कौसिक बामदेव जाबाली । पुरजन परिजन सचिब सुचाली ॥६॥
जथाजोग कय बिनय प्रनामे । बिदा कयल सब सानुज रामे ॥७॥
बड़ लघु मध्य जते नर नारी । फेरल कृपासिंधु सतकारी ॥८॥

दोहा—भरत मातु पद बंदि प्रभु, सुचि सिनेह मिलि भेँटि ।
बिदा कयल सजि पालकी, सकुच सोच सब मेटि ॥३१९॥

मातु पिता परिजन मिलि सीता । फिरलि प्रानप्रिय प्रेम पुनीता ॥१॥
मिलल्हि सासु सभ सौँ पद कर गहि । कवि उर होइछ हुलास न किछु कहि ॥२॥
सुनि सिख अभिमत आसिष पायलि । रहली सिय दुहु प्रीति समायलि ॥३॥
रघुपति पटु पालकी मँगौलनि । सब मातहिँ परबोधि चढ़ौलनि ॥४॥
बेरि बेरि हिल मिल दुहु भ्राता । सम सिनेह पहुँचौलनि माता ॥५॥
साजि बाजि गज बाहन नाना । भरत भूप दल कयल प्रयाना ॥६॥
हृदय राम सिय लखन समेते । चलल जाथि सब लोक अचेते ॥७॥
बसह बाजि गज पसु हिय हारल । चलल जाय परबस मन मारल ॥८॥

दोहा—गुरु गुरुतिय पद बंदि प्रभु, सीता लखन समेत ।
घुरला हरष बिषाद सह, ऐला परननिकेत ॥३२०॥

बिदा निषादहिँ कय सतकारी । चलला हृदय बिरह दुख भारी ॥१॥
कोल किरात भिल बनचर जे टा । घुरल घुरौने नमि नमि से टा ॥२॥
प्रभु सिय लखन बैसि बट तरु तर । बिलपथि परिजन बिरहेँ कातर ॥३॥
भरत सिनेह सोभाव सुबानी । प्रिया अनुज सौँ कहथि बखानी ॥४॥
प्रीति प्रतीति बचन मन करनी । राम सप्रेम सुनाओल बरनी ॥५॥
ताहि समय खग मृग जल मीने । चित्रकूट चर अचर मलीने ॥६॥
बिबुध बिलोकि दसा रघुबर कैर । कहल बरषि फुल गति घर घर कैर ॥७॥
प्रनमि भरोस देल प्रभु बैसे । चलल मुदित मन नहि भय लेसे ॥८॥

दोहा—सानुज सीय समेत प्रभु, राजथि परन कुटीर ।
भगति ज्ञान बैराग्य जनि, सोभय धेने सरीर ॥३२१॥

मुनि महिसुर गुरु भरत भुआले । राम बिरह सब साज बेहाले ॥१॥
गुनइत मन मन प्रभु गुन गाथे । चुप चुप चलल जाथि सब पाथे ॥२॥
जमुना उतरि पार सब भेले । से बासर बिनु भोजन गेले ॥३॥
उतरि देवसरि दोसर बासे । रामसखा सब कयल सुपासे ॥४॥
सई उतरि गोमती नहैला । चारिम दिवस अवधपुर ऐला ॥५॥
रहला जनक अवध दिन चारी । राज काज सब साज सम्हारी ॥६॥
सौँपि सचिब गुरु भरतहिँ राजे । तिरहुति चलला सजि सब साजे ॥७॥
नगर नारि नर गुरु सिख मानी । सुख सौँ बसल राम रजधानी ॥८॥

दोहा—राम दरस हित लोक सब, करथि नेम उपबास ।
तजि तजि भूषन भोग सुख, जीबथि अबधिक आस ॥३२२॥

सेबक सचिबहिँ भरत बुझाओल । धयल से काज जेहन जे पाओल ॥१॥
पुनि सिख देल बजा लघु भाई । सौँपल सकल मातु सेबकाई ॥२॥
भूसुर बजा भरत कर जोड़ल । कय प्रनाम बर बिनय निहोरल ॥३॥
ऊँच नीच कारज भल पोचे । आदेसब न करब संकोचे ॥४॥
परिजन पुरजन प्रजहिँ बजाओल । समाधान कय सुबस बसाओल ॥५॥
सानुज गुरु गृह जाय बहोरी । कय दंडवत कहल कर जोरी ॥६॥
अनुमति हो तौँ रही सनेमे । बजला मुनि तन पुलकित प्रेमे ॥७॥
बूझब कहब करब अहँ जेहे । धरमक सार हैत जग सेहे ॥८॥

दोहा—सुनि सिख पाबि असीस बड़, गनक बजा दिन साधि ।
सिंहासन प्रभु पादुका, बैसौलनि निरुपाधि ॥३२३॥

राम मातु गुरु चरन नमा कय । प्रभु पद पीठक अनुमति पा कय ॥१॥
नंदिग्राम कय परन कुटीरे । कयल निवास धरमधुर धीरे ॥२॥
जटाजूट सिर मुनि पट धेलनि । खुनि धरती कुस आसन केलनि ॥३॥
असन बसन बासन ब्रत नेमे । करथि कठिन रिषि धरम सप्रेमे ॥४॥
भूषन बसन भोग सुख मूले । तन मन बचन तजल तृन तूले ॥५॥
अवधराज सुरराज सिहाथी । दसरथ धन सुनि धनद लजाथी ॥६॥

तहि पुर बसथि भरत बिनु रागे । चंचरीक जनि चंपक बागे ॥७॥
रमा बिलास राम अनुरागी । तजथि बमन इब जन बड़भागी ॥८॥

दोहा—राम प्रेम भाजन भरत, पैघ न ई करतूति ।
चातक हंस प्रसंस के, टेक बिबेक बिभूति ॥३२४॥

होइतहुँ दिन दिन दूबर देहे । कलित तेज बल मुख छबि सेहे ॥१॥
नित नब राम प्रेम प्रन पीने । बढ़य धरम दल मन न मलीने ॥२॥
जेना घटय जल सरद प्रकासे । ब्योम सुसोभित बनज बिकासे ॥३॥
सम दम संयम नियम उपासे । नखत भरत हिय बिमल अकासे ॥४॥
ध्रुव बिस्वास अबधि पुनमासी । स्वामि सुरति सुरबीथि बिकासी ॥५॥
राम प्रेम बिधु अचल अदोषे । सह समाज सोभय नित चोखे ॥६॥
भरतक रहनि सहनि करतूती । भगति बिरति गुन बिमल बिभूती ॥७॥
बरनति सकुच सुकबिगन जग मे । सेस गनेस सारदहुँ अगमे ॥८॥

दोहा—नित पूजथि प्रभु पादुका, हृदय समाय न प्रीति ।
माँगि माँगि अनुमति करथि, राज काज बहु रीति ॥३२५॥

पुलक गात हिय सिय रघुवीरे । जीभ नाम जप नयन सनीरे ॥१॥
लखन राम सिय कानन बसथी । भरत भबन रहि तप तन कसथी ॥२॥
कहथि दुहू दिसि बुझि सब लोगे । सब बिधि भरत सराहय जोगे ॥३॥
सुनि ब्रत नेम साधु सकुचाथी । देखि दसा मुनिराज लजाथी ॥४॥
परम पुनीत भरत आचरने । मधुर मंजु मुद मंगल करने ॥५॥
हरन कठिन कलि कलुष कलेसे । महा मोह निसि दलन दिनेसे ॥६॥
पाप पुंज कुंजर मृगराजे । समन सकल संताप समाजे ॥७॥
जन रंजन भंजन भव भारे । राम सिनेह सुधाकर सारे ॥८॥

छंद—सिय राम प्रेम पियूष पूरन भरत जनम न धरितथी ।
मुनि मन अगम जम नियम सम दम बिषम ब्रत के करितथी ॥

दुख दाह दारिद दंभ दूषन सुजस लाथे हरति के।
कलि काल तुलसी सन सठहुँ हठि राम सनमुख करति के ॥

सोरठा—भरत चरित कय नेम, तुलसी जे सादर सुनत।
सीय राम पद प्रेम, अवस हैत भव रस बिरत ॥३२६॥

मास पारायण, विश्राम—२१

इति श्रीरामचरितमानसस्य श्रीरामलोचनशरणविरचिते मैथिलीरूपान्तरे सकलकलिकलुष-विध्वंसने प्रेमवैराग्यसम्पादनो नाम द्वितीयः सोपानः समाप्तः।

श्रीसीतारामजी

मैथिली

श्रीरामचरितमानस

तृतीय सोपान (अरण्यकाण्ड)

मूलं धर्मतरोर्विवेकजलधेः पुर्णेन्दुमानन्ददं
वैराग्याम्बुजभास्करं ह्यघघनध्वान्तापहं तापहम् ।
मोहाम्भोधरपूगपाटनविधौ स्वःसम्भवं शङ्करं
वन्दे ब्रह्मकुलं कलङ्कशमनं श्रीरामभूपप्रियम् ॥१॥

सान्द्रानन्दपयोदसौभगतनुं पीताम्बरं सुन्दरं
पाणौ बाणशरासनं कटिलसत्तूणीरभारं वरम् ।
राजीवायतलोचनं धृतजटाजूटेन संशोभितं
सीता-लक्ष्मणसंयुतं पथिगतं रामाभिरामं भजे ॥२॥

सोरठा—उमा राम गुन गूढ़, पंडित मुनि पाबथि बिरति ।
पाबय मोह बिमूढ़, जे हरि बिमुख न धरम रति ॥

पुर नर भरतक प्रीति अनूपे । गौलहुँ सुभ निज मति अनुरूपे ॥१॥
सुनु प्रभु चरित आब सुभ पावन । करथि जे बन सुर नर मुनि भावन ॥२॥
एक बेरि चुनि कुसुम ललामे । भूषन निज कर बिरचल रामे ॥३॥
सीतहिँ पहिरौलनि प्रभु सादर । बैसला सुंदर फटिक सिला पर ॥४॥
सुरपति सुत सठ बायस बेखा । करय चाह रघुपति बल लेखा ॥५॥
जनि चूटी चह सागर थाहय । महा मंद मति तहिना चाहय ॥६॥
सीता चरन चोँच हति भागल । काग मंद मति हेतु अभागल ॥७॥
चलल लिधुर रघुनायक जानल । सीकिक धनुष बान संधानल ॥८॥

दोहा—अति कृपालु रघुनायक, सदा दीन पर नेह ।
आबि तनिक प्रति कयल छल, मूरुख अबगुन गेह ॥१॥

प्रेरित मंत्र ब्रह्मसर धाओल । चलल पड़ाय काक डर पाओल ॥ १॥
गेल पिता लग धय निज देहो । राम बिमुख राखल नहि सेहो ॥ २॥
बढ़ल त्रास मन भेल निरासा । जथा चक्र भय रिषि दुरबासा ॥ ३॥
ब्रह्मधाम सिबपुर सब लोके । भ्रमल अमित व्याकुल भय सोके ॥ ४॥
क्यो बैसय कहलक नहि ओही । राखि सकय के रामक द्रोही ॥ ५॥
माय मृत्यु पितु समन समाने । सुधा बनय बिष सुनु हरिजाने ॥ ६॥
मित्र करय सय सत्रुक करनी । सुरसरि तकरा प्रति बैतरनी ॥ ७॥
तनि हित जग अनलहुँ बढ़ि ताता । जे रघुबीर बिमुख सुनु भ्राता ॥ ८॥
नारद देखल बिकल जयंते । दया भेल कोमल चित संते ॥ ९॥
रामक निकट पठौलनि ताही । कयल गोहारि प्रनत हित पाही ॥१०॥
गहलक पद आतुर भय साथे । त्राहि त्राहि दयालु रघुनाथे ॥११॥
प्रभुता अतुल अतुल बल जे टा । हम मतिमंद न जानल से टा ॥१२॥
निज कृत करम जनित फल पैलहुँ । आब पाहि प्रभु सरनहिँ ऐलहुँ ॥१३॥
सुनि कृपालु अति आरत बानी । एक नयन कय तजल भवानी ॥१४॥

दोहा—कयल मोह बस द्रोह, जदपि ओकर बध उचित छल ।
प्रभु छोड़ल कय छोह, के कृपालु रघुबीर सम ॥२॥

रघुपति चित्रकूट बसि नाना । चरित कयल श्रुति सुधा समाना ॥१॥
येहन राम पुनि मन अनुमानल । बढ़त भीड़ सब हमरा जानल ॥२॥
मुनि समाज सौँ अनुमति लेलनि । सीता अनुज सहित चलि देलनि ॥३॥
जखन अत्रि आश्रम प्रभु गेला । सुनइत मुदित महामुनि भेला ॥४॥
उठि दौड़ला रिषि पुलकित भारी । देखि राम अयला झटकारी ॥५॥
करति दंडवत मुनि उर लाओल । प्रेम बारि दुहु बंधु नहाओल ॥६॥
देखि राम छबि दृग सुख मानल । सादर तनि निज आश्रम आनल ॥७॥
कय पूजा कहि सुंदर बानी । देल मूल फल प्रभु रुचि जानी ॥८॥

सोरठा--**प्रभु आसन आसीन, भरि लोचन सोभा निरखि ।**
मुनिबर राम प्रबीन, जोरि पानि असतुति करथि ॥३॥

छंद--**नमामि भक्तवत्सलं । कृपालु शील कोमलं ।**
भजामि ते पदांबुजं । अकामिनां स्वधामदं ॥१॥
निकाम - श्याम-सुन्दरं । भवांबु - नाथ मंदरं ।
प्रफुल्ल - कंज - लोचनं । मदादि - दोष-मोचनं ॥२॥
प्रलंब - बाहु - विक्रमं । प्रभोऽप्रमेय - वैभवं ।
निषंग - चाप - सायकं । धरं त्रि-लोक-नायकं ॥३॥
दिनेश - वंश - मंडनं । महेश - चाप - खंडनं ।
मुनींद्र - संत - रंजनं । सुरारि - बृन्द - भंजनं ॥४॥
मनोज - वैरि - वंदितं । अजादि - देव-सेवितं ।
विशुद्ध - बोध - विग्रहं । समस्तदूषणापहं ॥५॥
नमामि इंदिरापतिं । सुखाकरं सतां गतिं ।
भजे सशक्ति - सानुजं । शचीपति - प्रियानुजं ॥६॥
त्वदंघ्रिमूल ये नराः । भजंति हीनमत्सराः ।
पतंति नो भवार्णवे । वितर्क - वीचि-संकुले ॥७॥

विविक्तवासिनस्सदा । भजंति मुक्तये मुदा ।
निरस्य इंद्रियादिकं । प्रयान्ति ते गतिं स्वकं ॥८॥
त्वमेकमद्भुतं प्रभुं । निरीहमीश्वरं विभुं ।
जगद्गुरुं च शाश्वतं । तुरीयमेव केवलं ॥९॥
भजामि भाववल्लभं । कुयोगिनां सुदुर्लभं ।
स्वभक्त - कल्पपादपं । समं सुसेव्यमन्वहं ॥१०॥
अनूप - रूप - भूपतिं । नतोऽहमुर्विजापतिं ।
प्रसीद मे नमामि ते । पदाब्जभक्ति देहि मे ॥११॥
पठंति ये स्तवं इदं । नरादरेण ते पदं ।
व्रजंति नात्र संशयः । त्वदीय-भक्ति-संयुताः ॥१२॥

दोहा—बिनती कय मुनि सिर नमा, कहल जोरि पुनि हाथ ।
कहियो तजय न मति हमर, तव पद पंकज नाथ ॥४॥

अनसुइयाक चरन गहि सीता । मिलली जाय सुसील बिनीता ॥ १॥
रिषिपतनी मन बढ़ल हुलासे । आसिष दय बैसौलनि पासे ॥ २॥
दैलनि दिव्य भूषन पहिराओन । जे नित नूतन अमल सोहाओन ॥ ३॥
रिषिबधु कहल सरस मृदु बानी । नारि धरम किछु ब्याज बखानी ॥ ४॥
मातु पिता भ्राता हितकारी । मितप्रद सब सुनु राजकुमारी ॥ ५॥
पति वैदेहि अमितप्रद जानू । सेव न तिय जे अधमहि मानू ॥ ६॥
धीरज धरम मित्र ओ नारी । आपत काल परेखिय चारी ॥ ७॥
वृद्ध रोग बस जड़ धन हीने । अंध बधिर क्रोधी अति दीने ॥ ८॥
ओहु पति कें कयने अपमाना । लहय नारि जमपुर दुख नाना ॥ ९॥
एके धरम एक व्रत नेमे । काय बचन मन पति पद प्रेमे ॥१०॥
पतिब्रता चारि जहाने । वेद पुरान संत कर गाने ॥११॥
येहन भाव उत्तम केर मन मे । सपनहुँ आन न पुरुष भुबन मे ॥१२॥
मध्यम परपति देखथि केहन । भ्राता पिता पुत्र निज जेहन ॥१३॥
धरम बिचारि बूझि कुल रहइछ । से निकृष्ट तिय श्रुति ई कहइछ ॥१४॥

बिनु अबसर भय सौँ रह जेहे । जानू अधम नारि जग सेहे ॥१५॥
पति बंचक पर पति रति करइछ । रौरब नरक कलप सत पड़इछ ॥१६॥
छन सुख हित सय कोटिहु जनमे । दुख न बुझय तहि सम के अधमे ॥१७॥
बिनु श्रम नारि परम गति लहइछ । छल तजि धरम पतिब्रत गहइछ ॥१८॥
जनम लहय जहँ पति प्रतिकूले । पाब तरुनपन बैधब सूले ॥१९॥

सोरठा—सहज अपाबनि नारि, पति सेबइत सुभ गति लहथि ।
जस गाबथि श्रुति चारि, हरि प्रिय तुलसी आइ धरि ।
सुनु सीता तव नाम, सुमिरि नारि पतिब्रत करत ।
अहँक प्रान प्रिय राम, कहल कथा संसार हित ॥५॥

सुनि जानकी परम सुख पाओल । सादर हुनि पद माथ नमाओल ॥ १॥
मुनि सौँ कहलनि कृपानिधाने । हो आदेस जाइ बन आने ॥ २॥
सतत कृपा हमरा पर करबे । सेबक बुझि न नेह परिहरबे ॥ ३॥
धरमधुरंधर प्रभु कैर बानी । सुनि सप्रेम बजला मुनि ज्ञानी ॥ ४॥
जनिक कृपा अज सिव सनकादी । चाहथि सब परमारथवादी ॥ ५॥
सैह अहाँ अकाम प्रिय रामे । दीनबंधु बच कहल ललामे ॥ ६॥
श्री चतुराइ आब भेल भाने । भजलनि अहँकाँ तजि सुर आने ॥ ७॥
जनि सम अतिसय क्यो नहि आने । किय न येहन से सील निधाने ॥ ८॥
जाउ कोना कहबे हम स्वामी । कहू नाथ अहँ अंतरजामी ॥ ९॥
ई कहि प्रभु निरखथि मुनि धीरे । पुलकित तन बहइछ दृग नीरे ॥१०॥

छंद—तन पुलक निर्भर प्रेम पूरन नयन मुख पंकज दने ।
मन ज्ञान गुन गोतीत प्रभु हम लखल कोन जप तप कने ॥
जप जोग धरम समूह सौँ नर भगति अनुपम पाबथी ।
रघुवीर चरित पुनीत निसि दिन दास तुलसी गाबथी ॥

दोहा—कलिमल समन दमन मन, राम सुजस सुख मूल ।
सादर सुनथि जे तनि उपर, राम रहथि अनुकूल ॥

सोरठा—कठिन काल मल कोस, धरम न ज्ञान न जोग जप ।
परिहरि सकल भरोस, राम भजथि से चतुर नर ॥६॥

मुनि पद कमल नमा कय सीसे । चलला बन सुर नर मुनि ईसे ॥१॥
आगू राम पाछु लघु भ्राता । मुनिबर बेष मनोहर गाता ॥२॥
उभय बीच श्री सोभथि केना । ब्रह्म जीव बिच माया जेना ॥३॥
सरिता बन गिरि औघट घाटे । पति पहिचानि देइ छ बर बाटे ॥४॥
जहँ जहँ जाथि देव रघुराया । मेघ करय तहँ तहँ नभ छाया ॥५॥
असुर बिराध चलति पथ भेटल । तनि रघुबीर पलहिँ आखेटल ॥६॥
तुरतहिँ रुचिर रूप से पाओल । देखि दुखी निज धाम पठाओल ॥७॥
पुनि ऐला जहँ मुनि सरभंगे । सुंदर अनुज जानकी संगे ॥८॥

दोहा—रामक मुख पंकज निरखि, मुनिबर लोचन भृंग ।
पान करय सादर अमित, धन्य जन्म सरभंग ॥७॥

कह मुनि सुनु रघुबीर कृपाले । संकर मानस राज मराले ॥१॥
जाइत छलहुँ बिरंचिक धामे । सुनल श्रवन बन औता रामे ॥२॥
तकइत पथ रहलहुँ दिन राती । आब जुड़ैल प्रभुहिँ लखि छाती ॥३॥
नाथ सकल साधन हम हीने । कयलहुँ कृपा जानि जन दीने ॥४॥
से किछु देव न हमर निहोरे । निज पन रखलहुँ जन मन चोरे ॥५॥
ता धरि रहिअ दीन हित लागी । जा धरि मिली तोहि तन त्यागी ॥६॥
जप तप व्रत जग जोग जे केलनि । प्रभु केँ सौँपि भगति बर लेलनि ॥७॥
येहि विधि सर रचि मुनि सरभंगे । बैसला हृदय त्यागि सब संगे ॥८॥

दोहा—सीता अनुज समेत प्रभु, नील जलद तन स्याम ।
बसू निरंतर हमर हिय, सगुन रूप श्री राम ॥८॥

कहइत जोग अगिनि तन जारल । राम कृपेँ बैकुंठ सिधारल ॥१॥
तहि सौँ मुनि हरि लीन न भेले । पहिनहिँ भेद भगति बर लेले ॥२॥
रिषि निकाय मुनिबर गति देखी । सुखी भेला निज हृदय बिसेखी ॥३॥
असतुति करथि सकल मुनि बृंदे । जयति प्रनत हित करुना कंदे ॥४॥

आगू बन चलला रघुनाथे । मुनिबर बृंद बिपुल भेल साथे ॥५॥
अस्थि समूह देखि रघुराजे । पुछल दया भरि मुनिक समाजे ॥६॥
जनितहुँ की पुछैत छी स्वामी । सबदरसी अहँ अंतरजामी ॥७॥
निसिचरगन मुनिगन केँ खायल । सुनि रघुवीर नयन भरि आयल ॥८॥

दोहा—करब निसाचर हीन महि, भुज उठाय ब्रत लेल ।
सब मुनिगन केँ आश्रमहिँ, जाय जाय सुख देल ॥९॥

मुनि अगस्त केर सिष्य सुजाने । नाम सुतीछन रति भगवाने ॥ १॥
मन क्रम बचन राम पद सेवक । सपनहुँ आस न दोसर देवक ॥ २॥
प्रभु आगमन श्रवन सुनि पाओल । करति मनोरथ आतुर धाओल ॥ ३॥
विधि की दीनबंधु रघुराया । मम सम सठ पर करता दाया ॥ ४॥
सानुज राम गोसाइँ आबि पुनि । मिलता की हमरा सेवक गुनि ॥ ५॥
मम मन दृढ़ न भरोस कनेको । भगति बिरक्ति ज्ञान नहि एको ॥ ६॥
नहि सतसंग जोग जप जागे । नहि दृढ़ चरन कमल अनुरागे ॥ ७॥
एक बानि ई कृपानिधानक । प्रिय से जकरा गति नहि आनक ॥ ८॥
होयत सफल आइ मम लोचन । देखि बदन पंकज भव मोचन ॥ ९॥
निर्भर प्रेम मगन मुनि ज्ञानी । कहि न होअय से दसा भवानी ॥१०॥
पथ दिसि बिदिसि न ताहि सुझाइछ । के हम कहँ चललहुँ न बुझाइछ ॥११॥
कखनहुँ घूरि पाछु पुनि आबथि । कखनहुँ नाचि नाचि गुन गाबथि ॥१२॥
पौलनि प्रेम भगति मुनि गाढ़े । प्रभु देखथि तरु ओटहिँ ठाढ़े ॥१३॥
अमित प्रीति रघुवीर निहारी । प्रगट भेला हिय भवभयहारी ॥१४॥
बैसला पथहिँ अचल मुनि धीरा । पनसक फल सन पुलक सरीरा ॥१५॥
रघुपति तखन निकट चलि ऐला । निज जन दसा देखि हरषैला ॥१६॥
मुनिहिँ राम बहु भाँति जगावथि । जाग न ध्यान जनित सुख पाबथि ॥१७॥
भूप रूप झट राम नुकौलनि । हृदय चतुरभुज रूप देखौलनि ॥१८॥
मुनि अकुला उठला झट केना । बिकल हीन मनि फनिबर जेना ॥१९॥
आगू देखि राम तन स्यामे । सीता अनुज सहित सुखधामे ॥२०॥
भुज बिसाल सौँ पकड़ि उठौलनि । परम प्रीति सँग हृदय लगौलनि ॥२१॥

मुनि सौँ भेँटइत सोभ कृपाले । मिलय कनक तरु जेँना तमाले ॥२२॥
लखथि राम मुख मुनि ठकुआयल । मानु चित्र मे छला लिखायल ॥२३॥

दोहा—पुनि हिय मे मुनि धीर धय, गहि पद बारंबार ।
निज आश्रम प्रभु आनि कय, पुजलनि बिबिध प्रकार ॥१०॥

मुनि कह सुनु प्रभु बिनती मोरे । असतुति करू कोन बिधि तोरे ॥ १॥
महिमा अमित हमर मति छोटे । रवि लग भगजोगनी जत गोटे ॥ २॥
स्याम तामरस दाम सरीरं । जटा मुकुट पहिरन मुनि चीरं ॥ ३॥
पानि चाप सर कटि तूनीरं । नौमि निरंतर श्रीरघुवीरं ॥ ४॥
मोह बिपिन घन दहन कृसानुः । संत सरोरुह कानन भानुः ॥ ५॥
निसिचर करि बरूथ मृगराजः । त्रातु सदा नो भव खग बाजः ॥ ६॥
अरुन नयन राजीब सुबेसं । सीता नयन चकोर निसेसं ॥ ७॥
हर हृदि मानस बाल मरालं । नौमि राम उर बाहु बिसालं ॥ ८॥
संसय सर्प असन उरगादः । समन सु कर्कस तर्क बिषादः ॥ ९॥
भव भंजन रंजन सुर जूथः । त्रातु सदा नो कृपा बरूथः ॥१०॥
निरगुन सगुन बिषम सम रूपं । ज्ञान गिरा गोतीतमनूपं ॥११॥
अमलमखिलमनवद्यमपारं । नौमि राम भंजन महि भारं ॥१२॥
भक्त कल्प पादप आरामः । तर्ज्जन क्रोध लोभ मद कामः ॥१३॥
अति नागर भवसागर सेतुः । त्रातु सदा दिनकरकुल केतुः ॥१४॥
अतुलित भुज प्रताप बल धामः । कलि मल बिपुल बिभंजन नामः ॥१५॥
धर्म वर्म नर्मद गुनग्रामः । संतत संतनोतु मम रामः ॥१६॥
जदपि बिरज ब्यापक अबिनासी । सबहुक हृदय निरंतर बासी ॥१७॥
तदपि अनुज श्री सहित खरारी । बसथु हमर मन काननचारी ॥१८॥
जे जानथि से जानथु स्वामी । सगुन अगुन उर अंतरजामी ॥१९॥
जे कोसलपति राजिबनयने । करथु राम से मम हिय अयने ॥२०॥
भ्रमहु न हो अभिमानक अंते । हम सेवक रघुपति मम कंते ॥२१॥
सुनि मुनि बचन राम मन भाओल । हरषि मुनिहिँ पुनि हृदय लगाओल ॥२२॥
परम प्रसन्न जानु मुनि मोही । जे बर माँगब देब सेँ तोही ॥२३॥
मुनि कह बर मँगलहुँ नहि कहियो । बूझि सकी नहि भूठो सहियो ॥२४॥

जैह रुचय अहँ केँ रघुनायक । से मोहि दियऽ दास सुखदायक ॥२५॥
अबिरल भगति बिरति बिज्ञाने । होउ सकल गुन ज्ञान निधाने ॥२६॥
जे प्रभु देलहुँ पौल बर सेहे । आब दियऽ मोहि भावय जेहे ॥२७॥

दोहा—अनुज जानकी सहित प्रभु, चाप बान धर राम ।
मम हिय नभ बिच इंदु इव, सदा बसू निष्काम ॥११॥

एवमस्तु कहि रमा निवासे । चलला हरषि घटजरिपि पासे ॥ १॥
बहु दिन भेल गुरु दरसन कैले । हमरा येहि आश्रम मे ऐले ॥ २॥
गुरु लग जाइ आब प्रभु साथे । अहँक निहोरा नहि अछि नाथे ॥ ३॥
देखि कृपानिधि मुनि चतुराई । लेलनि सँग बिहुँसति दुहु भाई ॥ ४॥
बाट कहति निज भगति अनूपे । मुनिआश्रम गेला सुर भूपे ॥ ५॥
तुरत सुतीछन गुरु लग गेला । कय दंडवत कहति ई भेला ॥ ६॥
नाथ कोसलाधीस कुमारे । ऐला मिलय जगत आधारे ॥ ७॥
सहित अनुज बैदेही रामे । जपी अहाँ जनि आठो जामे ॥ ८॥
सुनि अगस्ति ऐला झटकारी । हरिहिँ बिलोकि नयन ढर बारी ॥ ६॥
दुहु भ्राता मुनि पद मे पड़ला । रिषि उर लगा प्रीति सौँ भरला ॥१०॥
सादर कुसल पूछि मुनि ज्ञानी । आसन पर बैसौलनि आनी ॥११॥
कय प्रभु पूजा बहुत बिधाने । कहल हमर सम धन्य न आने ॥१२॥
छला जतेक अपर मुनि बृंदे । सब हरषयला लखि सुखकंदे ॥१३॥

दोहा—मुनि समूह मे बैसला, सनमुख सबहुक ओर ।
सरद इंदु तन चितथि सब, मानू निकर चकोर ॥१२॥

पुनि रघुबीर मुनिहिँ ई कहले । अहँ सौँ प्रभु किछु गुपुत न रहले ॥ १॥
अहँ जानी जहि कारन ऐलहुँ । तात न तैँ हम कहि समुझैलहुँ ॥ २॥
आब मंत्र से दिय प्रभु मोही । जहि प्रकार मारी मुनि द्रोही ॥ ३॥
मुनि मुसकयला सुनि प्रभु बानी । पुछल नाथ हमरा की जानी ॥ ४॥
भजन प्रभाव अहीँक अघारी । जानी किछु तव महिमा भारी ॥ ५॥
डूमरि तरु बिसाल तव माया । फल ब्रह्मांड अनेक निकाया ॥ ६॥

जीव चराचर जंतु समाने । भीतर बसय न जानय आने ॥ ७॥
से फल भच्छक कठिन कराले । तव भय डरय सदा से काले ॥ ८॥
से अहँ सकल लोकपति स्वामी । पुछी मनुज इव अंतरजामी ॥ ९॥
ई बर माँगी कृपानिकेते । बसू हृदय श्री अनुज समेते ॥१०॥
अबिरल भगति बिरति सतसंगे । चरन सरोरुह प्रीति अभंगे ॥११॥
जद्यपि ब्रह्म अखंड अनंते । अनुभव गम्य भजथि जहि संते ॥१२॥
येहन रूप तव जानि बखानी । पुनि पुनि सगुन ब्रह्म रति मानी ॥१३॥
सतत बड़ाइ दास केँ दैछी । की तेँ रघुपति अहाँ पुछैछी ॥१४॥
अछि प्रभु परम मनोहर ठामे । पावन पंचबटी तसु नामे ॥१५॥
दंडक बन पुनीत प्रभु करबे । उग्र साप मुनिबर केँर हरबे ॥१६॥
बास करब तहँ रघुकुल राया । करू सकल मुनिगन पर दाया ॥१७॥
मुनि आज्ञा लय राम सिधायल । पंचबटी लगले लगिचायल ॥१८॥

दोहा—गीधराज सौँ भेँट कय, बहु बिधि प्रीति बढ़ाय ।
गोदाबरि लग परनगृह, प्रभु रहलाह बनाय ॥१३॥

कयलनि राम लखन सौँ बासे । सुखी भेला मुनि बीतल त्रासे ॥१॥
गिरि बन सरि पोखरि छवि पावन । दिन दिन हो अतिसय मनभावन ॥२॥
रहय अनंदित खग मृग पुंजे । सोभय मधुकर करइत गुंजे ॥३॥
बरनति से बन सेषहुँ भीरे । जतय प्रगट राजथि रघुवीरे ॥४॥
एक बेरि प्रभु सुख आसीने । लछुमन बचन कहल छल हीने ॥५॥
सुर नर मुनि सचराचर स्वामी । निज प्रभु बुझि पूछी अनुगामी ॥६॥
हमरा बुझा कहू से देबा । सब तजि करी चरन रज सेबा ॥७॥
कहु मोहि ज्ञान बिराग ओ माया । कहु से भगति करी जहि दाया ॥८॥

दोहा—ईस्वर जीवक भेद प्रभु, सबटा कहू बुझाय ।
होअय जाहि सौँ चरन रति, सोक मोह भ्रम जाय ॥१४॥

थोड़बहिँ मे सब कही बुझा कय । सुनु अहँ मति मन चित्त लगा कय ॥१॥
हम ओ हमर तोहर तोँ माया । जे बस कयलक जीव निकाया ॥२॥

गो गोचर मन जाइछ जत धरि । तात जानु माया से तत धरि ॥३॥
तकर भेद जे अछि से सूनू । विद्या अपर अविद्या दूनू ॥४॥
एक दुष्ट अतिसय दुख रूपे । जहि बस जीव पड़य भव कूपे ॥५॥
एक रचय जग गुन बस जकरा । प्रभु प्रेरित नहि निज बल तकरा ॥६॥
ज्ञान सैह जहँ नहि अभिमाने । हेरय सबतरि ब्रह्म समाने ॥७॥
बुझू तात से परम बिरागी । जे तृन सम सिधि तिनि गुन त्यागी ॥८॥

दोहा—जीव से माया ईस ओ, निज केँ जे न जनैछ ।
ईस से माया प्रेरि सब, बंध मोच्छ जे दैछ ॥१५॥

धरम सौँ बिरति जोग सौँ ज्ञाने । ज्ञान मोच्छ प्रद वेद प्रमाने ॥ १॥
जहि सौँ बेगि द्रवी हम भ्राता । से मम भगति भगत सुखदाता ॥ २॥
से सुतंत्र अबलंब न आने । तकर अधीन ज्ञान बिज्ञाने ॥ ३॥
भगति तात अनुपम सुख मूले । मिलय जँ संत होथि अनुकूले ॥ ४॥
भगतिक साधन कही बखानी । सुगम पंथ मोहि पाबय प्रानी ॥ ५॥
प्रथम बिप्र पद मे अति प्रीती । निज निज करम निरत श्रुति रीती ॥ ६॥
देकर सुफल मन बिषय बिरागे । हो मम धरम तखन अनुरागे ॥ ७॥
दृढ़ हो श्रवन आदि नओ भकती । मन अति मम लीला अनुरकती ॥ ८॥
संत चरन पंकज अति प्रेमे । मन क्रम बचन भजन दृढ़ नेमे ॥ ९॥
गुरु पितु मातु बंधु पति देवा । सब मे मोहि बुझि कर दृढ़ सेवा ॥१०॥
मम गुन गबइत पुलक सरीरे । गदगद गिरा नयन बह नीरे ॥११॥
काम आदि मद दंभ न जनिका । तात निरंतर बस हम तनिका ॥१२॥

दोहा—बचन करम मन हमर गति, भजन करथि निष्काम ।
तनिके हृदय सरोज मे, करी सदा बिश्राम ॥१६॥

भगति जोग सुनि अति सुख पौलनि । लछुमन प्रभु पद माथ नमौलनि ॥ १॥
दिन कतोक येहि बिधि गेल बीती । कहति बिराग ज्ञान गुन नीती ॥ २॥
सूर्पनखा छल रावन बहिनी । दुष्ट हृदय दारुन जनु अहिनी ॥ ३॥
येक बेरि पंचवटी से पहुँचलि । युगल कुमर लखि भेलि से बिह्वलि ॥ ४॥

भ्राता पिता पुत्र उरगारी । पुरुष मनोहर देखितहि नारी ॥ ५॥
होअय विकल मन सकय न रोकी । जनि रविमनि द्रव रविहिँ बिलोकी ॥ ६॥
रुचिर रूप धय प्रभु लग जा कय । बाजलि बचन बहुत मुसुका कय ॥ ७॥
तव सम पुरुष न मम सम नारी । ई सुयोग विधि रचल बिचारी ॥ ८॥
मम अनुरूप पुरुष नहि एको । तकलहुँ हारि त्रिलोक जतेको ॥ ९॥
तैँ छि यौवन धरि बनलि कुमारी । किछु मन मानल तोहि निहारी ॥१०॥
सीतहिँ चितति कहल प्रभु बाता । छथि कुमार ई मम लघु भ्राता ॥११॥
गेलि लछुमन रिपु भगिनी जानी । प्रभुहिँ निरखि बजला मृदु बानी ॥१२॥
सुंदरि सुनु हम हुनकर दासे । पराधीन नहिँ अहँक सुपासे ॥१३॥
प्रभु समरथ कोसलपुर राजे । सब तनि छज करता जे काजे ॥१४॥
सेवक सुख चह मान भिखारी । ब्यसनी धन सुभ गति ब्यभिचारी ॥१५॥
लोभी जस चह चार गुमानी । नभ दुहि दूध चाह से प्रानी ॥१६॥
पुनि फिरि राम निकट गेलि प्रेरल । प्रभु पुनि तहि लछुमन लग फेरल ॥१७॥
लछुमन कहल तोहि से बरते । जे तृन तोड़ि लाज परिहरते ॥१८॥
खिसिया तखन राम लग झपटलि । रूप भयान सहज निज प्रगटलि ॥१९॥
लखि रघुपति सीता भय पाओल । अनुजहिँ कय संकेत बुझाओल ॥२०॥

दोहा—लछुमन चटपट काटलनि, नाक कान दुहु अंग ।
रावन केँ नोतल तनिक, हाथेँ जनु रनरंग ॥१७॥

नाक कान बिनु भेलि बिकराले । जनि गिरि सौँ स्रब गेरु पनाले ॥ १॥
खर दूषन लग जा कय कलपल । धिक धिक रे तोहर पौरुष बल ॥ २॥
पुछितहिँ कहल बुझा जे जेना । जातुधान सुनि सजलक सेना ॥ ३॥
दौड़ल निसिचर निकर बरूथे । जनि सपच्छ कज्जल गिरि जूथे ॥ ४॥
नाना बाहन नानाकारे । नानायुध धर घोर अपारे ॥ ५॥
कयलनि सूर्पनखहिँ अगरेसे । बिनु श्रुति नाक अमंगल भेसे ॥ ६॥
असगुन अमित होअय भयकारी । गनय न मृत्यु बिबस निसिचारी ॥ ७॥
गरजय तरजय नभ मे फानय । देखि कटक भट अति मुद मानय ॥ ८॥
क्यो कह जिबित भाय दुहु लाबह । धय मारह तिय छिनि लय आबह ॥ ९॥
धूरि भरल नभ मंडल जा कय । कहल अनुज सौँ राम बजा कय ॥१०॥

लय जानकी जाउ गिरि कंदर । ऐल निसाचर कटक भयंकर ॥११॥
रहब सतर्क प्रभुक सुनि बानी । चलला सह श्री सर धनु पानी ॥१२॥
राम निरखि रिपु दल कें आयल । बिहुँसि कठिन कोदंड चढ़ायल ॥१३॥

छंद—कोदंड कठिन चढ़ाय सिर, जट जूट बन्हइत रुच केना ।
मरकतक गिरि पर लड़य दामिनि कोटि सौँ दुइ अहि जेना ॥
कटि कसि निषंग बिसाल भुज, गहि चाप बिसिख सुधारि कै ।
प्रभु चितथि जनि मृगराज गजराजक समूह निहारि कै ॥

सोरठा—धाओल ढेरक ढेर, धर धर कहइत निकट भट ।
येकसर लखि जनि घेर, बाल रविहिँ बहु दनुज दल ॥१८॥

लखि प्रभु कें सर सक न प्रहारी । थकित भेल रजनीचर धारी ॥ १॥
सचिवहिँ बजा कहल खर दूषन । ई क्यो नृप बालक नर भूषन ॥ २॥
नाग असुर सुर मुनि नर नाना । देखल जितल कयल हत प्राना ॥ ३॥
हम भरि जन्म सुनू सब भाई । देखल न एहन सुंदरताई ॥ ४॥
जदपि बहिनि कें कयल कुरूपे । बधक जोग नहि पुरुष अनूपे ॥ ५॥
दिअय तुरंत नुकाओलि नारी । फिरय घरहिँ दुहु प्रान सम्हारी ॥ ६॥
ओकरा तोँ मम कथन सुनाबह । ओकर कहब सुनि झट फिरि आबह ॥ ७॥
चर सब कहल राम सौँ जा कय । सुनति राम बजला मुसुका कय ॥ ८॥
हम छत्री बन करी सिकारे । ताकी खग मृग तोर प्रकारे ॥ ९॥
बली सत्रु लखि हम न डरैछी । कालहुँ सौँ एक बेरि लड़ैछी ॥१०॥
जद्यपि मनुज दनुज कुल घालक । मुनि पालक खल सालक बालक ॥११॥
जाह घूरि घर जौँ नहि जोरे । समर बिमुख बध नीति न मोरे ॥१२॥
रण चढ़ि बिरचब कपट चतुरता । रिपु पर कृपा परम कायरता ॥१३॥
घुरि तुरंत कहलक सब दूते । सुनि खर दूषन कुपित बहूते ॥१४॥

छंद—उर कुपित पकड़य कहल दौड़ल बिकट भट रजनीचरे ।
सर चाप तोमर सक्ति सूल कुठार खडग परिघ करे ॥

प्रभु कयल धनु टंकार प्रथम कठोर घोर भयंकरे ।
मुनि बधिर ब्याकुल भेल, दनुज न रहल सुधि तहि अवसरे ॥

दोहा—सावधान धावित तुरित, जानि सबल आराति ।
लागल बरषय राम पर, अस्त्र सस्त्र बहु भाँति ॥
सत्रुक आयुध तिल सरिस, कयल काटि रघुवीर ।
तानि सरासन श्रवन धरि, पुनि छोड़ल निज तीर ॥१९॥

छंद—सर चलल तखन कराल । फुफुआति जनि बहु ब्याल ।
रन कुपित भेल श्रीराम । चल बिसिख निसित निकाम ॥
अवलोकि खरतर तीर । मुड़ि चलल निसिचर बीर ।
भेल क्रुद्ध तीनू भाय । जे भागि रन सौं जाय ॥
तहि बधब हम निज पानि । घुर मरन मन मे ठानि ।
आयुध अनेक प्रकार । सनमुख करैछ प्रहार ॥
रिपु परम कोपल जानि । प्रभु धनुष सर संधानि ।
छोड़ल बिपुल नाराच । बहु कटय बिकट पिसाच ॥
करभुज चरन उर सीस । लागल खसय चहु दीस ।
चिक्करय लगइत बान । धड़ खसय कुधर समान ॥
भट कटय तन सत खंड । पुनि उठय कय पाखंड ॥
नभ उड़य बहु भुज मुंड । बिनु मौलि दौड़य रुंड ॥
खग कंक काक शृगाल । कट कटय कठिन कराल ॥

छंद—कट कटय जंबुक भरय खप्पर भूत प्रेत पिसाच जे ।
बेताल बीर कपाल ताल बजाब जोगिनि नाच जे ॥
रघुबीर बान प्रचंड खंडय भट सभक उर भुज सिरा ।
जहँ तहँ खसय उठि लड़य धड़ धरु धरु करय भयकर गिरा ॥

अंतावरी गहि उड़य गीध पिसाच कर गहि धाव यो ।
संग्रामपुर बासी जंना बहु बाल गुड्डि उड़ाव यो ॥
मारल पछारल उर विदारल बिपुल भट कुहरति गिरै ।
अवलोकि निज दल विकल भट त्रिसिरादि खर दूषन फिरै ॥
सर सक्ति तोमर परसु सूल कृपान एकहि बेर यो ।
कय कोप श्रीरघुवीर पर फेकय निसाचर ढेर यो ॥
प्रभु निमिष मे रिपुसर निवारि प्रचारि फेकल सायके ।
दस दस बिसिख उर माँझ मारल सकल निसिचर नायके ॥
महि खसय उठि भट भिड़य मरय न करय माया घन अती ।
सुर डरय चौदह सहस प्रेत बिलोकि यक अवधक पती ॥
सुर मुनिहिँ प्रभु लखि सभय कौतुक कयल अति माया धनी ।
देखइछ परसपर राम अपनहि मे मुइल लड़ि रिपुअनी ॥

दोहा—राम राम कहि तन तजय, पावय पद निरबान ।
कय उपाय रिपु बध कयल, छन मे कृपानिधान ॥
हरषित बरषथि सुमन सुर, बाजय गगन निसान ।
असतुति कय कय सब चलल, सोभित गगन बिमान ॥२०॥

रघुपति जखन समर रिपु जीतल । सुर नर मुनि सबहुक भय बीतल ॥ १॥
पुनि लछुमन सिय केँ लय एला । प्रनमति प्रभु हिय लगबति भेला ॥ २॥
सीता चितथि स्याम मृदु देहे । नयन अघाय न परम सिनेहे ॥ ३॥
पंचबटी बसि श्री रघुनायक । करथि चरित सुर मुनि सुख दायक ॥ ४॥
खर दूपनक धुआँ से हेरल । जाय सुपनखा रावन प्रेरल ॥ ५॥
बाजलि बचन क्रोध कय भारी । देस कोस केर सुरति बिसारी ॥ ६॥
करह पान सूतह दिन राती । सुधि नहिँ तव सिर पर आराती ॥ ७॥
राजनीति बिनु धन बिनु धरमे । हरिहिँ समरपन बिनु सतकरमे ॥ ८॥

बिद्या बिनु बिबेक उपजौने । श्रम फल पढ़ने केने पौने ॥ ९॥
संगे जती कुमंत्रे राजा । माने ज्ञान पान सौं लाजा ॥१०॥
मद सौं गुनी प्रनय बिनु प्रीती । नसइछ बेगि सुनी ई नीती ॥११॥

सोरठा—रिपु रुज पावक पाप, प्रभु अहि गनिय न छोट कय ।
ई कहि बिबिध बिलाप, पुनि लागलि रोदन करय ॥

दोहा—सभा बीच ब्याकुलि खसलि, बाजलि बहु बिधि कानि ।
दसकंधर जिबितहिँ तोहर, हमर येहन गति हानि ॥२१॥

उठल सभासद सुनि अकुला कय । कत बुझौल गहि बाँहि उठा कय ॥१॥
कह लंकेश कहह तों बाते । नाक कान के कयल निपाते ॥२॥
अवध नृपति दसरथक कुमारे । पुरुषसिंह बन करथि सिकारे ॥३॥
बुझा पड़ल मोहि हुनकर करनी । रहित निसाचर करता धरनी ॥ ४॥
जनिकर भुजबल पाबि दसानन । निरभय मुनिगन बिचरथि कानन ॥ ५॥
देखइत बालक काल समाने । परम धीर धन्वी गुनवाने ॥ ६॥
अतुलित बल प्रताप दुहु भ्राता । खल बध रत सुर मुनि सुखदाता ॥ ७॥
सोभा धाम राम थिक नामा । तनिक संग येक नारी स्यामा ॥ ८॥
रूप रासि विधि सिरजल नारी । रति सय कोटि तासु बलिहारी ॥ ९॥
तनिक अनुज काटल श्रुति नासा । सुनि तव बहिनि कयल परिहासा ॥१०॥
सुनि गोहारि खर दूषन धाओल । तकर कटक से छनहिँ नसाओल ॥११॥
खर दूषन त्रिसिरादिक घाते । सुनि दसमुखक जरल सब गाते ॥१२॥

दोहा—सूर्पनखा केँ कत बुझा, कहि निज बल बहु भाँति ।
गेल भवन अति सोच वस, निंद पड़ल नहि राति ॥२२॥

सुर नर असुर नाग खग गन मे । मम अनुचर सम क्यो न भुवन मे ॥१॥
खरदूषन मम सम बलवंते । के हत तकरा बिनु भगवंते ॥२॥
सुर रंजन भंजन महि भारे । जौं भगवंत लेलनि अवतारे ॥३॥
तौं हम जाय बैरि हठि करबे । तजि प्रभु सरें प्रान भव तरबे ॥४॥

होयत भजन नहि तामस देहे । मन क्रम बचन मंत्र दृढ़ एहे ॥५॥
जौँ नृप तनय होथि क्यो मानव । तौँ रन मारि नारि छिनि आनब ॥६॥
येकसर चलल जान चढ़ि ताहाँ । रह मारीच सिंधु तट जाहाँ ॥७॥
येतय जुगुति जे कयलनि रामे । सुनू उमा से कथा ललामे ॥८॥

दोहा—लछुमन गेला बन जखन, लेबय मूल फल कंद ।
बजला जनककुमारि सौँ, बिहुँसि कृपा सुखबृंद ॥२३॥

सुनू प्रिया ब्रत रुचिर सुसीले । हम किछु करब ललित नरलीले ॥१॥
अहँ पावक मे करू निवासे । जा धरि करी निसाचर नासे ॥२॥
जखन राम बच सुनइत भेली । प्रभु पद उर धय अनल समेली ॥३॥
निज प्रतिबिंब राखि तहँ सीता । तेहने सील रूप सुविनीता ॥४॥
नहि लछुमनो मरम ई जानल । जे भगवान चरित किछु ठानल ॥५॥
दसमुख गेल जहाँ मारीचे । माथ नमौल स्वार्थ रत नीचे ॥६॥
नीचक नमब बहुत दुखकारी । जेना अँकुस धनु उरग बिलारी ॥७॥
भयदायक खल केर प्रिय बानी । जेना अकालक कुसुम भवानी ॥८॥

दोहा—तखन पूजि मारीच पुनि, पूछल सादर बात ।
कोन हेतु मन ब्यग्र अति, येकसर अयलहुँ तात ॥२४॥

दसमुख तकरा निकट सगर्बे । कहलक हाल अभागल सर्बे ॥१॥
बनह कपट मृग तोँ छलकारी । जहि बिधि हरि आनी नृप नारी ॥२॥
से पुनि कहल सुनिय दससीसे । ओ नर रूप चराचर ईसे ॥३॥
भल नहिँ हुनि सौँ बैर बढ़ौने । मरी मारने जिवी जिऔने ॥४॥
मुनि मख रच्छय कुमर पधारल । रघुपति मोहि बिनु फर सर मारल ॥५॥
छन खसलहुँ सत जोजन आबी । तनि सौँ बैर नीक नहि भावी ॥६॥
भेल मोहि भृंग कीट केर बाता । जहँ तहँ देखि पड़थि दुहु भ्राता ॥७॥
जौँ नर तात तदपि अति सूरे । हुनक बिरोधेँ पड़त न पूरे ॥८॥

दोहा—जे ताड़का सुबाहु हति, तोड़ल हर कोदंड ।
खरदूषन त्रिसिरा वधल, नर कि येहन बरिबंड ॥२५॥

घुरह भवन कुल कुसल बिचारी । सुनइत जरल देल बहु गारी ।।१।।
मूढ़ गुरू बनि दै छह ज्ञाने । जग के जोधा हमर समाने ।।२।।
हियं मारीच कयल अनुमाने । नश्रोक विरोधे ँ नहि कल्याने ।।३।।
सस्त्री मर्मी प्रभु सठ धनी । बैद्य बंदि कवि भानस गुनी ।।४।।
उभय भाँति देखल निज मरने । ताकल तखनहिँ रघुपति सरने ।।५।।
उतर दैत बध करत अभागल । किय न मरी रघुपति सर लागल ।।६।।
ई जिय जानि दसानन संगे । चलल राम पद प्रेम अभंगे ।।७।।
तनि जनौल नहि मन अति परसन । पायब आइ परम प्रिय दरसन ।।८।।

छंद—निज परम प्रीतम देखि लोचन सफल कय सुख पायबे ।
श्री सहित अनुज समेत कृपानिकेत पद मन लायबे ।।
निरबान दायक क्रोध जनिकर भगति अबसहिँ बस करी ।
निज पानि से सर तानि मोहि बधताह सुखसागर हरी ।।

दोहा—पकड़य हित मम पाछु धय, धावित कर धनु बान ।
घुरि घुरि प्रभुहिँ निहारबे, धन्य न मम सम आन ।।२६।।

तहि बन निकट दसानन गेले । मारिच तखन कपटमृग भेले ।। १।।
अति बिचित्र हो बरनि न सेहे । मनिगन खचित सुबरनक देहे ।। २।।
सीता परम रुचिर मृग देखल । अंग अंग सुमनोहर लेखल ।। ३।।
सुनू देव रघुवीर कृपाले । एहि मृगक अति सुंदर छाले ।। ४।।
सत्यसंध प्रभु बधि कय एही । आनू चर्म कहथि बैदेही ।। ५।।
सब कारन जनइत रघुराजे । उठला हरषि सोचि सुर काजे ।। ६।।
मृगहिँ निरखि कटि परिकर बाँधल । कर लय चाप रुचिर सर साधल ।। ७।।
प्रभु लछुमनहिँ बुझाओल तहि छन । फिरय बंधु निसिचर बहु बन बन ।। ८।।
अहँ सीताक करब रखबारी । बुधि बिवेक बल समय बिचारी ।। ९।।
प्रभुहिँ निरखि मृग चलल पड़ा कय । राम खेहारल धनुप चढ़ा कय ।।१०।।
निगम नेति सिव ध्यान न पाबथि । मायामृगक पाछु से धाबथि ।।११।।
खन हो दूर खनहिँ हो पासे । खन नुकाय खन होअय प्रकासे ।।१२।।

प्रगटति छिपति करति छल खेले । येहि विधि प्रभुहिँ दूर लय गेले ॥१३॥
राम ठिकाय कठिन सर मारल । पड़ल धरनि पर गरजि पुकारल ॥१४॥
पहिने लछुमनहिक लय नामे । पाछू सुमिरल मन मे रामे ॥१५॥
प्रान तजति प्रगटल निज देहे । सुमिरल राम समेत सिनेहे ॥१६॥
लखि तनि अंतर प्रेम सुजाने । मुनि दुरलभ गति कयल प्रदाने ॥१७॥

दोहा—बरषावथि सुर सुमन बहु, गावथि प्रभु गुन गाथ ।
निज पद देलनि असुर केँ, दीनबंधु रघुनाथ ॥२७॥

खल बधि झट घुरला रघुबीरे । सोभ चाप कर कटि तूनीरे ॥ १॥
जखन सुनल आरत रब सीता । कह लछुमन सौँ परम सभीता ॥ २॥
जाउ वेगि संकट अति भ्राता । लछुमन बिहँसि कहल सुनु माता ॥ ३॥
भृकुटि बिलास सृष्टि लय करथी । सपनहुँ से की संकट पड़थी ॥ ४॥
मरम बचन कह सीता जहिखन । हरि प्रेरित डोलल लछुमन मन ॥ ५॥
सौँपि देव वन दिगपति सकले । रावन ससि राहुक दिसि चलले ॥ ६॥
सून बीच दसकंधर पावी । जति वेपे लग पहुँचल आबी ॥ ७॥
जनिक डरेँ सुर असुर डेराथी । निसि न निंद दिन अन्न न खाथी ॥ ८॥
से दसबदन चलल चौकाना । भँड़पैसी हित जेना स्वाना ॥ ९॥
दैत कुपथ मे चरन खगेसे । रह न तेज तन बुधि बल लेसे ॥१०॥
बिबिध मनोहर कथा सुनौलक । राजनीति भय प्रीति देखौलक ॥११॥
कह सीता सुनु जति बाबाजी । बचन अहाँ दुष्टक सन बाजी ॥१२॥
रावन तखन स्वरूप देखौलक । डरली जखनहिँ नाम सुनौलक ॥१३॥
कह सीता धय धीरज गाढ़े । पहुँचलाह प्रभु खल रह ठाढ़े ॥१४॥
छुद्र ससक चह हरिबधु जेना । भेले काल बस निसिचर तेना ॥१५॥
सुनि रिसैल रावन तहि छन मे । चरन बंदि मानल सुख मन मे ॥१६॥

दोहा—क्रोधवंत रावन तखन, लेलक रथ बैसाय ।
आतुर नभ पथ चलल रथ, डरेँ न हाँकल जाय ॥२८॥

हा जगदेक वीर रघुराया । कोन अपराध बिसरलहुँ दाया ॥ १॥
आरति हरन सरन सुखदायक । हा रघुकुल सरोज दिन नायक ॥ २॥

हा लछुमन अहाँक नहिँ दोषे । से फल पौल कयल जे रोषे ॥ ३॥
विविध विलाप करथि बैदेही । भूरि कृपा प्रभु दूर सिनेही ॥ ४॥
प्रभुहिँ कहय मम बिपति के जायत । पुरोडास नहि रासभ खायत ॥ ५॥
सीता केर विलाप सुनि भारी । भेल चराचर जीव दुखारी ॥ ६॥
आरति बचन जटायु अकानल । रघुकुल तिलक नारि पहिचानल ॥ ७॥
अधम दनुज लय जाइन केना । कपिला गाय बधिक कर जेना ॥ ८॥
सीते पुत्रि करू जुनि त्रासे । येखनहिँ करब निसाचर नासे ॥ ९॥
कहि दौड़लाह क्रुद्ध खग केना । छूटय पबि परबत पर जेना ॥१०॥
अरे दुष्ट छौ डर नहि तोही । ठाढ़ त रह चिन्हले ँ नहि मोही ॥११॥
अबइत देखि कृतांत समाने । घुरि दसकंधर कर अनुमाने ॥१२॥
की मैनाक कि खगपति थीके । पति सह मम बल बूझय नीके ॥१३॥
जानल बूढ़ जटायू एहे । मम कर तीरथ तेजत देहे ॥१४॥
सुनतहिँ गिध क्रोधातुर धाओल । कह सुन रावन हमर सिखाओल ॥१५॥
तजि जानकी कुसल घुर गेहे । नहि तौँ बहुभुज होयतहु एहे ॥१६॥
राम रोष पावक अति घोरे । होयतहु सलभ सकल कुल तोरे ॥१७॥
उतर न दैछ दसानन जोधे । तखन गीध दौड़ल अति क्रोधे ॥१८॥
धय कय बिरथ खसाओल महि मे । घुरला सीतहिँ राखि छनहि मे ॥१९॥
लोल लगाय बिदारल देहे । दंड एक मुर्छित भेल सेहे ॥२०॥
तखन सकोप दनुज खिसिया कय । परम कराल कृपान चला कय ॥२१॥
काटल पाँखि पड़ल खग धरनी । सुमिरति रामक अदभुत करनी ॥२२॥
सिय केँ तखन चढ़ा कय जाने । चलल उताहुल त्रास महाने ॥२३॥
बिलपति कत जाइछ नभ सीता । ब्याध बिबस जनि मृगी सभीता ॥२४॥
गिरि बैसल कपिगनहिँ निहारी । कहि हरि नाम देल पट डारी ॥२५॥
यहि बिधि सीतहिँ से लय गेले । तनि असोक बन रखइत भेले ॥२६॥

दोहा—हारि गेल खल बहुत बिधि, भय ओ प्रीति देखाय ।
तखन असोकक गाछ तर, राखल जतन कराय ॥

दोहा--जहि बिधि कपट कुरंग सँग, दौड़लाह श्रीराम ।
से छबि सीता राखि उर, रटति रहथि हरिनाम ॥२९॥

रघुपति अनुजहिँ अबइत देखी । कयलनि चिंता बाह्य बिसेखी ॥ १॥
जनकसुता केँ येकसरि छारी । अयलहुँ तात बचन मम टारी ॥ २॥
निसिचर निकर फिरय बहु बन मे । सीता नहि आश्रम हो मन मे ॥ ३॥
गहि पद कमल जोरि दुहु हाथे । अनुज कहल मम दोष न नाथे ॥ ४॥
अनुज समेत गेला प्रभु ताहाँ । गोदावरि तट आश्रम जाहाँ ॥ ५॥
आश्रम देखि जानकी हीने । बिकल भेला प्राकृत इव दीने ॥ ६॥
हा गुनखानि जानकी सीते । रूप सील व्रत नेम पुनीते ॥ ७॥
लछुमन हुनि बुझौल बहु भाँती । पुछइत चलथि लता तरु पाँती ॥ ८॥
हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी । देखलह तोँ सीता मृगनैनी ॥ ९॥
खंजन सुक कपोत मृग मीने । मधुप निकर कोकिला प्रवीने ॥१०॥
कुंद कली दाड़िम ओ दामिनि । कमल सरद ससि ओ अहिभामिनि ॥११॥
बरुन पास मनोज धनु हंसे । गज केहरि निज सुनय प्रसंसे ॥१२॥
श्रीफल कनक कदलि मुद पाबय । रहल न संक सकुच किछु आबय ॥१३॥
सुनु जानकी अहाँ बिनु आजे । सब हरषाथि पाबि जनि राजे ॥१४॥
अनख येकर अहँ कोना सहै छी । प्रिया बेगि किय नहि प्रगटै छी ॥१५॥
येहि बिधि तकइत बिलपथि स्वामी । मानु महा बिरही अति कामी ॥१६॥
पूरनकाम राम सुखरासी । मनुज चरित कर अज अविनासी ॥१७॥
आगू पड़ल जटायुहिँ देखल । सुमिरति रामक चरन सुरेखल ॥१८॥

दोहा—सिर परसल कर कमल सौँ, कृपासिंधु रघुवीर ।
निरखि राम छबि धाम मुख, बिगत भेल सब पीर ॥३०॥

बाजल गीध बचन धय धीरे । सुनू राम भंजन भव भीरे ॥ १॥
नाथ दसानन ई गति केलक । से खल जनकसुता हरि लेलक ॥ २॥
नाथ गेल लय दच्छिन दीसे । बिलपथि अति कुररीक सरीसे ॥ ३॥
दरस हेतु प्रभु राखल प्राने । आब चलय चह कृपानिधाने ॥ ४॥

राम कहल तन राखू ताता । मुसुका कय बजला ई बाता ॥ ५॥
जनिक नाम मरितहुँ मुख आबय । अधमो मुकुत होअय श्रुति गाबय ॥ ६॥
से मम लोचन गोचर आजे । राखब देह नाथ कौन काजे ॥ ७॥
लोचन जल भरि रघुपति कहले । अहँ निज करम तात गति लहले ॥ ८॥
परहित बसय हृदय मे जनिका । जग मे किछु दुरलभ नहि तनिका ॥ ९॥
तन तजि तात जाउ मम धामे । देब कथी अहँ पूरन कामे ॥१०॥

दोहा—कहब न अहँ सीताहरन, तात पिता सौँ जाय ।
जौँ हम राम तँ कुल सहित, कहत दसानन आय ॥३१॥

गीध देह तजि धय हरि रूपे । भूषन बहु पट पीत अनूपे ॥१॥
स्याम गात बिसाल भुज चारी । असतुति करथि नयन भरि बारी ॥२॥

छंद—जय राम रूप अनूप निर्गुन सगुन गुन प्रेरक सही ।
दससीस बाहु प्रचंड खंडन चंड सर मंडन मही ॥
पाथोद गात सरोज मुख राजीब आयत लोचनं ।
नित नौमि राम कृपालु बाहु बिसाल भव भय मोचनं ॥
बलमप्रमेयमनादिमजमव्यक्तमेकमगोचरं ।
गोबिंद गोपर द्वंद्व हर विज्ञान घन धरनीधरं ॥
जे राम मंत्र जपंत संत अनंत जन मन रंजनं ।
नित नौमि राम अकाम प्रिय कामादि खल दल गंजनं ॥
जहि श्रुति निरंजन ब्रह्म ब्यापक बिरज अज कहि गाबथी ।
कय ध्यान ज्ञान बिराग जोग अनेक मुनि जहि पाबथी ॥
से प्रगटि करुना कंद सोभा बृंद अग जग मोहथी ।
मम हृदय पंकज भृंग अंग अनंग बहु छबि सोहथी ॥
जे अगम सुगम सोभाव निरमल असम सम नित सीतलं ।
पश्यंति यं जोगी जतन कय करथि बस गोहीतलं ॥

जे राम रमा निवास संतत दास बस त्रिभुवन पती।
से बसथु मम उर समन संसृति जनिक पावन कीरती॥

दोहा—अबिरल भगतिक माँगि बर, गीध गेला हरिधाम।
क्रिया जथोचित तनिक सब, निज कर केलनि राम॥३२॥

कोमल चित अति दीन दयाले। कारन बिनु रघुनाथ कृपाले॥१॥
गीध अधम खग आमिष भोगी। गति देलनि जे जाचथि जोगी॥२॥
सुनू उमा से लोक अभागल। हरि तजि रहय बिषय अनुरागल॥३॥
दुहु भ्राता सीता कें तकइत। चलला बन क बिपुलता लखइत॥४॥
संकुल लता बिटप घन कानन। तहँ बहु खग मृग गज पंचानन॥५॥
हतलन्हि अबइत पंथ कबंधे। कहल सकल से स्राप निबंधे॥६॥
दुरबासा मोहि देल सरापे। प्रभु पद देखि नसल से पापे॥७॥
सुनु गंधर्ब कही हम तोही। मोहि न सोहाय ब्रह्मकुल द्रोही॥८॥

दोहा—करम बचन मन कपट तजि, जे भूसुर कें सेब।
हमरा सहित बिरंचि सिव, तनिके बस सब देब॥३३॥

श्रापति ताड़ति पुरुष कहंते। बिप्र पूज्य ई गाबथि संते॥१॥
पूजी बिप्र सील गुन हीनो। सूद्र न गुन गन ज्ञान प्रबीनो॥२॥
तकरा कहि निज धरम बुझाओल। निज पद प्रीति देखि मन भाओल॥३॥
रघुपति चरन कमल सिर लाबी। गेल गगन निज पद गति पाबी॥४॥
गति दय तकरा राम उदारे। गेला सबरि क आश्रम द्वारे॥५॥
सबरी लखि रामहिँ घर आयल। मुनि बच गुनि तनि मन हरपायल॥६॥
सरसिज लोचन बाहु बिसाले। जटा मुकुट सिर उर बनमाले॥७॥
साँवर गोर बंधु दुहु आयल। सबरी निरखि चरन लेपटायल॥८॥
प्रेम मगन मुख बचन न आबय। पुनि पुनि सिर पद कंज नमाबय॥९॥
सादर जल लय चरन धोआओल। पुनि सुंदर आसन बैसाओल॥१०॥

दोहा—कंद मूल फल सुरस अति, देल राम कें आनि।
खयलनि प्रेम समेत प्रभु, बारंबार बखानि॥३४॥

पानि जोड़ि आगाँ भेलि ठाढ़ी । लखि प्रभु उमड़ल प्रीतिक बाढ़ी ॥१॥
तब असतुति करु हम कोन भाँती । छी मतिमंद अधम बन जाती ॥२॥
अधमहुँ अधम अधम अति नारी । ताहू मे मतिमंद अघारी ॥३॥
कह रघुपति सुनु भामिनि बाता । मानी एक भगति कैर नाता ॥४॥
जाति पाँति कुल धरम बड़ाई । धन बल परिजन गुन चतुराई ॥५॥
भगति हीन नर सोभय केहन । बिनु जल बारिद देखिय जेहन ॥६॥
नवधा भगति कही हम तोही । सावधान सुनु धरु मन ओही ॥७॥
प्रथम भगति थिक संतक संगे । दोसर रति मम कथा प्रसंगे ॥८॥

दोहा—सेवा गुरु पद पंकजक, तेसर भगति अमान ।
चारिम थिक मम गुन गनक, करब कपट तजि गान ॥३५॥

मंत्र जाप मम दृढ़ विस्वासे । पंचम भजन वेद परकासे ॥ १॥
नित दम सील बिरति बहु करमे । छठम सतत रत सज्जन धरमे ॥ २॥
सातम सम मोहिमय जग देखब । मोहि सौँ संतहिँ बढ़ि कय लेखब ॥ ३॥
आठम जथा लाभ संतोषे । सपनहुँ नहि देखब पर दोषे ॥ ४॥
नवम सरल सब सौँ छलहीने । मम भरोस हिय हरष न दीने ॥ ५॥
नव मे पाबय एको जे टा । नारि पुरुष सचराचर से टा ॥ ६॥
सैह परम प्रिय भामिनि मोरे । सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरे ॥ ७॥
जोगि बृंद दुरलभ गति जे टा । तोहरा आइ सुलभ भेल से टा ॥ ८॥
मम दरसन फल परम अनूपे । जीव पाब निज सहज सरूपे ॥ ९॥
जौँ सुधि जनकसुता कैर भामिनि । जानी तौँ कहु करिबरगामिनि ॥१०॥
पंपा सरहिँ जाउ रघुनाथे । मैत्री जुड़त सुकंठक साथे ॥११॥
सैह कहत सब प्रभु रघुबीरे । जनितहु अहँ पूछी मति धीरे ॥१२॥
पुनि पुनि प्रभु पद माथ नमाओल । प्रेम सहित सब कथा सुनाओल ॥१३॥

छंद—कहि कथा सकल बिलोकि हरि मुख हृदय पद पंकज धैने ।
तजि तन जोगानल लीन हरि पद भेलि घुर नहि जहँ गेने ॥

नर बिबिध कर्म अधर्म बहु मत सोकप्रद सब त्यागियौ।
बिस्वास कय कह दास तुलसी राम पद अनुरागियौ॥

दोहा—जाति हीन अघ जनम महि, मुकुत कयल से नारि।
महामंद मन चहह सुख, एहन प्रभुहिँ बिसारि॥३६॥

चलला राम ओहो बन छारी। दुहु नर हरि अतुलित बलधारी॥ १॥
बिरही सन प्रभु करथि बिषादे। कहइत कथा बिबिध संबादे॥ २॥
लछुमन देखु बिपिन कत सोभय। देखइत ककर हृदय नहि छोभय॥ ३॥
नारि सहित सब खग मृग बृंदा। मानू हमर करै अछि निंदा॥ ४॥
पड़ा जाय मृग सब लखि मोही। मृगी कहय किछु भय नहि तोही॥ ५॥
मृग सुत बिचरह सानँद जा कय। ई अयला कंचनमृग ताकय॥ ६॥
करि करिनी केँ संग लगाबय। मानू मोहि ई सीख सुनाबय॥ ७॥
सास्त्र सुचिंतित पुनि पुनि देखी। भूप सुसेबित बस नहि लेखी॥ ८॥
रच्छिय नारि जदपि धय ऊरे। सास्त्र नृपति युबती बहु दूरे॥ ६॥
देखू तात बसंत सोहाओन। प्रिया हीन मोहि लाग भयाओन॥१०॥

दोहा—बिरह बिकल बलहीन मोहि, यँकसर जानि नितांत।
बन खग अलिगन संग लय, मदन कयल आक्रांत॥
सहित बंधु लखि पबन चर, गेल तकर सुनि बात।
मानु कयल डेरा तखन, कटक रोकि मनजात॥३७॥

बिटप बिसाल लता ओझरायल। मानू बिबिध बितान तनायल॥ १॥
ध्वज पताक बर कदली ताले। धीर से लखि जे हो न बेहाले॥ २॥
बहु बिधि अछि फुलैल तरु नाना। जनि सरैत धयने बहु बाना॥ ३॥
कतहु कतहु सुंदर तरु केना। फुदकि फुदकि भट पसरल जेना॥ ४॥
कूजय पिक गज मत्त अनेके। ऊँट ओ खच्चर महखा ढेके॥ ५॥
मोर चकोर कीर बर बाजी। पाराबत मराल हय ताजी॥ ६॥
तीतिर लावा पदचर जूथे। कहल न जाय मनोज बरूथे॥ ७॥

झरना ढाक सिला गिरि जाने । चातक भाट करय गुन गाने ॥ ८॥
अलि गुंजन सहनाइ सुभेरी । त्रिविध बसात दूत कर फेरी ॥ ६॥
चतुरंगिनी सेन सँग जूमय । सबके दँत चुनौती घूमय ॥१०॥
लछुमन जे लखि काम अनीके । रहथि धीर मरजाद तनीके ॥११॥
येकरा एक परम बल नारी । तहि सौँ उबर सुभट से भारी ॥१२॥

दोहा—तात तीनि अति प्रबल खल, काम क्रोध ओ लोभ ।
मुनि मन बिज्ञानक भवन, करय निमिष मे छोभ ॥
लोभक इच्छा दंभ बल, कामक केवल नारि ।
क्रोधक बल अछि कटु बचन, मुनिबर कहथि बिचारि ॥३८॥

गुनातीत सचराचर स्वामी । राम उमा सब अंतरजामी ॥१॥
कामिजनक दीनता देखौलनि । धीरक मन मे बिरति दृढ़ौलनि ॥२॥
क्रोध मनोज लोभ मद माया । छूटय सकल राम केर दाया ॥३॥
इंद्रजाल फँसबय नहि तनिका । नट अनुकूल रहथि ई जनिका ॥४॥
उमा कही हम अनुभव अपना । सत हरि भजन जगत सब सपना ॥५॥
पुनि गेला प्रभु सरवर तीरे । पंपा नाम सुभग गंभीरे ॥६॥
संत हृदय सम निर्मल बारी । बान्हल घाट मनोहर चारी ॥७॥
जहँ तहँ पिबय बिविध मृग नीरे । जनि उदार गृह जाचक भीरे ॥८॥

दोहा—सघन पुरैनिक ओट जल, बेगि लखल नहि जाय ।
जहि विधि निरगुन ब्रह्म नहि, मायाछन्न लखाय ॥
सुखी मीन सब एक रस, अति अगाध जल पाय ।
जथा धरम सीलक दिबस, सुख संजुत बिति जाय ॥३६॥

बिकसल सरसिज नाना रंगे । मधुर मुखर गुंजय बहु भृंगे ॥१॥
बाजय जलकुक्कुट कलहंसे । प्रभुहिँ निरखि जनि करहिँ प्रसंसे ॥२॥
चकवा बक खग गन मन भावय । देखितहिँ बनय बरनि के पावय ॥३॥
खग गन गिरा मधुर मनहारी । चलति पथिक जनि लैछ हँकारी ॥४॥

सर समीप मुनि आश्रम छाजय । चहुदिसि कानन बिटप बिराजय ॥५॥
चंपक बकुल कदंब तमाले । पाटल पनस पलास रसाले ॥६॥
नव पल्लव कुसुमित तरु नाना । चंचरीक गन करइछ गाना ॥७॥
सीतल मंद सुगंध ललामे । संतत बहय बायु अभिरामे ॥८॥
कुहू कुहू कोकिल कर गाने । सुनि रब सरस टुटय मुनि ध्याने ॥९॥

दोहा—**फलक भार सौँ बिटप सब, झुकल भूमि लग आबि ।**
पर उपकारी नर जेना, नमथि सुसंपति पाबि ॥४०॥

राम ललाम तड़ाग निहारी । मज्जन कय पाओल सुख भारी ॥ १॥
देखल सुंदर तरुवर छाया । अनुज सहित बैसला रघुराया ॥ २॥
तहँ पुनि सकल देव पुनि एला । अस्तुति कय निज निज घर गेला ॥ ३॥
बैसला परम प्रसन्न कृपाले । कहति अनुज सौँ कथा रसाले ॥ ४॥
बिरहवंत भगवंतहिँ देखी । नारद मन भेल सोच बिसेखी ॥ ५॥
हमर श्राप कय अंगीकारे । सहथि राम नाना दुखभारे ॥ ६॥
एहन प्रभु केँ जाय बिलोकी । अबसर एहन पुनि पुनि हो की ॥ ७॥
ई बिचारि नारद लय बीना । गेला जहँ प्रभु सुख आसीना ॥ ८॥
गबइत रामचरित मृदु बानी । प्रेम सहित बहु भाँति बखानी ॥ ९॥
करति दंडवत राम उठौलनि । बहुत काल धरि हृदय लगौलनि ॥१०॥
स्वागत कय निज लग बैसाओल । लछुमन सादर चरन धोआओल ॥११॥

दोहा--**नाना बिधि सौँ बिनय कय, प्रभु प्रसन्न जिय जानि ।**
नारद मुनि बजला तखन, जोरि सरोरुह पानि ॥४१॥

सुनू सहज उदार रघुनायक । सुंदर अगम सुगम बर दायक ॥१॥
दीय एक बर माँगी स्वामी । जदपि जनैछी अंतरजामी ॥२॥
मम सोभाब जानी मुनिनाथे । जन सौँ करी न कखनहुँ लाथे ॥३॥
कोन बस्तु एहन प्रिय मोही । जे मुनिवर दय सकी न तोही ॥४॥
नहि अदेय मम किछु जन लागी । ई बिस्वास भ्रमहुँ नहि त्यागी ॥५॥
नारद कहल हरखि मृदु बानी । माँगी ई बर ढिठपन ठानी ॥६॥

जद्यपि प्रभु केर नाम अनेके । श्रुति कह अधिक एक सौँ एके ॥७॥
सकल नाम सौँ राम अधीके । प्रभु हो अघ खग गनक बधीके ॥८॥

दोहा—राका रजनी भगति तव, राम नाम हो सोम ।
अपर नाम उडुगन बिमल, बसथु भगत उर ब्योम ॥
एवमस्तु मुनि सौँ कहल, कृपासिंधु रघुनाथ ।
नारद मन मे हरष अति, प्रभु पद नाओल माथ ॥४२॥

अति प्रसन्न रघुनाथहिँ जानी । पुनि नारद बजला मृदु बानी ॥ १॥
राम जखन प्रेरल निज माया । मोहल मोहि सुनू रघुराया ॥ २॥
हम जे तखन बिआह अराधल । प्रभु की हेतु ताहि पुनि बाधल ॥ ३॥
सुनु मुनि समुद कही हम तोही । सब भरोस तजि भज जे मोही ॥ ४॥
करी सदा तनिकर रखबारी । जनि सिसु केँ राखय महतारी ॥ ५॥
जौँ सिसु आगि साँप दिसि धावय । जननी तकरा पकड़ि बचावय ॥ ६॥
भैने प्रौढ़ तहि सुत पर माता । प्रेम करय नहि पहिलुक बाता ॥ ७॥
हमरा प्रौढ़ तनय सम ज्ञानी । बालक सुत सम दास अमानी ॥ ८॥
निज बल ताहि जनहिँ बल मोरे । काम क्रोध दूनुक रिपु घोरे ॥ ९॥
ई बिचारि पंडित मोहि भजइछ । पौनहुँ ज्ञान भगति नहि तजइछ ॥१०॥

दोहा—काम क्रोध लोभादि मद, मोहक प्रबल अनीक ।
माया रूपी तिय ततहु, दारुन दुखप्रद थीक ॥४३॥

सुनि मुनि कह पुरान श्रुति संते । मोह बिपिन हित नारि बसंते ॥१॥
जप तप नियम जलासय नाना । तिय सोषय सब ग्रिषम समाना ॥२॥
काम क्रोध मद मत्सर भेके । ताहि हरषप्रद बरषा एके ॥३॥
दुरबासना कुमुद गन जानू । सरद सुखद तहि सदिखन मानू ॥४॥
धरम सकल सरसीरुह बृंदे । भय हिम तहि डाहय सुख मंदे ॥५॥
पुनि ममता जवास अधिकयने । पनपय नारि सिसिर रितु अयने ॥६॥

पाप उलूक निकर सुखकारी । नारि निबिड़ रजनी अन्हियारी ॥७॥
बुधि बल सील सत्य सब मीने । बनसी सम तिय कहथि प्रबीने ॥८॥

दोहा—अबगुन मूल सूल प्रद, प्रमदा सब दुख खानि ।
तहि सौँ हम लेलहुँ बचा, मुनि ई जिय मे जानि ॥४४॥

सुनि रघुनाथक सुंदर बयने । मुनि तन पुलक भरल जल नयने ॥ १॥
कहू येहन कोन स्वामिक रीती । सेवक पर ममता ओ प्रीती ॥ २॥
जे न येहन प्रभु भज भ्रम त्यागी । ज्ञान रंक नर मंद अभागी ॥ ३॥
पुनि सादर बजला मुनि नारद । सुनू राम बिज्ञान बिसारद ॥ ४॥
संत गनक लच्छन रघुबीरे । कहू नाथ भंजन भव भीरे ॥ ५॥
संतक गुन मुनि सुनू कहैछी । जहि सौँ हम बस हुनक रहैछी ॥ ६॥
षट बिकार जित अनघ अकामे । अचल अकिंचन सुचि सुखधामे ॥ ७॥
अमित बोध अनीह मित भोगी । सत्य सार कवि कोविद जोगी ॥ ८॥
साबधान मानद मद हीने । धीर धरम गति परम प्रबीने ॥ ९॥

दोहा—गुनागार संसार दुख, रहित बिगत संदेह ।
तजि मम चरन सरोज प्रिय, तनिका देह न गेह ॥४५॥

निज गुन स्रबन सुनति सकुचाथी । परगुन सुनति अधिक हरषाथी ॥१॥
सम सीतल नहि त्यागथि नीती । सरल सोभाव सबहुँ सौँ प्रीती ॥२॥
जप तप ब्रत दम संजम नेमे । गुरु गोबिंद बिप्र पद प्रेमे ॥३॥
श्रद्धा छमा मितारय दाया । मुदिता मम पद प्रीति अमाया ॥४॥
बिरति बिबेक बिनय बिज्ञाने । बोध जथारथ वेद पुराने ॥५॥
दंभ मान मद मनहुँ न करथी । भरमहुँ कुपथ चरन नहि धरथी ॥६॥
गाबथि सुनथि सदा मम लीला । हेतु रहित परहित रत सीला ॥७॥
मुनि सुनु साधु सभक गुन जतबा । कहि न सकथि सारद श्रुति ततबा ॥८॥

छंद—कहि सक न सारद सेस नारद सुनति पद जुग गहल यो ।
से दीनबंधु कृपाल निज मुख निज भगत गुन कहल यो ॥

पुनि पुनि प्रनमि पदकंज नारद ब्रह्मपुर जाइत भेला ।
भन तुलसि धन से आस तजि हरि रंग मे जे रँगि गेला ॥

दोहा—रावनारि जस पाबन, सुनथि करथि जे गान ।
राम भगति पाबथि अचल, बिनु बिराग जप ध्यान ॥
दीप सीखा सम जुबति तन, मन जनु होअह पतंग ।
भजह राम तजि काम मद, करह सदा सतसंग ॥४६॥

मास पारायण, विश्राम—२२

इति श्रीमद्रामचरितमानसस्य श्रीरामलोचनशरणविरचिते मैथिलीरूपान्तरे सकल-
कलिकलुषविध्वंसने विमलवैराग्यसम्पादनो नाम तृतीयः सोपानः समाप्तः ।

श्रीसीतारामजी

मैथिली

श्रीरामचरितमानस

चतुर्थ सोपान (किष्किन्धाकाण्ड)

कुन्देन्दीवरसुन्दरावतिबलौ विज्ञानधामावुभौ
शोभाढ्यौ वरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृन्दप्रियौ ।
मायामानुषरूपिणौ रघुवरौ सद्धर्मवर्मौ हितौ
सीतान्वेषणतत्परौ पथिगतौ भक्तिप्रदौ तौ हि नः ॥१॥

ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाव्ययं
श्रीमच्छम्भुमुखेन्दुसुन्दरवरे संशोभितं सर्वदा ।
संसारामयभेषजं सुखकरं श्रीजानकीजीवनं
धन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति सततं श्रीरामनामामृतम् ॥२॥

सोरठा—मुक्ति जन्म महि जानि, ज्ञान खानि अघ हानिकर ।
जहँ बस संभु भवानि, से कासी सेबी न किय ॥

जरइत सब सुर बृंद, बिषम गरल पिबि लेल जे।
तहि न भजह मतिमंद, के कृपालु संकर सरिस ॥

पुनि रघुराज चलल अगुआयल। रिष्यमूक परबत लगिचायल ॥ १॥
तहँ रह सचिव सहित सुग्रीमा। अबइत देखि अतुल बल सीमा ॥ २॥
अति सभीत कह सुनु हनुमाने। पुरुष जुगल बल रूप निधाने ॥ ३॥
धय बटु रूप देखु अहँ जा कय। बुझि संकेते कहब बुझा कय ॥ ४॥
बालि पठाओल हो मन मैले। तौँ झट भागब तजि ई सैले ॥ ५॥
बिप्र रूप धय कपि तहँ गेला। सिर नमाय ई पुछइत भेला ॥ ६॥
के अहँ स्यामल गौर सरीरे। छत्री रूप फिरी बन बीरे ॥ ७॥
कठिन भूमि अहँ मृदु पद गामी। कोन हेतु बिचरी बन स्वामी ॥ ८॥
मृदुल मनोहर सुंदर गाते। सही दुसह बन रौद बसाते ॥ ९॥
की अहँ केँ त्रिदेब मे गूनू। की नर नारायण अहँ दूनू ॥१०॥

दोहा—जग कारन तारन भवक, भंजन धरनी भार।
अखिल भुवनपति की अहाँ, लेल मनुज अवतार ॥१॥

कोसलेस दसरथक कुमारे। ऐलहुँ बन पितु बच अनुसारे ॥१॥
लछुमन अनुज राम मम नामे। संग नारि सुकुमारि ललामे ॥२॥
येतय हरल निसिचर बैदेही। बिप्र तकैत घुरी हम तेही ॥३॥
अपन चरित हम कहल बखानी। बिप्र आब कहु अपन कहानी ॥४॥
प्रभु चिन्हि पद गहि पड़ला धरनी। से सुख उमा होअय नहि बरनी ॥५॥
पुलकित तन मुख निकस न बचने। देखथि रुचिर बेष केर रचने ॥६॥
असतुति केलनि धीरज धारी। चिन्हि निज नाथ हरष हिय भारी ॥७॥
हमर पुछब समुचित भगवाने। अहँ पूछी किय मनुज समाने ॥८॥
तव माया बस हम भुतियैलहुँ। हे प्रभु तेँ हम नहि चिन्हि पैलहुँ ॥९॥

दोहा—एक मंद हम मोह बस, कुटिल हृदय अज्ञान।
पुनि प्रभु गेलहुँ बिसरि मोहि, दीनबंधु भगवान ॥२॥

नाथ बहुत अबगुन मोहि जइयो । बिसरय सेबक प्रभुहिँ न तइयो ॥१॥
नाथ जीब मोहित तब माया । केबल उबर पाबि तब दाया ॥२॥
सपथ अहँक रघुबीर बखानी । भजन उपाय न किछुओ जानी ॥३॥
सेबक सुत पति मातु भरोसहिँ । रह निचिंत प्रभु पड़ते पोसहिँ ॥४॥
कहि पद पर अकुला कय पड़ला । निज तन प्रगटि प्रीत सौँ भरला ॥५॥
रघुपति हिय सौँ उठा लगौलनि । निज लोचन जल सीँचि जुड़ौलनि ॥६॥
कपि अपना केँ बुझू न ऊने । अहँ मम प्रिय लछुमन सौँ दूने ॥७॥
समदरसी मोहि कह सब जइयो । सेबक प्रिय अनन्य गति तइयो ॥८॥

दोहा—से अनन्य जकरा येहन, मति न टरय हनुमंत ।
हम सेबक चर अचर सब, रूप स्वामि भगवंत ॥३॥

देखि पवनसुत पति अनुकूले । हृदय हरष बीतल सब सूले ॥१॥
गिरि पर कपिपति करथि निबासे । प्रभु सुग्रीव से छथि तब दासे ॥२॥
प्रभु बनाउ तनिका अहँ मीते । दीन जानि तनि करिय अभीते ॥३॥
से सीताक खोज करबौता । जहँ तहँ मरकट कोटि पठौता ॥४॥
येहि बिधि सब टा कथा बुझा कय । चलला दुहु केँ पीठ चढ़ा कय ॥५॥
जखन सुकंठ राम केँ देखल । अतिसय धन्य जनम निज लेखल ॥६॥
सादर मिलला नमि पद माथे । मिलला अनुज सहित रघुनाथे ॥७॥
कपि मन मे सोचथि येहि रीती । करता बिधि मोहि सौँ ई प्रीती ॥८॥

दोहा—तखन पवनसुत दुहु दिसक, सबटा कथा सुनाय ।
पाबक साच्छी राखि कय, जोड़ल प्रीति दृढ़ाय ॥४॥

कयल प्रीति किछु बीच न राखल । लछुमन रामचरित सब भाखल ॥१॥
कह सुग्रीव नयन भरि बारी । भेंटती प्रभु मिथिलेसकुमारी ॥२॥
मंत्री सहित येतहि येक बारे । बैसल रही करैत बिचारे ॥३॥
गगन पंथ देखल हम जाइत । परबस पड़लि बहुत बिलखाइत ॥४॥
राम राम हा राम पुकारी । हमरा देखि पट देलनि डारी ॥५॥
मँगलनि राम तुरित से देलनि । पट उर लगा सोच अति केलनि ॥६॥

कह सुग्रीव सुनू रघुवीरे । तजू सोच मन आनू धीरे ॥७॥
करव जतन सकल बिधि तेना । मिलती आबि जानकी जेना ॥८॥

दोहा—सखा वचन सुनि हरषला, कृपासिंधु बल सीम ।
कोन कारने बन बसी, कहु हमरा सुग्रीम ॥५॥

नाथ बालि ओ हम दुहु भाए । प्रीति रहल से कहल न जाए ॥ १॥
मयक तनय मायाबी नामे । आयल प्रभु से हमरा गामे ॥ २॥
अधनिसि पुर द्वारहिँ ललकारल । बालि रिपुक बल सहय न पारल ॥ ३॥
दौड़ल बालि देखि से भागल । हम पुनि गेलहुँ बंधु सँग लागल ॥ ४॥
गिरिबर गुहा पैसि से गेले । तखन बालि मोहि कहइत भेले ॥ ५॥
हमर आसरा पख येक देखब । नहि आबी तौँ मुइले लेखब ॥ ६॥
रहलहुँ तहँ येक मास खरारी । निकसल लिधुर धार तहँ भारी ॥ ७॥
बधल बालि मारत मोहि आ कय । सिला राखि चलि गेलहुँ पड़ा कय ॥ ८॥
नृप बिनु पुर लखि मंत्रि समाजे । आग्रह कय मोहि देलनि राजे ॥ ९॥
सहसा बालि घुरल बधि ओही । भेद बढ़ाओल लखि कय मोही ॥१०॥
रिपु सम मोहि मारल बड़ भारी । हरि लेलक सरबस ओ नारी ॥११॥
तकर भयेँ रघुवीर कृपाले । भुवन भुवन हम घुरी बेहाले ॥१२॥
येतय साप बस आब न जइयो । प्रभु हम छी सभीत मन तइयो ॥१३॥
सुनि सेवक दुख दीनदयाले । फड़कि उठल दुहु भुजा बिसाले ॥१४॥

दोहा—सुनु सुकंठ हम बालि केँ, मारब एके वान ।
ब्रह्म रुद्र सरनागतहुँ, उबरि सकत नहि प्रान ॥६॥

जे मित्रक दुख सौँ न दुखारी । तकरा देखने पातक भारी ॥ १॥
निज दुख गिरि सम रज कय जानी । मित्रक दुख रज गिरि सम मानी ॥ २॥
जकरा ई मति सहज न आबय । से सठ किय हठ मीत बनाबय ॥ ३॥
कुपथ निवारि सुपंथ चलावय । गुन प्रगटय अवगुनहिँ छिपावय ॥ ४॥
दैत लैत मन संक न धरइछ । बल अनुरूप सदा हित करइछ ॥ ५॥
बिपति काल कर सय गुन नेहे । श्रुति कह संत मित्र गुन एहे ॥ ६॥

आगू बना बचन मृदु भाखय । पाछू अहित कुटिलपन राखय ॥ ७॥
अहि गति सरिस जकर हो चीते । भल हो तजनहिँ तेहन कुमीते ॥ ८॥
सेवक सठ नृप कृपन कुनारी । कपटी मित्र सूल सम चारी ॥ ९॥
सखा सोच त्यागू बल मोरे । सब बिधि पुरब काज हम तोरे ॥१०॥
कहल सुकंठ सुनू रघुबीरे । बालि महाबल अति रनधीरे ॥११॥
दुंदुभि अस्थि ओ तार देखौलनि । बिनु प्रयास रघुनाथ ढहौलनि ॥१२॥
देखि अमित बल बाढ़ल प्रीती । बधता बालि भेल परतीती ॥१३॥
बेरि बेरि नमबथि पद सीसे । प्रभु केँ चिन्हि मन हरष कपीसे ॥१४॥
उपजल ज्ञान कहल धय धीरे । नाथ कृपेँ मम मन भेल थीरे ॥१५॥
सुख संपति बड़ाइ परिबारे । सब तजि सेबब सब परकारे ॥१६॥
ई सब राम भगति केर बाधक । कहथि संत तब पद आराधक ॥१७॥
सत्रु मित्र सुख दुख जग जे टा । मायाकृत परमार्थ न से टा ॥१८॥
बालि परम हित जकर प्रसादे । भेटलहुँ अहँ मोहि समन बिषादे ॥१९॥
जकरा सौँ सपनहुँ रन केने । मन सँकुचत चिन्हि निद्रा गेने ॥२०॥
प्रभु करु कृपा आब येहि भाँती । सब तजि भजन करी दिन राती ॥२१॥
सुनि बिराग संयुत कपि बानी । बजला बिहुँसि राम धनुपानी ॥२२॥
जे किछु कहल सत्य सब जइयो । सखा बचन मम मृषा न तइयो ॥२३॥
नट मरकट जनु सबहिँ नचाबथि । राम खगेस येहन श्रुति गाबथि ॥२४॥
संग सुकंठहिँ लय रघुनाथे । चलला धनुष बान धय हाथे ॥२५॥
रघुपति तखन सुकंठ पठाओल । से भय सबल गरजि लग धाओल ॥२६॥
सुनितहि बालि तामसेँ धाओल । कर पद गहि पतनी समुझाओल ॥२७॥
सुनु पति मिलला जे सुग्रीमे । से दुहु बंधु तेज बल सीमे ॥२८॥
कोसलेस सुत लछुमन रामे । कालहुँ जीति सकथि संग्रामे ॥२९॥

दोहा—कहल बालि सुनु भीरु प्रिय, समदरसी रघुनाथ ।
जौँ कदाच हमरा हतथि, तौँ पुनि होयब सनाथ ॥७॥

ई कहि चलल महा अभिमानी । तृन समान सुग्रीवहिँ जानी ॥१॥
दुहु जन भिड़ल बालि अति तरजल । मुकियाबैत महाधुनि गरजल ॥२॥

मुष्टि प्रहार बज्र सम लागल । तखन सुकंठ बिकल भय भागल ॥३॥
कहलहुँ जे रघुबीर कृपाले । ई नहि बंधु हमर थिक काले ॥४॥
एक रूप छी अहँ दुहु भ्राता । ताही भ्रम तेँहि हनल न ताता ॥५॥
कर परसल सुग्रीब सरीरा । भेल बज्र तन गेल सब पीरा ॥६॥
पहिरौलनि गर सुमनक माला । पुनि पठौल बल सौँपि बिसाला ॥७॥
पुनि नाना बिधि भेल रन गाढ़े । बिटप ओट लख रघुपति ठाढ़े ॥८॥

दोहा—बहु छल बल सुग्रीब कय, हिय हारल भय मानि ।
तखन राम बालिहिँ हनल, हृदय माँझ सर तानि ॥८॥

खसल बिकल सर लगइत देरी । उठि बैसल संमुख प्रभु हेरी ॥ १॥
स्याम गात सिर जटा बनौने । अरुन नयन सर चाप चढ़ौने ॥ २॥
पुनि पुनि चितइत पद चित देले । चिन्हि प्रभु जनम सफल बुझि लेले ॥ ३॥
हृदय प्रीति मुख बचन कठोरे । बाजल चितइत रामक ओरे ॥ ४॥
धरमक लेल गोसाँइ तन धारल । तइयो मोहि व्याधा सन मारल ॥ ५॥
प्रिय सुकंठ हमरा रिपु मनलहुँ । अबगुन कोन नाथ मोहि हनलहुँ ॥ ६॥
अनुज बधू भगिनी सुत नारी । सुनु सठ कन्या सम ई चारी ॥ ७॥
ताहि लखय जे कुत्सित नयने । हो नहि पाप तकर बध कयने ॥ ८॥
मूढ़ तोहि अतिसय अभिमाने । नारि सिखाओन देलह न काने ॥ ९॥
मम बल आश्रित तकरा जानी । चाहल बधय अधम अभिमानी ॥१०॥

दोहा—सुनू राम नहि स्वामि सौँ, चलत हमर चतुराइ ।
अंत काल गति अहँक लहि, हम पापी की आइ ॥९॥

सुनति राम अति कोमल बानी । बालि सीस परसल निज पानी ॥१॥
अचल करी तन राखू प्राने । बालि कहल सुनु कृपानिधाने ॥२॥
जनम जनम मुनि जतन लगाबय । तदपि न राम अंत कहि आबय ॥३॥
जनिक नाम बल संकर कासी । देथि सबहिँ सम गति अबिनासी ॥४॥
ताहि नयन गोचर हम पौलहुँ । पुनि प्रभु येहन कि बनत बनौलहुँ ॥५॥

छंद—से नयनगोचर जनिक गुन नित नेति कहि श्रुति गाबथी।
जिति पवन मन गो निरस कय मुनि ध्यान कखनहुँ पाबथी॥
मोहि जानि अति अभिमान बस अहँ कहल राखय तन प्रभो।
के येहन सठ हठ काटि सुरतरु रच बबूरक बन अहो॥
प्रभु आब कय करुना बिलोकू दीय बर जे हम चही।
जहि जोनि जनमी करम बस तहँ राम पद अनुरत रही॥
ई तनय मम सम बिनय बल कल्यानप्रद प्रभु लय धरू।
गहि बाँहि सुर नरनाथ अहँ निज दास अंगद कें करू॥

दोहा—राम चरन दृढ़ प्रीत कय, बालि कयल तन त्याग।
सुमन माल गर सौं खसति, जेना न जानय नाग॥१०॥

राम बालि निज धाम पठाओल। नगर लोक सब ब्याकुल धाओल॥ १॥
तारा बिलपथि बिबिध प्रकारे। खुजल केस नहि देह सम्हारे॥ २॥
तारा बिकल देखि रघुराया। देल ज्ञान हरि लेलनि माया॥ ३॥
छिति जल पावक गगन समीरे। पंच रचित अति अधम सरीरे॥ ४॥
प्रगट आगु तव सुतल से थीरे। जीव नित्य किय बहबी नीरे॥ ५॥
उपजल ज्ञान चरन मे लागी। परम भगति बर लेलक माँगी॥ ६॥
उमा दारु जोषितक समाने। नचबथि सबहिँ राम भगवाने॥ ७॥
तखन सुकंठहिँ अनुमति देलनि। मृतक कर्म बिधिवत सब केलनि॥ ८॥
कहल अनुज कें राम बुझा कय। राज दियनु सुग्रीवहिँ जा कय॥ ९॥
रघुपति चरन नमा कय माथे। चलला सब प्रेरित रघुनाथे॥१०॥

दोहा—लछुमन तुरत बजौल सब, पुरजन बिप्र समाज।
राज देल सुग्रीब कें, अंगद कें जुबराज॥११॥

उमा राम सम हित न जहाने। गुरु पितु मातु बंधु प्रभु आने॥ १॥
सुर नर मुनि सबहुक ई रीती। स्वारथ लागि करय सब प्रीती॥ २॥

बालि त्रास व्याकुल दिन राती । तन बहु ब्रन चिंतें जर छाती ॥ ३॥
कपिपति कयल ताहि सुग्रीबे । छथि कृपालु रघुवीर अतीबे ॥ ४॥
तजय प्रभुहिँ जनितहुँ ई हाले । किय न फँसय नर बिपतिक जाले ॥ ५॥
पुनि सुग्रीबहिँ राम बजौलनि । बहु प्रकार नृप नीति सिखौलनि ॥ ६॥
कह प्रभु सुनु सुग्रीब हरीसे । पुर न जैब दस चारि बरीसे ॥ ७॥
ग्रिषम बितल भेल बरषा मासे । रहब निकट गिरि पर कय बासे ॥ ८॥
अंगद सहित करू अहँ राजे । हिय मे राखु सतत मम काजे ॥ ९॥
जखन सुकंठ भवन घुरि अयला । राम प्रबरषन बसइत भेला ॥१०॥

दोहा—प्रथमहिँ सुरगन गिरि गुहा, राखल रुचिर बनाय ।
राम कृपानिधि किछु दिवस, बसता येहि थल आय ॥१२॥

सुंदर बन कुसुमित अति सोभे । गुंजय मधुप निकर मधु लोभे ॥१॥
कंद मूल फल पत्र ललामे । बढ़ल प्रभुक अबितहिँ येहि ठामे ॥२॥
देखि मनोहर सैल अनूपे । रहला अनुज सहित सुर भूपे ॥३॥
मधुकर खग मृग तन धरि देवा । करथि सिद्ध मुनि प्रभु कँर सेवा ॥४॥
मंगलमय बन भेल तखन सौँ । कयल रमापति बास जखन सौँ ॥५॥
फटिक सिला अति सुभ्र ललामे । सानुज सुखासीन तहि ठामे ॥६॥
कहथि अनुज सौँ कथा अनेके । भगति बिरति नृप नीति बिबेके ॥७॥
बरषा काल अकास सोहावन । छायल घन गरजय मनभावन ॥८॥

दोहा—लछुमन देखू मोरगन, नाचय बारिद पेखि ।
गृही बिरति रत हरषि जनु, विष्णुभक्त कँ देखि ॥१३॥

घन घमंड नभ गरजय घोरे । प्रियाहीन डरइछ मन मोरे ॥१॥
दामिनि दमक रह न घन केना । खलक प्रीति हो थिर नहि जेना ॥२॥
बरषय जलद भूमि नगिचा कय । जथा नमथि बुध बिद्या पा कय ॥३॥
बुंद अघात सहय गिरि केना । खल कँर बचन संत सह जेना ॥४॥
छुद्र नदी भरि बह अति जोरे । खल नितराय जेना धन थोरे ॥५॥
भूतल परितहिँ पानि घोँकायल । मानु जीव माया लेपटायल ॥६॥

सहटि समटि जल पोखरि खसइछ । सद्गुन जेना सुजन दिस अबइछ ॥७॥
सरिता जल जलनिधि मे आबी । अचल हो जेना जीव हरि पाबी ॥८॥

दोहा—हरित भूमि तृन संकुल, बूझि पड़य नहि पंथ ।
हो पाखंड बिबाद सौँ, लुप्त जेना सद्ग्रंथ ॥१४॥

दादुर धुनि चहु दिसा सोहाये । वेद पढ़य जनु बटु समुदाये ॥ १॥
नव पल्लव भेल बिटप अनेके । साधक मन लह जेना बिवेके ॥ २॥
भेल पात बिनु आक जबासे । जेना सुराजहिँ खलक प्रयासे ॥ ३॥
धूरि कतहु दृग पथ नहि आबय । जेना धरम केँ क्रोध भगाबय ॥ ४॥
ससि संपन्न सोभ महि केहन । उपकारी केर संपति जेहन ॥ ५॥
निसितम घन खद्योत बिराजे । मानु जुटल पाखंडि समाजे ॥ ६॥
महाबृष्टि टुटि बहय कियारी । बिगड़य जेना स्वतंत्रा नारी ॥ ७॥
खेत निराबय चतुर किसाने । बुध तज जेना मोह मद माने ॥ ८॥
चकबा कतहु पड़य नहि नयने । धरम पड़ाय जेना कलि अयने ॥ ९॥
बरषहु उसर न तृन कहुँ देखी । जनु हरिजन उर काम न लेखी ॥१०॥
बिबिध जंतुमय महि लस केना । बढ़ने प्रजा सुराजा जेना ॥११॥
जहँ तहँ पथिक थकित अछि अटकल । ज्ञान होइत जनु इंद्रिय सटकल ॥१२॥

दोहा—प्रबल पवन कहियो बहय, जहँ तहँ मेघ बिलाय ।
जेना कपूतक जनम सौँ, कुल सत धरम नसाय ॥
कखनहुँ दिन मे निबिड़ तम, कखनहुँ प्रगट पतंग ।
जेना ज्ञान उपजय नसय, पाबि कुसंग सुसंग ॥१५॥

बरषा गत रितु सरद सोहाओन । लछुमन देखू कत मनभाओन ॥१॥
कास फुलैल सकल महि छाजय । जनि बरषाक बुढ़ाइ बिराजय ॥२॥
पथ जल सोखय उदित अगस्ते । कर संतोष लोभ जनु अस्ते ॥३॥
सरि सर मे जल निर्मल केहन । गत मद मोह संत हिय जेहन ॥४॥
रसरस सुखय सरित सर पानी । ममता त्यागथि जेना ज्ञानी ॥५॥
सुरद जानि पहुँचल खंजन दल । समय पाबि जहिना पुन्यक फल ॥६॥

पंक रेनु बिनु सोभय धरनी । जेना नीति निपुन नृप करनी ॥ ७॥
जल संकोच बिकल भेल मीने । अबुध कुटुंबी जेन धनहीने ॥ ८॥
बिनु घन निरमल सोभ अकासे । हरिजन इव परिहरि सब आसे ॥ ९॥
कहुँ कहुँ बृष्टि सारदी थोरे । क्यो येक भगति जेना लह मोरे ॥१०॥

दोहा--चलल हरषि तजि नगर नृप, तापस बनिक भिखारि ।
पावि जेना हरि भगति श्रम, तजथि आश्रमी चारि ॥१६॥

सुखी मीन जे नीर अगाधा । जनि हरि सरन न एको बाधा ॥१॥
कमल फुलैल सोभ सर केहन । निरगुन ब्रह्म सगुन भेल जेहन ॥२॥
गुंजय मधुकर मुखर अनूपे । सुंदर खग रव नाना रूपे ॥३॥
निसि लखि चकबा मन दुख केना । पर संपति लखि दुरजन जेना ॥४॥
चातक रटय तृषा अति ओही । जेना न पाबय सुख सिवद्रोही ॥५॥
सरदातप निसि ससि अपहरइछ । संत दरस पातक जिमि टरइछ ॥६॥
चितय चकोर चान कें केना । हेरय हरि लहि हरिजन जेना ॥७॥
मसक दंस बीतल हिम त्रासा । यथा द्विजक द्रोहें कुल नासा ॥८॥

दोहा--महि संकुल जे जीव छल, नसल सरद रितु पाय ।
सद्गुरु मिलने जाय जनु, संसय भ्रम समुदाय ॥१७॥

बरषा गत निरमल रितु आयल । सुधि न तात सीता कैर पायल ॥१॥
एक बेर कहुना सुधि पाबी । कालो जीति निमिष मे लाबी ॥२॥
जिबइत कतहु होथि जौं जानी । तात जतन कय तनिका आनी ॥३॥
सुग्रीबो मम सुधि बिसराओल । राज कोष पुर नारी पाओल ॥४॥
जहि सायक मारल हम बाली । तहि सर हतब मूढ़ कें काल्ही ॥५॥
छुट मद मोह कृपा सौं जनिका । सपनहुँ क्रोध उमा की तनिका ॥६॥
ई चरित्र मुनि ज्ञानी जानथि । जे रघुवीर चरन रति मानथि ॥७॥
लछुमन क्रोधवंत प्रभु जानल । धनुष चढ़ा कय सर संधानल ॥८॥

दोहा--समुझाओल अनुजहिँ तखन, रघुपति करुना सीम ।
लय अनियौन्ह देखाय भय, तात सखा सुग्रीम ॥१८॥

तेतय पवनसुत हृदय बिचारल । राम काज सुग्रीब बिसारल ।।१।।
निकट जाय पद माथ नमौलनि । तनिका चारू भाँति बुझौलनि ।।२।।
सुनि सुग्रीब परम डर पाओल । विषय हमर सब ज्ञान हेराओल ।।३।।
आब पवनसुत दूतक जूथे । पठबह जहँ तहँ कपिक बरूथे ।।४।।
कहह जे न पख भरि मे आयत । हमरा हाथेँ मारल जायत ।।५।।
तखन बजौल पवनसुत दूते । कय सबहुक सनमान बहूते ।।६।।
भीति प्रीति ओ नीति देखेलनि । चरन प्रनमि सब क्यो चलि देलनि ।।७।।
तहि छन लछुमन ऐला नगरे । क्रोध देखि धाओल कपि सगरे ।।८।।

दोहा—**धनुष चढ़ा कहलनि लखन, डाहि करब पुर छार ।**
तखन देखि ब्याकुल नगर, ऐला बालिकुमार ।।१६।।

चरन नमा सिर बिनती केलनि । लछुमन अभय बाँहि हुनि देलनि ।।१।।
क्रोधवंत लछुमन छथि सुनिते । कह कपीस आकुल भय जनिते ।।२।।
सुनु हनुमंत संग लय तारा । कय विनती समुझाउ कुमारा ।।३।।
हनूमान तारा सँग आनल । चरन बंदि प्रभु सुजस बखानल ।।४।।
कय बिनती मंदिर लय आओल । चरन पखारि पलँग बैसाओल ।।५।।
पुनि कपीस पद माथ नमौलनि । गहि भुज लछुमन कंठ लगौलनि ।।६।।
नाथ बिषय सम मद न भुबन मे । मुनि मन मोहि लैछ जे छन मे ।।७।।
सुनइत बिनय बचन सुख पौलनि । लछुमन तनिका बहुत बुझौलनि ।।८।।
पवनतनय सब कथा सुनाओल । जेना दूतगन गेल पठाओल ।।९।।

दोहा—**कपिपति चलला हरषि मन, अंगदादि कपि साथ ।**
लछुमन केँ आगू कने, अयला जहँ रघुनाथ ।।२०।।

कहल जोरि कर पद धय माथे । किछु नहि हमर दोष हे नाथे ।।१।।
अतिसय प्रबल देव तव माया । छूटय राम अहँक जौँ दाया ।।२।।
विषय बस्य सुर नर मुनि स्वामी । हम पामर पसु कपि अति कामी ।।३।।
नारि नयन सर जाहि न लागल । घोर क्रोध तम निसि जे जागल ।।४।।
लोभक फानी नहि गर जकरा । रघुपति जानी अहँ सम तकरा ।।५।।

ई गुन साधन सौँ नहि आबय । अहँक कृपेँ कयो कयो जन पावय ॥६॥
बिहुँसि कहल रघुपति भगवाने । अहँ प्रिय हमरा भरत समाने ॥७॥
मन दय आब जतन करु तेना । सुधि सीता कॅर पाबी जेना ॥८॥

दोहा—येंहि बिधि गप होइतहि रहय, ऐल बानरक जूथ ।
देखि पड़य नाना बरन, दिसि दिसि कीस बरूथ ॥२१॥

उमा देखल कपि सेना जे टा । गनय चाह जे मूरख से टा ॥१॥
आबि राम पद नमबय माथे । निरखि बदन सब होअय सनाथे ॥२॥
येहन एको नहि कपि सेना मे । जकरा कुसल न पुछलनि रामे ॥३॥
ई न प्रभुक लेल किछु बड़ काजे । व्यापक विस्वरूप रघुराजे ॥४॥
ठाढ़ जहाँ तहँ आज्ञा पा कय । कहल सुकंठ सबहिँ समुझा कय ॥५॥
राम काज ओ हमर निहोरे । बानर जूथ जाह चहु ओरे ॥६॥
जनकसुता कॅर पता लगाबह । मास मध्य सब जन घुरि आबह ॥७॥
अबधि बिता जे सुधि बिनु आओत । हमरा हाथ मरन से पाओत ॥८॥

दोहा—कीस सकल सुनितहिँ बचन, जहँ तहँ चलल तुरंत ।
पुनि सुकंठ कहलनि बजा, अंगद नल हनुमंत ॥२२॥

सुनू नील अंगद हनुमाने । जामबंत मति धीर सुजाने ॥ १॥
सकल सुभट मिलि दच्छिन जायब । सीता सुधि सब सौँ पुछिआयब ॥ २॥
करम बचन मन जतन बिचारब । रामचंद्र कॅर काज सम्हारब ॥ ३॥
भानु पीठ सेबी उर आगी । स्वामिहिँ सब भावेँ छल त्यागी ॥ [illegible]॥
तजि माया सेबी परलोके । नसय सकल भव संभव सोके ॥ [illegible]॥
भैया यैह जनम फल भारी । भजी राम सब काज बिसारी ॥ [illegible]॥
सैह गुनज्ञ सैह बड़भागी । जे रघुवीर चरन अनुरागी ॥ [illegible]॥
अनुमति माँगि नमा पद माथे । चलल हरषि सुमिरति रघुनाथे ॥ [illegible]॥
पाछाँ मारुति माथ नमौलनि । जानि काज प्रभु निकट बजौलनि ॥ [illegible]॥
परसल सीस सरोरुह पानी । कर मुद्रिका देल जन जानी ॥[illegible]॥
सीता केँ बहु भाँति बुझैबे । कहि बल बिरह बेगि अहँ ऐबे ॥[illegible]॥

जनम सुफल हनुमान बिचारी । चलला हृदय कृपानिधि धारी ॥१२॥
जद्यपि प्रभु जानथि सब बाता । राजनीति राखथि सुरत्राता ॥१३॥

दोहा—तकइत चलला सकल बन, सरिता सर गिरि खोह ।
राम काज लवलीन मन, बिसरल तन कर छोह ॥२३॥

निसिचर सौँ कहुँ हो जदि भेँटे । प्रान लेथि येक एक चपेटे ॥१॥
बहु प्रकार गिरि कानन हेरथि । मुनि जौँ मिलथि ताहि सब घेरथि ॥२॥
लागल तृषा बहुत अकुलैला । मिलय न जल घन बन भुतियैला ॥३॥
अनुमानल मन मे हनुमाने । मरय चाह सब बिनु जल पाने ॥४॥
चढ़ि गिरि सिखर चतुर्दिसि देखल । भूमि बिअरि येक अजगुत पेखल ॥५॥
चक्रबाक बक हंस उड़ैछल । ततय अनेक बिहग प्रबिसैछल ॥६॥
गिरि सौँ उतरि पवनसुत एला । सब केँ बिअरि देखाबय गेला ॥७॥
हनुमंतहिँ आगाँ कय लेलनि । बियरि पैसला देर न केलनि ॥८॥

दोहा—बर उपबन देखल पहुँचि, सर बिकसित बहु कंज ।
तहाँ एक मंदिर रुचिर, बैसलि तिय तपपुंज ॥२४॥

दूरहिँ तनि सब सीस नमौलनि । पुछने निज बृत्तांत सुनौलनि ॥ ॥
तखन कहल से करु जल पाना । खाउ सुरस सुंदर फल नाना ॥२॥
मज्जन कयल मधुर फल खायल । पुनि तनिका लग सब चलिआयल ॥३॥
बरनि सुनाओल सब निज गाथा । आब जैब हम जहँ रघुनाथा ॥४॥
दृग सब मुनू बिअरि तजि जाऊ । भेँटती सीता जुनि पछताऊ ॥५॥
मूनि नयन पुनि देखथि बीरे । सबहिँ ठाढ़ छल सिंधुक तीरे ॥६॥
से पुनि गेली जहँ रघुनाथे । जाय कमल पद टेकल माथे ॥७॥
नाना भाँति बिनय से केलनि । अनपायिनी भगति प्रभु देलनि ॥८॥

दोहा—गेली बदरी बिपिन से, प्रभु आज्ञा धय सीस ।
उर धय रामक चरन जुग, जहि बंदथि अज ईस ॥२५॥

येतय बिचारथि कपिक समाजे । बितल अवधि किछु भेल न काजे ॥ १॥
सब मिलि कहथि परसपर बाता । बिनु सुधि लेने करब की आता ॥ २॥

अंगद कहल नयन भरि नोरे । उभय प्रकार मरन भेल मोरे ॥ ३॥
येतय न भेल सीता संधाने । ओतय लेता कपिराज पराने ॥ ४॥
पितु बध पुनि करितथि बध मोरे । राम बचौलनि हुनि न निहोरे ॥ ५॥
बहुरि बहुरि अंगद कह एहे । मरन भेल नहि किछु संदेहे ॥ ६॥
अंगद बचन सुनति कपि बीरे । बाजि न सकथि बहय दृग नीरे ॥ ७॥
छन भरि सोच मगन भय गेला । पुनि येहि बिधि कहइत सब भेला ॥ ८॥
हमरा सब सिय सुधि बिनु नेने । घुरब न क्यो जुबराज प्रबीने ॥ ९॥
ई कहि लवनसिंधु तट जा कय । बैसला कपि तहँ दाभ ओछा कय ॥१०॥
जामवंत अंगद दुख देखी । कहल कथा उपदेस बिसेखी ॥११॥
तात राम केँ नर जुनि मानू । निरगुन ब्रह्म अजित अज जानू ॥१२॥
हम सब सेवक अति बड़भागी । संतत सगुन ब्रह्म अनुरागी ॥१३॥

दोहा--निज इच्छेँ प्रभु अवतरथि, सुर महि गो द्विज लागि ।
सगुन उपासक संग तहँ, रहथि मोच्छ सब त्यागि ॥२६॥

येहि बिधि कथा कहथि बहु भाँती । गिरि कंदरा सुनल संपाती ॥ १॥
बाहर भय देखल बहु कीसे । मोहि अहार देलनि जगदीसे ॥ २॥
भच्छन सब केँ आइ करैछी । बितल बहुत दिन भुखेँ मरैछी ॥ ३॥
कहियो भछ भरि पेट न पाओल । येकहि बेरि बिधि आइ पठाओल ॥ ४॥
डरल सबहु गिध बचन अकानी । आब मरब साँचे हम जानी ॥ ५॥
कपि सब उठल गिद्ध केँ देखी । जामवंत मन सोच बिसेखी ॥ ६॥
अंगद कहलनि मन अनुमाने । धन्य न आन जटायु समाने ॥ ७॥
रामकाज कारन तन त्यागी । हरिपुर गेला परम बड़भागी ॥ ८॥
हरष सोकमय बचन अकानल । खग लग ऐल कीस डर मानल ॥ ९॥
ताहि अभय कय पूछल जा कय । कथा सकल से कहल सुना कय ॥१०॥
बंधुक करनी सुनि संपाती । रघुपति महिमा कह बहु भाँती ॥११॥

दोहा--मोहि लय जाह समुद्र तट, देव तिलांजलि ताहि ।
बचन सहायक हैब हम, पैबह खोजह जाहि ॥२७॥

अनुज क्रिया कय सागर तीरे । कहल कथा निज सुनु कपिबीरे ॥ १॥
हम दुहु बंधु प्रथम जौबन मे । गेलहुँ रवि लग उड़ि गगन मे ॥ २॥
घुरला तेज असह से जानी । रवि लगिचौलहुँ हम अभिमानी ॥ ३॥
जरल पाँखि अति तेज अपारे । महि खसलहुँ कय घोर चिकारे ॥ ४॥
मुनि एक रहथि चंद्रमा नामे । मोहि लखि भैलनि दया तहि ठामे ॥ ५॥
बहु प्रकार से ज्ञान सुनौलनि । देह जनित अभिमान छोड़ौलनि ॥ ६॥
त्रेता ब्रह्म मनुज तन धरता । तनिक नारि निसिचरपति हरता ॥ ७॥
तनि खोजय भेजता प्रभु दूते । मिलि हुनका सौँ होयबह पूते ॥ ८॥
चिंता तजह पाँखि पुनि पयबह । हुनि सीताक उदेस देखयबह ॥ ९॥
मुनिबर बचन सत्य भेल आजे । सुनि मम बचन करह प्रभु काजे ॥१०॥
गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका । तहँ रह रावन सहज असंका ॥११॥
अछि असोक उपबन ई नामे । सोच मगन सीता तहि ठामे ॥१२॥

दोहा—देखइत छी हम नहि अहाँ, गीधक दृष्टि अपार ।
बूढ़ भेलहुँ नहि तौँ हमहुँ, किछु करितहुँ सहकार ॥२८॥

जे नाँघत सय जोजन सागर । करत से राम काज मति आगर ॥१॥
हमरा निरखि धरह मन धीरे । राम कृपेँ भेल केहन सरीरे ॥२॥
नाम पापियो जनिक उचारी । तर भवसागर दुर्गम भारी ॥३॥
अहँ तनि दूत कदरपन छारी । करू उपाय राम उर धारी ॥४॥
ई कहि गरुड़ गीध चलि गेले । कपिगन मन अति बिसमय भेले ॥५॥
अपन अपन बल सब क्यो भाखल । पार जाय मे संसय राखल ॥६॥
भेलहुँ बूढ़ कहलनि रिच्छेसे । नहि तन रहल प्रथम बल लेसे ॥७॥
जखन त्रिबिक्रम भेला खरारी । छलहुँ तरुन हम बल छल भारी ॥८॥

दोहा—बलि नन्हैत बढ़लाह प्रभु, से तन कहल न जाय ।
उभय घड़ी मे कैल हम, सात प्रदच्छिन धाय ॥२९॥

पार तँ जायब अंगद कहले । फिरबा मे किछु संसय रहले ॥ १॥
जामवंत कह अहँ सब लायक । कोना पठैब सभक छी नायक ॥ २॥

रिछपति कहल सुनह हनुमाने । की चुप सधने छह बलवाने ॥ ३॥
पवनतनय बल पवन समाने । बुधि विवेक विज्ञान निधाने ॥ ४॥
जग मे कठिन येहन कोन बाता । जे न तोहर सक होयतहु ताता ॥ ५॥
राम काज हित तव अवतारे । सुनितहिँ भेला पर्वताकारे ॥ ६॥
बरन कनक तन तेज बिराजित । जनि गिरिराज अपर हो भ्राजित ॥ ७॥
सिंहनाद कयलनि बहु बारे । लीलहिँ नाँघब जलनिधि खारे ॥ ८॥
सहित सहाय रावनहिँ मारी । आनब येतय त्रिकूट उपारी ॥ ९॥
जामबंत हम पूछी तोही । दियऽ सिखाओन समुचित मोही ॥१०॥
येतबे करब तात अहँ जा कय । सिय केँ देखि कहब सुधि आ कय ॥११॥
पुनि निज भुज बल राजिबनयने । कौतुक कपि सेना सँग कयने ॥१२॥

छंद—कपि सेन संग सँहारि निसिचर राम सीतहिँ आनता ।
त्रैलोक पावन सुजस सुर मुनि नारदादि बखानता ॥
जे सुनय गाबय कहय बूझय परम पद नर पाबथी ।
रघुवीर पद पाथोज मधुकर दास तुलसी गाबथी ॥

दोहा—भव भेषज रघुनाथ जस, जे सुनैछ नर नारि ।
तनिकर सब मन कामना, सिद्धि करथि त्रिपुरारि ॥३०॥

सोरठा—नीलोत्पल तन स्याम, कोटि काम सोभा अधिक ।
सुनू तनिक गुन ग्राम, जनिक नाम अघ खग बधिक ॥

मास पारायण, विश्राम—२३

इति श्रीमद्रामचरितमानसस्य श्रीरामलोचनशरणविरचिते मैथिलीरूपान्तरे सकलकलिकलुषविध्वंसने विशुद्धसन्तोषसम्पादनो नाम चतुर्थः सोपानः समाप्तः ।

श्रीसीतारामजी

मैथिली

श्रीरामचरितमानस

पञ्चम सोपान (सुन्दरकाण्ड)

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं गीर्वाणशान्तिप्रदं
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम्
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं
वन्देऽहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम् ॥१॥

नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये
सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा ।
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरां मे
कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च ॥२॥

अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि ॥३॥

जामवंत केर बचन सोहाओल। सुनि हनुमंत हृदय अति भाओल ॥१॥
ता धरि बाट देखब सहि सूले। खा कय बंधु कंद फल मूले ॥२॥
जा धरि आबी सीतहिँ देखी। होयत काज मन हरख बिसेखी ॥३॥
ई कहि सबहिँ झुका कय माथे। चलल हरषि हिय धय रघुनाथे ॥४॥
सिंधु तीर एक सुंदर भूधर। कौतुक कूदि चढ़ल तेहि ऊपर ॥५॥
पुनि पुनि रघुबीरहिँ उर धारी। फनला पवनतनय बल भारी ॥६॥
जहि गिरि चरन देथि हनुमंते। से चल जाय पताल तुरंते ॥७॥
सर अमोघ रघुपति केर जहिना। चलला हनूमान झट तहिना ॥८॥
जलनिधि रघुपति दूत बिचारी। कह मैनाक होउ श्रम हारी ॥९॥

दोहा—हनूमान कर परसि तनि, बजला करति प्रनाम।
राम काज कयने बिना, कहँ हमरा बिश्राम ॥१॥

जाइत मारुति केँ सुर देखी। जनबा लय बल बुद्धि बिसेखी ॥ १॥
सुरसा नामक अहिगन माता। ऐलि पठाओलि कहलनि बाता ॥ २॥
आइ देव मोहि देल अहारे। कहल बचन सुनि पवनकुमारे ॥ ३॥
राम काज कय घुरि हम आबी। सीता सुधि जा प्रभुहिँ सुनाबी ॥ ४॥
तखन अहँक मुँह आबि समैबे। साँच कही दिय अनुमति जैबे ॥ ५॥
कहुना जाय देल नहि ओही। कहलनि कपि किय ग्रसह न मोही ॥ ६॥
जोजन भरि से बदन पसारल। कपि दुइ गुन तन केँ बिस्तारल ॥ ७॥
सोरह जोजन मुह से तनले। तुरित पवनसुत बत्तिस बनले ॥ ८॥
जेना जेना से बदन बढ़ौले। तेना दुगुन कपि रूप देखौले ॥ ९॥
सय जोजन से मुह बिस्तारल। अति लघु रूप पवनसुत धारल ॥१०॥
पैसि बदन पुनि बाहर आ कय। बिदा मँगलथिन माथ झुका कय ॥११॥
हमरा सुर जहि हेतु पठाओल। बुधि बल मरम अहँक हम पाओल ॥१२॥

दोहा—राम काज सब करब अहँ, छी बल बुद्धि निधान।
आसिष दय गेलि हरषि से, बिदा भेला हनुमान ॥२॥

निसिचर एक उदधि कर बासे। कय माया खग गहय अकासे ॥ १॥
जीब जंतु जे उड़ नभ तल मे। छाया तकर देखि कय जल मे ॥ २॥

गहय छाह उड़ि सकय न से टा । येहि बिधि खाय नभक खग जे टा ॥ ३॥
हनुमानहुँ सौं से छल ठानल । तकर कपट कपि लगले जानल ॥ ४॥
तकरा मारि मरुत सुत बीरे । गेला सिंधु पार मति धीरे ॥ ५॥
ततय जाय देखल बन सोभा । गूँजय चंचरीक मधु लोभा ॥ ६॥
सुंदर तरु फल फूल बिसेखी । मन हुलसल खग मृग गन देखी ॥ ७॥
आगू सैल बिसाल निहारी । दौड़ि ततय चढ़ला भय छारी ॥ ८॥
येहि मे उमा न कपि कैर दापे । कालहुँ खाय से प्रभुक प्रतापे ॥ ९॥
देखल लंक कपि गिरि पर फानी । अति दुर्गम नहि होअय बखानी ॥१०॥
अति उतंग जलनिधि चहुँपासे । कनक कोट कर परम प्रकासे ॥११॥

छंद—छल कनक कोटि बिचित्र मनिकृत सुभग नाना गृह घने ।
बाजार चौक सुबाट बीथी रचित पुर बहु बिधि भने ॥
गज बाजि खच्चर निकर पदचर रथ बरूथहिँ के गनै ।
बहु रूप निसिचर जूथ अति बल सैन बरनति नहि बनै ॥

बन बाग उपबन बाटिका सर कूप बापी सोभिते ।
नर नाग सुर गंधर्व कन्या रूप मुनि मन मोहिते ॥
कहुँ मल्लदेह बिसाल सैल समान अति बल गरजए ।
नाना अखाढ़ा लड़य बहु बिधि एक एकहिँ तरजए ॥

कय जतन भट कोटिक बिकट तन नगर चहुँदिसि रच्छने ।
अज खर महिष नर धेनु खल निसिचर कतहु कर भच्छने ॥
येहि हेतु तुलसी कथा येहि सबहुक कहल किछु लघु अती ।
जेँ तेजि तन रघुबीर सर तीरथ लहत ध्रुव सदगती ॥

दोहा—देखि पुरक रखवार बहु, कपि मन कयल बिचार ।
निसि मे अति लघु रूप धय, करी नगर पैसार ॥३॥

मसक समान रूप कपि धरी । लंका चलल सुमिरि नरहरी ॥१॥
निसिचर एक लंकिनी नामे । कह मोहि निदरि जाह कोन ठामे ॥२॥
मरम न जानह तोँ सठ मोरा । हमर अहार जहाँ धरि चोरा ॥३॥
मुक्का मारल पवनकुमारे । खसल मही बमि लिधुरक धारे ॥४॥
सम्हरि सम्हारि ऊठि पुनि लंका । कयल जोड़ि कर बिनय ससंका ॥५॥
विधि देल रावन केँ बर जहिया । चलइत संकेतल मोहि तहिया ॥६॥
जखन होअह ब्याकुल कपि मारल । जनिहह जैत दनुज संहारल ॥७॥
तात हमर अति पुन्य बहूते । देखल नयन राम कोर दूते ॥८॥

दोहा—तात स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरी तुला येक अंग ।
तुलय न से सुख सकल मिलि, जे सुख लव सतसंग ॥४॥

प्रबिसि नगर करु जे जत काजा । हृदय राखि कोसलपुर राजा ॥१॥
गरल सुधा रिपु करय मिताई । गोपद सिंधु अनल सितलाई ॥२॥
गरुड़ सुमेरु रेनु सम तकरा । राम कृपा कय चितबथि जकरा ॥३॥
अति लघु रूप भेला हनुमाने । पुर पैसला सुमिरि भगवाने ॥४॥
एक एक मंदिर केँ देखल । जहँ तहँ अगनित जोधा पेखल ॥५॥
गेला दसानन मंदिर अंदर । बरनि न हो बिचित्र बड़ सुंदर ॥६॥
हनुमत तकरा देखल सयने । देखल न तहँ वैदेही नयने ॥७॥
पुनि येक भवन मनोहर पाओल । हरि मंदिर तहँ भिन्न बनाओल ॥८॥

दोहा—रामायुध अंकित भवन, सोभा कहल न जाय ।
नव तुलसी तरु बृंद तहँ, लखि हरषित कपिराय ॥५॥

लंका निसिचर निकर निवासे । येतय कहाँ सज्जन केर बासे ॥१॥
मन मे तरक करय कपि लगला । ताही समय बिभीषन जगला ॥२॥
राम राम से सुमिरन कैलनि । सुजन जानि कपि हिय हरखैलनि ॥३॥
परिचय अवस करब हुनि साथे । काज न बिगड़य साधुक हाथे ॥४॥
विप्र रूप धय बचन उचारल । सुनति बिभीषन ततय पधारल ॥५॥
पूछल कुसल सहित प्रनिपाते । कहू विप्र निज परिचय पाते ॥६॥

थिकहुँ अहाँ की क्यो हरिजन मे । होअय प्रीति बड़ हमरा मन मे ॥७॥
की अहँ राम दीन अनुरागी । ऐलहुँ मोहि करय बड़भागी ॥८॥

दोहा—तखन कहल हनुमंत सब, रामकथा निज नाम ।
सुनति दुहुक तन पुलक मन, मगन सुमिरि गुन ग्राम ॥६॥

हनुमत येतय रही हम तहिना । सीदित जीभ दाँत बिच जहिना ॥१॥
कहियो मोहि बुझि तात अनाथे । करता कृपा भानुकुल नाथे ॥२॥
तामस तन नहि साधन एको । प्रीति न प्रभु पद पदुम कनेको ॥३॥
भेल भरोस आब हनुमंते । बिनु हरि कृपा भेंटथि नहि संते ॥४॥
जैं रघुबीर अनुग्रह भेले । तैं हठि अहँ मोहि दरसन देले ॥५॥
सुनू बिभीपन प्रभु केर रीती । करथि सदा सेबक पर प्रीती ॥६॥
कहू कोन हम परम कुलीने । छी कपि चंचल सब बिधि हीने ॥७॥
लेत परात नाम मम जे टा । तहि दिन पौत अहार न से टा ॥८॥

दोहा—येहन अधम हम सुनु सखा, हमरो पर रघुबीर ।
कयल कृपा प्रभु गुन सुमिरि, भरल बिलोचन नीर ॥७॥

जनितहुँ एहन स्वामि बिसारी । भटकय जे से किय न दुखारी ॥१॥
येहि बिधि कहति राम गुन ग्रामे । पौलनि अनिर्वाच्य बिश्रामे ॥२॥
पुनि सब कथा बिभीपन बरनल । जानकि रहथि जाहि बिधि तहि थल ॥३॥
कह हनुमान तखन सुनु भैया । देखय चहै छी जानकि मैया ॥४॥
जुगुति बिभीपन सकल सुनाओल । बिदा माँगि मारुतसुत धाओल ॥५॥
धय से रूप गेला पुनि ताहाँ । बन असोक छलि सीता जाहाँ ॥६॥
देखि मनहि मन कयल प्रनामे । बितय बैसले नित निसि जामे ॥७॥
कृस तन सीस जटा येक बेनी । जपथि हृदय रघुपति गुन श्रेनी ॥८॥

दोहा—निज पद देने नैन मन, राम चरन मे लीन ।
परम दुखी मारुति भेला, जानकि कैं लखि दीन ॥८॥

तरु पल्लब बिच चुप जा पैसल । आब करू की सोचथि बैसल ॥१॥
तहि अवसर रावन तहँ आयल । संग नारि बहु भाँति सजायल ॥२॥

सीता कें कत बिधि समुझौलक । साम दाम भय भेद देखौलक ॥३॥
कह रावन सुनु सुमुखि सयानी । मंदोदरी आदि सब रानी ॥४॥
प्रन मम सबहिँ करब तव चेरी । ताकू मम दिसि एको बेरी ॥५॥
तृनक ओत कय कह बैदेही । सुमिरि अवधपति परम सिनेही ॥६॥
सुनु दसमुख खद्योत प्रकासे । करय कि कहियो नलिनि बिकासे ॥७॥
ई मन बुझि कय कहथि जानकी । जानह नहिँ रघुबीर बान की ॥८॥
सठ सूनहिँ हरि अनलें मोही । अधम निलज्ज लाज नहि तोही ॥९॥

दोहा—अपना कें खद्योत सुनि, रामहिँ भानु समान ।
परुष बचन सुनि कुपित अति, बाजल काढ़ि कृपान ॥९॥

सीते तों कयलह अपमाने । काटब तव सिर कठिन कृपाने ॥१॥
नहि तौं झट मानह मम बानी । न तौं हैत तव जीवन हानी ॥२॥
स्याम सरोज दाम सम सुंदर । प्रभु भुज करि कर सम दसकंधर ॥३॥
से भुज कंठ कि तव असि घोरे । सुनु सठ ई प्रमान प्रन मोरे ॥४॥
चंद्रहास हरु मम परितापं । रघुपति बिरह अनल संजातं ॥५॥
सीतल तेज धरी खर धारे । कह सीता हरु मम दुख भारे ॥६॥
सुनति बचन पुनि मारय धाओल । मयतनया कहि नीति बुझाओल ॥७॥
सभ निसिचरि कें कहल बजा कय । सीतहिँ बहु बिधि त्रासह जा कय ॥८॥
मास दिवस धरि करत न काने । तौं हम मारब काढ़ि कृपाने ॥९॥

दोहा—भवन गेल दसकंधर, येतय पिसाचिनि बृंद ।
सीता कें देखबैछ डर, धरय रूप बहु मंद ॥१०॥

त्रिजटा नाम राछसी एका । राम चरन रति निपुन बिबेका ॥१॥
सबकें बजा सुनाओल सपने । सीतहिँ सेबि करह हित अपने ॥२॥
भेल सपन लंका कपि जारल । जातुधान सेना सब मारल ॥३॥
खर पर चढ़ल नगन दससीसे । मुंडित सिर खंडित भुज बीसे ॥४॥
येहि बिधि से दच्छिन दिसि गेले । लंका नृपति बिभीषन भेले ॥५॥
पुर दोहाइ रघुबीरक भेलनि । सीतहिँ तखन बजा प्रभु लेलनि ॥६॥

ई सपना हम कही प्रचारी । सत्य हयत बितइत दिन चारी ॥७॥
तकर बचन सुनि से सब डरली । जनकसुताक चरन पर पड़ली ॥८॥

दोहा—सकल गेलि जहँ तहँ तखन, सीता सोचे लीन ।
मास दिवस बिततहिँ हतत, हमरा निसिचर हीन ॥११॥

त्रिजटहिँ कहल जोड़ि जुग पानी । बिपति सहाय माय तोहि जानी ॥ १॥
करु उपाय झट तजी सरीरे । आब सहाज न बिरहक पीरे ॥ २॥
आनि काठ झट चिता बनाऊ । माय अनल पुनि ताहि लगाऊ ॥ ३॥
सत्य करू मम प्रीति सयानी । के सुन श्रवन सूल सम बानी ॥ ४॥
सुनति बचन पद पकड़ि बुझौलक । प्रभु प्रताप बल सुजस सुनौलक ॥ ५॥
निसि न अनल मिल सुनु सुकुमारी । गेलि निज घर ई कहि परतारी ॥ ६॥
कह सीता विधि छथि प्रतिकूले । भेटत न आगि नसत नहि सूले ॥ ७॥
देखी प्रगट गगन अंगारा । अवनि न आबय एको तारा ॥ ८॥
पावकमय ससि स्रवय न आगी । मानु जानि हमरा हतभागी ॥ ९॥
सुनह बिनय मम बिटप असोके । नाम सत्य करु हरु मम सोके ॥१०॥
नूतन किसलय अनल समाने । देह आगि तन करह निदाने ॥११॥
लखि सिय केँ बिरहाकुल प्राने । कपिक बितय छन कलप समाने ॥१२॥

सोरठा—कपि कय हृदय बिचार, खसा देल औँठी तखन ।
जनि असोक अंगार, देल हरषि उठि कर गहल ॥१२॥

तखन देखल मुद्रिका मनोहर । राम नाम अंकित अति सुंदर ॥ १॥
औँठी चिन्हि निरखथि बिसमीते । हरष बिषाद बेयाकुल चीते ॥ २॥
जिति के सकय अजय रघुनाथे । रचल न हो ई माया हाथे ॥ ३॥
सीता मन बिचार कर नाना । मधुर बचन बजला हनुमाना ॥ ४॥
रामचंद्र गुन बरनय लागल । सुनितहिँ सीता केर दुख भागल ॥ ५॥
लगली सुनय लगा मन काने । कपि जड़ि सौँ सब कयल बखाने ॥ ६॥
श्रवनामृत जे कथा सुनाबय । से कियैक नहिँ परगट आबय ॥ ७॥
हनुमत तखन निकट चलि गेले । घुरि बैसली मन बिसमय भेले ॥ ८॥

दूत माय जानकि हम रामक । करी सपथ सत करुनाधामक ॥ ९॥
जननि मुद्रिका हम ई आनल । देल राम सहिदानि प्रमानल ॥१०॥
नर बानरक संग कहु केना । कहल कथा संगति भेल जेना ॥११॥

दोहा—कपि कर बचन सप्रेम सुनि, उपजल मन बिस्वास ।
जानल मन बच करम ई, कृपासिंधु कर दास ॥१३॥

प्रीति बढ़ल अति हरिजन जानी । पुलकल देह भरल दृग पानी ॥ १॥
डुबइत बिरह जलधि हनुमाने । भेलहुँ तात मम हित जलजाने ॥ २॥
कहु कहु कुसल जाइ बलिहारी । अनुज सहित सुखभवन खरारी ॥ ३॥
कोमल चित कृपालु रघुराजे । धयल निठुरपन कपि कोन काजे ॥ ४॥
सहज बानि सेवक सुखदायक । छनहु कि सुरति करथि रघुनायक ॥ ५॥
कहियो मम दृग सीतल ताता । हैत कि निरखि स्याम मृदु गाता ॥ ६॥
बचन न आब नयन भर बारी । अहह नाथ मोहि देल बिसारी ॥ ७॥
देखि परम बिरहाकुल सीता । बजला कपि मृदु बचन विनीता ॥ ८॥
माय कुसल प्रभु अनुज समेते । तव दुख दुखी सुकृपानिकेते ॥ ९॥
जनि जननी मानू जिय ऊने । अहँ सौँ प्रेम राम कर दूने ॥१०॥

दोहा—सब समाद रघुपतिक सुनु, आब जननि धय धीर ।
कहि कपि अति गदगद भेला, भरल बिलोचन नीर ॥१४॥

कहल राम तव बिरहेँ सीते । हमरा भेल सकल बिपरीते ॥ १॥
नव तरु किसलय मानु कृसानू । काल निसा सन निसि ससि भानू ॥ २॥
कुबलय बिपिन कुंत बन भेले । जनि घन बरिसल तातल तेले ॥ ३॥
जेहु छल हित सेहु दइ अछि पीरे । उरग स्वास सन त्रिबिध समीरे ॥ ४॥
कइनहुँ दुख किछु होइछ हरासे । जानय क्यो न कहू ककरा से ॥ ५॥
प्रेमक तत्त्व हमर ओ तोरे । जानय प्रिया एक मन मोरे ॥ ६॥
से मन रह तव लग सदिकाले । बुझु यँतबहि सौँ प्रीतिक हाले ॥ ७॥
प्रभु समाद सुनितहिँ वैदेही । मगन प्रेम तन सुधि नहि तेही ॥ ८॥
कपि कह धीर धरू उर माता । सुमिरु राम सेवक सुखदाता ॥ ९॥
रघुपति प्रभुता उर मे लाऊ । हमर बचन सुनि जुनि कदराऊ ॥१०॥

दोहा—निसिचर निकर पतंग सम, रघुपति बान कृसानु ।
जननी हिय धीरज धरू, जरले निसिचर जानु ॥१५॥

जौँ रघुबीर अहँक सुधि पवितथि । तौँ बिलंब रघुपति न लगबितथि ॥१॥
जानकि उगति राम सर भानू । रहत न दनुज तिमिर दल जानू ॥२॥
हम लय जाय सकी अबिलंबे । राम सपथ प्रभु कहल न अंबे ॥३॥
किछुए दिन जननी धरु धीरे । कपिगन सह अओता रघुबीरे ॥४॥
निसिचर मारि तोहि लय जैता । तिहुपुर नारदादि जस गैता ॥५॥
अछि सुत कपि सब अहिँक समाने । जातुधान अति भट बलवाने ॥६॥
हमरा हृदय परम संदेहे । सुनि कपि प्रगट कयल निज देहे ॥७॥
कनक भूधराकार सरीरे । समर भयंकर अति बल बीरे ॥८॥
सीता मन भरोस लखि भेले । पुनि लघु रूप पवनसुत लेले ॥९॥

दोहा—सुनु माता साखामृगक, नहि बल बुद्धि बिसाल ।
प्रभुक प्रतापेँ गरुड़ केँ, खाय परम लघु ब्याल ॥१६॥

सुनि कपि बचन तोष हिय आनल । भक्ति प्रताप तेज बल सानल ॥१॥
आसिष देल रामप्रिय जानी । होउ तात बल सीलक खानी ॥२॥
अजर अमर गुननिधि होउ पूते । करथु छोह रघुनाथ बहूते ॥३॥
करथु कृपा प्रभु सुनि निज काने । निरभर प्रेम मगन हनुमाने ॥४॥
पुनि पुनि चरन राखि निज सीसे । बजला बचन जोड़ि कर कीसे ॥५॥
भेलहुँ आब कृत कृत हम माता । आसिष तव अमोघ बिख्याता ॥६॥
मोहि अति भूख माय अछि जागल । लखि तरु मे सुंदर फल लागल ॥७॥
सुनु सुत करय बिपिन रखवारी । परम सुभट रजनीचर भारी ॥८॥
हम नहि तकरा अंब गुदानी । जौँ अहँ अपना मन सुख मानी ॥९॥

दोहा—देखि बुद्धि बल निपुन कपि, कहल जानकी जाउ ।
हृदय राखि रघुपति चरन, तात मधुर फल खाउ ॥१७॥

प्रनमि कयल पुनि बाग प्रबेसे । फल खायल तरु तोड़ल असेसे ॥१॥
रहय ततय बहु भट रखवारे । किछु मुइले किछु कयल पुकारे ॥२॥

नाथ एक आयल कपि भारी । से असोक बन देल उजारी ॥३॥
खयलक फल ओ बिटप उपाड़ल । रच्छक मरदि मरदि महि मारल ॥४॥
सुनि रावन पठौल भट नाना । लखि तनि गरजलाह हनुमाना ॥५॥
सब रजनीचर कपि संहारल । चिचिआइत गेल किछु अधमारल ॥६॥
पुनि पठौल से अछयकुमारे । चलल संग लय सुभट अपारे ॥७॥
अबइत देखि बिटप गहि तरजल । तनिका मारि महाधुनि गरजल ॥८॥

दोहा—किछु मरदल किछु देल हति, किछु मिलौल मलि धूरि ।
पुनि किछु जा गोहरौल प्रभु, अछि मरकट बल भूरि ॥१८॥

सुनि सुत बध लंकेस रिसायल । मेघनाद बलवंत पठायल ॥१॥
सुत मारब नहि बाँधब ताही । थिक कहाँक कपि देखय चाही ॥२॥
चलल इंद्रजित अतुलित जोधा । बंधु निधन सुनि उपजल क्रोधा ॥३॥
कपि देखल दारुन भट ऐले । दौड़ल कटकट गरजन कैले ॥४॥
भारी तरु उपाड़ि येक लेलनि । बिरथ रावनक सुत केँ केलनि ॥५॥
रहल महाभट तकरा संगे । गहि गहि कपि मरदल निज अंगे ॥६॥
तहि हति येहि सौँ जूझल केना । दुइ गजराज भिड़ल हो जेना ॥७॥
मुका हनि चढ़ला तरु ऊपर । पड़ल मुरुछि छन भरि से भू पर ॥८॥
उठि पुनि माया कयल बहूते । जितल न जाय प्रभंजन पूते ॥९॥

दोहा—ब्रह्मअस्त्र से साधलक, कपि मन कयल बिचार ।
जौँ नहि मानब ब्रह्मसर, महिमा मेटत अपार ॥१९॥

ब्रह्म बान कपि केँ से मारल । खसितहुँ बेर कटक संहारल ॥१॥
देखल से कपि मुर्छित भेले । नागक फाँस बाँन्हि लय गेले ॥२॥
जनिक नाम जपि सुनू भवानी । भवबंधन काटथि नर ज्ञानी ॥३॥
पावथि तनिक दूत की बंधन । गेला बन्हा प्रभु हित अपनहि मन ॥४॥
कपि बंधन सुनि निसिचर धायल । कौतुक हेतु सभा लय आयल ॥५॥
दसमुख सभा जाय कपि देखल । कहल न हो बल प्रभुता जे छल ॥६॥
कर जोड़ने सुर दिसिप विनीते । भृकुटि बिलोकथि सकल सभीते ॥७॥
देखि प्रताप न कपि मन संका । जेना साप बिच गरुड़ असंका ॥८॥

दोहा--कपि केँ देखि दसानन, बिहुँसल कहि दुरबाद ।
पुनि कयलक सुतबध सुरति, उपजल हृदय बिषाद ॥२०॥

कह लंकेस कोन तोँ कीसे । नसलेँ बन ककरा बल खीसे ॥१॥
की तोँ कान न सुनलेँ मोही । देखी अति निसंक सठ तोही ॥२॥
कोन अपराध निसाचर हनलेँ । रे सठ प्रानक डर नहि जनलेँ ॥३॥
सुन रावन ब्रह्मांड निकाया । पाबि जनिक बल बिरचथि माया ॥४॥
जनिके बल सौँ विधि हरि ईसे । पालथि सृजथि हरथि दससीसे ॥५॥
जनि बल सीस धरथि सहसानन । अंडकोस समेत गिरि कानन ॥६॥
धरथि बिबिध तन जे सुरत्राता । तोहर सन सठ केँ सिखदाता ॥७॥
हर कोदंड कठिन जे भंजल । तव समेत नृप दल मद गंजल ॥८॥
खर दूषन त्रिसिरा ओ बाली । बधल सकल अतुलित बलसाली ॥९॥

दोहा--जनिक बलक लबलेस सौँ, जितलह अग जग भारि ।
तनिक दूत हम जनिक तोँ, हरि अनलइ प्रिय नारि ॥२१॥

तव प्रभुता हमरा अछि जनले । सहसबाहु सौँ जे रन ठनले ॥ १॥
रन जस पौलह बालिक संगे । हँसि बहलौलक सुनि कपि ब्यंगे ॥ २॥
लागल छल भुख प्रभु फल खेलहुँ । कपिक सोभाव तोड़ि तरु देलहुँ ॥ ३॥
सबहक देह परम प्रिय स्वामी । मारल मोहि कुमारगगामी ॥ ४॥
पिटलहुँ हमरा पिटलक जे टा । तहि पर बन्हलक तोहर बेटा ॥ ५॥
बंधन पड़क न मोहि किछु लाजे । करय चहैछी निज प्रभु काजे ॥ ६॥
बिनती करी जोड़ि कर रावन । सुनह मान तजि हमर सिखावन ॥ ७॥
अपन कुलहिँ तोँ लखह बिचारी । भ्रम तजि भजह भगत भयहारी ॥ ८॥
काल डेराइछ अति जनिका डर । जे भच्छथि सुर असुर चराचर ॥ ९॥
तनि सौँ कहियो बैर न ठानह । देह जानकी मम बच मानह ॥१०॥

दोहा—प्रनतपाल रघुनाथ छथि, करुनासिंधु खरारि ।
रखता प्रभु गेने सरन, तव अपराध बिसारि ॥२२॥

राम चरन पंकज उर धारह । अचल राज लंकाक सम्हारह ॥१॥
रिषि पुलस्ति जस बिमल मयंके । तहि ससि मे जनि होअह कलंके ॥२॥
राम नाम बिनु सोभ न बयने । तजि मद मोह देखह मन अयने ॥३॥
बसन हीन नहि सोभ सुरारी । सब भूषन भूषित बर नारी ॥४॥
राम बिमुख संपति सामर्थे । रहय पौल बिनु पौलो ब्यर्थे ॥५॥
जहि सरि जड़ि मे सोत न आबे । तुरत सुखाइछ बृष्टि अभाबे ॥६॥
दसमुख सुनह कही प्रन रोपी । राम बिमुख त्राता नहि कोपी ॥७॥
संकर सहस बिष्णु अज तोही । राखि सकथि नहि रामक द्रोही ॥८॥

दोहा—मोह मूल बहु सूलप्रद, त्यागह तम अभिमान ।
रघुनायक रामहिँ भजह, कृपासिंधु भगवान ॥२३॥

जदपि कहल कपि अति हित बानी । भगति बिबेक बिरति नय खानी ॥१॥
बाजल बिहुँसि महा अभिमानी । मोहि भेटल कपि गुरु बड़ ज्ञानी ॥२॥
ऐलहु मृत्यु निकट खल तोही । लगलह अधम सिखाबय मोही ॥३॥
उनटे हैतहु कह हनुमाने । मति भ्रम प्रगट बुझल तव ज्ञाने ॥४॥
कपिक बचन सुनि कुपित महाने । कहल तुरत हर मूढ़क प्राने ॥५॥
मारय दौड़ल सुनति दनुजगन । ऐला सचिब समेत बिभीषन ॥६॥
नमा सीस कय बिनय बहूते । नीति बिरोध न मारी दूते ॥७॥
आन दंड प्रभु जाओ बिचारल । ई बिचार भल सबहिँ उचारल ॥८॥
सुनइत हँसि बाजल दसकंधर । अंग भंग कय पठबह बंदर ॥९॥

दोहा—नाँगड़ि पर ममता कपिक, सबकेँ कहल बुझाय ।
तेल बोड़ि पट बान्हि पुनि, पावक देह लगाय ॥२४॥

बिनु नाँगड़ि बानर तहँ जा कय । निज प्रभु केँ मठ लौत बजा कय ॥१॥
कयलक बहुत बड़प्पन जकरे । देखब हम प्रभुता बल तकरे ॥२॥
बिहुँसलाह मनमन कपि से सुनि । भेलि सारदा दाहिन ई गुनि ॥३॥
जातुधान सुनि रावन बचने । लागल रचय मूढ़ से रचने ॥४॥
रहल न पुर मे पट घृत तेले । नाँगड़ि बढ़ल कयल कपि खेले ॥५॥

कौतुक देखय ऐल बहु पुरजन । मारय लात हँसय कय गंजन ॥६॥
थपड़ी दय दय ढोल बजा कय । पुच्छ पजारल नगर घुमा कय ॥७॥
जरइत आगि देखि हनुमंते । भेला परम लघु रूप तुरंते ॥८॥
छुटि चढ़ला कपि कनक अटारी । भेल सभीत निसाचर नारी ॥९॥

दोहा—हरि प्रेरित तहि काल मे, बहल मरुत उनचास ।
अट्टहास कय गरजि कपि, बढ़ि लगला आकास ॥२५॥

देह बिसाल परम हलुकायल । मंदिर सौं मंदिर चढ़ि धायल ॥१॥
जरय नगर भेल लोक बेहाले । झपट लपट बहु कोटि कराले ॥२॥
तात मातु हा करय पुकारे । येखन हमर के करत उबारे ॥३॥
हम जे कहलहुँ कपि नहि एहे । क्यो सुर धयलक बानर देहे ॥४॥
साधु अबज्ञा फल थिक एहन । जरइछ नगर अनाथक जेहन ॥५॥
निमिष मात्र मे नगरहिँ जारल । एक बिभीषन केर घर बारल ॥६॥
अनल रचल जे तनि चर सेहे । गिरिजे जरल न कारन एहे ॥७॥
उनटि पुनटि लंका सब डाहल । कुदि कय सिंधु बीच अबगाहल ॥८॥

दोहा—नाँगड़ि मिझा हटाय श्रम, धय लघु रूप बहोरि ।
आगू जनकसुताक पुनि, ठाढ़ भेला कर जोरि ॥२६॥

दीय चिन्ह माता मोहि तेहन । रघुनायक मोहि देलनि जेहन ॥१॥
चूड़ामणि उतारि हुनि देलनि । हरष समेत पवनसुत लेलनि ॥२॥
येना कहब मम तात प्रनामे । सब प्रकार प्रभु पूरनकामे ॥३॥
दीन दयामय बिरुद सम्हारी । हरू नाथ मम संकट भारी ॥४॥
तात सक्रसुत कथा सुनायब । प्रभु कें बान प्रताप बुझायब ॥५॥
मास मध्य जदि नाथ न औता । तौं पुनि जिबइत मोहि न पौता ॥६॥
कहू कोना कपि प्रान बचैबे । तात अहूँ कहइत छी जैबे ॥७॥
तोहि देखि सीतल भेल छाती । पुनि मोहि वैह दुसह दिन राती ॥८॥

दोहा—बहु बिधि धैरज देल कपि, जनकसुतहिँ समुझाय ।
रामक लग चलइत भेला, पद पंकज सिर नाय ॥२७॥

चलइत गरजलाह धुनि भारी । गरभ स्रवय सुनि निसिचर नारी ॥१॥
नाँघि सिंधु ऐला येहि पारे । कपिहिँ सुनौल सबद किलकारे ॥२॥
देखि हनुमत सब मुद मन आनल । नबे जनम कपिगन निज जानल ॥३॥
मुख प्रसन्न तन तेज बिराजे । कयलनि रामचंद्र केर काजे ॥४॥
मिलला सब अति भेला सुखारी । व्याकुल मीन पौल जनि बारी ॥५॥
चलल मुदित सब रघुपति पासे । पूछथि कहथि नवल इतिहासे ॥६॥
पुनि मधुबन बिच सब क्यो ऐले । अंगद संमत मधुफल खैले ॥७॥
रखबारक दल बरजय लागल । मुष्टि प्रहार पाबि सब भागल ॥८॥

दोहा—से सब जाय पुकारलक, बन उजार जुबराज ।
सुनि हरखला सुकंठ कपि, ऐल प्रभुक कय काज ॥२८॥

जौँ सीता सुधि पाबि न जइतय । मधुबन फल किन्नहु नहि खइतय ॥१॥
यहि बिधि मनहिँ बिचारथि राजा । पहुँचलाह कपि सहित समाजा ॥२॥
आबि नमौल सकल पद सीसे । सब सौँ मिलथि सप्रेम कपीसे ॥३॥
पुछलनि कुसल कुसल पद देखी । राम कृपेँ भेल काज बिसेखी ॥४॥
नाथ काज कयलनि हनुमाने । रखलनि सब कपिगन केर प्राने ॥५॥
सुनि हनु सौँ मिलि कय कपिनाथे । रघुपति लग चलला कपि साथे ॥६॥
राम अबैत कपिक गन देखी । कैने काज मन हरख बिसेखी ॥७॥
बैसला फटिक सिला दुहु आ कय । पड़ला कपि सब पद पर जा कय ॥८॥

दोहा—मिलला सब सौँ प्रीति जुत, रघुपति करुनापुंज ।
पुछल कुसल अछि आब प्रभु, कुसल देखि पद कंज ॥२९॥

जामवंत कह सुनु रघुराया । करी नाथ जकरा पर दाया ॥१॥
तकर सदा सुभ कुसल निरंतर । तकरा पर प्रसन्न मुनि सुर नर ॥२॥
से बिजयी बिनयी गुनसागर । तकर सुजस त्रयलोक उजागर ॥३॥
प्रभुहिक कृपेँ भेल सब काजे । जनम सुफल भेल सबहुक आजे ॥४॥
नाथ पवनसुत कयल जे करनी । सहस मुखहुँ क्यो सकय न बरनी ॥५॥
पवनतनय केर सुंदर काजे । रघुपति केँ सुनौल रिछिराजे ॥६॥

सुनति कृपानिधि मन अति भाओल । पुनि हनुमत हिय हरषि लगाओल ॥७॥
कोन बिधि जानकि छथि हनुमाने । करइत छथि रच्छा निज प्राने ॥८॥

दोहा—नाम पहरुआ राति दिन, ध्यान अहाँक कपाट ।
निज पद दृग ताला जड़ल, प्रान जाय कोन बाट ॥३०॥

चलक काल चूड़ामणि देलनि । से रघुपति लगाय हिय लेलनि ॥१॥
नाथ जुगल लोचन भरि बारी । कहलनि किछु श्रीजनककुमारी ॥२॥
धयने सानुज प्रभु केर चरने । दीनबंधु प्रनतारति हरने ॥३॥
मन बच करम चरन अनुरागी । नाथ कोन दोषे देल त्यागी ॥४॥
दोष एक हमरा सौं भेले । बिछुरति हमर प्रान नहि गेले ॥५॥
नाथ से अछि आँखिक अपराधे । निकसति प्रान करय हठि बाधे ॥६॥
बिरह आगि पुनि साँस बसाते । जरितय छनहिँ तूर तुल गाते ॥७॥
दृग चुबबय जल निज हित लागी । तैं जरैछ नहि तन बिरहागी ॥८॥
सीता केर अति बिपति बिसाले । बिनु कहनहिँ भल दीनदयाले ॥९॥

दोहा—निमिष निमिष करुनानिधे, जाय कलप सम बीति ।
नाथ चलू आनू तुरित, भुज बल खल दल जीति ॥३१॥

सुनि सीता दुख प्रभु सुख अयने । भरि आयल जल राजिब नयने ॥१॥
बचन काय मन मम गति जनिका । सपनहुँ बिपति बुझाय कि तनिका ॥२॥
कह हनुमंत बिपति प्रभु तखने । सुमिरन भजन न हो तव जखने ॥३॥
अपने लेल प्रभु जातुधान की । आनब रिपु रन जीति जानकी ॥४॥
सुनु कपि अहँ समान उपकारी । नहि क्यो सुर नर मुनि तनुधारी ॥५॥
प्रतिउपकार करब की तोरे । सनमुख भय न सकय मन मोरे ॥६॥
उरिन न अहँ सौं सुनु हे पूते । मन मे कयल बिचार बहूते ॥७॥
पुनि पुनि कपिहिँ चितथि सुरत्राता । लोचन नीर पुलक अति गाता ॥८॥

दोहा—सुनि प्रभु बचन बिलोकि मुख, हरषित तन हनुमंत ।
प्रेमाकुल खसला चरन, त्राहि त्राहि भगवंत ॥३२॥

बेरि बेरि प्रभु चहथि उठाबय । प्रेम मगन तनि उठब न भाबय ॥१॥
प्रभु कर पंकज कपि कें सीसे । सुमिरि से दसा मगन गौरीसे ॥२॥
सावधान मन कय पुनि संकर । लगला कहय कथा अति सुंदर ॥३॥
कपिहिँ उठा प्रभु हृदय लगौलनि । कर गहि परम निकट बैसौलनि ॥४॥
कह कपि रावन पालित लंका । डाहल कोना दुरुग अति बंका ॥५॥
प्रभु केँ बुझि प्रसन्न हनुमाने । बजला बचन बिगत अभिमाने ॥६॥
साखामृग केँ येतबे प्रभुता । डारि डारि पर कुदता फनता ॥७॥
नाँघि सिंधु हाटकपुर जारल । निसिचरगन बधि बिपिन उजारल ॥८॥
से सब तव प्रताप रघुराजे । येहि मे मम प्रभुताक न काजे ॥९॥

दोहा—तनिका प्रभु किछु अगम नहि, जनि पर सदय हजूर ।
तव प्रभाब बड़बानलहिँ, जारि सकै अछि तूर ॥३३॥

नाथ भगति तव अति सुखदायिनि । कृपया देल जाय अनपायिनि ॥१॥
सुनि प्रभु परम सरल कपि बानी । कहलनि तखन तथास्तु भवानी ॥२॥
राम सोभाव उमा जे बूझय । ताहि भजन तजि आन न सूझय ॥३॥
ई संबाद जकर उर आबय । रघुपति चरन भगति से पाबय ॥४॥
सुनि प्रभु बचन कहथि कपिबृंदे । जय जय जय कृपालु सुखकंदे ॥५॥
पुनि रघुपति कपिपतिहिँ बजा कय । कहल चलह सब साज सजा कय ॥६॥
आब बिलंब करी कोन काजे । दिय निदेस झट कपिक समाजे ॥७॥
कौतुक देखि सुमन बहु बरषल । नभ सौँ घर चलला सुर हरषल ॥८॥

दोहा—तुरित बजौलनि कीसपति, पहुँचल जूथप जूथ ।
नाना बरनक अतुल बल, बानर भालु बरूथ ॥३४॥

प्रभु पद पंकज नमबय सीसे । गरजय भालु महाबल कीसे ॥ १॥
देखल राम सकल कपि सैने । चितल कृपा कय राजिबनयने ॥ २॥
रामकृपा बल पाबि कपिंदे । भेला पच्छजुत मानु गिरिंदे ॥ ३॥
राम मुदित मन कयल पयाना । सगुन भेल सुंदर सुभ नाना ॥ ४॥
जनिक सकल मंगलमय कीती । तनिक पयान सगुन ई नीती ॥ ५॥
प्रभु पयान बैदेही जानल । फरकति बाम अंग अनुमानल ॥ ६॥

सगुन जानकी कें हो जेहे । असगुन रावन कें भेल सेहे ॥ ७॥
कटक प्रयान बरनि के पारे । गरजय बानर भालु अपारे ॥ ८॥
नख आयुध गिरि पादप धारी । चलल गगन महि इच्छाचारी ॥ ९॥
केहरि नाद भालु कपि करइछ । दिग्गज डगमगाय चिक्करइछ ॥१०॥

छंद—चिक्करय दिग्गज डोल महि गिरि लोल खलबल निधि करै ।
मन हरष दिनकर सोम सुर मुनि नाग किन्नर दुख टरै ॥
कटकटय मरकट बिकट भट बहु कोटि कोटिक धावये ।
जय राम प्रबल प्रताप कोसलनाथ गुनगन गावये ॥
सहि सक न भार उदार अहिपति मोह पुनि पुनि पावथी ।
गह दसन पुनि पुनि कमठ पीठ कठोर केहन भावथी ॥
रघुवीर रुचिर पयान प्रस्थिति जानि परम सोहावने ।
जनि कमठ खप्पर उपर अहिपति लिखथि अबिचल पावने ॥

दोहा—येहि बिधि जा कय कृपानिधि, उतरि गेला निधि तीर ।
जहँ तहँ लागल खाय फल, बिपुल भालु कपि बीर ॥३५॥

ओतय निसाचर रहय ससंका । जहिया सौं जारल कपि लंका ॥ १॥
निज निज गृह सब करय बिचारे । निसिचर कुलक न आब उबारे ॥ २॥
कहल न जाए जनिक दूत बल । तनिका ऐने पुरक कोन भल ॥ ३॥
दूती सौं सुनि पुरजन बानी । अति आकुल मंदोदरि रानी ॥ ४॥
पति पद लागि रहसि कर जोरी । बजली बचन नीति रस बोरी ॥ ५॥
हरि सौं कंत सत्रुता छारू । कहल हमर अतिहित हिय धारू ॥ ६॥
बुझइत जिनकर दूतक करनी । स्रवय गरभ रजनीचर घरनी ॥ ७॥
अपन सचिव सँग नारि तनीके । दिय पठाउ जौं चाही नीके ॥ ८॥
तव कुल कमल बिपिन बिनिपाती । ऐली सीता बनि हिम राती ॥ ९॥
सुनू नाथ सीता बिनु देने । हित न अहँक अज सिवहुक केने ॥१०॥

दोहा—राम बान अहिगनक सम, थिक निसिचरगन भेक ।
जावत ग्रसय न तावते, जतन करू तजि टेक ॥३६॥

सुनि सठ मंदोदरि केर बानी । बिहुसल जगत बिदित अभिमानी ॥१॥
सभय सोभाव नारि केर साँचे । मंगल मे भय मन अति काँचे ॥२॥
जौँ मरकट दल जायत आबी । जियत असुर दल भोजन पाबी ॥३॥
काँपय लोकप जनिक तरासे । भीरु तनिक तिय बड़ उपहासे ॥४॥
ई कहि हँसि तनि हृदय लगा कय । चलल सभा अहमिति अधिका कय ॥५॥
मंदोदरि चिंता कर चीते । भेल कंत पर विधि बिपरीते ॥६॥
बैसल सभा खबरि क्यो लायल । सिंधु पार सेना सब आयल ॥७॥
पुछल सचिब केँ उचित कि थीके । कहल बिहँसि चुप रहबे नीके ॥८॥
जितल सुरासुर सहज असेखा । नर बानरक तखन की लेखा ॥९॥

दोहा—सचिब बैद्य गुरु तीन जौँ, प्रिय बाजय भय आस ।
राज धर्म तन तीनहुक, लगले होइछ नास ॥३७॥

बनल सहाय रावनक सेहे । सुना सुना असतुति कर जेहे ॥१॥
अबसर जानि विभीषन ऐले । बंधु चरन पर सीस नमैले ॥२॥
पुनि सिर नमा बैसि निज आसन । बजला बचन पाबि अनुसासन ॥३॥
जौँ कृपालु मोहि पूछी बाता । अति अनुरूप कही हित ताता ॥४॥
जे जन चाहथि निज कल्याना । सुजस सुमति सुभ गति सुख नाना ॥५॥
से पर नारि लिलार गुसाँई । तजथु चौठि चंदा बुझि भाई ॥६॥
चौदह भुबन एक पति जेहो । भूत द्रोह कय बाँच न सेहो ॥७॥
गुन सागर नागर नर जइयो । अलप लोभ भल कहय न तइयो ॥८॥

दोहा—काम क्रोध मद लोभ सब, नाथ नरक केर पंथ ।
सब परिहरि रघुवीर भजु, जाहि भजथि सब संत ॥३८॥

तात राम नहि नर भूपाले । भुवनेस्वर कालहुँ केर काले ॥१॥
ब्रह्म अनामय अज भगवंते । व्यापक अजित अनादि अनंते ॥२॥
गो द्विज धेनु देव हितकारी । कृपासिंधु मानुष तनु धारी ॥३॥

जन रंजन भंजन खल त्राता । वेद धर्म रक्षक सुनु भ्राता ॥४॥
तेजि द्रोह तनि झुकबिश्र माथे । प्रनतारति भंजन रघुनाथे ॥५॥
दियनु नाथ प्रभु कें वैदेही । भजू राम बिनु हेतु सिनेही ॥६॥
मरन गेने प्रभु तजथि न तकरो । विस्वद्रोह कृत पातक जकरो ॥७॥

दोहा--बेरि बेरि हम पद पड़ी, बिनय करी दससीस ।
मान मोह मद त्यागि कय, भजू कोसलाधीस ॥
मुनि पुलस्ति निज सिष्य सौं, कहि पठौल ई बात ।
तुरतहिँ हम प्रभु सौं कहल, पाबि सुअबसर तात ॥३९॥

माल्यवंत अति सचिव सयाने । भेला बचन सुनि सुखी महाने ॥१॥
तात अनुज तव नीति बिभूपन । से उर धरु जे कहथि बिभीषन ॥२॥
रिपुक बड़ाइ दुहू सठ गाबय । अछि नहि क्यो जे दूर हटाबय ॥३॥
माल्यवंत गृह गेल बहोरी । कहल बिभीषन दुहु कर जोरी ॥४॥
सुमति कुमति सबहुक उर रहइछ । नाथ पुरान निगम ई कहइछ ॥५॥
जहाँ सुमति तहँ संपति नाना । जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना ॥६॥
तव उर कुमति बसल बिपरीते । हित अनहित मानी रिपु प्रीते ॥७॥
काल राति निसिचर कुल जेहे । तहि सीता पर अमित सिनेहे ॥८॥

दोहा--गोड़ लागिकै मँगैछी, राखू हमर दुलार ।
सीता दय दी राम कें, होयत न तव अपकार ॥४०॥

बुध पुरान श्रुति सम्मत बानी । कहल बिभीषन नीति बखानी ॥१॥
सुनितहि दसमुख उठल रिसायल । आब मृत्यु तव लग खल आयल ॥२॥
सठ तों जिबहिँ जिआने हमरे । मूढ़ गहहिँ रिपुपछ हरदम रे ॥३॥
के अछि येहन बाज खल जग मे । जकरा जितल न हम भुजबल मे ॥४॥
मम पुर बसि तपसी पर प्रीती । सठ जा मिलि तकरहिँ कह नीती ॥५॥
ई कहि कयलक चरन प्रहारे । अनुज गहल पद बारंबारे ॥६॥
उमा संत बड़पन थिक एहे । करितहुँ मंद करथि भल जेहे ॥७॥

मारल भल अहँ पिता समाने । रामहिँ भजू हैत कल्याने ॥८॥
संग सचिव लय नभ पथ जा कय । कहल सबहुँ केँ बचन सुना कय ॥९॥

दोहा--राम सत्य संकल्प प्रभु, सभा काल बस तोर ।
चललहुँ रघुवीरक सरन, आब दोष नहि मोर ॥४१॥

कहि चलि देलनि बिभीषन जखने । आयु बिहीन भेल सब तखने ॥१॥
साधु अवज्ञा तुरित भवानी । करय निखिल कल्यानक हानी ॥२॥
रावन जखन बिभीषन त्यागल । तखनहिँ भेल बिनु बिभव अभागल ॥३॥
हरषित चलला रघुपति पासे । करथि मनोरथ मन कत रासे ॥४॥
देखब जाय चरन जलजाता । अरुन मृदुल सेवक सुखदाता ॥५॥
जे पद परसि तरलि रिषिनारी । दंडक कानन पावनकारी ॥६॥
जे पद जनकसुता उर लाओल । धरय कपट मृग सँग जे धाओल ॥७॥
हर उर सर सरोज बस जेहे । अहोभाग्य हम देखब सेहे ॥८॥

दोहा--जाहि चरन केर पादुका, भरत रहथि मन लाय ।
आइ बिलोकब सैह पद, येहि नयनेँ हम जाय ॥४२॥

येहि विधि करति सप्रेम बिचारे । ऐला झट सिंधुक येहि पारे ॥१॥
अबइत देखि बिभीषन कपिगन । रिपुक बिसेख दूत बुझि क्यो जन ॥२॥
तनि अटकाय कपिस लग ऐले । समाचार सब ताहि सुनैले ॥३॥
कह सुकंठ रघुपति सुनु बाता । आयल मिलय दसानन भ्राता ॥४॥
पुछल राम कहु सखा बिचारे । कहल कपीस सुनू सरकारे ॥५॥
निसिचर माया पड़य न जानी । कामरूप आयल की मानी ॥६॥
भेद हमर लेबय सठ आबय । राखी बान्हि येहन मन भावय ॥७॥
सखा नीति अहँ कहल बिचारी । मम प्रन सरनागत भयहारी ॥८॥
सुनि प्रभु बचन हरष हनुमाने । सरनागत बत्सल भगवाने ॥९॥

दोहा--सरनागत केँ जे तजय, निज अनहित अनुमानि ।
से नर पामर पापमय, तकरा लखितहुँ हानि ॥४३॥

कोटि बिप्र बध लागल जकरो । ऐने सरन तजी नहि तकरो ॥१॥
जीव होइछ सनमुख मम जखने । कोटि जनम अघ नासी तखने ॥२॥
पापी केर ई सहज सोभावे । हमर भजन कहियो नहि भावे ॥३॥
जौं ध्रुव दुष्ट हृदय सौं रहितय । से की हमरा सनमुख अबितय ॥४॥
निरमल मन जन से मोहि पाबय । हमरा छल बल छिद्र न भावय ॥५॥
भेद लेबय पठौल दससीसे । तदपि न किछु भय हानि कपीसे ॥६॥
जते निसाचर सखा भुवन मे । लछुमन मारि सकथि येक छन मे ॥७॥
जौं मम सरन ऐल भय मानी । तौं रखबैक प्रान सम जानी ॥८॥

दोहा—**उभय दसा मे आनु तहि, हँसि कह कृपानिकेत ।**
जय कृपालु कहि कपि चलल, अंगद हनुक समेत ॥४४॥

सादर ताहि आगु कय बानर । चलल जतय रघुपति करुनाकर ॥१॥
दूरहिं सौं देखल दुहु भ्राता । नयनानंद दान केर दाता ॥२॥
बहुरि राम छबि धाम बिलोकी । ठिठुकि गेला येकटक पल रोकी ॥३॥
भुज प्रलंब कंजारुन लोचन । स्यामल गात प्रनत भय मोचन ॥४॥
सिंहकंध आयत उर सोभय । आनँद अमित मदन मन लोभय ॥५॥
नयन नीर पुलकल अति गाते । मन धय धीर कहल मृदु बाते ॥६॥
नाथ दसानन केर हम भ्राता । निसिचर बंस जनम सुरत्राता ॥७॥
सहज पाप प्रिय तामस देहे । जथा उलूकहिं तम पर नेहे ॥८॥

दोहा—**श्रवन सुजस सुनि ऐल छी, प्रभु भंजन भव भीर ।**
त्राहि त्राहि आरति हरन, सरन सुखद रघुवीर ॥४५॥

कहइत करति दंडवत देखी । झट उठला प्रभु हरष बिसेखी ॥१॥
दीन बचन सुनि प्रभु मन भाओल । भुज बिसाल गहि हृदय लगाओल ॥२॥
अनुज सहित मिलि लग बैसौलनि । भक्तक भयहर बचन सुनौलनि ॥३॥
मह परिवारक कहु लंकेसे । कुसल कुठाम बसी यहि देसे ॥४॥
खल मंडली बसी दिन राती । सखा धरम निमहय कोन भाँती ॥५॥
जनइत छी अहाँक सब रीती । अति नय निपुन न भाव अनीती ॥६॥

बरु भल बास नरक केर ताता । दुष्ट संग जुनि देथु विधाता ॥७॥
कुसल आब पद लखि रघुराया । जैँ अहँ कयल जानि जन दाया ॥८॥

दोहा—ता धरि कुसल न जीव केँ, सपनहुँ मन विश्राम ।
जा धरि भजय न राम केँ, सोक धाम तजि काम ॥४६॥

ता धरि हृदय बसय खल नाना । लोभ मोह मत्सर मद माना ॥१॥
जा धरि उर न बसथि रघुनाथे । धेने चाप सायक कटि भाथे ॥२॥
ममता रजनी घोर अन्हारी । राग द्वेष उलूक सुखकारी ॥३॥
जीवक मन ई बसइछ ता धरि । प्रभु प्रताप रवि उगय न जा धरि ॥४॥
आब कुसल मम गेल भय भारी । राम अहँक पद कमल निहारी ॥५॥
अहँ कृपालु जहि पर अनुकूले । ताहि न ब्याप त्रिबिध भव सूले ॥६॥
निसिचर प्रकृति अधम अति पैलहुँ । कहियो सुभ आचरन न कैलहुँ ॥७॥
मुनि जनि रूप न पाबथि ध्याने । हरषि लगौलनि हिय भगवाने ॥८॥

दोहा—अहोभाग्य मम अमित अति, राम कृपा सुख पुंज ।
विधि सिव सेवित लखल दृग, अहँक जुगल पद कंज ॥४७॥

सुनिय सखा मम प्रकृतिक हाले । जान भुसुंडि संभु गिरिबाले ॥१॥
जौँ नर होय चराचर द्रोही । आबय सभय सरन बुझि मोही ॥२॥
तजि मद मोह कपट छल नाना । करी ताहि झट साधु समाना ॥३॥
जननी जनक बंधु सुत दारा । तन धन भवन सुहृद परिवारा ॥४॥
सबहुक ममता ताग बटोरी । मम पद मन बान्हथि रचि डोरी ॥५॥
समदरसी किछु चाह न करथी । हरष सोक भय मन नहि धरथी ॥६॥
येहन सुजन मम उर बस केना । लोभी हृदय बसय धन जेना ॥७॥
संत मोहि प्रिय अहिँक समाने । धरी देह हम हेतु न आने ॥८॥

दोहा—सगुन उपासक परक हित, निरत नीति दृढ़ नेम ।
हमरा से नर प्रान सम, जनिका द्विज पद प्रेम ॥४८॥

सुनु लंकेस सकल गुन तोही । तैँ छी अहँ अतिसय प्रिय मोही ॥ १॥
राम बचन सुनि बानर जूथे । सकल कहय जय कृपाबरूथे ॥ २॥

प्रभुक बिभीषन सुनि कय बानी । नहि अघाथि श्रवनामृत जानी ॥ ३॥
गहल कमल पद बारंबारे । हृदय समाय न प्रेम अपारे ॥ ४॥
सुनू देव सचराचर स्वामी । प्रनतपाल उर अंतरजामी ॥ ५॥
उर किछु प्रथम बासना रहले । प्रभु पद प्रीति सरित से बहले ॥ ६॥
आब कृपालु भगति निज पावन । दीय सदा संकर मनभावन ॥ ७॥
एवमस्तु कहि प्रभु रनधीरे । तुरत मँगाओल सिंधुक नीरे ॥ ८॥
जदपि सखा किछु चाह न तोरे । जग अमोघ अछि दरसन मोरे ॥ ९॥
ई कहि राम तिलक तनि देले । नभ सौँ सुमन बृष्टि बहु भेले ॥१०॥

दोहा—रावन क्रोध अनल निज, स्वास समीर प्रचंड ।
जरइत रहल बिभीषनहिँ, देलनि राज अखंड ।
जे संपति सिव रावनहिँ, देलनि दने दस माथ ।
से संपदा बिभीषनहिँ, सकुचि देलनि रघुनाथ ॥४९॥

तजि प्रभु येहन भजय जे आने । से नर पसु बिनु पुच्छ बिषाने ॥१॥
निज जन जानि ताहि अपनाओल । प्रभु सोभाब कपिकुल मन भाओल ॥२॥
पुनि सर्बज्ञ सर्ब उर बासी । सर्ब रूप सब रहित उदासी ॥३॥
बजला बचन नीति प्रतिपालक । कारन मनुज दनुज कुल घालक ॥४॥
सुनु कपीस लंकापति बीरे । कोन बिधि तरब जलधि गंभीरे ॥५॥
संकुल मकर उरग झख जाती । अति अगाध दुस्तर सब भाँती ॥६॥
कह लंकेस सुनू रघुनायक । कोटि सिंधु सोषक तव सायक ॥७॥
जद्यपि तदपि नीति कह गा कय । करू बिनय सागर सौँ जा कय ॥८॥

दोहा—प्रभु अहाँक कुलगुरु जलधि, कहता जुगुति बिचारि ।
बिनु प्रयास सागर तरत, सकल भालु कपि धारि ॥५०॥

सखा कहल अहँ नीक उपाये । करिय दैव जौँ होथि सहाये ॥१॥
मंत्र न ई लछुमन मन भाओल । राम बचन सुनि अति दुख पाओल ॥२॥
नाथ दैव केर कोन भरोसे । सोखू सिंधु करू मन रोसे ॥३॥
कादर मन केर एक अधारे । दैव दैव आलसी पुकारे ॥४॥

सुनति बिहुँसि बजला रघुवीरे । सैह करब हम धरु मन धीरे ॥५॥
प्रभु कहि बुझा अनुज केँ बाते । गेला रघुपति सिंधुक काते ॥६॥
प्रनमल पहिने माथ नमा कय । बैसला पुनि तट दर्भ ओछा कय ॥७॥
येला विभीषन प्रभु लग जखने । दूत पठौलक रावन तखने ॥८॥

दोहा—देखल सकल चरित्र से, धने कपट कपि देह ।
हृदय सराहय प्रभुक गुन, सरनागत पर नेह ॥५१॥

प्रगट बखानय राम सोभावे । अति सप्रेम गेल बिसरि दुरावे ॥१॥
कपि सब तखन रिपुक चर जानल । बान्हि कपीसक लग सब आनल ॥२॥
कह सुग्रीव सुनह सब बानर । अंग भंग कय भेजह निसाचर ॥३॥
सुनि सुग्रीव बचन कपि धाओल । बान्हि कटक चहु कात घुमाओल ॥४॥
बहु प्रकार मारय कपि लागल । करुणा करय तदपि नहि त्यागल ॥५॥
नाक कान काटत जे हमरा । सपथ कोसलाधीसक तकरा ॥६॥
सुनि लछुमन सब निकट बजौलनि । दया ऐल हँसि तुरित छोड़ौलनि ॥७॥
दिहह रावनक कर ई पाती । लछुमन बचन पढ़ह कुलघाती ॥८॥

दोहा—कहिहह मौखिक मूढ़ सौँ, मम संदेस उदार ।
सीता दय कय जा मिलह, नहि तौँ तोहर सँहार ॥५२॥

तुरत नमा लछुमन पद माथा । चलल दूत बरनति गुनगाथा ॥१॥
कहति राम जस लंका आयल । से रावन पद सीस नमायल ॥२॥
बिहुँसि दसानन पूछल बाता । कहह न किय सुक निज कुसलाता ॥३॥
पुनि तोँ कहह विभीषन हाले । अति लगिचैल जकर अछि काले ॥४॥
लंका राज करति सठ त्यागल । जओक कीट से होयत अभागल ॥५॥
कहह भालु बानर केर सेना । काल पठौल ऐल अछि जेना ॥६॥
जनिकर जीवन केर रखबारे । भेल मृदुल चित सिंधु बेचारे ॥७॥
कहह दुहू तपसी केर हाले । जकर हृदय मम त्रास बिसाले ॥८॥

दोहा—भेट भेलहु की गेल घुरि, श्रवन सुजस सुनि मोर ।
कहह न रिपु दल तेज बल, बहुत चकित चित तोर ॥५३॥

नाथ कृपा कय पुछलहुँ जहिना । कहल मानु मम रिस तजि तहिना ॥१॥
अहँक अनुज जा मिलला जखने । राम तिलक तनिका देल तखने ॥२॥
ई सुनि जे हम रावन दूते । बान्हि कीस दुख देल बहूते ॥३॥
श्रवन नासिका काटय लागल । रामक सपथ दितहिँ मोहि त्यागल ॥४॥
पुछलहुँ नाथ राम केर सेना । बदन कोटि सय बरनब केना ॥५॥
नाना बरन भालु कपि धारी । बिकटानन बिसाल भयकारी ॥६॥
जे पुर जारल हति सुत तोरे । सब कपि बीच तकर बल थोरे ॥७॥
अमित नाम भट कठिन कराले । अमित नाग बल बिपुल बिसाले ॥८॥

दोहा—द्विविद मयंदो नील नल, अंगद गद बिकटासि ।
दधिमुख केहरि निसठ सठ, जामवंत बल रासि ॥५४॥

ई सब कपि सुग्रीव समाना । के गन हिनि सन कोटिक नाना ॥१॥
राम कृपेँ अतुलित बलवाने । गनथि त्रिलोकहिँ तृनक समाने ॥२॥
सुनल येहन काने दसकंधर । पद्म अठारह जूथप बंदर ॥३॥
प्रभु एहन नहि कपि क्यो गन मे । जीतल जे न अहाँ केँ रन मे ॥४॥
परम क्रुद्ध सब मीड़य हाथे । किंतु न हुकुम देथि रघुनाथे ॥५॥
सोखब सिंधु सहित झष ब्याले । न तौँ भरब लय कुधर बिसाले ॥६॥
धूलि मिलैब मरदि दससीसे । बचन येहन कहइछ सब कीसे ॥७॥
गरजय तरजय सहज असंका । मानू गरसय चाहय लंका ॥८॥

दोहा—सहज सूर कपि भालु सब, पुनि सिर पर प्रभु राम ।
रावन काल करोड़ केँ, जीति सकय संग्राम ॥५५॥

राम तेज बल बुद्धि बिपुलता । सेष सहस्र सय गाबि न सकता ॥१॥
सक सर एक सोखि सत सागर । तव भायहिँ पूछल नयनागर ॥२॥
जाय सिंधु सौँ सुनि हुनि बयने । माँगथि बाट कृपा मन धयने ॥ ३॥
सुनति बचन बिहुँसल दससीसे । जैँ ई मति सहाय कृत कीसे ॥ ४॥
सहज भीरु बच दिढ़ कय मानल । सागर संग लटाढ़म ठानल ॥ ५॥
की बड़ाइ सठ करह मृषाहे । रिपु बल बुद्धिक पौलहुँ थाहे ॥ ६॥

सचिब सभीत बिभीषन जकरा । बिजय बिभूति कहाँ जग तकरा ॥ ७॥
सुनि खल बचन दूत रिस बाढ़ल । समय बिचारि पत्रिका काढ़ल ॥ ८॥
रामानुज देलनि ई पाती । नाथ जुड़ाउ पढ़ा कय छाती ॥ ९॥
बिहुँसि बाम कर रावन लेलक । सचिब बजा सठ बाचय देलक ॥१०॥

दोहा—बातेँ मनहिँ रिझाय सठ, जुनि घालह कुल खीस ।
राम बिरोधेँ त्रान नहि, सरन विष्णु अज ईस ॥
अनुज जकाँ की मान तजि, प्रभु पद पंकज भृंग ।
होअह कि रामक सर अनल, खल कुल सहित पतंग ॥५६॥

सुनति सभय मन मुख मुसका कय । कहय दसानन सबहिँ सुना कय ॥ १॥
पड़ल भूमि कर गहय अकासे । लघु तपसिक ई बाग बिलासे ॥ २॥
कह सुक नाथ साँच सब बानी । सोचू छोड़ि प्रकृति अभिमानी ॥ ३॥
सुनू बचन मम परिहरि क्रोधे । नाथ राम सौँ तजू बिरोधे ॥ ४॥
अति कोमल सोभाव रघुनाथे । जद्यपि अखिल लोक केर नाथे ॥ ५॥
मिलितहिँ कृपा अहाँ पर करता । मन अपराध न एको धरता ॥ ६॥
जनकसुता रघुनाथहिँ फेरिय । येतबा हमर कहल प्रभु हेरिय ॥ ७॥
कहल फेरू बैदेही जखने । हनल चरन सठ तकरा तखने ॥ ८॥
पद सिर नमा गेल से ताहाँ । कृपासिंधु रघुनायक जाहाँ ॥ ९॥
कय प्रनाम निज कथा सुनौलक । राम कृपेँ ओ निज गति पौलक ॥१०॥
रिषि अगस्ति केर श्राप भवानी । राच्छस भेल छला मुनि ज्ञानी ॥११॥
बारंबार बंदि पद रामक । मुनिबर धयलनि पथ निज धामक ॥१२॥

दोहा—बिनय न मानय जलधि जड़, गेल तीन दिन बीति ।
राम रिसा बजला तखन, भय बिनु होअय न प्रीति ॥५७॥

लछुमन बान सरासन आनू । सोखब बारिधि बिसिख कृसानू ॥१॥
सठ सौँ बिनय कुटिल सौँ प्रीती । सहज कृपन सौँ सुंदर नीती ॥२॥
ममता रत सौँ ज्ञान कहानी । अति लोभी सौँ बिरतिक बानी ॥३॥
क्रोधिहिँ सम कामिहिँ हरि कथा । उसर बीज बओने फल जथा ॥४॥

ई कहि रघुपति चाप चढ़ाओल । से बिचार लछुमन मन भाओल ॥५॥
संधानल प्रभु बिसिख कराले । उठल उदधि उर अंतर ज्वाले ॥६॥
मकर उरग झखगन अकुलैले । जरति जंतु जलनिधिहि ँ बुझैले ॥७॥
कनक थार भरि मनिगन नाना । विप्ररूप आयल तजि माना ॥८॥

दोहा—**कटलहि पर कदली फरै, कोटि जतन क्यो सीँच ।**
बिनय न मान खगेस सुनु, डँटनहि नमइछ नीच ॥५८॥

सभय सिंधु प्रभु पद गहि हाथे । कहल छमू सब अबगुन नाथे ॥१॥
गगन समीर अनल जल धरनी । सबहुक नाथ सहज जड़ करनी ॥२॥
येकरा तव माया उपजौलक । सृष्टि हेतु सब ग्रंथ बुझौलक ॥३॥
प्रभु निदेस हो जेहन जकरा । ताही बिधि रहने सुख तकरा ॥४॥
प्रभु भल कयल मोहि सिख देलहुँ । अँही सकल मरजादा केलहुँ ॥५॥
ढोल गमार सुद्र पसु नारी । सब थिक ताड़न केर अधिकारी ॥६॥
प्रभुक प्रतापे ँ सुखा जैब हम । उतरत सेन बड़ाइ नसत मम ॥७॥
प्रभु आज्ञा अपेल श्रुति गाबय । कर झट से जे अहँके ँ भाबय ॥८॥

दोहा—**सुनइत बचन विनीत अति, कह कृपालु मुसुकाय ।**
जहि बिधि उतरय कपि कटक, कहु से तात उपाय ॥५९॥

प्रभु दुइ भाइ नील नल कीसे । नेनहि ँ पाओल रिपिक असीसे ॥१॥
जहि गिरिबरक परस से करते । तव प्रताप से जल पर तरते ॥२॥
हम पुनि प्रभु प्रभुता उर धारी । करब मदति निज बल अनुसारी ॥३॥
येहि विधि नाथ बन्हाबिय सागर । गाओत जस तिहुलोक उजागर ॥४॥
यहि सर मम उत्तर तट बासी । हतू नाथ खल नर अध रासी ॥५॥
सुनि कृपालु सागर मन पीरा । हरलनि तुरत राम रनधीरा ॥६॥
देखि राम बल पौरुष भारी । हरषि पयोनिधि भेला सुखारी ॥७॥
* सकल चरित पुनि प्रभुहि ँ सुना कय । गेला पयोनिधि माथ नमा कय ॥८॥

छंद--निज भवन गेला सिंधु ई मति रुचल रघुपति कें अती ।
ई चरित कलिमल हरन तुलसी दास गौल जथा मती ॥
सुख भवन संसय समन दमन बिपाद रघुपति गुन गने ।
तजि सकल आस भरोस गावहु सुनहु संतत सठ मने ॥

दोहा--दायक सकल सुमंगलक, रघुनायक गुन गान ।
सादर सुनय से तरय भव, सिंधु बिना जलजान ॥६०॥

मास पारायण, विश्राम--२४

इति श्रीरामचरितमानसस्य श्रीरामलोचनशरणविरचिते मैथिलीरूपान्तरे सकलकलिकलुष-
विध्वंसने ज्ञानसम्पादनो नाम पञ्चमः सोपानः समाप्तः ।

श्रीसीतारामजी

मैथिली

श्रीरामचरितमानस

षष्ठ सोपान (लंकाकाण्ड)

दोहा—लव निमेष परमानु जुग, वरष कल्प सर चंड।
भजह न मन तहि राम कें, काल जनिक कोदंड॥

रामं कामारिसेव्यं भवभयहरणं कालमत्तेभसिंहं
योगीन्द्रं ज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितं निर्गुणं निर्विकारम्।
मायातीतं सुरेशं खलवधनिरतं ब्रह्मवृन्दैकदेवं
वन्दे कन्दावदातं सरसिजनयनं देवमुर्वीशरूपम्॥१॥

शङ्खेन्द्वाभमतीवसुन्दरतनुं शार्दूलचर्माम्बरं
कालव्यालकरालभूषणधरं गङ्गाशशाङ्कप्रियम्।
काशीशं कलिकल्मषौघशमनं कल्याणकल्पद्रुमं
नौमीड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं कन्दर्पहं शङ्करम्॥२॥

यो ददाति सतां शम्भुः कैवल्यमपि दुर्लभम् ।
खलानां दण्डकृद्योऽसौ शङ्करः शं तनोतु मे ॥३॥

सोरठा—सिंधु वचन सुनि राम, बजा सचिव प्रभु ई कहल ।
करु न बिलंब बिराम, रचिय सेतु उतरय कटक ॥
सुनिय भानुकुल केतु, कहल रिच्छपति जोरि कर ।
नाथ नाम तव सेतु, चढ़ि भवसागर तरय नर ॥

लघु ई उदधि तरति कत देरी । ई सुनि कहल पवनसुत फेरी ॥ १॥
प्रभु प्रताप बड़वानल भारी । सोखल प्रथम पयोनिधि बारी ॥ २॥
तव रिपु नारि रुदन जलधारे । पुनि भरि गेल भेल तैँ खारे ॥ ३॥
पवनसुतक सुनि उकुति बिसेखी । कपि हरषित रघुपति तन देखी ॥ ४॥
भाइ जुगल नल नील बजाओल । जामवंत सब कथा सुनाओल ॥ ५॥
सुमिरि राम कें प्रबल प्रभावे । पुल बनाउ श्रम किछु नहि आवे ॥ ६॥
बजा लेल कपि निकरहिँ पूनी । बिनती हमर लीय सब सूनी ॥ ७॥
राम चरन पंकज उर धरबे । कौतुक एक भालु कपि करबे ॥ ८॥
दौड़ मरकट बिकट बरूथे । आनू बिटप पहाड़क जूथे ॥ ९॥
सुनि कपि भालु चलल कय हूहा । जय रघुबीर प्रताप समूहा ॥१०॥

दोहा—अति उतंग गिरि पादपहिँ, लीलेँ लैछ उठाय ।
आनि दैछ नल नील कैँ, पुल से रचथि बनाय ॥१॥

सैल बिसाल दैछ कपि आनी । गहथि दुहू कंदुक इव फानी ॥१॥
देखि सेतु अति सुंदर रचने । बिहुँसि कृपानिधि बजला बचने ॥२॥
परम रम्य उत्तम ई धरनी । महिमा अमित सकत के बरनी ॥३॥
करब येतय हम संभु थापना । हमरा हिय अछि परम कल्पना ॥४॥
सुनि कपीस बहु दूत पठाओल । जत जे मुनिबर सबहिँ बजाओल ॥५॥
लिंग थापि पूजल सविधाने । प्रिय न आन मोहि सिवक समाने ॥६॥
सिव द्रोही मम भगत कहावय । से सपनहुँ हमरा नहि पावय ॥७॥
चह सिव बिमुख भगति मम जेटा । नारकि मूढ़ मंद मति सेटा ॥८॥

दोहा--मम द्रोही संकरक प्रिय, सिव द्रोही मम दास।
करय कल्प भरि मनुज से, घोर नरक मे बास ॥२॥

जे रामेस्वर दरसन करता। से तनु तजि मम लोक सिधरता ॥१॥
जे गंगाजल आनि चढ़ौता। से सायुज्य मुक्ति नर पौता ॥२॥
अछल अकाम जे सेवता हिनका। देथिन संभु भगति मम तनिका ॥३॥
मम कृत सेतु जे दरसन करता। से बिनु श्रम भवसागर तरता ॥४॥
सब कें रामक बचन सोहेलनि। मुनि निज निज आश्रम पथ धेलनि ॥५॥
गिरिजा अछि ई रघुपति रीती। संतत करथि प्रनत पर प्रीती ॥६॥
बान्हल सेतु नील नल नागर। राम कृपें जस भेल उजागर ॥७॥
अपनहुँ डुबय डुबाबय आनो। बोहित सम से भेल पखानो ॥८॥
ई न जलधि केर जानु बिभूती। पाहन गुन न कपिक करतूती ॥९॥

दोहा—श्रीरघुवीर प्रताप सौं, तरल सिंधु पाखान।
से मतिमंद जे राम तजि, जाय भजय प्रभु आन ॥३॥

बाँधि सेतु अति सुदृढ़ बनाओल। देखि कृपानिधि केर मन भाओल ॥१॥
चलल कटक बरनन हो केना। गरजय बहु मरकट भट सेना ॥२॥
सेतुबंध लग चढ़ि रघुराजे। चितथि कृपालु सिंधु समराजे ॥३॥
देखय लेल प्रभु करुनाकंदे। प्रगट भेल सब जलचर बृंदे ॥४॥
मकर नक्र नाना झख ब्याले। सय जोजन तन परम बिसाले ॥५॥
येहनो क्यो जे ओकरा खाइछ। ककरो डर पुनि ओहो डेराइछ ॥६॥
टर न टारनहु लख प्रभु रूपे। मन हरषित सुख पाब अनूपे ॥७॥
तकरा ओत देखाय न बारी। मगन भेल हरि रूप निहारी ॥८॥
प्रभुक निदेस चलल कपि सेना। दलक बिपुलता कह क्यो केना ॥९॥

दोहा--भेल भीड़ पुल पर अमित, कपि उड़ि नभ पथ गेल।
चढ़ि चढ़ि जलचर गन उपर, पार बहुत दल भेल ॥४॥

लखि सबंधु बड़ कौतुक साजे। चलला हँसि कृपालु रघुराजे ॥ १॥
पार भेला ससेन रघुवीरे। कहल न हो कपि यूथप भीरे ॥ २॥

सिंधु पार प्रभु डेरा केलनि । कपि गन केँ निदेस पुनि देलनि ॥ ३॥
जा कय खाह मूल फल धूलल । सुनति भालु कपि जहँ तहँ हूलल ॥ ४॥
सब तरु फड़ल राम हित लागी । रितु ओ कुरितु काल गति त्यागी ॥ ५॥
खाय मधुर फल बिटप हिलाबय । लंका सनमुख सिखर चलाबय ॥ ६॥
घुमइत कहुँ जौँ दनुजहिँ पाबय । घेरि सकल बहु नाच नचाबय ॥ ७॥
काटि नासिका कानहिँ दसने । कहि प्रभु सुजस जाय दय तखने ॥ ८॥
कनकट नककट जे जे भेले । से सब कहय रावनहिँ गेले ॥ ९॥
सुनितहिँ श्रबन समुद्र बन्हायल । दसमुख बाजि उठल अकुलायल ॥१०॥

दोहा—बँन्हलक बननिधि नीरनिधि, जलधि सिंधु बारीस ।
सत्य तोयनिधि कंपति, उदधि पयोधि नदीस ॥५॥

पुनि मन सोचि बिकलता भारी । बिहँसि गेल घर भय केँ टारी ॥१॥
प्रभु अयला मंदोदरि जानल । सागर केँ खेलहिँ मे बान्हल ॥२॥
कर गहि पति केँ निज गृह आनी । बजली परम मनोहर बानी ॥३॥
कहल प्रनमि आँचरहिँ पसारी । सुनू बचन पिय कोपहिँ छारी ॥४॥
ठानी बैर नाथ तकरे सौँ । बुधि बल जीति सकी जकरे सौँ ॥५॥
अहँ रघुपति बिच अंतर कतबा । भगजोगनी दिनकर बिच जतबा ॥६॥
अतिबल मधु कैटभ जे मारल । महाबीर दितिसुत संहारल ॥७॥
बान्हल बलिहिँ सहसभुज मारल । से महि भार हरय तनु धारल ॥८॥
करु बिरोध नहि तनि सौँ नाथे । काल करम जिय जनिका हाथे ॥९॥

दोहा—सौँपि राम केँ जानकी, नमा कमल पद माथ ।
राज पुत्र केँ सौँपि बन, जाय भजू रघुनाथ ॥६॥

दीनदयाल नाथ छथि राघो । सनमुख गेने खाय नहि बाघो ॥१॥
करक जोग जे अहँ सब केलहुँ । जिति सुर असुर चराचर लेलहुँ ॥२॥
संत कहथि ई नीति दसानन । चारिमपन जाइछ नृप कानन ॥३॥
तनिकर भजन करू अहँ भर्ता । जे कर्ता पालक संहर्ता ॥४॥
सेह रघुबीर प्रनत अनुरागी । भजू नाथ ममता सब त्यागी ॥५॥
मुनिबर जतन करथि जहि लागी । भूप राज तजि होथि बिरागी ॥६॥

से कोसलाधीस रघुराया । ऐला करय तोहि पर दाया ।।७।।
जौँ पिय मानी हमर सिखावन । तिहु पुर सुजस होयत अति पावन ।।८।।

दोहा—ई कहि लोचन नोर भरि, गहि पद कँपइत गात ।
नाथ भजू रघुनाथ केँ, अचल होअय अहिवात ।।७।।

सुनि रावन मयसुता उठा कय । खल निज प्रभुता लागल भाखय ।।१।।
सुनु अहँ प्रिया बृथा भय मानी । मम सम जोधा जग के प्रानी ।।२।।
बरुन कुबेर पवन जम काले । भुज बल जितल सकल दिगपाले ।।३।।
देव दनुज नर सब बस मोही । कोन हेतु उपजल भय तोही ।।४।।
बहु बिधि तनिका कहल बुझा कय । बहुरि सभा बैसल से जा कय ।।५।।
मंदोदरिक मनहिँ भेल भाने । कालक बस उपजल अभिमाने ।।६।।
पुछल सभा मे मंत्री जन सौँ । करब कोन बिधि रन रिपुगन सौँ ।।७।।
सचिब कहल सुनु निसिचर ईसे । बेरि बेरि प्रभु किय पूछी से ।।८।।
करब कोन भय हेतु बिचारे । नर कपि रिछ अछि हमर अहारे ।।९।।

दोहा—सभक बचन सुनि जोड़ि कर, कहल प्रहस्त प्रबीन ।
करू न नीति विरुद्ध प्रभु, मंत्री मति अति छीन ।।८।।

कहथि सचिब सब ठकुर सोहाती । काज सिद्ध नहि हो येहि भाँती ।। १।।
बारिधि नाँघि एक कपि आबी । कयल चरित मन मे सब गाबी ।। २।।
ककरो भूख कियै नहि तखने । खैल न किय जारल पुर जखने ।। ३।।
सुनति नीक आगाँ दुख भारे । प्रभुहिँ सचिब देल येहन बिचारे ।। ४।।
जे बारीस बन्हाओल खेले । उतरल सेन समेत सुबेले ।। ५।।
तनि भनि मनुज खैब हम ताता । डीँग हँकैत कहय सब बाता ।। ६।।
तात बचन मम सुनु अति आदर । मन मे गुनू न हमरा कादर ।। ७।।
सुनय सुनाबय चाउ अनेरे । एहन लोक जगत मे ढेरे ।। ८।।
बचन परम हित श्रवन कठोरे । जे कह जे सुन से नर थोरे ।। ९।।
दूत पठाउ प्रथम सुनु नीती । सीता दय कय करु पुनि प्रीती ।।१०।।

दोहा—नारि पावि घुरि जाथि जौँ, तौँ बढ़ाउ नहि रारि ।
घुरथि न जौँ सनमुख समर, करू तात हठि मारि ॥९॥

ई मत जौँ मानी प्रभु मोरे । उभय प्रकार सुजस जग तोरे ॥१॥
सुत सौँ कह रिस भरि दसकंठे । के सिखौल तोहि ई मति लंठे ॥२॥
येखनहि सौँ मन संसय केलह । वेनुक जड़ि घमोइ सुत भेलह ॥३॥
सुनि पितु गिरा परुष अति घोरे । चलल भवन कहि बचन कठोरे ॥४॥
हित मत तोहि न भावय केना । काल बिवस कें भेषज जेना ॥५॥
संध्या समय जानि दससीसे । भवन चलल निरखति भुज बीसे ॥६॥
लंका सिखर उपर आगारा । अति बिचित्र तहँ जुटय अखारा ॥७॥
बैसल जा तहि मंदिर रावन । गुन गावय किन्नर मनभावन ॥८॥
बाजय ताल पखाउज बीना । नृत्य करय अपसरा प्रवीना ॥९॥

दोहा—सुनासीर सय सरिस से, संतत करय बिलास ।
परम प्रबल रिपु सीस पर, तदपि न सोच न त्रास ॥१०॥

येतय सुबेल सैल रघुवीरे । ऐला सेना सह अति भीरे ॥१॥
सिखर एक उचगर अति देखी । परम रम्य सम सुभ्र बिसेखी ॥२॥
किसलय सुमन मनोहर आनी । लछुमन रचि बिछौल निज पानी ॥३॥
ओहि पर रुचिर मृदुल मृगछाले । तहि आसन आसीन कृपाले ॥४॥
प्रभुकृत सीस कपीस उछंगे । बाम दहिन दिस चाप निषंगे ॥५॥
दुहु कर कमल सुधारथि बाने । कह लंकेस मंत्र सटि काने ॥६॥
बड़भागी अंगद हनुमाना । चरन कमल जाँतथि बिधि नाना ॥७॥
प्रभु पाछू लछुमन बीरासन । कटि निषंग कर बान सरासन ॥८॥

दोहा—येहि बिधि किरपा रूप गुन, धाम राम आसीन ।
धन्य से जे येहि ध्यान मे, रहथि सदा लवलीन ॥
पूरब दिसा बिलोकि प्रभु, देखल उदित मयंक ।
कहलनि ससि अवलोकु सब, मृगपति सरिस असंक ॥११॥

पूरब दिसा गिरि गुहा निबासी । परम प्रताप तेज बल रासी ॥ १॥
मत्त नाग तम कुंभ बिदारी । ससि केसरी गगन बनचारी ॥ २॥
छिटकल नभ मुकुताहल तारा । निसि सुंदरी केर सिंगारा ॥ ३॥
कह प्रभु ससि मे की थिक कारी । निज निज मति सब कहू बिचारी ॥ ४॥
कह सुग्रीव सुनू रघुराया । ससि मे प्रगट भूमि कँर छाया ॥ ५॥
क्यो कह राहु चंद्र केँ मारल । सैह स्यामता उर मे धारल ॥ ६॥
क्यो कह रचल रतिक मुख जखने । ससि कँर सार हरल विधि तखने ॥ ७॥
छिद्र से प्रगट इंदु उर लेखी । नभ छाया ताही पथ देखी ॥ ८॥
प्रभु कह गरल बंधु ससि खासे । अति प्रिय निज उर देलनि बासे ॥ ९॥
बिष संजुत कर निकर पसारी । जरबथि बिरहवंत नर नारी ॥१०॥

दोहा—हनुमत कहलनि प्रभु सुनू, ससि अहाँक प्रिय दास ।
तव मूरति विधु उर बसय, सैह स्यामता भास ॥

नवाह्न पारायण, विश्राम—७

पवनतनय कँर बचन सुनि, हँसला राम सुजान ।
दच्छिन दिसि अवलोकि प्रभु, बजला कृपानिधान ॥१२॥

देखु बिभीषन दच्छिन आसे । घन घमंड दामिनी बिलासे ॥१॥
मधुर मधुर गरजय घन घोरे । जाय बरसि नहि उपल कठोरे ॥२॥
कहथि बिभीषन सुनू कृपाला । थिक नहि तड़ित न बारिद माला ॥३॥
लंका सिखर उपर आगारा । ततय दसानन देखय अखारा ॥४॥
छत्र मेघ डंबर सिर धारी । से अछि जलद घटा अति कारी ॥५॥
मंदोदरिक करनफुल चमकय । से प्रभु मानु दामिनी दमकय ॥६॥
बाजय ताल मृदंग अनूपे । सैह मधुर रव सुनु सुरभूपे ॥७॥
प्रभु मुसुकैला बुझि अभिमाने । चाप चढ़ा समधानल बाने ॥८॥

दोहा—छत्र मुकुट ताटंक सब, हतलनि एके बान ।
सभक देखितहि महि खसल, मरम कँओ नहि जान ॥

ई कौतुक कय राम सर, प्रबिसल आबि निषंग।
रावन सभा ससंक सब, देखि महा रस भंग ॥१३॥

कंप न महि न मरुत अधिकायल। अस्त्र सस्त्र किछुओ न देखायल ॥१॥
सोचय सब जन निज हिय अंतर। असगुन भारी भेल भयंकर ॥२॥
दसमुख देखि सभा भय पाओल। जुगुति बना कहि हँसि बहलाओल ॥३॥
सिर खसनहुँ संतत सुभ जकरा। खसने मुकुट कि असगुन तकरा ॥४॥
सयन करू निज निज गृह जा कय। गेल भवन सब माथ नमा कय ॥५॥
मंदोदरी सोच उर बसले। जखने करनफूल महि खसले ॥६॥
भरि जल नयन जोरि कर दूनू। कहल प्रानपति बिनती सुनू ॥७॥
राम बिरोध कंत झट छारू। मनुज बूझि नहि हठ मन धारू ॥८॥

दोहा—बिस्वरूप रघुवंसमनि, करु बिस्वास अभंग।
लोक कलपना वेद कर, जनिक अंग प्रति अंग ॥१४॥

पद पाताल सीस अजधामे। अपर लोक अँग अँग बिश्रामे ॥१॥
भृकुटि बिलास भयंकर काले। नयन दिवाकर कच घनमाले ॥२॥
जनिक घ्रान अस्विनीकुमारे। निसि ओ दिवस निमेष अपारे ॥३॥
श्रबन दिसा कह वेद बखानी। मारुत स्वास निगम निज बानी ॥४॥
अधर लोभ जम दसन कराले। माया हास बाहु दिगपाले ॥५॥
आनन अनल अंबुपति जीहे। उतपति पालन प्रलय समीहे ॥६॥
भार अठारह थिक रोमावलि। अस्थि सैल सरिता नस आवलि ॥७॥
उदर उदधि अध गो जातना। जगमय प्रभु कैर बहुत कलपना ॥८॥

दोहा—अहंकार सिव बुद्धि अज, चित्त विष्णु मन चान।
मनुज बास सचराचर, रूप राम भगवान ॥
ई बिचारि सुनु प्रानपति, प्रभु सौँ बैर बिहाय।
प्रीति करू रघुवीर पद, मम अहिवात न जाय ॥१५॥

बिहुँसल नारि बचन सुनि काने। अहो मोह ममता बलबाने ॥१॥
नारि सोभाव सत्य कवि भाखय। अवगुन आठ सदा उर राखय ॥२॥

साहस अनृत चपलता माया । भय अबिबेक असौच अदाया ॥३॥
रिपुक रूप अहँ सबटा गौलहुँ । अति बिसाल भय मोहि सुनौलहुँ ॥४॥
से सब प्रिया सहज बस मोरे । बूझल आब प्रसादेँ तोरे ॥५॥
प्रिया अहाँक चतुरता जानल । येहि बिधि अहँ मम प्रभुत बखानल ॥६॥
बानी अहँक गूढ़ मृगलोचनि । बुझइत सुखद सुनति भयमोचनि ॥७॥
मंदोदरि मन येहन जनायल । कालक बस प्रिय मति भरमायल ॥८॥

दोहा—येहि बिधि करति बिनोद बहु, प्रात होइत दसकंध ।
सहज असंकित लंकपति, सभा गेल मद अंध ॥

सोरठा—फड़य फुलाय न बेत, जदपि सुधा बरषय जलद ।
मुरुख हृदय नहि चेत, जौँ गुरु मिलथि बिरंचि सिव ॥१६॥

जगला रघुपति येतय पराते । सचिवहिँ बजा पुछल ई बाते ॥१॥
की उपाय झट कहू बुझा कय । जामबंत कह माथ नमा कय ॥२॥
सुनु सरबज्ञ सकल उरबासी । बुधि बल तेज धरम गुनरासी ॥३॥
मंत्र कही निज मति अनुसारे । चर पठाउ प्रभु बालिकुमारे ॥४॥
मंत्र नीक सब केँ भेल भाने । कहल अंगदहिँ कृपानिधाने ॥५॥
बालितनय बुधि बल गुन धामे । लंका जाउ तात मम कामे ॥६॥
बहुत बुझा की कहू बिसेसे । हम जानी अहँ चतुर असेसे ॥७॥
हित हो ओकर हमर हो काजे । रिपु सौँ तेना कहब अहँ आजे ॥८॥

सोरठा—प्रभु आज्ञा धय सीस, अंगद उठला बंदि पद ।
से गुन सागर ईस, राम कृपा जनि पर करी ॥
स्वयं सिद्ध सब काज, हमरा आदर देल प्रभु ।
येहन सोचि जुबराज, तन पुलकित हरषित हृदय ॥१७॥

धय प्रभुता हिय बंदन कय पद । चलला प्रनमि सबहु केँ अंगद ॥ १॥
प्रभु प्रताप उर सहज असंके । रन बिक्रमी बालिसुत बंके ॥ २॥

रावनसुत छल करइत खेले । पैसति नगर भेटि से गेले ॥ ३॥
बातहिँ बात रोप बढ़ि आयल । जुगल अतुल बल पुनि तरुनायल ॥ ४॥
लात उसाहल अंगद ऊपर । गहि पद घुमा पटकि देल भूपर ॥ ५॥
निसिचर निकर देखि भट भारी । जहँ तहँ चलल न सकय पुकारी ॥ ६॥
क्यो ककरो सौँ मरम न कहइछ । बुझि बध तकर मौन भय रहइछ ॥ ७॥
भेल नगर बिच यैहन कोलाहल । आयल कपि लंका जे डाहल ॥ ८॥
जानि न की करता करतारे । अति सभीत सब करय पुकारे ॥ ९॥
बिनु पुछने पथ देखबय ताही । से सुखि जाय निहारथि जाही ॥१०॥

दोहा—सभा द्वार पर पहुँचला, सुमिरि राम पद कंज ।
चहुँ दिसि लखइत सिंह सम, धीर बीर बल पुंज ॥१८॥

तुरित निसाचर एक पठौलनि । समाचार रावनहिँ जनौलनि ॥१॥
सुनइत बिहुँसि कहल दससीसे । आनह बजा कहँक थिक कीसे ॥२॥
पाबि निदेस दूत बहु धाओल । कपिकुंजरहिँ ताहि थल लाओल ॥३॥
अंगद लखल दसानन केहन । प्रानवंत कज्जल गिरि जेहन ॥४॥
भुजा बिटप सिर शृंग समाना । रोमाबली लता जनि नाना ॥५॥
मुख नासिका नयन ओ काने । गिरि कंदरा खोह अनुमाने ॥६॥
सभा गेला मन छल नहि संका । तनय बालि केर अति बल बंका ॥७॥
उठल सभासद कपि केँ देखी । रावन उर भेल क्रोध बिसेखी ॥८॥

दोहा--जथा मत्त गज जूथ मे, पंचानन चलि जाय ।
सुमिरि राम परताप मन, बैसि गेला सिर नाय ॥१९॥

कहल दसानन के तोँ बंदर । हम रघुबीर दूत दसकंधर ॥१॥
हमर पिताक छलह तोँ मीते । अयलहुँ करय तोहर तैँ हीते ॥२॥
उत्तम बंस पुलस्तिक नाती । सिव बिरंचि पुजलह बहु भाँती ॥३॥
बर पैलह कैलह सब काजा । जितलह लोकपाल सब राजा ॥४॥
नृप अभिमान मोह बस किंबा । हरि अनलह सीता जगदंबा ॥५॥
आब सुनह तोँ सुभ मत मोरे । छमथुन्ह सकल दोष प्रभु तोरे ॥६॥

दसन गहह तृन कंठ कुठारी । परिजन सहित संग निज नारी ॥७॥
सादर जनकसुता कय अग्रे । चलह येना भय त्यागि समग्रे ॥८॥

दोहा—प्रनतपाल रघुवंसमनि, त्राहि त्राहि प्रभु मोहि ।
प्रभु सुनइत आरत बचन, करथुन्ह निर्भय तोहि ॥२०॥

रे कपिसुत तोँ बाज सम्हारी । मूढ़ न हमरा चिन्हहिँ सुरारी ॥ १॥
बाउ अपन पितु नाम जनाबह । कोन नातेँ मोहि मित्र बनाबह ॥ २॥
हम अंगद छी बालिक बेटा । छलथुन्ह भेंटल कि कहियो सेटा ॥ ३॥
सकुचायल अंगद बच सुनिते । बालि छलय कपि छी हम जनिते ॥ ४॥
तोँही अंगद बालिक बालक । भेलेँ बंस अनल कुल घालक ॥ ५॥
गरभ न खसल ब्यर्थ तोँ भेलेँ । निज मुख तपसिक दूत कहेलेँ ॥ ६॥
कहँ अछि बालि कुसल कह आबे । अंगद बिहुँसति देल जबाबे ॥ ७॥
दिन दस बितइत बालिक पासे । जाय कुसल पुछबह मिलि खासे ॥ ८॥
रामबिरोध कुसल हो जेहने । से सब तोरहुँ सुनौथुन्ह तेहने ॥ ९॥
सुन सठ भेद होइछ मन तकरा । श्रीरघुवीर हृदय नहि जकरा ॥१०॥

दोहा—हम कुल घालक सत्य तोँ, कुल पालक दससीस ।
आन्हर बहिर न येहन कह, नयन कान तव बीस ॥२१॥

सिव बिरंचि मुनिगन ओ देवे । चाहथि जनिक चरन कैर सेवे ॥१॥
तनिक दूत छी हम कुलघाती । येहनो मति तव बिदर न छाती ॥२॥
कपिबानी सुनि अप्रिय भारी । कहल दसानन नयन गुड़ारी ॥३॥
दुष्ट सहैछी तव कटु बानी । कारन नीति धरम हम जानी ॥४॥
कह कपि धरमसील तोँ भारी । सुनल चोरि कयलेँ परनारी ॥५॥
नीति न देखलेँ चर रखबारी । डूबि न मरहिँ धरम ब्रतधारी ॥६॥
कान नाक बिनु बहिनि निहारी । छमलेँ तोँ पुनि धरम बिचारी ॥७॥
धरमसीलता तोर जग जागे । तव दरसन धनि धनि मम भागे ॥८॥

दोहा—जुनि जलपहिँ जड़ जंतु कपि, सठ बिलोक मम बाहु ।
लोकपाल बल बिपुल ससि, ग्रसन हेतु सब राहु ॥

पुनि नभ सर मम कर निकर, कमल उपर कय बास ।
सोभित भेला मराल इव, संभु सहित कैलास ॥२२॥

तोर कटक बिच सुन रे अंगद । भिड़त के हमरा सौं जोधा बद ॥ १॥
तव प्रभु नारि बिकल बलहीने । अनुज तकर दुख दुखी मलीने ॥ २॥
तो सुकंठ तटतरुक समाने । अनुज हमर अछि भीरु महाने ॥ ३॥
जामवंत मंत्री अति बूढ़े । आब हैत की समरारूढ़े ॥ ४॥
सिल्प करम जानय नल नीले । अछि कपि एक महा बलसीले ॥ ५॥
ऐल प्रथम लंका जे जारल । बालितनय सुनि बचन उचारल ॥ ६॥
कहह बचन सत निसिचरनाहे । साँचे कीस कयल पुर दाहे ॥ ७॥
लघु कपि दैल रावनपुर डाही । के पतियायत सुनि कय ताही ॥ ८॥
जकरा सुभट सराहह रावन । से सुग्रीव केर लघु धावन ॥ ९॥
बीर न हो जे चलय बहूते । सुधि हित तहि पठौल कय दूते ॥१०॥

दोहा—कपि साँचे डाहल नगर, बिनु प्रभु अनुमति पाय ।
घुरि न गेल सुग्रीव लग, तहि भय रहल नुकाय ॥
सत्य कहह दसकंठ सब, सुनि न हमर मन क्रुद्ध ।
क्यो मम कटक न येहन जहि, छजत तोरा सँग जुद्ध ॥
प्रीति बिरोध समान सौं, करी नीति ई थीक ।
जौं मृगपति बँगची बधय, तकरा कह के नीक ॥
जद्यपि लघुता राम कें, तोहर बधें बड़ दोष ।
तदपि कठिन दसकंठ बड़, छत्री जातिक रोष ॥
बक्र उक्ति धनु बच सरें, रिपु उर बेधल कीस ।
उत्तर सँड़सी लय बुझू, काढ़य भट दससीस ॥
हँसि बाजल दसमुख तखन, कपि कर बड़ गुन एक ।
जे प्रतिपालय तकर हित, करय उपाय अनेक ॥२३॥

धन्य कीस जे निज प्रभु काजे । जहँ तहँ नाचय परिहरि लाजे ॥ १॥
निछवय लोक नाचि कुदि फानी । पतिहित करय धरम निज जानी ॥ २॥
अंगद स्वामिभक्त तव जाती । प्रभु गुन किय न कहहिँ येहि भाँती ॥ ३॥
हम गुन गाहक परम सुजाने । तव कटु रटन धरी नहि काने ॥ ४॥
कह कपि सत्य कहल हनुमाने । तव गुन गाहकताक बखाने ॥ ५॥
बन नासि सुत बधि देल पुर जारी । तदपि न तहि बुझलह अपकारी ॥ ६॥
सेह बिचारि प्रकृति तव सुंदर । हम कयलहुँ ढिठाइ दसकंधर ॥ ७॥
से कपि कहल देखल से आजे । तोरा रोष माँख नहि लाजे ॥ ८॥
तें ई मति खयलेँ पितु कीसे । ई कहि हँसल ठठा दससीसे ॥ ९॥
पितहिँ खाय खयतहुँ पुनि तोही । येखनहिँ बूझि पड़ल किछु मोही ॥१०॥
बालि बिमल जसभाजन जानी । बधी न तोहि अधम अभिमानी ॥११॥
कह रावन रावन जग कतबा । हम निज श्रबन सुनल सुन जतबा ॥१२॥
एक गेल बलि जितय पताले । बान्हि धयल सिसुगन हयसाले ॥१३॥
खेलइत बालक मारय जा कय । छोड़ा देल बलि तखन दया कय ॥१४॥
आओर एक सहसभुज देखी । दौड़ि धयल बुझि जंतु बिसेखी ॥१५॥
कौतुक हेतु भवन लय आओल । मुनि पुलस्ति तहि जाय छोड़ाओल ॥१६॥

दोहा—एक कहति संकोच अति, पड़ल बालि कर काँख ।
येहि मे रावन कोन तोँ, सत्य बाज तजि माँख ॥२४॥

सुनु सठ से रावन बलसीले । हर गिरि जान जकर भुज लीले ॥१॥
जनि सूरता बुझल गौरीसे । जनिका पुजल चढ़ा निज सीसे ॥२॥
सिर सरोज निज करेँ उतारी । पुजलहुँ अमित बेर त्रिपुरारी ॥३॥
भुज बिक्रम जानय दिगपाले । सठ येखनहुँ जकरा उर साले ॥४॥
उरक कठिनता दिग्गज जानल । जखन जखन हम रगड़ा ठानल ॥५॥
जकर कराल दंत मम छाती । धसल न टूटल मूरक भाँती ॥६॥
जकरा चलितहिँ डोलय धरनी । चढ़ति मत्त गज जनि लघु तरनी ॥७॥
से रावन जग बिदित प्रतापी । सुनलेँ तोँ न अलीक प्रलापी ॥८॥

दोहा—तहि रावन कें लघु कहहिँ, मनुजक करहिँ बखान।
रे कपि बर्बर खर्व खल, आब बुझल तव ज्ञान ॥२५॥

सुनि अंगद सकोप कह बानी। बाज सम्हारि अधम अभिमानी ॥१॥
सहसबाहु भुज गहल अपारे। दहन अनल सम जनिक कुठारे ॥२॥
जनिक परसु सागर खर धारे। अगनित भूप डुबल बहु बारे ॥३॥
तनिक गरब जहि लखिते भागल। नर की से दससीस अभागल ॥४॥
रे उदंड सठ की नर रामे। सुरसरि सरि की धनुधर कामे ॥५॥
सुरतरु तरु कि सुरभि पसु जानह। अन्न कि दान अमिय रस मानह ॥६॥
वैनतेय खग अहि सहसानन। चिंतामनि की उपल दसानन ॥७॥
सुनु मतिमंद लोक बैकुंठे। लाभ कि रघुपति भगति अकुंठे ॥८॥

दोहा—सैन सहित तव मान मथि, बन उजारि पुर जारि।
सठ से की हनुमान कपि, गेला जे तव सुत मारि ॥२६॥

रावन त्यागि चतुरपन आजे। किय न भजहिँ कृपालु रघुराजे ॥१॥
जौँ खल होयबेँ रामक द्रोही। ब्रह्म रुद्र सक राखि न तोही ॥२॥
मूढ़ अनेर बजा जनु गाले। येहन राम बैरक बुझ हाले ॥३॥
कपिगन आगु तोहर सब माथे। खसत भूमि पर प्रभु सर साथे ॥४॥
से तव सिर कंदुक सम पाबी। भालु कीस सब खेलत आबी ॥५॥
जखनहिँ समर कुपित रघुनायक। छूटत अति कराल बहु सायक ॥६॥
चलत न तखन तोहर ई गाले। ई बिचारि भज रामकृपाले ॥७॥
सुनति बचन रावन अति जरले। जरति महानल जनि घृत परले ॥८॥

दोहा—कुंभकरन सम बंधु मम, सुत प्रसिद्ध सक्रारि।
सुनलेँ नहि बिक्रम हमर, जितल चराचर झारि ॥२७॥

बना सहायक सठ दल बानर। येतबे प्रभुता बान्हल सागर ॥१॥
नाँघय खग अनेक बारीसे। सूर न हो से सब सुन कीसे ॥२॥
मम भुज सागर बल जल पूरे। जहाँ डुबल बहु सुर नर सूरे ॥३॥
बीस पयोधि अगाध अपारे। बीर येहन के पौत जे पारे ॥४॥

[illegible] भरबी दिगपति सौँ नीरे । सुनबहि भूपति जस तोँ की रे ॥५॥
[illegible] अछि समर सुभट तव नाथे । पुनि पुनि कहहि जकर गुन गाथे ॥६॥
[illegible] पठाबक तौँ कोन काजे । रिपु सौँ प्रीति करैत न लाजे ॥७॥
[illegible]गिरिमथन बाहु मम पुष्टे । देख छाँट पुनि प्रभु जस दुष्टे ॥८॥

[illegible]—सूर कोन रावनक सम, निज कर काटि जे सीस ।
हरखि कयल कत बेरि हुत, साछी छथि गौरीस ॥२८॥

[illegible]इत देखलहुँ जखन कपाले । विधि केर लिखल अंक निज भाले ॥ १॥
[illegible]लहुँ निज बध नर कर जखने । फूसि विधिक लिपि हँसलहुँ तखने ॥ २॥
[illegible] मन बूझि त्रास नहि मोरे । लिखल विरंचि जरठ मति भोरे ॥ ३॥
[illegible]आन बीर बल सुनबहि मोही । पुनि पुनि सठ पति लाज न तोही ॥ ४॥
अंगद कहल सलज के आने । रावन जग मे तोहर समाने ॥ ५॥
सलज सहज सोभाव तोँ पौलेँ । निज मुख निज गुन कतहु न गौलेँ ॥ ६॥
सिर ओ सैल कथा चित रखलेँ । तैँ तोँ बीस बेर से भखलेँ ॥ ७॥
नुका धेलेँ की से बल हीतल । बालि सहसभुज बलि तोहि जीतल ॥ ८॥
सुन मतिमंद उतर दे आबे । सिर कटने की सूर कहाबे ॥ ९॥
इंद्रजालि केँ कहय न बीरे । काटय निज कर सकल सरीरे ॥१०॥

दोहा—जरय फतिंगा मोह बस, खरगन भार बहैछ ।
बूझि देख मतिमंद तोँ, से न सूर कहबैछ ॥२९॥

बतछीलनि जनु कर खल आबे । मम बच सुन तजि अहमिति भावे ॥१॥
दसमुख मोहि नहि दूत बनौलनि । ई बिचारि रघुवीर पठौलनि ॥२॥
पुनि पुनि कहलनि येहन कृपाले । सिंह न लह जस मारि सृगाले ॥३॥
मन मन बुझि गुनि प्रभु केर बचने । सठ सहलहुँ तव कटु बच रचने ॥४॥
नहि तौँ कय मुखभंजन तोरे । लय जैतहुँ सीतहि बरजोरे ॥५॥
जनलहुँ तव बल अधम सुरारी । सुन मे हरि अनलेँ पर नारी ॥६॥
तौँ निसिचरपति गरब बहूते । हम रघुपति सेवक केर दूते ॥७॥
जौँ न राम अपमानहि डरितहुँ । तोहि देखति ई कौतुक करितहुँ ॥८॥

दोहा—तोहि पटकि संहारि दल, सठ कय लंकहिँ भंग।
जनकसुता लय चलि दितहुँ, तव जुवतीगन संग ॥३०(क)

ई कयनहुँ नहि महत जथारज। मुइल बधे ँ नहि किछु पुरुषारथ ॥१॥
कौल कामबस कृपिन बिमूढ़े। अति दरिद्र अजसी अति बूढ़े ॥२॥
सदा रोग बस संतत क्रोधी। विष्णु बिमुख श्रुति संत बिरोधी ॥३॥
तन पोषक निंदक अघ खानी। जिबितहि ँ सब सम चौदह प्रानी ॥४॥
बधी येहन बुझि खल नहि तोही। आब न रिस उपजाबहि ँ मोही ॥५॥
सुनि सकोप कह निसिचरनाथे। दाँति ँ दाबि अधर मलि हाथे ॥६॥
आब अधम कपि मरय चहैछे ँ। छोट बदन बड़ बात कहैछे ँ ॥७॥
कटु जलपहि ँ जड़ कपि बल जकरा। बल प्रताप बुधि तेज न तकरा ॥८॥

दोहा—अगुन अमान बिचारि तहि, देल पिता बनबास।
से दुख ओ जुबती बिरह, पुनि निस दिन मम त्रास ॥
जकर बलक गौरब रखहिँ, एहन मनुज कतेक।
खाय निसाचर दिबस निसि, मूढ़ बूझ तजि टेक ॥३०(ख)

जखन कयल ओ रामक निंदा। भेला क्रोधित अमित कपिंदा ॥ १॥
हरि हर निंदा सुनय जे काने। होइछ पाप गोघात समाने ॥ २॥
कटकटाय कपि कुंजर भारी। तमकि भुजा दुहु महि देल मारी ॥ ३॥
धरनी हिलल सभासद खसले। चलल भागि भय मारुत ग्रसले ॥ ४॥
खसइत सम्हरि उठल दसकंधर। भूतल पड़ल मुकुट अति सुंदर ॥ ५॥
रावन किछु लय सिर पर टेकल। किछु के ँ अंगद प्रभु लग फेकल ॥ ६॥
अबइत मुकुट देखि कपि भागल। उलका पात दिनहि ँ होअ लागल ॥ ७॥
की रावन खिसियाय चलाओल। कुलिस चारि आबय अति धाओल ॥ ८॥
कह प्रभु हँसि हिय डर नहि आनू। राहु केतु पवि लूक न जानू ॥ ९॥
ई थिक मुकुट दसानन माथक। आबय फेंकल बालिसुत हाथक ॥१०॥

दोहा—उछलि पवनसुत कर गहल, आनि धयल प्रभु पास।
कौतुक देखय भालु कपि, दिनकर सरिस प्रकास ॥

आतय दसानन कुपित भय, सब सौँ कहल रिसाय।
बानर केँ मारह पकड़ि, अंगद देल मुसुकाय ॥३१॥

येहि बिधि तुरित सुभट सब धावह। खाह भालु कपि जहँ तहँ पावह ॥१॥
मरकट हीन जाय महि करिहह। तपसि बंधु दुहु जिबितहिँ धरिहह ॥२॥
पुनि सकोप बजला जुबराजे। गाल बजबइत तोहि न लाजे ॥३॥
मर गर काटि निलज कुलघाती। बल बिलोकि किय फटौ न छाती ॥४॥
रे तियचोर कुमारगगामी। खल मलरासि मंदमति कामी ॥५॥
सन्निपात जलपहिँ दुरबादे। भेलेँ काल बस खल मनुजादे ॥६॥
आगू तोँ एकर फल पयबे। बानर भालुक थापड़ खयबेँ ॥७॥
राम थिका नर बजइत बानी। खसय न तोर जीभ अभिमानी ॥८॥
रसना खसतौ सक नहि येहि मे। सिर सब संगे समरक महि मे ॥९॥

सोरठा—रे नर की दसकंध, बालि बधल जे एक सर।
बीसो लोचन अंध, धिक तव जनम कुजाति जड़ ॥
तोहर लिधुरक प्यास, अछि तिरपित सब राम सर।
तजी तोहि तहि त्रास, कटु जल्पक निसिचर अधम ॥३२॥

हम छी तव रद तोड़य लायक। अनुमति मोहि न देलनि रघुनायक ॥ १॥
रिस हो येहन दसो मुख तोड़ी। लंका गहि समुद्र मे बोड़ी ॥ २॥
गुल्लरि फल समान तव लंका। बसहिँ मध्य तोँ जंतु असंका ॥ ३॥
हम कपि फल खैतहुँ छन मे से। राम उदार न देलनि निदेसे ॥ ४॥
बिहुँसल रावन सुनइत जुगुती। मूढ़! कतय सिखलेँ फुसि उकुती ॥ ५॥
बालि न कहियो गलगर भेलौ। तपसिक संग लबरपन एलौ ॥ ६॥
बिसभुज हम लबरा तँ छीहे। जौँ न उपाड़ी तव दस जीहे ॥ ७॥
बुझि रामक प्रताप कपि कोपल। सभा माँझ पन कय पद रोपल ॥ ८॥
जौँ मम चरन सकेँ सठ टारी। घुरथि राम सीता हम हारी ॥ ९॥
सुनह सुभटगन कह दससीसे। पद गहि धरनि पछारह कीसे ॥१०॥
इंद्रजीत सँग बड़ बलवाना। हरषि उठल जहँ तहँ भट नाना ॥११॥

झपटय कय बल जुगुति लगा कय । पद न टरय बैसय बिधुआ कय ॥१२॥
पुनि पुनि झपटय सुरआराती । टरय न कीस चरन येहि भाँती ॥१३॥
पुरुष कुजोगी जनि उरगारी । मोह बिटप नहि सकय उपारी ॥१४॥

दोहा—कोटि कोटि घननाद सम, सुभट उठल हरषाय ।
झपटय टरय न कपि चरन, पुनि बैसय बिधुआय ॥
भूमि न छोड़य कपि चरन, देखइत रिपु मद भाग ।
कोटि बिघ्न सौँ संत मन, जेना नीति नहि त्याग ॥३३॥

कपि बल देखि सकल हिय हारल । अपनहिँ उठल कपिक ललकारल ॥ १॥
गहति चरन कह बालिकुमारे । मम पद गहने तव न उबारे ॥ २॥
गहहिँ न राम चरन सठ जा कय । सुनति घुरल मन अति सकुचा कय ॥ ३॥
भेल तेजहत ओ श्रीहीने । मध्य दिवस ससि जेना मलीने ॥ ४॥
सिंहासन बैसल बिधुआ कय । मानू संपति सकल गमा कय ॥ ५॥
जगदातमा प्रानपति रामे । तनिक बिमुख कहुँ लह बिश्रामे ॥ ६॥
उमा राम केर भृकुटि बिलासे । बनय बिस्व पुनि पावय नासे ॥ ७॥
करथि तृनहिँ पबि पबि तृन छन मे । तनि दूतक प्रन टर कि भुबन मे ॥ ८॥
पुनि बहु बिधि कपि नीति बखानल । काल निकट तैँ से नहि मानल ॥ ९॥
प्रभुजस सुना रिपुक कय गंजन । ई कहि चलला बालिक नंदन ॥१०॥
रनहिँ खेला तोहि हतब न जावत । अपन बड़ाइ करब की तावत ॥११॥
प्रथमहिँ तनि सुत देल कपि मारी । से सुनि रावन भेल दुखारी ॥१२॥
जातुधान अंगद प्रन देखी । भय ब्याकुल सब भेल बिसेखी ॥१३॥

दोहा—धरषि रिपुक बल हरषि कपि, बालितनय बल पुंज ।
पुलकल तन बह नयन जल, गहल रामपद कंज ॥
दसमुख संध्या जानि कय, भवन गेल बिलखैत ।
रावन केँ मंदोदरी, कहलनि पुनि बुझबैत ॥३४॥

कंत कुमति ई बुझि मन त्यागू । छजत न रन तोहि रघुपति आगू ॥१॥
राम अनुज लघु रेखा कान्हल । पौरुख यैह सेहो नहि लाँघल ॥२॥

कि जितब तनि सौँ संग्रामे । जनिक दूत कैर एहन कामे ॥ ३॥
सिंधु नाँघि तव लंका । आयल कपि केहरी असंका ॥ ४॥
हिँ हति बिपिन उजारल । अहँक अछैत अच्छ जे मारल ॥ ५॥
छार जरा पुर सर्बे । कतय रहल प्रिय तव बल गर्बे ॥ ६॥
आब पति गाल न मारू । हमर कहल किछु हृदय बिचारू ॥ ७॥
रघुपति केँ नृपति न मानू । अग जग नाथ अतुल बल जानू ॥ ८॥
प्रताप बुझल मारीचे । कयल न तकर कहल बुझि नीचे ॥ ९॥
सभा छल अमित भुपाले । रही अहूँ बल अतुल बिसाले ॥१०॥
धनुष लैल जानकि ब्याही । तखन न किय रन जितलहुँ ताही ॥११॥
बल सुरपति सुत अवधारल । जहि कनाह कय जिबितहिँ छाड़ल ॥१२॥
गति लेलहुँ देखी । तदपि न हिय भैल लाज बिसेखी ॥१३॥

—बधि बिराध खरदूषनहिँ, लीलैँ हतल कबंध ।
एक सरैँ बालिहिँ बधल, जनितहिँ छी दसकंध ॥३५॥

जलनाथहिँ बन्हलनि खेले । उतरलाह प्रभु सदल सुबेले ॥१॥
नीक दिनकरकुल केतू । दूत पठौलनि तव हित हेतू ॥२॥
सभा बिच तव बल केना । करि बरूथ मे मृगपति जेना ॥३॥
चर जनि अंगद हनु बीरे । अमित पराक्रम अति रनधीरे ॥४॥
पिय पुनि पुनि मनुज कहैछी । मुधा मान मद मोह बहैछी ॥५॥
कयल हा राम बिरोधे । काल बिबस मन उपज न बोधे ॥६॥
दंड गहि बध नहि करइछ । बुद्धि बिचार धरम बल हरइछ ॥७॥
य काल निकट मे जाही । अहिँक जकाँ मतिभ्रम हो ताही ॥८॥

दोहा—हतल पुत्र दुइ दहल पुर, आबहु स्वामि पुराउ ।
कृपासिंधु रघुनाथ भजि, नाथ बिमल जस पाउ ॥३६॥

वचन सुनि बान समाने । सभा गेल उठि होइत बिहाने ॥ १॥
जाय सिँहासन फूली । अति अभिमान त्रास सब भूली ॥ २॥
राम अंगदहिँ बजौलनि । पद पंकज सिर आबि नमौलनि ॥ ३॥
लग बैसाय बिचारी । बजला बिहँसि कृपालु खरारी ॥ ४॥

बालितनय कौतुक अति मोही । तात सत्य कहु पूछी तोही ॥ ५॥
रावन जातुधानकुल टीका । जनिक अतुल भुज बल जग लीका ॥ ६॥
तकर मुकुट अहँ चारि चलौलहुँ । तात सुनाउ कोन बिधि पौलहुँ ॥ ७॥
सुनु सरवज्ञ प्रनत सुखकारी । मुकुट न थिक ई नृप गुन चारी ॥ ८॥
साम दाम ओ दंड बिभेदे । नृप उर बसय नाथ कह बेदे ॥ ९॥
नीति धरम केर चारू चरने । ई गुनि प्रभु आयल तव सरने ॥१०॥

दोहा—धरम हीन प्रभुपद बिमुख, काल बिबस दससीस ।
तकरा तजि कय ऐल गुन, सुनू कोसलाधीस ॥
परम चतुरता श्रवन सुनि, बिहुँसथि रामउदार ।
समाचार पुनि सब कहल, गढ़ केर बालिकुमार ॥३७॥

लखन खबरि सत्रुक प्रभु पौलनि । राम सचिवगन निकट बजौलनि ॥ १॥
लंका बंकिम चारि दुआरे । घेरी कोन बिधि करू बिचारे ॥ २॥
तखन कपीस रिछेस बिभीषन । सुमिरि हृदय दिनकरकुलभूषन ॥ ३॥
कय बिचार सब मंत्र दृढ़ौलनि । चारि अनी कपि कटक बनौलनि ॥ ४॥
जथाजोग सेनापति केलनि । तखन बजा सब जूथप लेलनि ॥ ५॥
प्रभु प्रताप कहि सबहिँ बुझाओल । सुनि कपि सिंहनाद कय धाओल ॥ ६॥
हरषि राम पद माथ नमाबय । गहि गिरिसिखर बीर सब धावय ॥ ७॥
गरजय तरजय भालु कपीसे । जय रघुबीर कोसलाधीसे ॥ ८॥
जनितहुँ परम दुर्ग अति लंका । प्रभु प्रताप कपि चलल असंका ॥ ९॥
घटाटोप चहुँदिसि लेल घेरी । [illegible] निसान बजावय भेरी ॥१०॥

दोहा—राम जयति लछुमन जयति, जय सुग्रीब कपीस ।
सिंहनाद गरजैछ कपि, महाबली रिछ कीस ॥३८॥

लंका भेल कोलाहल भारी । सुनल दसानन अति अहँकारी ॥ १॥
देख करय कपि ढिठपन केना । बिहुँसि बजाओल निसिचर सेना ॥ २॥
कालक प्रेरित कपि दल आयल । अछि निसिचर दल हमर भुखायल ॥ ३॥
कहि ई अट्टहास सठ केलक । घर बैसल अहार बिधि देलक ॥ ४॥

सुभट सकल चारू दिसि जाहे। धय धय भालु कीस सब खाहे॥ ५॥
उमा येहन रावन अभिमाने। छतय टिटही जेंना उताने॥ ६॥
चलल निसाचर अनुमति माँगी। गहि कर ढेलवाँस बरसाँगी॥ ७॥
तोमर मुग्दर परसु प्रचंडे। सूल कृपान परिघ गिरि खंडे॥ ८॥
जनि अरुनोपल निकर निहारी। दौड़य सठ खग माँसअहारी॥ ९॥
लोल भंग दुख ताहि न सूझे। तहिना दौड़य दनुज अबूझे॥१०॥

दोहा—नानायुध सर चाप धय, जातुधान बलबीर।
कोट कंगूरा गेल चढ़ि, कोटि कोटि रनधीर॥३९॥

कोट कंगूरा सोभय केहन। मेरु शृंग घन बैसल जेहन॥१॥
हो रनभेरी डंका घोसे। सुनि धुनि जाग भटक मन रोसे॥२॥
बाजय तुरही भेरि अपारे। सुनि कादर उर फाट दरारे॥३॥
देखल जाय कपिगन केर ठट्टे। अति बिसाल तनु भालु सुभट्टे॥४॥
दौड़य गनय न औघट घाटे। परबत फोड़ि बनाबय बाटे॥५॥
कटकटाय कोटिक भट गरजय। दाँतें ठोर काटि अति तरजय॥६॥
उत रावन इत राम दोहाई। जयति जयति जय मचल लड़ाई॥७॥
निसिचर सिखर समूह खसाबय। कुदि गहि कपि उनटाय चलाबय॥८॥

छंद—लय कुधर खंड प्रचंड मरकट भालु गढ़हिँ बजारथी।
झपटय चरन धय पटकि भगइत देखि पुनि ललकारथी॥
अति तरल तरुन प्रताप तड़पय तमकि गढ़ चढ़ि चढ़ि गेले।
कपि भालु चढ़ि मंदिर जहाँ तहँ राम जस गबइत भेले॥

दोहा—एक एक निसिचरहिँ गहि, पुनि कपि चलय पड़ाय।
नीचा भट अपने उपर, खसय धरनि पर जाय॥४०॥

राम प्रताप प्रबल कपि जूथे। मरदय निसिचर सुभट बरूथे॥ १॥
चढ़ल दुर्ग पुनि जहँ तहँ बानर। जय रघुबीर प्रताप दिवाकर॥ २॥

चलल पड़ाये समूह निसाचर । प्रबल पवन सौँ जेना बादर ॥ ३॥
हाहाकार भेल पुर भारी । कानय बालक आतुर नारी ॥ ४॥
सब मिलि दैछ रावनहिँ गारी । राज करति लेल मृत्यु हँकारी ॥ ५॥
कान पड़ल निज भट बिचलायल । फेरि सुभट लंकेस रिसायल ॥ ६॥
जहि रन बिमुख फिरल अवधारव । कठिन कृपान ताहि हम मारब ॥ ७॥
सरबस खाय भोगि सुख ढेरे । भेल प्रान प्रिय युद्धक बेरे ॥ ८॥
उग्र वचन सुनि सकल डेरैले । चलल क्रोध कय सुभट लजैले ॥ ९॥
सनमुख मरन बीर केर सोभा । तखन तजल सब प्रानक लोभा ॥१०॥

दोहा—बहु आयुध धय सुभट सब, भिड़ पुनि पुनि ललकारि ।
कयल बिकल कपि भालु केँ, परिघ त्रिसूलहिँ मारि ॥४१॥

भागय लागल कपि भय मानी । जद्यपि जीतत आगु भवानी ॥१॥
क्यो कह कहँ अंगद हनुमंते । कहँ नल नील दुविद बलवंते ॥२॥
निज दल बिकल सुनल हनुमाने । पच्छिम द्वार छला भगवाने ॥३॥
मेघनाद तहँ करय लड़ाई । टुटय न द्वार परम कठिनाई ॥४॥
पवनतनय मन भेल अति क्रोधा । उठला गरजि काल सम जोधा ॥५॥
कूदि लंक गढ़ ऊपर चढ़ला । गहि गिरि मेघनाद दिसि बढ़ला ॥६॥
तोड़ल रथ सारथि केँ मारल । घननादक हिय लात प्रहारल ॥७॥
दोसर सूत बिकल तहि जानल । रथ मे राखि तुरित गृह आनल ॥८॥

दोहा—अंगद सुनलनि पवनसुत, यकसर गढ़ पर गेल ।
समरक बंका बालिसुत, कुदि चढ़ला कपि खेल ॥४२॥

जुद्ध बिरुद्ध क्रुद्ध दुहु बंदर । राम प्रताप सुमिरि उर अंतर ॥१॥
चढ़ला रावन अट्ट हुहू कय । कोसलपतिक दोहाइ दुहू कय ॥२॥
कलस सहित घर ढाहि खसाओल । देखि निसाचरपति भय पाओल ॥३॥
तियगन कहि कहि पीटय छाती । आब ऐल दुहु कपि उतपाती ॥४॥
कपि लीला कय ताहि डेराबथि । रामचंद्र केर सुजस सुनाबथि ॥५॥
पुनि गहि कर सौँ कंचन खंभे । कहल करी उतपात अरंभे ॥६॥

अरि दल पैसि मारि किलकारी । लगला मरदय भुज बल भारी ॥७॥
ककरो थापड़ लाते ँ ककरो । भजह न राम लैह फल तकरो ॥८॥

दोहा—**मरदि एक सौँ एक केँ, तोड़ि चलाबथि मुंड ।**
रावन आगू खसय से, जेना फुटय दधि कुंड ॥४३॥

महा महा मुखिया जे पाबथि । पद गहि प्रभु लग घुमा चलाबथि ॥१॥
कहथि बिभीषन तनिकर नामे । देथि राम हुनि केँ निज धामे ॥२॥
खल मनुजाद द्विजामिष भोगी । पाबय गति जे जाचथि जोगी ॥३॥
उमा राम मृदु चित करुनाकर । बैर भाब सुमिरय मोहि निसिचर ॥४॥
देथि परम गति से जिय जानी । कहु कृपालु के येहन भवानी ॥५॥
एहन प्रभु न भजय भ्रम त्यागी । नर मतिमंद से परम अभागी ॥६॥
अंगद हनुमत दुरुग प्रबेसे । कयलनि येहन कहल अवधेसे ॥७॥
सोभ लंक मे दुहु कपि केना । मथय सिंधु दुइ मंदर जेना ॥८॥

दोहा—**भुज बल दलि मलि सत्रु दल, लखि कय दिवसक अंत ।**
कुदला दूनू बिगत श्रम, ऐला जहँ भगवंत ॥४४॥

प्रभु पद कमल नमाओल माथे । देखि सुभट हरषित रघुनाथे ॥ १॥
दुहु केँ कृपया राम निहारल । गत श्रम भेला परम सुख धारल ॥ २॥
घुरल जानि अंगद हनुमाना । फिरल भालु मरकट भट नाना ॥ ३॥
जातुधान प्रदोष बल पाओल । कय दोहाइ दससीसक धाओल ॥ ४॥
निसिचर अनी देखि कपि फीरल । जहँ तहँ कटकटाय भट भीड़ल ॥ ५॥
दुहु दल प्रबल दैत ललकारी । लड़य सुभट नहि मानय हारी ॥ ६॥
महाबीर निसिचर सब कारी । नाना बरन बलीमुख भारी ॥ ७॥
सबल जुगल दल सम बल जोधे । कौतुक करय लड़य कय क्रोधे ॥ ८॥
प्राबिट सरद पयोद बहूते । लड़य मानु प्रेरल मारूते ॥ ९॥
अनिप अकंपन ओो अतिकाया । विचलति सैन कयल से माया ॥१०॥
पल मे भेल अतीब अन्हारे । हो बरषा रुधिरोपल छारे ॥११॥

दोहा—देखि निबिड़तम दसहुँ दिसि कपिदल हाहाकार।
एक एक केँ देखय नहि, जहँ तहँ करय पुकार ॥४५॥

जनलनि मरम सकल रघुनाथे । बजा लेलनि अंगद हनु साथे ॥१॥
समाचार सब कहि समुझाओल । सुनति कोपि कपि कुंजर धाओल ॥२॥
पुनि कृपालु हँसि चाप चढ़ौलनि । पावक सायक सपदि चलौलनि ॥३॥
तम न रहल कहुँ भेल प्रकासे । ज्ञान उदय जनु संसय नासे ॥४॥
भालु बलीमुख पाबि प्रकासे । दौड़ल हरपि बिगत श्रम त्रासे ॥५॥
हनु अंगद रण गरजय लागल । सुनइत हाँक निसाचर भागल ॥६॥
धय भगइत भट पटकय धरनी । करय भालु कपि अद्भुत करनी ॥७॥
गहि पद फेकय सागर ओही । धय धय खाय उरग झख गोही ॥८॥

दोहा—किछु घायल मरि गेल किछु, किछु गढ़ चढ़ल पड़ाय।
गरजय बानर भालु सब, रिपुदल बल बिचलाय ॥४६॥

चारू कपि अनि बुझि निसि भेले । कोसलपतिक निकट सब गेले ॥१॥
राम कृपा कय हेरल जखने । भेल बिगत श्रम कपिगन तखने ॥२॥
रावन सचिवहिँ ओतय बजौलक । मुइल सुभट जत नाम गनौलक ॥३॥
आधा कटक कीस संहारल । कहू बेगि की जाय बिचारल ॥४॥
माल्यबंत अति बूढ़ निसाचर । रावन मातु पिता मंत्रीबर ॥५॥
बाजल बचन नीति अति पाबन । सुनू तात किछु हमर सिखाबन ॥६॥
जहिया सौँ सीता हरि आनल । असगुन होइछ न जाय बखानल ॥७॥
वेद पुरान जनिक जस गाओल । राम बिमुख क्यो नहि सुख पाओल ॥८॥

दोहा—हिरन्याच्छ भ्राता सहित, मधु कैटभ बलवान।
मारल जे अवतरल पुनि, कृपासिंधु भगवान ॥

नवाह्न पारायण, विश्राम—२५

काल रूप खल बन दहन, गुनागार घन बोध।
सेवथि जनिका संभु विधि, तनि सौँ कोन बिरोध ॥४७॥

परिहरि बैर दियनु वैदेही । भजू कृपानिधि परम सिनेही ॥ १॥
तकर बचन बानक सम लागल । मुँह कय कारी भाग अभागल ॥ २॥
बूढ़ जानि नहि मारी तोही । आब न मूँह देखा तोँ मोही ॥ ३॥
से निज मन कयलक अनुमाने । बधय चाह येहि कृपानिधाने ॥ ४॥
से उठि गेल कहति दुरबादे । तखन सकोप कहल घननादे ॥ ५॥
काल्हि लखब मम कौतुक भोरे । करब बहुत बाजू की थोरे ॥ ६॥
पौल भरोस सुनि सुत बानी । प्रीति समेत अंक लैल आनी ॥ ७॥
गुनिधुनि करितहिँ भेल पराते । धयल द्वार कपि चारू काते ॥ ८॥
कपि दुर्घट गढ़ घेरल सरोषे । नगरहिँ मचल कोलाहल घोषे ॥ ६॥
बिबिधायुध लय निसिचर धाओल । गढ़ सौँ पर्वत सिखर ढहाओल ॥१०॥

छंद—ढाहय महीधर सिखर कोटि अनेक बिधि गोला चलय ।
घहराय जे पबिपात सम गरजैछ जनि बादरि प्रलय ॥
मरकट बिकट भट जुटि कटय तन भेल जर जर नहि घुरय ।
गहि गिरि चलाबय ताहि गढ़ पर जहँ तहाँ निसिचर मरय ॥

दोहा—मेघनाद सुनि कय येहन, गढ़ पुनि छेकल जाय ।
उतरल से झट दुरुग सौँ, डंका चलल बजाय ॥४८॥

कहँ कोसलाधीस दुहु भ्राते । धन्वी सकल लोक बिख्याते ॥१॥
कहँ नल नील दुबिद सुग्रीमे । अंगद हनूमंत बल सीमे ॥२॥
कहाँ बिभीषन भ्राताद्रोही । सबके आइ बधब हठि ओही ॥३॥
ई कहि बान कठिन संधानल । कय अति क्रोध श्रबन धरि तानल ॥४॥
छाड़य लागल से सर केना । धाब सपच्छ नागगन जेना ॥५॥
जहँ तहँ खसल कपिक दल रन मे । सनमुख भय न सकल तहि छन मे ॥६॥
जहँ तहँ भागि चलल कपि रिच्छे । सबकेँ बिसरि गेल रन इच्छे ॥७॥
से कपि भालु न रन मे पाओल । जाहि न मुइल समान बनाओल ॥८॥

दोहा—दस दस सर मारल सबहिँ, खसल भूमि कपि बीर ।
गरजल केहरि नाद कय, मेघनाद बल धीर ॥४६॥

देखि पवनसुत कटक बेहाले । क्रोधें दौड़लाह जनि काले ॥१॥
महासैल येक तुरत उपाड़ल । मेघनाद पर कोपि बजारल ॥२॥
अबइत देखि गेल नभ भागी । रथ सारथी तुरग सब त्यागी ॥३॥
पुनि पुनि ललकारथि हनुमाने । निकट न आब मरम से जाने ॥४॥
रघुपति निकट गेल घननादे । नाना भाँति कहल दुरबादे ॥५॥
अस्त्र सस्त्र हथियार प्रहारल । खेलहिँ मे प्रभु काटि निबारल ॥६॥
देखि प्रताप रिसायल मूढ़े । करय लाग माया अति गूढ़े ॥७॥
खेल करय क्यो गरुड़क साथे । तहि डेरबय गहि पोआ हाथे ॥८॥

दोहा—जनिक प्रबल मायाक बस, सिव बिरंचि बड़ छोट ।
देखबै अछि तनिका दनुज, निज माया अति खोट ॥५०॥

नभ चढ़ि बरषय बिपुल अँगारे । महि सौँ प्रगटित हो जलधारे ॥१॥
नाना भाँति पिसाच पिसाची । मारु काटु धुनि बाजय नाची ॥२॥
बिसठा पीजु लिधुर कच हारे । खनहिँ उपल बरषय खन छारे ॥३॥
तिमिर पसारल कय रज बृष्टी । अपनो कर आबय नहि दृष्टी ॥४॥
माया लखि कपिगन अकुलायल । सभक मृत्यु यहि बिधि चलिआयल ॥५॥
कौतुक देखि राम मुसुकेला । कपिगन डेरागेल बुझि गेला ॥६॥
एक सरेँ काटल सब माया । हरथि जेना रवि तिमिर निकाया ॥७॥
कृपा दृष्टि कपि भालु बिलोकल । भेल प्रबल रन रहय न रोकल ॥८॥

दोहा—आज्ञा लय कय राम सौँ, अंगदादि कपि साथ ।
चलला लछुमन क्रुद्ध भय, बान सरासन हाथ ॥५१॥

अरुन नयन उर बाहु बिसाले । हिम गिरि सम तनु किछु किछु लाले ॥१॥
येतय दसानन सुभट पठाओल । नाना अस्त्र सस्त्र गहि धाओल ॥२॥
भूधर नख बिटपायुध धारी । दौड़ल कपि जय राम पुकारी ॥३॥
सब क्यो भिड़ल लगा कय जोरे । दुहु दिसि जय इच्छा नहि थोरे ॥४॥
हनय लात मुका रद काटय । कपि जयसील मारि पुनि डाँटय ॥५॥
मारु मारु धरु धरु धरु मारू । सीस तोड़ि गहि भुजा उपारू ॥६॥

येहन सब्द ब्यापल नभ्रो खंडे । दौड़य जहँ तहँ रुंड प्रचंडे ॥७॥
देखथि कौतुक नभ सुरबृंदे । छन मे बिसमय छनहिँ अनंदे ॥८॥

दोहा—**लिधुर खाधि भरि भरि जमल, ऊपर उड़इछ धूरि ।**
जनि अंगारक ढेर पर, छायल छाउर भूरि ॥५२॥

घायल बीर बिराजय केहन । कुसुमित किंसुक तरु हो जेहन ॥१॥
लछुमन मेघनाद दुहु जोधे । भिड़थि परस्पर कय अति क्रोधे ॥२॥
एक एक केँ सकथि न जीती । निसिचर छल बल करय अनीती ॥३॥
भेला क्रोधित तखन अनंते । भंजल रथ सारथी तुरंते ॥४॥
नाना बिधि प्रहार कर सेषे । राच्छस भेल प्रान अबसेषे ॥५॥
रावनसुत कर मन अनुमाने । संकट निकट हरत मम प्राने ॥६॥
बीरघातिनी साँगी दागल । तेज पुंज लछुमन उर लागल ॥७॥
सक्ति लगितहिँ मुरुछा भेले । तखन छोड़ि भय लग चलि गेले ॥८॥

दोहा—**मेघनाद सम कोटि सय, थाकल बीर उठाय ।**
सेष जगत आधार कहुँ, उठता चलल लजाय ॥५३॥

गिरिजा जनिक क्रोध अगड़ाही । चौदहो भुबन छनहिँ सक डाही ॥१॥
सकइछ समर जीति के तनिका । सेवथि सुर नर अग जग जनिका ॥२॥
ई कौतूहल जानथि सेहे । राम कृपा लव पावथि जेहे ॥३॥
साँझ जानि दुहु सेना घूरल । समटय अपन अपन दल जूड़ल ॥४॥
ब्यापक ब्रह्म अजित भुबनेस्वर । लछुमन कतय पुछल करुनाकर ॥५॥
ता धरि लय अयला हनुमाने । देखि अनुज प्रभु दुखी महाने ॥६॥
बैद्य सुखेना लंका रहइछ । आनथु क्यो झट रिछपति कहइछ ॥७॥
धय लघु रूप गेला हनुमंते । आनल भवन समेत तुरंते ॥८॥

दोहा—**राम चरन अरबिंद सिर, आबि सुखेन नमाय ।**
कहल नाम गिरि ओषधिक, लाउ पवनसुत जाय ॥५४॥

राम चरन सरसिज उर राखी । चलला पवनतनय बल भाखी ॥१॥
ओतय मरम कहलक एक धावन । पहुँचल कालनेमि घर रावन ॥२॥

दसमुख कहल मरम से सुनल । पुनि पुनि कालनेमि सिर धूनल ॥३॥
तव अछैत जे पुर देल डाही । रोकि सकत के बाटहिँ ताही ॥४॥
भजि रघुपति के करु हित अपना । छाड़ु नाथ जत मृपा कलपना ॥५॥
नीलकंज तनु सुंदर स्यामे । हृदय राखु लोचन अभिरामे ॥६॥
अहंकार ममता मद त्यागू । महामोह निसि निन सौँ जागू ॥७॥
काल व्यालहुक भच्छक जे टा । जितल कि सपनहुँ जायत से टा ॥८॥

दोहा—**सुनि दसकंठ रिसैल अति, से मन कयल बिचार ।**
राम दूत कर मरब भल, ई खल रत मल भार ॥५५॥

ई कहि चलि मग माया कैलक । सर मंदिर बर बाग बनैलक ॥१॥
मारुतसुत देखल सुभ आश्रम । मुनि सौँ पुछि जल पिबी जाय श्रम ॥२॥
राच्छस कपट बेष तहँ सोहय । चाहय मायापति चर मोहय ॥३॥
जाय पवनसुत नाओल माथे । लागल कहय राम गुन गाथे ॥४॥
होइछ महारन रावन रामे । जितता राम न संसय नामे ॥५॥
रहि कय येतहि बंधु हम देखी । ज्ञान दृष्टि बल मोहि बिसेखी ॥६॥
मँगलनि जल से देलक कमंडल । कपि कह नहि अघैब थोड़बे जल ॥७॥
आबह झट कय सर असनाने । दिच्छा देबहु पैबह ज्ञाने ॥८॥

दोहा—**प्रबिसति सर कपि पद गहल, गोहिनि आकुलि भेलि ।**
तहि मारल धय दिव्य तन, चढ़ि बिमान नभ गेलि ॥५६॥

कपि तव दरस भेलहुँ निष्पापे । मेटल तात मुनिबरक सरापे ॥१॥
मुनि नहि थिक ई निसिचर घोरे । मानू सत्य बचन कपि मोरे ॥२॥
कहि चलि गेल अपसरा जखने । निसिचर लग गेला कपि तखने ॥३॥
कह कपि मुनि गुरु दछिना लीय । पाछू हमरा दिच्छा दीय ॥४॥
सिर लंगूर लपेटि पछारल । मरइत बेरि अपन तन धारल ॥५॥
राम राम कहि छोड़ल प्राने । सुनि चललाह हरषि हनुमाने ॥६॥
गिरि पर ओषधि चिन्हल न गेलनि । सहसा कपि उपाड़ि गिरि लेलनि ॥७॥
गहि गिरि निसि नभ धावा धावी । अवधपुरी पर कपि गेल आबी ॥८॥

दोहा—देखल भरत बिसाल अति, निसिचर मन अनुमानि ।
बिनु फल सायक मारलनि, चाप श्रवन धरि तानि ॥५७॥

पड़ल मुरुछि महि लगइत सायक । सुमिरति राम राम रघुनायक ॥१॥
सुनि प्रिय बचन भरत अकुलयला । कपि समीप झट दौड़ल अयला ॥२॥
कपिहिँ बिकल लखि हृदय लगौलनि । जागथि नहि बहु भाँति जगौलनि ॥३॥
मुख मलीन मन भेल दुख भारी । कहथि बचन भरि लोचन बारी ॥४॥
जे बिधि राम बिमुख मोहि केलनि । से पुनि ई दारुन दुख देलनि ॥५॥
जौँ हमरा मन बच ओ काया । प्रीति राम पद कमल अमाया ॥६॥
तौँ कपि होउ बिगत श्रम सूले । जौँ मोहि पर रघुपति अनुकूले ॥७॥
उठि बैसला सुनि बचन कपीसे । कहि जय जयति कोसलाधीसे ॥८॥

सोरठा—कपि केँ हृदय लगौल, पुलकित तन लोचन सजल ।
प्रीति न उर अँटि पौल, सुमिरि राम रघुकुल तिलक ॥५८॥

सुखनिधि प्रभुक कुसल कहु ताता । सहित अनुज ओ जानकिमाता ॥१॥
कथासार कहलनि हनुमाने । दुखी भेला पछताथि निदाने ॥२॥
हा जग जनम कियक हम लेलहुँ । प्रभु केर एको काज न एलहुँ ॥३॥
जानि कुअवसर मन धय धीरे । पुनि कपि सौँ कहलनि बलबीरे ॥४॥
तात होयत तव जाइत देरे । होइत प्रात भयजैत अन्हेरे ॥५॥
चढ़ु मम सायक सैल समेते । पठवी तोहि जहँ कृपानिकेते ॥६॥
सुनि कपि मन उपजल अभिमाने । लय मम भार चलत कहुँ बाने ॥७॥
पुनि रामक प्रभाव उर आनी । कहलनि प्रनमि जोरि जुग पानी ॥८॥

दोहा—तव प्रताप उर राखि प्रभु, जायब नाथ तुरंत ।
कहि लय आयसु बंदि पद, चलला झट हनुमंत ॥
भरत बाहुबल सील गुन, प्रभु पद प्रीति अपार ।
जाथि सराहति मनहि मन, पुनि पुनि पवनकुमार ॥५९॥

ओतय राम लछुमनहिँ निहारी । बजला बचन मनुज अनुसारी ॥ १॥
कपि नहि ऐला भेल अधराती । अनुज उठाय लगाओल छाती ॥ २॥

कौखन दुख लखि सकी न मोरे । बंधु सोभाव सदा मृदु तोरे ॥ ३॥
तजलहुँ हमरा हित पितु माता । सहलहुँ बन हिम रौद बसाता ॥ ४॥
से अनुराग आब कहँ भ्राता । उठी न सुनि किय व्याकुल बाता ॥ ५॥
बंधु बिछोह बनहि जौं जनितहुँ । तौं ओ पिता बचन नहि मनितहुँ ॥ ६॥
सुत बित नारि भवन परिवारे । होअय जाय जग बारंबारे ॥ ७॥
ई बिचारि जिय जागू ताता । जगत न मिलय सहोदर भ्राता ॥ ८॥
जथा पंख बिनु खग अति दीने । मनि बिनु फनि करिवर कर हीने ॥ ९॥
तेंहने जिवन बंधु बिनु तोही । जौं जड़ दैब जियाबय मोही ॥१०॥
अबध देखायब कोन मुँह जा कय । नारि हेतु प्रिय बंधु गमा कय ॥११॥
वरु जग अजस उठबितहुँ भारी । छति नहि पैघ गमौनहुँ नारी ॥१२॥
तात सोक तव अजसहु घोरे । आब सहब बनि निठुर कठोरे ॥१३॥
निज जननी केर एक कुमारे । तात तनिक अहँ प्रानअधारे ॥१४॥
सौंपल मोहि अहँक धय पानी । सब बिधि सुखद परम हित जानी ॥१५॥
उतर देब की तनिका जा कय । उठि न कही किय मोहि बुझा कय ॥१६॥
बहु बिधि सोचथि सोच बिमोचन । स्रवय सलिल राजिबदल लोचन ॥१७॥
उमा अखंड एक छथि रघुपति । भगत कृपालु देखाबथि नर गति ॥१८॥

सोरठा--प्रभु प्रताप सुनि कान, बिकल भेल बानर निकर ।
आबि गेला हनुमान, जेना करुन मे बीर रस ॥६०॥

हरषि राम मिलला हनुमाने । अति कृतज्ञ प्रभु परम सुजाने ॥ १॥
कयलनि बैद उपाय तुरंते । उठि बैसला लछुमन हरषंते ॥ २॥
प्रभु मिलला लगाय हिय भ्राता । हरषल सकल भालु कपि व्राता ॥ ३॥
बैदहिं कपि पहुँचौलनि तहिना । अननै छला जतय सौं जहिना ॥ ४॥
समाचार ई दसमुख सुनले । अति बिषाद पुनि पुनि सिर धुनले ॥ ५॥
व्याकुल कुंभकरन लग गेले । बिबिध प्रयास जगा तहि देले ॥ ६॥
जागल दनुज पड़ल लखि केहन । बैसल काल देह धय जेहन ॥ ७॥
कुंभकरन पुछलक कहु भ्राता । मुँह सूखल तव थिक की बाता ॥ ८॥
अभिमानी सब कथा बखानल । जहि प्रकार सीता हरि आनल ॥ ९॥

तात कीस सब दनुजहिँ मारल । महा महा जोधा संहारल ॥१०॥
दुरमुख सुर रिपु मनुजअहारी । भट अतिकाय अकंपन भारी ॥११॥
अपर महोदर आदिक बीरे । पड़ल समर महि सब रनधीरे ॥१२॥

दोहा—**दसकंधर बच सुनि कहल, कुंभकरन बिलपैत ।**
जगदंबा हरि आनि पुनि, छह कल्यान चहैत ॥६१॥

निसिचरपति नहि तोँ भल कैलह । आब कियक मोहि जगवय ऐलह ॥१॥
येखनहुँ तात त्यागि अभिमाने । रामहिँ भजह हेतहु कल्याने ॥२॥
रघुनायक की नर दससीसे । दूत जनिक हनुमान सरीसे ॥३॥
अहह बंधु तोँ अनुचित कैलह । प्रथमहिँ मोहि नहि आबि सुनैलह ॥४॥
प्रभु कैलह बिरोध तहि देवक । सिव बिरंचि सुर जनिकर सेवक ॥५॥
नारद देल ज्ञान जे मोही । समय रहल नहि कहितहुँ तोही ॥६॥
मिलह भाइ भरि अंक लगा कय । लोचन सफल करी हम जा कय ॥७॥
स्याम गात सरसीरुह लोचन । देखी जाय तापत्रय मोचन ॥८॥

दोहा—**सुमिरति रामक रूप गुन, मगन भेल छन एक ।**
रावन देलक कोटि घट, मद ओ महिष अनेक ॥६२॥

महिष खाय कय मदिरा पाने । गरजल बज्राघात समाने ॥१॥
कुंभकरन दुरमद रन रंगे । चलल दुरुग तजि सेन न संगे ॥२॥
देखति बिभीषन आगू आ कय । पद पड़ला निज नाम सुना कय ॥३॥
से अनुजहिँ उठाय उर लेले । रघुपति भगति जानि मुद भेले ॥४॥
रावन हमरा मारल लाता । कहति बिचार परम हित ताता ॥५॥
तहि गलानि रघुपति लग एलहुँ । दीन देखति प्रभु केर प्रिय भेलहुँ ॥६॥
सुनु सुत भेला काल बस रावन । से कि मानता परम सिखावन ॥७॥
धन्य धन्य अहँ धन्य बिभीषन । तात भेलहुँ निसिचरकुल भूषन ॥८॥
बंधु बंस अहँ कैल उजागर । भजल राम सोभा सुखसागर ॥९॥

दोहा—**बचन करम मन कपट तजि, भजू राम रनधीर ।**
जाउ न निज पर सुभय मोहि, भेलहुँ काल बस बीर ॥६३॥

घुरि सुनि बंधुक बचन बिभीषन । ऐला जहँ त्रैलोकबिभूषन ॥ १॥
नाथ भूधराकार सरीरे । कुंभकरन आबथि रनधीरे ॥ २॥
येतबा जखन सुनल कपि काने । किल किलाय दौड़ल बलवाने ॥ ३॥
लेंअय उठाय बिटप ओ भूधर । फेंकय कटकटाय तहि ऊपर ॥ ४॥
उठा भालु कपि तरु ओ पर्वत । एक एक बेरि हनय कोटि कत ॥ ५॥
मुड़ल न मन तन टरल न टारल । गज जेना अकबन फल मारल ॥ ६॥
मुक्का हनलनि पवनक पूते । धरनि पड़ल सिर धुनल बहूते ॥ ७॥
पुनि उठि से मारल हनुमंते । घुर्मित खसला भूमि तुरंते ॥ ८॥
पुनि नल नीलहिँ अबनि पछारल । जहँ तहँ पटकि पटकि भट डारल ॥ ९॥
चलल बलीमुख सैन पड़ा कय । अति डर नहि सनमुख भय ताकय ॥१०॥

दोहा—मुरछित अंगद आदि केँ, कय समेत सुग्रीम ।
काँख दाबि कपिराज केँ, चलल अमित बलसीम ॥६४॥

उमा करथि रघुपति नर रंगे । जेना गरुड़ खेलय अहि संगे ॥ १॥
कालहिँ खाय जनिक भ्रू भंगे । ताहि कि सोभ येहन रनरंगे ॥ २॥
जग पावन कीरति बिस्तरता । गाबि गाबि भव निधि नर तरता ॥ ३॥
मुरछा गेल पवनसुत जगला । तखन सुकंठहिँ ताकय लगला ॥ ४॥
सुग्रीबहुँ केर मुरछा गेले । ससरि गेला से मृत बुझि लेले ॥ ५॥
काटि दसन सौँ नाक ओ काने । गेल नभ गरजि तखन भेल भाने ॥ ६॥
गहि पद महि कपिपतिहिँ पछारल । झट पुनि उठि से तकरा मारल ॥ ७॥
ऐला प्रभु लग कपि बलवाने । कहति जयति जय कृपानिधाने ॥ ८॥
नाक काट कटलक जिय जानी । क्रुद्ध धुरल मन करति गलानी ॥ ९॥
सहज भीम पुनि बिनु स्रुति नासा । देखइत कपिदल उपजल त्रासा ॥१०॥

दोहा—जय जय जय रघुवंसमनि, दौड़ करति हुरदंग ।
तहि पर गिरि तरु पुंज लय, फेकल कपि येक संग ॥६५॥

कुंभकरन रन रँगल बिरुद्धे । सनमुख चलल काल जनि क्रुद्धे ॥१॥
कोटि कोटि कपि धय धय खाइछ । जनि टिड्डी गिरि गुहा समाइछ ॥२॥

कोटि कोटि गहि मरदल तन मे । महि मलि कोटि कयल रज छन मे ॥३॥
नाक कान ओ मूँहक बाटे । निकसि पड़ाय भालु कपि ठाटे ॥४॥
रन मदमत्त निसाचर दरपल । विस्व ग्रसत जनि विधि येहि अरपल ॥५॥
मुड़ल सुभट सब फिरल न फेरल । सुझय न नयन सुनय नहि टेरल ॥६॥
कुंभकरन कपि सैन भगाओल । सुनि रजनीचर सेना धाओल ॥७॥
देखलनि राम कटक अकुलायल । रिपु अनीक नाना बिधि आयल ॥८॥

दोहा—सुनु सुग्रीव बिभीषन, अनुज सम्हारू सैन ।
हम देखब खल बल दलहिँ, बजला राजिबनैन ॥६६॥

कर सारंग साजि कटि भाथा । दलय सत्रु चलला रघुनाथा ॥१॥
प्रथम कयल प्रभु धनु टंकोरे । रिपु दल बहिर भेल सुनि सोरे ॥२॥
सत्यसंध छोड़लनि सर लच्छे । काल सर्प जनि चलल सपच्छे ॥३॥
जहँ तहँ चलल बिपुल नाराचे । लगल कटय भट बिकट पिसाचे ॥४॥
कटय चरन उर सिर भुजदंडे । बहुत बीर होइछ सय खंडे ॥५॥
घुरुमि घुरुमि घायल महि पड़इछ । उठि उठि सम्हरि सुभट पुनि लड़इछ ॥६॥
लगितहिँ सर गरजय घनघोरे । भागय कत लखि बान कठोरे ॥७॥
रुंड प्रचंड मुंड बिनु धावय । धरु धरु मारु मारु धुनि गाबय ॥८॥

दोहा—छन मे प्रभु कर सायक, काटल बिकट पिसाच ।
पुनि रघुबीर निषंग मे, पैसल सब नाराच ॥६७॥

कुंभकरन मन देखल विचारी । छन मे मुइल निसाचर धारी ॥१॥
भेल क्रुद्ध अति बहुबल बीरे । कयलक सिंहनाद गंभीरे ॥२॥
कोपि महीधर लैछ उपारी । खसबय जहँ मर्कट भट भारी ॥३॥
अबइत देखि सैल प्रभु भारी । रज सम ताहि कयल सर मारी ॥४॥
पुनि धनु तानि कोपि रघुनायक । छोड़ल अति कराल बहु सायक ॥५॥
तन मे पैसि निकसि सर जाइछ । घन मे दामिनि जेना समाइछ ॥६॥
कारी तन वह लिधुरक धारा । जनि कज्जल गिरि गेरु पनारा ॥७॥
बिकल बिलोकि भालु कपि धायल । बिहुँसल लखन निकट कपि आयल ॥८॥

दोहा—गरजल करइत घोर रव, कोटि कोटि गहि कीस।
महि पटकय गजराज इव, दय दोहाइ दससीस ॥६८॥

भागल भालु बलीमुख जूथे। जेना देखि वृक मेष बरूथे ॥ १॥
चलल पड़ा कपि भालु भवानी। बिकल पुकारति आरत बानी ॥ २॥
ई निसिचर दुकाल सम जूमी। व्यापय चाहय कपिकुल भूमी ॥ ३॥
कृपा बारिधर राम खरारी। पाहि पाहि प्रनतारतिहारी ॥ ४॥
सकरुन बचन सुनति भगवाने। चलला साजि सरासन बाने ॥ ५॥
अपन सैन पाछू कय रामे। चलला कुपित महा बलधामे ॥ ६॥
खीचि धनुष साधल सय तीरे। छुटल बिसिख ढुकि गेल सरीरे ॥ ७॥
लगइत सर रिस कय झट दौड़ल। डगमगैल गिरि धरनी डोलल ॥ ८॥
लेल एक से सैल उपाटी। रघुकुलतिलक से भुज देल काटी ॥ ९॥
बाम बाहु सौँ गिरि लय धाओल। प्रभु सेहो भुज काटि खसाओल ॥१०॥
भुज बिहीन खल सोभय केहन। पच्छहीन मंदर गिरि जेहन ॥११॥
उग्र बिलोकन प्रभु दिसि देखल। त्रिभुवन ग्रसय चाह जनि से खल ॥१२॥

दोहा—बहुत घोर चिकार कय, दौड़ल अति मुँह बाय।
त्रसित सिद्ध सुर देल नभ, हाहाकार मचाय ॥६९॥

सभय सुरहिँ करुनानिधि जानल। श्रवन प्रजंत सरासन तानल ॥१॥
बिसिख निकर दनुजक मुख कसले। तदपि महाबल भूमि न खसले ॥२॥
बान भरल मुख सनमुख धायल। काल त्रोन सजीब जनि आयल ॥३॥
पुनि प्रभु कोपि तीव्र सर लेलनि। धड़ सौँ भिन्न तकर सिर केलनि ॥४॥
दसमुख आगु मुंड खसि पड़ले। बिकल भेल फनि जनु मनि हरले ॥५॥
धरनि धसय धड़ धाव प्रचंडे। झट प्रभु काटि कयल दुइ खंडे ॥६॥
गिरि सम खसल गगन सौँ आबी। भूपर रिछ कपि निसिचर दाबी ॥ ७॥
तकर तेज प्रभु बदन समायल। देखितहिँ सुर मुनि सब चकुआयल ॥ ८॥
सुर दुंदुभी बजाबथि हरषथि। असतुति करथि सुमन बहु बरषथि ॥ ९॥
कय बिनती सुर सकल सिधारल। तैखन नारद तहाँ पधारल ॥१०॥

गगनोपरि हरिगुनगन गाओल । रुचिर बीर रस प्रभु मनभाओल ॥११॥
खलहिँ हतिय द्रुत कहि मुनि गेला । राम समर महि सोभइत भेला ॥१२॥

छंद—संग्राम भूमि बिराज रघुपति अतुल बल कोसलधनी ।
श्रमबिंदु मुख राजीवलोचन, अरुन तन सोनित कनी ॥
भुज जुगल फेरति सर धनुष कपि भालुगन लस दिसि चहू ।
कह दास तुलसी कहि न सक छबि शेष जनिका मुख बहू ॥

दोहा—निसिचर अधम मलायतन, तकरहु देलनि स्वधाम ।
गिरिजा से नर मंदमति, जे न भजय श्रीराम ॥७०॥

घुरल दुहू दल दिन अवसाने । सुभटहिँ रन श्रम भेल महाने ॥ १॥
रामक कृपेँ बढ़ल कपि दलबल । तृन लहि जैना आगि अति धधकल ॥ २॥
छीजय निसिचर दल दिन राती । निज मुख कहल सुकृत जहि भाँती ॥ ३॥
पारि भोकारि दसानन कानय । बंधु सीस पुनि पुनि उर आनय ॥ ४॥
कानय नारि हृदय हति पानी । तकर तेज बल बिपुल बखानी ॥ ५॥
मेघनाद तेँहि अवसर आयल । कहि बहु कथा पितुहिँ समुझायल ॥ ६॥
काल्हि देखब मम पौरुष ताता । करु की बहुत बड़ाइक बाता ॥ ७॥
इष्टदेव सौँ बल रथ पौलहुँ । से अहँकेँ नहि तात देखौलहुँ ॥ ८॥
येहि बिधि बकइत भेल बिहाना । चारू द्वार धयल कपि नाना ॥ ६॥
येम्हर भालु कपि जम सम बीरे । ओम्हर दनुज दल अति रनधीरे ॥१०॥
लड़य सुभट निज निज जय हेतू । कहल न जाय समर खगकेतू ॥११॥

दोहा—मेघनाद मायामय, रथ चढ़ि गेल अकास ।
गरजि उठल अटहास कय, कपि कटकहिँ भेल त्रास ॥७१॥

सक्ति सूल तरुआरि कृपाना । अस्त्र सस्त्र कुलिसायुध नाना ॥ १॥
फेकय परसु परिघ पाखाने । लागल बृष्टि करय बहु बाने ॥ २॥
दस दिस रहल बान नभ छायल । मघा मेघ जनि झड़ी लगायल ॥ ३॥
धरु धरु मारु पड़य सुनि बानी । के मारय क्यो सकय न जानी ॥ ४॥

गहि गिरि तरु नभ मे कपि धावय । नहि लखि ताहि दुखित घुरि आवय ॥ ५॥
औघट घाट बाट गिरि कंदर । माया बल कयलक सरपंजर ॥ ६॥
ब्याकुल भेल जाय कहँ बंदर । सुरपति जहल पड़ल जनि मंदर ॥ ७॥
मारुतसुत अंगद नल नीले । कयलक बिकल सकल बल सीले ॥ ८॥
पुनि लछुमन सुग्रीव बिभीषन । बान मारि कयलक जर जर तन ॥ ९॥
पुनि लड़ाइ रघुपति सौँ ठानल । डँसय साप बनि बनि सर हानल ॥१०॥
ब्याल पास बस भेला खरारी । स्वबस अनंत एक अबिकारी ॥११॥
नट इव कपट चरित कर नाना । सदा स्वतंत्र एक भगवाना ॥१२॥
रन सोभा हित निजहिँ बन्हौलनि । नागपास सौँ सुर भय पौलनि ॥१३॥

दोहा—गिरिजा जनिकर नाम जपि, मुनि काटथि भव पास ।
से की बंधन तर पड़थि, ब्यापक बिस्वनिवास ॥७२॥

रामक सगुन चरित्र भवानी । हो नहि तरकि बुद्धि बल बानी ॥१॥
येहन जानि जे तज्ञ बिरागी । रामहिँ भजथि तरक सब त्यागी ॥२॥
ब्याकुल कटक कयल घननादे । प्रगटल पुनि कहइत दुर्बादे ॥३॥
जामवंत कहलनि ठहरह खल । सुनइत ताहि क्रोध अति धधकल ॥४॥
बूढ़ जानि सठ छोड़ल तोही । लगले अधम दबाड़य मोही ॥५॥
ई कहि तरल त्रिसूल चलाओल । जामबंत से कर गहि धाओल ॥६॥
हनल टिका घननादक छाती । पड़ल भूमि घुर्मित सुरघाती ॥७॥
पुनि रिसाय गहि चरन घुमौलनि । महि पछाड़ि बल अपन देखौलनि ॥ ८॥
मर न मारनहुँ बरक प्रसादे । पुनि लंका फेकल गहि पादे ॥ ९॥
एम्हर नारद गरुड़ पठाओल । राम निकट से झट चलि आओल ॥१०॥

दोहा—खगपति धय खयलनि सकल, माया नाग बरूथ ।
सब भेला माया बिगत, हरषल बानर जूथ ॥
गहि गिरि पादप उपल नख, दौड़ल कीस रिसाय ।
चलल तमीचर बिकल तर, गढ़ पर गेल पड़ाय ॥७३॥

मेघनाद मुरुछा सौँ जागल । पितहिँ बिलोकि लाज अति लागल ॥ १॥
गिरिबर कंदर झट चलि गेले । करब अजय मख ई ब्रत लेले ॥ २॥
येतय बिभीषन कयल बिचारे । सुनू नाथ बल अतुल उदारे ॥ ३॥
मेघनाद मख करय अपावन । खल मायावी देव सतावन ॥ ४॥
जौँ ई यज्ञ सिद्ध भय जायत । तौँ प्रभु सहज न जीतल जायत ॥ ५॥
सुनि रघुपति अतिसय सुख पौलनि । अंगदादि बहु कपिहिँ बजौलनि ॥ ६॥
भाय जाउ सब लछुमन संगे । जा कय झट करु यज्ञक भंगे ॥ ७॥
लछुमन मारू गय रन ओही । देखि सभय सुर दुख अति मोही ॥ ८॥
बल बुधि कौसल मारब तेना । बंधु नास हो निसिचर जेना ॥ ९॥
जामवंत सुग्रीव बिभीषन । सैन समेत रहब तिनू जन ॥१०॥
पुनि रघुबीर देल अनुसासन । कटि निषंग कसि साजि सरासन ॥११॥
प्रभु प्रताप उर धय रनधीरे । बजला घन सन गिरा गँभीरे ॥१२॥
आइ तोहि बिनु बधने आबी । तौँ रघुपति सेवक न कहाबी ॥१३॥
जौँ सय संकर करथि सहाये । तदपि हतब रघुवीर दोहाये ॥१४॥

दोहा—**रघुपति चरन नमाय सिर, चलला तुरत अनंत ।**
अंगद नील मयंद नल, संग सुभट हनुमंत ॥७४॥

जाय लखल कपि तकरा बैसल । सोनित भैँसा आहुति दै छल ॥ १॥
कयल कीस सब यज्ञ बिधंसे । जखन उठय नहि करथि प्रसंसे ॥ २॥
उठय न तदपि धयल कच जा कय । लाते हति हति चलल पड़ा कय ॥ ३॥
छुटल सूल लय कीस पड़ायल । दौड़ल राम अनुज लग आयल ॥ ४॥
आयल अतिसय क्रोधक मारे । गरजल पुनि पुनि कय चित्कारे ॥ ५॥
कोपि मरुतसुत अंगद धाओल । हति त्रिसूल उर धरनि खसाओल ॥ ६॥
प्रभु पर छोड़ल सूल प्रचंडे ; सरहति कृत अनंत जुग खंडे ॥ ७॥
पुनि उठि हनु अंगद दुहु गोटे । हनथि कोपि तहि लाग न चोटे ॥ ८॥
मर न मारनहुँ फिरि गेल बीरे । तखन खेहारल चिकरि गभीरे ॥ ९॥
अबइत देखि क्रुद्ध जनि काले । लछुमन छोड़ल त्रिसिख कराले ॥१०॥
देखल अबइत पवि सम बाने । तुरत भेल खल अंतरधाने ॥११॥

बिबिध बेष धय कर संग्रामे । खनहिँ बिलाय खनहिँ रह ठामे ।।१२।।
देखि अजय रिपु डरि गेल कीसे । परम क्रुद्ध भय गेला अहीसे ।।१३।।
लछुमन ई अवधारल मन मे । बड़ खेलौल पापी केँ रन मे ।।१४।।
सुमिरि कोसलाधीस प्रतापे । सर संधान कयल कय दापे ।।१५।।
छोरल बान माँझ उर लागल । मरइत वेरि कपट सब त्यागल ।।१६।।

दोहा—रामानुज कहँ राम कहँ, तजल येहन कहि प्रान ।
धन्य धन्य जननी तोहर, कह अंगद हनुमान ।।७५।।

उठा बिनहिँ स्रम पवनकुमारे । धय ऐला तेहि लंका द्वारे ।।१।।
तकर मरब सुनि सुर गंधर्बे । चढ़ि बिमान ऐला नभ सर्बे ।।२।।
बरषि सुमन दुंदुभी बजाबथि । श्रीरघुनाथ बिमल जस गाबथि ।।३।।
जय अनंत जय जगदाधारे । सकल सुरक प्रभु कयल उबारे ।।४।।
असतुति कय सुर सिध चलि गेला । लछुमन कृपासिंधु लग एला ।।५।।
सुत बध सुनल दसानन जखने । मुरुछित भेल खसल महि तखने ।।६।।
मंदोदरि रोदन कर भारी । उर ताड़य बहु भाँति पुकारी ।।७।।
सोचय सब व्याकुल भरि नगरे । नीच दसानन सब कह सगरे ।।८।।

दोहा—तखन दसानन बिबिध बिधि, परबोधल सब नारि ।
थिक नस्वर ई जग सगर, देखह हृदय बिचारि ।।७६।।

ताहि ज्ञान उपदेसल रावन । अपने मंद कथा सुभ पावन ।।१।।
पर उपदेसे कुसल अनेके । जे आचरथि से नर दुइ एके ।।२।।
बीतल रजनी भेल पराते । धयल द्वार रिछ कपि चहु काते ।।३।।
सुभट बजा बाजल दसमूखे । डोल जकर मन रन सनमूखे ।।४।।
से भागओ येखनहिँ मम सैने । भल नहि रनथल छोड़ि पड़ैने ।।५।।
निज भुज बल हम बैर बढ़ाओल । उतर देब जौँ रिपु चढ़ि आओल ।।६।।
ई कहि मरुत बेग रथ साजल । सकल लड़ाइक बाजन बाजल ।।७।।
चलल वीर अतुलित बलधारी । जनि काजर केर चलय बिहारी ।।८।।
असगुन अमित होअय तहि काले । गनय न भुजबल गरब बिसाले ।।९।।

छंद—अति गरब गनय न सगुन असगुन खसय आयुध हाथ सौँ ।
भट खसय रथ सौँ बाजि गज चिक्करय बाजय साथ सौँ ॥
खर गीध गीदर काक रब कर स्वान भूकय अति घने ।
जनि काल दूत उलूक बाजय बचन परम भयावने ॥

दोहा—ताहि कि संपति सगुन सुभ, सपनहुँ मन बिश्राम ।
भूत द्रोह रत मोह बस, राम बिमुख रत काम ॥७७॥

चलल निसाचर कटक अपारे । चतुरंगिनी अनी बहु धारे ॥ १॥
बिबिध भाँति बाहन रथ जाना । बिपुल बरन पताक ध्वज नाना ॥ २॥
चलल मत्त गज जूथ बहूते । जनि पाबस घन प्रेरल मरूते ॥ ३॥
बरन बरन बिरदैत निकाया । समर सूर जानय बहु माया ॥ ४॥
अति बिचित्र बाहिनि लस केना । बीर बसंत सजल जनि सेना ॥ ५॥
चलति कटक दिग सिंधुर कंपित । डगमगाय गिरि सागर झंपित ॥ ६॥
उड़ल रेनु रवि बिंब झँपायल । मरुत थकित बसुधा अकुलायल ॥ ७॥
पवन निसान घोर रब तरजय । प्रलय काल कें घन जनि गरजय ॥ ८॥
बाजय भेरि तुरहि सहनाई । मारू राग सुभट सुखदाई ॥ ९॥
केहरि नाद बीर चिक्कारय । निज निज बल पौरुष उच्चारय ॥१०॥
कहल दसानन सुनह सुभट्टे । मरदह भालु कीस कें ठट्टे ॥११॥
मारब दुहू कुमरहिँ निज बूते । कहि रेँगौल बाहिनी बहूते ॥१२॥
ई सुधि जखन कीस सब पाओल । रघुबीरक दोहाइ दय धाओल ॥१३॥

छंद—धाओल बिसाल कराल मरकट भालु काल समान जे ।
मानू सपच्छ उड़ैत भूधर बृंद नाना बान से ॥
नख दसन सैल महाद्रुमायुध सबल संक न मान ते ।
जय राम रावन मत्त गज मृगराज सुजस बखान ते ॥

दोहा—दुहु दिसि जय जय कार कय, निज निज जोड़ी जानि ।
यम्हर राम हित ओम्हर भट, भिड़ रावनहिँ बखानि ॥७८॥

रावन रथी बिरथ रघुवीरे । देखि बिभीपन भेला अधीरे ।। १।।
अधिक प्रीति मन भेल संदेहे । कहल बंदि पद सहित सिनेहे ।। २।।
नाथ न रथ नहि तनु पदत्राने । कोन बिधि जितव बीर बलवाने ।। ३।।
सुनू सखा कह कृपानिधाने । जहि सौँ जय हो रथ से आने ।। ४।।
सौरज धीरज तहि रथ चाका । सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका ।। ५।।
हय परहित बिबेक दम ओ बल । छमा कृपा समता रजु जोतल ।। ६।।
ईस भजन सारथी सुजाने । बिरति ढाल संतोष कृपाने ।। ७।।
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडे । बर बिज्ञान कठिन कोदंडे ।। ८।।
अमल अचल मन त्रोन समाना । सम जम नियम सिलीमुख नाना ।। ९।।
द्विज गुरु पूजन कवच अभेदे । बिजय उपाय आन नहि वेदे ।।१०।।
सखा धरममय ई पथ जकरा । जितक हेतु रिपु कतहुँ न तकरा ।।११।।

दोहा—महा अजय संसार रिपु, जीति सकय से बीर ।
हो जकरा रथ येहन दृढ़, सुनू सखा मतिधीर ।।
सुनति बिभीषन प्रभु बचन, हरषि गहल पदकंज ।
उपदेसल येहि लाथ मोहि, राम कृपा सुख पुंज ।।
अंगद हनुमत येतय सौँ, आत रावन ललकार ।
लड़य दनुज कपि भालु कय, निज निज प्रभु जयकार ।।७९।।

सुर ब्रह्मादि सिद्ध मुनि नाना । देखथि रन नभ चढ़ल बिमाना ।।१।।
हमहूँ रही उमा तनि संगे । देखइत राम चरित रनरंगे ।।२।।
दुहु दिसि सुभट समर रस मातल । कपि जयसील राम बल तातल ।।३।।
एक एक सौँ भिड़ि ललकारय । एकहिँ एक मरदि महि पारय ।।४।।
मारय काटय धरय पछारय । तोड़ि मूड़ भूड़हिँ सौँ मारय ।।५।।
उदर बिदारय भुजा उपाड़य । गहि पद अबनि पटकि भट छाड़य ।।६।।
दनुज भटहिँ महि गाड़य भालू । ऊपर तोपि दैछ बहु बालू ।।७।।
बीर बलीमुख जुद्ध बिरुद्धे । लखि पड़ बिपुल काल जनि क्रुद्धे ।।८।।

छंद—क्रोधल कृतांत समान कपि तन स्रव लिधुर सोभय भने ।
मरदथि दनुज कें कपि सुभट बलमंत जनि गरजथि घने ॥
मारथि चपेटा डाँटि काटथि दाँत लातहिँ मर्दथी ।
चिक्करथि मर्कट भालु छल बल करथि खल दल अर्दथी ॥
धय गाल फाड़ बिदार उर अँतड़ीक माला गर धरैं ।
प्रहलादपति तनु धय बिबिध रन भूमि मे कौतुक करैं ॥
धर मार काट पछार घोर निनाद सौँ भर नभ तले ।
जय राम जे तृन सौँ कुलिस पुनि कुलिस सौँ तृन कर भले ॥

दोहा—निज दल बिचलित देखि धय, बीस भुजेँ दस चाप ।
चलल दसानन जान चढ़ि, घुर घुर कहि कय दाप ॥८०॥

दौड़ल परम क्रुद्ध दसकंधर । सनमुख चलल हुहू कय बंदर ॥१॥
गहि कर तरु गिरि उपलक ढेरी । तहि पर फेकय एके बेरी ॥२॥
तकर बज्र तन मे गिरि फूटय । खंड खंड भय पट पट टूटय ॥३॥
चलल न रहल अचल रथ रोपी । रन दुरमद रावन अति कोपी ॥४॥
जहँ तहँ झपटि दपटि कपि जोधे । मरदय लागल कय अति क्रोधे ॥५॥
चलल पड़ाय भालु कपि नाना । त्राहि त्राहि अंगद हनुमाना ॥६॥
पाहि पाहि रघुवीर महाने । ई खल खाइछ काल समाने ॥७॥
भागल बानर सब से जानल । दसो चाप सायक संधानल ॥८॥

छंद—संधानि धनुसर निकर छोड़ल अहि जेना उर लाग यो ।
रह पूरि सर महि नभ बिदिसि दिसि आब कहँ कपि भाग यो ॥
अति भेल कोलाहल भालु कपि दल बिकल बाजय आतुरे ।
रघुवीर करुनासिंधु आरतबंधु जनरच्छक हरे ॥

दोहा—निज दल ब्याकुल देखि कटि, कसि निषंग धनु हाथ ।
लछुमन चलला क्रुद्ध भय, नमा राम पद माथ ॥८१॥

रे खल की मारहि रिछ कीसे । काल तोहर हम लख मम दीसे ॥१॥
तकति रही तोरा सुतघाती । आइ जुड़ैब मारि तोहि छाती ॥२॥
छोड़ल सर कहि येहन प्रचंडे । लछुमन कयल सकल-सय खंडे ॥३॥
कोटिक आयुध रावन डारल । तिल तिल कय तहि काटि निबारल ॥४॥
पुनि लछुमन निज बान प्रहारल । रथ केँ तोड़ि सारथिहिँ मारल ॥५॥
सय सय सर मारल दस भाले । गिरिक शृंग जनि प्रबिसय ब्याले ॥६॥
पुनि उर मे मारल सय बाने । पड़ल धरनि तल मृतक समाने ॥७॥
उठल प्रबल पुनि मुरुछा त्यागी । छोड़ल ब्रह्म देलनि जे सांगी ॥८॥

छंद—से ब्रह्म दत्त प्रचंड सक्ति अनंत उर लागल जहाँ ।
खसला बिकल उठबैछ दसमुख अतुल बल महिमा महा ॥
ब्रह्मांड भुवन बिराज जनि सिर एक जेना रजकनी ।
तनि चाह उठबय मूढ़ रावन जान नहि त्रिभुवन धनी ॥

दोहा—दौड़लाह लखि पवनसुत, बजइत बचन कठोर ।
अबितहिँ कपि पर कयल से, मुष्टि प्रहार प्रघोर ॥८२॥

ठेहुन टेकि कपि भूमि न पड़ला । उठला सम्हरि बहुत रिस भरला ॥१॥
मुका येक तकरा कपि मारल । खसल सैल जनि बज्र प्रहारल ॥२॥
मुरुछा गेल बहुरि से जागल । कपि बल बिपुल सराहय लागल ॥३॥
धिक धिक मम पौरुख धिक मोही । उठलेँ तो जिबितहिँ सुरद्रोही ॥४॥
ई कहि लछुमन केँ कपि आनल । देखि दसानन बिसमय ठानल ॥५॥
कह रघुबीर बुझू जिय भ्राता । अहँ कृतांत भक्षक सुरत्राता ॥६॥
सुनति बचन उठलाह कृपाले । गेल गगन से सकति कराले ॥७॥
गहि कोदंड बान पुनि धाओल । अति आतुर रिपु आगाँ आओल ॥८॥

छंद—आतुर लखन रथ तोड़ि ब्याकुल कय देलनि सूतहिँ हती ।
सय सरेँ बेधलनि दसमुखक हिय खसल महि ब्याकुल अती ॥
सारथी दोसर रथ चढ़ा लय गेल तहि लंका पुरी ।
रघुबीर बंधु प्रताप पुंज पुनः प्रभुहिँ प्रनमल धुरी ॥

दोहा—ओतय दसानन जागि कय, गेल करय किछु जज्ञ ।
राम बिमुख चाहय बिजय, सठ हठ बस अति अज्ञ ॥८३॥

येतय बिभीषन सब सुधि पौलनि । सपदि जाय रघुपतिहिँ सुनौलनि ॥१॥
नाथ करय रावन येक जागे । सिद्ध भेने न मरत हतभागे ॥२॥
नाथ पठाउ बेगि भट बंदर । ध्वस्त करय आबय दसकंधर ॥३॥
प्रातहिँ प्रभु पठौल भट भारी । हनुमत अंगदादि बलधारी ॥४॥
कौतुक कूदि चढ़ल कपि लंका । पैसल रावन भबन असंका ॥५॥
जाग करति रावन केँ देखी । कपिगन केँ भेल क्रोध बिसेखी ॥६॥
ऐलह घर रन पीठ देखौलह । येतय आबि बकध्यान लगौलह ॥७॥
ई कहि अंगद लातेँ हूबल । चितय न सठ मन स्वारथ डूबल ॥८॥

छंद—चितलक जखन नहि दाँत धय कपि लात हत क्रोधित अती ।
धय केस नारिहिँ कयल बाहर कानि कह कहँ छी पती ॥
उठि कुपित तखन कृतांत सम गहि पद कपिहिँ महि डारले ।
येहि बीच बानर मख बिधंसल देखि तनि मन हारले ॥

दोहा—जज्ञ ध्वंस कय कुसल कपि, आयल रघुपति पास ।
चलल निसाचर क्रुद्ध भय, त्यागि जीबनक आस ॥८४॥

चलति भयंकर असगुन पाबय । उड़ि उड़ि गीध माथ पर धाबय ॥ १॥
किछु न गनल पड़ि कालक फेरी । हुकुम देलक बजबह रन भेरी ॥ २॥
चलल तमीचर अनी अपारे । बहु गजरथ पदाति असबारे ॥ ३॥
प्रभु सनमुख दौड़ल खल केना । सलभ समूह अनल दिसि जेना ॥ ४॥
येतय कयल असतुति सब अमरा । दारुन दुख ई देलक हमरा ॥ ५॥
राम खेलाउ आब नहि एही । अतिसय दुखित होथि बैदेही ॥ ६॥
सुनि सुर बच हँसला भगवाने । उठि रघुबीर सम्हारल बाने ॥ ७॥
जटाजूट सिर कसल अतूले । सोभय बिच बिच गाँथल फूले ॥ ८॥
अरुन नयन बारिद तन स्यामे । अखिल लोक लोचन अभिरामे ॥ ९॥
कटि तट परिकर कसल निषंगे । कर कोदंड कठिन सारंगे ॥१०॥

छंद—सारंग कर सुंदर निषंग सिलीमुखाकर कटि बसै।
भुज दंड पीन मनोहरायत उर धरा सुर पद लसै॥
कह दास तुलसी जखन लगला फेरय सर धनु प्रभु भने।
ब्रह्मांड दिग्गज कमठ अहि महि सिंधु गिरि डोलल छने॥

दोहा—सोभा लखि कय हरषि सुर, बरषथि सुमन अपार।
जय जय जय करुनानिधि, छबि बल गुन आगार॥८५॥

तखनहि असुर सैन जुमि गेले। करइत कसमस ठेलम ठेले॥१॥
देखि चलल सनमुख कपि भट्टे। जेना प्रलय कालक घन घट्टे॥२॥
बहु कृपान तरुआरि चमकय। जनि दस दिसि दामिनी दमकय॥३॥
चिकरय गज रथ तुरग कठोरे। गरजय मानु बलाहक घोरे॥४॥
नभ पसरल नाँगड़ि बहु रूपे। इन्द्रधनुष जनि उगल अनूपे॥५॥
उड़य धूरि मानू जल धारे। बान बुंद भेल वृष्टि अपारे॥६॥
दुहु दिसि पर्बत करय प्रहारे। बज्रपात जनि बारंबारे॥७॥
रघुपति कुपि सर झड़ी लगेलनि। निसिचर दल के घायल केलनि॥८॥
लगइत बान बीर चिकरइछ। घुरुमि घुरुमि जहँ तहँ महि पड़इछ॥९॥
स्रवय सैल जनि झरना भारी। सोनित सरि कादर भयकारी॥१०॥

छंद—कादर भयंकर रुधिर सरि बह अति अपावन द्रुत गती।
दुहु कूल दल रथ रेत पहिया भँमर भयदायक अती॥
जलजंतु गज पदचर तुरग खर बिबिध बाहन के गने।
सर सक्ति तोमर सर्प चाप तरंग चर्म कमठ घने॥

दोहा—बीर खसय जनि तीर तरु, मज्जा बहु बह फेन।
कादर डरइछ देखि तहँ, सुभट सभक मन चेन॥८६॥

चुभकय भूत पिसाच बेताले। प्रमथ महा झोटिंग कराले॥१॥
उड़य भुजा लय काक चिल्होरी। खाय लूझि येक अपर बहोरी॥२॥

बैंक कह सठ येत सस्ती भेलहु । तैयो तव दारिद नहि गेलहु ॥ ३॥
जहँ तहँ कुहरय घायल सेना । तट मे कयल अर्धजल जेना ॥ ४॥
खैंचय गीध आँत तट जा कय । जनि बनसी खेल चित्त लगा कय ॥ ५॥
बहइत भट चढ़ि खग चल केना । झिझरी खेलय सर मे जेना ॥ ६॥
जोगिनि भरि भरि खप्पर सँचय । भूत पिसाच बधू नभ नँचय ॥ ७॥
भट कपाल करताल बजाबय । चामुंडा नाना बिधि गाबय ॥ ८॥
कट कटाय गीदर दल काटय । खाय होआय अघैलहुँ डाँटय ॥ ९॥
कोटिक रुंड मुंड बिनु डोलय । सीस पड़ल महि जय जय बोलय ॥१०॥

छंद—बोलय जयति जय मुंड रुंड प्रचंड सिर बिनु धाब यो ।
खग अरुझि खप्पर मे लड़य रन सुभट भटहिँ खसाब यो ॥
बानर निसाचर निकर मरदय राम बल दरपित भने ।
संग्राम आँगन सुभट सूतय हतल रामक सर घने ॥

दोहा—रावन हृदय बिचारलक, भेल दनुज संहार ।
हम असगर कपि भालु बहु, माया करी अपार ॥८७॥

सुरगन प्रभु केँ पैरहिँ देखी । उपजल उर अति छोभ बिसेखी ॥१॥
सुरपति निज रथ तुरित पठाओल । हरष सहित मातलि लय आओल ॥२॥
तेज पुंज रथ दिव्य अनूपे । चढ़ला हरषित कोसल भूपे ॥३॥
चंचल तुरग मनोहर चारी । अजर अमर मन सम गतिकारी ॥४॥
रथारूढ़ रघुनाथहिँ देखी । धाओल कपि बल पाबि बिसेखी ॥५॥
जखन कपिक सहि भेल न मारी । रावन माया देल पसारी ॥६॥
से माया रघुबीरहिँ छाड़ल । लछुमन कपिगन सत अबधारल ॥७॥
देखल असुर दल मे सब कीसे । सानुज बहुत कोसलाधीसे ॥८॥

छंद—बहु राम लछुमन देखि मर्कट भालु मन अपडर महा ।
जनि चित्र हो लछुमन सहित सब ठाढ़ अकचक जे जहाँ ॥
निज सैन चकित बिलोकि हँसि सरचाप सजि कोसलधनी ।
माया हरल हरि निमिष मे हरषल सकल मर्कट अनी ॥

दोहा--चितति सभक दिसि राम पुनि, वजला वचन गँभीर ।
द्वंद्व जुद्ध देखू सकल, थाकि गेलहुँ अति वीर ॥८८॥

ई कहि रथ रघुनाथ चलौलनि । द्विज पद पंकज माथ नमौलनि ॥ १॥
लखि लंकेस क्रोध उर धायल । गरजति तरजति सनमुख आयल ॥ २॥
जितलह जे भट रन मे छनह । तहि सम तापस मोहि न गूनह ॥ ३॥
रावन नाम जान संसारे । लोकप जकरा कारागारे ॥ ४॥
तोँ हतलह खर दुषन बिराधे । दीन वालि बधलह जनि व्याधे ॥ ५॥
निसिचर निकर सुभट बहु हतलह । कुंभकरन घननादहु बधलह ॥ ६॥
नृप सब बैर चुकैबौ आई । जौँ न पड़ैबह छोड़ि लड़ाई ॥ ७॥
आइ करब खल काल हवाला । पड़लह कठिन रावनक पाला ॥ ८॥
सुनि दुर्बचन काल बस जानी । कहल कृपानिधि हँसि कय बानी ॥ ९॥
तव प्रभुत्व सब साँच यथारथ । जलपू जुनि देखाउ पुरुषारथ ॥१०॥

छंद--जुनि बात कय नासिय सुजस थम्हि सुनू नीति जे हम कही ।
नर तीन बिधि पाटल पनस आमक सरिस हो भरि मही ॥
येक सुमन प्रद येक फलद पुनि येक सुमन फल दायक दुनू ।
येक कहय एक न कह करय टा एक कहि करइछ सुनू ॥

दोहा—बिहुँसल रामक बचन सुनि, हमरा सिखबहिँ ज्ञान ।
बैर करति डर नहिँ भेलौ, आब लगौ प्रिय प्रान ॥८९॥

कहि दुर्बचन क्रुद्ध दसकंधर । कुलिसक सम लागल छोड़य सर ॥१॥
नानाकार सिलीमुख धायल । दिसि ओ बिदिसि गगन महि छायल ॥२॥
पावक सर छोड़लनि रघुवीरे । छन मे जरल निसाचर तीरे ॥३॥
कय रिस तीव्र सक्ति से प्रेरल । तकरा वान मारि प्रभु फेरल ॥४॥
कोटिक चक्र त्रिसूल प्रहारल । बिनु प्रयास प्रभु काटि निबारल ॥५॥
विफल होअय रावन सर केना । खल केर सकल मनोरथ जेना ॥६॥
सय सर तखन सारथिहिँ मारल । पड़ल भूमि जय राम पुकारल ॥७॥
राम कृपा कय सूत उठौलनि । परम कोप प्रभु तखनहिँ पौलनि ॥८॥

छंद--अति क्रुद्ध युद्ध बिरुद्ध रघुपति त्रोन सर कसमस करै।
कोदंड धुनि अति चंड सुनि मारुत ग्रसित निसिचर डरै॥
मंदोदरी उर कंप कंपति कमठ भू भूधर त्रसै।
चिक्करय दिग्गज दसन गहि महि देखि कौतुक सुर हँसै॥

दोहा—तानल चापहिँ श्रवन धरि, छोड़ल बिसिख कराल।
राम बान गन चलल जनि, लह लह करइत ब्याल ॥९०॥

चलल सपच्छ बान जनि उरगे। प्रथमहिँ हतल सारथी तुरगे॥ १॥
तोड़ल रथ पताक ध्वज कटले। गरजल अति अंतर बल घटले॥ २॥
तुरत लजा चढ़ि दोसर जाना। अस्त्र सस्त्र छोड़ल बिधि नाना॥ ३॥
जुगुति बिफल सब तेकर तेहन। परक द्रोह रत लोकक जेहन॥ ४॥
पुनि रावन दस सूल चलौलक। बाजि चारि महि मारि खसौलक॥ ५॥
तुरग उठाय कोपि रघुनायक। खीँचि सरासन छोड़ल सायक॥ ६॥
रावन सिर सरोज बनचारी। चल रघुवीर सिलीमुख धारी॥ ७॥
दस दस सर मारल दस भाले। निसरि बहल बहु लिधुर पनाले॥ ८॥
स्रबति लिधुर धायल बलबाने। प्रभु पुनि कृत धनु सर संधाने॥ ९॥
तीस तीर रघुवीर चलौलनि। भुजा सहित सिर भूमि खसौलनि॥१०॥
काटति पुनि भय गेल नवीने। राम कयल पुनि भुज सिर हीने॥११॥
प्रभु भुज सिर काटल बहु बेरी। कटितहिँ झट नूतन भेल फेरी॥१२॥
पुनि पुनि प्रभु काटथि भुज सीसे। अति कौतुकी कोसलाधीसे॥१३॥
पसरल नभ मे सिर ओ बाहू। मानू अमित केतु ओ राहू॥१४॥

दोहा—जनि राहु केतु अनेक नभ पथ स्रबति सोनित धाब यो।
रघुवीर तीर प्रचंड लागय भूमि खसय न पाब यो॥
सिर निकर येक येक बान बेधल नभ उड़ति सोभय तेना।
कय कोपि निज कर निकर सौँ रवि राहु कैँ गूथय जेना॥

दोहा—जौँ जौँ प्रभु हर तकर सिर, तौँ तौँ होअय अपार।
बढ़य जेना सेबइत बिषय, नित नित नूतन मार ॥९१॥

दसमुख निज सिर बाढ़ि निहारी। बिसरल मरन भेल रिस भारी ॥१॥
गरजल मूढ़ महा अभिमानी। दौड़ल दसो सरासन तानी ॥२॥
समर भूमि दसकंधर कोपल। बरषि बान रघुपति रथ तोपल ॥३॥
दंड एक रथ पड़ल न पेखी। जनि कुहेस मे सुरुज न देखी ॥४॥
हाहाकार जखन सुर केलनि। झट प्रभु कोपि कारमुक लेलनि ॥५॥
सर निवारि सत्रुक सिर काटल। से दिसि बिदिसि गगन महि पाटल ॥६॥
काटल सिर नभ मारग धावये। जय जय धुनि कय भय उपजावये ॥७॥
कहँ लछुमन सुग्रीव कपीसे। कहँ रघुवीर कोसलाधीसे ॥८॥

छंद—कहँ राम कहि सिर निकर दौड़ल देखि भागल कपिगने।
संधानि धनु रघुवंस मनि हँसि सरहिँ सिर बेधल भने॥
सिर मालिका कर कालिका गहि बृंद बृंदहि चल तेना।
कय रुधिर सर मज्जन समर बट जाथि पूजय सब जेना॥

दोहा—पुनि दसकंधर क्रुद्ध भय, छोड़ल सक्ति प्रचंड।
सनमुख चलल बिभीषनक, मानू कालक दंड ॥९२॥

अबइत देखि सक्ति अति घोरे। प्रनतारति भंजन प्रन मोरे ॥१॥
पाछु बिभीषन केँ झट केलनि। सनमुख राम सक्ति सहि लेलनि ॥२॥
लागल सक्ति भेल मुरछित छन। प्रभुकृत खेल बिकल अति सुरगन ॥३॥
देखि बिभीषन प्रभु श्रम पाओल। गहि कर गदा क्रुद्ध भय धाओल ॥४॥
रे कुभाग्य सठ मंद कुबोधी। तोँ सुर नर मुनि नाग बिरोधी ॥५॥
सादर सिव केँ सीस चढ़ौलह। एक एक प्रति कोटिक पौलह ॥६॥
तैँ छह दुष्ट येखन धरि बाँचल। आब काल तव सिर पर नाचल ॥७॥
राम बिमुख चाहह धन नीचे। ई कहि गदा हनल उर बीचे ॥८॥

छंद—उर माँझ घोर कठोर मुगदर चोट सौँ खसले तहाँ।
दस बदन सोनित स्रबय पुनि दौड़ल सम्हरि रिस कय महा ॥
दुहु भिड़ल अति बल मल्ल जुद्ध विरुद्ध येक एकहिँ हनै।
रघुवीर बल दरपित बिभीषन पासँगो नहि तहि गनै ॥

दोहा—उमा बिभीषन रावनक, कहियो समुख कि आब।
भिड़थि येखन से काल सम, श्रीरघुवीर प्रभाब ॥९३॥

स्रमित बिभीषन केँ लखि भारी। धाओल हनूमान गिरिधारी ॥१॥
रथ हय सारथि कयल निपाते। तकरा हिय बिच मारल लाते ॥२॥
ठाढ़ रहल अति कंपित गाता। गेला बिभीषन जहँ जनत्राता ॥३॥
रावन कपिहिँ हनल परचारी। चलला नभ कपि पुच्छ पसारी ॥४॥
गहि नाँगड़ि उड़ि गेल कपि संगे। प्रबल हनू घुरि ठानल जंगे ॥५॥
लड़थि अकास जुगल सम जोधे। एकहिँ एक हनथि कय क्रोधे ॥६॥
छल बल बहु नभ सोभय केना। कज्जल गिरि सुमेरु लड़ जेना ॥७॥
खसल न निसिचर बुधि बल बूते। प्रभु केँ सुमिरल मारुतपूते ॥८॥

छंद—कपि सुमिरि श्रीरघुवीर धीर प्रचारि मारथि रावने।
महि पड़थि पुनि उठि लड़थि सुर जय दुहुक करथि उचारने ॥
हनुमंत संकट भालु कपि लखि चलल क्रोधातुर मने।
रन मत्त रावन चंड भुज बल दलित कैल भट दल घने ॥

दोहा—परचारल रघुवीर पुनि, धाओल कीस प्रचंड।
प्रबल कपिक दल देखि से, कयल प्रगट पाखंड ॥९४॥

अंतरधान भेल छन एके। प्रगटल पुनि खल रूप अनेके ॥१॥
रघुपति कटक भालु कपि जतबा। जहँ तहँ प्रगटल रावन ततबा ॥२॥
देखल कपि सब बहु दससीसे। जत तत चलल पड़ा रिछ कीसे ॥३॥
भागय बानर धरय न धीरे। त्राहि त्राहि लछुमन रघुवीरे ॥४॥

दह दिसि धावय कोटिक रावन । गरजय घोर कठोर भयावन ॥५॥
डरल सकल सुर चलला भागी । भैया जय आसा दिय त्यागी ॥६॥
सब सुर जितल एक दसकंधर । भेल पुनि बहुत ताकु गिरि कंदर ॥७॥
विधि हर मुनि ज्ञानी थिर सेहे । जानथि प्रभु महिमा किछु जेहे ॥८॥

छंद—जानय प्रताप जे अभय रह से बुझय रिपु सत कपि उरे ।
सब चलल मरकट भालु विचलि कृपालु पाहि भयातुरे ॥
हनुमंत अंगद नील नल अति बल लड़थि रनबाँकुरे ।
रावनहिँ मरदथि कोटि कोटिक कपट भूभट आँकुरे ॥

दोहा—सुर बानर केँ बिकल लखि, हँसइत अवध अधीस ।
सारँग लय एके सरेँ, हतल सकल दससीस ॥६५॥

छन मे प्रभु से माया काटल । मानू रवि उगइत तम फाटल ॥१॥
रावन एक देखि सुर हरषथि । धूरि सुमन बहु प्रभु पर बरषथि ॥२॥
रघुपति बाँहि उठाय फिरायल । कपि येक येकहिँ टेरि घुरि आयल ॥३॥
प्रभु बल पाबि भालु कपि धायल । बेगि तमकि रन थल मे आयल ॥४॥
असतुति करइत देवहिँ देखल । भेलहुँ एक हम ई सभ लेखल ॥५॥
सठ तोँ मम कर सदा पिटायल । कोपि येहन कहि नभ दिसि धायल ॥६॥
हा हा करइत भागल सुरगन । जाह कहाँ आगू सौँ दुरजन ॥७॥
देखि विकल सुर अंगद धाओल । कूदि चरन गहि भूमि खसाओल ॥८॥

छंद—गहि महि पछारल लात मारल बालि सुत प्रभु लग गेले ।
झट सम्हरि उठि दसकंठ घोर कठोर रव गरजति भेले ॥
कय दाप चाप चढ़ाय दस संधानि सर बहु बरषथी ।
घायल भयाकुल सब भटहिँ कय देखि निज बल हरषथी ॥

दोहा—रावन केर रघुपति लखन, सीस भुजा सर चाप ।
काटल पुनि पुनि बहु बढ़ल, जेना तीर्थ केर पाप ॥६६॥

रिपु केर सिर भुज बढ़इत देखी । भालु कपिहिँ रिस भेल बिसेखी ॥ १॥
मर न मूढ़ कटनहुँ भुज सीसे । धाओल कोपि भालु भट कीसे ॥ २॥
बालितनय मारुति नल नीले । बानरराज दुबिद बलसीले ॥ ३॥
बिटप महीधर उठा प्रहारये । पकड़ि सैह से कपि केँ मारये ॥ ४॥
क्यो नख सौँ रिपु बपुष बिदारी । पड़ा जाय क्यो लातेँ मारी ॥ ५॥
तखन नील नल सिर चढ़ि गेले । नखेँ लिलार ओदारति भेले ॥ ६॥
सोनित लखि बिषाद उर भेले । भुजा पसारल पकड़य लेले ॥ ७॥
गहल न जाय फिरय कर केना । भ्रम जुग मधुप कमल बन जेना ॥ ८॥
कुपि दुहु केँ कुदि धैलक बहोरी । पटकति भगला बाँहि मरोरी ॥ ९॥
पुनि सकोप दस धनु कर लेलक । कपि केँ सर हनि घायल केलक ॥१०॥
हनुमदादि मुरुछित कय बंदर । पाबि प्रदोष हरषि दसकंधर ॥११॥
मुरछित देखि सकल कपि बीरे । जामवंत दौड़ल रनधीरे ॥१२॥
संग भालु भूधर तरुधारी । लागल हतय प्रचारि प्रचारी ॥१३॥
कुपित भेल रावन बलबाना । गहि पद महि पटकय भट नाना ॥१४॥
देखि भालुपति निज दल घाते । कोपि माँझ उर मारल लाते ॥१५॥

छंद—उर लात घात प्रचंड लगइत बिकल रथ सौँ महि खसल ।
रीछहिँ गहल बीसोँ करेँ जनि कमल मे निसि अलि बसल ॥
मुरछित बिलोकि प्रहारि पद, पुनि भालुपति प्रभुदिसि गेले ।
निसि जानि तकरा राखि रथ सारथि जतन करइत भेले ॥

दोहा—भालु कीस मुरुछा छुटति, सब आयल प्रभु पास ।
रावनकेँ निसिचर सकल, घेरि रहल अति त्रास ॥९७॥

मास पारायण, विश्राम—२६

तही राति सीता लग जा कय । त्रिजटा कहलक कथा सुना कय ॥ १॥
रिपु सिर भुजक बाढ़ि सुनि सीता । भय गेली अतिसय भयभीता ॥ २॥
मुख मलीन उपजल मन चिंता । त्रिजटा सौँ कहलनि पुनि सीता ॥ ३॥
की होयत किय कहह न माता । कोन बिधि मरत बिस्व दुखदाता ॥ ४॥

मरय न रघुपति सर सिर कटनहु । विधि करइछ बिपरीते घटनहु ॥ ५॥
हमर अभाग जियाबय ओही । केँलक जे हरि पद कमल बिछोही ॥ ६॥
कपट कनकमृग रच झुठ जेहे । येँखनहुँ बाम दैव मोँहि सेहे ॥ ७॥
जे विधि मोँहि दुख दुसह सहौलनि । लछुमन केँ कटु बचन कहौलनि ॥ ८॥
रघुपति बिरह सबिष सर भारी । मारय ठिका बेरि बहु मारी ॥ ९॥
येँहनो दुख जेँ राख मम प्राने । से विधि तहि जियबथि नहि आने ॥१०॥
जानकि बिलपथि बिबिध बिधाने । सुमिरति पुनि पुनि कृपानिधाने ॥११॥
त्रिजटा कह सुनु राजकुमारी । उर सर लगइत मरत सुरारी ॥१२॥
तैँ प्रभु उर मे हतथि न एही । येँकरा हृदय बसथि बैदेही ॥१३॥

छंद—येँकरा हृदय बस जानकी जानकि हृदय मम बास यो ।
मम उदर भुबन अनेक लगइत बान सबहुक नास यो ॥
सुनि बचन हरष बिषाद मन अति कहल लखि त्रिजटा भने ।
रिपु आब येँहि बिधि मरत सुनु सुंदरि तजू संसय मने ॥

दोहा—कटइत सिर ब्याकुल जखन, छुटि जयतैं तव ध्यान ।
रावन केँर हिय बेधता, तखनहि राम सुजान ॥९८॥

ई कहि बहु बिधि बुझा सम्हारल । पुनि त्रिजटा निज भवन सिधारल ॥ १॥
राम सोभावक कय कय सुमिरन । उपजल बिरह ब्यथा अति तहि छन ॥ २॥
निसिहिँ ससिहिँ निंदथि बहु भाँती । जुग सम भेल बितय नहि राती ॥ ३॥
करति बिलाप मनहिँ मन भारी । राम बिरह जानकी दुखारी ॥ [illegible]॥
बिरह दाह उर अति भेँल जखने । फरकल बाम बाँहि दृग [illegible] ॥ [illegible]
सगुन बिचारि धयल मन धीरे । मिलता झट कृपालु [illegible] ॥ [illegible]
येँतय अर्ध निसि रावन जागल । निज सारथि पर खी[illegible] ॥ [illegible]
सठ रन भूमि छोड़ौलह मोही । धिक धिक अधम मंदमति [illegible] ॥ [illegible]
से पद गहि बहु भाँति बुझाओल । भोर भेल रथ चढ़ि पुनि [illegible] ॥ [illegible]
सुनि दसमुख पहुँचल रन थल मे । मचल अमित खलबल कपि [illegible] ॥ [illegible]
जहँ तहँ भूधर बिटप उपारी । धाओल कटकटाय भट [illegible] ॥ [illegible]

छंद—धाओल बिकट कपि भालु धयने कर कठोर महीधरे।
अति कोपि करय प्रहार लगितहिँ सब पड़ैल तमीचरे ॥
भड़काय दल कपि धैरल पुनि रावनहिँ चारू कात सौँ।
नख सौँ बिदारि सरीर व्याकुल कयल थापड़ घात सौँ ॥

दोहा—देखि महा मर्कट प्रबल, रावन मनहिँ बिचारि।
अंतरहित भय निमिष मे, माया देल पसारि ॥९९॥

छंद—से कयल पुनि पाखंड। भेल प्रगट जंतु प्रचंड।
बैताल भूत पिसाच। कर धैने धनु नाराच ॥१॥
जोगिनि नेने करबाल। एक हाथ मनुज कपाल।
कय सद्य सोनित पान। नाचय करय बहु गान ॥२॥
धरु मारु बाजय घोर। भरि रहल धुनि चहु ओर।
मुख बाबि दौड़य खाय। तौँ चलय कीस पड़ाय ॥३॥
जहँ जाय मर्कट भागि। तहँ बरति देखय आगि।
भेल बिकल बानर भालु। पुनि लाग बरषय बालु ॥४॥
जहँ तहँ थकित भय कीस। गरजल बहुरि दससीस।
लछुमन कपीस समेत। भेल सकल बीर अचेत ॥५॥
हा राम हा रघुनाथ। कहि सुभट मीड़य हाथ।
येहिबिधि सकल बल तोरि। पुनि कयल कपट बहोरि ॥६॥
प्रगटल बिपुल हनुमान। धाओल पकड़ि पाखान।
रामहिँ घैरल सब जाय। चहुदिसि बरूथ बनाय ॥७॥
धरु मारु चल नहि जाय। कटकटय पुच्छ उठाय।
दस दिसि लँगूर बिराज। तहि मध्य कोसलराज ॥८॥

छंद—तहि मध्य कोसलराज सुंदर स्याम तन सोभय कैना।
वहु इंद्रधनुषक बेढ़ बीच तमाल तरु उँचगर जेना ॥९॥
लखि प्रभुहिँ हरष बिषाद युत सुर कहथि जय जय जय भने।
रघुवीर कुपि एके सरेँ छन मे हरल माया घने ॥१०॥
माया बिगत कपि भालु हरषल घुरल सब गिरि तरु गही।
सर निकर छोड़ल राम रावन बाहु सिर पुनि खस मही ॥११॥
श्रीराम रावन रन चरित जौँ कलप कतबो गावथी।
सय सेष सारद श्रुति सुकबियो तदपि पार न पावथी ॥१२॥

दोहा—तनिकर गुन गन किछु कहल, जड़मति तुलसीदास।
निज पौरुष अनुसार उड़, मच्छर जेना अकास ॥
कटनहुँ सिर भुज बेरि बहु, मरय न भट लंकेस।
प्रभु क्रीड़थि सुर सिद्ध मुनि, ब्याकुल देखि कलेस ॥१००॥

कटने बढ़इछ सिर समुदाये। जनि प्रतिलाभ लोभ अधिकाये ॥ १॥
मरय न रिपु श्रम अतिसय भेलनि। राम बिभीषन तनु दृग केलनि ॥ २॥
उमा काल मर जनि कर इच्छा। से प्रभु कर जन प्रीति परिच्छा ॥ ३॥
सुनु सर्वज्ञ चराचरनायक। प्रनतपाल सुर मुनि सुखदायक ॥ ४॥
नाभि कुंड येहि अमरित नाथे। जीबय तकरे बल दसमाथे ॥ ५॥
सुनति बिभीषन बचन कृपाले। हरषि धयल कर बान कराले ॥ ६॥
असुभ होअय लागल तहि नाना। कानय बहु शृगाल खर स्वाना ॥ ७॥
बाजय खग जग आरति हेतू। नभ मे प्रगटल जहँ तहँ केतू ॥ ८॥
दाह दहो दिसि अतिसय जागल। सुरुज ग्रहन बिनु परबहिँ लागल ॥ ९॥
मंदोदरि उर काँपय भारी। प्रतिमा स्रबय नयन पथ बारी ॥१०॥

छंद—प्रतिमा रुदय पविपात नभ अति बात वह डोलय मही।
बरषय बलाहक लिधुर कच रज असुभ अति सक के कही ॥

उतपात अति लखि सुर बिकल नभ जयति जयति उचारथी ।
बुझि सभय सुरहिँ कृपालु रघुपति धनुष पर सर धारथी ॥

दोहा—तानि सरासन श्रवन धरि, छोड़ल सर येकतीस ।
रघुनायक सायक चलल, मानू काल फनीस ॥१०१॥

सर येक लेल नाभि सर सोखी । लागल अपर भुजा सिर रोखी ॥ १॥
लय गेल बान काटि सिर हाथे । नाचय रुंड बिना भुज माथे ॥ २॥
धरनि धसय धड़ धाब प्रचंडे । झट प्रभु सरेँ कयल दुइ खंडे ॥ ३॥
गरजल मरति घोर रब भारी । कहाँ राम रन हतब प्रचारी ॥ ४॥
डोलल महि खसइत दसकंधर । छुभित सिंधु सरि दिग्गज भूधर ॥ ५॥
बढ़ा खसल महि दुहु टुक काया । पीचि भालु मरकट समुदाया ॥ ६॥
मंदोदरि आगू भुज सीसे । धय सर चलल जहाँ जगदीसे ॥ ७॥
पैसल सर निषंग मे जा कय । देखथि सुर दुंदुभी बजा कय ॥ ८॥
तेज तकर समैल प्रभु आनन । लखि हरषला संभु चतुरानन ॥ ९॥
भरल जयति जय धुनि ब्रह्मंडे । जय रघुवीर प्रबल भुजदंडे ॥१०॥
बरषथि सुमन देव मुनिबृंदे । जय कृपालु जय जयति मुकुंदे ॥११॥

छंद—जय कृपाकंद मुकुंद द्वंद्व हरन सरन सुखप्रद प्रभो ।
खल दल बिदारन परम कारन कारुनीक सदा बिभो ॥
सुर सुमन बरषथि हरष संकुल बाज दुंदुभि गहगहा ।
संग्राम आँगन राम अंग अनंग लह सोभा महा ॥
सिर जटा मुकुटक बीच बीच प्रसून अति कल राजिते ।
जनि नील गिरि पर तड़ित पटल समेत उड़ुगन भ्राजिते ॥
भुज दंड सर कोदंड फेरथि रुधिर कन तन अति लसै ।
जनि लाल मुनिया बहुत बैसि तमाल पर सुख सौँ रसै ॥

दोहा—कृपादृष्टि बरषाय प्रभु, अभय कैलनि सुरबृंद ।
हरषल जत कपि भालु कहि, जय सुखधाम मुकुंद ॥१०२॥

मंदोदरी पतिक सिर देखी । मुरुछि खसल महि बिकल बिसेखी ॥ १॥
जुवति वृंद कनइत उठि धायलि । तहि उठाय रावन लग आयलि ॥ २॥
पति गति लखि से करय पुकारे । खुजल केस नहि तनक सम्हारे ॥ ३॥
छाती पीटय करय बिलापे । कानि बखानय तकर प्रतापे ॥ ४॥
तप बल नाथ हिलय नित धरनी । तेज हीन पावक ससि तरनी ॥ ५॥
सेष कमठ सहि सकय न भारे । पड़ल भूमि तन लथपथ छारे ॥ ६॥
बरुन कुबेर सुरेस समीरे । रन सनमुख क्यो धयल न धीरे ॥ ७॥
भुजबल स्वामि जितल जम काले । पड़लहुँ आइ अनाथक हाले ॥ ८॥
प्रभुता अहँक बिदित संसारे । हो न बरनि बल सुत परिबारे ॥ ९॥
राम बिमुख अहँ ई गति लहले । कुल क्यो कननिहार नहि रहले ॥१०॥
तव बस बिधि प्रपंच सब नाथे । सभय दिसिप नित नमबय माथे ॥११॥
अहँक इ भुज सिर खाय शृगाले । राम बिमुख समुचित ई हाले ॥१२॥
काल बिवस पति कहल न मानल । अग जग नाथहुँ केँ नर जानल ॥१३॥

छंद—जानल मनुज कय दनुज कानन दहन पावक हरि स्वयं ।
जहि नमथि सिव ब्रह्मादि सुर प्रिय भजल नहि करुनामयं ॥
आजन्म सौँ परद्रोह रत पापौघमय तव तनु अयं ।
अहुँ केँ देलनि निज धाम राम नमामि ब्रह्म निरामयं ॥

दोहा—अहह नाथ रघुनाथ सम, कृपासिंधु नहि आन ।
जोगी दुर्लभ देलनि गति, अहँ केँ श्रीभगवान ॥१०३॥

मंदोदरिक बचन सुनि काने । सुर मुनि सिध भेल सुखी महाने ॥१॥
अज महेस नारद सनकादी । जे मुनिबर परमारथबादी ॥२॥
भरि लोचन रघुपतिहिँ निहारी । प्रेम मगन सब भेला सुखारी ॥३॥
रोदन करति देखि सब नारी । भेल बिभीषन मन दुख भारी ॥४॥
बंधु दसा बिलोकि दुख भेलनि । प्रभु अनुजहिँ आज्ञा झट देलनि ॥५॥
तनि बहु बिधि लछुमन समुझाओल । पुनि हुनका प्रभु लग लय आओल ॥६॥

कृपा दृष्टि प्रभु ताहि निहारी । कहल क्रिया करु सोकहिँ टारी ॥७॥
कयल क्रिया प्रभु आज्ञा मानी । बिधिबत देस काल जिय जानी ॥८॥

दोहा—तकरा देल तिलांजली, मयतनयादिक तीय ।
भवन गेलि सब रघुपतिक, गुन बरनति निज हीय ॥१०४॥

आबि बिभीषन सीस नमौलनि । तखन कृपानिधि अनुज बजौलनि ॥१॥
अहँ कपीस अंगद नल नीले । जामबंत मारुति नयसीले ॥२॥
सब मिलि जाउ बिभीषन साथे । दियनु तिलक कहलनि रघुनाथे ॥३॥
पिता बचन हम नगर न आबी । निज समान कपि अनुज पठाबी ॥४॥
चलला झट कपि सुनि प्रभु बचने । कयलनि जा सब तिलकक रचने ॥५॥
सादर सिंहासन बैसेलनि । तिलक साजि पुनि असतुति केलनि ॥६॥
जोरि पानि सब सीस नमायल । सहित बिभीषन प्रभु लग आयल ॥७॥
पुनि रघुबीर बजा कपि लेलनि । सुखी सबहिँ प्रिय बच कहि केलनि ॥८॥

छंद—कयलनि सुखी कहि बच सुधा सकलहुँ अहिँक बल रिपु हती ।
पौलनि बिभीषन राज तिहुपुर जस अहँक नित नब अती ॥
मम सहित सुभ कीरति अहँक जे परम प्रेमेँ गाओते ।
संसार सिंधु अपार पार प्रयास बिनु नर पाओते ॥

दोहा—प्रभुक सुधा सन बचन सुनि, नहि अघाथि कपिपुंज ।
झुकबथि बारंबार सिर, गहथि सकल पदकंज ॥१०५॥

पुनि प्रभु बजा लेलनि हनुमाने । लंका जाउ कहल भगवाने ॥१॥
जानकिकेँ सब हाल सुनाऊ । हुनक कुसल लय अहँ चलि आऊ ॥२॥
अयला नगर तखन हनुमंते । निसिचर निसिचरि ऐल तुरंते ॥३॥
तनिक बिबिध बिधि पूजा केलनि । जनकसुता देखाय पुनि देलनि ॥४॥
दूरहिँ सौँ प्रनाम कपि केलनि । रघुपति चर जानकि चिन्हि लेलनि ॥५॥
कहू तात प्रभु कृपानिकेते । कुसल अनुज कपि सैन समेते ॥६॥
सब बिधि कुसल कोसलाधीसे । मातु समर जितलनि दससीसे ॥७॥
अबिचल राज बिभीषन देलनि । सुनि कपि बच उर हरषित भेलनि ॥८॥

छंद—अति हरष मन तन पुलक लोचन सजल कह पुनि पुनि रमा ।
कपि देव की तिहु लोक मे अछि किछु न येहि बानी समा ॥
सुनु मातु हम पौलहुँ अखिल जग राज आइ न संसयं ।
रन जीति रिपुदल बंधु जुत पस्यामि राममनामयं ॥

दोहा—सुनु सुत सदगुन सब अहँक, हृदय बसौ हनुमंत ।
सानुकूल कोसलपति, रहथु समेत अनंत ॥१०६॥

करु से जतन आब अहँ ताता । देखी नयन स्याम मृदु गाता ॥ १॥
पुनि हनुमान राम लग धाओल । जनकसुता केर कुसल सुनाओल ॥ २॥
सुनि संदेस भानुकुलभूषन । बजा लेलनि जुबराज बिभीषन ॥ ३॥
मारुतसुतक संग सब जाऊ । जनकसुता केँ सादर लाऊ ॥ ४॥
तुरत सबहिँ गेला जहँ सीता । सेबय सब निसिचरी बिनीता ॥ ५॥
बेगि बिभीषन सबहिँ सिखौलनि । से बहु बिधि मज्जन करबौलनि ॥ ६॥
बहु प्रकार भूषन पहिराओल । महफा रुचिर साजि पुनि लाओल ॥ ७॥
चढ़ली हरषित भय बैदेही । सुमिरि राम सुखधाम सिनेही ॥ ८॥
बेतपानि रच्छक चहु पासे । चलल सबहु मन परम हुलासे ॥ ९॥
देखय भालु कीस सब आयल । रच्छक कोपि निबारय धायल ॥१०॥
कह रघुबीर कहल मम मानू । अहँ सब सीतहिँ पैरहिँ आनू ॥११॥
देखथु कपि जननीक समाने । बिहुँसि कहल रघुनाथ सुजाने ॥१२॥
सुनि प्रभु बचन भालु कपि हरषल । नभ सौँ देव सुमन बहु बरषल ॥१३॥
जे सीता अरपित छल अनले । अन्तर साखि देखाबय चहले ॥१४॥

दोहा—तहि कारन करुनानिधि, कहलनि किछु दुरबाद ।
सुनति जातुधानी सकल, लागलि करय बिषाद ॥१०७॥

प्रभु केर बचन सीस धय सीता । बजली मन बच करम पुनीता ॥१॥
लछुमन होउ धरम केर भागी । झट दय प्रगट करू अहँ आगी ॥२॥
सुनि लछुमन सीता केर बयने । बिरह बिबेक धरम नय अयने ॥३॥
सजल नयन जोरल दुहु पानी । प्रभु सौँ किछु कह सकथि न बानी ॥४॥

जखन राम रुखि लछुमन जानल । पाबक प्रगटि काठ कत आनल ॥५॥
अनल प्रबल बैदेही देखल । हृदय हरष किछु भय नहि लेखल ॥६॥
जौँ हम सतत करम मन बानी । तजि रघुबीर आन नहि जानी ॥७॥
तोँ हे अंतरजामी आगी । होउ श्रीखंड तूल मम लागी ॥८॥

छंद--श्रीखंड बुझि पैसली अनल मे सुमिरि प्रभुपद मैथिली ।
जय कोसलेस महेस बंदित चरन रति अति निरमली ॥
प्रतिबिंब ओ लौकिक कलंक प्रचंड अनलहिँ जरि गेले ।
प्रभु चरित क्यो नहि लखल सुर मुनि सिद्ध नभ अकचक भेले ॥
धय रूप पावक पानि गहि श्रीसत्य श्रुति जग बिदित जे ।
जनु इंदिरा केँ छीरनिधि रामहिँ समरपल आनि से ॥
से राम बाम बिभाग राजित रुचिर अति सोभित छली ।
नव नील नीरज निकट मे जनि कनक पंकज कर कली ॥

दोहा—हरषित बरषथि सुमन सुर, बाजय गगन निसान ।
गाबथि किन्नर सुरबधू, नाचथि चढ़लि बिमान ॥
जनकसुताक समेत प्रभु, सोभा अमित अपार ।
भालु कीस हरषल निरखि, जय रघुपति सुखसार ॥१०८॥

तखनहिँ रघुपति अनुमति पाबी । मातलि चलल चरन सिर नाबी ॥ १॥
सदा स्वारथी सुरगन एला । परमारथि इव बजइत मेला ॥ २॥
दीनबंधु दयालु रघुराया । देव कयल सुरगन पर दाया ॥ ३॥
बिस्वद्रोह रत ई खल कामी । निज अघ गेल कुमारगगामी ॥ ४॥
अहँ सम रूप ब्रह्म अविनासी । सदा एकरस सहज उदासी ॥ ५॥
अकल अगुन अज अनघ अनामय । अजित अमोघ सक्ति करुनामय ॥ ६॥
मीन कमठ सूकर ओ नरहरि । बामन पुनि अबतरल परसुधरि ॥ ७॥
जखन जखन दुख सुरगन पाओल । नाना तन धय अहीँ नसाओल ॥ ८॥

ई खल मलिन सदा सुर द्वेषी । काम क्रोध मद लोभ बिसेषी ॥ ९॥
अधम सिरोमनि तव पद पावये । ई हमरा मन बिसमय आवये ॥१०॥
हम देवता परम अधिकारी । स्वारथ रत देल भगति बिसारी ॥११॥
भव प्रवाह संतत हम पड़लहुँ । पाहि आब प्रभु सरन पकड़लहुँ ॥१२॥

दोहा—कय बिनती सुर सिद्ध सब, ठाढ़ छला कर जोरि ।
अति सप्रेम तन पुलकि विधि, असतुति करथि बहोरि ॥१०६॥

छंद—जय राम सदा सुख धाम हरे । रघुनायक सायक चाप करे ।
भव बारन दारन सिंह प्रभो । गुन सागर नागर नाथ विभो ॥१॥
तनु काम अनेक अनूप छवी । गुन गावथि सिद्ध मुनीन्द्र कवी ।
जस पावन रावन नाग महा । खगनाथ जकाँ कुपि भैल अहाँ ॥२॥
जन रंजन भंजन सोकभयं । गत क्रोध सदा प्रभु बोधमयं ।
अवतार उदार अपार गुनं । महिभार विभंजन ज्ञान घनं ॥३॥
अज व्यापकमेकमनादि सदा । करुनाकर राम नमामि मुदा ।
रघुवंस विभूषन दूषन हा । कृत भूप बिभीषन दीन महा ॥४॥
गुन ज्ञान निधान अमान अजं । नित राम नमामि विभुं विरजं ।
भुज दंड प्रचंड प्रताप बलं । खलबृंद निकंद महा कुसलं ॥५॥
बिनु कारन दीन दयाल हितं । छवि धाम नमामि रमा सहितं ।
भव कारन तारन काज परं । मन संभव दारुन दोष हरं ॥६॥
सरचाप मनोहर त्रोन धरं । जलजारुन लोचन भूप वरं ।
सुख मंदिर सुंदर श्री रमनं । मद मार मुधा ममता समनं ॥७॥
अनवद्य अखंड न गोचर गो । सब रूप सदा सब होय न ओ ।
इति बेद वदंति न दंत कथा । रवि आतप भिन्न न भिन्न जथा । ८॥

कृतकृत्य विभो सब बानर ई। निरखंति तवानन सादर ई।
हरि देवक जीवन गेल घिना। भव भूलल छी तव भक्ति बिना ॥९॥
द्रुत दीनदयाल दया करियौ। मति मोर बिभेदकरी हरियौ।
जहिसौँ बिपरीत क्रियादि करी। दुख कैँ सुख मानि सदा बिचरी ॥१०॥
खल खंडन मंडन रम्य छमा। पद पंकज सेवित संभु उमा।
नृप नायक दी बरदानमिदं। चरनांबुज प्रेम सदा सुभदं ॥११॥

दोहा—चतुरानन कयलनि बिनय, प्रेम पुलकि अति काय।
सोभासिंधु बिलोकइत, लोचन किछु न अघाय ॥११०॥

दसरथ तहँ अयला तहि छन मे। सुत बिलोकि भर नोर नयन मे ॥१॥
अनुज सहित प्रभु बंदन केलनि। आसिरबाद तखन पितु देलनि ॥२॥
तात सकल तव पुन्यक जोरे। जितल अजय निसिचरपति घोरे ॥३॥
बढ़ल प्रीति अति सुनि सुत बाते। नयन नोर पुलकावलि गाते ॥४॥
रघुपति प्रथम प्रेम अनुमाने। पितु दिसि देखि देल दृढ़ ज्ञाने ॥५॥
येँहि सौँ उमा मोच्छ नहि पौलनि। दसरथ भेदभगति मन लौलनि ॥६॥
सगुनोपासक मोछ न लै छथि। तनिका राम भगति निज दै छथि ॥७॥
पुनि पुनि प्रभु कैँ कय परनामे। दसरथ हरषि गेला सुरधामे ॥८॥

दोहा—अनुज जानकी सहित प्रभु, कुसल कोसलाधीस।
हरषित मन सोभा निरखि, अस्तुति कर सुरईस ॥१११॥

छंद—जय राम सोभा धाम। दायक प्रनत बिश्राम।
धृत त्रोन वर सर चाप। भुजदंड प्रबल प्रताप ॥१॥
जय दूषनारि खरारि। मर्दन निसाचर धारि।
ई दुष्ट मारल नाथ। सुर भेला सकल सनाथ ॥२॥
जै हरन धरनी भार। महिमा उदार अपार।
जै रावनारि कृपाल। कैल जातुधान बेहाल ॥३॥

लंकेस अति बल गर्ब। बस कयल सुर गंधर्ब।
मुनि सिद्ध नर खग नाग। हठि पंथ सबहुक लाग ॥४॥
परद्रोह रत अति दुष्ट। पौलक से फल अघपुष्ट।
सुनु आब दीनदयाल। राजीवनयन बिसाल ॥५॥
छल मोहि अति अभिमान। अछि क्यो न मोहि समान।
लखि आब प्रभु पदकंज। गत मान प्रद दुख पुंज ॥६॥
क्यो ब्रह्म निगुंन ध्याब। अब्यक्त जहि श्रुति गाब।
मोहि भाब कोसलभूप। श्रीराम सगुन सरूप ॥७॥
बैदेहि अनुज समेत। करु हमर हृदय निकेत।
मोहि जानिकय निज दास। दिय भक्ति रमा निबास ॥८॥
दिय भक्ति रमा निबास त्रासहरन सरन सुखदायकं।
सुखधाम राम नमामि काम अनेक छबि रघुनायकं ॥९॥
सुर बृंद रंजन द्वंद भंजन मनुज तनु अतुलित बलं।
ब्रह्मादि संकर सेव्य राम नमामि करुना कोमलं ॥१०॥

दोहा—आब कृपा कय निरखि मोहि, दियऽ निदेस कृपालु।
की हम करु सुनि प्रिय बचन, बजला दीनदयाल ॥११२॥

सुनु सुरपति कपि भालु हमर जे। निसिचर मारल भूमि पड़ल से ॥ १॥
मम हित हेतु तजल सब प्राने। सबहिँ जियाउ सुरेस सुजाने ॥ २॥
सुनु खगेस प्रभु केर ई बानी। अति अगाध जानथि मुनि ज्ञानी ॥ ३॥
त्रिभुबन मरन जिबन प्रभु हाथहिँ। केवल गौरब देल सुरनाथहिँ ॥ ४॥
सुधा बरषि कपि भालु जिआओल। हरषि उठल सब प्रभु लग आओल ॥ ५॥
सुधा बृष्टि भेल दुहु दल ऊपर। जियल भालु कपि नहि रजनीचर ॥ ६॥
रामाकार भेल निसिचर मन। मुकुत भेल छूटल भव बंधन ॥ ७॥
सुर अंसिक सब कपि ओ रिच्छे। जियल सकल रघुपति केर इच्छे ॥ ८॥

रामक सम के दीनक हितकर । कयलनि मुकुत जते छल निसिचर ॥ ९॥
खल मल धाम काम रत रावन । गति पौलक जे मुनिबर पावन ॥१०॥

दोहा—सुमन बरषि सुरदल चलल, चढ़ि चढ़ि रुचिर बिमान ।
देखि सुअबसर प्रभुक लग, ऐला संभु सुजान ॥
परम प्रीति कर जोरि जुग, नलिन नयन भरि बारि ।
पुलकित तन गदगद गिरा, बिनय करथि त्रिपुरारि ॥११३॥

मामभिरच्छय रघुकुल नायक । धृत बर चाप रुचिर कर सायक ॥१॥
मोह महा घन पटल प्रभंजन । संसय बिपिन अनल सुररंजन ॥२॥
अगुन सगुन गुनमंदिर सुंदर । भ्रम तम प्रबल प्रताप दिवाकर ॥३॥
काम क्रोध मद गज पंचानन । बसू निरंतर जन मन कानन ॥४॥
विषय मनोरथ पुंज कंज बन । प्रबल तुषार उदार पार मन ॥५॥
भव बारिधि मंदर परमं दर । बारिय तारिय संसृति दुस्तर ॥६॥
स्याम गात राजीव बिलोचन । दीनबंधु प्रनतारति मोचन ॥७॥
अनुज जानकी सहित निरंतर । बसू राम नृप मम उर अंतर ॥८॥
मुनिरंजन महि मंडल मंडन । तुलसिदास प्रभु त्रास बिखंडन ॥९॥

दोहा—जखन अवध मे होयत तव, तिलकक साज सम्हार ।
तखन कृपानिधि ऐब हम, देखय चरित उदार ॥११४॥

जखन बिनय कय सिब चलि गेला । तखन बिभीषन प्रभु लग एला ॥१॥
पद सिर नमा कहल मृदु बानी । विनय सुनू प्रभु सारँगपानी ॥२॥
सकुल सदल प्रभु रावन मारल । पाबन जस त्रिभुवन बिस्तारल ॥३॥
दीन मलीन हीन मति जाती । मोहि पर कृपा कयल बहु भाँती ॥४॥
प्रभु करु पूत आब घर दासक । मज्जन करू समर श्रम नासक ॥५॥
देखि कृपाल कोष गृह बित्ते । दियनु सबहिँ कपि प्रमुदित चित्ते ॥६॥
सब बिधि नाथ मोहि अपनाऊ । पुनि मोहि सहित अवधपुर जाऊ ॥७॥
सुनति बचन मृदु दीनदयाले । सजल भेल दुहु नयन बिसाले ॥८॥

दोहा—अहँक कोष गृह हमर सब, सत्य बचन सुनु भाय।
भरत दसा सुमिरैत मोहि, निमिष कलप सम जाय॥
जपइत छथि मोहि राति दिन, तपसि बेष कृस गात।
देखी झट से जतन करु, हमर निहोरा तात॥
अवधि बिता कँ जैब जौँ, जिबइत पैब न बीर।
अनुज प्रीति सुमिरैत प्रभु, पुनि पुनि पुलक सरीर॥
करू कलप भरि राज अहँ, मोहि सुमिरू मन लाय।
अहँ पायब पुनि धाम मम, जतय संत सब जाय॥११५॥

सुनितहिँ बचन बिभीषन रामक। हरषि गहल पद कृपा सुधामक॥१॥
बानर रीछ हरष बड़ पौलक। गहि प्रभु पद निरमल गुन गौलक॥२॥
तखन बिभीषन भवनहिँ जा कय। मनि गन बसन बिमान लदा कय॥३॥
लय पुष्पक प्रभु आगू राखल। हँसि कय तखन कृपानिधि भाषल॥४॥
चढ़ि बिमान अहँ नभ मे जाऊ। सखा बसन भूषन बरषाऊ॥५॥
जाय गगन मे तखन बिभीषन। बरषौलनि मनि अंबर भूषन॥६॥
जे जे मन भावय से लै अछि। मनि मुख मेलि उगिलि कपि दै अछि॥७॥
हँसथि राम श्री अनुज समेते। परम कौतुकी कृपानिकेते॥८॥

दोहा—ध्यान न पाबथि जनिक मुनि, नेति नेति श्रुति गाब।
से कृपालु कपि भालु सौँ, कय बिनोद मुद पाब॥
उमा जोग जप दान तप, नाना मख ब्रत नेम।
राम न करथि कृपा तेहन, जेहन सुद्ध लखि प्रेम॥११६॥

भालु कीस पट भूषन पायल। पहिरि पहिरि रघुपति लग आयल॥१॥
नाना रूप देखि सब कीसे। पुनि पुनि हँसथि कोसलाधीसे॥२॥
चितइत सब पर कयलनि दाया। बजला मधुर बचन रघुराया॥३॥
अहिँक बलेँ रावन हम मारल। पुनि बिभीषनक तिलक सतारल॥४॥
आब अपन घर अहँ सब जाऊ। सुमिरब मोहि जुनि कतहु डेराऊ॥५॥

सुनति बचन प्रेमाकुल बानर । जोरि पानि बाजल सब सादर ॥६॥
जे किछु करी छजय प्रभु तोही । सुनि ई बचन मोह हो मोही ॥७॥
कपिहिँ दीन बुझि कयल सनाथे । अहँ त्रैलोक्य ईस रघुनाथे ॥ ८॥
सुनि प्रभु बचन मरी हम लाजे । की कर मसक गरुड़ हित काजे ॥ ९॥
देखि राम रुखि बानर रिच्छे । प्रेम मगन घर केर नहि इच्छे ॥१०॥

दोहा—प्रभु प्रेरित कपि भालु सब, राम रूप उर राखि ।
हरष बिषाद सहित चलल, बिनय बिबिध बिधि भाखि ॥
नील रीछपति कीसपति, अंगद नल हनुमान ।
सहित बिभीषन अपर जे, जूथप कपि बलबान ॥
कहि न सकथि किछु प्रेम बस, भरि भरि लोचन बारि ।
सनमुख चितबथि राम तन, नयन निमेष निबारि ॥११७॥

रघुपति लखि केँ प्रीति महाने । लेलनि सबहिँ चढ़ाय बिमाने ॥ १॥
मनहिँ बिप्र पद माथ नमौलनि । उत्तर दिसा बिमान चलौलनि ॥ २॥
चलति बिमान कोलाहल भेले । जय रघुवीर नाद सब केले ॥ ३॥
सिंहासन अति उच्च मनोहर । श्रीसमेत बैसला प्रभु तहि पर ॥ ४॥
राजथि राम समेत भामिनी । मेरु शृंग जनि जलद दामिनी ॥ ५॥
रुचिर बिमान चलल अति आतुर । सुमन बृष्टि कयलनि हरषित सुर ॥ ६॥
त्रिबिध बसात परम सुखकारी । सागर सरि सर निर्मल बारी ॥ ७॥
सगुन होअय सुंदर चहु पासे । मन प्रसन्न निर्मल नभ आसे ॥ ८॥
कह रघुबीर देखु रन सीते । लछुमन येतय हतल इँद्रजीते ॥ ९॥
मारल जेहि अंगद हनुमाना । रन महि पड़ल निसाचर नाना ॥१०॥
कुंभकरन रावन दुहु भ्राता । येतय मुइल सुर मुनि दुखदाता ॥११॥

दोहा—येतय सेतु बान्हल तथा, थापल सिव सुख धाम ।
कृपासिंधु सीता सहित, सिब केँ कयल प्रनाम ॥
कृपासिंधु जहँ जहँ बिपिन, कयल बास बिश्राम ।
सकल देखाओल जानकिहिँ, कहि कहि सबहुक नाम ॥११८॥

झट बिमान आयल तहि ठामे । दंडकवन जहँ परम ललामे ॥१॥
कुंभजादि मुनिनायक नाना । गेला राम सबहुक असथाना ॥२॥
सब रिषिगन सौँ पाबि असीसे । चित्रकूट अयला जगदीसे ॥३॥
तहँ मुनिगन केँ देल संतोषे । चलल बिमान तहाँ सौँ चोखे ॥४॥
पुनि जानकिहिँ देखौलनि रामे । कलिमलहरनि जमुनि अभिरामे ॥५॥
पुनि देखल सुरसरित पुनीते । राम कहल प्रनाम करु सीते ॥६॥
देखु प्रयाग तीर्थपति फेरी । कोटि जनम अघ नस जहि हेरी ॥७॥
देखु परम पाबन पुनि बेनी । हरनि सोक हरि लोक निसेनी ॥८॥
पुनि लखु अवधपुरी अति पावन । त्रिबिध ताप भबरोग नसावन ॥९॥

दोहा--अवध निरखि सीता सहित, कयल कृपालु प्रनाम ।
पुलकित तन लोचन सजल, पुनि पुनि हरषित राम ॥
आबि त्रिवेनी बहुरि प्रभु, हरषि कयल असनान ।
कपिगन सह पुनि बिप्र केँ, देल बिबिध बिधि दान ॥११९॥

प्रभु हनुमानहिँ कहल बुझा कय । धय बटु रूप अवधपुर जा कय ॥ १॥
कुसल भरत केँ हमर सुनाऊ । समाचार लय अहँ चलि आऊ ॥ २॥
तुरत पवनसुत जाइत भेला । भरद्वाज आश्रम प्रभु गेला ॥ ३॥
नाना बिधि मुनि पूजा केलनि । असतुति कय असीस पुनि देलनि ॥ ४॥
मुनि पद बंदि जुगल कर जोरी । चढ़ि चलला प्रभु जान बहोरी ॥ ५॥
अयला प्रभु निखाद सुनि पौलनि । नाव नाव कहँ लोक बजौलनि ॥ ६॥
सुरसरि लाँघि जान गेल आबी । उतरल तट प्रभु आज्ञा पाबी ॥ ७॥
सीता पुजलनि बिबिध बिधाने । गंगहिँ पद पड़ि प्रीति महाने ॥ ८॥
आसिष देल हरषि मन गंगे । सुंदरि तव अहिबात अभंगे ॥ ९॥
सुनितहिँ गुह धाओल प्रेमाकुल । ऐला निकट परम सुख संकुल ॥१०॥
प्रभु बिलोकि बैदेहि समेते । पड़ल अबनि निज तनक न चेते ॥११॥
प्रीति परम बिलोकि रघुनाथे । लगा लेल उर हरपक साथे ॥१२॥

छंद—लेल हिय लगाय कृपानिधान सुजान राय रमापती ।
बैसाय परम समीप पुछलनि कुसल से कर बीनती ॥
विधि संभु सेबित पद कमल लखि आब कुसल रमापते ।
सुखधाम पूरन काम राम नमामि राम नमामि ते ॥
सब भाँति अधम निषाद हरि उर लगा लेल भरते जेना ।
मतिमंद तुलसी दास से प्रभु मोह बस भुललहुँ केना ॥
ई रावनारि चरित्र पाबन राम पद रतिप्रद सदा ।
कामादि हर विज्ञान कर सुर सिद्ध मुनि गाबथि मुदा ॥

दोहा—समर बिजय रघुवीर कें, चरित जे सुनथि सुजान ।
बिजय बिबेक बिभूति नित, ताहि देथि भगवान ॥
ई कलि काल मलायतन, मन कय देखु बिचारि ।
श्रीरघुनाथक नाम तजि, नहि किछु आन अधार ॥१२०॥

मास पारायण, विश्राम—२७

इति श्रीमद्रामचरितमानसस्य श्रीरामलोचनशरणविरचिते मैथिलीरूपान्तरे सकलकलिकलुष-
विध्वंसने विमलविज्ञानसम्पादनो नाम षष्ठः सोपानः समाप्तः ।

श्रीसीतारामजी

मैथिली

श्रीरामचरितमानस

सप्तम सोपान (उत्तरकाण्ड)

केकीकण्ठाभनीलं सुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिह्नं
शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नम् ।
पाणौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं बन्धुना सेव्यमानं
नौमीड्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामम् ॥१॥

कोसलेन्द्रपदकञ्जमञ्जुलौ कोमलावजमहेशवन्दितौ ।
जानकीकरसरोजलालितौ चिन्तकस्य मनभृङ्गसङ्गिनौ ॥२॥

कुन्दइन्दुदरगौरसुन्दरं अम्बिकापतिमभीष्टसिद्धिदम् ।
कारुणीककलकञ्जलोचनं नौमि शङ्करमनङ्गमोचनम् ॥३॥

दोहा--रहल एक दिन अवधि कर, अति आरत पुर लोग ।
जहँ तहँ सोचय नारि नर, कृस तन राम बियोग ॥

सगुन होइछ सुन्दर सकल, मन प्रसन्न सब केर ।
जनबय प्रभु आगमन जनि, नगर रम्य चहुँ फेर ॥
कौसल्यादि माय मन, यहन प्रमोदित होइछ ।
ऐला प्रभु श्री अनुज जुत, क्यो जन कहय चहैछ ॥
भरतक दच्छिन नयन भुज, फड़कय बारंबार ।
जानि सगुन मन हरष अति, लगला करय बिचार ॥

रहल एक दिन अवधि अधारे । ई बुझि मन दुख भेल अपारे ॥१॥
कारन कोन नाथ नहि एला । की बुझि कुटिल बिसरि मोहि गेला ॥२॥
अहह धन्य लछुमन बड़ भागी । राम पदारबिंद अनुरागी ॥३॥
कपटी कुटिल नाथ बुझि लेलनि । तैं प्रभु हमरा संग न केलनि ॥४॥
जौं गुन मम करनी प्रभु अलपो । नहि निस्तार कोटि सय कलपो ॥५॥
जन अवगुन प्रभु मन नहि आबे । दीनबंधु प्रभु मृदुल सोभावे ॥६॥
हमरा जिय भरोस दृढ़ सेहे । मिलता राम सगुन सुभ एहे ॥७॥
बितलहुँ अवधि रहत जौं प्राने । हमरा सम जग अधम के आने ॥८॥

दोहा—राम बिरह सागरक बिच, उबडुब भरत छलाह ।
बिप्र रूप धय पवनसुत, पोत रूप अयलाह ॥
कुस आसन बैसल निरखि, जटा मुकुट कृसगात ।
राम राम रघुपति ज़पथि, स्रवय नयन जलजात ॥१॥

भेला हनूमान लखि हरषित । नयन सलिल बरषय तन पुलकित ॥ १॥
मन मे बहुत भाँति सुख मानी । बजला श्रवन सुधा सम बानी ॥ २॥
जनिक बिरह सोची दिन राती । रटी निरंतर गुनगन पाँती ॥ ३॥
रघुकुल तिलक सुजन सुखदाता । अयला कुसल देव मुनि त्राता ॥ ४॥
रिपु रन जीति सुजस सुर गाबथि । सीता अनुज सहित प्रभु आबथि ॥ ५॥
सुनति बचन बिसरल सब दूखे । नैना पिसायल पौल पियूखे ॥ ६॥
के अहँ तात कहाँ सौं ऐलहुँ । मोहि परम प्रिय बचन सुनैलहुँ ॥ ७॥
हम मारुतसुत कपि हनुमाने । नाम हमर सुनु कृपानिधाने ॥ ८॥

दीनबंधु रघुपति केर चाकर । सुनति भरत मिलला उठि सादर ॥ ९॥
मिलइत प्रेम समाय न मन मे । पुलक अंग जल भरय नयन मे ॥१०॥
कपि तव दरस सकल दुख मेटल । राम पिरीत आइ मोहि भेटल ॥११॥
पुनि पुनि पुछलनि कुसलक बाता । कथी दियऽ अहँके सुनु भ्राता ॥१२॥
जग मे येहि संदेस समाने । कयल बिचार न अछि किछु आने ॥१३॥
होयब न उरिन अहाँ सौं बाऊ । आब मोहि प्रभु चरित सुनाऊ ॥१४॥
हनुमत तखन नमा पद माथे । कहलनि सब रघुपति गुनगाथे ॥१५॥
कहु कपि मोहि कृपालु भगवाने । सुमिरथि कहियो दास समाने ॥१६॥

छंद—निज दास बुझि रघुवंसमनि कखनहुँ कि मोहि आनथि मने ।
सुनि भरत बचन विनीत अति पद गहल कपि पुलकित तने ॥
रघुबीर निज मुख जनिक गुन कह जे अधीस चराचरे ।
से किय न होथि बिनीत परम पुनीत सद्गुन सागरे ॥

दोहा—राम प्रान प्रिय नाथ अहँ, सत्य बचन मम भाय ।
सुनइत पुनि पुनि भरत मिल, हरष न हृदय समाय ॥

सोरठा—भरत चरन सिर नाय, कपि गेलाह झट राम लग ।
कहल कुसल सब जाय, हरषि चलल प्रभु जान चढ़ि ॥२॥

हरषि भरत कोसलपुर धाओल । समाचार सब गुरुहिँ सुनाओल ॥ १॥
पुनि मंदिर मे कहलनि सगरे । सकुसल आबथि रघुपति नगरे ॥ २॥
चलली झटकि जननि सब सुनितहि । बोधल हुनि पुनि भरत कुसल कहि ॥ ३॥
समाचार पुरबासी पाओल । नर नारी सब हरषित धाओल ॥ ४॥
दधि दुरबा रोचन फल फूले । नव तुलसी दल मंगल मूले ॥ ५॥
भरि भरि हेमथार मे भामिनि । चलली गबइत सिंधुरगामिनि ॥ ६॥
जे जहिना तहिना उठि धावय । बाल बृद्ध क्यो संग न लावय ॥ ७॥
एक अपर सौं पूछय हाले । देखलह तों रघुराज दयाले ॥ ८॥
अवधपुरी प्रभु अबइत जानी । भेल सकल सोभा केर खानी ॥ ९॥
बहय मनोहर त्रिबिध समीरे । भेल बिमल अति सरजू नीरे ॥१०॥

दोहा—हरषित गुरु परिजन अनुज, भूसुर बृंद समेत।
चलला भरत सप्रेम अति, सनमुख कृपानिकेत॥
चढ़लि अटारी पर बहुत, निरखति गगन बिमान।
देखि मधुर सुर हरषि अति, करथि सुमंगल गान॥
रघुपति राका ससि पुरी, सिंधु देखि हरषाय।
बढ़ल कोलाहल करत जनि, नारि तरंग बुझाय॥३॥

येतय भानुकुल कमल दिवाकर। कपि कें देखबथि नगर मनोहर॥१॥
सुनु कपीस अंगद लंकेसे। पावन पुरी रुचिर ई देसे॥२॥
जद्यपि सब बैकुंठ बखानल। वेद पुरान बिदित जग जानल॥३॥
सेहो प्रिय नहि अवध समाने। ई प्रसंग क्यो क्यो जन जाने॥४॥
जनम भूमि मम पुरी सोहावन। उत्तर दिसि बह सरजू पावन॥५॥
जकर मज्जनें बिना प्रयासे। मम समीप नर पाबय बासे॥६॥
अति प्रिय मोहि येतय कें बासी। मम धामदा पुरी सुखरासी॥७॥
प्रभु बच सुनि कपिगन मुद मानल। धन्य अवध जहि राम बखानल॥८॥

दोहा—अबइत लखि सब लोक कें, कृपासिंधु भगवान।
प्रभु प्रेरल नगरक निकट, उतरल भूमि बिमान॥
पुष्पक कें कह प्रभु उतरि, जाइ धनद लग आब।
रामक प्रेरित चलल से, हरष बिरह अति पाब॥४॥

ऐला भरत संग सब लोगे। कृस तनु श्रीरघुबीर बियोगे॥१॥
बामदेब बसिष्ठ मुनिनायक। देखितहिं प्रभु महि धय धनु सायक॥२॥
झटकि धयल गुरु पद जलजाते। अनुज सहित अति पुलकित गाते॥३॥
मिलि कय कुसल पुछल मुनिराया। कुसल हमर अपनहि कें दाया॥४॥
मिलि सब द्विजहिं नमौलनि माथे। धरम धुरंधर रघुकुलनाथे॥५॥
गहल भरत पुनि प्रभु पद पंकज। जनिका नमथि संभु सुर मुनि अज॥६॥

महि पर पड़ल न उठति उठाओल । बल कय कृपासिंधु उर लाओल ॥७॥
पुलकावलि भेल स्याम सरीरे । नव राजीव नयन बह नीरे ॥८॥

छंद—राजीव लोचन स्रवय जल तनु ललित पुलकावलि अती ।
अति प्रेम सौँ हिय लगा अनुजहिँ मिलथि प्रभु त्रिभुवनपती ॥
सोभथि मिलथि प्रभु अनुज सौँ जे तकर उपमा के कहै ।
जनि प्रेम ओ सिंगार तन धय मिलय बर सुखमा लहै ॥
पूछथि कृपानिधि कुसल भरतहिँ बचन बेगि न आब यो ।
से सुख सिवा मन बच अगोचर जान सेह जे पाब यो ॥
अछि आब कोसलपति कुसल दरसन देलहुँ जन जानिकै ।
बुड़इत बिरह सागर गहल कर, कृपानिधि सुख मानिकै ॥

दोहा—पुनि प्रभु रिपुदमनहिँ हरषि, लेलनि हृदय लगाय ।
मिलला लछुमन भरत पुनि, परम प्रेम दुहु भाय ॥५॥

मिलला लछुमन रिपुसूदन सौँ । मेटल दुसह बिरह दुख मन सौँ ॥१॥
सीता पद सिर भरत नमौलनि । अनुज समेत परम सुख पौलनि ॥२॥
प्रभु बिलोकि हरषल पुरबासी । नसल बियोग जनित दुख रासी ॥३॥
प्रेमातुर सब लोक निहारी । कौतुक कयल कृपालु खरारी ॥४॥
अमित रूप धय से तहि काले । जथा जोग मिललाह कृपाले ॥५॥
कृपा दृष्टि रघुबीर बिलोकी । कयल सकल नर नारि बिसोकी ॥६॥
छन भरि मे मिलला भगवाने । उमा न ककरहु मरमक भाने ॥७॥
येहि बिधि सबहिँ सुखी कय रामे । चलला आगु सील गुन धामे ॥८॥
दौड़लि कोसिलादि सब माये । निरखि बच्छ केँ जनि धेनु गाये ॥९॥

छंद—जनि धेनु नूतन बच्छ तजि गृह चरय बन परबस गेली ।
दिन अंत पुर दिसि थन स्रवति हुँकरैत झटकारति भेली ॥
अति प्रेम मिलि प्रभु माय सब सौँ कहल मृदु बच बहु बिधी ।
गेल बिपति बिषम बियोग भव सब पौल सुख हरखक निधी ॥

दोहा—मिललि सुमित्रा तनय सौं, राम चरन रति पाय ।
मिलति राम सौं केकयिक, हृदय बहुत सकुचाय ॥
लछुमन मिलि सब माय सौं, हरषथि आसिष पाय ।
केकयि सौं पुनि पुनि मिलथि, मन कर छोभ न जाय ॥६॥

सासु सबहि सौं मिललि चरन परि । बैदेही अति हरष हृदय भरि ॥१॥
कुसल पूछि कह आसिष बाते । अचल होअओ तोहर अहिबाते ॥२॥
सब रघुपति मुखकमल बिलोकथि । मंगल जानि नयन जल रोकथि ॥३॥
कनक थार आरती उतारथि । बेरि बेरि प्रभु गात निहारथि ॥४॥
नाना भाँति निछाउर करथी । परमानंद हरष उर भरथी ॥५॥
कौसल्या पुनि पुनि रघुवीरे । निरखथि कृपासिंधु रनधीरे ॥६॥
बारंबार बिचारथि मन मे । हतल कोना लंकापति रन मे ॥७॥
अति सुकुमार लाल दुहु मोरे । निसिचर सुभट महाबल घोरे ॥८॥

दोहा—लछुमन ओ सीता सहित, प्रभुहिँ बिलोकथि माय ।
परमानंद निमग्न मन, पुनि पुनि तन पुलकाय ॥७॥

लंकापति कपीस नल नीले । जामबंत अंगद सुभ सीले ॥१॥
हनुमदादि सब बानर बीरे । धयल मनोहर मनुज सरीरे ॥२॥
भरत सिनेह सील ब्रत नेमे । सादर सब बरनथि अति प्रेमे ॥३॥
पुरबासी सबहुक लखि रीती । सकल सराहथि प्रभु पद प्रीती ॥४॥
पुनि रघुपति सब सखा बजौलनि । मुनि पद प्रनमिय सबहिँ सिखौलनि ॥५॥
गुरु बसिष्ठ कुल पूजित मोरे । हिनक कृपेँ मारल रिपु घोरे ॥६॥
ई सब हमर सखा मुनिराजे । भेला रन सागरक जहाजे ॥७॥
मम हित जनम देल हिनि हारी । तेँ भरतहुँ सौं छथि प्रिय भारी ॥८॥
प्रभुक बचन सुनि भेल सब मगने । छन छन उपजय नव सुख अपने ॥९॥

दोहा—कौसल्या कर चरन पर, पुनि नमौल सब माथ ।
हरषि देलनि आसिख अहाँ, प्रिय जेहने रघुनाथ ॥

सुमन बृष्टि सौँ भरल नभ, गृह चलला सुखकंद ।
देखथि अटारी उपर चढ़ि, नगर नारि नर बृंद ॥८॥

कंचन कलस विचित्र सजैलनि । निज निज द्वार सबहिँ क्यो धैलनि ॥१॥
बंदनबार पताका केतू । सबहिँ बनौलनि मंगल हेतू ॥२॥
बीथी सकल सुगंध सिचायल । गज मनि रचि बहु चौक पुरायल ॥३॥
साजल गेल सुमंगल नाना । बाजय लागल हरष निसाना ॥४॥
जहँ तहँ नारि निछाउरि करइछ । आसिष दैछ हरष उर भरइछ ॥५॥
कंचन थार आरती नाना । जुवती साजि करथि सुभ गाना ॥६॥
करथि आरती आरतिहर केर । रघुकुल कमलविपिन दिनकर केर ॥७॥
पुर सोभा संपति कल्याने । निगम सेष सारदा बखाने ॥८॥
चकित सेहो ई देखि चरीते । नर की गाओत तनि गुन गीते ॥९॥

दोहा—नारि कुमुदिनी अवध सर, रघुपति बिरह दिनेस ।
अस्त होइत बिकसित भेली, निरखि राम राकेस ॥
होअय सगुन सुभ बिबिध बिधि, बाजय गगन निसान ।
पुर नर नारि सनाथ कय, गेला भवन भगवान ॥९॥

केकयि केँ लजैलि प्रभु जानी । प्रथम तनिक गृह गेला भवानी ॥१॥
तनिका बोधि बहुत सुख देलनि । पुनि निज भवन गमन हरि केलनि ॥२॥
जखन कृपानिधि मंदिर गेला । पुर नर नारि सुखी सब भेला ॥३॥
बजा कहल द्विज केँ मुनिराजे । सुघड़ी सुदिन सकल अछि आजे ॥४॥
सब द्विज दियनु हरषि अनुसासन । रामचंद्र बैसथि सिंहासन ॥५॥
मुनि बसिष्ठ केर बचन सोहाओन । लागल बिप्रहिँ अति मनभाओन ॥६॥
कहथि बचन मृदु बिप्र अनेके । जग अभिराम राम अभिषेके ॥७॥
मुनिबर आब न देर लगाबिय । झट महराजहिँ तिलक कराबिय ॥८॥

दोहा—मुनिबर कहल सुमंत्र सौँ, सुनि चलला हरषाय ।
रथ अनेक बहु बाजि गज, तुरत सजौलनि जाय ॥

नवाह्न पारायण, विश्राम—८

जहँ तहँ दूत पठाय पुनि, मंगल द्रव्य मँगाय।
हर्ष समेत वसिष्ठ पद, माथ नमौलनि जाय ॥१०॥

अवधपुरी अति रुचिर सजौलनि । सुरगन सुमनक झड़ी लगौलनि ॥१॥
राम कहल सेवकहिँ बजा कय । प्रथम सखहिँ नहबाबह जा कय ॥२॥
बचन सुनति जहँ तहँ जन धाओल । सुग्रीवादिहिँ झट नहबाओल ॥३॥
पुनि करुनानिधि भरत बजाओल । निज कर राम जटा सोझराओल ॥४॥
प्रभु नहबौल बंधु तिहु साथे । भगतबछल कृपालु रघुनाथे ॥५॥
भरत भाग प्रभु मृदुल सोभावे । सेष कोटि सत गाबि न पाबे ॥६॥
तखन राम निज जटा खोलैलनि । गुरु अनुसासन माँगि नहैलनि ॥७॥
कय मज्जन प्रभु भूषन सज्जित । अंग निरेखि अनंग सय लज्जित ॥८॥

दोहा—जानकि केँ सब सासु झट, सादर पुनि नहबाय।
दिव्य बसन भूषन सुभग, अँग अँग देलनि सजाय॥
सोभित रामक बाम दिसि, रमा रूप गुन खानि।
सकल माय लखि हरषली, जनम सुफल निज जानि॥
सुनु खगेस तहि अवसरहिँ, ब्रह्मा सिव मुनि बृंद।
चढ़ि विमान अयला सकल, सुर देखय सुखकंद ॥११॥

प्रभु बिलोकि मुनि मन अनुरागल । तुरत दिव्य सिँहासन माँगल ॥१॥
रवि सम तेज बरनि नहि पाबी । बैसला राम द्विजहिँ सिर नाबी ॥२॥
जनकसुता समेत रघुराजे । भेल मुदित लखि मुनिक समाजे ॥३॥
वेद मंत्र सब द्विज उच्चारथि । नभ सुर मुनि जय जयति पुकारथि ॥४॥
प्रथम तिलक बसिष्ठ मुनि केलनि । पुनि सब बिप्रहिँ अनुमति देलनि ॥५॥
सुत बिलोकि हरषथि महतारी । पुनि पुनि आरति लेथि उतारी ॥६॥
बिप्रहिँ दान बिबिध बिधि देलनि । जाचक सकल अजाचक केलनि ॥७॥
सिंहासन त्रिभुवनपति हेरी । सुरगन गगन बजाओल भेरी ॥८॥

छंद—नभ दुंदुभी बाजय बिपुल गंधर्व किन्नर गावथी ।
कर अपसरागन नाच परमानंद सुर मुनि पावथी ॥
भरतादि अनुज बिभीषनांगद हनुमदादिक जे जते ।
गहि छत्र चामर ब्यजन धनु असि चरम सक्ति बिराजिते ॥
श्री सहित दिनकरबंसभूषन काम बहु छबि सोभिते ।
नव अंबुधर बर गात अंबर पीत सुर मन मोहिते ॥
मुकुटांगदादि बिचित्र भूषन सजल अँग अँग मे कते ।
अंभोज नयन बिसाल उरभुज निरख जे धन धन्य ते ॥

दोहा—सोभा ओहन समाज सुख, कहति न बनय खगेस ।
बरनथि सादर सेष श्रुति, से रस जान महेस ॥
असतुति भिन भिन सबहु कय, गेला सुर निज धाम ।
बंदी बेषेँ वेद पुनि, अयला जहँ श्री राम ॥
अति आदर सरवज्ञ प्रभु, केलनि कृपानिधान ।
जानल क्यो नहि मरम किछु, मुदित करथि गुनगान ॥१२॥

छंद—जय सगुन निरगुन रूप, रूप अनूप भूप सिरोमने ।
दसकंधरादि प्रचंड निसिचर हनल खल भुजबल घने ॥
अवतार नर दहि दुःख दारुन जगत भार हरैत छी ।
जय प्रनतपाल दयालु प्रभु जुत सक्ति नमन करैत छी ॥१॥
तव बिषम माया बस सुरासुर नाग नर अग जग जते ।
हे हरि भ्रमथि भव पथ अमित नित काल क्रम गुन बस कते ॥
से त्रिबिध दुख कर पार जहि सकरुन अहाँ निरखैत छी ।
भव खेद छेदन दच्छ रच्छिय राम नमन करैत छी ॥२॥

जे ज्ञान मान बिमत्त तव भवहरनि भक्ति न आदरे।
से पावि पद सुर दुरलभो खसइछ बिलोकी हम हरे॥
बिस्वास कय तव दास भय रह आस आनक जे तजी।
जपि नाम तव बिनु श्रम तरथि भव येहन प्रभु कें हम भजी॥३॥
जे चरन सिव अज पूज्य रज सुभ लहि तरलि मुनि भामिनी।
नख निरगता मुनि बंदिता सुरसरि त्रिलोकक पाविनी॥
ध्वज कुलिस अंकुस कंज जुत वन घुमल के कंटक कृते।
पद कंज द्वंद मुकुंद राम रमेस बंदेऽहं निते॥४॥
अब्यक्त मूलमनादि तरु त्वच चारि निगमागम भने।
षटकंध साखा पंच बीस अनेक पर्न सुमन घने॥
फल जुगल विधि कटु मधुर बेलि अकेलि जहि आश्रित रहे।
पल्लबित पुष्पित नबल नित संसार बिटप नमामहे॥५॥
जे ब्रह्म अज अद्वैत अनुभवगम्य ध्यावथि मन परे।
से कहथु जानथु भजी हिय हम तव सगुन जस नित हरे॥
करुनायतन प्रभु सद गुनाकर देव हम ई बर चही।
मन बचन कर्म बिकार तजि तव चरन रत हम नित रही॥६॥

दोहा—सबकें देखइत बेद सब, कयलनि बिनति उदार।
अंतरधान भेला पुनि, गेला ब्रह्म आगार॥
खगपति सुनु संकर तखन, अयला जहँ रघुबीर।
बिनय करथि गदगद गिरा, पुलकल सकल सरीर॥१३॥

छंद—जय राम रमा रमनं समनं। भवताप भयाकुल पाहि जनं।
अवधेस सुरेस रमेस विभो। सरनागति माँगिय पाहि प्रभो॥१॥

दस सीस विनासन बीस भुजा। कृत दूर महामहि भूरि रुजा।
रजनीचर बृंद पतंग छले। सरपावक तेज महा जरले ॥२॥
महि मंडल मंडन चारुतरं। धृत सायक चाप निषंग बरं।
मद मोह महा ममता रजनी। तम पुंज दिवाकर तेज अनी ॥३॥
मनजात किरात निपात कृते। मृग लोक कुभोग सरें निहते।
तकरा हति रच्छु अनाथ जने। बिषयाटवि भूलल मूढ़ मने ॥४॥
वहु रोग बियोगहिँ लोक मरै। भवदंघ्रिक आदर जेँ न करै।
भवसिंधु अगाधहिँ सैह पड़ै। पद पंकज जे नहि प्रेम करै ॥५॥
अति दीन मलीन दुखी मन हो। जनिका पद पंकज प्रीति न हो।
अवलंब अहाँक कथा जनिका। प्रिय संत अनंत सदा तनिका ॥६॥
नहि राग न लोभ न मान मदा। तनिका सम बैभव वा बिपदा।
तव सेबक तैँ रह मोद मुदा। मुनि त्यागथि जोग भरोस सदा ॥७॥
कय प्रेम सदा लय नेम भने। पद पंकज सेबथि सुद्ध मने।
बुझि बंदन गंजन एक समा। सब संत सुखी विचरंति छमा ॥८॥
मुनि मानस पंकज भृंग भजै। रघुवीर महारणधीर अजै।
तव नाम जपामि नमामि हरी। भवरोग महागद मान अरी ॥९॥
गुनसील कृपा परमायतनं। प्रनमामि निरंतर श्रीरमनं।
रघुनंद निकंदिय द्वंद्व घनं। महिपाल बिलोकिय दीनजनं ॥१०॥

दोहा—पुनि पुनि हम बर मँगइछी, हरषि दियऽ श्रीरंग।
पद सरोज अनपायिनी, भगति सदा सतसंग ॥
बरनि उमापति रामगुन, हरषि गेला कैलास।
कपिहिँ देओलनि प्रभु तखन, सब बिधि सुखप्रद बास ॥१४॥

सुनु खगपति ई कथा पावनी । त्रिविध ताप भव भय नसावनी ॥ १॥
महाराज कँर सुभ अभिषेके । सुनति लहथि नर बिरति बिवेके ॥ २॥
जे सकाम नर सुनथि जे गाबथि । सुख संपति नाना बिधि पाबथि ॥ ३॥
जग मे सुर दुरलभ सुख पा कय । अंत बसथि रघुपति पुर जा कय ॥ ४॥
बिरत बिमुक्त बिषयि सुनि काना । लह गति भगति संपदा नाना ॥ ५॥
रामकथा खग कहलहुँ बरनी । स्वमति बिलास त्रास दुख हरनी ॥ ६॥
बिरति बिवेक भगति दृढ़ करनी । मोह नदी लेल सुंदर तरनी ॥ ७॥
नित नव मंगल कोसल पूरे । हरष सतत सब लोकक ऊरे ॥ ८॥
नित नव प्रीति राम पद पंकज । सबकेँ जाहि नमथि सिब मुनि अज ॥ ९॥
जाचक केँ बहुबिधि पहिरौलनि । द्विज सब दान बिबिध बिधि पौलनि ॥१०॥

दोहा—ब्रह्मानंद निमग्न कपि, सबकेँ प्रभु पद प्रीति ।
निसि दिन बितति न बुझि पड़य, गेल मास षट बीति ॥१५॥

घर बिसरल सपनहुँ नहि सोहे । संतक मने जेना परद्रोहे ॥१॥
पुनि रघुपति सब सखहिँ बजौलनि । सादर सब सिर आबि नमौलनि ॥२॥
परम प्रीति सौँ लग बैसौलनि । भगत सुखद मृदु बचन सुनौलनि ॥३॥
सेबा हमर कयल अति भाई । मुँह पर कोन बिधि करू बड़ाई ॥४॥
तेँ अहँ हमरा अति प्रिय भेलहुँ । गृह सुख मम हेतुक तजि देलहुँ ॥५॥
अनुज राज संपति बैदेही । देह गेह परिबार सिनेही ॥६॥
ई सब प्रिय नहि अहँक समाने । मृषा न कही हमर ई बाने ॥७॥
सब केँ प्रिय सेवक ई नीती । हमरा अधिक दास पर प्रीती ॥८॥

दोहा—आब जाउ गृह सब सखा, भजब मोहि दृढ़ नेम ।
सदा सरबगत सरब हित, जानि करब अति प्रेम ॥१६॥

सुनि प्रभुबचन मगन सब भेला । के हम कहाँ बिसरि तन गेला ॥१॥
येकटक रहल जोरि कर सनमुख । अति अनुराग न सक किछु कहि मुख ॥२॥
परम प्रेम तनिकर प्रभु देखी । कहलनि बहु बिधि ज्ञान बिसेखी ॥३॥
प्रभु सनमुख किछु कहि नहि सकइछ । पुनि पुनि चरन कमल दिसि तकइछ ॥४॥

प्रभु पुनि भूषन बसन मँगाओल । अनुपम नाना रंग रँगाओल ॥५॥
सुग्रीबहिँ पहिनै पहिरौलनि । बसन भरत निज कर सरिओलनि ॥६॥
प्रभु प्रेरित लछुमन पहिराओल । लंकापति रघुपति मन भाओल ॥७॥
अंगद अचल बैसले रहले । प्रीति देखि प्रभु किछु नहि कहले ॥८॥

दोहा—जामबंत नीलादि केँ, पहिरौलनि रघुनाथ ।
हिय धय रामक रूप सब, चलला नमि पद माथ ॥
पुनि अंगद उठि सिर नमा, सजल नयन करजोरि ।
अति बिनीत बजला बचन, मानु प्रेम रस बोरि ॥१७॥

सुनु सरबज्ञ कृपा सुखसिंधो । दीन दयाकर आरतबंधो ॥१॥
नाथ बालि निज मरनक बेला । कोर अहीँक राखि मोहि गेला ॥२॥
असरन सरन बिरुद उर धारी । तजू न मोहि भगत हितकारी ॥३॥
लहीँ हमर प्रभु गुरु पितु माता । जाउ कहाँ तजि पद जलजाता ॥४॥
अहीँ बिचारि कहू नरराजे । प्रभु तजि कोन हमर घर काजे ॥५॥
बालक ज्ञान बुद्धि बल हीने । राखू सरन नाथ जन दीने ॥६॥
भवनक नीच टहल सब करबे । पद पंकज बिलोकि भव तरबे ॥७॥
ई कहि प्रभुक चरन खसलाहे । कहू नाथ नहि निज घर जाहे ॥८॥

दोहा—अंगद बचन बिनीत सुनि, रघुपति करुना ऐन ।
उठा लगौलनि हृदय प्रभु, जल भरि राजिब नैन ॥
निज उर माला बसन मनि, बालितनय पहिराय ।
बिदा कयल भगवान हुनि, बहुत प्रकार बुझाय ॥१८॥

भरत अनुज सौमित्र समेते । अरियातलनि भगत कृत चेते ॥ १॥
अंगद हृदय प्रेम नहि थोरे । घुरि घुरि चितबथि रामक ओरे ॥ २॥
बेरि बेरि कर दंड प्रनामे । मन ई रहय कहथु मोहि रामे ॥ ३॥
रामक बोलि चालि अबलोकन । बिहुँसि मिलन सुमिरथि पुनि पुनि मन ॥ ४॥
प्रभु रुखि देखि बिनय बहु भाखी । चलला हिय पद पंकज राखी ॥ ५॥
अति आदर अरियाति कपिक गन । भरत भाइ सँग फिरला उनमन ॥ ६॥

सुग्रीवक पद गहि हनुमाने । बिनती कयल अनेक बिधाने ॥ ७॥
दिन दस कय रघुपति पद सेबा । देखब चरन अहँक पुनि देबा ॥ ८॥
पुन्य पुंज अहँ पवनकुमारे । सेबू नाय कृपा आगारे ॥ ९॥
ई कहि कपि सब चलल तुरंते । अंगद कहल सुनह हनुमंते ॥१०॥

दोहा—प्रभु सौं कहबनि दंडबत, कही जोड़ि कर भाय ।
हमर सुरति रघुनायकहिँ, पुनि पुनि देबनि कराय ॥
ई कहि चलला बालिसुत, घुड़ि अयला हनुमंत ।
तनिक प्रीति प्रभु सौं कहल, मगन भेला भगवंत ॥
पवि सौं बढ़ल कठोर अति, मृदु सुमनहुँ सौं छैनि ।
रामक चित्त खगेस कहु, ककरा बुझि पड़तैनि ॥१९॥

पुनि कृपाल लेल बजा निषादे । देलनि भूषन बसन प्रसादे ॥१॥
जाउ भवन मम सुमिरन करबे । मन क्रम बचन धरम अनुसरबे ॥२॥
अहँ मम सखा भरत सम भ्राता । अब जैब पुर राखब ताता ॥३॥
बचन सुनति उपजल सुख भारी । पड़ला पद भरि लोचन बारी ॥४॥
चरन नलिन उर धय गृह आओल । प्रभु सोभाब परिजनहिँ सुनाओल ॥५॥
रघुपति चरित देखि पुर बासी । पुनि पुनि कहथि धन्य सुखरासी ॥६॥
राम राज्य भेने त्रैलोके । हरषित भेल गेल सब सोके ॥७॥
क्यो ककरो सौं बैर न करइछ । राम प्रताप बिषमता हरइछ ॥८॥

दोहा—बरनाश्रम निज निज धरम, निरत बेद पथ लोग ।
चलय सतत पावय सुखे, नहि भय रोग न सोक ॥२०॥

दैहिक दैविक भौतिक तापे । राम राज्य ककरो नहि ब्यापे ॥१॥
सब नर करय परस्पर प्रीती । चलय स्वधरम निरत श्रुति नीती ॥२॥
चारू चरन धरम सब ठामे । जग मे सपनहुँ अघक न नामे ॥३॥
राम भगति रत सब नर नारी । सकल परम गति केर अधिकारी ॥४॥
अल्प मृत्यु नहि ककरो पीड़ा । सब सुंदर सब बिरुज सरीरा ॥५॥
क्यो न दरिद्र न दुखी न दीने । नहि क्यो अबुध न लच्छनहीने ॥६॥

सब निरदंभ धरम रत पूनी । नर श्रो नारि चतुर सब गूनी ॥७॥
सब गुनज्ञ पंडित सब ज्ञानी । सब कृतज्ञ नहि कपट विधानी ॥८॥

दोहा—राम राज सचराचर, जग मे सुनू खगेस ।
काल करम गुन प्रकृति कृत, ककरहु नहि दुख लेस ॥२१॥

सप्त सिंधु मेखल महि माँझे । एक भूप कोसल रघुराजे ॥१॥
भुवन अनेक राम प्रति जनिका । ई प्रभुता किछु बहुत न तनिका ॥२॥
से महिमा जौं प्रभुक बिचारी । बरनब येहन हीनता भारी ॥३॥
से महिमा खगेस जे जानल । सेहो एहि चरित रति मानल ॥४॥
से बुझैक फल अछि ई लीला । कहथि महा मुनिबर दम सीला ॥५॥
राम राज्य कैर सौख्य संपदा । बरनि न सकथि फनीस सारदा ॥६॥
सब उदार सब पर उपकारी । विप्र चरन सेबक नर नारी ॥७॥
नर जत एक नारि व्रत धारी । से मन बच क्रम पति हितकारी ॥८॥

दोहा—दंड जती कर भेद जहँ, नर्तक नृत्य समाज ।
जीतिय मन येहने सुनी, रामचंद्र कैर राज ॥२२॥

सदा फुलाय फरय तरु कानन । रहय एक सँग गज पंचानन ॥१॥
खग मृग सहज बैर बिसरा कय । बसय परस्पर प्रीति बढ़ा कय ॥२॥
कूजय खग मृग नाना बृंदे । अभय चरय बन करय अनंदे ॥३॥
सीतल सुरभि पवन बह मंदे । गुंजत अलि लय चल मकरंदे ॥४॥
लता बिटप मँगइत मधु चुअबय । इच्छा होइत धेनु पय चुअबय ॥ ५॥
ससि संपन्न सदा रह धरनी । त्रेता भेल कृतजुग कैर करनी ॥ ६॥
गिरि प्रगटौल बिबिध मनि खानी । जगदातमा भूप जग जानी ॥ ७॥
सरिता सकल बहय बर बारी । सीतल अमल स्वाद सुखकारी ॥ ८॥
सागर निज मरजादा रहइछ । रखथि रतन तट पर नर लहइछ ॥ ९॥
सरसिज संकुल सकल तड़ागे । अति प्रसन्न दस दिसा बिभागे ॥१०॥

दोहा—बिधु महिपूर मयूख सौं, रवि तप जतबे काज ।
मँगने बारिद दैछ जल, रामचंद्र कैर राज ॥२३॥

अगनित अस्वमेध प्रभु केलनि । बहुत दान द्विजगन कें देलनि ॥ १॥
श्रुति पथ पालक धरम धुरंधर । गुनातीत ओ भोग पुरंदर ॥ २॥
पति अनुकूल सदा रह सीता । सोभा खानि सुसील बिनीता ॥ ३॥
कृपानिधानक प्रभुता जानी । सेबथि चरन कमल मन आनी ॥ ४॥
जद्यपि गृह सेवक सेबकिनी । बिपुल सकल सेवा बिधि निपुनी ॥ ५॥
निज कर गृह परिचरजा करथी । रामचंद्र आज्ञा अनुसरथी ॥ ६॥
जहि बिधि कृपासिंधु सुख मानथि । सैह कर श्री सेवा बिधि जानथि ॥ ७॥
कौसल्यादि सासु घर अपने । सेबथि तनि न मान मद सपने ॥ ८॥
उमा रमा ब्रह्मादि बंदिता । जगदंबा संतत अनिंदिता ॥ ९॥

दोहा—कृपा कटाच्छक कोर जनि, चाहथि सुर समुदाय ।
सैह राम पद कंज रति, करथि स्वभाव बिहाय ॥२४॥

सेवथि सानुकूल सब भ्राता । रति अति राम चरन जलजाता ॥१॥
प्रभु मुख कमल बिलोकति रहथी । कखनहु किछु कृपालु मोहि कहथी ॥२॥
राम करथि भ्राता पर प्रीती । नाना भाँति सिखाबथि नीती ॥३॥
रहथि परम हरषित पुर लोगे । करथि सकल सुर दुर्लभ भोगे ॥४॥
अहनिस बिधिहिँ मनाबति रहथी । श्री रघुवीर चरन रति चहथी ॥५॥
दुइ सुत सुंदर सीता पाओल । लब ओ कुस पुरान श्रुति गाओल ॥६॥
दुहु बिजयी बिनयी गुनमंदिर । हरि प्रतिबिंब मानु अति सुंदर ॥७॥
सकल भाय कें दुइ दुइ पूते । रूप सील गुन भरल बहूते ॥८॥

दोहा—ज्ञान गिरा गोतीत अज, माया मन गुन पार ।
सैह सच्चिदानंद घन, कर नर चरित उदार ॥२५॥

प्रात काल कय सरजू मज्जन । बैसथि सभा संग द्विज सज्जन ॥१॥
बेद पुरान बसिष्ठ बखानथि । सुनथि राम जद्यपि सब जानथि ॥२॥
सकल अनुज सँग भोजन करथी । देखि माय सब सुख सौं भरथी ॥३॥
दूनू भाय भरत रिपुसूदन । जाथि समेत पवनसुत उपबन ॥४॥
पूछथि बैसि राम गुन गाथा । हनुमत कहथि सुमति मथि माथा ॥५॥
सुनति बिमल गुन अति सुख पावथि । बहुरि बहुरि कय बिनय कहावथि ॥६॥

सबहुक गृह गृह होअय पुराना । राम चरित पावन बिधि नाना ॥७॥
कर नर नारि राम गुन गाने । बितय राति दिन होअय न भाने ॥८॥

दोहा—**अवधपुरी बासी सभक, सुख संपदा समाज ।**
सहस सेस नहि कहि सकथि, जहँ नृप राम बिराज ॥२६॥

नारदादि सनकादि मुनीसा । दरसन हेतु कोसलाधीसा ॥१॥
दिन प्रति सकल अयोध्या आवथि । देखि नगर बिराग बिसरावथि ॥२॥
जात रूप मनि रचित अटारी । नाना रंग रुचिर गच ढारी ॥३॥
चहु दिसि पुरक कोट अति सुंदर । रचल कँगूरा रंग रंग बर ॥४॥
नव ग्रह निकर अनीक बना कय । जनु घेरल अमरावति आ कय ॥५॥
महि बहुरंग रचित गच काचे । जे बिलोकि मुनिबर मन नाचे ॥६॥
धवल धाम नभ चुंबनकारी । कलस भानु रबि ससि दुति हारी ॥७॥
बहु मनि रचित झरोखा भ्राजय । गृह गृह प्रति मनि दीप बिराजय ॥८॥

छंद—**मनि दीप राजय भवन भ्राजय रचल बिद्रुम देहरी ।**
जनि विधि रचल मनि खाम्ह भीत सुवर्न मरकत कत भरी ॥
सुंदर मनोहर भवन बिस्तृत रुचिर फटिकक आँगने ।
प्रति द्वार द्वार कपाट पुरट जड़ैल लस बज्रहिँ घने ॥

दोहा—**सुभग चित्रसाला रचल, गृह गृह लिखल बनाय ।**
राम चरित जे मुनि लखथि, तनि मन लैछ चोराय ॥२७॥

सुमन बाटिका सबहु लगाओल । बिबिध भाँति कय जतन बनाओल ॥१॥
लता ललित सोभित बहु जाती । फूलय सदा बसंतक भाँती ॥२॥
गुंजय मधुकर मुखर मनोहर । मारुत त्रिबिध बहय नित सुंदर ॥३॥
सिसुगन पोषित खग बहु राजय । उड़इत सुभग मंजु धुनि बाजय ॥४॥
सारस परवा हंस मयूरे । भवन भवन पर सोभय पूरे ॥५॥
जतय ततय निज छाया हेरी । करय नाच कूजय कत बेरी ॥६॥
सुक सारिका पढ़ाबय बालक । कहह राम रघुपति जन पालक ॥७॥
सब बिधि सुंदर राज दुआरे । बीथी चौहट रुचिर बजारे ॥८॥

छंद—बाजार भल अति अकथ बिनु गथ बस्तु जत पावी सदा ।
जहँ भूप रमा निबास ततयक बरनि सकके संपदा ॥
बैसल बजाज सराफ बनिक कुबेर सम सोभय क्ते ।
सब सुखी सब सच्चरित सुंदर सिसु जरठ नर तिय जते ॥

दोहा—उत्तर दिसि सरजू बहथि, निर्मल जल गंभीर ।
बान्हल मनहर घाट सब, कनियो पाँक न तीर ॥२८॥

दूर फराक घाट अभिरामे । पिबय बाजि गज जल जहि ठामे ॥१॥
पनिघट परम मनोहर नाना । तहाँ न पुरुष करथि असनाना ॥२॥
राजघाट सब बिधि बर सुंदर । तहाँ नहाथि चारु बरनक नर ॥३॥
तीर तीर बहु देबक मंदिर । तकर चतुर दिसि उपवन सुंदर ॥४॥
कतहु कतहु सरि तीर उदासी । बसथि ज्ञान रत मुनि सन्यासी ॥५॥
तीर तीर तुलसिका सोहाओन । बहु मुनि रोपल बहु मनभाओन ॥६॥
पुर सोभा किछु होअय न बरनी । बाहर पुरी परम रुचि करनी ॥७॥
देखति पुरी अखिल अघ भागे । बन उपवन बापिका तड़ागे ॥८॥

दोहा—बापी तड़ाग अनूप कूप मनोहरायत सोह यो ।
सोपान सुंदर नीर निरमल देखि सुर मुनि मोह यो ॥
बहुरंग कंज अनेक खग कूजय मधुप गुंजार यो ।
आराम रम्य पिकादि खग रब मानु पथिक हँकार यो ॥

दोहा—रमानाथ राजा जतय, पुर बरनल की जाय ।
अनिमादिक सुख संपदा, पसरल अवध सोहाय ॥२९॥

जहँ तहँ नर रघुपति गुन गावथि । बैसि परस्पर यैह सिखावथि ॥ १॥
भजह प्रनत प्रतिपालक रामहिँ । सोभा सील रूप गुनधामहिँ ॥ २॥
जलज बिलोचन स्यामल गातहिँ । पलक नयन इव सेवक त्रातहिँ ॥ ३॥
धृत सर रुचिर चाप तूनीरहिँ । संत कंज बन रवि रनधीरहिँ ॥ ४॥

काल कराल ब्याल खग स्वामिहिँ । नमह॰अकाम ममतहत रामहिँ ॥ ५॥
लोभ मोह मृग जूथ किरातहिँ । मनसिज करि हरि जन सुखदातहिँ ॥ ६॥
संसय सोक निविड़ तम भानुहिँ । दनुज गहन बन दहन कृसानुहिँ ॥ ७॥
जनकसुता समेत रघुबीरहिँ । किय न भजह भंजन भवभीरहिँ ॥ ८॥
बहु बासना मसक हिमरासिहिँ । सदा एक रस अज अबिनासिहिँ ॥ ९॥
मुनि रंजन भंजन महि भारहिँ । तुलसि दास केँर प्रभुहिँ उदारहिँ ॥१०॥

दोहा—नगरक येहि बिधि नारि नर, करथि राम गुन गान ।
सानुकूल सब पर रहथि, संतत कृपानिधान ॥३०॥

रामप्रताप भानु जहिया सौँ । उगल प्रबल खगपति तहिया सौँ ॥१॥
पुरल प्रकास रहल तिहुलोके । बहुतहिँ सुख बहुतहिँ मन सोके ॥२॥
छी कहैत जे छल सोकायल । प्रथम अविद्या निसा नसायल ॥३॥
जहँ तहँ पाप उलूक नुकैले । काम क्रोध कैरब सँकुचैले ॥४॥
बिबिध करम गुन काल सोभाबे । ई सब चकबा सुख नहि पावे ॥५॥
मत्सर मान मोह मद चोरे । येकर न करनी कोनहुँ ओरे ॥६॥
धरम तड़ाग ज्ञान बिज्ञाना । ई पंकज बिकसल बिधि नाना ॥७॥
सुख संतोष बिराग बिबेके । बिगत सोक ई कोक अनेके ॥८॥

दोहा—ई प्रताप रवि जकर उर, जखन करैछ प्रकास ।
पाछुक बाढ़य प्रथम जे, कहल हैछ से नास ॥३१॥

राम एक दिन बंधु सहीते । संग पवनसुत परम पिरीते ॥१॥
देखय गेला उपबन सुंदर । तरु कुसुमित सब नबदल मनहर ॥२॥
मुनि सनकादि सुअबसर जानी । येला सील गुन तेजक खानी ॥३॥
ब्रह्मानंद सदा लवलीने । देखइत बालक बहु कालीने ॥४॥
रूप धेने जनि चारू बेदे । समदरसी पुनि बिगत बिभेदे ॥५॥
गगन बसन हुनि ब्यसन पवित्रे । सुनथि जतय रघुपतिक चरित्रे ॥६॥
ततय बसथि सनकादि भवानी । जहँ घटसंभव मुनिबर ज्ञानी ॥७॥
राम कथा मुनि कहलनि बरनी । ज्ञान जोनि पावक जनि अरनी ॥८॥

दोहा—मुनि अबैत लखि दंडबत, कयल राम हरषाय।
स्वागत कय प्रभु पीत पट, आसन देल ओछाय ॥३२॥

तीनू भाय दंडबत केलनि। सहित पवनसुत सुख बड़ मेलनि ॥१॥
मुनि रघुपति छवि अतुल बिलोकी। भेला मगन मन भेलनि न रोकी ॥२॥
स्यामल गात सरोरुह लोचन। सुंदरता मंदिर भव मोचन ॥३॥
यैकटक लखथि निमेष न लाबथि। कर जोड़ने प्रभु सीस नबाबथि ॥४॥
तनिक दसा लखि कय रघुवीरे। स्रवय नयन जल पुलक सरीरे ॥५॥
कर गहि प्रभु मुनिबर बैसौलनि। परम मनोहर बचन सुनौलनि ॥६॥
परम धन्य हम भेलहुँ आजे। तव दरसन अघहर मुनिराजे ॥७॥
बड़ भागेँ पाबी सतसंगे। बिना प्रयास होअय भव भंगे ॥८॥

दोहा—संत संग अपबर्ग पथ, कामि संग भव पंथ।
बरनथि कोविद संत कवि, श्रुति पुरान सद्ग्रंथ ॥३३॥

सुनि प्रभु बचन हरष बड़ पाओल। पुलकित तन मुनि असतुति गाओल ॥१॥
जय भगवंत अनंत अनामय। अनघ अनेक एक करुनामय ॥२॥
जय निर्गुन जय जय गुन सागर। सुख मंदिर सुंदर अति नागर ॥३॥
जय इंदिरारमन बसुधाधर। अनुपम अज अनादि सोभाकर ॥४॥
ज्ञान निधान अमान मानप्रद। पाबन सुजस पुरान वेद बद ॥५॥
तज्ञ कृतज्ञ अज्ञता भंजन। नाम अनेक अनाम निरंजन ॥६॥
सरब सरब गत सब उर आलय। बसी निरंतर मोहि परिपालय ॥७॥
द्वंद्व बिपति भव फंद बिभंजिय। हिय बसि राम काम मद गंजिय ॥८॥

दोहा—परमानंद कृपायतन, मन परिपूरन काम।
प्रेम भगति अनपायिनी, दियऽ मोहि श्रीराम ॥३४॥

दियऽ भगति रघुपति अति पावन। त्रिबिध ताप भव दाप नसावन ॥१॥
प्रनत काम सुरधेनु कल्पतरु। भय प्रसन्न दीय प्रभु ई बरु ॥२॥
भव बारिधि कुंभज रघुनायक। सेबइत सुलभ सकल सुखदायक ॥३॥
मन संभव दारुन दुख टारू। दीनबंधु समता बिस्तारू ॥४॥

आस त्रास इरषादि निवारक । बिनय बिबेक बिरति बिस्तारक ॥५॥
भूप मौलि मनि मंडन धरनी । दियऽ भगति संसृति सरि तरनी ॥६॥
मुनि मन मानस हंस निरंतर । चरन कमल बंदित अज संकर ॥७॥
रघुकुल केतु सेतु श्रुति रच्छक । काल करम सोभाब गुन भच्छक ॥८॥
तारन तरन हरन सब दूषन । तुलसिदास प्रभु त्रिभुबन भूषन ॥९॥

दोहा—असतुति बारंबार कय, माथ सप्रेम नमाय।
सनक आदि गेल ब्रह्म गृह, अति अभीष्ट बर पाय ॥३५॥

गेला ब्रह्मलोक सनकादिक । राम चरन प्रनमल भरतादिक ॥१॥
पुछइत प्रभु सौँ सब सकुचै छथि । मारुत सुत दिसि सबहु तकै छथि ॥२॥
सुनय चहै छथि प्रभु मुख बानी । जे सुनि होअय सकल भ्रम हानी ॥३॥
अंतरजामी प्रभु सब बुझलनि । कहु हनुमत की थिक प्रभु पुछलनि ॥४॥
हाथ जोरि कहलनि हनुमंते । दीनदयाल सुनू भगवंते ॥५॥
नाथ भरत किछु पुछय चहै छथि । प्रस्न करति मन मे सकुचै छथि ॥६॥
मम सोभाब अहँ जानी कपिबर । भरतहिँ मोहि किछुओ नहि अंतर ॥७॥
सुनि बच भरत गहल प्रभु चरने । सुनू नाथ प्रनतारति हरने ॥८॥

दोहा—नाथ न मोहि संदेह किछु, सपनहुँ सोक न मोह।
से केवल प्रभुहिक कृपेँ, कृपानंद संदोह ॥३६॥

छमु ढिठाइ येक किरपाखानी । हम सेवक अहँ जन सुखदानी ॥१॥
रघुपति संतक महिमा गाने । करय बिबिध बिधि वेद पुराने ॥२॥
तनि बड़ाइ अहँ श्रीमुख भाखी । तनिका उपर प्रीति अति राखी ॥३॥
चाही सुनय तनिक प्रभु लच्छन । कृपासिंधु गुन ज्ञान बिचच्छन ॥४॥
संत असंत भेद फरिछा कय । प्रनतपाल मोहि कहू बुझा कय ॥५॥
संतगनक लच्छन सुनु भ्राता । अगनित श्रुति पुरान बिख्याता ॥६॥
संत असंतक करनी येहने । चानन प्रति कर कुड़हरि जेहने ॥७॥
बंधु परसु काटय तरु चानन । भर निज गुन सुगंध तहि आनन ॥८॥

दोहा—तैँ से सुर सिर पर चढ़य, जग बल्लभ श्रीखंड।
घनक चोट सह अनल जरि, यैह परसु मुख दंड ॥३७॥

विषय अलंपट सील गुनाकर। पर दुख दुख सुख सुख देखला पर ॥१॥
सम अभूत रिपु बिमद बिरागी। लोभामरष हरष भय त्यागी ॥२॥
कोमल चित्त दीन पर दाया। मन बच क्रम मम भगति अमाया ॥३॥
सबहिँ मानप्रद स्वयं अमानी। भरत प्रान सम मम से प्रानी ॥४॥
बिगत काम मम नाम परायन। सांति बिरति बिनती मुदितायन ॥५॥
सीतल सरल सोभाव मयित्री। द्विज पद प्रीति धरम जनयित्री ॥६॥
जकरा उर बस ई सब लच्छन। बुझिय सत्य से संत सतत छन ॥७॥
सम दम नियम नीति नहि टारथि। परुष बचन कहियो न उचारथि ॥८॥

दोहा—निंदा असतुति उभय सम, ममता मम पद कंज।
से जन समम प्रान प्रिय, गुन मंदिर सुख पुंज ॥३८॥

सुनू सोभाव असंतक भाखी। अमहुँ न संगति तनि सौँ राखी ॥१॥
तकर संग सदिखन दुख आलय। जेना हड़ही कपिला घालय ॥२॥
खलक हृदय अति ताप बिसेखी। जरय सदा पर संपति देखी ॥३॥
जहँ कहुँ परनिंदा सुनि आबय। हरषय मानु पड़ल निधि पाबय ॥४॥
काम क्रोध मद लोभ परायन। निरदय कपटी कुटिल मलायन ॥५॥
फुसिए देबो फुसिए पैबो। फुसिए जलखै फुसिए खैबो ॥६॥
बानी मधुर मयूर समाने। खाय महा अहि हृदय पखाने ॥७॥

दोहा—परद्रोही परदार रत, परधन पर अपबाद।
से नर पामर पापमय, तन धयने मनुजाद ॥३९॥

लोभे ओढ़ना लोभे आसन। सिस्नोदर पर जमपुर त्रास न ॥१॥
जौँ ककरो बड़ाइ सुनि पाबय। हकमय जेना जड़ैया आबय ॥२॥
ककरो जखन देखै अछि बिपती। सुखी होइछ मानू जग नृपती ॥३॥
स्वारथ रत परिबार बिरोधी। लंपट काम लोभ अति क्रोधी ॥४॥

माय बाप गुरु बिप्र न मानय । अपनो जाय परहुँ कें हानय ॥५॥
मोहक बस परद्रोह बढ़ावय । संत संग हरिकथा न भावय ॥६॥
अबगुन सिंधु मंद मति कामी । वेद बिदूषक परधन स्वामी ॥७॥
बिप्र द्रोह पर द्रोह बिसेषे । दंभ कपट जिय धेनहु सुबेषे ॥८॥

दोहा—कृत त्रेता मे येहन नहि, मनुज अधम खल नीच ।
किछु किछु द्वापर युगहु मे, अधिक होयत कलि बीच ॥४०॥

परहित सरिस धरम नहि आने । पाप न पर पीड़ाक समाने ॥१॥
सकल पुरान वेद मत एहे । कहल तात बुध जानथि सेहे ॥२॥
नर सरीर धय जे पर पीरा । करय से सहय महा भव भीरा ॥३॥
करय मोह वस बहु अघ लोके । स्वारथ रत बिगड़ल परलोके ॥४॥
काल स्वरूप तकर हम भ्राता । सुभ ओ असुभ करम फल दाता ॥५॥
परम चतुर जे येहन बिचारी । भजथि मोहि बुझि भव दुख भारी ॥६॥
तजि कय करम सुभासुभ दायक । भजथि मोहि सुर नर मुनिनायक ॥७॥
संत असंत केर गुन भाखल । से न पड़थि भव जे चिन्हि राखल ॥८॥

दोहा—मायाकृत सुनु तात अछि, गुन ओ दोष अनेक ।
गुन येहि मे देखी न दुहु, देखब थिक अबिबेक ॥४१॥

अनुज सकल सुनि श्रीमुख बयने । हरषित प्रेम समाय हृदय ने ॥१॥
करथि बिनय अति बारंबारे । हनुमानक हिय हरष अपारे ॥२॥
पुनि रघुपति गेला निज मंदिर । नब नब चरित करथि नित सुंदर ॥३॥
बेरि बेरि नारद मुनि आवथि । चरित पुनीत राम कॅर गाबथि ॥४॥
नित नब चरित बिलोकथि मूनी । ब्रह्म लोक जा सुनबथि पूनी ॥५॥
सुनि बिरंचि सुख पाब महाने । पुनि पुनि तात करू गुनगाने ॥६॥
मुनि सनकादि ब्रह्मरत जइयो । सब नारदहिँ सराहथि तइयो ॥७॥
सुनि गुन गान समाधि बिसारी । सादर सुनथि परम अधिकारी ॥८॥

दोहा—जीवनमुक्तो ब्रह्म पर, चरित सुनथि तजि ध्यान ।
जनिका नहि रति हरिकथा, तनिक हृदय पाषान ॥४२॥

येक दिन बजबौलनि रघुनाथे । ऐला गुरु द्विज पुरजन साथे ॥१॥
बैसला गुरु मुनि ओ द्विज सज्जन । बजला बचन भगत भवभंजन ॥२॥
सुनू सकल पुरजन मम बानी । कही न किछु ममता उर आनी ॥३॥
नहि अनीति नहि प्रभुता लेसे । सुनि से करू बुझी जे बेसे ॥४॥
सेबक ओ प्रियतम मम सेहे । अनुसासन मम मानय जेहे ॥५॥
जौँ हम भाखी तात अनीती । तौँ बरजिय मोहि करिय न भीती ॥६॥
बड़ भागेँ मानुष तन पाओल । सुर दुरलभ ग्रंथो सब गाओल ॥७॥
साधन धाम मोच्छ कॆर द्वारे । पाबि न जे परलोक सम्हारे ॥८॥

दोहा—से परत्र दुख पबै अछि, सिर धुनि धुनि पछताय ।
काल करम ओ ईस्वरहुँ, मिथ्या दोष लगाय ॥४३॥

येहि तन कॆर फल बिषय न भाई । स्वर्गो स्वल्प अंत दुखदाई ॥१॥
नरतन पाबि बिषय मन देअय । पलटि सुधा से सठ बिष लेअय ॥२॥
कौखन क्यो न कहय भल ताही । पारस तजि जे गुंजा ग्राही ॥३॥
आकर चारि लच्छ चौरासी । जोनि भ्रमय ई जिब अबिनासी ॥४॥
बौआइछ नित माया प्रेरल । काल करम सोभाब गुन घेरल ॥५॥
कहियो कय करुना नर देहे । देथि ईस बिनु हेतु सिनेहे ॥६॥
भव बारिधिक पोत नर गाते । हमर अनुग्रह सम्मुख बसाते ॥७॥
करनधार सद्गुरु दृढ़ तरनी । दुरलभ साज सुलभ मिल धरनी ॥८॥

दोहा—जे न तरय भवसिंधु नर, येहनहु लहि संयोग ।
से कृत निंदक मंदमति, आत्माहन गति जोग ॥४४॥

जौँ अहँ परलोकक सुख चाही । सुनि मम बचन हृदय धरु थाही ॥१॥
सुलभ सुखद मारग ई भ्राता । भगति हमर पुरान श्रुति ख्याता ॥२॥
ज्ञान अगम प्रत्यूह अनेको । साधन कठिन न मन किछु टेको ॥३॥
कयने बहुत कष्ट क्यो पाबय । सेहो भगति बिनु मोहि न भाबय ॥४॥
भगति स्वतंत्र सकल गुन खानी । बिनु सतसंग न पाबय प्रानी ॥५॥
पुन्य पुंज बिनु मिलथि न संते । सत संगति संसृति कॆर अंते ॥६॥

पृन्य एक जग आन न जानी । द्विज पद पूजन मन क्रम बानी ॥७॥
मानुकूल तनि पर मुनि देवा । जे तजि कपट करथि द्विज सेवा ॥८॥

दोहा—कही एक निज गुपुत मत, सबहु जोरि कर आब ।
बिनु सिव भजने मम भगति, कहियो नर नहि पाब ॥४५॥

कहू भगति पथ कोन प्रयासे । जोग न मख जप तप उपबासे ॥१॥
सरल सोभाव न टेढ़ी मन मे । जथालाभ तिरपित सब छन मे ॥२॥
इमर कहा पुनि कर नर आसे । कहु तकरा कहँ मम बिस्वासे ॥३॥
बहुत बढ़ाय कहू की बाता । येँहि आचरन बस्य हम ताता ॥४॥
बैर न बिग्रह आस न त्रासा । तनि हित सुखद सदा सब आसा ॥५॥
अनारंभ अनिकेत अमानी । अनघ अरोष दच्छ बिज्ञानी ॥६॥
प्रीति सदा सज्जन संसर्गे । तृन सम बिषय स्वर्ग अपवर्गे ॥७॥
भगति पच्छ हठ नहि सठ चाली । कयल दूर जत कुतरक जाली ॥८॥

दोहा—मम गुन ग्राम ओ नाम रत, गत ममता मद मोह ।
सैह जनै छथि तकर सुख, परानंद संदोह ॥४६॥

सुनति सुधा सम बचन राम केर । गहल सबहु पद कृपाधाम केर ॥१॥
अहँ मम जननि जनक गुरु बंधू । प्रानहु सौँ प्रिय करुनासिंधू ॥२॥
तन धन धाम राम हितकारी । सब बिधि अहँ प्रनतारति हारी ॥३॥
क्यो न येँहन सिख अहँ बिनु दै अछि । मातु पितो रत स्वार्थ रहै अछि ॥४॥
हेतु रहित जग जुग उपकारी । अहँ अहाँक सेवक असुरारी ॥५॥
जग स्वारथक मीत प्रभु देखी । सपनहुँ नहि परमारथ लेखी ॥६॥
सबहुक बचन प्रेम रस सानल । सुनि रघुनाथ हरष हिय मानल ॥७॥
निज निज गृह गेल पाबि निदेसे । बरनति प्रभुक बचन सबिसेसे ॥८॥

दोहा—अवध निवासी नारि नर, उमा कृतारथ रूप ।
ब्रह्म सच्चिदानंद घन, रघुनायक जहँ भूप ॥४७॥

ऐला बसिष्ठ एक दिन धामे । सुख निधि राम सोभ जहि ठामे ॥१॥
अति आदर रघुनायक केलनि । पद पखारि पादोदक लेलनि ॥२॥

कहथि जोरि कर मुनि सुनु रामे । बिनय हमर किछु करुनाधामे ॥३॥
अहँक आचरन पुनि पुनि देखी । होअय हृदय मम मोह बिसेखी ॥४॥
वेदो जान न महिम अपारे । भगवन कहू कोन परकारे ॥५॥
उपरोहिती करम अति मंदे । वेदै पुरान सुमृति कर निंदे ॥६॥
छलहुँ न लैत कहल विधि मोही । लाभ होयत सुत आगाँ तोही ॥७॥
परमातमा ब्रह्म नर रूपे । हयता रघुकुलभूषन भूपे ॥८॥

दोहा—तखन बिचारल हृदय हम, जोग जज्ञ ब्रत दान ।
जहि लेल करी से पैब हम, धरम न येहि सम आन ॥४८॥

जप तप नियम जोग निज धरमे । श्रुति संभव नाना सुभ करमे ॥१॥
ज्ञान दया दम तीरथ मज्जन । जहँ धरि धरम कहल श्रुति सज्जन ॥२॥
आगम निगम पुरान अनेके । पढ़इक सुनइक फल प्रभु एके ॥३॥
तव पद पंकज प्रीति निरंतर । सब साधन केर ई फल सुंदर ॥४॥
मल नहिं छुटय मलहिँ सौँ धोने । घृत कि पाव क्यो बारि महोने ॥५॥
प्रेम भगति जल बिनु रघुराये । अभ्यंतर मल कखनो न जाये ॥६॥
से सरबज्ञ तज्ञ से पंडित । से गुन गृह बिज्ञान अखंडित ॥७॥
दच्छ सकल लच्छन जुत से टा । पद सरोज रति राखथि जे टा ॥८॥

दोहा—राम कृपा कय एक बर, माँगी दिय प्रभु एह ।
जनम जनम प्रभु पद कमल कहियो घटय न नेह ॥४९॥

कहि बसिष्ठ मुनि गृह कैल गमने । कृपानिधिक मन भेल अति मगने ॥१॥
हनूमान भरतादिक भ्राता । संग लेलनि सेबक सुखदाता ॥२॥
पुनि कृपालु पुर बाहर गेला । गजरथ तुरग मँगबइत भेला ॥३॥
देखि कृपा कय सबहिँ सराहल । देल उचित जे किछु जे चाहल ॥४॥
सब श्रम हरन श्रमित प्रभु भेला । पुनि सीतल अमराई गेला ॥५॥
निज पट भरत बिछाओल ततछन । बैसला प्रभु सेबथि भ्रातागन ॥६॥
मारुतनंदन करथि बसाते । सजल नयन अति पुलकित गाते ॥७॥
हनूमान सम नहि बड़भागी । नहि क्यो राम चरन अनुरागी ॥८॥
जनिकर सेवा प्रीति भवानी । प्रभु पुनि पुनि बरनल निज बानी ॥९॥

दोहा—नारद अयला ताहि छन, लेने करतल बीन।
गाबय लगला राम कल, कीरति सदा नबीन ॥५०॥

मामबलोकय पंकजलोचन। कृपा दृष्टि सौँ सोच बिमोचन ॥१॥
नील तामरस स्याम काम अरि। हृदय कंज मकरंद मधुप हरि ॥२॥
जातुधान बरूथ बल भंजन। मुनि सज्जन रंजन अघ गंजन ॥३॥
भूसुर ससि नब बृंद बलाहक। असरन सरन दीन जन गाहक ॥४॥
भुजबल बिपुल भार महि खंडित। खरदूषन बिराध बध पंडित ॥५॥
रावनारि सुखरूप भूपबर। जय दसरथ कुल कुमुद सुधाकर ॥६॥
सुजस पुरान बिदित निगमागम। गाबथि सुर मुनि संत समागम ॥७॥
कारुनीक ब्यलीक मद खंडन। सब बिधि कुसल कोसलामंडन ॥८॥
कलिमल मथन नाम ममता हन। तुलसिदास प्रभु पाहि प्रनत जन ॥९॥

दोहा—प्रेम सहित पुनि नारद, बरनि राम गुन ग्राम।
सोभा नीरधि धय हृदय, गेला जहाँ बिधि धाम ॥५१॥

गिरिजा सुनू बिसद ई कथा। हम सब कहल अपन मति जथा ॥१॥
रामचरित सत कोटि अपारे। श्रुति सारदो न पाबथि पारे ॥२॥
राम अनंत अनंत गुनानी। जनम करम अनंत नामानी ॥३॥
जलकन महिरज भनहिँ गनल हो। नहि जत रघुपति चरित भनल हो ॥४॥
बिमल कथा ई हरि पद दायिनि। सुनने भगति होअय अनपायिनि ॥५॥
उमा कहल सुभ कथा असेसे। जे भुसुंडि सौँ सुनल खगेसे ॥६॥
रामकथा किछु कहल बखानी। पुनि सुनाउ की कहिय भवानी ॥७॥
हरषित सुनि सुभ कथा भवानी। बजली अति बिनीत मृदु बानी ॥८॥
धन्य धन्य हम धन्य पुरारी। सुनल राम गुन भव भय हारी ॥९॥

दोहा—कृपेँ अहीँक कृपायतन, कृतकृत आब न मोह।
जानल राम प्रताप प्रभु, चिदानंद संदोह ॥
नाथ तवानन ससि स्रवय, कथा सुधा रघुवीर।
श्रुति पुट सौँ, कय पान मन, नहि अघाय मति धीर ॥५२॥

रामचरित सुनि तिरपित जेहे । रस बिसेष जानल नहि सेहे ॥१॥
जीवन मुकुत महामुनि जे हो । हरि गुन सुनथि निरंतर से हो ॥२॥
भवसागर चह पार जें पावे । रामकथा तनि हित दृढ़ नावे ॥३॥
बिषयी केँ पुनि हरि गुन ग्रामे । श्रवन सुखद ओ मन अभिरामे ॥४॥
श्रवनवंत के येहन भुवन मे । रघुपति चरित न रुचि जनि मन मे ॥५॥
बुझू जड़ जीव आतमहत तकरा । रघुपति कथा सोहाय न जकरा ॥६॥
हरि चरित्र मानस अहँ गौलहुँ । सुनि हम नाथ अमित सुख पौलहुँ ॥७॥
अहँ जें कहल ई कथा सुबानी । काग गरुड़ केँ कहल बखानी ॥८॥

दोहा—बिरति ज्ञान बिज्ञान दृढ़, राम चरन अति नेह ।
बायस तन रघुपति भगति, मोहि परम संदेह ॥५३॥

नर सहस्र मे सुनु त्रिपुरारी । क्यो येक होथि धरम व्रत धारी ॥१॥
कोटि धरमसीलहुँ बिच बिरले । हो बिराग रत बिषय बिसरले ॥२॥
कोटि बिरक्त मध्य श्रुति गाबय । सम्यक ज्ञान सकृत क्यो पाबय ॥३॥
क्यो येक ज्ञानि कोटि मे पेखी । जिबनमुक्त क्यो बिरले लेखी ॥४॥
तहू सहस मे सब सुख खानी । दुरलभ ब्रह्मलीन बिज्ञानी ॥५॥
धरम सील बिरक्त ओ ज्ञानी । जीवन मुक्त ब्रह्मपर प्रानी ॥६॥
सब मे से दुरलभ सुरराया । रामभगति रत गत मद माया ॥७॥
काग पौल हरि भगति कोना कय । बिस्वनाथ कहु मोहि बुझा कय ॥८॥

दोहा—राम परायन ज्ञान रत, गुनागार मतिधीर ।
कोन कारने नाथ कहु, पौलनि काग सरीर ॥५४॥

कहु कृपालु ई प्रभुक चरित्रे । काग पौल कहँ सुभग पवित्रे ॥१॥
अहँ कोन बिधि सुनलहुँ मदनारी । कहू मोहि अति कौतुक भारी ॥२॥
गरुड़ महाज्ञानी गुन रासी । हरि सेवक अति निकट निवासी ॥३॥
जाय काक सौँ कहु की लागी । सुनल कथा से मुनिगन त्यागी ॥४॥
भेल कोन बिधि कहु संवादे । दुहु हरि भगत काक उरगादे ॥५॥
सरल सुभग सुनि गौरिक बानी । बजला सिव सादर सुख मानी ॥६॥
सति तव मति अति पावन धन्ये । रघुपति पद मे प्रीति अनन्ये ॥७॥

परम पुनीत सुनिय इतिहासे । जे सुनि होअय सोक भ्रम नासे ॥८॥
उपजय राम चरन बिस्वासे । भवनिधि तर नर बिना प्रयासे ॥९॥

दोहा—येहने प्रस्न बिहंगपति, कयल काग सौँ जाय ।
से सब सादर कहब हम, उमा सुनू मन लाय ॥५५॥

जेना कथा सुनल भव मोचनि । से प्रसंग सुनु सुमुखि सुलोचनि ॥ १॥
प्रथम दच्छ गृह तव अबतारे । सती नाम जानल संसारे ॥ २॥
दच्छ जज्ञ भेल छल अपमाने । अहँ अति क्रोध तजल निज प्राने ॥ ३॥
अनुचर हमर कयल मख भंगे । अहँ जानी से सकल प्रसंगे ॥ ४॥
तखन भेल मोहि मन बड़ सोगे । प्रिये दुखी हम अहँक बियोगे ॥ ५॥
सुंदर बन गिरि सरित तड़ागे । कौतुक देखइत फिरी बिरागे ॥ ६॥
गिरि सुमेरु सौँ उत्तर दूरे । नील सैल येक सुखमा पूरे ॥ ७॥
सोभित सिखर चारि गिरि ओही । सुभग कनकमय भाओल मोही ॥ ८॥
येक येक तरु बिसाल तहि ठामे । बट पीपर पाकड़ि ओ आमे ॥ ९॥
सैलोपरि सर सुंदर सोभय । मनि सोपान देखि मन लोभय ॥१०॥

दोहा—सीतल निरमल मधुर जल, जलज बिपुल बहुरंग ।
कूजय कलरब हंसगन, गूँजय मंजुल भृंग ॥५६॥

तहि सुभ गिरि से खग कर बासे । होअय तनिक कल्पांत न नासे ॥ १॥
मायाकृत गुन दोष अनेके । मोह मनोज आदि अबिबेके ॥ २॥
व्यापित रह समस्त संसारे । परसि न सकय ताहि गिरि द्वारे ॥ ३॥
तहँ बसि जेना हरिहिँ भज कागे । से सुनु उमा सहित अनुरागे ॥ ४॥
पीपर तरु तर ध्यान से धरथी । जाप जज्ञ पाकड़ि तर करथी ॥ ५॥
मानस पूजा आम छाह तर । तजि हरि भजन काज नहि दोसर ॥ ६॥
बट तर कह हरि कथा प्रसंगे । आबय सुनय अनेक बिहंगे ॥ ७॥
रामचरित बिचित्र बिधि नाना । प्रेम सहित कर सादर गाना ॥ ८॥
सुनय बिमल मति सकल मराले । बसय निरंतर जे तहि काले ॥ ९॥
जाय लखल से कौतुक जखने । उर उपजल आनँद बड़ तखने ॥१०॥

दोहा—पुनि किछु काल कराल तन, धय तहँ कयल निबास ।
सादर सुनि रघुपतिक गुन, पुनि अयलहुँ कैलास ॥५७॥

गिरिजा कहल से सब इतिहासे । हम जहि समय गेलहुँ खग पासे ॥१॥
आब कथा से सुनु जहि हेतू । गेला काग लग खगकुलकेतू ॥२॥
रघुपति जखन कयल रन क्रीड़ा । बुझि सुझि चरित होअय मोहि ब्रीड़ा ॥३॥
इन्द्रजीत कर स्वयं बन्हौलनि । लखि नारद मुनि गरुड़ पठौलनि ॥४॥
बंधन काटि गेला उरगादे । उपजल हृदय प्रचंड बिषादे ॥५॥
प्रभु बंधन बुझि कय बहु भाँती । कयल बिचार उरग आराती ॥६॥
ब्यापक ब्रह्म बिरज बागीसे । माया मोह पार परमीसे ॥७॥
सुनलहुँ से अवतरला जगती । देखल नहि तेहन किछु सकती ॥८॥

दोहा—भव बंधन सौँ छुटथि नर, सहजहिँ जपि जनि नाम ।
तुच्छ दनुज बान्हल कोना, नाग फाँस तनि राम ॥५८॥

नाना भाँति मनहिँ समुझायल । प्रगट न ज्ञान हृदय भ्रम छायल ॥१॥
खेद खिन्न मन तर्क बिसेसे । भेलनि अहिँक सन मोह असेसे ॥२॥
ब्याकुल देबरिषिक लग गेला । निज मन संसय कहइत भेला ॥३॥
सुनि नारद केँ भेल बड़ दाया । सुनु खग प्रबल राम कैर माया ॥४॥
जे ज्ञानी कैर चित अपहरइछ । बरजोरी बिमोह मन करइछ ॥५॥
जे बहु बेरि नचौलक मोही । ब्यापल सैह बिहगपति तोही ॥६॥
महा मोह तव उर अछि गहने । हटत न झट खग हमरा कहने ॥७॥
चतुरानन लग जाउ खगेसे । सैह करब जे देथि निदेसे ॥८॥

दोहा—ई कहि चलला देवरिषि, करति राम गुन गान ।
पुनि पुनि हरि मायाक बल, बरनति परम सुजान ॥५९॥

खगपति पुनि बिरंचि लग गेला । निज मन संसय सुनबति भेला ॥१॥
बिधि प्रनमल रामहिँ से सुनि कय । भरल प्रेम उर महिमा गुनि कय ॥२॥
मन मन कयल बिचार बिधाता । माया बस कवि कोविद ज्ञाता ॥३॥
हरिमायाक प्रभाव अपारे । जे हमरहु नचौल बहु बारे ॥४॥

अगजग भुवन रचित मम हाथे । नहि बिसमय मोहित खगनाथे ॥५॥
बजला ब्रह्मा बचन बिसेसे । रामक प्रभुता जान महेसे ॥६॥
जाउ संकरक लग खगराजे । अनका किछु पुछबाक न काजे ॥७॥
ततय होयत तत्र संसय हानी । चलला खग सुनइत बिधि बानी ॥८॥

दोहा—आतुर परम बिहंगपति, येला उमा मम पास ।
जाइत छलहुँ कुबेर गृह, अहाँ रही कैलास ॥६०॥

सादर मम पद सीस नमौलनि । पुनि से निज संदेह सुनौलनि ॥१॥
सुनि तनिकर बिनती मृदु बानी । प्रेम सहित हम कहल भवानी ॥२॥
भेँटलहुँ गरुड़ बाट मे मोही । कोन भाँति समुझायब तोही ॥३॥
तखनहि हो सब संसय भंगे । जौँ बहु काल करी सतसंगे ॥४॥
सुभ हरिकथा सुनी तहि ठामे । मुनि बरनित बहु भाँति ललामे ॥५॥
जकरा आदि मध्य अबसाने । प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाने ॥६॥
नित हरिकथा होय जहि धामे । पठबी जाय सुनू तहि ठामे ॥७॥
सुनितहि हटत सकल संदेहे । होयत रामचरन अति नेहे ॥८॥

दोहा—बिनु सतसंग न हरि कथा, तहि बिनु मोह न भाग ।
मोह भंग बिनु राम पद, हो नहि दृढ़ अनुराग ॥६१॥

मिलथि न रघुपति बिनु अनुरागे । कैनहु जोग तप ज्ञान बिरागे ॥ १॥
उत्तर दिसि सुंदर गिरि नीले । तहँ रह कागभुसुंडि सुसीले ॥ २॥
राम भगति पथ परम प्रबीने । ज्ञानी गुनगृह बहु कालीने ॥ ३॥
रामकथा से कहथि निरंतर । सादर सुनथि बिबिध बिहंगबर ॥ ४॥
जाय सुनू तहँ हरिगुन पूरे । होयत मोह जनित दुख दूरे ॥ ५॥
जखन कहलियनि कथा बुझा कय । हरषित चलला माथ झुका कय ॥ ६॥
तेँ न उमा हम स्वयं बुझौलहुँ । रघुपति कृपेँ मरम हम पौलहुँ ॥ ७॥
कहियो कैने हेता अभिमाने । तहि नसबय चह कृपानिधाने ॥ ८॥
किछु येहु हेतु न हुनका राखल । बुझइत अछि खग खगहिक भाखल ॥ ९॥
प्रभु माया बलवंत भवानी । जनि न मोह के एहन ज्ञानी ॥१०॥

दोहा—ज्ञानी भगत सिरोमनि, त्रिभुवन पति कँर जान ।
तनिकहु माया मोह नर, पामर करय गुमान ॥

मास पारायण, विश्राम—२८

सिव विरंचि केँ मोहइछ, तखन कहू के आन ।
येहन जानि जिय भजथि मुनि, मायापति भगवान ॥६२॥

गरुड़ गेला जहँ बसथि भुसुंडी । मति अकुंठ हरि भगति अखंडी ॥१॥
देखि सैल मन प्रमुदित भेले । माया मोह सोच सब गेले ॥२॥
मज्जन पान कयल तहि सर मे । गेला झट हरषित बट तर मे ॥३॥
जुटल बूढ़ बहु खग तहि ठामे । सुनय राम कँर चरित ललामे ॥४॥
कथारंभ करबा पर भेला । तखनहि ततय खगेस्वर एला ॥५॥
अबइत देखि सबहु खगराजे । हरषल बायस सहित समाजे ॥६॥
खगराजक अति आदर केलनि । स्वागत पूछि सुआसन देलनि ॥७॥
कय पूजा समेत अनुरागे । मधुर बचन बजला पुनि कागे ॥८॥

दोहा—नाथ कृतारथ भेलहुँ हम, तव दरसन खगराज ।
आज्ञा भेटओ करब हम, प्रभु अयलहु कोन काज ॥
सदा कृतारथ रूप अहँ, कह मृदु बचन खगेस ।
जनिकर असतुति सादर, निज मुख कयल महेस ॥६३॥

सुनू तात जहि कारन ऐलहुँ । सब भेटल तव दरसन पैलहुँ ॥१॥
देखि परम पावन तव आश्रम । गेल मोह संसय नाना भ्रम ॥२॥
आव कथा रामक अति पावन । सदा सुखद दुख पुंज नसावन ॥३॥
सादर तात सुनाबिय मोही । बेरि बेरि बिनमी प्रभु तोही ॥४॥
सुनइत गरुड़क गिरा बिनीते । सरल सप्रेम सुखद सुपुनीते ॥५॥
भेल तनिक मन परम उछाहे । रघुपति गुन बरनय लगलाहे ॥६॥
अति अनुरागेँ प्रथम भवानी । राम चरित सर कहल बखानी ॥७॥
पुनि नारद कँर मोह अपारे । कहल बहुरि रावन अवतारे ॥८॥

प्रभु अवतार कथा पुनि गौलनि । मन लगाय सिसु चरित सुनौलनि ॥९॥

दोहा—बाल चरित कहि बिबिध बिधि, मन मे परम उछाह ।
रिषिक आगमन कहल पुनि, श्री रघुवीर बिआह ॥६४॥

बहुरि राम अभिषेक प्रसंगे । पुनि नृप बचन राजरस भंगे ॥१॥
पुरबासी केर बिरह बिषादे । कहल राम लछुमन संबादे ॥२॥
बिपिन गमन केवट अनुरागे । सुरसरि उतरि निवास प्रयागे ॥३॥
बालमीकि प्रभु मिलला जेना । चित्रकूट बसला पुनि केना ॥४॥
सचिबक घुरब नृपक अवसाने । भरतागम तनि प्रेम महाने ॥५॥
कय नृप क्रिया संग पुरबासी । भरत गेला जहँ प्रभु सुखरासी ॥६॥
रघुपति बहुत बुझबइत मेला । लय पादुका अवधपुर एला ॥७॥
भरत रहनि सुरपति सुत करनी । कहलनि भेँट अत्रि प्रभु बरनी ॥८॥

दोहा—कहि बिराध बध जाहि बिधि, देह तजल सरभंग ।
बरनि सुतीछन प्रीति पुनि, प्रभु अगस्ति सतसंग ॥६५॥

कहलनि दंडकबन पवित्रता । पुनि से गौलनि गीध मित्रता ॥१॥
पुनि प्रभु पंचबटी कृत बासे । भंजल सब मुनिगन केर त्रासे ॥२॥
पुनि लछुमन उपदेस अनूपे । कयल जेना सुपनखहिँ कुरूपे ॥३॥
खरदूषन बध बहुरि बखानल । मरम जेना सब दसमुख जानल ॥४॥
रावन मारीचहिँ गए भेले । जहि बिधि से सबटा कहि देले ॥५॥
मायासीता हरन सुनाओल । पुनि रघुवीर बिरह किछु गाओल ॥६॥
जहि बिधि गीध क्रिया प्रभु केलनि । बधि कबंध सबरिहिँ गति देलनि ॥७॥
पुनि कहइत बियोग रघुवीरे । गेला जेना सरोबर तीरे ॥८॥

दोहा—प्रभु नारद संबाद कहि, मारुति मिलन प्रसंग ।
पुनि सुग्रीवक मित्रता, बालिक प्रानक भंग ॥
कपिहिँ तिलक दय कयल प्रभु, सैल प्रबरषन बास ।
बरनल बरषा सरद रितु, राम रोष कपि त्रास ॥६६॥

कपिपति जेना पठौलनि कीसे । सीता ताकय गेल सब दीसे ॥१॥
पैसलि बियरि मध्य जहि भाँती । कपि सौँ फेर मिलल संपाती ॥२॥
सुनि से कथा समीर कुमारे । लाँघल यथा पयोधि अपारे ॥३॥
लंक प्रवेस जेना कपि केलनि । ओ सीता केँ धीरज देलनि ॥४॥
बन उजाड़ि रावनहिँ प्रबोधी । पुर दहि लाँघल बहुरि पयोधी ॥५॥
रघुपति जहँ कपि सभ तहँ आयल । वैदेही केर कुसल सुनायल ॥६॥
सेना सहित जेना रघुबीरे । आबि उतरला बारिधि तीरे ॥७॥
जेना मिलय बिभीषन एला । जहि बिधि बारिधि बान्हल गेला ॥८॥

दोहा—सेतु बान्हि कपिदल जेना, उतरल सागर पार ।
गेला दूत बनि बीरबर, जहि बिधि बालिकुमार ॥
निसिचर कीसक समर पुनि, बरनल बिबिध प्रकार ।
कुंभकरन घननादहुक, बल पौरुष संहार ॥६७॥

निसिचर निकर मरन बहु ढंगे । पुनि रघुपति रावन रन रंगे ॥१॥
रावन बध मंदोदरि सोके । राज बिभीषन सुरहिँ असोके ॥२॥
सीता रघुपति मिलन बहोरी । असतुति देब कयल कर जोरी ॥३॥
चढ़ि पुष्पक कपि निकर समेते । अबधहिँ चलला कृपानिकेते ॥४॥
जहि बिधि राम नगर निज एला । बिसद चरित खग कहइत भेला ॥५॥
पुनि कहलनि रामक अभिषेके । पुर बरनन नृप नीति अनेके ॥६॥
कहलनि कथा भुसुंडि बखानी । जे हम अहँ सौँ कहल भवानी ॥७॥
सुनि सब राम-कथा खगनाहे । कहल बचन मन परम उछाहे ॥८॥

सोरठा—गेल हमर संदेह, सुनल सकल रघुपति चरित ।
भेल राम पद नेह, अहिँक कृपेँ बायसतिलक ॥
मोहि भेल छल अति मोह, प्रभु बंधन रन मे निरखि ।
चिदानंद संदोह, राम बिकल की कारने ॥६८॥

देखि चरित अति नर अनुसारी । भेल हृदय मम संसय भारी ॥१॥
आब सैह भ्रम हित कय मानी । कयल अनुग्रह करुनाखानी ॥२॥

अति आतप ब्याकुल हो जेहे । तरु छाया सुख जानय सेहे ॥३॥
होइत जौँ न मोह अति मोही । पबितहुँ तात कोन बिधि तोही ॥४॥
सुनितहुँ की हरि कथा सोहाओन । अति बिचित्र बहु बिधि मनभाओन ॥५॥
निगमागम पुरान मत एहे । कहथि सिद्ध मुनि नहि संदेहे ॥६॥
संत बिसुद्ध मिलथि ध्रुव तकरा । चितबथि राम कृपा कय जकरा ॥७॥
राम कृपेँ तव दरसन भेले । तव प्रसाद सब संसय गेले ॥८॥

दोहा—पच्छिराज केर बचन सुनि, सहित बिनय अनुराग ।
पुलकल तन लोचन सजल, हरषित मन भेल काग ॥
श्रोता सुमति सुसील सुचि, कथा रसिक हरिदास ।
पाबि गुप्त तैयो उमा, सज्जन करथि प्रकास ॥६९॥

बजला फेर मुदित मन कागे । नभगनाथ पर बड़ अनुरागे ॥१॥
नाथ सकल बिधि पूज्य हमर छी । कृपापात्र रघुनायक केर छी ॥२॥
नहि तव संसय मोह न माया । कयल मोहि पर प्रभु अहँ दाया ॥३॥
पठा अहाँ केँ मोहक लाथे । देलनि बड़ाइ मोहि रघुनाथे ॥४॥
अपन मोह जे कहल खगेसे । तहि मे नहि प्रभु बिसमय लेसे ॥५॥
नारद भव विरंचि सनकादी । जे मुनिनायक आतमबादी ॥६॥
मोह कयल आन्हर नहि ककरा । के जग काम नचौल न जकरा ॥७॥
तृष्णा ककरा नहि सनकौलक । ककर हृदय नहि क्रोध जरौलक ॥८॥

दोहा—ज्ञानी तापस सूर कवि, कोविद गुन आगार ।
ककरा लोभ बिडंबना, कयल न यहि संसार ॥
श्री मद ककरा बक्र नहि, प्रभुता बहिर न कैल ।
मृगनयनी केर नयन सर, ककरा उर न समैल ॥७०॥

गुनकृत सन्निपात बिनु के जन । के न सहल मद मानक बेधन ॥१॥
जौबन ज्वर ककरा न तपौलक । ममता जस नहि ककर नसौलक ॥२॥
ककरा डाह कलंक न देले । सोक पवन के चलित न भेले ॥३॥
ककरा चिंता अहिनि न डाँसल । ककरा नहि जग माया फाँसल ॥४॥

कीट मनोरथ दारु सरीरे । जहि न लाग के एहन धीरे ॥५॥
सुत बित लोक ईखना तीने । कयल ककर मति कें न मलीने ॥६॥
ई सब माया कें‍र परिबारे । सकत बरनि के प्रबल अपारे ॥७॥
डरथि जाहि सौं संभु बिधातो । तखन आन जीवक की बातो ॥८॥

दोहा—ब्यापि रहल संसार मे, माया कटक प्रचंड ।
सेनापति कामादि भट, दंभ कपट पाखंड ॥
से दासी रघुबीर कें‍र, बूझय मिथ्या सोपि ।
रामकृपा बिनु छुटय नहि, नाथ कही पद रोपि ॥७१॥

जे माया सब जगहिँ नचौलक । जकर चरित लखि क्यो नहि पौलक ॥१॥
से प्रभु भ्रू बिलास खगराजे । नाच नटी इव सहित समाजे ॥२॥
से सच्चिदानंदघन रामे । अज बिज्ञान रूप बल धामे ॥३॥
ब्यापक ब्याप्य अखंड अनंते । अखिल अमोघ सक्ति भगवंते ॥४॥
अगुन अदभ्र गिरा गोतीते । सबदरसी अनवद्य अजीते ॥५॥
निरमम निराकार निरमोहे । नित्य निरंजन सुख संदोहे ॥६॥
प्रकृति पार प्रभु सब उर बासी । ब्रह्म निरीह बिरज अबिनासी ॥७॥
मोहक कारन ऐतय न आबय । रवि संमुख की तम जा पाबय ॥८॥

दोहा—धयल भगत हित भूप तन, राम स्वामि भगवान ।
चरित कयल पाबन परम, प्राकृत नरक समान ॥
जथा बिबिध बिधि बेष धय, क्यो नट नृत्य करैछ ।
देखबय से से भाव सब, अपने नहि से हैछ ॥७२॥

रघुपति कें‍र लीला उरगारी । दनुज बिमोहन जन सुखकारी ॥१॥
जे मति मलिन बिषय बस कामी । प्रभु पर मोह धरय से स्वामी ॥२॥
नयन दोष सौं गरसित जेहे । पीत बरन ससि कहइछ सेहे ॥३॥
जकरा दिगभ्रम होअय खगेसे । से कह उगला पछिम दिनेसे ॥४॥
नौकारूढ़ चलति जग देखय । अचल मोह बस निज कें लेखय ॥५॥
बालक भ्रमय न भ्रमय गृहादी । कहय परस्पर मिथ्याबादी ॥६॥

हरि बिषयक ई मोह बिहंगे । सपनहुँ नहि अज्ञान प्रसंगे ॥७॥
माया बस मतिमंद अभागल । हृदय जबनिका बहुबिधि लागल ॥८॥
से सठ हठ बस संसय करइछ । निज अज्ञान राम पर धरइछ ॥९॥

दोहा—काम क्रोध मद लोभ रत, गृहासक्त दुख रूप ।
जान कोना रघुपतिहिँ से, मूढ़ परल तम कूप ॥
निरगुन रूप सुलभ अति, सगुनहिँ क्यो न जनैछ ।
सुगम अगम नाना चरित, सुनि मुनि मन भ्रम हैछ ॥७३॥

रघुपति प्रभुता सुनू खगेसे । कही जथा मति कथा सुदेसे ॥१॥
जहि बिधि मोह भेल प्रभु मोही । से सब कथा सुनाबी तोही ॥२॥
राम कृपा भाजन अहँ ताता । हरि गुन प्रीति मोहि सुखदाता ॥३॥
तैँ हम अहँ सौँ किछु न नुकाबी । परम रहस्य मनोहर गाबी ॥४॥
राम सोभाव सुनू हरिजाने । रहय देथि नहि जन अभिमाने ॥५॥
संसृति मूल सूलप्रद नाना । सकल सोकदायक अभिमाना ॥६॥
तहि सौँ करथि कृपालु निबारे । ममता जन पर रहनि अपारे ॥७॥
जेना सिसुक तन मे ब्रन भेने । चिरबय माय कठिन उर केने ॥८॥

दोहा—दुख पबैछ जद्यपि प्रथम, बाल अधीर कनैछ ।
जननी ब्याधिक नास हित, सिसु पीड़ा न गनैछ ॥
तहिना रघुपति मद हरथि, निजदासक हित लागि ।
तुलसिदास एहन प्रभुहिँ, किय न भजह भ्रम त्यागि ॥७४॥

रामक कृपा अपन अज्ञाने । कही खगेस सुनू दय ध्याने ॥१॥
जखन जखन धय नर तन रामे । करथि भगत हित चरित ललामे ॥२॥
तखन तखन हम अबध पधारी । हरषी बालचरित्र निहारी ॥३॥
जनम महोत्सब देखी जा कय । बरष पाँच तहँ रही लोभा कय ॥४॥
इष्टदेब मम बालक रामे । सोभा बपुख कोटि सय कामे ॥५॥
निज प्रभु बदन निहारि निहारी । लोचन सफल करी उरगारी ॥६॥
लघु बायस बपु धय हरि संगे । देखी बाल चरित बहु रंगे ॥७॥

दोहा—नेनपन सौँ जहँ जहँ घुमथि, तहँ तहँ सँग उड़ि जाइ ।
आँगन मे खस ऐँठ जे, से उठाय हम खाइ ॥
एक बेरि अजगुत अमित, चरित कयल रघुबीर ।
सुधि कय से लीला प्रभुक, पुलकित भेल सरीर ॥७५॥

कहथि भुसुंडि सुनू खगनायक । रामचरित सेवक सुखदायक ॥१॥
नृप मंदिर सुंदर सब भाँती । खचित कनक मनि नाना जाती ॥२॥
आँगन रुचिर बरनि हो काहाँ । चारू भाय खेलथि नित जाहाँ ॥३॥
बाल बिनोद करथि रघुनायक । बिचरथि अजिर जननि सुखदायक ॥४॥
मरकत मृदुल कलेबर स्यामे । अंग अंग प्रति छबि बहु कामे ॥५॥
नब राजीब अरुन मृदु चरने । पदज रुचिर नख ससि दुति हरने ॥६॥
ललित अंक कुलिसादिक चारी । नूपुर चारु मधुर रबकारी ॥७॥
कनक रचित मनि खचित सोहाओन । कटि किंकिनी मुखर मनभाओन ॥८॥

दोहा—रेखात्रय सुंदर उदर, नाभि रुचिर गंभीर ।
उर आयत भ्राजय बिबिध, बाल बिभूषन चीर ॥७६॥

अरुन पानि नख करज मनोहर । बाँहि बिसाल बिभूषन सुंदर ॥ १॥
काँध बाल केहरि दर ग्रीमे । चारु चिबुक आनन छबि सीमे ॥ २॥
मुख अधबोल अधर अरुनैले । दुइ दुइ बिसद दसन खुदियैले ॥ ३॥
ललित कपोल मनोहर नासा । सकल सुखद ससिकर सम हासा ॥ ४॥
नीलकंज लोचन भव मोचन । भ्राजय भाल तिलक गोरोचन ॥ ५॥
भृकुटि बंक सम श्रवन सोहाओन । कुंचित कच मेचक छबि भाओन ॥ ६॥
पातर पियर अडरखा झलकय । किलक चितब लखि मम मन ललकय ॥ ७॥
रूप रासि नृप अजिर बिहारी । नाचथि निज प्रतिबिंब निहारी ॥ ८॥
कर हमरा सँग कत बिधि क्रीड़ा । करइत बरनन होइछ ब्रीड़ा ॥ ९॥
किलकति जखन धरय मोहि धाबथि । भागी तखनहिँ पूप देखाबथि ॥१०॥

दोहा—लग मे अबितहिँ हँसथि प्रभु, भगने कनइत जाथि ।
लग पहुँची पद गहय जौँ, घुरि घुरि देखि पड़ाथि ॥

लीला प्राकृत सिसुक सन, देखि भेल मोहि मोह।
कोन चरित्र करैत छथि, चिदानंदसंदोह ॥७७॥

येतवा मन अनितहि खगराया। रघुपति प्रेरित ब्यापल माया ॥१॥
से माया मोहि दुख नहि देलक। पर जिब इब संसृति नहि केलक ॥२॥
नाथ येतय किछु कारन आने। से सुनु सावधान हरिजाने ॥३॥
ज्ञान अखंड एक सीताबर। मायाबस्य जीब सचराचर ॥४॥
जब जौँ ज्ञान एक रस लहते। ईस्वर जीब भेद की रहते ॥५॥
मायाबस्य जीब अभिमानी। ईसबस्य माया गुनखानी ॥६॥
परबस जीब स्वबस भगबंते। जीब अनेक एक श्रीकंते ॥७॥
असत भेद जद्यपि कृत माया। बिनु हरि जाय न कोटि उपाया ॥८॥

दोहा—रामचंद्र केर भजन बिनु, चहथि जे पद निर्बान।
ज्ञानवंत अपि से मनुज, पसु बिनु पुच्छ बिषान॥
राका ससि षोड़स उगथि, तारागन समुदाय।
जौँ लगबी दब सकल गिरि, बिनु रबि राति न जाय ॥७८॥

तहिना बिनु हरि भजन खगेसे। कहियो जाय न जीब कलेसे ॥१॥
हरि सेबकहिँ न ब्याप अबिद्या। प्रभु प्रेरित ब्यापय तहि बिद्या ॥२॥
तेँ खगेस दासक नहि नासे। भेद भगति निज पाब बिकासे ॥३॥
भ्रम सौँ चकित राम मोहि देखी। हँसला से सुनु चरित बिसेखी ॥४॥
ताहि कौतुक केर मरम कनेको। बुझल न अनुज मातु पितु एको ॥५॥
बाओल पकड़य दैत ठेहुनियाँ। स्याम गात कर चरन अरुनियाँ ॥६॥
भागन पड़ैलहुँ हम खगनाथे। राम बढ़ौल धरक हित हाथे ॥७॥
जहँ जहँ दूर उड़ी आकासे। तहँ हरि भुज देखी निज पासे ॥८॥

दोहा—ब्रह्मलोक धरि गेलहुँ हम, उड़इत ताकी घूरि।
राम भुजा ओ हमर बिच, दुइए आँगुर दूरि॥

सप्तावरनहिँ भेदि कय, जहँ धरि गति छल मोर।
गेलहुँ तहँ प्रभु भुज निरखि, भेलहुँ बिकल पुनि घोर ॥७९॥

मुनलहुँ दृग के जखन डेरैलहुँ। तकलहुँ पुनि कोसलपुर ऐलहुँ ॥१॥
हँसला राम तखन मोहि हेरी। पैसलहुँ मुँह बिहुँसैत न देरी ॥२॥
उदर माँझ सुनु अंडजराजे। देखलहुँ बहु ब्रह्मांड समाजे ॥३॥
अति बिचित्र तहँ लोक अनेके। रचना अधिक एक सौँ एके ॥४॥
कोटि कोटि ब्रह्मा गौरीसे। अगनित उडुगन रवि रजनीसे ॥५॥
अगनित लोकपाल जम काले। अगनित भूधर भूमि बिसाले ॥६॥
सागर सरि सर बिपिन अपारे। नाना भाँति सृष्टि बिस्तारे ॥७॥
सुर मुनि सिद्ध नाग नर किन्नर। चारि प्रकार जीब सचराचर ॥८॥

दोहा—जे नहि देखल नहि सुनल, जे मन मे न समाय।
से सब अद्भुत लखल हम, कोन बिधि बरनल जाय ॥
एक एक ब्रह्मांड मे, छलहुँ बरष सत एक।
येहि बिधि घुरलहुँ लखति हम, अंडकटाह अनेक ॥८०॥

लोक लोक प्रति भिन्न विधाता। भिन्न विष्णु सिव मनु दिसि त्राता ॥१॥
नर गंधर्ब भूत बैताले। किन्नर निसिचर पसु खग ब्याले ॥२॥
देब दनुजगन नाना जाती। सकल जीब तहँ आने भाँती ॥३॥
महि सागर सर सरि गिरि नाना। सब प्रपंच तहँ आने आना ॥४॥
अंडकोस प्रति प्रति निज रूपे। देखल बस्तु अनेक अनूपे ॥५॥
छल प्रति भुबन अवधपुर आने। भिन नर नारि सरजु भिन भाने ॥६॥
दसरथ कौसल्या सुनु ताता। बिबिध रूप भरतादिक भ्राता ॥७॥
प्रति ब्रह्मांड राम अवतारे। देखल बाल बिनोद अपारे ॥८॥

दोहा—भिन्न भिन्न हम सब लखल, अति बिचित्र हरिजान।
घुरलहुँ अगनित भुबन प्रभु, राम न देखल आन ॥

सेहे सिसुपन सोभा सेहे, सदय सेहे रघुवीर ।
भुबन भुबन देखइत फिरी, प्रेरित मोह समीर ॥८१॥

घुमइत मोहि ब्रह्मांड अनेके । बीतल बुझू कलप सय एके ॥१॥
घुमति घुमति निज आश्रम ऐलहुँ । तहँ पुनि रहि किछु काल गमैलहुँ ॥२॥
निज प्रभु जनम अवध सुनि पाओल । प्रेम पूर्ण हरषित उठि धाओल ॥३॥
देखल जनम महोत्सव आबी । जहि बिधि प्रथम कहल हम गाबी ॥४॥
राम उदर जग देखल अनेके । देखितहिँ बनय बरनि सक से के ॥५॥
तहँ पुनि देखल राम सुजाने । मायापति कृपालु भगवाने ॥६॥
बहुत बिचार करी तहि काले । फँसल हमर मति मोहक थाले ॥७॥
उभय घड़ी मे लेल सब देखी । भेलहुँ श्रमित मन मोह बिसेखी ॥८॥

दोहा—ब्याकुल देखि कृपालु मोहि, बिहुँसलाह रघुवीर ।
हँसितहिँ प्रभु मुख सौँ सुनू, बहरैलहुँ मतिधीर ॥
हमरा सौँ लगला करय, पुनि सेहे नेनपन राम ॥
कोटि प्रकारेँ बुझबितहुँ, मन न लहय बिश्राम ॥८२॥

देखि चरित ई प्रभुता सेहो । बुझइत बिसरि गेलहुँ सुधि देहो ॥१॥
महि खसलहुँ मुख आब न बाता । त्राहि त्राहि आरत जन त्राता ॥२॥
प्रेमाकुल प्रभु मोहि बिलोकी । निज माया प्रभुता देल रोकी ॥३॥
कर सरोज प्रभु मम सिर धेलनि । दीनबंधु सब दुख हरि लेलनि ॥४॥
कयल राम हमरा गत मोहे । सेवक सुखद कृपासंदोहे ॥५॥
प्रभुता प्रथम बिचारि बिचारी । मन मे होअय हरष अति भारी ॥६॥
भगत बछलता प्रभु केर देखी । उपजल मम उर प्रीति बिसेखी ॥७॥
सजल नयन पुलकित कर जोरी । कयलहुँ बहु बिधि विनय बहोरी ॥८॥

दोहा—सुनि सप्रेम बानी हमर, देखि दीन निज दास ।
बचन सुखद गंभीर मृदु, बजला रमानिबास ॥

कागभुसुंडी माँगु बर, अति प्रसन्न मोहि जानि ।
अनिमादिक सिधि अपर रिधि, मोछ सकल सुख खानि ।।८३।।

ज्ञान बिबेक बिरति बिज्ञाना । मुनि दुरलभ गुन जे जग नाना ।।१।।
आइ देब सब नहि संदेहे । माँगु अहँक मन भावय जेहे ।।२।।
सुनि प्रभु बचन बहुत अनुरगलहुँ । मन अनुमान करय पुनि लगलहुँ ।।३।।
सब सुख देब कहल प्रभु भल से । देब भगति निज किय न कहल से ।।४।।
भगति हीन सब गुन सुख येहने । लवन बिना बहु ब्यंजन जेहने ।।५।।
भजन बिहीन सुखक की काजे । येहन बिचारि कहल खगराजे ।।६।।
जौं प्रसन्न भय प्रभु बर दैछी । मोहि पर कृपा सिनेह करैछी ।।७।।
मन बांछित बर माँगी स्वामी । अहँ उदार उर अंतरजामी ।।८।।

दोहा—अबिरल भगति बिसुद्ध तव, श्रुति पुरान जे गाब ।
तकइत रह जोगीस मुनि, प्रभु प्रसाद क्यो पाब ।।
भगत कलपतरु प्रनतहित, कृपासिंधु सुखधाम ।
सेह नाथ निज भगति मोहि, दियऽ दया कय राम ।।८४।।

एबमस्तु कहि रघुकुलनायक । बजला बचन परम सुखदायक ।।१।।
सुनु बायस अहँ सहज सयाने । किय न येहन माँगब बरदाने ।।२।।
सब सुख खानि भगति लेल माँगी । नहि क्यो जग अहँ सम बड़भागी ।।३।।
कोटि जतन मुनि पाब न जाही । तनु जप जोग अनल मे डाही ।।४।।
मुगुध भेलहुँ लखि चातुरि तोरे । माँगल भगति रुचल अति मोरे ।।५।।
सुनु खगपति पुनि मम प्रसाद बल । बसत अहँक उर सुभ गुन अबिकल ।।६।।
भगति ज्ञान बिज्ञान बिरागे । जोग चरित्र रहस्य बिभागे ।।७।।
जायब जानि सभक अहँ भेदे । मम प्रसाद नहि साधन खेदे ।।८।।

दोहा—माया संभव भ्रम सकल, आब न ब्यापत तोहि ।
जानब ब्रह्म अनादि अज, अगुन गुनाकर मोहि ।।

सुनु हमरा संतत भगत, प्रिय ई बुझि सुझि काग।
काय बचन मन मम चरन, करब अचल अनुराग ॥८५॥

सुनु अहँ परम बिमल मम बानी । सत्य सुगम श्रुति कहय बखानी ॥ १॥
निज सिद्धान्त सुनाबी तोही । सुनु मन धरु सब तजि भजु मोही ॥ २॥
मम माया संभब संसारे । जीब चराचर बिबिध प्रकारे ॥ ३॥
सब मम प्रिय सब मम उपजाओल । सबसौँ अधिक मनुज मोहि भाओल ॥ ४॥
तहु मे द्विज द्विज मे श्रुतिधारी । तहु मे निगम धरम अनुसारी ॥ ५॥
तहु मे प्रिय बिरक्त पुनि ज्ञानी । ज्ञानिहुँ सौँ अति प्रिय बिज्ञानी ॥ ६॥
तहु मे पुनि मोहि प्रिय निज दासे । मम गति जकरा परक न आसे ॥ ७॥
पुनि पुनि सत्य कही हम तोही । सेबक सन प्रिय क्यो नहि मोही ॥ ८॥
भगति बिहीन बिधाता जइयो । आने जिब समान प्रिय तइयो ॥ ९॥
भगतिबंत अति नीचो प्रानी । मोहि प्रानप्रिय से मम बानी ॥१०॥

दोहा—सुचि सुसील सेबक सुमति, प्रिय ककरा नहि लाग।
श्रुति पुरान कह नीति ई, साबधान सुनु काग ॥८६॥

एक पिताक अनेक कुमारे । होथि भिन्न गुन सील अचारे ॥१॥
क्यो पंडित क्यो तापस ज्ञाता । क्यो धनबंत सूर क्यो दाता ॥२॥
क्यो सर्बज्ञ धरम रत आने । सभक उपर पितु प्रेम समाने ॥३॥
क्यो पितु भगत बचन मन करमे । सपनेहुँ जान न दोसर धरमे ॥४॥
से सुत प्रिय पितु प्रान समाने । जद्यपि से सब बिधि अज्ञाने ॥५॥
येहि बिधि जीब जतेक चराचर । तिरजक मानुष देब निसाचर ॥६॥
अखिल बिस्व ई मम निर्माने । सभक उपर मम दया समाने ॥७॥
येहि मे जे परिहरि मद माया । हमरा भजय बचन मन काया ॥८॥

दोहा—पुरुष नपुंसक नारि बा, सकल चराचर जैह।
सर्ब भाव भज कपट तजि, मोहि परम प्रिय सैह ॥

सोरठा—सत्य कही खग तोहि, सुचि सेबक मम प्रानप्रिय।
बूझि येहन भजु मोहि, परिहरि आस भरोस सब ॥८७॥

कहियो काल न ब्यापत तोही । सुमिरब भजब निरंतर मोही ॥१॥
प्रभु बचनामृत सुनि न अघैलहुँ । पुलकित तन मन अति हरषैलहुँ ॥२॥
से सुख जानय मन ओ काने । नहि रसना कय सकय बखाने ॥३॥
प्रभु सोभा सुख जानय नयने । बरनत की तकरा नहि बयने ॥४॥
मोहि प्रबोधि दय कत सुख नेहे । ठानल सिसु कौतुक पुनि सेहे ॥५॥
सजल नयन किछु मन कय रूखे । चितथि मातु लागल अति भूखे ॥६॥
लखि आतुर उठि दौड़लि माता । लगा लेल उर कहि मृदु बाता ॥७॥
कोर राखि करबथि पय पाने । रघुपति चरित ललित कर गाने ॥८॥

सोरठा—जहि सुख हेतु पुरारि, असुभ बेष कृत सिब सुखद ।
अवधपुरक नर नारि, सतत ताहि सुख मे मगन ॥
ओ सुख जे लबलेस, येकहु बेरि सपनहुँ लखल ।
से नहि गनथि खगेस, ब्रह्म सुखहिँ सज्जन सुमति ॥८८॥

अवध फेर हम रहि किछु काले । देखल बाल बिनोद रसाले ॥१॥
राम प्रसाद भगति बर पैलहुँ । प्रभु पद नमि निज आश्रम ऐलहुँ ॥२॥
ब्याप न माया मोहि तखन सौँ । रघुनायक अपनौल जखन सौँ ॥३॥
ई सब गुप्त चरित हम गाओल । हरि माया मोहि जेना नचाओल ॥४॥
निज अनुभव पुनि कही खगेसे । बिनु हरि भजन न जाय कलेसे ॥५॥
राम कृपा बिनु सुनु खगराये । राम प्रभुत्व न जानल जाये ॥६॥
बिनु जनने न होअय परतीती । बिनु परतीति होअय नहि प्रीती ॥७॥
भगति न दृढ़ हो बिना पिरीती । जल चिकनइ खगपति जहि रीती ॥८॥

सोरठा—बिनु गुरु होअय कि ज्ञान, ज्ञान कि होअय बिराग बिनु ।
गाबय वेद पुरान, सुख कि भेटय हरि भगति बिनु ॥
क्यो बिश्राम कि पाब, तात सहज संतोष बिनु ।
चलय कि जल बिनु नाव, कोटि जतन पचि पचि मरी ॥८९॥

बिनु संतोष न काम नसैते । सुख सपनहुँ नहि काम अछैते ॥१॥
राम भजन बिनु काम न भागय । थल बिनु तरु कहियो की लागय ॥२॥

बिनु बिज्ञान कि ममता आबय । क्यो अबकास कि नभ बिनु पाबय ॥३॥
श्रद्धा बिना धरम हो नहिएँ । गंध कि पाबय क्यो बिनु महिएँ ॥४॥
तप बिनु हो कि तेज बिस्तारे । होय कि जल बिनु रस संसारे ॥५॥
बुध सेबा बिनु सील न आबय । प्रभु बिनु तेज रूप के पाबय ॥६॥
निज सुख बिनु मन होअय कि थीरे । परस कि होअय बिहीन समीरे ॥७॥
कोनो सिद्धि की बिनु बिस्वासे । बिनु हरि भजन न भब भय नासे ॥८॥

दोहा—बिनु बिस्वासेँ भगति नहि, बिनु तहि द्रवथि न राम ।
सपनहुँ रामक कृपा बिनु, जीव न लह बिश्राम ॥

सोरठा—ई बिचारि मति धीर, तजि कुतर्क संसय सकल ।
भजिय राम रघुवीर, करुनाकर सुंदर सुखद ॥६०॥

हम गौलहुँ निज मति अनुगामी । प्रभु प्रताप महिमा खगस्वामी ॥१॥
कहल न किछु हम जुगुति बढ़ा कय । परतछ देखलहुँ नयनेँ जा कय ॥२॥
महिमा नाम रूप गुन गाथे । सकल अमित अनंत रघुनाथे ॥३॥
निज निज मति मुनि हरि गुन गाबथि । निगम सेष सिव पार न पाबथि ॥४॥
अहँ सौँ लय मच्छर परजंते । उड़इछ नभ नहि पाबय अंते ॥५॥
तहिना रघुपति महिम अथाहे । तात कि क्यो कहियो लह थाहे ॥६॥
राम काम सय कोटि सुभग तन । दुरगा कोटि अमित अरिमर्दन ॥७॥
सक्र कोटि सय सरिस बिलासे । नभ सय कोटि अमित अबकासे ॥८॥

दोहा—मरुत कोटि सय बिपुल बल, रवि सय कोटि प्रकास ।
ससि सय कोटि सुसीतल, समन सकल भव त्रास ॥
काल कोटि सय सरिस अति, दुस्तर दुरुग दुरंत ।
धूमकेतु सय कोटि सम, दुराधरष भगवंत ॥६१॥

प्रभु अगाध सय कोटि पताले । समन कोटि सय सरिस कराले ॥१॥
तीरथ अमित कोटि सम पावन । नाम अखिल अघपुंज नसावन ॥२॥
हिम गिरि कोटि अचल रघुवीरे । सिंधु कोटि सय सम गंभीरे ॥३॥
कामधेनु सय कोटि समाने । सकल कामदायक भगवाने ॥४॥

सारद कोटि अमित चतुरत्वे । विधि सय कोटि सृष्टि निपुनत्वे ॥५॥
कोटि विष्णु सम पालन कर्ता । रुद्र कोटि सय सम संहर्ता ॥६॥
धनद कोटि सय सम धनबाने । माया कोटि प्रपंच निधाने ॥७॥
भार धरन सय कोटि अहीसे । निरबधि निरुपम प्रभु जगदीसे ॥८॥

छंद—निरुपम न उपमा आन राम समान राम निगम कहै ।
रवि कोटि सय खद्योत सम कहइत जेना लघुता लहै ॥
येहि भाँति निज निज मति बिलास मुनीस हरिहिँ बखानथी ।
प्रभु भाव ग्राहक अति कृपालु सप्रेम सुनि सुख मानथी ॥

दोहा—राम अमित सागर गुनक, थाह कि क्यो सक पाय ।
जे किछु सुनलहुँ संत सौँ, अहँ केँ देलहुँ सुनाय ॥

सोरठा—भावबस्य भगवान, सुखनिधान करुनाभवन ।
तजि ममता मद मान, भजी सदा सीतारमन ॥९२॥

सुनि भुसुंडि केर बचन बिसेसे । हरषि फुलाओल पंख खगेसे ॥१॥
नयन नीर मन अति हुलसायल । श्रीरघुपति प्रताप उर आयल ॥२॥
पछिला मोह सुमिरि दुख भेले । ब्रह्म अनादि मनुज बुझि लेले ॥३॥
पुनि पुनि काग चरन सिर नाओल । जानि राम सम प्रेम बढ़ाओल ॥४॥
तरथि न गुरु बिनु भव निधि सेहो । रहथि संभु ब्रह्मा सम जेहो ॥५॥
संसय सर्प ग्रसल मोहि ताता । दुखद लहरि कुतर्क बहु व्राता ॥६॥
तव स्वरूप गारुड़ि रघुनायक । मोहि जियाओल जन सुखदायक ॥७॥
तव प्रसाद मम मोह नसायल । अनुपम राम रहस्य बुझायल ॥८॥

दोहा—तनिक प्रसंसा कय कते, सीस नमा कर जोरि ।
बचन बिनीत सप्रेम मृदु, बजला गरुड़ बहोरि ॥
स्वामि अपन अबिबेक सौँ, छी पुछैत प्रभु तोहि ।
कृपासिंधु सादर कहू, जानि दास निज मोहि ॥९३॥

अहँ सर्वज्ञ तज्ञ तम पारे । सुमति सुसील सरल आचारे ॥१॥
ज्ञान बिरति बिज्ञान निवासे । रघुनायक केर अहँ प्रिय दासे ॥२॥
किय पाओल ई तन से बाता । कहू बुझा से हमरा ताता ॥३॥
रामचरित सर सुंदर स्वामी । पाओल कहाँ कहू नभगामी ॥४॥
सिव सौँ येहन सुनल थिक मोरे । नास महा प्रलयहुँ नहि तोरे ॥५॥
ईस्वर बचन न होअय अलीके । यैह हमर मन संसय थीके ॥६॥
अज जग जीब नाग नर सुरगन । नाथ सकल जग कालक भोजन ॥७॥
अंडकटाह अमित लयकारी । काल सदा दुरतिक्रम भारी ॥८॥

सोरठा—अहँकेँ ब्याप न काल, अतिकराल थिक हेतुकी ।
हमरा कहू कृपाल, ज्ञान प्रभाव कि जोगबल ॥

दोहा—अबितहिँ तव आश्रम प्रभो, हमर मोह भ्रम भाग ।
कोन हेतु से नाथ सब, कहू सहित अनुराग ॥९४॥

गरुड़ गिरा सुनि हरषित कागे । बजला उमा परम अनुरागे ॥१॥
धन्य धन्य तव मति उरगारी । प्रस्न अहँक हमरा प्रिय भारी ॥२॥
प्रस्न सप्रेम सोहाओन तव सुनि । बहु जनमक सुधि आयल मन पुनि ॥३॥
सब निज कथा कही हम गावी । तात सुनू सादर मन लावी ॥४॥
जप तप मख सम दम ब्रत दाने । बिरति बिबेक जोग बिज्ञाने ॥५॥
सबहुक फल रघुपति पद प्रेमे । तकरा बिन क्यो पाब न छेमे ॥६॥
पौलहुँ यहि तन रामक भकती । तैँ येहि पर मम अति अनुरकती ॥७॥
हो किछुओ निज स्वारथ जहि सौँ । जोड़य सब क्यो ममता तहि सौँ ॥८॥

सोरठा—येहन गरुड़ अछि नीति, श्रुति सम्मत सज्जन कहथि ।
अति नीचहु सौँ प्रीति, करी जानि निज परम हित ॥
पाट कीट सौँ हैछ, तहि सौँ पाटंबर रुचिर ।
सब क्यो कृमि पालैछ, परम अपावन प्रान सम ॥९५॥

* स्वारथ साँच जीब केर सेहे । मन क्रम बचन राम पद नेहे ॥ १॥
सेहे पाबन सेहे सुभग सरीरे । जे तन पाबि भजी रघुबीरे ॥ २॥

६१

राम बिमुख विधि सम तन जकरो । कबि कोबिद न प्रसंसथि तकरो ॥ ३॥
राम भगति येहि तन जमि गेले । तैँ प्रभु तन इ परम प्रिय भेले ॥ ४॥
तजी न तन निज इच्छा मरनो । श्रुतिहु कहय बिनु तन नहि भजनो ॥ ५॥
प्रथम मोह मोहि बहुत बिसायल । राम बिमुख सुख नीन न आयल ॥ ६॥
नाना जनम करम पुनि नाना । कयल जोग जप तप मख दाना ॥ ७॥
कोन जोनि नहि लेलहुँ जनमे । खगपति भ्रमि भ्रमि सगर भुवनमे ॥ ८॥
कय सब करम देखल भगवाने । सुखी न भेलहुँ येखन समाने ॥ ९॥
प्रभु हमरा बहु जनमक सोहे । सिव प्रसाद मति घेरल न मोहे ॥१०॥

दोहा--आब प्रथम जनमक चरित, कही सुनू बिहगेस ।
सुनि उपजय प्रभु चरन रति, जहि सौँ नसय कलेस ॥
एक कलप मे भेल प्रभु, जुग कलियुग मल मूल ।
नर ओ नारि अधर्म रत, सकल निगम प्रतिकूल ॥९६॥

तहि कलियुग कोसलपुर आबी । जनम लेल सूद्रक तन पाबी ॥१॥
सिव सेबक मन क्रम ओ बानी । आन देब निंदक अभिमानी ॥२॥
धन मदमत्त परम बाचाले । उग्र बुद्धि उर दम्भ बिसाले ॥३॥
जदपि रही रघुपति रजधानी । किछु महिमा नहि सकलहुँ जानी ॥४॥
अवध प्रभाव आब हम जानल । आगम निगम पुरान बखानल ॥५॥
कोनो जनम अवध बस जेहे । राम परायन हो प्रभु सेहे ॥६॥
अवध प्रभाव तखन बुझ प्रानी । उर बस जखन राम धनुपानी ॥७॥
से कलि काल कठिन उरगारी । पाप परायन सब नर नारी ॥८॥

दोहा--कलिमल ग्रसलक धर्म सब, लुपुत भेल सदग्रंथ ।
दंभी कय निज कलपना, प्रगट कयल बहु पंथ ॥
भेल लोक सब मोह बस, लोभ ग्रसल सुभ कर्म ।
ज्ञान सिंधु हरिजान सुनु, किछु बरनी कलि धर्म ॥९७॥

बरन धरम नहि आश्रम चारी । श्रुति बिरोध रत सब नर नारी ॥१॥
द्विज श्रुति बेचक भूप प्रजासन । मानय क्यो न निगम अनुसासन ॥२॥

मारग से जकरा जे भावय । पंडित से जे गाल बजाबय ॥३॥
मिथ्यारंभ दंभ रत जेहे । संत कहाबय सबतरि सेहे ॥४॥
सैह चतुर जे पर धन हारी । जे कर दंभ से बड़ आचारी ॥५॥
जे कह झूठ मसखरी जानय । तकरा गुनी सकल कलि मानय ॥६॥
निराचार जे श्रुति पथ त्यागी । कलियुग से ज्ञानी बैरागी ॥७॥
जकरा नख ओ जटा बिसाले । से तापस प्रसिद्ध कलिकाले ॥८॥

दोहा—असुभ भेष भूषन धने, भच्छ अभच्छ जे खाय ।
से जोगी से सिद्ध नर, कलि मे पूजल जाय ॥
सोरठा—जे करैछ अपकार, तकरा गौरब मान्य से ।
मन क्रम बचन लबार, से बकता कलिकाल मे ॥९८॥

नारि बिबस नर सकल जहाने । नाचय नर मरकटक समाने ॥१॥
सूद्र द्विजहिँ उपदेसय ज्ञाने । जनउ पहिरि कय लैछ कुदाने ॥२॥
सब नर काम लोभ रत क्रोधी । देब बिप्र श्रुति संत बिरोधी ॥३॥
गुन मंदिर सुंदर पति त्यागी । भजय नारि पर पुरुष अभागी ॥४॥
सौभागिनी बिभूषन हीने । बिधबा केर श्रृंगार नवीने ॥५॥
गुरु सिख आन्हर बहिर समाने । एक न देखय सुनय नहि आने ॥६॥
हरथि सिष्य धन सोक न हरइछ । से गुरु घोर नरक मे परइछ ॥७॥
माय बाप बालकहिँ बजाबय । उदर भरय से धरम सिखाबय ॥८॥

दोहा—ब्रह्मज्ञान बिनु नारि नर, कहय न दोसर बात ।
कौड़ी कारन लोभ बस, करय बिप्र गुरु घात ॥
सूद्र बाद द्विज सौँ करय, की तोहि सौँ हम घाटि ।
जानय ब्रह्म से बिप्रबर, आँखि देखाबय डाँटि ॥९९॥

परतिय लंपट कपट प्रबीने । मोह द्रोह ममता मे लीने ॥ १॥
से अभेदबादी ज्ञानी नर । कलि चरित्र देखल हम खगबर ॥ २॥
अपनहुँ जाथि तनिहु पुनि घालथि । कतहु सत्य पथ जे प्रतिपालथि ॥ ३॥
कलप कलप पड़ येक येक नरके । जे दूषय श्रुति कय बहु तरके ॥ ४॥

बरनाधम रौगनि घटकारे । स्वपच बेयाध कंक मद्कारे ॥ ५॥
तिय मुइने भेने धन नासे । मूड़ मुड़ाय लैछ संन्यासे ॥ ६॥
बिप्रहुँ सौं से निजहिँ पुजाबय । उभय लोक निज हाथ नसाबय ॥ ७॥
बिप्र निरच्छर लोलुप कामी । निराचार सठ बृषली स्वामी ॥ ८॥
सूद्र करय जप तप ब्रत नाना । बैसि बरासन कहय पुराना ॥ ९॥
सब नर कल्पित करय अचारे । जाय न कहल अनीति अपारे ॥१०॥

दोहा—भेल बरनसंकर कलिहिँ, भिन्न सेतु सब लोग ।
करय पाप ओ पाब दुख, भय बियोग रुज सोग ॥
श्रुति सम्मत हरि भगति पथ, संजुत बिरति बिबेक ।
तहि पर चलय न मोह बस, कल्पय पंथ अनेक ॥१००॥

बहु दाम सजाबय धाम जती । हरि लेल बिषय हटले बिरती ॥ १॥
तपसी धनबंत दरिद्र गृही । कलि कौतुक तात न होय कही ॥ २॥
कुलबंति निकालय नारि सती । गृह आनय चेरि निबारि गती ॥ ३॥
सुत मानय मातु पिता ता धरि । बनिता मुख देखल नहि जा धरि ॥ ४॥
प्रिय लागल सासुर टा जखने । रिपु रूप कुटुंब भेले तखने ॥ ५॥
नृप पाप परायन धर्म बिना । कय दंड प्रजा ठक नित्य दिना ॥ ६॥
धनबंत कुलीन मलीन अपी । द्विज चिन्ह जनेउ उघार तपी ॥ ७॥
जे मान न वेद पुरान मने । कलि से हरिसेबक संत भने ॥ ८॥
कबि बृंद मही न उदार सुनी । गुन दूषक ब्रात न कोपि गुनी ॥ ९॥
कलि बारंबार दुकाल परै । बिनु अन्न दुखी सब लोक मरै ॥१०॥

दोहा—सुनु खगेस कलि कपट हठ, दंभ द्वेष पाखंड ।
मान मोह मारादि मद, ब्यापि रहल ब्रह्मंड ॥
करइछ तामस धरम नर, जप तप मख ब्रत दान ।
देव न बरषथि भूमि पर, बओनहुँ जनम न धान ॥१०१॥

अबला कच भूषन भूरि छुधा । धन हीन दुखी ममता बहुधा ॥ १॥
सुख चाहय मूढ़ न धर्म रता । मति थोड़ कठोर न कोमलता ॥ २॥

कुज पीड़ित लोग न भोग लहै । अभिमान बिरोध अहेतु रहै ॥ ३॥
लघु जीबन संबत पंच दहे । कल्पांत न नास गुमान येहे ॥ ४॥
कलिकाल बेहाल केले मनुजा । नहि मानय क्यो अनुजा तनुजा ॥ ५॥
नहि तोष बिचार न सीतलता । सब जाति कुजाति लखी मँगता ॥ ६॥
इरषा परुषाच्छर लोलुपता । भरिपूर लखी समता बिगता ॥ ७॥
सब लोग बियोग बिसोक हते । बरनाश्रम धर्म अचार गते ॥ ८॥
नहि दान दया दम ज्ञान मने । जड़ता परबंचकताति घने ॥ ९॥
तन पोष परायन नारि नरे । परनिंदक ब्याप्त मही सगरे ॥१०॥

दोहा--सुनु खगेस कलिकाल थिक, मल अबगुन आगार ।
गुनो बहुत कलिकाल मे, बिनु प्रयास निस्तार ॥
कृत त्रेता द्वापर जुगे, पूजा मख ओ जोग ।
जे गति से कलिकाल हरि, नाम सोँ पाबय लोग ॥१०२॥

कृतजुग सब जोगी बिज्ञानी । कय हरि ध्यान तरथि भब प्रानी ॥१॥
त्रेता बिबिध जज्ञ नर करथी । प्रभुहिँ समर्पि करम भब तरथी ॥२॥
द्वापर पुजि पुजि रघुपति चरने । नर भब तरय आन नहि सरने ॥३॥
कलिजुग केबल हरिगुन गाने । थाहि लिअय भबसिंधु महाने ॥४॥
कलिजुग जोग जज्ञ नहि ज्ञाने । एक अधार राम गुन गाने ॥५॥
सब भरोस तजि भज जे रामहिँ । प्रेम सहित गाबय गुनग्रामहिँ ॥६॥
से निश्चय काटय भब जाले । नाम प्रताप प्रगट कलिकाले ॥७॥
कलि केर एक पुनीत प्रतापे । मानस पुन्य होअय नहि पापे ॥८॥

दोहा--कलिजुग सम जुग आन नहि, जौँ नर कर बिस्वास ।
गाबि राम गुन गन बिमल, भब तर बिनहिँ प्रयास ॥
चारि चरन धरमक प्रगट, कलि मे एक प्रधान ।
जेनकेन रूपेँ देने, दान करय कल्यान ॥१०३॥

होय सबहु केँ नित जुग धरमे । प्रेरित रामक माया मरमे ॥१॥
सुद्ध सत्त्व समता बिज्ञाने । मन प्रसन्न कृत धरम महाने ॥२॥

सत्त्व बहुत रज किछु रति कर्मे । सब बिधि सुख त्रेता कॅर धर्मे ॥३॥
बहु रज स्वल्प सत्त्व किछु तामस । द्वापर धरम हरष भय मानस ॥४॥
तामस बहुत रजोगुन थोरे । कलि प्रभाव बिरोध चहु ओरे ॥५॥
बुध मन मे जुग धरम बिचारी । होथि धरम रत अधरम छारी ॥६॥
काल धरम नहि ब्यापय तनिका । रघुपति चरन प्रीति अति जनिका ॥७॥
नटकृत बिकट कपट खगराया । नट सेबक नहि ब्यापय माया ॥८॥

दोहा—हरि माया कृत दोष गुन, बिनु हरि भजन न जाय ।
भजिय राम तजि काम सब, ई बिचारि मन भाय ॥
ताही कलि मे बरष बहु, बसलहुँ अवधक धाम ।
पड़ल अकाल बिपत्ति बस, गेलहुँ दोसर ठाम ॥१०४॥

गेलहुँ उजेनी सुनु उरगारी । दीन मलीन दरिद्र दुखारी ॥१॥
बितल काल किछु पाओल बित्ते । करी ततय सिव सेबा नित्ते ॥२॥
बिप्र एक नित वेद बिधाने । कर सिव पूजा काज न आने ॥३॥
परम साधु परमारथ बिंदक । संभु उपासक नहि हरि निंदक ॥४॥
तनि सेबी हम कपट समेते । द्विज दयालु अति नीति निकेते ॥५॥
बाहर नम्र नाथ मोहि जानी । बिप्र पढ़ाबथि सुत सम मानी ॥६॥
संभुमंत्र मोहि द्विजबर देलनि । सुभ उपदेस बिबिध बिधि केलनि ॥७॥
जपी मंत्र सिव मंदिर नित्ते । बढ़ल दंभ अहमिति मम चित्ते ॥८॥

दोहा—हम खल मल संकुल मति, अधम जाति बस मोह ।
हरिजन द्विज लखइत जरी, करी विष्णु कॅर द्रोह ॥

सोरठा—गुरु नित देथि प्रबोध, दुखित देखि आचरन मम ।
हमरा हो अति क्रोध, दंभिहिँ रुचय की नीति भल ॥१०५॥

एक बेरि गुरु निकट बजौलनि । हमरा बहु बिधि नीति सिखौलनि ॥१॥
सिव सेबा कॅर यैह पूत फल । भगति रामचरनक हो अबिरल ॥२॥
रामहिँ भजथि तात सिब धातो । नर पामरक कोन हो बातो ॥३॥
अज सिव जनिक चरन अनुरागी । तनिक द्रोह सुख चाह अभागी ॥४॥

हर केँ हरिसेवक गुरु कहले । सुनि खगनाथ हृदय मम दहले ॥५॥
अधम जाति हम बिद्या पौने । भेलहुँ जेना अहि दूध पियौने ॥६॥
मानी कुटिल कुभाग्य कुजाती । गुरु केर द्रोह करी दिन राती ॥ ७॥
अति दयालु गुरु स्वल्प न क्रोधे । देथि बरोबरि सीख सुबोधे ॥ ८॥
नीच बड़ाइ जाहि सौँ पाबय । से प्रथमहिँ हठि ताहि नसाबय ॥ ९॥
धूम जनम अनलहिँ सौँ पाबय । तकरहिँ धन पद पाबि मिझाबय ॥१०॥
रज पथ पड़ल निरादृत रहइछ । सबहुक पद प्रहार नित सहइछ ॥११॥
उड़बय मरुत ताहि से भरइछ । पुनि नृप नयन मुकुट पर पड़इछ ॥१२॥
सुनु खगपति बुझि येहन प्रसंगे । बुधजन करथि न अधमक संगे ॥१३॥
येहन कहथि कवि कोबिद नीती । खल सौँ भल नहि कलह न प्रीती ॥१४॥
उदासीन भय रहि दिन राती । खल केँ तेजिय स्वानक भाँती ॥१५॥
हम खल उर छल कपटक खानी । मोहि न सोहाय गुरुक हित बानी ॥१६॥

दोहा—हर मंदिर मे एक दिन, जपति रही सिव नाम ।
गुरु अयला अभिमान सौँ, उठि नहि कयल प्रनाम ॥
से दयालु नहि कहल किछु, उर न रोष लवलेस ।
गुरु अपमान महान अघ, सहि सकला न महेस ॥१०६॥

मंदिर माँझ भेल नभ बानी । रे हतभाग्य अज्ञ अभिमानी ॥१॥
जद्यपि तव गुरु केँ नहि क्रोधे । अति कृपालु चित समयक बोधे ॥२॥
तदपि साप सठ दै छी तोही । नीति बिरोध सोहाय न मोही ॥३॥
जौँ नहि दंड करी खल तोरे । भ्रष्ट होयत श्रुति मारग मोरे ॥४॥
गुरु सौँ इरिषा कर सठ जेहे । पड़य कोटि जुग रौरब सेहे ॥५॥
त्रिजक जोनि पुनि धरय सरीरे । अयुत जनम भरि पाबय पीरे ॥६॥
पापी अजगर बनि जे बैसल । रह खल अहि बनि मति मल पैसल ॥७॥
महा बिटप धोधरि मे जा कय । रह अधमाधम अधगति पा कय ॥८॥

दोहा—कैलनि हाहाकार गुरु, दारुन सुनि सिव साप ।
हमरा अति कँपइत निरखि, उर उपजल परिताप ॥

कय दंडवत सप्रेम द्विज, सिवहिँ जोरि जुग पानि ।
बिनय करथि गद गद स्वरेँ, हमर घोर गति जानि ।।१०७।।

छंद—नमामीशमीशान निर्वाणरूपं । विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपं ।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं । चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं ।
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं । गिराज्ञानगोतीतमीशं गिरीशं ।
करालं महाकालकालं कृपालं । गुणागार संसारपारं नतोऽहं ।
तुषाराद्रिसंकाशगौरं गभीरं । मनोभूतिकोटिप्रभा श्रीशरीरं ।
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनी चारु गंगा । लसद्भालबालेंदु कंठे भुजंगा ।
चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं । प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं ।
मृगाधीशचर्मांबरं मुंडमालं । प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ।
प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं । अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं ।
त्रयः शूलनिर्मूलनं शूलपाणिं । भजेहं भवानीपतिं भावगम्यं ।
कलातीत कल्याणकल्पांतकारी । सदा सज्जनानंददाता पुरारी ।
चिदानंदसंदोह मोहापहारी । प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ।
न यावद् उमानाथपादारविंदं । भजंतीह लोके परे वा नराणां ।
न तावत्सुखं शांति संतापनाशं । प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं ।
न जानामि योगं जपं नैव पूजां । नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं ।
जराजन्मदुःखौघतातप्यमानं । प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो ।

श्लोक—रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ।।

दोहा—सुनि बिनती सर्वज्ञ सिव, देखि बिप्र अनुराग ।
भेल नभ बानी मंदिरहिँ, हे द्विजबर बर माँग ।।

जौँ प्रसन्न प्रभु मोहि पर, नाथ दीन पर नेह।
प्रभु दय निज पद भगति पुनि, दिय दोसर बर एह ॥
तव माया बस जीब जड़, भटकय सतत जहान।
क्रोध न तकरा पर करू, कृपासिंधु भगवान ॥
आब कृपा करु एहि पर, संकर दीनदयाल।
साप अनुग्रह जाय भय, प्रभु बितने किछु काल ॥१०८॥

येकरा जेना परम कल्याने। सैह आब करु कृपानिधाने ॥ १॥
बिप्र गिरा सुनि परहित खानी। एवमस्तु इति भेल नभ बानी ॥ २॥
जदपि कयल ई दारुन पापे। हम पुनि देल क्रोध कय सापे ॥ ३॥
तोहर तदपि साधुता देखी। करबै येहि पर कृपा बिसेखी ॥ ४॥
छमासील जे पर उपकारी। से द्विज मोहि प्रिय जथा खरारी ॥ ५॥
हमर श्राप द्विज ब्यर्थ न जायत। जनम सहस्र अबस ई पायत ॥ ६॥
जनमति मरति दुसह दुख जेहे। स्वल्पो एहि न ब्यापत सेहे ॥ ७॥
कोनो जनम मेटत नहि ज्ञाने। सुनह सुद्र मम बचन प्रमाने ॥ ८॥
रघुपति पुरी जनम तोँ लेलह। पुनि मम सेबा मे मन देलह ॥ ९॥
पुरी प्रभाब अनुग्रह मोरे। राम भगति उपजत उर तोरे ॥१०॥
आब सुनह तोँ सत्य हमर मत। द्विज सेबा थिक हरितोषन ब्रत ॥११॥
करह आब जुनि द्विज अपमाने। संतहिँ बुझह अनंत समाने ॥१२॥
इंद्र कुलिस मम सूल बिसाले। काल दंड हरि चक्र कराले ॥१३॥
येकरो मारल मरय न जेहो। बिप्र द्रोह पाबक जर सेहो ॥१४॥
येहन बिबेक धरह तोँ मन मे। दुर्लभ किछु नहि तोरा भुबन मे ॥१५॥
आसिष एक और अछि मोरे। अप्रतिहत गति होयतहु तोरे ॥१६॥

दोहा—सिवक बचन सुनि हरषि गुरु, एवमस्तु ई भाखि।
मोहि प्रबोधि गेलाह गृह, संभु चरन उर राखि ॥
कालक प्रेरित बिंध्य गिरि, जाय भेलहुँ हम ब्याल।
पुनि तनु तजल प्रयास बिनु, बितल जखन किछु काल ॥

धरी जे सभ तन पुनि तजी, अनायास हरिजान।
नबल बसन जनु पहिरि कय, नर परिहरय पुरान॥
सिव राखल श्रुति नीति ओ, हमहुँ न पौल कलेस।
येहि बिधि धयलहुँ बिबिध तन, ज्ञान न गेल खगेस॥१०६॥

तिरजक सुर नर जे तन धेलहुँ। तहँ तहँ राम भजन रत भेलहुँ॥ १॥
एक सूल मोहि हो न बिसारी। सील सोभाव गुरुक मृदु भारी॥ २॥
धरम देह द्विज केर हम पाओल। सुर दुरलभ पुरान श्रुति गाओल॥ ३॥
ततहु करी बालकगन संगे। रघुनायक लीला बहुरंगे॥ ४॥
बय लखि लगला पिता पढ़ाबय। बूझी सुनी गुनी नहि भाबय॥ ५॥
मन सौँ सकल बासना भागल। केबल रामचरन लब लागल॥ ६॥
गरुड़ येहन कहु कोन अभागी। खरी सेब सुरधेनुहिँ त्यागी॥ ७॥
किछु न रुचय मोहि प्रेम मगन हम। पढ़ा पढ़ा थकलाह पिता मम॥ ८॥
कालक बस भेला पितु माता। हम बन गेलहुँ भजय जनत्राता॥ ९॥
जहँ जहँ बिपिन मुनीस्वर पाबी। आश्रम जा जा सीस नमाबी॥१०॥
सब सौँ पुछी राम गुन गाथे। कहथि सुनी हरषित खगनाथे॥११॥
सुनति घुरी हरि गुनानुबादे। अब्याहत गति संभु प्रसादे॥१२॥
उर दृढ़ त्रिबिध ईषना भागल। एक लालसा पुनि अति जागल॥१३॥
जखन राम पद पंकज देखब। सफल जनम निज तखनहिँ लेखब॥१४॥
जनिकहिँ पुछी सैह मुनि कहथी। ईस्वर सर्ब भूतमय रहथी॥१५॥
निरगुन मत हमरा न सोहायल। सगुन ब्रह्म रति उर अधिकायल॥१६॥

दोहा—गुरु केर बचनक सुरति कय, राम चरन मन लाग।
रघुपति जस गबइत घुरी, छन छन नब अनुराग॥
मेरु सिखर छाहरि बड़क, मुनि लोमस आसीन।
माथ नमाओल चरन पर, कहल बचन अति दीन॥
सुनि मम बचन बिनीत मृदु, पुनि कृपालु खगराज।
आदर मोहि पुछइत भेला, द्विज अयलहुँ कोन काज॥

तखन कहल हम कृपानिधि, अहँ सर्बज्ञ सुजान।
सगुन ब्रह्म आराधना, हमरा कहु भगवान ॥११०॥

मुनि तखनहि रघुपति गुन गाथे। कहलनि किछु सादर खगनाथे ॥ १॥
ब्रह्म ज्ञान रत मुनि बिज्ञानी। मोहि परम अधिकारी जानी ॥ २॥
लगला करय ब्रह्म उपदेसे। अज अद्वैत अगुन हृदयेसे ॥ ३॥
अकल अनीह अनाम अरूपे। अनुभवगम्य अखंड अनूपे ॥ ४॥
मन गोतीत अमल अबिनासी। निरबिकार निरबधि सुखरासी ॥ ५॥
से अहँ अहँ हुनि मे नहि भेदे। बारि बीचि इव गावय वेदे ॥ ६॥
बिबिध भाँति मुनि मोहि बुझाओल। निरगुन मत मम हृदय न भाओल ॥ ७॥
पुनि हम कहल नमा पद सीसे। सगुन उपासन कहू मुनीसे ॥ ८॥
राम भगति जल मम मन मीने। भिन्न न होयत मुनीस प्रबीने ॥ ९॥
से उपदेस कहू कय दाया। निज नयनेँ देखी रघुराया ॥१०॥
भरि लोचन बिलोकि अवधेसे। तखन सुनब निगुन उपदेसे ॥११॥
सुनि पुनि सुचि हरिकथा सुनाओल। खंडि सगुन निरगुन मत गाओल ॥१२॥
पुनि हम निरगुन मत केँ टारी। सगुन निरूपी कय हठ भारी ॥१३॥
उत्तर प्रतिउत्तर बढ़ि कैलहुँ। क्रोध चिन्ह मुनि तन मे पैलहुँ ॥१४॥
सुनु प्रभु अधिक अबज्ञा करबे। ध्रुब ज्ञानिहुँ उर क्रोधेँ भरबे ॥१५॥
जौँ अतिसय करते क्यो रगरा। चानन सौँ हो आगिक धधरा ॥१६॥

दोहा—बारंबार सकोप मुनि, करथि निरूपन ज्ञान।
तखन बैसि हम अपन मन, करी बिबिध अनुमान ॥
द्वैत बुद्धि बिनु क्रोध की, द्वैत कि बिनु अज्ञान।
माया बस परिछिन्न जड़, जीब कि ईस समान ॥१११॥

सभक जे हित कर की दुख तनिका। से कि दरिद्र परसमनि जनिका ॥ १॥
परद्रोही की होअय निसंके। कामी की रहइछ अकलंके ॥ २॥
बंस कि रह द्विज अनहित ठनने। कर्म कि होअय स्वरूपहिँ जनने ॥ ३॥
ककरहुँ सुमति कि खल सँग आवय। परतिय रत की सुभ गति पावय ॥ ४॥

भव कि पड़य परमात्मा बिंदक । सुखी कि हो कहियो हरिनिंदक ॥ ५॥
राज कि रह बिनु नीतिक ज्ञाने । अघ कि रहय हरि चरित बखाने ॥ ६॥
पावन जस की हो बिनु धरमे । पसरय अजस कि बिना कुकरमे ॥ ७॥
लाभ कि किछु हरिभगति समाने । जहि गाबथि श्रुति संत पुराने ॥ ८॥
येहि सौं बढ़ि कि हानि किछु आता । भजी न राम पाबि नर गाता ॥ ९॥
अघ कि पिसुनता सम किछु आने । धरम कि दया सरिस हरिजाने ॥१०॥
येहि बिधि अमित जुगुति मन गूनी । मुनि उपदेस न सादर सूनी ॥११॥
पुनि पुनि सगुन पच्छ हम रोपी । तखन बचन मुनि बजला कोपी ॥१२॥
मूढ़ परम सिख दी नहि मानह । उत्तर प्रतिउत्तर बहु ठानह ॥१३॥
नहि सत बचन प्रतीत करैछह । सब सौं कौआ जकाँ डरैछह ॥१४॥
सठ स्वपच्छ तव हृदय बिसाले । सपदि होअह पच्छी चंडाले ॥१५॥
मुनिक साप हम सीस चढ़ाओल । नहि किछु भय न दीनता पाओल ॥१६॥

दोहा—तखन भेलहुँ हम काग झट, मुनि पद सीस नमाय ।
सुमिरि राम रघुवंसमनि, उड़ि चललहुँ हरषाय ॥
राम चरन रत जे उमा, बिगत काम मद क्रोध ।
निज प्रभुमय जग लखथि तहि, ककरा संग बिरोध ॥११२॥

सुनु खगेस नहि किछु रिषि दूषन । उर प्रेरक रघुवंसबिभूषन ॥ १॥
कृपासिंधु मुनि मति कय भोरे । लेलनि प्रेम परिच्छा मोरे ॥ २॥
बुझि निज जन मोहि तन मन आने । मुनि मति फेरलनि पुनि भगवाने ॥ ३॥
रिषि मम महत सीलता देखी । राम चरन बिस्वास बिसेखी ॥ ४॥
अति बिसमित पुनि पुनि पछताओल । मुनि मोहि सादर बहुरि बजाओल ॥ ५॥
मम परितोष बिबिध बिधि केलनि । राम मंत्र हरषित भय देलनि ॥ ६॥
बालक रूप राम केर ध्याने । कहलनि मोहि मुनि कृपानिधाने ॥ ७॥
सुभग सुखद भाओल अति मोही । से प्रथमहि सुनौल हम तोही ॥ ८॥
तहँ किछु काल मोहि मुनि राखल । रामचरित मानस मुनि भाखल ॥ ९॥
सादर मोहि ई कथा सुना कय । पुनि कहलनि सुभ वचन बुझा कय ॥१०॥

रामचरित सर गुप्त सोहावन । संभु प्रसादे पौलहुँ पावन ॥११॥
अहँ कें राम भगत निज जानी । कहलहुँ हम निज कथा बखानी ॥१२॥
राम भगति उर मे नहि जनिका । तात न कहियो कहबे तनिका ॥१३॥
हमरा मुनि बहु भाँति बुझाओल । हम सप्रेम सिर मुनिहिँ नमाओल ॥१४॥
निज कर कमल परसि मम सीसे । हरषित आसिष देलनि मुनीसे ॥१५॥
रामभगति अबिरल तव अंतर । हमर प्रसादे बसत निरंतर ॥१६॥

दोहा—सदा राम प्रिय होउ अहँ, सुभ गुन भवन अमान ।
काम रूप इच्छा मरन, ज्ञान बिराग निधान ॥
जहि आश्रम अहँ बसब पुनि, सुमिरति श्रीभगवंत ।
ब्यापि अबिद्या सकत नहि, जोजन येक परजंत ॥११३॥

काल करम गुन दोष सोभावे । किछु दुख तोँहि न ब्यापत आवे ॥ १॥
राम रहस्य ललित बिधि नाना । गुप्त प्रगट इतिहास पुराना ॥ २॥
बिनु श्रम अहँ जानब सब सेहे । होयत राम पद नित नव नेहे ॥ ३॥
करब हृदय मे इच्छा जे टा । हरि प्रसाद नहि दुरलभ से टा ॥ ४॥
सुनि मुनि आसिष सुनु मति धीरे । ब्रह्म गिरा नभ भेल गँभीरे ॥ ५॥
एवमस्तु तव बच मुनि ज्ञानी । ई मम भगत करम मन बानी ॥ ६॥
सुनि नभ गिरा हरष मोहि भेले । प्रेम मगन संसय सब गेले ॥ ७॥
बिनती कय मुनि अनुमति माँगी । पुनि पुनि मुनि पद पंकज लागी ॥ ८॥
येहि आश्रम सहर्ष चलि ऐलहुँ । प्रभु प्रसाद दुरलभ बर पैलहुँ ॥ ९॥
येतय बसति मोहि सुनु खगईसे । बीतल कलप सात ओ बीसे ॥१०॥
करी सदा रघुपति गुन गाने । सादर सुनथि बिहंग सुजाने ॥११॥
जखन जखन अवधहिँ रघुबीरे । धरथि भगति हित मनुज सरीरे ॥१२॥
तखन तखन रामक पुर आबी । सिसु लीला बिलोकि सुख पाबी ॥१३॥
पुनि उर राखि राम सिसु रूपे । निज आश्रम आबी खग भूपे ॥१४॥
अहँ कें हम सब कथा सुनौलहुँ । काग देह जहि कारन पौलहुँ ॥१५॥
कहल तात तव प्रस्न बिचारी । राम भगति महिमा अति भारी ॥१६॥

दोहा—तहि सौँ ई तन मोहि प्रिय, भेल राम पद नेह।
दरसन पौलहुँ निज प्रभुक, गेल सकल संदेह ॥

मास पारायण, विश्राम—२६

भगति पच्छ हठ कयल हम, देल महारिषि श्राप।
मुनि दुरलभ बर पौल ई, देखू भजन प्रताप ॥११४॥

जे ई भगति जानि परिहरइछ। केवल ज्ञान हेतु श्रम करइछ ॥ १॥
से जड़ कामधेनु गृह त्यागी। तकइत फिरथि आक पय लागी ॥ २॥
जे हरि भगति त्यागि खगनाहे। आन उपाय करथि सुख चाहे ॥ ३॥
से सठ महासिंधु बिनु तरनी। हेलि तरय चाहथि जड़ करनी ॥ ४॥
सुनि भुसुंडि कैर बचन भवानी। बजला गरुड़ हरषि मृदु बानी ॥ ५॥
अहँक प्रसादेँ प्रभु मम हीतल। संसय सोक मोह भ्रम बीतल ॥ ६॥
सुनल पुनीत राम गुन ग्रामे। अहँक कृपेँ पौलहुँ बिश्रामे ॥ ७॥
एक बात प्रभु पूछी तोही। कहू बुझाय कृपानिधि मोही ॥ ८॥
कहथि संत मुनि वेद पुराने। नहि किछु दुर्लभ ज्ञान समाने ॥ ९॥
मुनि तोहि सैह सुनौलनि ज्ञाने। नहि आदरलहुँ भगति समाने ॥१०॥
अंतर कते भगति ओ ज्ञाने। सकल कहू प्रभु कृपानिधाने ॥११॥
सुनि उरगारि बचन सुख मानल। सादर काग सुजान बखानल ॥१२॥
भगति ज्ञान मे नहि किछु भेदे। उभय हरय भव संभव खेदे ॥१३॥
नाथ मुनीस कहथि किछु अंतर। सावधान से सुनु बिहंगवर ॥१४॥
ज्ञान बिराग जोग बिज्ञाने। ई सब पुरुष सुनिय हरिजाने ॥१५॥
पुरुष प्रताप प्रबल सब भाँती। अबला अबल सहज जड़ जाती ॥१६॥

दोहा—पुरुष सकथि तजि नारि केँ, जे बिरक्त मति धीर।
कामी नहि जे बिषय बस, बिमुख चरन रघुबीर ॥

सोरठा—मुनि ज्ञानहुँक निधान, मृगनयनिक मुख केँ निरखि।
बिबस होथि हरिजान, नारि बिष्णु माया प्रगट ॥११५॥

येतय न पच्छपात किछु राखी । वेद पुरान संत मत भाखी ॥१॥
मोह न नारि नारि कैर रूपे । पन्नगारि ई रीति अनूपे ॥२॥
सुनू गरुड़ माया ओ भगती । नारि बर्ग दुहु जानय जगती ॥३॥
पुनि रघुबीरहिँ भगति पियारी । माया खलु नरतकी बेचारी ॥४॥
भगतिहिँ सानुकूल रघुराया । तैँ डेराथि अति हिनि सौँ माया ॥५॥
राम भगति निरुपम निरुपाधी । बसय जनिक उर सदा अबाधी ॥६॥
सकुचय माया तकरा हेरी । निज प्रभुता किछु सकय न प्रेरी ॥७॥
येहन जानि जे मुनि बिज्ञानी । जाचथि भगति सकल गुनखानी ॥८॥

दोहा—ई रहस्य रघुनाथ कैर, भट क्यो बुझि न पबैछ ।
जे बुझ तेहि रघुपति कृपेँ, सपनहुँ मोह न हैछ ॥
ज्ञान भगति कैर भेद पुनि, औरो सुनिय प्रबीन ।
जे सुनि होइछ राम पद, प्रीति सदा अविछीन ॥११६॥

सुनिय तात ई अकथ कहानी । बुझितहि बनय न होअय बखानी ॥ १॥
ईस्वर अंस जीव अबिनासी । चेतन अमल सहज सुखरासी ॥ २॥
से प्रभु माया केर अधीने । बद्ध कीर मरकट सम दीने ॥ ३॥
जड़ चेतनहिँ गेठ दृढ़ पड़ले । यद्यपि मृषा छुटब नहि सरले ॥ ४॥
जीव तखन सौँ भैल संसारी । छुटय न गेठ न होअय सुखारी ॥ ५॥
श्रुति पुरान जुगुती बहु गाओल । ओझर बढ़य न हो सोझराओल ॥ ६॥
जीव हृदय तम मोह बिसेखी । फुजय गेठ किमि पड़य न देखी ॥ ७॥
येहन सँजोग ईस कर जखने । से सोझराय कदाचित तखने ॥ ८॥
सात्विक श्रद्धा धेनु ललामे । जौँ हरि कृपेँ बसय उर धामे ॥ ९॥
जप तप व्रत जम नियम अपारे । जे श्रुति कह सुभ धरम अचारे ॥१०॥
जखन गाय तृन हरित इ खाइछ । भाव सुबत्सहिँ पाबि पन्हाइछ ॥११॥
बृत्ति छान बासन बिस्वासे । निरमल मन अहीर निज दासे ॥१२॥
परम धरममय दुहइछ दूधे । औँटय अनल अकाम बिसूधे ॥१३॥
तोष छमाक बसात जुड़ाबय । दय जोड़न धृति समक जमाबय ॥१४॥

मुदिता माठ बिचार मथानी । दम अधार रजु सत्य सुबानी ॥१५॥
पुनि मथि कय बिराग नबनीते । काढ़य सुंदर बिमल पुनीते ॥१६॥

दोहा—जोग अगिन कय प्रगट पुनि, करम सुभासुभ जारि ।
ममता मल दहि ज्ञान घृत, बुद्धि सराब निथारि ॥
पुनि बिज्ञान रूपिनी, बुद्धि बिसद घृत पाय ।
चित्त दिया भरि धरय दृढ़, समता दियठि बनाय ॥
तीन अबस्था तीन गुन, तहि कपास सौँ छाँटि ।
तूर तुरीय सँम्हारि पुनि, बाती बनबय बाँटि ॥

सोरठा—येहि बिधि लेसय दीप, तेज रासि बिज्ञानमय ।
जैतहिँ जकर समीप, जरय मदादिक सलभ सब ॥११७॥

सोहमस्मि इति बृत्ति अखंडे । दीप सिखा से परम प्रचंडे ॥ १॥
आतम अनुभव सुख सुप्रकासे । हो भवमूल भेद भ्रम नासे ॥ २॥
प्रबल अबिद्या केर परिवारे । मोह आदि तम मेटय अपारे ॥ ३॥
से बुधि तखन प्रकासहिँ पाबय । बैसि हृदय गृह गेठ छोड़ाबय ॥ ४॥
पाबय खोलि गेठ ई जखने । जीव कृतारथ होयत तखने ॥ ५॥
खोलइत गेठि जानि खगराया । बिघ्न अनेक पसारय माया ॥ ६॥
रिद्धि सिद्धि सबकेँ हुलकाबय । आबि से बुद्धिहिँ लोभ देखाबय ॥ ७॥
कल बल छल कय जाय समीपे । आँचर बात मिझाबय दीपे ॥ ८॥
होअय बुद्धि जौँ परम सयानी । चितय न तकरा अनहित जानी ॥ ९॥
बिघिन सकय जौँ बुद्धि न बाधी । पुनि सुरगनहुँ करैछ उपाधी ॥१०॥
इंद्रिय द्वार झरोखा नाना । तहँ तहँ सुर बैसथि कय थाना ॥११॥
अबइत बिषय बसात निहारी । पुनि हठि देथि कपाट उघारी ॥१२॥
जखन पवन से उर गृह जाइछ । तखन दीप बिज्ञान मिझाइछ ॥१३॥
गेठ खुजल नहि जोतिहु मेटल । बिषय बात हत बुद्धिहुँ बेकल ॥१४॥
इंद्रिय सुरहिँ ज्ञान नहि भावय । बिषय भोग पर प्रीति लगाबय ॥१५॥
बिषय समीर बुद्धि गेल भाँती । पुनि के दीप लेसओ ओहि भाँती ॥१६॥

दोहा—तखन जीव पुनि बिबिध बिधि, पावय संसृति क्लेस।
हरि माया दुस्तर अमित, तरल न जाय खगेस॥
कहति कठिन बुझइत कठिन, साधन कठिन बिबेक।
होअय घुनाच्छर न्याय जौं, पुनि प्रत्यूह अनेक॥११८॥

ज्ञान पंथ असि धार प्रमाने। खसइत लगय न देरि निदाने॥ १॥
जे निरबिघ्न पंथ निरबहथी। से कैवल्य परमपद लहथी॥ २॥
अति दुर्लभ कैवल्य परम पद। संत पुरान निगम आगम बद॥ ३॥
भजइत राम मुकुति से अपनहि। अनइच्छित आबय बिनु मँगनहि॥ ४॥
बिनु थल जेना न रहि सक पानी। क्यो कर जतन कोटि बिधि ठानी॥ ५॥
तहिना बिनु हरि भगति खगेसे। रहि नहि सकय मोच्छ सुख सेषे॥ ६॥
हरिक भगत पटु येहन बिचारी। लुबुधथि भगति मुकुति कें टारी॥ ७॥
भगति करति बिनु जतन प्रयासे। संसृति मूल अबिद्या नासे॥ ८॥
भोजन कर क्यो तृप्तिक लागी। तकरा पचबय जठरक आगी॥ ९॥
एहन सुगम सुखद हरि भगती। रुचय न येहन मूढ़ के जगती॥१०॥

दोहा—सेबक सेब्य भाव बिनु, भव न तरय उरगारि।
भजू राम पद पंकजहिँ, येहन सिधांत बिचारि॥
जे चेतन कें जड़ करथि, पुनि जड़ कें चैतन्य।
तहि समर्थ रघुनाथ कें, जे भज जीव से धन्य॥११९॥

ज्ञान सिधांत बखानल आबे। सूनू भगति मनिक परभाबे॥ १॥
राम भगति चिंतामनि सुंदर। बसय गरुड़ जकरा उर अंतर॥ २॥
परम प्रकास रूप दिन राती। चाही किछु न दीप घृत बाती॥ ३॥
मोह दरिद्र निकट नहि आबय। लोभ बात तकरा न मिझाबय॥ ४॥
मेटय अबिद्या तम अति भारी। सलभ समूह जाय सब हारी॥ ५॥
खल कामादि ताहि सौं दूरे। राम भगति बस जकरा ऊरे॥ ६॥
गरल सुधा अरि हित बनि आबय। तहि मनि बिनु सुख क्यो नहि पावय॥ ७॥
ब्यापय मानस रोग न भारी। जकरा बस सब जीव दुखारी॥ ८॥

राम भगति मनि उर बस जकरा । दुख लवलेस न सपनहुँ तकरा ॥ ९॥
चतुर सिरोमनि से संसारे । जे मनि हेतु सुजतन सम्हारे ॥१०॥
से मनि अछि परतछ जग जइयो । राम कृपा बिनु मिलय न तइयो ॥११॥
सुगम उपाय पैब अछि ओकर । नर हतभाग्य दैछ तहि ठोकर ॥१२॥
पावन परबत वेद पुराना । राम कथा रुचिराकर नाना ॥१३॥
मरमी सज्जन सुमति कोदारी । ज्ञान बिराग नयन उरगारी ॥१४॥
भाव सहित ताकय जे प्रानी । पाब भगति मनि सब सुख खानी ॥१५॥
नाथ येहन मोहि मन बिस्वासे । राम सौँ अधिक राम केर दासे ॥१६॥
राम सिंधु घन सज्जन धीरे । चंदन तरु हरि संत समीरे ॥१७॥
सबहुक फल हरि भगति मनोहर । संत छोड़ि से पौल न दोसर ॥१८॥
बुझि से येहन करय सतसंगे । राम भगति तहि सुलभ बिहंगे ॥१९॥

दोहा—ब्रह्म पयोनिधि ज्ञान पुनि, मंदर सुरगन संत ।
कथा सुधा मथि काढ़थी, भगति मधुरता अंत ॥
बिरति ढाल असि ज्ञान मद, मोह लोभ रिपु मारि ।
जय पाबिय से हरि भगति, देखु खगेस बिचारि ॥१२०॥

मुनि सप्रेम खगपति ई भाखल । मोहि पर भाव कृपालु जौँ राखल ॥ १॥
तौँ हमरा निज सेवक जानी । सप्त प्रस्न प्रभु कहू बखानी ॥ २॥
पहिने कहू नाथ मतिधीरे । सब सौँ दुरलभ कोन सरीरे ॥ ३॥
बड़ दुख कोन कोन सुख भारी । से संछेपे कहू बिचारी ॥ ४॥
संत असंत मरम अहँ जानी । हुनकर कहू सोभाव बखानी ॥ ५॥
कोन पुन्य श्रुति बिदित बिसाले । कहू कोन अघ परम कराले ॥ ६॥
मानस रोग कहू समुझा कय । अहँ सर्बज्ञ कृपालु दया कय ॥ ७॥
तात सुनू सादर अति प्रीती । हम संछेप कही ई नीती ॥ ८॥
नर तन सम नहि कोनो देहे । जीव चराचर जाचय जेहे ॥ ९॥
नरक सरग अपबरगक सरनी । ज्ञान बिराग भगति सुभ करनी ॥१०॥
से तन धय हरि भजय न जे नर । होअय बिषय रत मंद मंदतर ॥११॥
काँचक खंड बदलि से लेअय । कर सौँ फेकि परसमनि देअय ॥१२॥

दुख नहि जग दारिद सम आने । सुख नहि संतक मिलन समाने ॥१३॥
पर उपकार बचन मन काया । संत सहज सोभाव खगराया ॥१४॥
संत सहथि दुख परहित लागी । परदुख हेतु असंत अभागी ॥१५॥
भूर्ज तरुक सम संत कृपाले । परहित नित सह बिपति बिसाले ॥१६॥
सन इव खल परबंधन करइछ । खाल खिचाय बिपति सहि मरइछ ॥१७॥
खल बिनु स्वारथ पर अपकारी । अहि मूसक इव सुनु उरगारी ॥१८॥
पर संपति नसि स्वयं नसाइछ । जेना सस्य हति उपल बिलाइछ ॥१९॥
दुष्ट उदय जग आरति हेतू । जथा प्रसिद्ध अधम ग्रह केतू ॥२०॥
संतक उदय सतत सुखकारी । जेना सुखद जग इंदु तमारी ॥२१॥
श्रुति कह धरम अहिंसा परमे । परनिंदा सम नहि अघ करमे ॥२२॥
हर गुरु निंदक दादुर देहे । पाबय सहस जनम सठ सेहे ॥२३॥
नरक भोगि द्विज निंदाकारी । जग जनमैछ काक तनधारी ॥२४॥
सुर श्रुति निंदक जे अभिमानी । रौरब नरक पड़य से प्रानी ॥२५॥
होअय उलूक संत निंदारत । मोह निसा प्रिय ज्ञान भानु गत ॥२६॥
सबहुक निंदा कर जड़ जेहे । चमगादर भय जनमय सेहे ॥२७॥
आब सुनू अहँ मानस रोगे । जहि सौँ दुख पाबय सब लोगे ॥२८॥
मोह सकल ब्याधिक थिक मूले । तकरा सौँ उपजय बहु सूले ॥२९॥
काम बात कफ लोभ अपारे । क्रोध पित्त नित छाती जारे ॥३०॥
प्रीति करय जौँ तीनू भाई । उपजय सन्निपात दुखदाई ॥३१॥
बिषय मनोरथ कठिन अनेके । थिक सब सूल गनावौ से के ॥३२॥
इरषा कलकलि ममता दादे । गरक घेघ बुझु हरष बिषादे ॥३३॥
पर सुख देखि जरनि छइ सेहे । कुष्ठ दुष्ट मन कुटलइ जेहे ॥३४॥
अहंकार अति दुखद डमरुआ । दंभ कपट मद मान नेहरुआ ॥३५॥
तृष्णा उदर बृद्धि अति भैया । त्रिबिध ईषना तरुन तेहैया ॥३६॥
जुग बिधि ज्वर मत्सर अबिबेके । कहँ धरि कहब कुरोग अनेके ॥३७॥

दोहा—एक ब्याधिबस नर मरय, ई असाध बहु ब्याधि ।
सतत देछ दुख जीव केँ, से लह कोना समाधि ॥

नेम धरम आचार तप, ज्ञान जज्ञ जप दान ।
भेषज कोटिक किंतु नहि, रोग जाय हरिजान ॥१२१॥

येहि बिधि जगत जीव सब रोगी । सोक हरष भय प्रीति बियोगी ॥ १॥
मानस रुज किछुए हम गाओल । अछि सब केँ क्यो क्यो लखि पाओल ॥ २॥
जनले किछु घटइछ ई पापी । नसय समूल न जन परितापी ॥ ३॥
बिषय कुपथ सौँ अँकुरय छन मे । नर केर कथा कि मुनिहुक मन मे ॥ ४॥
राम कृपेँ बिनसय सब रोगे । जौँ यहि भाँति बनय संयोगे ॥ ५॥
सद्गुरु बैद्य बचन बिस्वासे । संजम ई नहि बिषयक आसे ॥ ६॥
रघुपति भगति सजीवन जानू । श्रद्धा पूरित मति अनुमानू ॥ ७॥
यहि बिधि भल कय रोग नसायत । न तौँ कोटि जतनहुँ नहि जायत ॥ ८॥
बुझब गोसाँइ बिरुज मन तहिया । प्रबल बिराग बढ़य उर जहिया ॥ ९॥
सुमति छुधा नित नब नब जागय । बिषय आस दुर्बलता भागय ॥१०॥
बिमल ज्ञान जल मज्जय जखने । राम भगति उर व्यापय तखने ॥११॥
सिव अज सुक सनकादिक नारद । जे मुनि ब्रह्म बिचार बिसारद ॥१२॥
सबहुक मत खगनायक एहे । करी राम पद पंकज नेहे ॥१३॥
श्रुति पुरान सब ग्रंथ रहल कहि । रघुपति भगति बिना सुख हो नहि ॥१४॥
कमठ पीठ कच जनम बहूते । हतओ कदाचित बाँझक पूते ॥१५॥
नभ फुलाय बरु बहु बिधि फूले । जीब न लह सुख हरि प्रतिकूले ॥१६॥
तृषा जाय बरु मृग जलपाने । बरु जनमय सस सीस बिषाने ॥१७॥
अंधकार बरु रबिहिँ नसाबय । जीब न राम बिमुख सुख पाबय ॥१८॥
हिम सौँ बरु परगट हो आगी । राम बिमुख नहि क्यो सुख भागी ॥१९॥

दोहा—जल मथने घृत होअय बरु, बरु सिकता सौँ तेल ।
बिनु हरि भजन न भव तरिय, ई सिद्धांत अपेल ॥
मसकहिँ करथि बिरंचि प्रभु, अजहिँ मसक सौँ हीन ।
येहन जानि संदेह तजि, रामहिँ भजथि प्रबीन ॥

श्लोक--विनिश्चितं वदामि ते, न अन्यथा वचांसि मे ।
हरिं नरा भजन्ति येऽतिदुस्तरं तरन्ति ते ॥१२२॥

कहल नाथ हरि चरित अनूपे । व्यास समास स्वमति अनुरूपे ॥ १॥
श्रुति सिद्धांत येह उरगारी । राम भजिय सब काज बिसारी ॥२॥
प्रभु रघुपति तजि सेबी कनिका । मम सम सठ पर ममता जनिका ॥३॥
अहँ बिज्ञान रूप नहि मोहे । नाथ कयल मोहि पर अति छोहे ॥४॥
पुछलहुँ राम कथा अति पावन । सुक सनकादि संभु मनभावन ॥५॥
सतसंगति दुर्लभ त्रिभुबन मे । येको बेरि वा एको छन मे ॥६॥
देखु गरुड़ निज हृदय बिचारी । हम रघुवीर भजन अधिकारी ॥७॥
सकुनाधम सब भाँति अपावन । प्रभु मोहि कयल बिदित जग पावन ॥८॥

दोहा—आइ धन्य अति धन्य हम, जद्यपि बीतल गेल ।
जानि राम मोहि अपन जन, संत समागम देल ॥
नाथ जथामति कहल हम, राखल नहि किछु दाबि ।
चरित सिंधु रघुनाथ केर, थाह सकय के पाबि ॥१२३॥

सुमिरि राम केर गुनगन नाना । पुनि पुनि हरष भुसुंडि सुजाना ॥१॥
महिमा निगम नेति कय गाबे । अतुलित बल प्रभुता परभावे ॥२॥
सिव अज पूज्य चरन रघुराया । अति मृदुता तनि मोहि पर दाया ॥३॥
येहन सोभाव न सुनी न देखी । रघुपति सम ककरा हम लेखी ॥४॥
साधक सिद्ध बिमुक्त उदासी । कवि कोविद कृतज्ञ संन्यासी ॥५॥
जोगी सूर सुतापस ज्ञानी । धरम निरत पंडित बिज्ञानी ॥६॥
तरथि न बिनु सेबने मम स्वामी । राम नमामि नमामि नमामी ॥७॥
सरन गेने मम सम अघरासी । होअय सुद्ध नमामि अबिनासी ॥८॥

दोहा—जनिक नाम भव भेषज, हरन घोर त्रयसूल ।
से कृपालु मम तव उपर, सदा रहथु अनुकूल ॥

सुनि भुसुंडि कें सुभ बचन, देखि राम पद नेह।
प्रेम सहित बजला बचन, गरुड़ बिगत संदेह ॥१२४॥

हम कृतकृत्य भेलहुँ तव बानी। सुनि रघुबीर भगति रस खानी ॥ १॥
राम चरन नूतन रति भेले। माया जनित बिपति सब गेले ॥ २॥
मोह जलधि बोहित अहँ भेलहुँ। हमरा नाथ बिबिध सुख देलहुँ ॥ ३॥
मम सौँ होयत न प्रति उपकारे। बंदी तव पद बारंबारे ॥ ४॥
पूरनकाम राम अनुरागी। अहँ सम तात न क्यो बड़भागी ॥ ५॥
संत बिटप सरिता गिरि धरनी। परहित हो येहि सबहुक करनी ॥ ६॥
हृदय संत कें नबनीतक सन। कहय न जानथि कहइछ कबिगन ॥ ७॥
निज परिताप द्रबय नबनीते। पर दुख द्रबइछ संत पुनीते ॥ ८॥
जीबन जनम सफल मम भेले। तव प्रसाद सब संसय गेले ॥ ९॥
बुझब सतत हमरा निज किंकर। कहथि उमा पुनि पुनि बिहंगबर ॥१०॥

दोहा—तनिका पद मे सिर नमा, प्रेम सहित मतिधीर।
गरुड़ गेला बैकुंठ पुनि, हृदय राखि रघुबीर ॥
संत समागम सम उमा, लाभ न अछि किछु आन।
बिनु हरि कृपेँ न होअय से, गाबय वेद पुरान ॥१२५॥

परम पुनीत कहल इतिहासे। सुनितहिँ सकल छुटय भवपासे ॥१॥
प्रनत कल्पतरु करुना पुंजे। उपजय प्रीति राम पद कंजे ॥२॥
मन क्रम बचन जनित अघ दूरे। सुनय जे कथा श्रवन मन पूरे ॥३॥
तीर्थाटन आदिक जत साधन। जोग बिराग ज्ञान आराधन ॥४॥
नाना करम धरम ब्रत दाना। संजम दम जप तप मख नाना ॥५॥
भूत दया द्विज गुरु सेवकत्वे। विद्या विनय बिबेक महत्वे ॥६॥
जत साधन कह वेद बखानी। सबहुक फल हरि भगति भवानी ॥७॥
से रघुनाथ भगति श्रुति गाबय। राम कृपेँ क्यो बिरले पाबय ॥८॥

दोहा—मुनि दुर्लभ हरि भगति नर, पाबय बिना प्रयास।
जे ई कथा निरंतर, सुनय राखि बिस्वास ॥१२६॥

से सर्बज्ञ गुनी से ज्ञाता । से महि मंडित पंडित दाता ॥१॥
धरमनिष्ठ कुल त्राता सेहे । मन सौँ राम चरन रत जेहे ॥२॥
सैह नीति पटु परम सयाने । तकरहिँ श्रुति सिद्धांतक ज्ञाने ॥३॥
से कबि कोबिद से रन धीरे । जे छल छोड़ि भजय रघुवीरे ॥४॥
धन्य देस जहँ सुरसरि बहइछ । धन्य नारि पतिब्रत जे गहइछ ॥५॥
नृप से धन्य नीति जे पालथि । द्विज से धन्य स्वधर्म न टारथि ॥६॥
दान पहिल गति धन से धन्ये । मति से धन्य निरत जे पुन्ये ॥७॥
धन्य घड़ी जेंहि छन सतसंगे । धन्य जन्म द्विज भगति अभंगे ॥८॥

दोहा—गिरिजा सुनु से धन्य कुल, जगत पूज्य सुपुनीत ।
जहि मे श्रीरघुवीर रत, जनमथि मनुज बिनीत ॥१२७॥

मति अनुरूप कथा हम भाखल । जद्यपि प्रथम गुपुत कय राखल ॥१॥
मन मे अहँक प्रीति अति पौलहुँ । तखन कथा रघुपतिक सुनौलहुँ ॥२॥
कहब न ई सठ ओ हठसीले । जे मन लगा न सुन हरिलीले ॥३॥
कहब न लोभिहिँ क्रोधिहिँ कामिहिँ । जे न भजय सचराचर स्वामिहिँ ॥४॥
द्विज द्रोही न सुनाबी कखनहुँ । सुरपति सम नरपति हो तखनहुँ ॥५॥
रामकथा कैर से अधिकारी । जनिका सतसंगति प्रिय भारी ॥६॥
गुरु पद प्रीति नीति रत जेहे । द्विज सेबक अधिकारी सेहे ॥७॥
जनिक प्रान प्रिय श्रीरघुनायक । तनिका ई बिसेष सुखदायक ॥८॥

दोहा—जे चाहथि रति राम पद, अथवा पद निर्वान ।
भाव सहित से ई कथा, करथु श्रवन पुट पान ॥१२८॥

रामकथा कहलहुँ गिरिनंदिनि । मन मल हर कलि कलुष निकंदिनि ॥१॥
भब रोगक बूटी संजीवन । रामकथा भन वेद सुधीजन ॥२॥
येहि मे रुचिर सप्त सोपाने । रघुपति भगतिक थिक पंथाने ॥३॥
पाबथि हरिक कृपा अति जेहे । पैर देथि येहि पथ पर सेहे ॥४॥
मन कामना सिद्धि नर पाबथि । जे ई कथा कपट तजि गाबथि ॥५॥
कहथि सुनथि अनुमोदन करथी । से गोपद इव भवनिधि तरथी ॥६॥

भाओल हृदय कथा सब पावन । गिरिजा बजली गिरा सोहावन ॥७॥
नाथ कृपा मम गत संदेहे । राम चरन उपजल नव नेहे ॥८॥

दोहा—आब भेलहुँ कृतकृत्य हम, अहँक कृपेँ विस्वेस ।
राम भगति उपजल अचल, बीतल सकल कलेस ॥१२६॥

ई सुभ संभु उमा संबादे । सुख संपादन समन बिषादे ॥१॥
भव भंजन गंजन संदेहे । जन रंजन सज्जन प्रिय एहे ॥२॥
राम उपासक जते जहाने । येहि सम प्रिय तहि नहि किछु आने ॥३॥
रघुपति कृपा चरित ई पावन । गौल जथामति परम सोहावन ॥४॥
येहि कलि काल न दोसर साधन । जप तप ब्रत जग जोग अराधन ॥५॥
रामे सुमिरी गाबी रामे । संतत सुनी राम गुन ग्रामे ॥६॥
जनिक पतित पावन बड़ बाना । गाबथि कवि श्रुति संत पुराना ॥७॥
मन भज ताहि कुटिलपन तजि कय । के न पौल गति रामहिँ भजि कय ॥८॥

छंद—पाओल न के गति पतित पावन राम भजि सुनु सठ मने ।
गनिका अजामिल ब्याध गीध गजादि खल तारल घने ॥
आभीर जमन किरात खस स्वपचादि अति अघ रूप जे ।
कहि नाम सकृते तेपि पावन होथि तं रामं भजे ॥
रघुबंस भूषन चरित ई नर कहथि गाबथि सुनथि जे ।
कलिमल मनोमल धोय बिनु श्रम लहथि रामक धाम से ॥
सत पंच सुभ चौपाइ मनहर जानि उर जे धारथी ।
दारुन अविद्या पंच जनित बिकार रघुवर टारथी ॥
करुनानिधान अनाथ पर कर प्रीति परम सुजान जे ।
से एक राम अकाम हित निर्बान प्रद सम आन के ॥
जनिका कृपा लबलेस सौँ मतिमंद ई तुलसी सहो ।
पाओल परम बिश्राम राम समान प्रभु दोसर के हो ॥

दोहा--मम सम दीन न दीन हित, तव समान रघुबीर।
यहन जानि रघुवंसमनि, हरिय बिषम भव भीर॥
जेना कामि केँ नारि प्रिय, लोभी केँ प्रिय दाम।
तेना निरंतर मोहि प्रिय, लागिय रघुपति राम॥१३०॥

श्लोक--यत्पूर्वं प्रभुणा कृतं सुकविना श्रीशम्भुना दुर्गमं।
श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिशं प्राप्त्यै तु रामायणं॥
मत्वा तद्रघुनाथनामनिरतं स्वान्तस्तमःशान्तये।
भाषाबद्धमिदं चकार तुलसीदासस्तथा मानसम्॥१॥

पुण्यं पापहरं सदा शिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं।
मायामोहमलापहं सुविमलं प्रेमाम्बुपूरं शुभम्॥
श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं भक्त्यावगाहन्ति ये।
ते संसारपतङ्गघोरकिरणैर्दह्यन्ति नो मानवाः॥२॥

इति श्रीमद्रामचरितमानसस्य श्रीरामलोचनशरणविरचिते मैथिलीरूपान्तरे सकलकलिकलुष-विध्वंसने अविरलहरिभक्तिसम्पादनो नाम सप्तमः सोपानः समाप्तः।

मासपारायण, विश्राम--३०

नवाह्न पारायण, विश्राम--९

इति—श्रीजानकीनवमी, २०२५ वि०



आरती

आरति श्री रामायनजी कैर
कीरति कलित ललित सिय पी कैर

गावथि ब्रह्मादिक मुनि नारद
बालमीकि बिज्ञान बिसारद
सुक सनकादि सेष ओ सारद
कहथि पवनसुत कीर्ति धनी कैर

गावथि बेद पुरान अष्ट दस
छओ सास्त्र कैर सब ग्रन्थक रस
मुनिजन धन संतहु कैर सरवस
सार अंस संमत सबही कैर

गावथि संतत संभु भवानी
ओ घटसंभव मुनि बिज्ञानी
ब्यास आदि कबि कहथि बखानी
कागभुसुंडि गरूड़क ही कैर

कलिमल हरनि ओ बिरस बिषय कैर
सुभग सिँगार मुकुति जुवती कैर
दलन रोग भव मूरि अमी कैर
तात मात सब बिधि तुलसी कैर

आरति श्री रामायनजी कैर

प्रेसक असावधानी

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित	उचित
१२	२४	धेनें	घेने
५२	६	अहो	अहो
६१	२४	सुनिकेँ	सूनी
६१	२४	मुनिकेँ	मूनी
६४	१६	बैसला	बैसला
६७	८	सेबइत	सेंबइत
६७	२२	जनीकेँ	जनीके
७२	१४	जनि	जनि’
७६	६	स्वबल	स्वबस
८१	६	से	सेँ
८२	१५	बिध	बिच
८४	१	छुधाहीन	छुधाछीन
८८	६	होयत	होयत
८८	९	भेल	भेल
९५	२२	भोजन	भोजन
१००	३	धरि	धय
१०६	२	ऐँठाओल	ऐँठाओल
१०९	१२	कोक	कोक
१३६	५	देखी	देखी
१३६	११	मुनीसे	महीसे
१४०	९	धुनि घनी	नहि कनी
१९१	११	बुझू	बूझू
२०७	२४	बरनथि	बरनति
२१५	२३	गिदि	गिरि
२६७	६	सिलोक	सिलोक
२६७	१४	पछियो	पछियो
२६७	१६	मोहि	मोहि
२६७	२३	भगति भगत	भगत भगति
२९५	१०	राम प्रबीन	परम प्रबीन
३३०	२०	हरषि	हरष
३३७	१९	भेले	भेले
३५५	१९	जोरी	जोरी
३५९	१५	आनँद	आनन
३६३	१४	जीतल	जीतत
३७८	३	के	केँ
३८२	३	जथारज	जथारथ
३८३	१०	तोर	तोर
३८४	२६	सेहो	सेँहो
३८६	२०	...	सुखहिँ
४०५	२	बाजय	भागय
४२७	२०	चाष	चाप
४२७	२२	भेला	भेला
४२९	२	पावन	पाब न
४४७	१२		अहीँ
४४८	१९	लोग	लोक
४५६	१२	सेज्ञन समम	से सज्ञन मम
४६४	१	कराल	मराल
४६६	७	मोह	मोह
४७३	१७	निज	नित
४७९	१	ममता	समता
४७९	२४	कोटि	कोटि
४८५	२०	होअय	होअय
४८७	६	धन	घन
४९०	३	सोभाव	सोभाव
४९०	७	धरम	चरम
४९३	३	कहियो	कहियो